य

ावाँ भाग पाठकों की सेवा मे
.९७२ मे प्रकाशित हुआ था।
ी डायरी आ गई है। सब
पंडित जवाहरलाल नेहरू की
ेशन मे सर्वप्रथम ग्रामो तथा
नतापूर्वक प्रदर्शन किया गया
थी।

बातें, जैसे प्रार्थना, भजन,
ी जानकारी, घर के लोगों से
जो नित्य व्यवहार की हुआ
म कर दी गई हैं।

या विचार का निर्देश डायरी
या है। इसका यह अर्थ नही
।

ासिल की लिखी होने से तथा
ार कही-कही बहुत ही छोटे
र कारण कई जगह व्यक्तियों
ो मे समझ की भूलें रह जाने
न करने योग्य जानकारी हो
साथ ही हमे भी सूचना देने
ार किया जा सके।

द मे हमे जिन-जिन की मदद
र्तण्ड उपाध्याय ने जो परि-
।

—संपादक

पति-पत्नी
सात्विक जीवन के प्रतीक

जमनालाल बजाज ग्रंथमाला : उन्नीसवां ग्रंथ

जमनालाल बजाज
की
डायरी

(१९३७ से १९३९ तक)

पांचवां खंड

•

भूमिका-लेखक
काकासाहेब कालेलकर

•

संपादक
रामकृष्ण बजाज

•

१९७८
सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन

सम्पादकीय

पूज्य बापूजी की डायरियों का यह पाँचवाँ भाग पाठकों की सेवा में कुछ देने में पहुंच रहा है। चौथा भाग सन् १६७२ में प्रकाशित हुआ था।

चौथे भाग में सन् १६३६ के अंत तक की डायरी आ गई है। तब फैजपुर (महाराष्ट्र) में कांग्रेस का अधिवेशन पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में सम्पन्न हो चुका था। उसी अधिवेशन में सर्वप्रथम ग्रामों तथा घरों में बनी ग्रामोद्योगों की वस्तुओं का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया था और वह अपनी तरह की पहली प्रदर्शिनी थी।

डायरी के संपादन में नित्यक्रम की कई बातें, जैसे प्रार्थना, भजन, घूमना, चर्खा कातना, आराम, स्वास्थ्य-संबंधी जानकारी, घर के लोगों से हुई साधारण तथा ऐसी ही अन्य गौण बातें, जो नित्य व्यवहार की हुआ करती थी, विस्तार कम करने के खयाल से, कम कर दी गई हैं।

किसी दिन कोई महत्त्व की बात, घटना या विचार का निर्देश डायरी में नहीं रहा तो वह पूरा ही दिन काट दिया गया है। इसका यह अर्थ नहीं कि उस दिन की डायरी लिखी ही नहीं गई थी।

डायरी हाथ की लिखी तथा कभी-कभी पेंसिल की लिखी होने से तथा अक्सर रेलयात्रा में लिखी होने के कारण अक्षर कहीं-कहीं बहुत ही छोटे व अस्पष्ट हो गये हैं, जो पढ़े नहीं जा सके। इस कारण कई जगह व्यक्तियों व स्थानों के नामों में तथा कहीं-कहीं विवरणों में समझ की भूलें रह जाने की संभावना है। इसमें पाठकों को कोई दुरुस्त करने योग्य जानकारी हो तो वह स्वयं तो अपनी प्रति में सुधार ही लें, साथ ही हमें भी सूचना देने की कृपा करें ताकि नये संस्करण में उनका सुधार किया जा सके।

डायरी के इस खंड के संग्रह, संपादन आदि में हमें जिन-जिन की मदद मिली तथा इसकी पृष्ठभूमि लिखने में श्री मार्तण्ड उपाध्याय ने जो परिश्रम किया, उसके लिए हम उनके आभारी हैं।

—संपादक

भूमिका

सूक्ष्म रूप में देखा जाय तो पता चलेगा कि साहित्य का प्रादुर्भाव संभाषण से हुआ है। बाद में आई लेखन-कला। मनुष्य की वाणी पहले तो बोलने के लिए ही होती है। भाषा का अर्थ ही है बोलने का साधन। लेकिन मनुष्य कितनी चीजें कंठ करे? अपनी स्मरण-शक्ति पर बोझा भी कितना डाले? और जहां आवाज पहुंच नहीं सकती, वहां अपनी सूचनाएं भी जैसी-की-तैसी कैसे भेजें? तो मनुष्य ने भाषा को लिपिबद्ध करने की कला ढूंढ निकाली। मानवीय संस्कृति की प्रगति में लिपि का आविष्कार एक महत्त्व की चीज है। लिपि की कला हाथ में आते ही मनुष्य खत लिखने लगा और हिसाब के आंकड़े भी लिखकर रखने लगा। कभी-कभी याददाश्त के लिए थोड़े वचन भी लिखकर रखने लगा। इससे लिखित साहित्य के दो रूप हुए—एक खत (पत्र) और दूसरा स्मरण के लिए लिखी हुई 'याददाश्त'।

विदेशों में दैनंदिनी लिखने का रिवाज शायद ज्यादा होगा। हमारे यहां जो पठान और मुगल राज्यकर्ता हुए वे अपनी रोजनिशी लिखते थे। इसके लिए आजकल हम अंग्रेजी शब्द 'डायरी' चलाते हैं। अंग्रेजी शब्द 'डे' पर से डायरी शब्द आ गया है। दैनंदिनी शब्द है तो अच्छा लेकिन कुछ बड़ा और भारी है। हमारे यहां दिन को 'वासर' कहते हैं। रविवासरे सोमवासरे इत्यादि शब्द बोलते हैं। इस 'वासर' शब्द पर से दैनंदिनी के लिए 'वासरी' शब्द बनाया गया। वासरी अथवा वासरिका शब्द अब चलने लगा है।

डायरी या वासरी लिखने वाले लोगों के दो प्रकार होते हैं। एक वे सारे दिन में भिन्न-भिन्न लोगों से मिले, भिन्न-भिन्न लोगों से क्या-क्या बातें हुईं, लोगों को कौन-से वचन दिये, जो लोग मिले उनके बारे में अपना अभिप्राय क्या हुआ, इत्यादि विस्तार से लिखा जाता है। इनमें कुछ बौद्धिक, हार्दिक और धर्मोपयोगी बातें भी लिखते हैं। ऐसी डायरियां [illegible]

के पढ़ने के लिए नहीं होती। वे होती हैं आत्मनेपदी—अपने ही लिए। इनका उपयोग आत्म-चरित लिखने मे अथवा समकालीन इतिहास लिखने मे अत्यन्त महत्व का होता है।

जो दूसरे प्रकार के वासरी लिखनेवाले लोग होते हैं, वे महत्व की चर्चा या घटना कौन-सी हुई, उसका जिक्र तो करते हैं, लेकिन क्या बातचीत हुई, उसमे अपना अभिप्राय क्या था और आगे स्वय क्या करने का सोचा है, इत्यादि कुछ भी नही लिखते। सिर्फ कोई घटना आदि ही लिखते हैं।

महात्मा गाधी इसी तरह की वासरियां लिखते थे। उसमे तो बहुत ही कम शब्दो में अत्यन्त जरूरी बातो का ही जिक्र होता है। अमुक दिन गाधीजी कौन-से शहर मे थे, किससे मिले और उस दिन क्या किया, इसका जरा-सा जिक्र ही उसमे मिलता है। गाधीजी की जीवनी लिखने वालो के लिए ऐसी वासरी काम की चीज है सही, लेकिन गांधीजी की ओर से उसमे कुछ भी नही मिला।

श्री जमनालालजी की ये जो वासरियां है, इनमे भी केवल याददाश्त के लिए आवश्यक सूचनाए ही लिखी हैं। इनमे न उनका हृदय पाया जाता है और न उनके अभिप्राय।

अगर किसी अच्छे प्रभावशाली नाटक का पहला ही अंक पढा हो तो उसपर से उस समस्त नाटक की कल्पना तो क्या, पहले अंक की खूबियां भी ध्यान मे नही आ सकेंगी। समस्त नाटक पढने के बाद ही प्रथम अक मे वर्णित छोटी-मोटी घटनाओ और सभावनाओं का रहस्य ध्यान में आता है। इसी तरह जमनालालजी के जीवन का प्रथम भाग ही जानने वाले व्यक्ति को पता नही चलेगा कि प्रारभ के दिनो में कौन-सी सूक्ष्म शक्तियां आगे जाकर विकसित रूप धारण करने वाली हैं। पूरा जीवन जानने वाले आज के लोग ही उनके प्राथमिक जीवन के सस्कारो की सूक्ष्मातिसूक्ष्म खूबियां समझ सकेंगे और उनकी कद्र कर सकेंगे।

धार्मिक प्रवचन सुनना, नाटक देखने जाना, सगीत के जलसे का आनद लेना, टेनिस खेलना, ब्रिज खेलना, वन-भोजन आदि विशुद्ध आनंद को प्रोत्साहन देना, नेताओ के व्याख्यान सुनना, इस तरह की जीवन की सब प्रवृत्तियां उनमे पाई जाती है। सबमे सस्कारिता, जीवनशुद्धि, सेवाभाव

और दिल की उदारता पाई जाती है। २२ से २५ वर्ष की उम्र मे कितने लोगो से उन्होने सपर्क साधा था, इसकी सूची देखकर सचमुच आश्चर्य होता है।

जमनालालजी के स्वभाव मे जैसी विशेष आतिथ्यशीलता थी वैसा ही साथी, सबंधी और राष्ट्रीय कार्यकर्ताओ के व्यक्तिगत जीवन मे भी प्रवेश करके उनके सुख-दुख के साथ एकरूप होने का माद्दा था। एक तरह से हम कह सकते है कि स्वभाव से ही वह विश्व-कुटुम्बी थे। इसीलिए आगे जाकर जब उन्होने गाधीजी से प्रेरणा प्राप्त की और उनके 'पाचवें पुत्र' बने, तब समूचे विशाल गाधी-परिवार को अपनाना उनके लिए आसान और स्वाभाविक बन गया। बचपन से सबको अपनाने का स्वभाव न होता तो आगे जाकर वह इतना काम नही कर सकते थे। तरह-तरह के राष्ट्र-सेवक, उनके परिवार के लोग, राष्ट्रीय सस्थाए और उनकी कठिनाइयां सबके साथ जमनालालजी एक-हृदय हो सकते थे, यह थी उनकी विभूति की विशेषता। गांधीजी मे भी ये गुण थे। इसीलिए तो गाधीजी को जमनालाल-जी का इतना बडा सार्वभौम सहारा मिल सका। गांधीजी का विस्तार चाहे जितना बडा और जटिल हो, उसे सभालने की हिम्मत और कुशलता जमनालालजी मे थी, और इस दिशा मे जमनालालजी गाधीजी को सब तरह से निश्चित कर सके थे। जमनालालजी की और गाधीजी की ऐसी विशेषता जिन्होने ध्यान से देखी है, उनके लिए तो उनकी बामरी के छोटे-छोटे पन्ने और उनके पत्र भी विशेष महत्व के प्रतीत होते हैं।

केवल अपने को और अपनी धन-सपत्ति व कौशल-शक्ति को ही नहीं, बल्कि अपने परिवार के सब लोगों को राष्ट्रसेवा मे अर्पित करने की उनकी तैयारी थी। केवल तैयारी ही नही, उत्साह था। उसीमे वह अपने जीवन की कृतार्थता मानते थे। लेकिन यह सब होने हुए भी उनकी श्रेयार्थी आत्म-साधना ही सर्वोपरि थी। उसीका थोडा चिंतन करना आवश्यक है।

जब कभी कोई 'श्रेयार्थी' आत्म-साधना शुरू करता है, तब कुटुम्ब-कबीला, आजीविका का व्यवसाय और सार्वजनिक-सेवा सब कुछ झझट समझकर, सबको त्याग देने की कोशिश करने लगता है। हमारे देश मे ऐसे ही आत्मार्थी अधिक पाये जाते है। ऐसे ही लोगो ने सन्यास-आश्रम

को सबसे प्रधान माना है।

हमारी संस्कृति में शुरू में संन्यास का महत्व नहीं था। संन्यास आश्रम का पुनरुज्जीवन शंकराचार्य ने बड़े उत्साह के साथ किया। पर हमारे जमाने में सन्यास-आश्रम को बढ़ावा दिया स्वामी विवेकानन्द और स्वामी दयानन्द ने। गांधीजी ने सन्यास-आश्रम के प्रति पूरा आदर दिखाकर उसे एक बाजू रखा और गीता में बताये हुए सन्यास-योग को पसन्द किया है। मनुष्य गृहस्थ-आश्रम में प्रवेश करे या न करे, ब्रह्मचर्य-पालन का महत्व वह समझे और संयम बढ़ाते हुए गृहस्थ-आश्रम को कृतार्थ बनावे, यही था गांधीजी का आदर्श। मनुष्य ब्रह्मचर्य का पालन करके कौटुम्बिक जीवन की एकागिता और संकुचितता छोड़ दे और जीवन में कर्मयोग को ही प्रधान बनाकर सेवामय जीवन व्यतीत करते-करते समस्त मानव-जाति के साथ अपने ऐक्य का अनुभव करे और, वहां भी न रुककर, समस्त जीव-सृष्टि के साथ तादात्म्य का अनुभव कर विश्वात्मैक्य की साधना चलावे, यही है गांधीजी का मार्ग। इस मार्ग को युगानुकूल समझकर जमनालालजी ने भी उसे पसन्द किया था। अपनी मर्यादा को पहचानकर वह यथाशक्ति 'जनक-मार्ग' का अनुसरण करते रहे। उस जीवन-साधना का प्रारंभ अगर कोई ढूंढना चाहे, तो इन डायरियों में कुछ-न-कुछ मसाला उसे मिलेगा ही।

एक बात खास ध्यान में लेने की है। भारत के लोगों को स्वराज्य चाहिए था। योग्य नेता मिले और सफलता की आशा हो तो लोग लड़ने के लिए भी तैयार थे। लेकिन लोग नहीं जानते थे कि स्वराज्य को चलाने के लिए जिस तरह पूर्व-तैयारी की जरूरत होती है, वैसे ही संगठित रूप से स्वराज्य की लड़ाई लड़ने के लिए पूर्व-तैयारी की जरूरत होती है।

इस तरह की पूर्व-तैयारी को गांधीजी ने नाम दिया—रचनात्मक कार्यक्रम। ऐसे रचनात्मक काम के लिए निष्ठा और धैर्य की आवश्यकता होती है, जो सामान्य जनता में नहीं होती। लोग पुण्य का फल प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं जरूर, लेकिन जरूरी पुण्य या तपश्चर्या नहीं करना चाहते।

आज मैं वर्ण-व्यवस्था का अभिमानी या प्रोत्साहक नहीं रहा, लेकिन उस व्यवस्था की सुन्दरता मैं जानता हूं। लोगों के सामने सुन्दर-सुन्दर

ज्ञान का आदर्श रखना ब्राह्मणों का काम है, विचारों को तेज और गौरव रूप देना भी उन्हीं का काम है। क्षत्रिय पूरी बहादुरी से लड़ने के लिए तैयार होते हैं। जान-माल को न्यौछावर करने की तैयारी उनमें बहुत ज्यादा होती है। लेकिन समाज का संगठन करना, खेती, पशु-पालन, उद्योग, हुनर और तिजारत आदि के द्वारा समाज को सम्हालना, समर्थ बनाना और भिन्न-भिन्न वर्गों के बीच सामञ्जस्य स्थापित करके सहयोग को सार्वभौम बनाना, यह काम तो बनिये का ही है। गांधीजी में बनिये के ये सब गुण थे। इसके अलावा वह लोकोत्तर तेजस्विता और चातुर्य से भरे हुए सेनापति भी थे। क्षत्रिय तभी लड़ सकता है, जब बनिया उसे पूर्व-तैयारी कर देता है। यूरोप के लोकोत्तर सेनापति नेपोलियन ने कहा था— "सेना चलती है पेट पर।" गांधीजी ने कहा था कि सत्याग्रह की सफलता का आधार रहता है रचनात्मक कार्यक्रम पर। उन्होंने यहां तक कहा था कि मेरा "रचनात्मक कार्यक्रम अगर सारा राष्ट्र पूरी तरह से सफल कर दे, तो सत्याग्रह के बिना ही मैं आपको स्वराज्य ला दूंगा।"

गांधीजी के इस रचनात्मक कार्य का पूरा महत्त्व जाननेवाले इने-गिने लोगों में भी जमनालालजी का स्थान बहुत ऊंचा था। यह गुण तो मनुष्य की आस्तिकता में से ही प्रकट होता है। क्षत्रिय भले ही लड़कर राज्य प्राप्त कर ले, राज्य चलाने का काम भले ही क्षत्रियों का माना जाय, पर दर-असल वह है बनिये का ही काम। चार आश्रमों में जिस तरह अनुभव से सिद्ध हुआ है कि गृहस्थाश्रम ही सर्वश्रेष्ठ है, उसी तरह हमें समझना चाहिए कि चार वर्णों में भी श्रेष्ठता कबूल करनी चाहिए वैश्य-वर्ण की। वैश्य-धर्म की सार्वभौमता के नीचे ही ब्राह्मण-धर्म और क्षात्र-धर्म अपने-अपने काम में कृतार्थ हो सकते हैं। 'बनिया गांधीजी' का सामर्थ्य किसमें है, यह अचूक देख सके थे 'बनिया-शिरोमणि जमनालालजी' ही।

यह सब जाननेवाले लोग जमनालालजी की वासरियों के प्राथमिक वर्षों में भी रचनात्मक प्रवृत्ति की ओर उनका झुकाव देख सकेंगे। इस प्रेरणा को समझने के बाद ही हम खयाल कर सकते हैं कि जमनालालजी सारे देश में इतनी तेजी से क्यों घूमते थे? देश के छोटे-बड़े सब कार्यकर्ताओं का संपर्क साधकर उनके साथ हृदय की आत्मीयता कैसे स्थापित करते थे।

इस क्राति के राजनैतिक क्षेत्र मे जवाहरलालजी ने अपना बल जगाया। किन्तु जीवन-परिवर्तन के और राष्ट्र के नव-निर्माण के क्रांतिकारी क्षेत्र मे अपना पूरा-पूरा बल जगाया जमनालालजी ने और उनके छोटे-बडे सब साथियो ने।

मैं साथियो का नाम इसलिए लेता हू कि लोग सारा ध्यान मुख्य-मुख्य नेताओ के नाम पर ही लगाते हैं। राष्ट्रजीवन को सजीवन करनेवाली क्रांति एक आदमी से कभी नही होती। जिस तरह व्यक्ति का कुटुब-कबीला और वश-विस्तार होता है, वैसे ही सन्यासियो की शिष्य-शाखाए और भक्त-परिवार भी होते हैं और राष्ट्रपुरुष के पुरुषार्थो मे शरीक होनेवाले और उसे सिद्ध करने मे अपना हिस्सा अदा करनेवाले साथियो की भी सख्या कम नही होती। सबके पुरुषार्थ का सम्मिलित फल ही राष्ट्र का उत्थान है। इसलिए जमनालालजी के जीवन-कार्य का जिक्र या चिंतन करते समय उनके सब साथियो का भी स्मरण करना चाहिए। जमनालालजी कभी अकेले थे ही नही। जितने लोगो को उन्होंने अपनाया है, वे सब उनकी विभूति मे सम्मिलित है।

अगर देवो मे नये अवतार को पहचानने की शक्ति होती है तो अवतार मे भी अपने साथियो को पहचानने की शक्ति होनी ही चाहिए। हम इसे 'तारा-मंडल' कह सकते हैं। गाधीजी के पास असख्य लोग आये। चद लोगो को गाधीजी ने स्वयं बुलाया। चद अपने-आप आकर गाधीजी से चिपक गये। लेकिन दो आदमियो के बारे मे मैं जानता हू, जिन्हें देखते ही गाधीजी ने पहचान लिया कि इनके साथ अभेद-भक्ति का सबध बधनेवाला है। एक थे महादेव देसाई और दूसरे थे जमनालालजी। और खूबी यह कि इन दोनों ने जैसे ही गाधीजी को पहचाना, वैसे ही एक-दूसरे को भी तुरत पहचान लिया। महादेवभाई ने जमनालालजी को जो खत लिखे थे, उसमे से चंद खत मैंने पढे हैं। उसपर से कह सकता हू कि दोनो का परस्पर आकर्षण भी कम अद्भुत नही था। गाधीजी के आश्रमियो मे से श्री विनोबा भावे का वर्धा जाना भी मैं इसी तरह का ईश्वरीय सकेत या युगरचना या व्यवस्था मानता हू।

अन्योन्य सबध की यह प्रेम-शृंखला कैसे बढती गई, यह देखने का

जमनालालजी की यह विशेषता और उनका हृदय सामर्थ्य देखकर ही मैंने उन्हें 'सबों के स्वजन' कहा था।

आज देश के हितचिंतक एक आवाज से रो रहे हैं कि देश की एकता कहां गई? क्यों सर्वत्र फूट-ही-फूट बढ़ रही है? क्या इसका कोई इलाज नहीं हो सकता?

इलाज हमें गांधीजी के और जमनालालजी के जीवन में ही मिलता है। छोटे-बड़े सब भेदों को भूलकर सबको अपनाने के लिए हृदय की जो विशालता और प्रेम की संजीवनी चाहिए, वह जमनालालजी में पूरी मात्रा में थी। इसलिए वह सारे देश के, सब धर्मों के, सब क्षेत्रों के और तरह-तरह के विचारों के लोगों को अपना सके थे। संत तुकाराम ने कहा है, "आप जो प्रेम अपने लड़के-लड़कियों और रिश्तेदारों के प्रति बताते हैं, वही यदि आप अपने दास-दासियों के प्रति, नजदीक के लोगों के प्रति और पड़ोसियों के प्रति बता सकें, तो आपके अंदर दैवी शक्ति अवश्यमेव प्रकट होगी।"

जमनालालजी जहां-जहां जाते थे, वहां के कार्यकर्ताओं के साथ और उनके परिवार के साथ एकरूप होते थे। व्यवहार-चतुर जमनालालजी लोगों के दोष और उनकी खामियां नहीं देख सकते थे, सो नहीं। किन्तु उनका हृदय क्षमाशील और उदार था। उनका अनुकरण करनेवाले उनकी निःस्पृह भाषा का प्रयोग कर देते हैं, किन्तु उनकी उदारता कहां से लावें? और उनके प्रेम की निःस्वार्थता भी कहां से प्रकट करें? जिनमें ऐसी उदारता है, उनको जमनालालजी के जैसी सिद्धि भी मिल रही है। अध्यात्म के नियम अटल और सार्वभौम होते हैं।

एक-एक व्यक्ति मिलकर राष्ट्र बनता है, इसलिए हरेक में हमें दिलचस्पी होनी चाहिए और हरेक के यथाशक्ति सहायक होने की हमारी तत्परता भी होनी चाहिए। जमनालालजी की यह कार्यकारी आत्मीयता जिनमें होगी, वे ही सच्चे राष्ट्र-पुरुष बनेंगे।

सन् १९१५ से १९२९ तक जो कार्य गांधीजी ने और उनके साथियों ने धैर्य के साथ किया, उसी का शुभ परिणाम सन् १९३० से शुरू होनेवाली और सन् १९४५ से सफल होने वाली क्रांति में हम देख सकते हैं।

इस क्रांति के राजनैतिक क्षेत्र में ज्वाहरलालजी ने अपना बल लगाया। किन्तु जीवन-परिवर्तन के और राष्ट्र के नव-निर्माण के क्रांतिकारी क्षेत्र में अपना पूरा-पूरा बल लगाया जमनालालजी ने और उनके छोटे-बड़े सब साथियों ने।

मैं साथियों का नाम इसलिए लेता हू कि लोग सारा ध्यान मुख्य-मुख्य नेताओं के नाम पर ही लगाते हैं। राष्ट्रजीवन को सजीवन करनेवाली क्रांति एक आदमी से कभी नही होती। जिस तरह व्यक्ति का कुटुब-कबीला और वश-विस्तार होता है, वैसे ही सन्यासियों की शिष्य-शाखाए और भक्त-परिवार भी होते हैं और राष्ट्रपुरुष के पुरुषार्थों में शरीक होनेवाले और उसे सिद्ध करने में अपना हिस्सा अदा करनेवाले साथियों की भी सख्या कम नही होती। सबके पुरुषार्थ का सम्मिलित फल ही राष्ट्र का उत्थान है। इसलिए जमनालालजी के जीवन-कार्य का जिक्र या चितन करते समय उनके सब साथियों का भी स्मरण करना चाहिए। जमनालालजी कभी अकेले थे ही नही। *जितने लोगो को उन्होंने अपनाया है, वे सब उनकी* विभूति में सम्मिलित है।

अगर देवो में नये अवतार को पहचानने की शक्ति होती है तो अवतार में भी अपने साथियों को पहचानने की शक्ति होनी ही चाहिए। हम इसे 'तारा-मैत्रक' कह सकते हैं। गाधीजी के पास असख्य लोग आये। चद लोगो को गाधीजी ने स्वयं बुलाया। चद अपने-आप आकर गाधीजी से चिपक गये। लेकिन दो आदमियों के बारे में मैं जानता हू, जिन्हें देखते ही गाधीजी ने पहचान लिया कि इनके साथ अभेद-भक्ति का सबध बधनेवाला है। एक थे महादेव देसाई और दूसरे थे जमनालालजी। और खूबी यह कि इन दोनो ने जैसे ही गाधीजी को पहचाना, वैसे ही एक-दूसरे को भी तुरंत पहचान लिया। महादेवभाई ने जमनालालजी को जो खत लिखे थे, उसमे से चद खत मैंने पढ़े हैं। उसपर से कह सकता हू कि दोनो का परस्पर आकर्षण भी कम अद्भुत नही था। गाधीजी के आश्रमियों में से श्री विनोबा भावे का वर्धा जाना भी मैं इसी तरह का ईश्वरीय सकेत या युगरचना या व्यवस्था मानता हू।

अन्योन्य संबध की यह प्रेम-शृखला कैसे बढती गई, यह देखने का

आनद जैसे गाधीजी के चरित्रकार को मिलता है, वैसे ही जमनालालजी के चरित्रकार को भी मिलेगा। परस्पर मिलन, परस्पर सहयोग, यह कोई आकस्मिक घटना नही होती। सृष्टि मे परस्पर संबंध का विशाल जाल फैला हुआ रहता है। उसी के अनुसार सबकुछ होता है। कोई भी घटना अकस्मात नही होती। हरेक घटना का 'कस्मात्' हम जानें या न जानें, होता ही है। जब मनुष्य-जाति की ज्ञान-शक्ति बढेगी, तब मनुष्य, ऐसे सबध को पहचानकर ही इतिहास लिखने बैठेगा। आजकल के इतिहास अधो के प्रयास हैं। ज्ञानमय प्रदीप प्राप्त होने के बाद ही मानव-जाति की सच्ची जीवन-गाथा लिखी जायगी। गांधी-कार्य का प्रयोग, रहस्य और उसकी कृतार्थता तभी दुनिया के सामने पूर्ण रूप से प्रकट होगी।

गाधीजी के सपर्क मे आने के बाद जमनालालजी का सारा जीवन ही बदल गया था। उसका प्रतिबिंब उनकी डायरियों मे जरूर मिलेगा। ऐसी डायरियों के लगभग कई खंड प्रकाशित होने वाले हैं। इन सब खडों को पढने के बाद ही जमनालालजी की इन अतर्मुखी आत्मनेपदी प्रवृत्तियो के लिए योग्य भूमिका लिखी जा सकती है। इन प्रथम खंडों में तो उनकी पूर्व-तैयारी की थोडी कल्पना ही आ सकती है।

गाधीजी ने हिन्दू-धर्म मे और हिन्दू-समाज मे जो महान परिवर्तन किये, उसमे सन्यस्त जीवन को नया रूप दिया, जिसका महत्व कम नहीं है। उसका प्रत्यक्ष उदाहरण जमनालालजी के जीवन मे चरितार्थ होता पाया जाता है। यह समझकर ही जमनालालजी की ये डायरिया पढनी चाहिए।

सन्निधि, राजघाट,
नई दिल्ली

—काका कालेलकर

पृष्ठ-भूमि

जमनालालजी की डायरी के इस पांचवें भाग में सन् १९३७,३८,३९—इन तीन वर्षों की डायरियों को लिया गया है। यह काल देश में बहुत महत्वपूर्ण रचनात्मक एवं राजनैतिक कार्यों एवं घटनाओं से भरपूर था।

सन् १९३७ में जमनालालजी का अधिकतर समय वर्धा की संस्थाओं, जैसे मारवाड़ी शिक्षा मंडल, नवभारत विद्यालय, सेगांव आश्रम, मगन संग्रहालय, नालवाड़ी चर्मालय, महिलाश्रम, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दी प्रचार विद्यालय के साथ-साथ नागपुर में अभ्यंकर स्मारक एवं नागपुर जिला कांग्रेस कमेटी के कार्यों की देखभाल एवं संचालन में गया।

सन् १९३७ के मार्च के महीने में ही मद्रास में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन उनके ही सभापतित्व में हुआ और उसके परिणाम-स्वरूप हिन्दी प्रचार व प्रसार के कार्य में उनका अधिक समय गया।

इसी साल ब्रिटिश पार्लियामेंट द्वारा पास किये गए 'गवर्नमेंट आफ इंडिया एक्ट १९३५' के अन्तर्गत देशभर में प्रांतीय असेंबलियों के चुनाव हुए। कांग्रेस ने भी चुनाव लड़ा और भारत के प्रमुख प्रांतों में कांग्रेस बहुमत से चुनकर आई। चुनाव अभियान के बीच ही यह प्रश्न पैदा हो गया था कि बहुमत आ जाने पर प्रांतों में कांग्रेस को पद-ग्रहण करना चाहिए या नहीं?

चुनाव खत्म होने के बाद ही मार्च के तीसरे सप्ताह में कांग्रेस के टिकिट पर चुने गये असेंबली के सदस्यों तथा अ० भा० कांग्रेस महासमिति के सदस्यों का दिल्ली में एक कन्वेंशन हुआ। उसमें सब सदस्यों ने कांग्रेस अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू ने हिन्दी में प्रतिज्ञा लिवाई कि हम सब भारत की एकता और स्वराज्य के लिए प्रयत्न करेंगे और अगर असेंबलियों में पदग्रहण करना पड़ा तो असेंबली के अंदर और बाहर भारत की आजादी जल्दी-से-जल्दी मिले, इसके लिए काम करेंगे और नये विधान का विरोध

करके अपना विधान हम स्वयं बना सकें, इसकी ब्रिटिश सरकार से मांग करेंगे। उसी कन्वेंशन में यह भी निश्चय किया गया कि १ अप्रैल को ब्रिटिश पार्लियामेंट द्वारा पास किये गए विधान 'गवर्नमेंट आफ इंडिया एक्ट १९३५" के लागू किये जाने के विरोध मे सारे भारत में हड़ताल की जाय। परिणाम-स्वरूप उस दिन भारत-भर में शांतिपूर्ण पूरी हड़ताल रही।

इसी वर्ष चर्खा संघ के सभापतित्व का काम भी जमनालालजी पर आ गया और उनको चर्खा सघ के कार्य को सुदृढ करने तथा व्यावहारिक पद्धति पर खादी की अधिकतम उत्पत्ति एव बिक्री का संगठन करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी लेनी पड़ी। इसके लिए उन्होंने सारे देश का दौरा किया।

वर्धा के दो समाचार-पत्रो 'चित्रा' तथा 'सावधान' में सन् १९२० मे महात्मा गांधीजी द्वारा एकत्र किये गए 'तिलक स्वराज्य कोष' के हिसाब के संबध मे जमनालालजी, चूकि वे काग्रेस के कोषाध्यक्ष भी थे, तथा गाधीजी पर दुर्भावनापूर्ण एव अपमानजनक लाछन लगाये गये थे। जमनालालजी ने गाधीजी व काग्रेस के प्रमुख सदस्यों की स्वीकृति से उन दोनो पत्रों पर मानहानि के दावे दायर किये। भारत की कानून-संहिता मे मानहानि का दावा जीतना बडा कठिन एवं दुष्कर कार्य माना गया है। अक्सर लोग इससे बचते है। पर जमनालालजी ने बड़े परिश्रम, अध्ययन और लगन से इसे लड़ा। उसमे उन्हें जीत हासिल हुई। दोनों पत्रों के संपादको, मुद्रक व प्रकाशको को कैद की सजा हुई तथा जुर्माना और मुकद्दमे का खर्चा अदा करना पड़ा।

असहयोगी होने के कारण जमनालालजी सरकारी अदालतो मे जाने से बचते थे। पर जहा कांग्रेस, गाधीजी तथा राष्ट्रीय इज्जत पर प्रहार होने लगा, असत्य का प्रचार किया जाने लगा तथा चरित्र-हनन का प्रयत्न होने लगा तो अदालत मे जाने से भी वह नही रुके।

इसी वर्ष गांधीजी की प्रेरणा से एक 'राष्ट्रीय शिक्षा परिषद' का अधिवेशन वर्धा के 'मारवाड़ी शिक्षा मडल' ने वर्धा मे बुलाया। जिसके परिणाम-स्वरूप 'शिक्षा मे बुनियादी तालीम' का उद्गम हुआ और कांग्रेस-

[illegible] में पूरी [illegible] प्रयोग भी किये गए।

इस तरह [illegible] के साथ [illegible] की देख-रेख, व्यापारिक कामों के [illegible] और मित्रों के परिवारों के मामले, कठिन तथा उलझे हुए पारस्परिक झगड़ों तथा विवादों को सुलझाने में भी उनका काफी समय लगता रहा।

परिवार में इसी वर्ष जमनालालजी के बड़े पुत्र भाई कमलनयन का विवाह कलकत्ता के सुप्रसिद्ध व्यवसायी श्री मदनमोहनप्रसाद पोद्दार की पुत्री सावित्रीदेवी के साथ तथा दूसरी पुत्री मदालसा का विवाह मैनपुरी के प्रसिद्ध धर्मनिष्ठ वकील एवं विद्यानुरागी तथा चिन्तक श्री धर्मनारायण अग्रवाल के पुत्र श्री श्रीमन्नारायण के साथ सम्पन्न हुआ। उनकी भानजी ममता का विवाह कलकत्ता के सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका के बड़े पुत्र श्री गजानन हिम्मतसिंहका के साथ तथा भांजे प्रह्लाद पोद्दार का कलकत्ता के प्रसिद्ध तथा सर्वमान्य, समाजसेवी, कांग्रेसी तथा रचनात्मक कार्यकर्त्ता श्री सीताराम सेकसरिया की बड़ी पुत्री पन्ना के साथ इसी वर्ष सम्पन्न हुआ। इन विवाहों में अनेक महत्वपूर्ण सामाजिक सुधारों का आधार लिया गया और कई मामलों में ये आदर्श विवाह भी माने गये। ये चारों विवाह तो मारवाड़ी अग्रवाल समाज में ही हुए, पर अपने भतीजे श्री राधाकृष्ण बजाज का विवाह उन्होंने श्री कृष्णदास जाजू की, जो कि माहेश्वरी समाज के जाने-माने अग्रणी थे, पुत्री अनसूयादेवी से किया, जो अग्रवाल-माहेश्वरी का उप-जातीय विवाह था और समाज-सुधार की दिशा में उस समय एक महत्वपूर्ण कदम था।

इतना सब करते हुए उनका मनोमंथन तथा आध्यात्मिकता की ओर उनकी रुचि पहले की अपेक्षा अधिक तेजी से बढ़ती ही जाती थी। १९३७ में उसके स्पष्ट दर्शन उनके पत्रों और डायरियों में जगह-जगह मिलते हैं। इन उल्लेखों से प्रतीत होता है कि इस संबंध में वह पूज्य बापूजी तथा श्री किशोरलालभाई जैसे गुरुजनों के साथ तथा अपने परिवार के लोगों से भी अपने मनोभावों एवं मनोमंथन की चर्चा किया करते थे और उनको भी पूरे विश्वास में लिया करते थे।

सन् १९३८ का वर्ष सुभाषचन्द्र बोस के सभापतित्व में हरिपुरा कांग्रेस

करके अपना विधान हम स्वयं बना सकें, इसकी ब्रिटिश सरकार से मांग करेंगे। उसी कन्वेंशन में यह भी निश्चय किया गया कि १ अप्रैल को ब्रिटिश पार्लियामेंट द्वारा पास किये गए विधान 'गवर्नमेंट आफ इंडिया एक्ट १९३५" के लागू किये जाने के विरोध में सारे भारत में हड़ताल की जाय। परिणाम-स्वरूप उस दिन भारत-भर में शांतिपूर्ण पूरी हड़ताल रही।

इसी वर्ष चर्खा संघ के सभापतित्व का काम भी जमनालालजी पर आ गया और उनको चर्खा संघ के कार्य को सुदृढ़ करने तथा व्यावहारिक पद्धति पर खादी की अधिकतम उत्पत्ति एवं बिक्री का संगठन करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी लेनी पड़ी। इसके लिए उन्होंने सारे देश का दौरा किया।

वर्धा के दो समाचार-पत्रों 'चित्रा' तथा 'सावधान' में सन् १९२० में महात्मा गांधीजी द्वारा एकत्र किये गए 'तिलक स्वराज्य कोष' के हिसाब के संबंध में जमनालालजी, चूंकि वे कांग्रेस के कोषाध्यक्ष भी थे, तथा गांधीजी पर दुर्भावनापूर्ण एवं अपमानजनक लांछन लगाये गये थे। जमनालालजी ने गांधीजी व कांग्रेस के प्रमुख सदस्यों की स्वीकृति से उन दोनों पत्रों पर मानहानि के दावे दायर किये। भारत की कानून-संहिता में मानहानि का दावा जीतना बड़ा कठिन एवं दुष्कर कार्य माना गया है। अक्सर लोग इससे बचते हैं। पर जमनालालजी ने बड़े परिश्रम, अध्ययन और लगन से इसे लड़ा। उसमें उन्हें जीत हासिल हुई। दोनों पत्रों के संपादकों, मुद्रक व प्रकाशकों को कैद की सजा हुई तथा जुर्माना और मुकद्दमे का खर्चा अदा करना पड़ा।

असहयोगी होने के कारण जमनालालजी सरकारी अदालतों में जाने से बचते थे। पर जहां कांग्रेस, गांधीजी तथा राष्ट्रीय इज्जत पर प्रहार होने लगा, असत्य का प्रचार किया जाने लगा तथा चरित्र-हनन का प्रयत्न होने लगा तो अदालत में जाने से भी वह नहीं रुके।

इसी वर्ष गांधीजी की प्रेरणा से एक 'राष्ट्रीय शिक्षा परिषद' का अधिवेशन वर्धा के 'मारवाड़ी शिक्षा मंडल' ने वर्धा में बुलाया। जिसके परिणाम-स्वरूप 'शिक्षा में बुनियादी तालीम' का उद्‌गम हुआ और कांग्रेस-

शासित प्रांतो मे उसके सफल प्रयोग भी किये गए।

इन सब हलचलो के मध्य घर-गृहस्थी की देखभाल, व्यावसायिक कार्यों मे सलाह-मशविरा और मित्रो के परिवारो के नाजुक, कठिन तथा उलझे हुए पारस्परिक मतभेदो तथा विग्रहो को सुलझाने मे भी उनका काफी समय लगता रहा।

परिवार मे इसी वर्ष जमनालालजी के बड़े पुत्र भाई कमलनयन का विवाह कलकत्ता के सुप्रसिद्ध व्यवसायी श्री लक्ष्मणप्रसाद पोद्दार की पुत्री सावित्रीदेवी के साथ तथा दूसरी पुत्री मदालसा का विवाह मैनपुरी के प्रसिद्ध धर्मनिष्ठ वकील एव थियासोफिस्ट तथा चिंतक श्री धर्मनारायण अग्रवाल के पुत्र श्री श्रीमन्नारायण के साथ सपन्न हुआ। उनकी भानजी नर्मदा का विवाह कलकत्ता के सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका के बडे पुत्र श्री गजानन हिम्मतसिंहका के साथ तथा भाजे प्रह्लाद पोद्दार का कलकत्ता के प्रसिद्ध तथा सर्वमान्य, समाजसेवी, कांग्रेसी तथा रचनात्मक कार्यकर्ता श्री सीताराम सेकसरिया की बडी पुत्री पन्ना के साथ इसी वर्ष सपन्न हुआ। इन विवाहो मे अनेक महत्त्वपूर्ण सामाजिक सुधारो का आधार लिया गया और कई मामलो मे ये आदर्श विवाह भी माने गये। ये चारो विवाह तो मारवाडी अग्रवाल समाज मे ही हुए, पर अपने भतीजे श्री राधाकृष्ण बजाज का विवाह उन्होने श्री कृष्णदास जाजू की, जो कि माहेश्वरी समाज के जाने-माने अग्रणी थे, पुत्री अनसूयादेवी से किया, जो अग्रवाल-माहेश्वरी का उप-जातीय विवाह था और समाज-सुधार की दिशा मे उस समय एक महत्वपूर्ण कदम था।

इतना सब करते हुए उनका मनोमथन तथा आध्यात्मिकता की ओर उनकी रुचि पहले की अपेक्षा अधिक तेजी से बढती ही जाती थी। १९३७ मे उसके स्पष्ट दर्शन उनके पत्रो और डायरियो मे जगह-जगह मिलते हैं। इन उल्लेखो से प्रतीत होता है कि इस सबध मे वह पूज्य बापूजी तथा श्री किशोरलालभाई जैसे गुरुजनो के साथ तथा अपने परिवार के लोगो से भी अपने मनोभावो एव मनोमथन की चर्चा किया करते थे और उनको भी पूरे विश्वास मे लिया करते थे।

सन् १९३८ का वर्ष सुभाषचन्द्र बोस के सभापतित्व मे हरिपुरा कांग्रेस

करके अपना विधान हम स्वयं बना सकें, इसकी ब्रिटिश सरकार से मांग करेंगे। उसी कन्वेंशन में यह भी निश्चय किया गया कि १ अप्रैल को ब्रिटिश पार्लियामेंट द्वारा पास किये गए विधान 'गवर्नमेंट आफ इंडिया एक्ट १९३५" के लागू किये जाने के विरोध में सारे भारत में हड़ताल की जाय। परिणाम-स्वरूप उस दिन भारत-भर में शांतिपूर्ण पूरी हड़ताल रही।

इसी वर्ष चर्खा संघ के सभापतित्व का काम भी जमनालालजी पर आ गया और उनको चर्खा संघ के कार्य को सुदृढ़ करने तथा व्यावहारिक पद्धति पर खादी की अधिकतम उत्पत्ति एवं बिक्री का संगठन करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी लेनी पड़ी। इसके लिए उन्होंने सारे देश का दौरा किया।

वर्धा के दो समाचार-पत्रों 'चित्रा' तथा 'सावधान' में सन् १९२० में महात्मा गांधीजी द्वारा एकत्र किये गए 'तिलक स्वराज्य कोष' के हिसाब के संबंध में जमनालालजी, चूंकि वे कांग्रेस के कोषाध्यक्ष भी थे, तथा गांधीजी पर दुर्भावनापूर्ण एवं अपमानजनक लाछन लगाये गये थे। जमनालालजी ने गांधीजी व कांग्रेस के प्रमुख सदस्यों की स्वीकृति से उन दोनों पत्रों पर मानहानि के दावे दायर किये। भारत की कानून-संहिता में मानहानि का दावा जीतना बड़ा कठिन एवं दुष्कर कार्य माना गया है। अक्सर लोग इससे बचते हैं। पर जमनालालजी ने बड़े परिश्रम, अध्ययन और लगन से इसे लड़ा। उसमें उन्हें जीत हासिल हुई। दोनों पत्रों के संपादकों, मुद्रक व प्रकाशकों को कैद की सजा हुई तथा जुर्माना और मुकद्दमे का खर्चा अदा करना पड़ा।

असहयोगी होने के कारण जमनालालजी सरकारी अदालतों में जाने से बचते थे। पर जहां कांग्रेस, गांधीजी तथा राष्ट्रीय इज्जत पर प्रहार होने लगा, असत्य का प्रचार किया जाने लगा तथा चरित्र-हनन का प्रयत्न होने लगा तो अदालत में जाने से भी वह नहीं रुके।

इसी वर्ष गांधीजी की प्रेरणा से एक 'राष्ट्रीय शिक्षा परिषद' का अधिवेशन वर्धा के 'मारवाड़ी शिक्षा मंडल' ने वर्धा में बुलाया। जिसके परिणाम-स्वरूप 'शिक्षा में बुनियादी तालीम' का उद्गम हुआ और कांग्रेस-

सम्मिलित प्रांतों में इसके सफल प्रयोग भी किये गए।

इन सब हलचलों के मध्य घर-गृहस्थी की देखभाल, व्यावसायिक कामों में सलाह-मशविरा और मित्रों के परिवारों के नाजुक, कठिन तथा उलझे हुए पारस्परिक मतभेदों तथा विग्रहों को सुलझाने में भी उनका काफी समय लगता रहा।

परिवार में इसी वर्ष जमनालालजी के बड़े पुत्र भाई कमलनयन का विवाह कलकत्ता के सुप्रसिद्ध व्यवसायी श्री लक्ष्मणप्रसाद पोद्दार की पुत्री सावित्रीदेवी के साथ तथा दूसरी पुत्री मदालसा का विवाह मैनपुरी के प्रसिद्ध धर्मनिष्ठ वकील एवं थियासोफिस्ट तथा शिक्षक श्री धर्मनारायण अग्रवाल के पुत्र श्री श्रीमन्नारायण के साथ सपन्न हुआ। उनकी भानजी नर्मदा का विवाह कलकत्ता के सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका के बड़े पुत्र श्री गजानन हिम्मतसिंहका के साथ तथा भांजे प्रह्लाद पोद्दार का कलकत्ता के प्रसिद्ध तथा सर्वमान्य, समाजसेवी, कांग्रेसी तथा रचनात्मक कार्यकर्त्ता श्री सीताराम सेकसरिया की बड़ी पुत्री पन्ना के साथ इसी वर्ष सपन्न हुआ। इन विवाहों में अनेक महत्वपूर्ण सामाजिक सुधारों का आधार लिया गया और कई मामलों में ये आदर्श विवाह भी माने गये। ये चारों विवाह तो मारवाड़ी अग्रवाल समाज में ही हुए, पर अपने भतीजे श्री राधाकृष्ण बजाज का विवाह उन्होंने श्री कृष्णदास जाजू की, जो कि माहेश्वरी समाज के जाने-माने अग्रणी थे, पुत्री अनसूयादेवी से किया, जो अग्रवाल-माहेश्वरी का उप-जातीय विवाह था और समाज-सुधार की दिशा में उस समय एक महत्वपूर्ण कदम था।

इतना सब करते हुए उनका मनोमथन तथा आध्यात्मिकता की ओर उनकी रुचि पहले की अपेक्षा अधिक तेजी से बढ़ती ही जाती थी। १९३७ में उसके स्पष्ट दर्शन उनके पत्रों और डायरियों में जगह-जगह मिलते हैं। इन उल्लेखों से प्रतीत होता है कि इस सबंध में वह पूज्य बापूजी तथा श्री किशोरलालभाई जैसे गुरुजनों के साथ तथा अपने परिवार के लोगों से भी अपने मनोभावों एवं मनोमथन की चर्चा किया करते थे और उनको भी पूरे विश्वास में लिया करते थे।

सन् १९३८ का वर्ष सुभाषचन्द्र बोस के सभापतित्व में हरिपुरा कांग्रेस

अधिवेशन से प्रारंभ हुआ। सुभाषचन्द्र बोस स्वास्थ्य-सुधार के बाद १९३५ में ही विदेश से लौटे थे और भारत में आते ही नजरबन्द कर दिये गए थे। मार्च १९३७ में भारत सरकार ने उनको बिना शर्त जेल से रिहा कर दिया। एक वर्ष तक वह कांग्रेस की गतिविधियों को देखते रहे और उन्होंने इस बीच महात्माजी का भी विश्वास प्राप्त कर लिया। फलस्वरूप १९३८ में हरिपुरा कांग्रेस के लिए वह सर्वानुमति से राष्ट्रपति चुने गये थे।

हरिपुरा-कांग्रेस कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण रही। सरदार पटेल के निर्देशन में गुजरात प्रदेश में हुई यह कांग्रेस अपनी व्यवस्था, सुघड़ता, अनुशासन तथा उसमें हुए निर्णयों के कारण बहुत ही ज्यादा प्रभावकारी हुई।

नये शासन विधान के अंतर्गत पदग्रहण करने से पूर्व कांग्रेस ने प्रांतों के गवर्नरों के जरिये ब्रिटिश सरकार से यह आश्वासन मांगा था कि गवर्नर मंत्रिमंडल के वैधानिक कार्यों में अपने विशेषाधिकारों का उपयोग करके उनके कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। दुनिया में यह शायद पहली मिसाल थी कि एक 'विद्रोही' संस्था ने शासन से इस प्रकार आश्वासन लेकर शासन में पदग्रहण करके सत्ता सम्हाली हो।

यों तो कांग्रेस के लोग असेंबलियों में पूर्ण स्वराज्य की मांग करने और उसे प्राप्त करने की इच्छा से गये थे। पर बाहर आम सभाओं में कुछ इस प्रकार के धुंआधार भाषण भी हुए कि अंदर से हम लोग लेजिस्लेटिव कौंसिलों (विधान सभाओं) में "नये विधान को नष्ट करने के लिए" (टु रैक दी कांस्टीट्यूशन) जा रहे हैं। इसका ब्रिटिश सरकार पर यह असर पड़ा कि कांग्रेसी मेंबरों की नीयत साफ नहीं है। वे अड़ंगा-नीति अपनायेंगे। अतः परस्पर विश्वास के बजाय अविश्वास के वातावरण में नये कार्य की शुरुआत हुई। कई छोटी-मोटी बातों में गवर्नरों, सेक्रेटरियों तथा मंत्रियों में अक्सर मतभेद होने शुरू हो गये। पर बड़ा मतभेद तो उत्तरप्रदेश के मंत्रिमंडल और गवर्नर के बीच 'काकोरी षड्यंत्र केस' के कैदियों की रिहाई को लेकर पैदा हो गया और ऐन हरिपुरा-कांग्रेस के अवसर पर उत्तरप्रदेश तथा बिहार के मंत्रिमंडल ने त्यागपत्र दे दिया। बाद में महात्मा गांधी और वायसराय के हस्तक्षेप के फलस्वरूप समझौता हो गया और मंडल ने अपने त्यागपत्र वापस ले लिये, गवर्नरों ने अपना हस्तक्षेप

शासन ने लिया और कैदी छोड़ दिये गए।

प्रांतों में कांग्रेसी मंत्रिमंडल बनने के सिलसिले में तथा बनने के बाद उसके परिणामस्वरूप 'नरीमान-प्रकरण' का भी बहुत शोर-मचा। कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्ड ने बंबई प्रांत के नेतापद के लिए श्री के० एफ० नरीमन को छोड़कर श्री बाला साहेब खेर को चुना। इस पर बंबई में खास-कर पारसी लोगों में बड़ा तूफान उठ खड़ा हुआ। पर कांग्रेस पार्लमिंटरी बोर्ड की दृढ़ता से तथा जमनालालजी की कुशल और व्यावहारिक सूझ-बूझ से अप्रिय प्रसंग आने पर भी मामला सुलझा और कटुता कम हुई।

इस तरह एक तरफ तो उन पर काम का बोझा बढ़ता जाता था, उधर उनका स्वास्थ्य भी कमजोर होता जाता था। उनके कान में तकलीफ बनी रहती थी। फिर आध्यात्मिकता और अंतर्मंथन की ओर बढ़ती हुई उनकी रुचि को देखकर उन्होंने कांग्रेस कार्य समिति की सदस्यता से तथा 'गांधी सेवा संघ' की अध्यक्षता से त्यागपत्र देने का भी निश्चय किया। साथ ही १९३८ में उन्होंने महर्षि रमण के आश्रम की तथा पांडीचेरी के श्रीअर-विंदाश्रम की भी यात्रा की, जहां से उन्होंने मानसिक संताप व समाधान का प्रयत्न किया। बापूजी के सामने अनेक बार वह अपना मनोमंथन प्रकट कर समाधान प्राप्त करने गये भी पर अवकाश न मिल पाने के कारण वह उन्हें अधिक समय दे नहीं पाये। इसका जमनालालजी के मन पर बहुत असर हुआ।

इधर एक बात और हो गई। जमनालालजी और सरदार पटेल दोनों ही स्पष्टवादी व्यक्ति थे। कुछ बातों को लेकर दोनों में एक समय तीव्र मतभेद भी हो गये थे। जमनालालजी का कार्य-समिति से त्यागपत्र देने का यह भी, एक कारण रहा होगा। पर बाद के दिनों में आपसी बात-चीत द्वारा ही ये मतभेद मिट गये थे या बहुत घट गये थे।

इसी वर्ष मध्यप्रांत के मंत्रिमंडल के विवादों व मतभेदों ने उग्र रूप धारण कर लिया। कांग्रेस कार्य समिति की कई बैठकें हुईं, पर बापूजी के व्यक्तिगत प्रयत्नों के बावजूद मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डाक्टर नारायण भास्कर खरे अपनी जिद पर अटल रहे और परिणामस्वरूप डा० खरे के मंत्रिमंडल के अधिकांश मंत्रियों को इस्तीफे देने के बाद अंत में पंडित

रविशंकर शुक्ल के नेतृत्व में नया मंत्रिमंडल बना। बाद में डा० खरे को उग्र कार्रवाइयों के कारण उनको कांग्रेस का अनुशासन भंग के कारण से खेदपूर्वक निष्कासित करना पड़ा।

खरे-प्रकरण में तो जमनालालजी ने सक्रिय भाग लिया, क्योंकि यह मध्यप्रांत का प्रश्न था और तब वर्धा इसी प्रांत का भाग था, और जमनालालजी का विशेष क्षेत्र में प्रभाव भी था। इस कारण उसमें अंत में सफलता भी मिली।

ब्रिटिश भारत की जनता की जागृति का असर देशी रियासतों की प्रजा पर भी पड़ने लगा था और वहां भी लोक जागरण की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई थी। यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि क्या कांग्रेस के लोग जब ब्रिटिश भारत में उग्र स्वतंत्रता आंदोलन के लिए प्रयत्न करते हों तब क्या अपने पड़ोसी देशी रियासतों की जनता को वहां के निरंकुश राजाओं द्वारा दबाया जाना चुपचाप देखते रहें? इस विषय पर बहुत विचार-मंथन के बाद हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन (१९३८) में ही देशी रियासतों के संबंध में एक विशेष प्रस्ताव पास किया गया, जिसमें कहा गया कि ब्रिटिश भारत के राजनैतिक कार्यकर्ता देशी राज्यों की प्रजा के राजनीतिक जन-आंदोलनों में तो कोई प्रत्यक्ष भाग न लें, पर उनके नागरिक अधिकारों व सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यों में वे मददगार अवश्य हो सकते हैं। इसका असर यह हुआ कि अनेक देशी रियासतों में नागरिक अधिकारों तथा रचनात्मक कार्यों की तरफ स्थानीय लोगों की दिलचस्पी बढ़ी और उसके साथ ही कांग्रेस के कार्यकर्ताओं से सहयोग प्राप्त करने की मांग भी। जमनालालजी मूलतः राजस्थान के, उसमें भी जयपुर रियासत के ठिकाने अर्थात् रजवाड़े के निवासी थे। अतः राजस्थान, खासकर जयपुर के रियासती-कार्यकर्ताओं का जमनालालजी से आग्रह करना स्वाभाविक ही था कि वह अपना ध्यान राजस्थान खासकर जयपुर की ओर भी दें और अपने सुझाव, सलाह तथा दर्शन वहां के रचनात्मक तथा सामाजिक कार्यों में दें।

इस कारण जमनालालजी को अधिकांश समय (१९३८) राजस्थान की जयपुर रियासत की और सीकर ठिकाने के बीच हुए विवाद को हल करने में देना पड़ा। आगे जाकर जमनालालजी की मध्यस्थता से सीकर दरबार

और जयपुर शासन के बीच समझौता हो गया। इसी बीच जयपुर प्रजामण्डल का भी गठन हुआ और राज्य मे नागरिक स्वतंत्रता, अकाल सहायता आदि का रचनात्मक कार्य प्रजामण्डल ने अपने हाथ मे पहले लेना उचित समझा। सर्वश्री हीरालाल शास्त्री, कपूरचन्दजी पाटनी, चिरंजीलाल मिश्र, चिरंजीलाल अग्रवाल तथा, बाबा हरिश्चन्द्र आदि के आग्रह से जमनालालजी ने जयपुर प्रजामण्डल के कार्य मे अपना समय दिया। जयपुर मे उसके पहले अधिवेशन के अध्यक्ष भी वही हुए। इसी अधिवेशन मे जयपुर राज्य मे अकाल पीडितो सहायता का रचनात्मक कार्य एव नागरिक स्वतत्रता प्राप्त करने का एक कार्यक्रम बनाया गया।

जमनालालजी की मध्यप्रात से बाहर की, खासकर जयपुर की प्रवृत्तिया बढ जाने तथा नागपुर काग्रेस में मतभेद उत्पन्न हो जाने के कारण भी महात्माजी ने उनको यह सलाह दी कि "अगर नागपुर काग्रेस के लोग तुम्हारी सलाह के अनुसार कार्य न करे तो तुम उससे हट जाओ।" परिणाम-स्वरूप जमनालालजी ने नागपुर जिला काग्रेस की कमेटियो से त्याग-पत्र दे दिया। इस प्रकार उनको राजस्थान, विशेषकर जयपुर प्रजामडल के कार्य के लिए अधिक समय मिलने की संभावना हो गई।

इन कार्यों के साथ जमनालालजी के आत्मचिंतन और मनोमथन की प्रक्रिया, जो बहुत समय से चली आ रही थी, अब और जोर पकड गयी। वे अपने दोषो पर ज्यादा निगाह रखने लगे और वे उन्हे बहुत बडे व गभीर लगने लगे। बापू से मिलकर वह अपना मन खोलकर उनके सामने रख देना चाहते थे। पर देश इन दिनों जिन विकट समस्याओ से घिरा हुआ था और उसमें बापूजी का चर्चा, पत्र-व्यवहार, 'हरिजन' के लिए लेख लिखने-लिखाने मे इतना समय, चला जाता था कि जमनालालजी को उनका समय लेना उनके प्रति निर्दयता-सी लगी। अत उन्होने ४ नवम्बर १९३८ को एक विस्तृत पत्र अपने मनोभावों का विश्लेषण करते हुए लिखा। २९ नवम्बर को जब बापू से उनका मिलना हुआ तो उन्हे पता चला कि बापू को पत्र नही मिला। तब जमनालालजी ने बापू से कोई १। घण्टे दिल खोलकर बातें कीं। बातें बापू ने शान्ति से सुनी और जमनालालजी का समाधान करने का प्रयत्न किया। लेकिन उन्हे उससे पूरा सतोष

नही हुआ।

इधर जयपुर प्रजामडल और राज्य सरकार के बीच स्थिति विस्फोटक हो गयी थी और प्रजामडल तथा सरकार का तनाव यहां तक बढ़ गया कि जयपुर-शासन ने जमनालालजी को १२ दिसम्बर १६३८ को जयपुर राज्य मे प्र वेश-निषेध का नोटिस दे दिया। इस कारण जयपुर के मित्रों का जमनालालजी पर उनका जयपुर पहुचने का व सही मार्ग-दर्शन करने का आग्रह बढ़ने लगा।

इस बीच २६ दिसम्बर को जमनालालजी का बापूजी से मिलना हुआ। तब उन्होंने अपने बापू के नाम लिखे ४ नवम्बर के पत्र की नकल बापू को दिखाई और जयपुर की परिस्थिति भी बताई। उस दिन बापू का मौन दिन था। अत: बापूजी ने उनको अपने ये विचार लिखकर प्रकट किये :

"कल हम कुछ देर बात कर लेंगे, अथवा एक-दो दिन रहा जा सके तो रह जाओ। तुम्हारी बीमारी की दवा मुझे आसान लगती है। घबडाने का कोई कारण नही है। तुम्हारा विनाश है ही नही। पर तुम्हारे दोषों को मैं स्वीकार करता हू, क्योंकि मुझे तो ऐसे अनुभव हो चुके हैं। यहां गाठ सुलझाकर जाना, अभी तो इतना ही कहता हू।"

इस पर जमनालालजी ने कहा कि जयपुर-सरकार ने उनको अपने राज्य मे प्रवेश करने की जो मनाई की है, उसका विरोध करके वे जयपुर जाना आवश्यक समझते है। अत: रुक सकना सम्भव नही है। वे उसी दिन (२२-१२-३८ को) वर्धा से बम्बई होते हुए जयपुर के लिए रवाना हो गये। उसी दिन बापू ने जमनालालजी का समाधान करते हुए एक लम्बा पत्र लिखा।

२७ और २८ को बम्बई में अपने जरूरी काम निबटाकर व मित्रो आदि से मिल-मिलाकर जमनालालजी २८ की रात को जयपुर के लिए रवाना हुए। जब वे २९ ता० को तीसरे पहर सवाई माधोपुर स्टेशन पर जयपुर के लिए गाडी बदलने के लिए उतरे तो जयपुर पुलिस अधिकारियो ने उनको उनके जयपुर राज्य प्रवेश-निषेध की आज्ञा सुना दी और लिखित आदेश भी दे दिया।

इस समय तो स्टेशन पर उपस्थित जयपुर के मित्रो तथा पुलिस अधि-

साथियों में उन सबसे जो कुछ बातचीत हुई, उससे समझौते का कोई मार्ग निकल आने की सम्भावना नजर न आने के कारण वह निषेधाज्ञा भंग न करके दिल्ली चले गये। वहा सर्वश्री घनश्यामदास बिड़ला, हरिभाऊ उपाध्याय तथा हीरालाल शास्त्री आदि मित्रो मे विचार-विनिमय करके जमनालालजी महात्माजी से सलाह करने बारडोली गये। बापूजी उन दिनों विश्राम के लिए बारडोली गये हुए थे।

पूरा जनवरी महीना जयपुर, प्रजामण्डल के मित्रो, जयपुर सरकार तथा बापूजी एव सरदार पटेल आदि से पत्र-व्यवहार तथा मत्रणा आदि में बीता। जब समझौते की सारी आशा धूमिल हो गयी तो अन्त में यही तय रहा कि निषेधाज्ञा भग करनी चाहिए। तदनुसार वे वर्धा से दिल्ली आये और वहां से १ फरवरी १६३६ को सुबह की गाड़ी से जयपुर के लिए रवाना हो गये। उसी दिन शाम को जयपुर स्टेशन पर उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया और १२ ता० को उन्हे मोरांसागर गाव मे नजरबद कर दिया गया। गाव के आस-पास उन्हें घूमने, वहा के लोगो से मिलने-जुलने की छूट थी। पर बाहर के और लोगो से बिना सरकार की इजाजत के वे नही मिल सकते थे।

इस गिरफ्तारी व नजरबन्दी की प्रक्रिया मे १ फरवरी की सध्या से १२ ता० को ११ बजे मोरांसागर पहुचने तक उनको जिस कदर परेशान किया गया वह उनकी उन तारीखो की डायरी पढने से पता चलता है।

मोरासागर के एकातवास का जीवन उन्होंने गाव के आसपास के इलाके मे घूमने, वहा की हालत का अध्ययन करने, चिंतन-मनन करने, अपने निरीक्षक के साथ शतरज खेलने तथा पठन-पाठन, चितन आदि मे बिताया। वहीं उनके घुटने मे दर्द शुरू हुआ और जब वह अधिक बढ गया और वहा के इलाज से लाभ न हुआ तो सरकार ने उनको इलाज के निमित्त जयपुर के नजदीक कनवितो के बाग मे नजरबद करके रखा, ताकि वहा रहते उनका इलाज जयपुर के अस्पताल मे किया जा सके। वहा इलाज का ठीक प्रबन्ध तो हुआ, पर उससे भी उसमे विशेष लाभ नही हुआ।

वहीं पर नजरबन्दी की अवस्था मे ही राज्य-वर्ग के मित्रो द्वारा प्रजा-मंडल और जयपुर-सरकार में समझौते के प्रयत्न तथा वार्त्ताएं शुरू हुई।

उनमें जमनालालजी की सहनशीलता, सूझबूझ एवं प्रत्युत्पन्नमति के का
अन्त में जयपुर के गृह मन्त्रि श्री हरिसिंह के माध्यम से तथा बाद में
महाराजा से हुई मन्त्रणा अनेक पत्रों व वार्ताओं आदि के परिणामस्व
एक समझौता हुआ। उसके फलस्वरूप जमनालालजी को ता० ९-८-३९
दिन नजरबन्दी से मुक्त कर दिया गया और गांधीजी की सलाह से
अगस्त १९३९ को जयपुर का सत्याग्रह बन्द कर दिया गया।

१२ फरवरी से ९ अगस्त की नजरबन्दी के काल में उन्होंने भ
चिंतन, मनन तथा आध्यात्मिक पठन-पाठन जारी रखा। नियमित पू
प्रार्थना करना तथा आसपास के दुखी जनों के साथ सम्पर्क करके उ
दुख-दर्द जानना व यथाशक्ति उनको सहायता पहुंचाने आदि का का
करते रहे। इस प्रकार वे दो प्रकार की लड़ाई एक समय में ही लड़ रहे
अन्दर से अपने को निष्कलुष बनाने की तथा बाहर से जयपुर-राज्य
राजनैतिक आन्दोलन का नेतृत्व साथी कार्यकर्ताओं, मित्रों, साथियों
सलाह-मशविरे से मार्ग-दर्शन देने की।

९ फरवरी को मुक्त होने के बाद वे १२ फरवरी को बापूजी से मि
वर्धा चले गये।

बापूजी के सामने उन्होंने जयपुर सत्याग्रह तथा प्रजामंडल की ग
विधियों की सारी परिस्थिति रखी। बापूजी ने उनको जयपुर में हुए स
झौते के अनुसार आगे प्रत्यक्ष कार्य करने की जिम्मेदारी जयपुर के मित्र
कार्यकर्ताओं पर डालकर कुछ समय अपने स्वास्थ्य सुधार पर अधिक ध्
देने का आग्रह किया। इसके फलस्वरूप उनका कुछ समय पूना के ने
चरोर क्लीनिक में डा० मेहता की चिकित्सा में बीता।

इसी बीच जयपुर महाराज का बम्बई में एक्सीडेंट हो गया। जम
लालजी उनके स्वास्थ्य के समाचार जानने को अस्पताल में जाकर उ
मिले। उस मुलाकात का अच्छा असर पड़ा और उसके बाद हुई चर्चाअ
परिणाम-स्वरूप अन्त में सीकर के प्रकरण का तथा जयपुर-समस्या
सुखद हल निकला।

जयपुर सत्याग्रह के दिनों में सत्याग्रह का संचालन प्राय. आगर
होता रहा और वहां इस कार्य मे जयपुर के मित्रों-कार्यकर्ताओं व सा

के अलावा सर्वश्री घनश्यामदास बिड़ला, हरिभाऊ उपाध्याय, श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, राधाकृष्ण बजाज, ब्रजेन्द्रप्रसाद शर्मा आदि मित्रों व स्नेहियों को भी उनको अत्यधिक सक्रिय सहायता व सहयोग मिला।

इसी वर्ष (१९३९) में जमनालालजी के प्रयत्नों तथा बम्बई के प्रसिद्ध उद्योगपति एवं व्यापारी श्री गोविन्दराम सेकसरिया की उदारतापूर्ण सहायता से वर्धा में सेकसरिया वाणिज्य महाविद्यालय की १६-१०-३९ को स्थापना हुई। जमनालालजी की रुचि शुरू से ही युवकों को व्यावसायिक शिक्षा दिये जाने में रही है और वर्धा में इस प्रकार के महाविद्यालय की स्थापना उनके एक उद्देश्य की पूर्ति थी।

कांग्रेस की राजनैतिक एवं राष्ट्रीय दृष्टि से तो यह वर्ष बहुत ही घटनापूर्ण रहा। महात्मा गांधी की इच्छा के विरुद्ध, जबलपुर में होने वाली १९३९ की कांग्रेस के सभापति-पद के लिए श्री सुभाषचन्द्र बोस पुनः खड़े हुए। गांधीजी के विचारों और सुभाषबाबू के विचारों में हिंसा-अहिंसा तथा सत्याग्रह करने न करने आदि के प्रश्न को लेकर मतभेद उत्पन्न हो गये। परिणाम यह हुआ कि गांधीजी ने राष्ट्रपति पद के लिये सुभाषबाबू और पट्टाभि के चुनाव में पट्टाभि की हार को अपनी हार माना। इससे गांधी-समर्थक कांग्रेसी हलकों में इस चुनाव-परिणाम को बड़ी गम्भीरता से लिया गया और बड़ी हलचल मच गई। इस बीच सुभाषबाबू बीमार हो गये। अपनी बीमारी की अवस्था में ही उन्हें त्रिपुरी (जबलपुर) कांग्रेस की अध्यक्षता करनी पड़ी। कांग्रेस में गांधीजी व सुभाषबाबू के समर्थकों के बीच बड़ा गम्भीर विरोधी वातावरण पैदा हो गया। समझौते के कई प्रयत्न हुए, पर अन्त में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी तथा विषय समिति में महात्मा गांधी के नेतृत्व में पूर्ण विश्वास प्रकट करते हुए पंडित गोविंदवल्लभ पंत का यह प्रस्ताव, कि "कांग्रेस के अध्यक्ष महात्मा गांधी की सलाह से अपनी कार्यकारिणी का संगठन करें," सर्वसम्मति से पास हो गया।

इधर यह सब हो रहा था, उधर उन्हीं दिनों गांधीजी राजकोट के सत्याग्रह आन्दोलन में पूरी तरह उलझे हुए थे। सत्याग्रह शुरू हो गया था और पूज्य कस्तूरबा और मणिबेन पटेल को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया

गया था। महात्माजी को आमरण अनशन करने तक का भी निर्णय करना पड़ा था। अन्त में भारत के वायसराय लार्ड लिनलिथगो के बीच में पड़ने से विवाद का निपटारा हुआ और तय हुआ कि भारत के 'चीफ न्यायाधीश' सर मॉरिस ग्वायर को पंच मानकर वे जो फैसला कर दें, उसे दोनों पक्ष मानेंगे। पंच के निर्णय ने महात्माजी की मान्यता को सही माना। इधर राजकोट के दरबार के क्षेत्र में पुनः असन्तोष उमड़ा। तब गांधीजी ने यह कहकर कि मेरे अनशन के दबाव के कारण वायसराय के द्वारा राजकोट-दरबार पर शायद अनावश्यक दबाव पड़ा हो और यह एक प्रकार की हिंसा ही है, अतः 'ग्वायर अवार्ड' को कार्यान्वित न करके जनता के दिल को जीतने का कार्य महात्माजी ने राजकोट दरबार की अपनी सदिच्छा पर छोड़ दिया और इस प्रकार पूर्ण अहिंसात्मक तथा हृदय-परिवर्तन-कारी रुख अपनाकर अपने-आपको राजकोट-प्रकरण से एकदम अलग कर लिया।

इधर कांग्रेस अधिवेशन के बाद सुभाषबाबू का स्वास्थ्य अधिक खराब हो गया और अपने स्वास्थ्य सुधारने व कुछ दिन विश्राम करने के लिए वे एकांत स्थान पर चले गये और २-३ मास तक नई कार्य समिति नहीं बनाई जा सकी। नेताओं ने इस बीच काफी दौड़धूप, सलाह-मशविरा और पत्र व्यवहार किये, ताकि महात्माजी और सुभाषबाबू के बीच समन्वय की स्थिति बन सके, पर परिणाम नहीं निकला। अन्त में सुभाषबाबू ने कांग्रेस की अध्यक्षता से त्यागपत्र दे दिया। इस परिस्थिति से निबटने और अंतिम निर्णय लेने के लिए कांग्रेस कार्य समिति ने कलकत्ता में कांग्रेस महासमिति का विशेष अधिवेशन करने का निश्चय किया गया और श्री राजेन्द्रबाबू को उसका अध्यक्ष बनाया गया। इस निर्णय पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करते हुए सुभाषबाबू ने एक विवादास्पद वक्तव्य प्रकाशित किया। उस पर कांग्रेस के नये अध्यक्ष श्री राजेन्द्रबाबू ने सुभाषबाबू से उस बारे में अपना स्पष्टीकरण मांगा। सुभाषबाबू ने जो स्पष्टीकरण दिया वह कार्य समिति को स्वीकार नहीं हुआ और अंततः सुभाषबाबू को कांग्रेस का अनुशासन भंग करने के आरोप में छः वर्ष के लिए कांग्रेस से निलंबित कर दिया गया।

सुभाषबाबू ने फार्वर्ड ब्लाक के नाम से एक नई संस्था बनाई और उस

के अन्तर्गत अपना कार्यक्रम बनाकर काम करने लगे।

यह वर्ष (१६३६) विश्व राजनैतिक दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण एवं घटनापूर्ण रहा। यूरोप में हिटलर का असामान्य रूप से एक धूमकेतु के जैसा उदय हुआ। उसने जर्मन देश को जगाकर और युद्धरत करके आसपास के देशों को हड़पना-शुरू कर दिया।

महात्मा गांधी ने २३ जुलाई को शान्ति और अहिंसा की अपील करते हुए एक खुला पत्र हिटलर को लिखा, जो अपने में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज बन गया है। पर युद्ध के मद से चूर हिटलर को गांधीजी की यह शान्त व अहिंसक वाणी कहां सुनाई देती! ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री चेम्बरलेन ने हिटलर से म्यूनिख में एक समझौता किया। समझौते की स्याही सूखने भी नहीं पाई थी कि हिटलर ने उसे तोड़कर अपना अग्रगामी अभियान जारी रखा और पोलैंड पर हमला कर दिया। परिणामस्वरूप १ सितम्बर १६३६ को विश्व का द्वितीय महायुद्ध छिड़ गया। इसमें एक ओर शुरू में ब्रिटेन, फ्रांस, अमरीका, चीन आदि देश थे और दूसरी ओर जर्मनी और रूस थे। बाद में इटली भी उसके साथ शामिल हो गया। बाद में जापान के जर्मनी के साथ शामिल हो जाने पर रूस ब्रिटेन आदि मित्र-राष्ट्रों के साथ हो गया और जर्मनी ने रूस पर भी हमला कर दिया।

इधर भारत के वायसराय ने भारत के नये विधान के अन्तर्गत निर्वाचित प्रतिनिधियों की राय लिये बिना ही ३ सितम्बर १६३६ को भारत को ब्रिटेन के साथ युद्ध में शामिल घोषित कर दिया। इसकी कांग्रेस पर तथा देश-भर में बुरी प्रतिक्रिया हुई। वाइसराय ने भारतीय नेताओं को वार्ता के लिए बुलाया। उनमें चर्चाएं हुई, पर कोई परिणाम नहीं निकला। अन्त में कांग्रेस मन्त्रिमंडलों ने २२ अक्तूबर १६३६ को त्यागपत्र दे दिये और यह मांग पेश की कि ब्रिटेन अपने युद्ध के उद्देश्यों को स्पष्ट घोषित करे और भारत के भविष्य का निर्णय करने के लिए एक कान्स्टीट्यूएण्ट असेम्बली (राष्ट्रीय पंचायत) बुलाई जाय।

इसी वर्ष २ अक्तूबर को महात्मा गांधी की ७१वीं वर्षगांठ विश्व-भर में और खासकर भारतवर्ष में मनाई गई। उस अवसर पर डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन द्वारा संपादित ग्रन्थ निकाला गया, जिसे आइन्सटाइन

यूनिवर्सिटी प्रेस, लन्दन ने प्रकाशित किया। इसमें संसार-भर के लेखकों, विचारकों व चिंतकों के महात्माजी के जीवन विषयक तथा उनकी विचार-धारा के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण लेख थे।

इन तीन वर्षों की देश की उपरोक्त परिस्थिति में अति परिश्रम के कारण तथा लम्बे अर्से तक जेल में रहने के कारण जमनालालजी को स्वास्थ्य-सुधार के लिए नेचर क्योर क्लीनिक पूना, नासिक आदि जगहों में रहना पड़ा। शारीरिक स्वास्थ्य तो ठीक होने लगा, पर उनका मनो-मथन तो बढ़ता ही गया। उन्होंने बापूजी को कई पत्र लिखे, चर्चाएं कीं, किशोरलालभाई से परामर्श किया। अपने परिवार के सदस्यों से भी दिल की बातें कहीं व समाधान खोजने का प्रयत्न किया, पर ऐसा लगता है कि शारीरिक अस्वास्थ्य के साथ ही उनकी आत्मा की विफलता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। उनको अपनी छोटी-छोटी त्रुटियां भी बहुत बड़ी दिखने लगी थीं और वे अन्तर में बड़ी छटपटाहट अनुभव कर रहे थे। वे आत्मिक उन्नति व आध्यात्मिक उत्थान की ओर बहुत तेजी से अग्रसर होना चाहते थे और उसमें अपनी धीमी गति के प्रति वे बड़े दुःखी व व्याकुल थे।

तीन वर्षों की इन डायरियों में उनके इस प्रकार के दुतरफा संघर्ष की झांकी मिलेगी। वे अपने को कार्यों में व्यस्त रखते हैं। बापूजी के कार्य की, कार्यकर्त्ताओं की, रचनात्मक संस्थाओं की, परिवार की, आत्मीयजनों की अपने मित्रों तथा स्नेहियों की खैर-खबर, पत्र-व्यवहार, बातचीत, विचार-विनिमय आदि से जानकारी रखते हैं। समस्याओं का समाधान खोजते हैं। परिवार के तथा समाज के कार्यों में सम्मिलित होते हैं—हंसी-मजाक भी करते हैं, पर हर दिन एक क्षण को भी वह अपने अन्दर झांकने से नहीं चूकते थे। यह प्रक्रिया आगे के वरसों में और जोर पकड़ गयी और इसका परिणाम क्या निकला, यह पाठकों को उनकी आगे की, १९४०-४१-४२ की डायरियों को पढ़ने से ज्ञात होगा।

—मार्तण्ड उपाध्याय

जमनालाल बजाज
की
डायरी

•

यूनिवर्सिटी प्रेस, लन्दन ने प्रकाशित किया।) इसमें संसार-भर के लेखकों, विचारकों व विद्वानों के महात्माजी के जीवन विषयक तथा उनकी विचार-धारा के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण लेख थे।

इन तीन वर्षों की देश की उत्तरोत्तर परिस्थिति में अति परिश्रम के कारण तथा लम्बे अर्से तक जेल में रहने के कारण जमनालालजी को स्वास्थ्य-सुधार के लिए नेचर क्योर क्लीनिक पूना, नासिक आदि जगहों में रहना पड़ा। शारीरिक स्वास्थ्य तो ठीक होने लगा, पर उनका मनो-मंथन तो बढ़ता ही गया। उन्होंने बापूजी को कई पत्र लिखे, चर्चाएं कीं, किशोरलालभाई से परामर्श किया। अपने परिवार के सदस्यों से भी दिल की बातें कहीं व समाधान खोजने का प्रयत्न किया, पर ऐसा लगता है कि शारीरिक अस्वास्थ्य के साथ ही उनकी आत्मा की विकलता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। उनको अपनी छोटी-छोटी त्रुटियां भी बहुत बड़ी दिखने लगी थीं और वे अन्दर में बड़ी छटपटाहट अनुभव कर रहे थे। वे आत्मिक उन्नति व आध्यात्मिक उत्थान की ओर बहुत तेजी से अग्रसर होना चाहते थे और उसमें अपनी धीमी गति के प्रति वे बड़े दुखी व व्याकुल थे।

तीन वर्षों की इन डायरियों में उनके इस प्रकार के दुतरफा संघर्ष की झांकी मिलेगी। वे अपने को कार्यों में व्यस्त रखते हैं। बापूजी के कार्य की, कार्यकर्ताओं की, रचनात्मक संस्थाओं की, परिवार की, आत्मीयजनों की अपने मित्रों तथा स्नेहियों की खैर-खबर, पत्र-व्यवहार, बातचीत, विचार-विनिमय आदि से जानकारी रखते हैं। समस्याओं का समाधान खोजते हैं। परिवार के तथा समाज के कार्यों में सम्मिलित होते हैं—हंसी-मजाक भी करते हैं, पर हर दिन एक क्षण को भी वह अपने अन्दर झांकने से नहीं चूकते थे। यह प्रक्रिया आगे के बरसों में और जोर पकड़ गयी और इसका परिणाम क्या निकला, यह पाठकों को उनकी आगे की, १९४०-४१-४२ की डायरियों को पढ़ने से ज्ञात होगा।

—मार्तण्ड उपाध्याय

जमनालाल वजाज

की

डायरी

•

१९३७

वर्धा, १-१-१९३७

देर से उठा। कई लोग मिलने आ गये। उनसे बातें की।
प्रार्थना व गीता पाठ।
महिला आश्रम में भागीरथी बहिन, रतन बहन आदि से मिलना।
काका साहब व नरहरि भाई से बातचीत।
बैतूल के बिहारीलाल आदि कई लोग आ गये थे। श्री तुकडोजी के साथ भी बहुत से लोग थे। श्रीमती अप्पास्वामी व कुमारप्पा आदि भी भोजन को आये। २०-२५ जनों की पंगत हुई।
श्रीमन्नारायण व आर्यनायकम से मारवाड़ी शिक्षा मण्डल, नूतन भारत विद्यालय की मराठी, उर्दू शाखा आदि के बारे में देर तक विचार-विनिमय। इमारतों के बारे में भी।
मार्तण्ड उपाध्याय व बैजनाथजी से 'सस्ता साहित्य मण्डल' के बारे में विचार-विनिमय।
चि० लक्ष्मी की चिन्ता।

वर्धा, नागपुर २-१-३७

प्रार्थना के बाद गीता पाठ। 'मधुकर' में से 'कृष्ण भक्ति का रोग' पढ़ा।
जल्दी तैयार होकर स्टेशन।
चि० रामनिवास रुइया मेल से कलकत्ता गया। उसके साथ फर्स्ट क्लास का टिकिट लेकर नागपुर तक उससे बातचीत करते हुए गये।
नागपुर में डा० खरे से 'अभ्यंकर स्मारक' के बारे में बातचीत। आज 'अभ्यंकर-दिवस' था।
पूनमचन्द रांका से वहां की स्थिति पर विचार-विनिमय तथा समझना। उनके यहां भोजन।
गोरीजी व गोमीबाई को लेकर महाराजबाग, स्त्रियों के अस्पताल में, गये।

डा० मार्टिन नही मिली। चि० शान्ता भी नहीं मिली। दाण्डेकर के घर गये।
दाण्डेकर व सहस्त्रबुद्धे के आग्रह के कारण डा० खरे से देर तक आपस के समझौते के बारे मे बातचीत। पूनमचन्द को भी बुलाया। उसे भी समझाया।
'अभ्यकर स्मारक' सभा हुई। व्याख्यान हुए।
रात २।। बजे तक पूनमचन्द व उनके मित्र व खरे व उनके दल के लोगो से बातचीत। आखिर समझौते की आशा हुई।
मोटर से वर्धा।

वर्धा, ३-१-३७

रात को ४।। बजे मोटर से वर्धा आया। इस कारण देर से उठना हुआ। पोलक व अगाथा हेरिसन से बातचीत।
सत्यनारायणजी व श्रीमन् मे हिन्दी प्रचार के बारे मे देर तक बातचीत होती रही। उन्होने टण्डनजी के मन मे जो डर है, वह कहा।
मरलावाला व सिलहट-आश्रम के बारे मे बातें।
श्री भिड़े व दामले से मराठी ब्रान्च के बारे मे चर्चा हुई।
३ से ६ तक मारवाडी शिक्षा मण्डल की साधारण सभा। कार्यकारिणी मीटिंग हुई तथा विधान कान्फ्रेंस भी हुई। नई गवर्निंग कमेटी ने आज से काम शुरु किया। महत्व के काम का फैसला हुआ। मराठी शाखा व उर्दू शाखा रखने का निश्चय हुआ।
श्री मथुरादासजी मोहता से थोडी बातें।
चिरजीलाल बडजाते से बैंक वगैरा की बातें।

४-१-३७

श्रीमती अगाथा हेरिसन के साथ मे सेगाव जाने की तैयारी। रास्ते मे रतन शास्त्री साथ हो गई। रास्ते मे राजकुमारी अमृत कुवर वर्धा आती हुई मिली। उनके साथ वापस आ गये।
मारवाडी विद्यालय (अब नूतन भारत विद्यालय) मे राजकुमारी अमृत कौर का व्याख्यान हुआ।
'क्रानीकल' मे जवाहरलाल के विवाह की खबर पढकर थोडा आश्चर्य

४-१-३७

चि० राधाकृष्ण के साथ महिला आश्रम विद्यालय का स्थान निश्चित किया। मालतीदेवी बहन से मिला। चि० सज्जन नीमच से आई, उसे सान्त्वना दी।

महादेवीअम्मा ने मंदिर व दासीराम पुजारी का खुलासा किया। उससे एक प्रकार से समाधान मालूम हुआ।

डा० जाकिर हुसैन, खान साहब व मैंने मिलकर जामिया ट्रस्ट, उसकी सहायता तथा खजानची पद के बारे में स्पष्ट व खुलासेवार चर्चा।

'नूतन भारत विद्यालय' व महिला आश्रम में डा० जाकिर के सुन्दर भाषण हुए।

डा० जाकिर व खान साहब के साथ सेगांव जाकर आया। बापू का विचार पूना व तावणगोर जाने का है।

पुखराज पटवारी वगैरा आये थे।

सोलह हजार रुपये, जो मुस्लिम छात्रवृत्ति के लिए रखे थे, वे जामिया को देने का निश्चय हुआ।

वर्धा-नागपुर ६-१-३७

विचार व आत्म-निरीक्षण।

पत्र-व्यवहार।

डॉ० जाकिर हुसैन को पत्र व १६ हजार की हुंडी जामिया के लिए दी।

मोतूबाई बजाज, गंगाबिसन, पूनमचन्द, चिरंजीलाल के साथ नागपुर गये। मोतूबाई को आपरेशन व भावी जीवन रहन-सहन आदि के बारे में समझाया।

डा० मार्टिन नही मिली। चि० शान्ता भी नही मिली। दाण्डेकर के घर गये।
दाण्डेकर व सहस्रबुद्धे के आग्रह के कारण डा० खरे से देर तक आपस के समझौते के बारे मे बातचीत। पूनमचन्द को भी बुलाया। उसे भी समझाया।
'अभ्यंकर स्मारक' सभा हुई। व्याख्यान हुए।
रात २॥ बजे तक पूनमचन्द व उनके मित्र व खरे व उनके दल के लोगों से बातचीत। आखिर समझौते की आशा हुई।
मोटर से वर्धा।

वर्धा, ३-१-३७

रात को ४॥ बजे मोटर से वर्धा आया। इस कारण देर से उठना हुआ।
पोलक व अगाथा हेरिसन से बातचीत।
सत्यनारायणजी व श्रीमन् से हिन्दी प्रचार के बारे मे देर तक बातचीत होती रही। उन्होंने टण्डनजी के मन मे जो डर है, वह कहा।
गरलावाला व मिलहट-आश्रम के बारे में बातें।
श्री भिड़े व दामले से मराठी ग्रान्ट के बारे में चर्चा हुई।
३ से ६ तक मारवाडी शिक्षा मण्डल की साधारण सभा। कार्यकारिणी मीटिंग हुई तथा विधान कान्फ्रेंस भी हुई। नई गवर्निंग कमेटी ने आज से काम शुरू किया। महत्व के काम का फैसला हुआ। मराठी शाखा व उर्दू शाखा रखने का निश्चय हुआ।
श्री मथुरादासजी मोहता से थोड़ी बातें।
चिरंजीलाल बड़जाते से बैंक वगैरा की बातें।

४-१-३७

श्रीमती अगाथा हेरिसन के साथ मे सेगांव जाने की तैयारी। रास्ते मे रतन शास्त्री साथ हो गई। रास्ते मे राजकुमारी अमृत कुंवर वर्धा आती हुई मिली। उनके साथ वापस आ गये।
मारवाडी विद्यालय (अब नूतन भारत विद्यालय) मे राजकुमारी अमृत कौर का व्याख्यान हुआ।
'क्रानीकल' मे जवाहरलाल के विवाह की खबर पढ़कर थोड़ा आश्चर्य

हुआ।
डा० खान साहब निर्विरोध चुने गये।
अब्दुल गफ्फार खान व उनके लड़के लाली व मेहर में उनकी पढ़ाई आदि के बारे में विचार।
राजकुमारी अमृत कुंवर के साथ सेगांव जाकर आया। बापू का मौन था।
डा० जाकिर हुसैन (जामिया वाले) दिल्ली से आये।
नागपुर से सोनू बाई व छोटी बाई आपरेशन के लिए आए।

५-१-३७

चि० राधाकृष्ण के साथ महिला आश्रम विद्यालय का स्थान निश्चित किया। भागीरथी बहन से मिला। चि० सज्जन नीमच से आई; उसे सान्त्वना दी।
महादेवीअम्मा ने मंदिर व घासीराम पुजारी का खुलासा किया। उससे एक प्रकार से समाधान मालूम हुआ।
डा० जाकिर हुसैन, खान साहब व मैंने मिलकर जामिया ट्रस्ट, उसकी सहायता तथा खजानची पद के बारे में स्पष्ट व खुलासेवार चर्चा।
'नूतन भारत विद्यालय' व महिला आश्रम में डा० जाकिर के सुन्दर भाषण हुए।
डा० जाकिर व खान साहब के साथ सेगांव जाकर आया। बापू का विचार पूना व त्रावणकोर जाने का है।
पुखराज पटवाई वगैरा आये थे।
सोलह हजार रुपये, जो मुस्लिम छात्रवृत्ति के लिए रखे थे, वे जामिया को देने का निश्चय हुआ।

वर्धा-नागपुर ६-१-३७

विचार व आत्म-निरीक्षण।
पत्र-व्यवहार।
डॉ० जाकिर हुसैन को पत्र व १६ हजार की हुंडी जामिया के लिए दी।
सोनूबाई बजाज, गंगाबिसन, पूनमचन्द, चिरंजीलाल के साथ नागपुर गये। सोनूबाई को आपरेशन व भावी जीवन रहन-सहन आदि के बारे में समझाया।

डा० मार्टिन नहीं मिली। मि० शान्ता भी नहीं मिली। दाण्डेकर के घर गये।

दाण्डेकर व सहस्रबुद्धे के आग्रह के कारण डा० खरे से देर तक आपस के समझौते के बारे में बातचीत। पूनमचन्द को भी बुलाया। उन्हें भी समझाया।

'अभ्यंकर स्मारक' सभा हुई। व्याख्यान हुए।

रात २॥ बजे तक पूनमचन्द व उनके मित्र व खरे व उनके दल के लोगों से बातचीत। आखिर समझौते की आशा हुई।

मोटर से वर्धा।

वर्धा, ३-१-३७

रात को ४॥ बजे मोटर से वर्धा आया। इस कारण देर से उठना हुआ।

पोलक व अगाथा हैरिसन से बातचीत।

सत्यनारायणजी व श्रीमन् से हिन्दी प्रचार के बारे में देर तक बातचीत होती रही। उन्होंने टण्डनजी के मन में जो डर है, वह कहा।

सरलावाला व सिलहट-आश्रम के बारे में बातें।

श्री भिडे व दामले से मराठी ब्रान्च के बारे में चर्चा हुई।

३ से ६ तक मारवाड़ी शिक्षा मण्डल की साधारण सभा। कार्यकारिणी मीटिंग हुई तथा विधान कान्फ्रेंस भी हुई। नई गवर्निंग कमेटी ने आज से काम शुरू किया। महत्व के काम का फैसला हुआ। मराठी शाखा रखने का निश्चय हुआ।

श्री [illegible]

हुआ।
डा० खान साहब निर्विरोध चुने गये।
अब्दुल गफ्फार खान व उनके लड़के लाली व मेहर से उनकी पढ़ाई आदि के बारे में विचार।
राजकुमारी अमृत कुंवर के साथ सेगांव जाकर आया। बापू का मौन था।
डा० जाकिर हुसैन (जामिया वाले) दिल्ली से आये।
नागपुर से सोनू बाई व छोटी बाई आपरेशन के लिए आए।

५-१-३७

चि० राधाकृष्ण के साथ महिला आश्रम विद्यालय का स्थान निश्चित किया। भागीरथी बहन से मिला। चि० सज्जन नीमच से आई, उसे सान्त्वना दी।
महादेवीअम्मा ने मंदिर व घासीराम पुजारी का खुलासा किया। उससे एक प्रकार से समाधान मालूम हुआ।
डा० जाकिर हुसैन, खान साहब व मैंने मिलकर जामिया ट्रस्ट, उसकी सहायता तथा खजानची पद के बारे में स्पष्ट व खुलासेवार चर्चा।
'नूतन भारत विद्यालय' व महिला आश्रम में डा० जाकिर के सुन्दर भाषण हुए।
डा० जाकिर व खान साहब के साथ सेगांव जाकर आया। बापू का विचार पूना व त्रावणकोर जाने का है।
पुखराज घटबाई वगैरा आये थे।
सोलह हजार रुपये, जो मुस्लिम छात्रवृत्ति के लिए रखे थे, वे जामिया को देने का निश्चय हुआ।

वर्धा-नागपुर ६-१-३७

विचार व आत्म-निरीक्षण।
पत्र-व्यवहार।
डॉ० जाकिर हुसैन को पत्र व १६ हजार की हुंडी जामिया के लिए दी।
सोनूबाई बजाज, गंगाविसन, पूनमचन्द, चिरंजीलाल के साथ नागपुर गये। सोनूबाई को आपरेशन व भावी जीवन रहन-सहन आदि के बारे में समझाया।

नागपुर में पूनमचन्द रांका, छगनलाल भारुका, बजरंग ठेकेदार से बातें।
बाद में डा० खरे से मिले। उनकी मन:स्थिति व विचार-पद्धति सन्तोष-
जनक मालूम हुई। पूनमचन्द का व्यवहार सन्तोषजनक मालूम हुआ।
उसका व घनीबाई का फार्म भरवाया। अवारी का व्यवहार ठीक नहीं
मालूम हुआ। आशा है वह समझ जायेगा। डा० खरे से नगर कमेटी,
अभ्यंकर ट्रस्ट कमेटी व असेम्बली सीट का साफ खुलासा।
ग्रान्ट ट्रक से वर्धा। बापूजी पूना त्रावणकोर गये।
परमेश्वरी व ईश्वरदयाल, (देहली वाले) से डेअरी की बातें।

वर्धा, ७-१-३७

कु० अगाथा हेरिसन कलकत्ता गई।
महादेवी अम्मा, प्रकाशवती व चि० सज्जन से बातचीत। प्रकाश व सज्जन
को भली प्रकार समझाया। उसके ध्यान मे आया।
चि० मदालसा का स्वास्थ्य आज ठीक मालूम हुआ।
बच्छराज-जमनालाल दुकान के काम की सभा। चि० गंगाविसन व लक्ष्मी
से चि० पार्वती की सगाई की बातचीत। उनकी स्वीकृति।
जे० सी० कुमारप्पा के पाव का एक्सरे लिया। डा० शहानी से बातें।
श्री कु० शान्तादेवी (अंग्रेज) के टासिल का आपरेशन शहानी ने किया।
उसे खूब कष्ट हुआ। आपरेशन के समय खडा रहना पडा।
श्री राजकुमारी अमृत कुंवर से बातें। वह तथा श्री पोलक ग्रान्ड ट्रंक से
गये। श्री जैनेन्द्र (देहली वाले) से बातचीत।
काका साहब, सत्यनारायण, श्रीमन् से, प्रचारक विद्यालय के बारे मे
विचार-विनिमय।
बापूराव खरे, नाना के गहाण (गिरवी) के बारे मे गंगाविसन से बातचीत।
शिक्षा मण्डल के मराठी विभाग के मास्टरों से दामले व भिड़े के सामने
बातचीत, स्पष्ट खुलासा किया।
चतुर्भुजभाई, चापसी, जोगलेकर से अवारी व चुनाव की बातें।
श्री यत्ते आदि से आर्वी चुनाव की बातें।
११ बजे गये सोने को।

चतुर्भुजभाई के साथ ७।। बजे मोटर से नागपुर रवाना। ६ बजे डा० खरे के यहां पहुंचे। वहां डा० खरे, गणपतराव पाण्डे, पूनमचन्द, अवारी, ओगले, डा० परांजपे, बजरंग ठेकेदार, ढागरे आदि से बातें। वहां की परिस्थिति पूरी तौर से समझ में आई। श्री ओगले का व्यवहार व बातचीत सन्तोषजनक रही। डा० परांजपे ने भी अपनी स्थिति कही।

श्री मागरदाण्डे से नहीं, पर ओगले से दो बार मिलना। आखिर परिश्रम करने से सफल हुआ—श्री पूनमचन्द व दनीबाई का तो प्रश्न ही नहीं था, अवारी ने भी नाम वापस ले लिया। विद्यादेवी, पन्नालाल भी मान जावें तो सोलह आने सफलता मिलती।

दाण्डेकर-लक्ष्मी से भागीरथी बहन, सज्जन व पूनमचन्द के साथ मिले।

नगर कांग्रेस कमेटी के बारे में विचार-विनिमय।

वेंकटराव गोडसे से बातचीत।

९-१-३७

दुकान पर बच्छराज की सभा। खेती की कम्पनी का काम देर तक हुआ। अस्पताल में जाकर शान्ताबाई, रामदेवजी, रामदास को देखा। जगदीश अग्रवाल से बातें। दामोदर व राधाकृष्ण को समझाया।

खान साहब, मेहर, नानी से बातचीत।

गांधी सेवा संघ का देर तक कार्य हुआ। किशोरलालभाई, जाजूजी, धोत्रे, महोदयजी के साथ नोट करवाये।

अप्पा सवाने, गोडे, बाबा साहब से चुनाव सम्बन्ध में बातचीत। उन्हें समझाया।

तिलक-हाल में चुनाव के सम्बन्ध में सार्वजनिक सभा। आज से वर्धा में चुनाव आन्दोलन शुरू किया। मैंने अपने विचार स्पष्ट भाषा में कहे।

रात को हरिजन कार्य की सहायता के लिए प्रो० अमर का जादू का खेल।

रात को एक्सप्रेस से इन्टर में धुलिया रवाना।

चालीसगांव-धुलिया, १०-१-३७

चालीसगांव में गाड़ी बदली।

श्री गजेटिया मिलने आये। धुलिया तक साथ रहा। काणे मास्तर के बारे

जुहू-बम्बई, १२-१-३७

जानकी देवी से चि० कमला व श्रीराम की सगाई के सम्बन्ध में जो नई परिस्थिति पैदा हुई वह सब समझाकर कही। श्रीराम से बात करने व पुरुषोत्तम को समझाकर कहने को कहा।

श्री सीतारामजी सेकसरिया आज कलकत्ता गये। उनसे सुन्दर और राम की भी नर्मदा की सगाई आदि के बारे में बातचीत।

हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊजी, अलग अलग से देर तक बातें। रामसिंह, माधेलाल चौधरी (जयपुर), उनकी स्त्री, कन्या बालिका आश्रम आदि की चर्चा।

महाकौशल के कौंसिल उम्मीदवार आये, उनकी जो भूल हुई, वह बतलाई।

सरदार से देर तक पोलीटिकल स्थिति में बातचीत।

आफिस में पत्र-व्यवहार, जीवनलाल भाई, जमनादास गांधी, आबिद अली आदि से बातें। श्री जौहरी को पत्र लिखने को कहा।

६।।। करीब जुहू पहुंचा।

जुहू-पूना, १३-१-३७

'हरिजन बन्धु' पूरा पढ़ लिया। जानकी देवी से विस्तार-पूर्वक स्पष्ट खुलासेवार बातचीत। मन हल्का हुआ। आगे के मार्ग का विचार। देवा नौकरी छोड़कर जाने लगा। उसपर क्रोध व विचार। उसे समझाना। जानकी को भी।

भागवती रानी के घर जानकी, कमला व नर्मदा के साथ गये। उसने पन्नू के विवाह पर आने का बहुत आग्रह किया।

सरदार वल्लभ भाई से मिलना। देर तक विनोद व काम की बातें। गोविन्दलालजी के यहां गया। वह नहीं मिले। श्री शान्ता बहन से बातें। आफिस तथा खादी भण्डार गये। ३।। बजे की गाड़ी से पूना रवाना। चि० नर्मदा व मोहन साथ में। पूना में सुव्रता बहिन के यहां ठहरे।

१४-१-३७

श्री सुव्रता बहिन के साथ घूमना। ८।। से ११।। तक उसका उत्साह बढ़ाना। प्रत्येक तहसील में एक कार्यकर्ता की योजना समझाना। मेरी ओर से प्रबंध हुआ तो पांच लाख व वे दस लाख देवें तो योजना सफल हो

जुहू-बम्बई, १२-१-३७

जानकी देवी से चि० लक्ष्मी व श्रीराम की सगाई के सम्बन्ध में जो नई परिस्थिति पैदा हुई वह सब समझाकर कही। श्रीराम से बात करने व पुरुषोत्तम को समझाकर कहने को कहा।

श्री सीतारामजी सेकसरिया आज कलकत्ता गये। उनसे सुबह और शाम को भी नर्मदा की सगाई आदि के बारे में बातचीत।

हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊजी, रतन बहन से देर तक बातें। रामसिंह, माणेलाल चौधरी (जयपुर), उनकी स्त्री, कन्या बालिका आश्रम आदि की चर्चा।

महाकौशल के कौंसिल उम्मीदवार आये, उनकी जो भूल हुई, वह बतलाई।

सरदार से देर तक पोलीक्लीनिक में बातचीत।

आफिस में पत्र-व्यवहार, जीवनलाल भाई, जमनादास गांधी, आबिद अली आदि से बातें। श्री जौहरी को पत्र लिखने को कहा।

६॥। करीब जुहू पहुंचा।

जुहू-पूना, १३-१-३७

'हरिजन बन्धु' पूरा पढ लिया। जानकी देवी से विस्तार-पूर्वक स्पष्ट खुलासेवार बातचीत। मन हलका हुआ। आगे के मार्ग का विचार। देवा नौकरी छोडकर जाने लगा। उसपर क्रोध व विचार। उसे समझाना। जानकी को भी।

भाग्यवती दानी के घर जानकी, कमला व नर्मदा के साथ गये। उसने पन्नू के विवाह पर आने का बहुत आग्रह किया।

सरदार वल्लभ भाई से मिलना। देर तक विनोद व काम की बातें। गोविन्दलालजी के यहां गया। वह नहीं मिले। श्री शान्ता बहन से बातें। आफिस तथा खादी भण्डार गये। ४॥ बजे की गाडी से पूना रवाना। चि० नर्मदा व मोहन साथ में। पूना में सुव्रता बहिन के यहां ठहरे।

१४-१-३७

श्री सुव्रता बहिन के साथ घूमना। ६॥ से ११॥ तक उनका उत्साह बढाना। प्रत्येक तहसील में एक कार्यकर्ता की योजना समझाना। मेरी ओर से सम्भव हुआ तो पांच लाख व वे दस लाख देवें तो योजना सफल हो

१५-१-३७

सुव्रता बहन के साथ दादा की बातचीत।

भेंट में भगवानदास एण्ड कं० के मोहनलालजी से मिलकर आये। शाम के भोजन की सभा अलग व्यवस्था।

श्री शंकरराव देव, गुलेगी, हरिभाऊ जोशी आदि मिलने आये। बाद में बापू साहब जोशी भी आ गये।

दयाशंकर बी० ए० (राजाजी अग्रवाल) से देर तक बातचीत। उनके सम्बन्ध के बारे में।

लोक शक्ति प्रेस की व्यवस्था का निरीक्षण। वहां फोटो ली गई।

शनिवार वाड़ा में जाहिर सभा ठीक हुई। मैं व दादा धर्माधिकारी बोले। बाद में छावनी में भी सभा हुई। वहां भी दोनों जने बोले।

भगवानदास कं० के यहां लोगों ने भोजन किया। वहां रतन, चंद्रभान, सूर्यभान आदि से बातें।

पूना-संगमनेर, १६-१-३७

सुव्रता बहिन, रामनिवास से। रामनारायण रुइया कालेज, दादर व कार्यकर्ताओं की मिशनरी पद्धति की सेवा संस्था के संबंध में विचार। मेरा दाव लगाने का विचार कहा।

श्री करंदीकर 'त्रैकाल' के संपादक मिलने आये। देर तक बातचीत।

२॥ बजे मोटर से संगमनेर रवाना—दादा, नर्मदा, मोहन साथ में। साढ़े तीन

देहू, आलंदी, संगमनेर-पूना, १७-१-३७

पन्नालाल मारोठी, पन्ना लाल लोहिया वगैरा संगमनेर रवाना। रास्ते में सुबह का समय था, दृश्य ठीक मालूम होते थे।

इन्द्रायणी नदी के रम्यस्थान पर नाश्ता किया।

देहू-तुकाराम का स्थान, मंदिर, वैकुंठवास, इन्द्रायनी का डोह, बड़ी मछलियां आदि देखी।

आलन्दी—ज्ञानेश्वर महाराज का स्थान देखा। श्री हरिभाऊ तलफुले मिले।

पूना —थोड़ा आराम।

श्री श्यामसुन्दरजी अग्रवाल मिलने आये। विवाह, सगाई व रोजगार की बातें।

सन्त तुकाराम सिनेमा—रामनिवास, कमला, नर्मदा के साथ देखा। ठीक मालूम हुआ।

पूना, १८-१-३७

श्री हरिभाऊ पाठक सुबह मिलने आये। देर तक बातचीत।

श्री दयाशंकर, चन्द्रभान (चन्दू), सूर्यभान मिलने आये। करीब पौन घंटा तक उनके विचार जाने। उन्हें सलाह दी।

श्री अन्ना साहब भोपटकर से मिला। देर तक बातचीत। उन्होंने अपना दर्द व स्थिति समझाई। व्यक्तिगत टीका के बारे में विचार। तात्या साहेब केलकर यहा नही। बम्बई गये हुये हैं। लोकशक्ति-कार्यालय में गये। वहा उन्होंने, श्री भोपटकर की ओर से किस प्रकार टीका वाले लेख लिखे जाते हैं, यह बतलाया। श्री खाडिलकर व उनकी स्त्री से मिलना। वह वर्धा नही आ सकेगी। श्री डा० पाठक मिले। उनका लडका भास्कर भी मिला। दयाशंकर भास्कर व गोपाल बजाज (बनारस वाले) से बात।

सकती है।

श्री रा० ब० हनुमतरामजी राठी से दो घंटे तक विचार-विनिमय। सर गोविन्दराव मडगांवकर से मिलना। अवार्ड-पत्र दिखाया। उनके यहां के काग्रेसी कार्यकर्ता—खासकर गुप्ते-जोशी के व्यवहार आदि से निराशा प्रकट करना। अन्य बातें।

सुव्रता बहिन के साथ शाम को घूमने जाना। चि० कमला रुइया भी साथ थी।

सोमेश्वर के मंदिर मे व्यापारियो की जाहिर सभा हुई। हरिजनों को नहीं आने दिया। दूसरा दु ख। माफी मागनी पड़ी। दादा धर्माधिकारी भी बोले। ठीक सभा हुई। बाद मे मदनलाल जालान व प्रहलाद से बातें।

१५-१-३७

सुव्रता बहन के साथ दादा की बातचीत।

कैंट मे भगवानदास एण्ड क० के मोहनलालजी से मिलकर आये। शाम के भोजन की तथा अन्य व्यवस्था।

श्री शकरराव देव, गुप्तेजी, हरिभाऊ जोशी आदि मिलने आये। बाद मे बापू काका जोशी भी आ गये।

दयाशकर बी० ए० (राजवशी अग्रवाल) से देर तक बातचीत। उसके सम्बन्ध के बारे मे।

लोक शक्ति प्रेस की व्यवस्था का निरीक्षण। वहां फोटो ली गई।

शनिवार वाडा मे जाहिर सभा ठीक हुई। मैं व दादा धर्माधिकारी बोले। बाद मे छावनी मे भी सभा हुई। वहा भी दोनो जने बोले।

भगवानदास क० के यहां औरो ने भोजन किया। वहा रतन, चंद्रभान, सूर्यभान आदि से बातें।

पूना-सगमनेर, १६-१-३७

सुव्रता बहिन, रामनिवास से। रामनारायण रुइया

कर्ताओ को मिशनरी पद्धति की सेवा सस्था के

साथ लगाने का विचार कहा।

श्री करदीकर 'कीर्तन' के सपादक मिलने

२॥ बजे मोटर से सगमनेर रवाना

पूना-बम्बई-जुहू, १९-१-३७

श्री प्रेमा कंटक आई। उससे बातचीत। बापू से, कल्याण से पूना तक, जो बात हुई वह प्रेमा ने सविस्तार कही। बा के विचारों में परिवर्तन। अपनी स्थिति कही, ग्राम-कार्य आदि की। श्री हरिभाऊ फाटक, बापू [illegible] मिलने आये।

गुप्ता बहिन से घूमते समय प्रेमा का परिचय।

चि० मोहन की माता व गंगाधर राव की लड़की से मिलना। योग्य [illegible] मालूम हुई।

मदनराव [illegible] से मिलना।

३-२५ की गाड़ी से बम्बई रवाना। स्टेशन पर अण्णा साहब भोपटकर मिले।

जुहू, बम्बई, २०-१-३७

धर्मानन्द कोसम्बी, जमनादास गांधी व जयपुर अनाथालय वालों से बातचीत।

सरदार से मिलना। उनसे बहुत देर तक बातचीत। आखिर में नरीमन वगैरह कई लोग मिलने आये। श्रीनिवासजी बगड़वाले से सम्मेलन-कार्य। [illegible] साहब [illegible] से [illegible] महाराज की धर्मशाला, मन्दिर के [illegible] निश्चय।

[illegible] से देर तक बातचीत।

जुहू-बम्बई २१-१-३७

र्मा की सभा मे चुनाव भाषण ।
ऍवोपर की सभा मे भाषण ।

२२-१-३७

। मोती बहन, जीवनदास भाई व सुलोचना आये । डा० सरदेसाई के यहा
ानकी देवी व उमा के साथ गये । वहा चि० लक्ष्मी, पुरुषोत्तम जाजोदिया
ापा साहब रणदिवे भी आये थे ।
ऑफिस मे मथुरादास खीमजी, सर नौरोजी सकलतवाला आदि से
ातें ।

२३-१-३७

जीवनलाल भाई, रामजीभाई, पूनमचन्द । आबिदअली, मूलजी, लुखमानी आये ।
चि० श्रीकृष्ण सेवटिया की भावी योजना व विचार समझे ।

२४-१-३७

श्री डा० पटेल, उनकी स्त्री व गुप्ता कान्ट्रेक्टर के मिलने व जमीन देखने आये ।
सफिया मरियम भी मिलने आये । बम्बई मे और भी कई जने मिलने आये ।
माटुगा मे गोविन्दलालजी के यहा व शान्ता के घर होते हुए दुकान । बाद मे मारवाड़ी विद्यालय मे श्री गोविन्दलालजी का सम्मान छह संस्थाओं की ओर से । सभापति बनना पड़ा, व्याख्यान । वहीं पर भोजन । स्टेशन । नवलकिशोर भरतिया आदि से बातें । ६-१० की गाड़ी मे वर्धा रवाना ।

भुसावल, अकोला, वर्धा, २५-१-३७

अकोला मे ब्रिजलालजी बियानी, चि० तारा, निर्मला, सुशीला मिले ।
रास्ते मे गोवर्धन, रमाकान्त व पुरुषोत्तम से बातें ।
वर्धा पहुचे । स्नान वगैरा के बाद अस्पताल । ३-१० को वहा लक्ष्मी (गंगाविसन) को लड़का हुआ । वजन साढे सात रत्तल । उसे घूटी दी ।
दुकान पर कांग्रेस चुनाव के बारे मे ४ घटे तक विचार-विनिमय । हालत समझी ।

२६-१-३७

राधाकृष्ण से बातचीत—चुनाव के सम्बन्ध मे ।

श्री माधोराव (अप्पाजी सबाने) वेंकटराव गोडे से भी चुनाव सम्बन्ध में देर तक बातचीत।
गांधी चौक मे झंडा वंदन। आज स्वतंत्रता दिन निमित्त झण्डा फहराया। राष्ट्रगीत के बाद थोडा व्याख्यान। पुलिस वालों की तैयारी।
चुनाव-कार्य श्री तुकाराम (रोहणी वालों) ने सही की, देर तक बातचीत। काका कालेलकर के साथ सेगाव जाते-आते बातचीत। बापू से आज के दिन के बारे मे बातें। जल्दी वापस। खान साहब ने पेशावर के मीठे निंबू दिये।
गांधी चौक-जाहिर सभा। पहली सभा स्वतंत्रता दिन निमित्त।
काका साहब कालेलकर मुख्य वक्ता थे। मैं सभापति की हैसियत से थोडा बोला। तेजराम, धोत्रे ने ठहराव रखा।
दूसरी सभा—कांग्रेस चुनाव के सम्बन्ध मे कांग्रेस उम्मीदवार को मत देने के बारे मे कहा।
कमला लेले, ठाकुर किसनसिंह व भीडे बोले।

वर्धा, अकोला, २७-१-३७

भजन। अकोला जाने की तैयारी।
वर्धा स्टेशन पर ब्रिजमोहन बिड़ला मिले। बम्बई से कलकत्ता गये। उनसे बातचीत की।
श्री आर्यनायकम व श्रीमन्नारायण के साथ पैदल स्टेशन। मूर्तजापुर तक मारवाडी शिक्षा मण्डल, हिन्दी विद्यालय, मराठी विद्यालय, उर्दू विभाग आदि की चर्चा व विचार ठीक तौर से किया गया।
मूर्तिजापुर से अकोला तक श्रीमन्नारायण से बातें। उसके विचार जाने। मदालसा-विवाह के सम्बन्ध मे खुलासेवार बातें। उसकी मन.स्थिति समझी। अकोला-ब्रिजलाल बियाणी से बरार की परिस्थिति समझी। सरदार को मदद के लिए तार भेजा। शाम को व रात को देर तक बातचीत।
नानाभाई, विजया भाभी, तारा, शान्ति, निर्मला से नानाभाई की स्थिति समझी। स्टेशन आये। गोपालदास मोहता मिले।
पैसेंजर से वर्धा रवाना।

वर्धा, हिंगनघाट-वर्धा, २८-१-३७

वर्धा ४।। बजे करीब पहुंचे। बंगले में मुंह-हाथ धोकर प्रार्थना, गीताई, भजन।

चि० राधाकृष्ण व शिवराजजी, तेजराम आदि से कांग्रेस चुनाव के बारे में देर तक बातचीत। चि० गंगाबिसन से भी इस सम्बन्ध में बातचीत।

चि० मदालसा से उसके भावी जीवन, सगाई आदि के बारे में विचार-विनिमय।

चि० वासती ने अपनी थोड़ी स्थिति कही।

हिंगनघाट में डा० मजूमदार के घर कार्यकर्ताओं से बातचीत विचार-विनिमय, परिस्थिति समझी।

कांग्रेस चुनाव की जाहिर सभा ठीक हुई। जनता भी ठीक जमी थी। १२ बजे वर्धा पहुंचे।

वर्धा-पुलगांव-वर्धा, २६-१-३७

जानकी देवी, कमला बम्बई से आये। सत्यप्रभा से दवाखाने आदि की बातें।

श्री चतुर्भुज वैद्य के स्वभाव रहन-सहन के बारे में स्थिति समझी।

श्री वेंकटराव धोंडे व अण्णा साहब सबाने से कांग्रेस-चुनाव के सम्बन्ध में देर तक विचार-विनिमय। पंजाबराव सालवे से भी बातें, जिले की दृष्टि से विचार-विनिमय।

तालुका के मुख्य-मुख्य कार्यकर्ताओं से विचार-विनिमय।

मेल से पुलगांव। शिवराम टालवाले के यहां बातचीत। उन्होंने यादवराव को मदद करने को कहा। कारण बतलाये।

जाहिर सभा में श्री करंदीकर व मेरा भाषण हुआ।

मोटर से वर्धा।

३०-१-३७

चि० शांति बम्बई से आई, उसकी मां व सुशीला साथ में।

महिला मण्डल की सभा ६।। से ११ तक हुई। मारवाड़ी शिक्षा मण्डल की सभा ३-६ तक हुई।

चुनाव-सम्बन्ध में बातचीत। दिन में व रात २।। बजे तक कोशिश होती

श्री माधोराव (अप्पाजी सबाने) वेंकटराव गोडे से भी चुनाव सम्बन्ध में देर तक बातचीत।
गांधी चौक में झंडा वंदन। आज स्वतंत्रता दिन निमित्त झण्डा फहराया। राष्ट्रगीत के बाद थोड़ा व्याख्यान। पुलिस वालों की तैयारी।
चुनाव-कार्य श्री तुकाराम (रोहणी वालों) ने सही की, देर तक बातचीत। काका कालेलकर के साथ सेगांव जाते-आते बातचीत। बापू से आज के दिन के बारे में बातें। जल्दी वापस। खान साहब ने पेशावर के मीठे निंबू दिये।
गांधी चौक-जाहिर सभा। पहली सभा स्वतंत्रता दिन निमित्त।
काका साहब कालेलकर मुख्य वक्ता थे। मैं सभापति की हैसियत से थोड़ा बोला। तेजराम, धोत्रे ने ठहराव रखा।
दूसरी सभा—कांग्रेस चुनाव के सम्बन्ध में कांग्रेस उम्मीदवार को मत देने के बारे में कहा।
कमला लेले, ठाकुर किसनसिंह व भीडे बोले।

वर्धा, अकोला, २७-१-३७

भजन। अकोला जाने की तैयारी।
वर्धा स्टेशन पर व्रिजमोहन बिड़ला मिले। बम्बई से कलकत्ता गये। उनसे बातचीत की।
श्री आर्यनायकम व श्रीमन्नारायण के साथ पैदल स्टेशन। मूर्तजापुर तक मारवाड़ी शिक्षा मण्डल, हिन्दी विद्यालय, मराठी विद्यालय, उर्दू विभाग आदि की चर्चा व विचार ठीक तौर से किया गया।
मूर्तिजापुर से अकोला तक श्रीमन्नारायण से बातें। उसके विचार जाने। सगाई-विवाह के सम्बन्ध में खुलासेवार बातें। उसकी मन स्थिति समझी।
अकोला-व्रिजलाल बियाणी से बरार की परिस्थिति समझी। सरदार को मदद के लिए तार भेजा। शाम को व रात को देर तक बातचीत।
नानाभाई, विजया भाभी, तारा, शान्ति, निर्मला से नानाभाई की स्थिति समझी। स्टेशन आये। गोपालदास मोहता मिले।
पैसेंजर से वर्धा रवाना।

वर्धा, हिंगनघाट-वर्धा, २८-१-३७

वर्धा ४॥ बजे करीब पहुंचे। बगले मे मुंह-हाथ धोकर प्रार्थना, गीताई, भजन।

चि० राधाकृष्ण व शिवराजजी, तेजराम आदि से कांग्रेस चुनाव के बारे मे देर तक बातचीत। चि० गगाबिसन से भी इस सम्बन्ध में बातचीत।

चि० मदालसा से उसके भावी जीवन, सगाई आदि के बारे मे विचार-विनिमय।

चि० वासती ने अपनी थोड़ी स्थिति कही।

हिंगनघाट मे डा० मजूमदार के घर कार्यकर्ताओ से बातचीत विचार-विनिमय, परिस्थिति समझी।

कांग्रेस चुनाव की जाहिर सभा ठीक हुई। जनता भी ठीक जमी थी। १२ बजे वर्धा पहुंचे।

वर्धा-पुलगांव-वर्धा, २९-१-३७

जानकी देवी, कमला बम्बई से आये। सत्यप्रभा से दवाखाने आदि की बातें।

श्री चतुर्भुज वैद्य के स्वभाव रहन-सहन के बारे में स्थिति समझी।

श्री वेंकटराव धोड़े व अप्पा साहब सवाने से कांग्रेस-चुनाव के सम्बन्ध में देर तक विचार-विनिमय। पजाबराव सालवे से भी बातें, जिले की दृष्टि से विचार-विनिमय।

तालुका के मुख्य-मुख्य कार्यकर्ताओ से विचार-विनिमय।

त से पुलगाव। शिवराम टालवाले के यहा बातचीत। उन्होंने यादवगव ो मदद करने को कहा। कारण बतलाये।

ाहिर सभा मे श्री करदीकर व मेरा भाषण हुआ।

ोटर से वर्धा।

३०-१-३७

चि० शांति बम्बई से आई, उसकी मा व सुशीला साथ मे।

महिला मण्डल की सभा ६॥ से ११ तक हुई। मारवाडी शिक्षा मण्डल की सभा ३-५ तक हुई।

चुनाव-सम्बन्ध मे बातचीत। दिन में व रात २॥ बजे तक कोशिश होती

रही, वेंकटराव, अप्पाजी, पंजाबराव, अमृतराव, आदि से तथा अपने कांग्रेस कार्यकर्ताओ से भी।
नवलकिशोर भरतिया आये।

वर्धा, आर्वी ३१-१-३७

जल्दी तैयार होकर वर्धा से मोटर से आर्वी रवाना हुए। रास्ते मे खरागणा की सभा में भाषण।
आर्वी मे गोपालदास के यहां उतरना।
रात को आष्ठी में भाषण हुआ। ठीक सभा हुई। वही पर देशपाण्डे के घर पर सोये।

आष्टी-आर्वी, वर्धा १-२-३७

आष्टी से छोटी आर्वी, लीगपुर आदि १० गावो में गये। कई जगह बातचीत, व्याख्यान व समझाना। कांग्रेस उम्मीदवार श्री केदार की परिस्थिति ठीक मालूम हुई। तलेगाव व आर्वी मे जोरदार भाषा मे स्पष्ट भाषण देना पड़ा। श्री केदार, गोपालदास, बाबा साहब, थत्तेजी आदि साथ मे थे।
वर्धा रात को १२॥ बजे करीब पहुचे।

वर्धा, पवनार, सेलू, सालोडी, सिंदी २-२-३७

गजराजजी (झुनझुनवालो) से बातचीत।
बाबा साहब देशमुख, शिवराजजी, तेजराम के साथ सालोड गये। वहां राव साहेब, विठ्ठलराव देशमुख से देर तक बातचीत हुई। आखिर हरिजन वोट सालोड सर्कल मे दोनों विश्वनाथ को मिलें, ऐसा ये प्रयत्न करेंगे। घर साथ मे भोजन। देर तक बातचीत। रामराव के बारे की परिस्थिति समझी।
बाबा साहब, वेंकटराव व गोडे के साथ पवनार गये। दोनो देशमुख व विश्वनाथ से मिलना। विश्वनाथ की हालत खराब, बीमार था। उसने कुछ भी काम नही किया।
सेलू के कार्यकर्ताओ से मिले। स्थिति समझी।
सिन्दी में जाहिर सभा। बाबा साहब देशमुख सभापति। अमृतराव का मय्या थोड़ा भाषण, जवाब। रात को २ बजे वर्धा पहुंचे।

सेलू, हिंगणी, वर्धा, वायगांव, देवली, पुलगाव, फिर वर्धा पवनार व सेलू का पोलिंग घूम कर देखा। यहां के पोलिंग का परिणाम ठीक आने की आशा। विश्वनाथ के बारे में थोड़ा विचार।
डा० वार्लिगे से बातें। पुखराज के चुनकर आने की पूरी आशा।

वर्धा-सेगांव, ५-२-३७

हरिभाऊजी, भागीरथी बहन व कान्ता से थोड़ी बातें।
श्री केदार से आर्वी चुनाव-व्यवस्था की बातें।
मगनवाड़ी में इमारत सब कमेटी की सभा। जाजूजी व कुमारप्पा का मतभेद देख दुःख हुआ। यहां भी केदार आये। आर्वी के सम्बन्ध में बातचीत, व्यवस्था।
सेगांव में बापूजी से जवाहरलाल के पत्र व मालवीयजी के सम्बन्ध में विचार। देहली टैरी के बारे में स्वीकृति। बालकोबा को देखा, प्रार्थना। वर्धा में कालूराम से बातें।

वर्धा-आर्वी, ६-२-३७

जल्दी तैयार होकर आर्वी ८॥ बजे पहुंचे। गोपालदासजी के यहां भोजन, वहां से बाबासाहब को साथ लेकर ऑफिस। केदार से बातें, व्यवस्था, आष्टी गये।
वापस आर्वी। थोड़ी देर ऑफिस व्यवस्था देखकर घनोटी, देर हो गई थी। डा० अभ्यंकर के घर पर घनोटी में नाश्ता। विरुल ११ बजे रात पहुंचे।

विरुल, वर्धा, आर्वी-चान्दा, ७-२-३७

बाबा साहब की स्त्री श्री सौ० बाई से घरेलू बातें।
विरुल में सभा ठीक हुई। भाषण भी अच्छा हुआ।

रसूलाबाद मे भी भाषण ठीक हुआ।
रोहणा मे सभा तो नही हुई। लडको से बातचीत। विनायक राव की जबर्दस्त तैयारी, नायडू की ओर से।
धनोडी मे भी सभा ठीक हुई। आर्वी होकर वर्धा।
वहा से चान्दा।
चान्दा मे सभा ठीक हुई। लोग खूब जमे थे। मैंने व रिषभदास ने भाषण दिये। रिषभदास ठीक बोलता है। मेरा भाषण भी ठीक हुआ। स्टेशन पर सोये।

वर्धा-नागपुर, ८-२-३७

प्रार्थना, गीताई। चान्दा से सुबह वापस आये। आते समय गर्गाविमन के घर होकर आये। घूमना, महिला आश्रम, जानकी, कमला, गोवर्धन साथ मे। हरिभाऊ, भागीरथी बहन आदि से बातें, उत्सव की तैयारी।
२।। बजे की एक्सप्रेस से नागपुर। पूनमचन्द, बजरंग, खरे वगैरा नहीं मिले।
अवारी, छगनलाल, आकरे मिले। उद्धोजी, भिकूलाल, बजरंग, चतुर्भुज भाई, छगनलाल, खरे की सफलता की पूरी आशा, जगातदार की भी। पलमुले तथा अनुसूया बहन व नायडू के बारे मे थोड़ा डर।

वर्धा, ९-२-३७

किशोरलाल भाई, गोमती बहन से मिलना। महिला-आश्रम रास्ते मे खान साहब से बातचीत। हरिभाऊ उपाध्याय व भागीरथी बहन से बातें।
दुकान पर ३ से ५।। तक खुशाल चन्द के चुनाव की व्यवस्था। काम बांटना। ८।। से १।।। तक सार्वजनिक सभा बालाजी मदिर के सामने। १२ से ज्यादा वक्ता दोनो पक्ष के बोले। भाषण, कई बातें छूट गईं—देर के कारण।

वर्धा-बम्बई रवाना, १०-२-३७

पैदल दुकान। खुशालचन्द के चुनाव की व्यवस्था। बाबा साहब बाडोला आदि से बातचीत।
मेल से बम्बई रवाना तीसरे दर्जे मे। साथ मे जानकी देवी थी। पर गाड़ी हिलती थी।

बम्बई में हंसा व रतीलाल को वोट देना तथा कांग्रेस व दानी का भी काम था।

बम्बई, जुहू, ११-२-३७

दादर उतरे। सामान पहले तुलाया हुआ न होने के कारण ७ रुपये ६ आने देना पड़ा। बुरा लगा। क्रोध भी आया।

वेंकटेश्वरजी से रास्ते में शक्कर मिल के नुकसान के बारे में बातें। देसाई व त्रिवेदी को बदलने का विचार।

टाउन हाल में श्रीमती हंसा मेहता व रतीलाल गांधी (कांग्रेसी उम्मीदवार) को वेंकट के दोनों वोट, मेरे व जानकी के, दिये। वहां खड़े रहे।

रामेश्वरदासजी व जुगलकिशोरजी बिड़ला से मिलना, बातचीत।

बम्बई हाउस में सर नौरोजी से मिलना।

जुहू-बम्बई, १२-२-३७

वेंकटेश्वरजी, आबिद अली, मूलजी मिलने आये। हाउसिंग आदि की बातें।

वेंकट के यहां भोजन।

सरदार से बातचीत।

बम्बई हाउस में सर नौरोजी से बातचीत व फैसला, रसीद आदि। मूलजी सिक्का से मिले। परिणाम नहीं आया।

पेरीन बहन व हाकिम अली से मिले।

हिन्दुस्तान शुगर की सभा, विचार। भावी प्रबन्ध।

जुहू-बम्बई-पूना, १३-२-३७

गोदावरीबहन मिलने आईं, जानकी के तार व पत्र से दुःख पहुंचा, अन्य बातें। श्री एस० एल० राव व नर्मदाशंकर, मूलजी मिले। उन्होंने देर तक पत्र की [illegible] व [illegible] के बारे में बातें की। वर्धा आवेंगे, पेपर का [illegible] नहीं हुआ। ११-१४ की गाड़ी से पूना रवाना, [illegible] के साथ। रिक्शे द्वारा [illegible] आराम। पूना में [illegible] से मिलकर [illegible]। वहां [illegible] हुए। पूना मिल में सभा में [illegible] कांग्रेस को वोट देने का कहा।

पूना-कल्याण, १४-२-३७

चि० [illegible] के विवाह में गए। ५ से ७ तक विवाह में रहे। बम्बई

रसूलाबाद मे भी भाषण ठीक हुआ।
रोहणा मे सभा तो नहीं हुई। लड़को से बातचीत। विनायक राव
जबर्दस्त तैयारी, नायडू की ओर से।
घनोडी मे भी सभा ठीक हुई। आर्वी होकर वर्धा।
वहा से चान्दा।
चान्दा मे सभा ठीक हुई। लोग खूब जमे थे। मैंने व रिषभदास ने भाषण
दिये। रिषभदास ठीक बोलता है। मेरा भाषण भी ठीक हुआ। स्टेशन पर
सोये।

वर्धा-नागपुर, ८-२-३७

प्रार्थना, गीताई। चान्दा से सुबह वापस आये। आते समय गंगाबिसन के
घर होकर आये। घूमना, महिला आश्रम, जानकी, कमला, गोवर्धन साथ
। हरिभाऊ, भागीरथी बहन आदि से बातें, उत्सव की तैयारी।
१।। बजे की एक्सप्रेस से नागपुर। पूनमचन्द, बजरंग, खरे वगैरा नहीं
मिले।
बारी, छगनलाल, आकरे मिले। उद्धोजी, भिकूलाल, बजरंग, चतुर्भुज
भाई, छगनलाल, खरे की सफलता की पूरी आशा, जगतदार की भी।
लसुले तथा अनुसूया बहन व नायडू के बारे मे थोड़ा डर।

वर्धा, ९-२-३७

किशोरलाल भाई, गोमती बहन से मिलना। महिला-आश्रम रास्ते मे बाप
साहब से बातचीत। हरिभाऊ उपाध्याय व भागीरथी बहन से बातें।
कान पर ३ से ५।। तक खुशाल चन्द के चुनाव की व्यवस्था। बाम
टना। ८।। से १।।। तक सार्वजनिक सभा बालाजी मंदिर के सामने।
२ से ज्यादा वक्ता दोनों पक्ष के बोले। भाषण, कई बातें छूट गई—देर
कारण।

वर्धा-बम्बई रवाना, १०-२-३७

दम दुकान। खुशालचन्द के चुनाव की व्यवस्था। बाबा साहब वाडोना
दि से बातचीत।
गपुर मेल से बम्बई रवाना तीसरे दर्जे मे। साथ में जानकी देवी।
यह टीक थी। पर गाड़ी हिलती थी।

बम्बई में हंसा व रतीलाल को वोट देना तथा कांग्रेस व दोनों का भी काम था।

बम्बई, जुहू, ११-२-३७

दादर उतरे। सामान पहले तुलाया हुआ न होने के कारण ७ रुपये ६ आने देना पड़ा। बुरा लगा। क्रोध भी आया।
केशवदेवजी से रास्ते में शक्कर मिल के मुनाफे के बारे में बातें। देसाई व त्रिवेदी को बदलने का विचार।
टाउन हाल में श्रीमती हंसा मेहता व रतीलाल गांधी (कांग्रेसी उम्मीदवार) को चेम्बर के दोनों वोट, मेरे व जानकी के, दिये। वहां खड़े रहे।
रामेश्वरदासजी व जुगल किशोरजी बिड़ला से मिलना, बातचीत।
बम्बई हाउस में सर नौरोजी से मिलना।

जुहू-बम्बई, १२-२-३७

केशवदेवजी, आबिद अली, मूलजी मिलने आये। हार्टीमग आदि की बातें।
केशर के यहां भोजन।
सरदार से बातचीत।
बम्बई हाउस में सर नौरोजी से बातचीत व फैसला, रसीद आदि। मूलजी सिक्का से मिले। परिणाम नहीं आया।
पेरीन बेन व क्षाबिर अली से मिले।
हिंदुस्तान शुगर की सभा, विचार। भावी प्रबन्ध।

जुहू-बम्बई-पूना, १३-२-३७

गोपीबहन मिलने आईं, जाजूजी के तार व पत्र से दुःख पहुंचा, अन्य बातें।
श्री एम० एन० राय व मणीबहन, मूलजी मिले। उन्होंने देर तक पत्र की सहायता व भारत बीमा कम्पनी के बारे में बातें कीं। वर्धा आवेंगे, पेपर की मदद का नहीं हुआ। ११-४५ की गाड़ी से पूना रवाना, जनेत के साथ। रिजर्व डब्बा, विनोद, आराम। पूना में मोटर से लश्कर जनवासा। वहां आईसक्रीम, नाश्ता, दूध। पूना मिल में सभा में बोले, कांग्रेस को वोट देने को कहा।

पूना-कल्याण, १४-२-३७

चि० पन्नू-रतन के विवाह में गये। ४ से ७ तक विवाह में रहे। बम्बई

नागपुर मेल से यहां पहुंचे. [illegible] पर हो गए आनन्द [illegible]
हुआ. मालवजी [illegible] ने भी।
किशोरलाल भाई से [illegible] कार्यकर्ता योजना के बारे में बातचीत।
मेटरनिटी होम गए। वहां रहे। वहां से मंदिर, दुकान, महिला आश्रम।
बहनों से थोड़ी बातें।
महानन्द स्वामी के कीर्तन में गये।

वर्धा-नागपुर, १६-२-३७

जल्दी तैयार होकर भाड़े की मोटर से नागपुर—जानकी, गोपालदास राठी, दामोदर साथ में।
नागपुर में कई पोलिंग स्टेशन, कोई १७-१८ जगह गये। खातरी हो गई। डा० खरे व अनुसूया बाई आवेंगे।
पोद्दारों के यहां बैठने—जीवराजजी का स्वर्गवास हो गया था। देर तक बातचीत।
वर्धा वापस। मंदिर में गाडगे महाराज की पंगत देखी। वर्षा आई। इससे लोगों को कष्ट हुआ।
रात गाडगे महाराज का कीर्तन पौन घंटे सुना। १॥ बजे बंद हुआ।

वर्धा-सेगांव, १७-२-३७

सोनीबाई बजाज से आपरेशन आदि की थोड़ी बातें। अस्पताल में खोली नं० ६ में व्यवस्था।
श्री गाडगे (गुदड़ी बुवा-पढरपुर वाले) से मिलना। बातचीत।

गाव जाकर बापू से नालवाडी तक मोटर मे बातचीत। कार्यकर्ता योजना; राजूजी सम्मेलन के सभापति हुए। नालवाडी मे चर्मालय व खेत देखे। विनोबा से बहुत देर तक बातचीत—मदालसा की सगाई, कार्यकर्ता योजना, मानसिक स्थिति आदि।

खूब जोर की वर्षा, पुखराज कोचर मिले, वह चुने गये—पाच हजार चार सौ से ज्यादा से।

राजूजी से बातचीत, ग्राम उद्योग सघ के बारे मे।

राजूजी के साथ अस्पताल जाकर आये।

रात को वर्षा, बिजली खूब चमकी।

वर्धा, १८-२-३७

नालवाडी मे पू० विनोबा से चि० मदालसा की सगाई, सम्बन्ध व मानसिक स्थिति कमजोर आदि पर विचार-विनिमय।

काका साहब से मद्रास हिन्दी सम्मेलन के सभापति के बारे मे अखबारो मे जो आया वह उनसे सुना-समझा। सभापति बनने मे मेरी जो अडचने हैं वह मैने उन्हे कही।

पू० बापूजी से सम्मेलन सभापति, काग्रेस सभापति, जाजूजी, ग्राम उद्योग कार्य, मेरी मानसिक स्थिति व कमजोरी आदि के बारे मे बातें। दुबारा फिर मिलकर खुलासेवार बातें करना। प्रभावती को रास्ते मे कष्ट हुआ उस बारे मे भी कहा।

महिला आश्रम मे नीलम्मा बहन से थोडी बातें। हरिभाऊजी, भागीरथी बहन व चि० शान्ता से आश्रम आदि बातें।

बापू से जो बातें हुई वे सब जाजूजी से कही।

चोरघडे व उनकी डा० पत्नी से बातें।

१९-२-३७

राजेन्द्रबाबू व मथुराबाबू ग्रान्ड ट्रक से आये। बातें।

सोनीबाई बजाज (गोपीजी की स्त्री) के ट्यूमर (पेट के गोले) का ऑपरेशन हुआ। डेढ घटे से ज्यादा लगा। साढे तीन रत्तल का गोला पेट मे से निकला। गर्भाशय खराब हो गया था। उसका बहुत-सा भाग भी निकालना पड़ा।

२२-२-३७

सरदार, मणी बम्बई से आये ।

जुगलकिशोर बिड़ला को परनार का स्थान व मारवाड़ी विद्यालय दिखलाया । उन्हें परनार का स्थान पसंद आया ।

दादा धर्माधिकारी, गोखले, मिसेज वनिता गोखले से बातें ।

जुगलकिशोरजी को महिला आश्रम दिखलाया ।

घनश्यामदास बिड़ला शाम को मेल से आये ।

जुगलकिशोरजी रात को एक्सप्रेस से गये ।

नागपुर से डा० खरे मिलने आये । डेली न्यूज के बारे में बातें ।

चौन्दिया, शान्ता, कमला से बातें ।

२३-२-३७

महिला आश्रम की व्यवस्था, आशा देवी से बातें ।

सरदार, राजेन्द्रबाबू, घनश्यामदास, खान साहब व खुर्शेद बहन से बातें ।

सुव्रता बहन का बम्बई बुलाने का आग्रह का पत्र । उसे व रामनिवास को जवाब भेजे, थोड़ी चिन्ता ।

डा० खरे व वेंकटराव आये । देर तक डेली न्यूज के बारे में बातें की । मैंने उन्हें डा० खरे को तफसील देने के लिए नोट करवाया । पूरी विगत मिलने पर विचार हो सकेगा ।

भोजन के समय खान साहब व खुर्शेद बहन तथा मथुराबाबू से चर्चा, मिल मालिक व मजदूर आदि के सम्बन्ध में ।

सरदार, जाजूजी, घनश्यामदासजी बिड़ला से 'डेली न्यूज-कोष' के बारे में विचार-विनिमय । सरदार व घनश्यामदास को कहना पड़ा कि पत्र हाथ में लेना चाहिए ।

मां का स्वास्थ्य ठीक नहीं । मन में चिन्ता व दुःख ।

श्री केदार भी मो मत में चुने गये। श्री नायडू हार गये। श्री खुशाल
भी २७०० ज्यादा मतों से चुने गये। और भी सन्तोषजनक खबरें मि
केदार वगैरा के बाग में भोजन।
सेगांव राजेन्द्रबाबू के साथ जाकर बापू व राजकुमारीजी से थोड़ी
बातें।
बालाजी के मंदिर के सामने जाहिर सभा हुई। कांग्रेस की विजय पर क
केदार ठीक बोले। मैंने भी सभापति के रूप में बातों का खुलासा किया।

२०-२-३७

महिला आश्रम में आशा बहन से खुलासेवार बातचीत। उन्हें सन्तोष।
आर्यनायकम्, श्रीमन् व गंगाबिसन के साथ शिक्षा मण्डल सभा का
देर तक होता रहा।
पत्र-व्यवहार—चि० कमल को भारत आने के बारे में लिखा।
सतीश के बारे का पत्र पढ़कर बुरा लगा। आखिर १२० पौंड भेजने
निश्चय करना पडा। कमल के आग्रह के कारण।
पुलगांव व आर्वी जाने की तैयारी थी, पर वर्षा का जोर का रंग होने के
कारण व सुबह सेगांव जाना जरूरी होने के कारण, जाना स्थगित रखा।
अस्पताल गया। सोनी बाई को कष्ट ज्यादा था। आज दूसरा रोज है।
राजेन्द्रबाबू से थोडी बातें।
रात को जर्मन बहन से बातें। वह आज गई।

२१-२-३७

बापू के पास सेगांव गया।
ग्राम उद्योग संघ के विद्यार्थियों के सामने बापू का प्रवचन सुना। बाद
बापू के साथ घूमते समय अपनी मन स्थिति, मन की कमजोरी, बहुत
आदि सम्बन्ध मे बात साफ तौर से कही। बापू ने [illegible]
बतलाया और कहा कि फिर बातें होगी। हिन्दी
पति, प्रदेश कांग्रेस के सभापति पद से अलग
[illegible]

वापू से मिलने सेगाव गये।

महिला आश्रम उत्सव रात को ७॥ से ११॥। तक। स्वागत गीत। 'बरगद' हिन्दी नाटक। सुन्दर दृश्य व एक्टिंग। भारत वन्दन (बंगला), राष्ट्रीय-गीत (कन्नड व तामिल), दुखी बुढिया (हिन्दी), कन्याओं की कवायद, विद्यारंभ नाटिका (कन्नड), कन्याओ का रास, अंग्रेजी नाटिका, वृन्दवादन, बहुओं का षड्यन्त्र (नाटक) सितार, गोप-रास आदि।

२७-२-३७

खुर्शेद बहन से कमला मेमोरियल की बातें।

वर्किंग कमेटी सुबह ६ से ११ तक, दोपहर को १॥ से ५ तक व रात ८ से १०। तक हुई। पूज्य बापूजी सुबह ६ से शाम को पाच तक रहे। वर्किंग कमेटी का काम ठीक हुआ।

शाम को महिला आश्रम मे सब नेताओ का भोजन हुआ। व्यवस्था ठीक । वर्किंग कमेटी मे श्री शरद बाबू को छोडकर सब हाजिर थे, चौदह ...वर व चार निमंत्रित सज्जन।

...का स्वास्थ्य खराब रहा। रात को जागना पड़ा।

२८-२-३७

...स्पताल जाकर भणमाली, सोनीबाई बजाज को देखा।

...किंग कमेटी सुबह ८॥ से ११॥ तक, दोपहर को १ से ५॥ तक व रात ...॥ से ७॥ हुई।

...० बापूजी सुबह ८॥ से शाम के ५। तक वर्किंग कमेटी मे रहे। उन्होंने ...पनी राय व शर्तें ऑफिस लेने के बारे मे कही। ठीक विचार-विनिमय ...आ।

...॥ का स्वास्थ्य आज थोडा ठीक रहा।

१-३-३७

...डाक्टर खान, अब्दुल गफ्फार खान, पतजी, सरदार मगलसिंह देहली गये। ...हुचाने स्टेशन गया।

वर्किंग कमेटी ६ से ११ तक हुई। साप्ताहिक वर्तमान पत्र निकालने का एक प्रकार से निश्चय हुआ। सन्तोष... गाधी सेवा संघ की सभा २ से ४।...
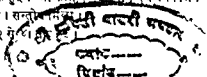
२४-२-३७

तीन बजे से उत्सव मां के पास बैठा। प्रार्थना व [illegible]।

महिला आश्रम का व महिला-मण्डल का उत्सव आज सुबह ७॥ बजे प्रारम्भ हुआ। श्री धोत्रे ने शुरू से आज तक की रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। नाना आठवले ने आश्रम का परिचय करवाया। श्री राजकुमारी अमृत कुंवर व राजेन्द्रबाबू व खान साहब के भाषण सुंदर व मनन करने योग्य हुए। सुबह ७॥ से १२ व शाम को ३॥ से ५॥ तक उत्सव का काम हुआ। सरदार, घनश्यामदासजी बिड़ला आदि से कौंसिल, हिन्दी साहित्य सम्मेलन आदि की चर्चा।

डा० मुंजे करीब उन्नीस हजार ज्यादा मत से डा० खरेजी के विरुद्ध चुनकर आये। श्री धुले (पुलगांव) श्री ओगलकर के विरुद्ध चार हजार मत से चुनकर आये। सुख मिला।

२५-२-३७

महिलाश्रम, उत्सव— ७॥ से १०॥, श्री सुशीला बहन ने सभानेत्री का काम किया। स्त्री-शिक्षा पर दादा धर्माधिकारी, काका साहब, आर्यनायकम्, कुमारप्पा, मृदुला बहन अम्बालाल, आशा बहन आदि ने अपने विचार कहे।

कलकत्ता से—रामदेवजी पोद्दार वगैरा बापूजी से मिलने आये। सेगांव जाकर बातें करके आये।

रात को सरदार, राजेन्द्रबाबू, घनश्यामदास सबसे साधारण बातचीत।

२६-२-३७

सस्ता साहित्य मंडल की सभा का काम हुआ—सुबह व दोपहर को।
महिला आश्रम का ८ से १०। तक। विचार-विनिमय। जाजूजी, काका, किशोरलाल भाई, आशा बहन, कमला, वासन्ती, पद्मा, सरोजनी नायडू, नाना आठवले, सुशीला बहन आदि ने व मैंने अपने विचार शिक्षण आदि के बारे में कहे।

सरोजनी नायडू, राजाजी सुबह आये। घनश्यामदास बिड़ला व ठक्कर बापा शाम को गये। प० जवाहरलाल नेहरू, भूलाभाई, गोविंद वल्लभ पंत, डा० खान साहब, सरदार मंगलसिंह वगैरा शाम को आये। जवाहरलाल

४-३-३७

गोपबन्धु चौधरी से उडीसा के काम के बारे मे बातचीत।
महिला आश्रम की इमारत का निश्चय। श्री म्हात्रे, घामाजी, राधाकृष्ण व आश्रम वालो के साथ निश्चय।
महिला-मण्डल व महिला-आश्रम की सभायें ११॥ बजे हुईं।
मथुरादास मोहता व पुखराज कोचर से वर्धा मे बैंक खोलने का निश्चय।
पूनमचन्द, गगाबिसन, चिरजीलाल आदि से बातें। अस्पताल जाकर सोनीबाई, सीताराम चौबे व भणसाली से मिलना।
१० बजे की एक्प्रेस से नासिक-बम्बई रवाना।
मूर्तिजापुर मे ब्रिजलाल बियाणी आये। अकोला तक बातें। नीद खूब आती थी। भीड हुई। आकोला मे सेगांव से दो टिकिट इण्टर की करवाई। नासिक तक के ८॥ रु० लगे।

नासिक-बम्बई, ५-३-३७

जलगाव के बाद आख खुली। निवृत्त हुए।
नासिक मे सीताराम शास्त्री व देशपाडे स्टेशन आये। काका साहब गद्रे के घर डा० मुले (पुलगाव वाले) भागप्पा, पोतनीश आदि मिले। हनुमानगढी मे मराठा धर्मशाला देखी। गोदडेबुवा (गाडगे बुवा) आये। महानन्द स्वामी बम्बई से आये। धर्मशाला उत्तम मालूम हुई। भली प्रकार देखी। हरिजन छात्रालय देखा।
इलाहाबाद एक्सप्रेस से बम्बई रवाना। फाटक वकील, महानन्द स्वामी, बातें। भीड ज्यादा थी।
दादर उतरे। केशवदेवजी, पन्ना, केशर, कमला से मिले।
जूहू मे श्रीकृष्ण के साथ सरदार से मिले।

जुहू-बम्बई, ६-३-३७

अकेले वरसोवा तक गये।
बम्बई मे सुव्रता बहन से मिलना। उसका घबराना आदि देखकर उसे आश्वासन व हिम्मत दी। प्रयत्न करने को कहा। बिडलों के घर भोजन।
बृजमोहन व उनकी स्त्री रुक्मणीबाई आज यूरोप रवाना हुए। उन्हें स्टीमर पर मिलना—बातें।

वर्धा, २-३-३७

मौलाना अबुल कलाम आजाद व राजा साहब कलकत्ता गये। स्टेशन पर मिले।

सरदार पटेल व गंगाधर राव से बातचीत।

गंगाधर राव के हाथ से नवभारत विद्यालय की नई इमारत के बारे की क्रिया हुई — सभा।

टेनरी — नालवाड़ी का समारंभ सावनूरकर की रिपोर्ट मननीय थी।

बापूजी ने भी कहा — गोरक्षा व हरिजन सेवा का टेनरी से सम्बन्ध।

सेगांव — बापू के साथ जाना, वहीं भोजन, घूमना, प्रार्थना, रामायण।

वर्धा — वरांगना के अभागियों के निवास की बातें — बैंक की बातें।

वर्धा-नागपुर, वर्धा, ३-३-३७

फाटक व पंजाबी युवक से बातें। महिला आश्रम जाकर मीरा, हरिभाऊजी आदि को देखा।

लक्ष्मीनारायण मंदिर की महत्व की सभा हुई। नासिक मराठा धर्मशाला के साइगे उर्फ गुदड़ी बुवा के बारे में ठहराव। किसान जिला संगठन के कार्य के बारे में विचार-विनिमय। वर्धा बैंक के बारे में पूनमचन्द से चर्चा। मगनवाड़ी का म्यूजियम-माडल देखा। म्हातरे से बातें। इजिप्शियन डेपुटेशन से मिलने डाक बंगले गये। वह अपने घर भोजन करने आये। तैयारी की।

आशा बहन से महिला आश्रम के बारे में बातचीत।

टागोर की पार्टी का 'चित्रांगदा' देखने नौ बजे नागपुर गये। रात को २॥ बजे वापस आये।

नासिक-बम्बई, ५-३-३७

जलगांव के बाद आंख खुली। निवृत्त हुआ।

नासिक में सीताराम शास्त्री व देशपांडे स्टेशन आये। बाबा साहब रुइ़या के घर डा० मुंजे (पुनगांव वाले) भागवत, पोतनीस आदि मिले। हनुमानगढ़ी में मराठा धर्मशाला देखी। गोदडेबुवा (गाडगे बुवा) आये। महानन्द स्वामी बम्बई से आये। धर्मशाला उत्तम मालूम हुई। भंगी प्रकार देखी।
हरिजन छात्रालय देखा।

इलाहाबाद एक्सप्रेस से बम्बई रवाना। फाटक वकील, महानन्द स्वामी, बातें। भीड़ ज्यादा थी।

दादर उतरे। केशवदेवजी, पन्ना, केशर, कमला से मिले।

जुहू में श्रीकृष्ण के साथ सरदार से मिले।

जुहू-बम्बई, ६-३-३७

अकेले वरसोवा तक गये।

बम्बई में सुव्रता बहन से मिलना। उसका घबराना आदि देखकर उसे आश्वासन व हिम्मत दी। प्रयत्न करने को कहा। बिड़लों के घर भोजन। बृजमोहन व उनकी स्त्री रुक्मणीबाई आज यूरोप रवाना हुए। उन्हें स्टीमर पर मिलना—बातें।

राइटर का टेलीफोन आया—जवाहरलालजी की गिरफ्तारी के बारे में पूछ-ताछ। थोड़ा विचार व मन में चिन्ता हुई।
पू० बापूजी, मौलाना आजाद, जवाहरलाल, सरदार व मैं मिलकर करीब शाम को ६ से ८ तक बातचीत, सफाई, खुलासा।
जवाहरलाल, कृपलानी, नरेन्द्रदेव रात की गाड़ी में गये। शंकरराव देव, दास्ताने, पटवर्द्धन भी गये।

वर्धा, २-३-३७

मौलाना अबुल कलाम आजाद, काका साहब कलकत्ता गये। स्टेशन पर मिले।
सरदार पटेल व गगाधर राव से बातचीत।
गंगाधर राव के हाथ से नवभारत विद्यालय की नई इमारत के पाये की क्रिया हुई—सभा।
टेनरी—नालवाडी का समारभ वालुजकर की रिपोर्ट मननीय थी। बापूजी ने भी कहा—गौरक्षा व हरिजन सेवा का टेनरी से सम्बन्ध।
सेगाव—बापू के साथ जाना, वहीं भोजन, घूमना, प्रार्थना, रामायण।
वर्धा—खरागणा के असामियों के निकाल की बातें—बैंक की बातें।

वर्धा-नागपुर, वर्धा, ३-३-३७

फाटक व पजाबी युवक से बातें। महिला आश्रम जाकर मीरा, हरिभाऊजी आदि को देखा।
लक्ष्मीनारायण मदिर की महत्व की सभा हुई। नासिक मराठा धर्मशाला के गाडगे उर्फ गुदडी बुवा के बारे मे ठहराव। किसान जिला संगठन के कार्य के बारे मे विचार-विनिमय। वर्धा बैंक के बारे में पूनमचन्द से चर्चा। मगनवाडी का म्यूजियम-माडल देखा। म्हातरे से बातें। इजिप्शियन डेपुटेशन से मिलने डाक बगले गये। वह अपने घर भोजन करने आये। तैयारी की।
आशा बहन से महिला आश्रम के बारे मे बातचीत।
टागोर की पार्टी का 'चित्रांगदा' देखने नौ बजे नागपुर गये। रात को २॥ बजे वापस आये।

सभा में।
डा० डोगरा की मृत्यु, उनके लडके से मिलना।

माटुंगा-बम्बई, ११-३-३७

सरदार-वल्लभ भाई से नरीमान, ब्रेलवी, खरे आदि के बारे में मेरे विचार स्पष्ट तौर से कहे। *उन्हें चीफ मिनिस्टर होने के लिए कहा।*
सरदार को सुव्रता बहन व मदन की हालत कही। उन्होंने मेरी राय व योजना ही पसन्द की।
सुव्रता बहन व मदन से बातचीत। उसके दु:ख व चिन्ता से मन को दु:ख व विचार रहा। दूसरा रास्ता समझ में नहीं आया। देर तक समझाना व फैसला करना।
आर्यनायकम, श्रीमन् मिले। रामेश्वरदासजी बिड़ला से बातचीत।
नागपुर मेल से तीसरे वर्ग से वर्धा रवाना।

रेल में—वर्धा, १२-३-३७

हिन्दी सम्मेलन के भाषण वगैरा पढ़े। वर्धा पहुंचने पर अस्पताल होते हुए बगले। श्री राजगोपालाचारी भी आज मद्रास से आये। काका साहब *कालेलकर से सभापति होने के बारे में बातचीत। उन्हें व टण्डनजी के नाम* पत्र लिखकर दिया। मेरा नाम वापस लेने का अधिकार दिया।
बापू सेठ रुकमानन्द (वर्धा वाले), गौरीलालजी, बाबा साहब (वाढोणे वाले) रामदेवजी आदि आये।
मोती बहन व आशा बहन से बातचीत। राधाकृष्ण से महिला आश्रम इमारतों की चर्चा।
राजाजी व किशोरलाल भाई आदि से बातें।
बम्बई की स्थिति के बारे में श्री जानकी से बातचीत।

१३-३-३७

महिला आश्रम की इमारत का निश्चय करने में करीब अढ़ाई घटे खर्च हुए। जाजूजी, राधाकृष्ण, धामा, आशा बहन, भागीरथी बहन, सुन्दरलाल मिश्र आदि उपस्थित थे।
बम्बई से खेती काम के लिए जीवणलाल भाई, जाबरअली, रामजी भाई, पूनमचन्द आये। सेगांव, जामठा वगैरा देखने गये।

ा० मुडगांवकर व कांता मुडगांवकर से मिलना। बातचीत। कान्ता को स्थिति पूरी समझाई। कल फिर मिलने का निश्चय।
सुव्रताबाई, रामनिवास, कमला, राधाकृष्ण, कमल व नाथजी से बातचीत व विचार-विनिमय। मदन को तार भिजवाया।
जुहू में श्रीकृष्ण, केशव, नर्मदा से बातचीत घूमते समय देर तक।

७-३-३७

सुव्रता बहन से व रामनिवास से स्पष्ट खुलासेवार बातचीत। कान्ता मुडगांवकर से दो घंटा स्पष्ट बातें। फिर सुव्रता व रामनिवास से बातें।
नरीमान—श्रेलवी, गोपी बहन, खुर्शेद बहन, जीवनलाल भाई से बातें।
जुहू में जीवनलाल भाई, केशवदेवजी आदि से बातें। मस्तक भारी था।
आबिदअली, मूलजी, उमा, नर्मदा से थोड़ी देर पत्ते खेले।

८-३-३७

रामनारायण चौधरी, अंजना, प्रताप, जयनारायण व्यास, ब्रिजमोहन, सरस्वती मिलने आये—बातें।
सुव्रता बहन, रामनिवास, मदन, बाबू से बातें।
मदन के साथ कान्ता मुडगांवकर के यहां; उसे लेकर जुहू। दोनों से करीब चार घंटे तक, उनके निश्चय के कारण जो परिस्थिति पैदा होवेगी, उसका चित्र पूरी तौर से खींचकर समझाया।
रामनिवास, मदन व कान्ता के साथ फिर डेढ़-दो घंटे तक विचार-विनिमय।
एम० एन० राय व मणी बहन कारा आये। उनकी व्यवस्था का विचार।

जुहू-बम्बई, ९-३-३७

मथुरादास भाई, पेरीन बेन, गोपीबहन से बातचीत। सुव्रता बहन को समझाना।
ऑफिस में पत्र-व्यवहार, बातचीत।

१०-३-३७

केशवदेवजी आदि से बातें।
बम्बई में सुव्रता बहन, रामनिवास, नाथजी, मदन, राधाकृष्ण, कमला से बातें, विचार-विनिमय।
सेर से व स्वामी से बातचीत। लोहे की कम्पनी व बच्छराज कम्पनी की

सभा मे।
डा० डोगरा की मृत्यु, उनके लड़के से मिलना।

माटुंगा-बम्बई, ११-३-३७

सरदार-वल्लभ भाई से नरीमान, ब्रेलवी, खरे आदि के बारे मे मेरे विचार स्पष्ट तौर से कहे। उन्हे चीफ मिनिस्टर होने के लिए कहा।
सरदार को सुव्रता बहन व मदन की हालत कही। उन्होंने मेरी राय व योजना ही पसन्द की।
सुव्रता बहन व मदन से बातचीत। उसके दु ख व चिन्ता से मन को दु ख व विचार रहा। दूसरा रास्ता समझ मे नही आया। देर तक समझाना व फैसला करना।
आर्यनायकम, श्रीमन् मिले। रामेश्वरदासजी बिड़ला से बातचीत।
नागपुर मेल से तीसरे वर्ग से वर्धा रवाना।

रेल में—वर्धा, १२-३-३७

हिन्दी सम्मेलन के भाषण वगैरा पढ़े। वर्धा पहुचने पर अस्पताल होते हुए बगले। श्री राजगोपालाचारी भी आज मद्रास से आये। काका साहब कालेलकर से सभापति होने के बारे मे बातचीत। उन्हे व टण्डनजी के नाम पत्र लिखकर दिया। मेरा नाम वापस लेने का अधिकार दिया।
बापू सेठ रामानन्द (वर्धा वाले), गौरीलालजी बाबा साहब (बाहरास वाले) रामदेवजी आदि आये।
मोती बहन व आशा बहन से बातचीत। राधाकृष्ण से महिला आश्रम इमारतो की चर्चा।
राजाजी व किशोरलाल भाई आदि से बाते।
बम्बई की स्थिति के बारे मे श्री जानकी से बातचीत।

१३-३-३७

महिला आश्रम की इमारत का निश्चय करने मे करीब ढाई घंटे खर्च हुए। जाजूजी, राधाकृष्ण, धोत्रे, आशा बहन भागीरथी बहन [illegible] मिश्र आदि उपस्थित थे।
बम्बई से मेरी काम के लिए जीवनलाल भाई [illegible] पूनमचन्द आये। सेगाव, आसपास [illegible] देखने गये।

डा० मुडगांवकर व कांता मुडगांवकर से मिलना। बातचीत। कान्ता को स्थिति पूरी समझाई। कल फिर मिलने का निश्चय।
सुव्रताबाई, रामनिवास, कमला, राधाकृष्ण, कमल व नाथजी से बातचीत व विचार-विनिमय। मदन को तार भिजवाया।
जुहू में श्रीकृष्ण, केशव, नर्मदा से बातचीत घूमते समय देर तक।

७-३-३७

सुव्रता बहन से व रामनिवास से स्पष्ट खुलासेवार बातचीत। कान्ता मुडगावकर से दो घंटा स्पष्ट बातें। फिर सुव्रता व रामनिवास से बातें।
नरीमान—श्रेलवी, गोपी बहन, खुर्शेद बहन, जीवनलाल भाई से बातें।
जुहू मे जीवनलाल भाई, केशवदेवजी आदि से बातें। मस्तक भारी था।
आबिदअली, मूलजी, उमा, नर्मदा से थोडी देर पत्ते खेले।

८-३-३७

रामनारायण चौधरी, अंजना, प्रताप, जयनारायण व्यास, ब्रिजमोहन, सरस्वती मिलने आये—बातें।
सुव्रता बहन, रामनिवास, मदन, बाबू से बातें।
मदन के साथ कान्ता मुडगावकर के यहा; उसे लेकर जुहू। दोनो से करीब चार घटे तक, उनके निश्चय के कारण जो परिस्थिति पैदा होवेगी, उसका चित्र पूरी तौर से खीचकर समझाया।
रामनिवास, मदन व कान्ता के साथ फिर डेढ़-दो घटे तक विचार-विनिमय।
एम० एन० राय व मणी बहन कारा आये। उनकी व्यवस्था का विचार।

जुहू-बम्बई, ९-३-३७

मथुरादास भाई, पेरीन बेन, गोपीबहन से बातचीत। सुव्रता बहन को समझाना।
ऑफिस मे पत्र-व्यवहार, बातचीत।

१०-३-३७

केशवदेवजी आदि से बातें।
बम्बई मे सुव्रता बहन,रामनिवास, नाथजी, मदन, राधाकृष्ण, कमला से बातें, विचार-विनिमय।
मेर से व स्वामी से बातचीत। लोहे की कम्पनी व बच्छराज कम्पनी की

सभा में।
डा० डोगरा की मृत्यु, उनके लड़के से मिलना।

माटुंगा-बम्बई, ११-३-३७

सरदार-वल्लभ भाई से नरीमान, ब्रेलवी, खरे आदि के बारे में मेरे विचार स्पष्ट तौर से कहे। उन्हें चीफ मिनिस्टर होने के लिए कहा।
सरदार को सुव्रता बहन व मदन को हालत कही। उन्होंने मेरी राय व योजना ही पसन्द की।
सुव्रता बहन व मदन से बातचीत। उसके दु ख व चिन्ता से मन को दु ख व विचार रहा। दूसरा रास्ता समझ में नही आया। देर तक समझाना व फैसला करना।
आर्यनायकम, श्रीमन् मिले। रामेश्वरदासजी बिड़ला से बातचीत।
नागपुर मेल से तीसरे वर्ग से वर्धा रवाना।

रेल में—वर्धा, १२-३-३७

हिन्दी सम्मेलन के भाषण वगैरा पढ़े। वर्धा पहुचने पर अस्पताल होते हुए बगले। श्री राजगोपालाचारी भी आज मद्रास से आये। काका साहब कालेलकर से सभापति होने के बारे में बातचीत। उन्हे व टण्डनजी के नाम पत्र लिखकर दिया। मेरा नाम वापस लेने का अधिकार दिया।
बापू सेठ रुकमानन्द (वर्धा वाले), गौरीलालजी, बाबा साहब (बाढोणे वाले) रामदेवजी आदि आये।
मोती बहन व आशा बहन से बातचीत। राधाकृष्ण से महिला आश्रम इमारतों की चर्चा।
राजाजी व किशोरलाल भाई आदि से बातें।
बम्बई की स्थिति के बारे में श्री जानकी से बातचीत।

१३-३-३७

महिला आश्रम की इमारत का निश्चय करने में करीब अढाई घंटे खर्च हुए। जाजूजी, राधाकृष्ण, धामा, आशा बहन, भागीरथी बहन, सुन्दरलाल मिश्र आदि उपस्थित थे।
बम्बई से खेती काम के लिए जीवणलाल भाई, जाबरअली, रामजी भाई, पूनमचन्द आये। सेगाव, जामठा वगैरा देखने गये।

१६-३-३७

घूमते समय सुशीला नायर साथ में।
बापू से बातें। जवाहरलाल को बापू का दुःख कहा।
वर्किंग कमेटी ९ से १२, शाम को ३ से ६ तक हुई। आखिर में मुख्य ठहराव।
ऑफिस लेने का ठीक तौर से मंजूर हुआ।
श्री टण्डनजी से दोपहर को सम्मेलन की चर्चा।
स्टेशन—चि० सावित्री व लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार आये।
बिड़ला हाउस में भोजन। बातें, वहीं पर सोने का निश्चय।

१७-३-३७

सावित्री, लक्ष्मणप्रसादजी के साथ ८॥ बजे हरिजन कॉलोनी पहुंचे। उन्हें बापू व अन्य लोगों से मिलाया।
वर्किंग कमेटी ९ से ११ तक हुई। साम्यवादी मित्रों की दिक्कत का वर्णन, विचार-विनिमय।
आल इंडिया कांग्रेस कमेटी ११। से ८ तक हुई। मुख्य ठहराव, ऑफिस लेने का स्वीकार करने पर चर्चा कल पर स्थगित रही।
पूज्य मालवीयजी से बातें।
शाम प्रार्थना में सुचिता ने भजन, 'अन्तर मम विकसित करो, अन्तरतर

हैं सुन्दर भाषा।
बिड़ला हाउस में सर पुरुषोत्तम, घनश्यामदासजी, लक्ष्मण प्रसादजी, सावित्री से बातें।

१८-३-३७

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की नियमावली पढ़ी।
वर्किंग कमेटी ६ से १२ तक, गंभीर चर्चा। जवाहरलाल की मानसिक स्थिति के कारण समाधान।
आल इंडिया कमेटी की सभा २ से रात ६॥ तक हुई। मुख्य ठहराव आफिस लेने के बारे का स्वीकार हुआ। श्री जयप्रकाश की उपसूचना को, जिसके पक्ष में जोरों से पू० मालवीयजी, टण्डनजी, स्वरूप बहन, जयप्रकाश, एम० एन० राय के भाषण हुए थे, ७८ व उसके विरुद्ध १३५ मत मिले। मूल ठहराव के पक्ष में (१२७) व विरुद्ध में ७० याने ५७ के बहुमत से मुख्य ठहराव पास हुआ।
प्रस्ताव के पक्ष में सरदार का भाषण सुन्दर हुआ। वैसे भाषा की दृष्टि से थोड़े सुधार की आवश्यकता थी।
सावित्री से कमल को पत्र लिखवाया। मैंने भी लिखा। मृदुला साराभाई से बातें।

१९-३-३७

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भाषण की तैयारी।
हरिजन कालोनी में जलियां वाला मेमोरियल की सभा बापूजी (महात्माजी) के सभापतित्व में हुई। दो घंटे से ज्यादा सभा का काम चला। इस काम में नया जीवन डालने पर विचार-विनिमय। ट्रस्टी मंडल में शामिल होना पड़ा।
सावित्री व लक्ष्मणप्रसादजी से बातचीत की।
राजेन्द्रबाबू व रामकिसन डालमिया मिलने आये। खानगी व अन्य बातें।
पार्वती (डिडवानिया) के घर लक्ष्मणप्रसादजी, सावित्री के साथ गये।
कनवेन्शन की सभा। जवाहरलाल का भाषण पौने दो घंटे से ज्यादा हुआ और उसमें जहर तथा क्रोध था। भाषण अच्छा नहीं हुआ।
बापू से पौने दो घंटे तक विचार-विनिमय।

२०-३-३७

हि० सा० सम्मेलन पर भाषण इनने दिया।

राजनैतिक बन्दी सबधी सभा में गये। एक घंटा करीब वहां रहे। शरद बोस सभापति थे।

वर्किंग कमेटी ११ से १ व रात ८ से ११॥ तक हुई। पं० जवाहरलाल ने अपना खुलासा दिया व भूल की माफी अन्तःकरण से स्वीकार की। उसका मन पर असर पड़ा व उनके प्रति आदर व भक्ति परिमाण में बढ़ी।

जवाहरलाल से वर्किंग कमेटी के पहले व रात ११॥ से १२ दिल खोलकर बातें हुईं। क्रोध प्रेम में परिवर्तन हुआ, आदर बढ़ा।

कन्वेन्शन में तीन-चार घंटे बैठे। कई लोगों से बातचीत।

चि० कमल का पत्र आया। लक्ष्मण प्रसादजी व सावित्री से थोड़ी बातें।

२१-३-३७

जलियावाला कमेटी के बारे में श्री लाला गिरधारी लाल से बातचीत। योजना पर विचार।

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११, दोपहर को २ से ३॥ तक रही। सरदार से थोड़ा मतभेद हुआ। उसका दु:ख रहा, परन्तु उपाय नहीं था।

डा० अन्सारी के बगले पार्टी जौहरा व शौकत ने जवाहरलाल को दी थी, वहां गये। चि० सावित्री, लक्ष्मणप्रसादजी भी साथ थे। कई लोगों से मिलना हुआ।

५-३५ बजे की ग्रान्ड ट्रंक से सेकंड क्लास में सावित्री व लक्ष्मण प्रसादजी के साथ वर्धा रवाना।

वर्धा २२-३-३७

नागपुर में अवारी, पूनमचन्दजी आदि मिले।

सावित्री-लक्ष्मणप्रसादजी से बातें। जगन्नाथ महोदय से भी बातें।

वल्लभदास कन्ट्राक्टर से बातचीत। केदार वकील से बातें।

श्री लक्ष्मण प्रसादजी के लड़के जगदीश को देहरादून में भस्म हो गये। चिन्ता। डा० सहानी को बुलाकर समझा। तार आदि दिये।

२३-३-३७

गोरीलाल भाई, शकरलाल बैंकर, कुमारप्पा, जेराजाणी, मुन्नाजी,

कृष्णदास आदि से बातें।
डा० सहानी, उनकी पत्नी, बच्चे चि० सावित्री को देखने व उसके साथ भोजन करने आये। कुटुम्ब की स्त्रियां आई, कुछ गीत वगैरा भी। थोड़ी देर ब्रिज वगैरा, विनोद।
चर्खा संघ की सभा का कार्य ३ से ५। बजे तक।
शाम की गाडी मे पू० बापूजी, सरदार, भूलाभाई आदि आये। बापूजी की अध्यक्षता मे चर्खा-संघ की सभा का कार्य थोडा हुआ।
रात के भोजन के समय सरदार भूलाभाई, आदि तथा बाद मे लक्ष्मणप्रसादजी व सावित्री से थोडी बातें।

२४-३-३७

लक्ष्मण प्रसादजी व सावित्री को लेकर सेगाव गये। सब दिखाया। चर्खा संघ की सभा का कार्य। मारवाडी शिक्षा मण्डल, मास्टरो की सभा। खुलासा, स्पष्ट स्थिति समझाई।
सेगाव जाते व वहा घूमते हुए बापू से बातचीत।
सरदार व खेर से गाडी लेट होने के कारण, स्टेशन पर साफ बातें।

वर्धा-नागपुर, २५-३-३७

श्री लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार व चि० सावित्री आज कलकत्ता गये। नागपुर तक उनके साथ ठीक बातें। जानकी ने उन्हे जेवर (गहना) कमला नेहरू वाली पन्ने की चूडिया, मेरे लौंग, पू० बच्छराजजी की पन्ने की अगूठी, जानकी के अपने हीरे के गुरलिये वगैरा दिये।
नागपुर मे डा० खरे से बातचीत। पूनमचन्द रांका व असेम्बली। उनसे बातें। उन्होने अपनी प्रतिज्ञा पर कायम रहने का निश्चय कहा। अन्य बातें। अप्पाजी गवाने व वेंकटराव गोडे से हि० का० के बारे में बातचीत। पुखराज से भी हिंगणघाट स्टेशन पर बातें। उसने स्वीकार किया।
ग्राम उद्योग संघ ट्रस्ट की सभा हुई।
ग्राण्ड ट्रक से मद्रास रवाना।

रेल-मद्रास, २६-३-३७

बिजयवाडा मे इडली वगैरा का नाश्ता।
बापू से भाषण की थोडी चर्चा, अग्रेजी मे थोडा सुधार।

मद्रास सेन्ट्रल स्टेशन पर ठीक लोग जमा थे, स्वागत। थोड़ी दूर त
प्रोसेशन से, पू० बा० व सेठी रमन भी थे।
हिन्दी प्रचार कार्यालयमें पहुंचे।
दीक्षांत समारंभ। बापू का भाषण उत्तम हुआ। टण्डनजी का भाषण मं
मननीय था, पर थोड़ा लम्बा हुआ।
स्वागत समिति की सभा का कार्य ११॥ तक रात को हुआ।

मद्रास, २७-३-३७

प्रदर्शनी का उद्घाटन लीलावती मुंशी ने किया। भाषण आदि हुए
इतिहास परिषद के अध्यक्ष जयचन्द्रजी का भाषण।
भारतीय परिषद में बापूजी व काका का भाषण।
साहित्य-परिषद का कार्य १२ बजे शुरू होकर तीन बजे तक चला।

२८-३-३७

विज्ञान सभा का कार्य। श्री रामनारायण मिश्र ने भूगोल पर ठीक विचार
प्रगट किये; अच्छा लगा।
प्रचारकों की सभा, सभापति बनना पड़ा।
विषय निर्वाचिनी सभा का कार्य ११ बजे तक हुआ।
दोपहर को हिन्दी साहित्य सम्मेलन का कार्य। बापू का राजाजी वगैरा
दक्षिण प्रान्त के मित्रों से खूब विचार-विनिमय। बाद में राजाजी ने
काग्रेस-सबधी ठहराव रखा। टी० प्रकाशम, साम्ब मूर्ति, कालेश्वरराव,
याकुब हुसेन ने ठहराव पर अपने विचार प्रगट किये। ठीक वातावरण
पैदा हुआ।
भारतीय परिषद में बापूजी ने प्रस्ताव का परिचय दिया—हिन्दी
हिन्दुस्थानी के भेद पर खुलासा स्पष्ट किया। बाद में सभापति के नाते काम
करना पड़ा।
बापू ने हरिहर शर्मा (अन्ना) की भूल बताई; दु.ख हुआ। रात को
प्रचारक सभा का कार्य १२ बजे तक।

२९-३-३७

प्रार्थना, गीताई। काका साहब व हरिहर शर्मा की बातें। बापू ने कल कही
थी। दु.ख व विचार। सत्यनारायणजी को अब मद्रास रखना पड़ेगा।

मद्रास सेन्ट्रल स्टेशन पर ठीक लोग जमा थे, स्वागत। थोड़ी दूर तक प्रोसेशन मे, पू० बा० व लेडी रमन भी थे।
हिन्दी प्रचार कालोनी पहुंचे।
दीक्षात समारभ। बापू का भाषण उत्तम हुआ। टण्डनजी का भाषण भी मननीय था, पर थोडा लम्बा हुआ।
स्वागत समिति की सभा का कार्य ११।। तक रात को हुआ।

मद्रास, २७-३-३७

प्रदर्शनी का उद्घाटन लीलावती मुंशी ने किया। भाषण आदि हु
इतिहास परिषद के अध्यक्ष जयचन्दजी का भाषण।
भारतीय परिषद मे बाबूजी व काका का भाषण।
साहित्य-परिषद का कार्य १२ बजे शुरू होकर तीन बजे तक चला।

२८-३-३७

विज्ञान सभा का कार्य। श्री रामनारायण मिश्र ने भूगोल पर ठीक विच प्रगट किये; अच्छा लगा।
प्रचारकों की सभा, सभापति बनना पडा।
विषय निर्वाचिनी सभा का कार्य ११ बजे तक हुआ।
दोपहर को हिन्दी साहित्य सम्मेलन का कार्य। बापू का राजाजी व दक्षिण प्रान्त के मित्रों से खूब विचार-विनिमय। बाद मे राजाजी कांग्रेस-सबधी ठहराव रखा। टी० प्रकाशम, साम्ब मूर्ति, कालेश्वरर याकुब हुसेन ने ठहराव पर अपने विचार प्रगट किये। ठीक वाताव पैदा हुआ।
भारतीय परिषद मे बापूजी ने प्रस्ताव का परिचय दिया—हि हिन्दुस्थानी के भेद पर खुलासा स्पष्ट किया। बाद मे सभापति के नाते करना पड़ा।
बापू ने हरिहर शर्मा (अन्ना) की भूल बताई; दुःख हुआ। रात प्रचारक सभा का कार्य १२ बजे तक।

२९-३-३७

प्रार्थना, गीताई। काका साहब व हरिहर शर्मा की बातें। बापू ने बल थी। दुःख व विचार। सत्यनारायणजी को अब मद्रास रखना पड़ेगा।

ठीक हुई। सभापति की हैसियत से आज की सभा के और कारण कान्स्टी-ट्यूशन —विधान का खुलासा किया।

२-४-३७

महिला आश्रम विद्यालय के प्लान पर देर तक विचार-विनिमय। आखिर धामाजी व राधाकृष्ण के सुपुर्द किया।

बापूजी से मिलने सेगांव। खान साहब को वहां छोड़ा। नन्दलाल बोस को वहां से साथ लाये।

महिला आश्रम में भागीरथी बहन, हरिभाऊजी, लक्ष्मी अम्मा से बातें। नन्दलाल बोस, उनके विद्यार्थी, आर्यनायकम आदि के साथ अपने यहां भोजन-बातें। नन्दलाल बोस को पवनार का स्थान व समाधि की जगह दिखायी। बापू ने समाधि के स्थान के बारे में अपनी इच्छा कही।

वर्किंग कमेटी स्थगित होने के कारण आज बम्बई जाना स्थगित रखा। जानकी देवी, श्रीराम, रमाकान्त धुलिया होकर बम्बई जाने के लिए रात को एक्सप्रेस से रवाना।

३-४-३७

चि० मोहन देशपाण्डे, हरिभाऊजी व वैजनाथजी से बातें। श्री नन्दलाल बोस को समाधि व छत्री का स्थान दिखाया, उन्हें पसन्द आया।

बच्छराज की मीटिंग का काम बंगले पर किया।

आर्यनायकम् व श्रीमन् के साथ मारवाड़ी विद्यालय के काम का निर्णय। नाना आठवले के साथ महिला आश्रम के बारे में बातचीत, विचार-विनिमय।

किशोरलालभाई, मोती, सरोजनी, शान्ता, जगन्नाथ महोदय आदि मिले। खादी यात्रा स्थगित की गई, इसलिये बम्बई जाने की तैयारी, नागपुर-मेल से बम्बई रवाना। थर्ड में बिलकुल जगह नहीं, इण्टर की टिकिट ली। चि० रामकृष्ण साथ में। चालिसगांव से जानकी देवी साथ हुई। रास्ते में भीड़ थी।

बम्बई, गुरु, ४-४-३७

गुप्ता बाई के यहां गये। चि० मदन मिला। बाद में कमला, रुइया व गुप्ता बाई से मिलना। रामनिवास व श्रीनाथजी से मदन के मामले में बातचीत।

[illegible] गयी।

कमलेश्वरजी [illegible] के बारे। रामेश्वर की [illegible] के बारे।

जू-५-४-३७

सरदार का टेलीफोन आया। उन्होंने भोजन को बुलाया।

केशवदेवजी व रामेश्वर से सोना मिल के सम्बन्ध में देर तक बातें।

सरदार, महादेवभाई, मणी, डाह्याभाई के साथ भोजन, बातचीत—राजनैतिक व खानगी।

आश्रम करीब ६ घंटे रहे। वहां से दानीजी के यहां होकर गुप्ता बाई के यहां गुप्ता बाई, कमला रुइया, मदन व शान्ता से देर तक अलग-अलग बातें।

कोई दूसरा मार्ग निकालना असम्भव मालूम दिया।

१-४-३७

श्री पेरीनबहन, बहादुरजी बॅरिस्टर, बाबूभाई, योगी, डाह्याभाई, पालीरामजी, फतेचन्द वगैरा मिलने आये। पालीरामजी से देर तक मदन के बारे में बातचीत, गुजारा, भावी तैयारी वगैरा।

श्रद्धानन्द विधवा आश्रम, माटुंगा तथा रामनारायण रुइया कालेज माटुंगा देखी। सोफिया व सादल्ला से मिले।

। बनाई हुई कविता सुनाई। ठीक बुद्धि चलाई है। सोका ठीक कविता बना सकेगी।

नजीभाई के साथ विलपार्ले। डा० वसन्त शास्त्री से मिले, जो मकान बना है उसे देखा। फिर अंधेरी जमीन देखते हुए आज बम्बई में आकर ठहर रहे। समुद्र स्नान। राधाकृष्ण
।

नूभाई मानभाई वाली), माता आदि आये, देर तक रहे।

प्रो० जयचन्दजी, राजा मि० शास्त्री, मनु आदि आये।

चीन, समुद्र किनारे घूमना।

हिर सभा। ब्रेलवी सभापति थे। वहां कांग्रेस की स्थापना।

१४-४-३७

ाई, जीवनदास मिलने आये।

मिलकर रजिस्ट्रार ऑफिस। रामनारायण रुइया कालेज के स्टाम्प का झगड़ा, सही नहीं हुई।

लोहा कम्पनी के बारे में दामोदर को पत्र लिखवाये।

९-४-३७

मि० मदन रुइया व कान्ता मुंडगावकर मिलने आये। देर तक बातचीत समझाना, कोई परिणाम की आशा नहीं।
श्री धीरजलाल मोदी व उनके लड़के से प्रेस सम्बन्ध मे बातचीत।
मि० रमाकान्त व श्रीराम पोद्दार (हाथरस वाले) से बातचीत।
के० एम० अस्पताल में डा० जीवराज मेहता से शंकरराव देव के बारे में बातें। अभी अधिक समय लगेगा। वहा डा० बाजी से परिचय, बातचीत
मटूभाई जमीयतराम के ऑफिस मे श्रीनिवास ट्रस्ट की सभा।
हिन्दुस्तान शुगर मिल की सभा।
चि० रामनिवास, कमला रुइया, सुब्रता व चि० शान्ता से बातचीत। सुब्रता बाई से साफ-साफ कह दिया।
रामेश्वरजी बिड़ला से देर तक शक्कर मिल की बातें। ब्रेलवी से उर्दू पत्र के बारे मे बातें।

१०-४-३७

सरदार व मथुरादास आये। उन्हें सब जमीन दिखाई। कन्हैयालाल मुंशी व लीलावती आये।
मधुरी—(चिनुभाई लालभाई लौकमलाल, न्यू माणिक चौक मिल अहमदाबाद वाली) व दूसरे लोग, चि० रत्ना वगैरा आये। मधुरी सरल लड़की मालूम हुई।
मिसेस लुकमानी व लतीफ वगैरा आये।
श्री जौहरी से देर तक हाउसिंग कम्पनी के बारे में खूब साफ बातचीत हुई।

११-४-३७

जीवनलाल सम्पत के साथ हिम्मतलाल त्रिवेदी (किलाचन्द) वाले आये।
मथुरादास लौकमजी व उनका भानजा आया।
विलेपारले छावणी मे वहां के कार्यकर्ताओं के साथ बातचीत।
शाम को माटुंगा। वहा से कांग्रेस हाउस। ग्राम्य उद्योग संस्था की प्रदर्शनी का उद्घाटन। श्री जे० सी० कुमारप्पा का भाषण हुआ, मीना हाल में।

मुझे सभापति बनना पड़ा। वहां ग्राम उद्योग की चीजों का प्रीतिभोज हुआ।
जुहू में चि० मधुरी व उसकी भाभी शान्ता देवी से बातें। मोतीबहन, भक्तिबहन आदि आये।
रामेश्वरदासजी बिड़ला से बातें।

१२-४-३७

केशवदेवजी व पूनमचन्द बांठिया के साथ तलपट देखा। विचार-विनिमय देर तक होता रहा।
बम्बई आकर सरदार के साथ देसाई डाक्टर के यहां गया। उन्होंने ऊपर के दांत का चौखटा बैठाया।
सुव्रताबहन से बातें। आज उनमें हिम्मत मालूम हुई। वहीं भोजन, पालीरामजी से बातें।
जुहू—हीरालालभाई व शान्ती शाह के साथ आये। उनसे देर तक बात-चीत। आबिदअली, मूलजीभाई रात को देर तक बातें करते रहे।

१३-४-३७

जानकी ने अपनी बनाई हुई कविता सुनाई। ठीक बुद्धि चलाई है। मौका मिलता रहे तो ठीक कविता बना सकेगी।
आबिदअली, मूलजीभाई के साथ विलेपारले। डा० वसन्त, काशी से मिले, ...न्ताक्रूज में जो मकान बना है उसे देखा। फिर अंधेरी जमीन देखते हुए ...द में जुहू। आज बम्बई न जाकर जुहू रहे। समुद्र स्नान। राधाकृष्ण ...दया से बातें।
...धुरी—(चिनूभाई लालभाई वाली), शाता आदि आये, देर तक रहे ...शवदेवजी, प्रो० जयचन्दजी, राजा, चि० शान्ता, मनु आदि आये ...र तक बातचीत, समुद्र किनारे घूमना।
बान्द्रा में जाहिर सभा। बैलवी सभापति थे। वहां कांग्रेस की स्थापना।

१४-४-३७

जेठालालभाई, जीवनदास मिलने आये।
सरदार से मिलकर रजिस्ट्रार ऑफिस। रामनारायण रुइया कालेज ... दस्तावेज स्टाम्प का झगड़ा, सही नहीं हुई।

पूना, १५-४-३७

इन्दौर वाले सब चले गये । उनसे देर तक बातचीत । उनका स्वास्थ्य सुधरता देख खुशी हुई ।
नानीवट्टी (डॉ शंकर भाऊ) को अपना साफ अभिप्राय दिया ।
आज रामेश्वरजी बिड़ला की दो मोटरें खरीदी, १५०० व ६५० रु० में ।
केसर, गुलाबाई से मिलकर स्टेशन ।
५-३० मेल से हुदली के लिए यहां से पूना रवाना । गाड़ी में भीड़ थी ।
दामोदर, मीरा, नर्मदा, गीता साथ में ।
पूना से बापू के साथ १०॥ बजे तक । बाद में पढ़ने में सोना ।

हुदली (बेलगांव), १६-४-३७

रात को गाड़ी में भीड़ भी थी व रास्ते में बापूजी की जय होती जाती थी ।
स्टेशन उतरे । वहां से पैदल १।-१॥ मील हुदली गांव के पास कैम्प में आये । बापू से बातें ।
१२॥ से १ चर्खा-यज्ञ । बापू भी कातने आये थे ।
१। से ३ गांधी सेवा संघ की कार्यकारिणी सभा व बाद में कार्फेंस ।
शाम को प्रार्थना ।
कार्फेंस ८ से ९ तक ठीक हुई । महत्व की चर्चा, कौंसिल के सम्बन्ध की ।

हुदली, १७-४-३७

'हुदली' शहर से ६॥ से ९ तक मजदूरी का काम किया । सुख व आनन्द मिला ।
१२॥ से १ चर्खा यज्ञ । गांधी सेवा संघ, कार्फेस १। से ५ बजे तक हुई ।
वर्षा आई, भीग गये । टेकडी के ऊपर जाकर आये । वहा से सुन्दर दृश्य देखने में आया, नीचे आये ।
प्रार्थना के बाद वर्षा जोर से शुरू हुई ।
हिन्दी प्रचार की सभा बापूजी के डेरे में हुई ।

वर्षा के कारण घूपगाव मे प्राय. सबो को भेजना। रात को वही सोने का निश्चय।

१८-४-३७

प्रार्थना, गीताई। सुबह जोर की वर्षा मे भीग गये। झोपडी चारो तरफ मे टपकती थी। पलंग के नीचे ताला सोया। विचित्र व सुन्दर दृश्य, पानी मे ही निपटना।

हुवली से कुमारी मदिर पैदल चलकर आये। रास्ते मे पानी, काटे, दृश्य अच्छा था। बालासाहव खेर, स्वामी आनन्द से बातचीत।

कुमारी मदिर (गाधी सेवा-सघ-आश्रम) मे उतारा। वर्षा तथा भीड आदि का दृश्य देखने योग्य था।

कातना। चर्चा। शाम को गाधी सेवा संघ का कार्य। घोत्रे का विरोध। बापू का खुलासा। विचार-विनिमय। सभापति के नाते किशोरलालभाई की कठिनाई।

कौसिल, आर्यनायकम आदि की चर्चा।

हुदली, कुमारी मदिर, १९-४-३७

वर्षा। जगल मे निपटना। प्रार्थना, गीताई।

गाधी सेवा सघ की कार्यकारिणी की सभा ७॥ से १० तक हुई। बाद मे १२॥-१ चर्खा-यज्ञ।

गाधी सेवा सघ कार्फेस का कार्य होता रहा। रात को फिर प्रार्थना के बाद कार्यकारिणी की सभा करीब १० बजे तक होती रही।

दोपहर को चि० यशोदा मिल गई। थोडे मे उसने अपनी हालत कही। श्री किशोरलालभाई के मन मे सभापति की हैसियत से गाधी सेवा सघ का काम करने मे कठिनाई, उस बारे मे विचार-विनिमय।

२०-४-३७

गांधी सेवा सघ कार्फेस ७ मे ११ तक हुई। उसके पहले बापू के पास थोडी देर किशोरलालभाई व बापू की बातचीत सुनी। नाथजी भी वहा थे। आखिर बापू ने किशोरलालभाई को सभापति बने रहने की आज्ञा दी। बापूजी ने आज सभापति का काम किया।

खूब देर तक समझाते रहे। गौ सेवा के महत्व का ठहराव पास हुआ।

मु०, पूना, १५-४-३७

इन्दौर वाले श्री बदरीलालजी मिले। उनसे देर तक बातचीत। उनका स्वास्थ्य सुधरा देख खुशी हुई।

भाटेकरजी (होम मेम्बर थे) को अपना साफ अभिप्राय दिया।

श्री रामेश्वरजी बिड़ला की दो मोटरें खरीदी, १५०० व ६५० रु० में।

केशव, गुलाबाई से मिलकर स्टेशन।

३-३० मेल से हुबली के लिए गाड़ी से पूना रवाना। गाड़ी में भीड़ थी।

दामोदर, मीरा, मदालसा, सीता साथ में।

पूना से बापू के साथ १०॥ बजे तक। बाद में थर्ड में सोना।

हुदली (बेलगांव), १६-४-३७

रात को गाड़ी में भीड़ भी थी व रास्ते में बापूजी की जय होती जाती थी। स्टेशन उतरे। वहां से पैदल १।-१॥ मील हुदली गांव के पास कैम्प में आये। बापू से बातें।

१२॥ से १ चर्खा-यज्ञ। बापू भी कातने आये थे।

१। से ३ गांधी सेवा संघ की कार्यकारिणी सभा व बाद में कांफ्रेंस।

शाम को प्रार्थना।

कांफ्रेंस ८ से ६ तक ठीक हुई। महत्व की चर्चा, कौंसिल के सम्बन्ध की।

हुदली, १७-४-३७

'हुदली' शहर में ६॥ से ८ तक मजदूरी का काम किया। सुख व आनन्द मिला।

१२॥ से १ चर्खा यज्ञ। गांधी सेवा संघ, कांफ्रेंस १। से ५ बजे तक हुई।

वर्षा आई, भीग गये। टेकड़ी के ऊपर जाकर आये। वहां से सुन्दर दृश्य देखने में आया, नीचे आये।

प्रार्थना के बाद वर्षा जोर से शुरू हुई।

हिन्दी प्रचार की सभा बापूजी के डेरे में हुई।

भागीरथचन्द जी, मालक, प्रभावती व मनोहर से बातें. मनोहर की हालत [illegible]
[illegible]। बहुत से कार्यकर्ताओं से बातें।
दादा से [illegible], [illegible], प्रभा, [illegible] आदि की बातें। दामोदर व मीरा से भी।

कुमारी मंदिर, हुदली, हुकेरी रोड, २१-४-३७

कुमारी मंदिर व [illegible] हुदली। खादी प्रदर्शनी का उद्घाटन। व्याख्यान।
[illegible] से मनोहर, अन्नपूर्णा से देर तक बातचीत, समझाना। [illegible]
[illegible]।
पैदल स्टेशन। मोटर [illegible]।
हुकेरी रोड उतरकर अपमान देखा। दोष मालूम हुआ। मेल से बापू के डब्बे में बैठकर पूना।

पूना-जुहू, २२-४-३७

बापू से प्रवास का प्रोग्राम जाना।
पूना खादी प्रदर्शनी। दयाशंकर अग्रवाल व पाठक से बातें। रेल में शंकरलाल बैंकर, काकी की बहिन, गोकुलभाई, नर्मदा आदि से बातें।
हीरालाल शाह, शान्ती, माधीबहन आये।
केशवदेवजी, आबिदअली वगैरा से बातें।

जुहू-बम्बई, २३-४-३७

दयाशंकर (पूना वाले) से उसके सम्बन्ध के बारे में बातचीत।
शंकरलाल बैंकर, गुलजारीलाल नन्दा, खाडूभाई देसाई, प्रबोध, वि०
शान्ता, श्रीनिवास, मन्जू, सुशीला, इन्द्रमोहन, बाल आदि आये।
बाल के मामा के विवाह में गये।
विलेपार्ले में वकील के स्कूल का उत्सव, गायन, नृत्य, विनोद आदि ६॥ से ११॥ तक देखना पड़ा।
१२ बजे करीब जुहू पहुंचे।

२४-४-३७

इन्दौर के मुख्य दीवाण सर बापना से देर तक बातचीत, विचार-विनिमय।
राजनैतिक, सामाजिक, हिन्दी प्रचार, कार्यकर्ता, दिनेशनन्दिनी, मोहन सिंहजी आदि के बारे में बातें।

बम्बई हिन्दी प्रचार की वार्षिक सभा में गये। नया चुनाव।
श्री मुद्रलाबहन से देर तक बातचीत।
मैनावदेवजी व जमनादास के साथ देर तक गुह्य में बातें।

२५-४-३७

रात को कम सोने को मिला। पड़ोस में अंग्रेज लोग खेल-कूद नाच-तमाशे करते थे। जानकी देवी को भी दुःख रहा। सुबह जल्दी प्रार्थना, गोसाई। जानकी से चिंता-ग्रस्त स्थिति में बातचीत।
७-१५ की इलाहाबाद एक्सप्रेस से थर्ड में दादर से रवाना। साथ में चि० रामकृष्ण, मजूमदार, लाला, दयाशंकर (पूनावाला) कल्याण तक व चालिसगांव तक दामोदर साथ था। सुबह दयाशंकर से व नर्मदा से भी बातचीत हुई। दोनों को वर्धा बुलाया।
रेलवे में खाना साहब सेर से ठीक-ठीक बातचीत, विचार-विनिमय होता रहा। रामकृष्ण के साथ शतरंज भी थोड़ी देर खेली।
इटारसी में—बापू, महादेवभाई व प्यारेलाल आये। डब्बे की व्यवस्था पहले से ही कर ली गई थी।

इलाहाबाद, २६-४-३७

बापू को कई पत्र दिखाये। बापू ने भी एन्ड्रूज, सर पी० सी० राय व घनश्यामदास का देहली डेअरी के बारे के पत्र दिखाये।
इलाहाबाद सुबह ६ बजे पहुंचे। बापू चि० इंदिरा व रणजीत के साथ आनन्दभवन। पं० जवाहरलाल, मम्मा, स्वरूप आदि से मिलना।
वर्किंग कमेटी—२॥ से ५॥ बजे बाद तक। प्रार्थना के बाद फिर रात में ६॥ तक होती रही।
जौहरी, गिरधारी आदि से हाउसिंग के बारे में बातें।
राजेन्द्र बाबू से बिजली कारखाना संबंधी चर्चा।

२७-४-३७

'अभ्युदय' को लेख दिया। कई लोग मिलने आये।
वर्किंग कमेटी—सुबह ८ से ११॥, २ से ५ व ५॥ से ७॥ और रात ८ से ६॥ तक होती रही। कौंसिल-डेडलाक। बटलर, लोथियन आदि के वक्तव्यों पर विचार-विनिमय। प्रान्तों के नेताओं के विचार जाने, खासकर राजाजी

चर्चा की, वह हकीकत नहीं। सुभाष, सरोजनी, बुद्धमल से बातें करने पर वे बातें बिल्कुल झूठ और किसी ने द्वेष के कारण उठाईं ऐसा मालूम हुआ। आश्रम की बहनों का कोई दोष नहीं साबित हुआ। इसमें आज ठीक समय चला गया।

चि० बनारसी, शान्ता व रामगोपाल बैजडीवाल से बातें।

दोनों विवाहों के लोगों से मिलना व व्यवस्था देखना। धुलिया वाले श्रीराम के बराती व (एलीचपुर वाले) रामेश्वर के बराती अपने यहां बंगले पर भोजन करने आये। १।। बजे तक भोजन।

बिजलालजी बियाणी व श्रीराम मास्टर से बातें।

चि० लक्ष्मी—श्रीराम के विवाह में पहले गये। विवाह हो जाने के बाद प्रेस में चि० शान्ता व रामेश्वर के विवाह में। यह जोड़ी बहुत ही सुन्दर मालूम होती थी। वही बातें, भोजन। श्रीनारायण मुरारका से परिचय।

१-५-३७

घूमते हुए आश्रम। वहां लक्ष्मीअम्मा (आश्रमवासी विधवा बहन) से बातें। उसके सम्बन्ध की मुश्किल उसे बतलाई।

रामेश्वर (एलीचपुरवाला) व श्रीनारायण मुरारका (अमरावती वाले) से बातचीत।

पूज्य बापूजी व राजाजी प्रयाग से आये। बापूजी ने महताब बाबू, डा० काजी, सुभाषबाबू, कांग्रेस प्रेसीडेण्ट, आदि के बारे में बातें की।

विवाह के लोगों से मिलना-जुलना, बातचीत।

पुरुषोत्तम जाजोदिया के घर लक्ष्मी के विवाह निमित्त भोजन।

धुलियावालों को रात को एक्सप्रेस से पहुंचाया।

२-५-३७

श्री जानकीदेवी ने अपनी चिन्ता, दुःख बयान किया। मुझे भी दुःख हुआ। करीब दो-अढ़ाई घंटे इसमें चले गये। आखिर ठीक विचार-विनिमय हुआ पत्र वगैरा लिखे। चि० बनारसी व शान्ता से सम्बन्ध की बातचीत रामगोपाल बैजडीवाल से बातें।

सरोजनी नायडू व पद्मजा से ग्रान्ड ट्रंक पर मिलना, बातचीत।

रात को गोविन्द प्रसाद गनेडीवाल से देर तक बातचीत। उसे समझाना

२८-४-३७

बापू के साथ घूमते हुए जवाहरलाल से जो बातें हुईं, वह उन्हें
सुभाष को कांग्रेस प्रेसीडेंट होने की बहुत ज्यादा इच्छा होने के
और उसे बनाने से उसके स्वास्थ्य पर भी ठीक परिणाम होता इस
से उसे ही बनाने का विचार ठहरा।
वर्किंग कमेटी से पहले हिन्दी प्रचार के बारे में बापूजी व टण्डनजी से
चीत। व्यापक भ्रमण के बारे में।
कमला मेमोरियल की मीटिंग का कार्य।
वर्किंग कमेटी सुबह ८। से ११॥। दोपहर को मैं ३॥ से ४॥ तक बै
बाद में चि० इन्दू से अलग उसके भावी कार्यक्रम पर चर्चा। उसे सम
स्टेशन जाने से पहले चि० कृष्णा से बातें।
५-५० की गाड़ी से वर्धा रवाना।

इटारसी-वर्धा, २९-४-३७

प्रार्थना, गीताई। इटारसी में स्नान व ब्राह्मण के ढाबे में भोजन। वि
शक्कर के पांच आने की आदमी देना पड़ा।
ग्रान्ड ट्रंक से वर्धा रवाना। गाड़ी में भीड़ खूब थी। रामगोपाल केज
(देहलीवाला) भी उसी गाड़ी में था। उससे बातचीत। चि० राम
साथ शतरंज। बनारसी व शान्ता से बातचीत।
नागपुर से वर्धा तक श्रीमन्नारायण ने मारवाड़ी शिक्षा मण्डल के
बातचीत की। वर्धा पहुंचने पर मारवाड़ी शिक्षा मंडल की कार्य
की सभा का कार्य किया।

वर्धा, ३०-४-३७

प्रार्थना, गीताई। राधाकृष्ण ने, पवनूर खादी
कुछ बहनों के व्यवहार के सम्बन्ध में

६-५-३७

जयवन्त 'लालबावटा' ने 'चित्रा' २६-७-३६ के अंक में 'चालीस हजार का सेगांव चार हजार में कैसे पचाया' व 'जमनालाल बजाज नी जिकलेला युरोप' लेख के बारे में आज मेरा बयान हुआ। जयवन्त की ओर से पाठक व नागले वकील थे। अपनी ओर से बडकस व करंदीकर थे। कोर्ट में ११॥ से २ तक स्टेटमेन्ट चला।

रामेश्वर व श्रीनारायण से बातें।

जानकीदेवी, रामकृष्ण बम्बई गये, कमला को अस्पताल से घर लाना था इसलिए।

रात को सावधान-केस के बारे में विचार-विनिमय हुआ।

७-५-३७

चि० उमा व नर्मदा से घूमते समय बातें, उनके रहन-सहन, सगाई आदि के बारे में विचार-विनिमय।

कोर्ट में ११॥ से २ व २॥ से ४॥ तक क्रास एक्जामिनेशन, श्री बारलिंगे व पाध्ये। श्री बोबडे का नाम आया तब व अन्य समय का दृश्य देखने योग्य था।

काकासाहेब कालेलकर व हिन्दी प्रचार के बारे में सुबह व शाम को बातें। रात को सावधान तथा जयवन्त (चित्रा केस) के बारे में विचार-विनिमय।

८-५-३७

चि० उमा से उसके सम्बन्ध के बारे में बातचीत। आश्रम से वापस आते समय भागीरथी बहन, नाथूराम प्रेमी, जैनेन्द्र कुमार से प्रेमचन्द्र स्मारक आदि की बातें। सावधान केस के कागजात देखे।

सावधान-केस ११॥ से २ व २॥ से ३॥। तक चला।

पवनार का मकान देखा। नदी में नाव में बैठकर घूमे। जाजूजी, बडकस, करंदीकर साथ में थे। फालतू प्रश्नों की चर्चा क्रास एक्जामिनेशन में करते हैं, उसका विचार-चर्चा थोड़ी देर।

घर पहुंचने पर हरिभाऊजी से बातें।

श्री रामदासजी को जो पत्र लिखा, वह उसे बतलाया। उसने भेजना पसन्द नहीं किया। उसके कहने पर पत्र नहीं भेजा।
श्री बड़कस व कालूराम के साथ 'सावधान-केस' के कागजात देखे।

३-५-३७

चि० राधाकृष्ण, [illegible] व जानकी देवी से मकानात की बातचीत।
श्री करदीकर से 'सावधान'-केस के बारे में विचार-विनिमय।
'सावधान'—केस आज शुरू हुआ। १२-१।। तक चला। अपनी ओर से गवाही पूरी हुई। क्रास एक्जामिनेशन कल से चलने का निश्चय हुआ। 'सावधान' वालों की मदद करने वाले श्री बारलिंगे, पाध्ये, बोवडे, केलकर आदि नागपुर के व मनोहर पन्त व पार्टी वर्धा के थे। अपनी ओर से बड़कस व करन्दीकर थे। रात को कागजात, लेख आदि पढ़े, विचार-विनिमय।

४-५-३७

बाबा साहब धर्माधिकारी, तात्याजी करदीकर से 'सावधान'-केस पर विचार-विनिमय। शेतकरी संघ के बारे में विचार-विनिमय। बाबा साहब (बिरला वालों) को दुःख पहुंचा। मालूम हुआ।
११।। से २ व २।। से ४।। तक सावधान-केस का क्रास एक्जामिनेशन चला।
सेगांव जाकर बापू से मिलना, प्रार्थना।
चि० शान्ता, (बनारस) की सगाई रामगोपाल केजड़ीवाल से की।

५-५-३७

'सावधान' केस के बारे में विचार-विनिमय, पढ़ना आदि।
कोर्ट में केस, ११।।—२ तक चला। बाद में क्रास एक्जामिनेशन करने वालों में मतभेद हुआ। उन्होंने, बारलिंगे बीमार पड़ गये, कहकर आज केस मुल्तवी करने को कहा। कोर्ट ने उनकी अर्जी मान ली।
बाद में बड़कस, करदीकर, कालूराम के साथ 'चित्रा' के कागजात देखे। लेख पढ़ा। विचार।
डा० मजूमदार (हिंगणघाट वाले) व पटेल से बातें।
जानकी देवी दरबारीलाल के विवाह में नागपुर गई।

६-५-३७

जयचन्द 'जानचावड़ा' ने 'चित्रा' २६-७-३६ के अंक में 'चालीस हजार का सेगाव चार हजार में कैसे पचाया' व 'जमनालाल बजाज की जिवलेला यूरोप' लेख के बारे में आज मेरा बयान हुआ। जयचन्द की ओर से पाठक व नागरे वकील थे। अपनी ओर से बडकस व करंदीकर थे। कोर्ट में ११॥ से २ तक स्टेटमेन्ट चला।

रामेश्वर व श्रीनारायण से बातें।

जानकीदेवी, रामकृष्ण बम्बई गये, कमला को अस्पताल से घर लाना था इसलिए।

रात को सावधान-केस के बारे में विचार-विनिमय हुआ।

७-५-३७

चि० उमा व नर्मदा से घूमते समय बातें, उनके रहन-सहन, सफाई आदि के बारे में विचार-विनिमय।

कोर्ट में ११॥ से १ व २॥ से ४॥ तक क्रास एक्जामिनेशन, श्री कारलेकर व पाध्ये। श्री बाबई का नाम आया तब व अन्य समय का दृश्य देखने योग्य था।

काकासाहेब कालेलकर से हिन्दी प्रचार के बारे में सुबह व शाम को बातें।

रात को सावधान तथा जयचन्द (चित्रा केस) के बारे में विचार-विनिमय।

८-५-३७

चि० उमा से उसके स्वभाव के बारे में बातचीत। आश्रम से वापस आते समय भागीरथी बहन, मालूराम प्रेमी, [illegible] कुमार से प्रेमचन्द्र स्मारक आदि की बातें। सावधान केस के कागजात देखे।

सावधान-केस ११॥ से १ व २॥ से ३॥। तक चला।

[illegible] का बयान देखा। [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] विचार-[illegible]

[illegible]

श्रीनारायणजी को जो पत्र लिखा, वह उसे बतलाया। उसने भेजना पसन्द नहीं किया। उसके कहने पर पत्र नही भेजा।
श्री बडकस व कालूराम के साथ 'सावधान-केस' के कागजात देखे।

३-५-३७

चि० राधाकृष्ण, गगाबिसन व जानकी देवी से मकानात की बातचीत।
श्री करदीकर से 'सावधान'-केस के बारे मे विचार-विनिमय।
'सावधान'—केस आज शुरू हुआ। १२-१॥ तक चला। अपनी ओर से गवाही पूरी हुई। क्रास एक्जामिनेशन कल से चलने का निश्चय हुआ। 'सावधान' वालों को मदद करने वाले श्री वारलिंगे, पाध्ये, बोबडे, देशवाल आदि नागपुर के व मनोहर पन्त व पार्टी वर्धा के थे। अपनी ओर से बडकस व करन्दीकर थे। रात को कागजात, लेख आदि पढे, विचार विनिमय।

४-५-३७

बाबा साहब धर्माधिकारी, तात्याजी करदीकर से 'सावधान'-केस पर विचार-विनिमय। शेतकरी सघ के बारे मे विचार-विनिमय। बाबा रुइया (विरुल वालो) को दु ख पहुचा। मालूम हुआ।
११॥ से २ व २॥ से ४॥ तक सावधान-केस का क्रास एक्जामिनेशन चला।
सेगाव जाकर बापू से मिलना, प्रार्थना।
चि० शान्ता, (बनारस) की सगाई रामगोपाल केजडीवाल से की।

५-५-३७

'सावधान' केस के बारे मे विचार-विनिमय, पढ़ना आदि।
कोर्ट में केस, ११॥—२ तक चला। बाद में क्रास एक्जामिनेशन करने वालों में मतभेद हुआ। उन्होने, वारलिंगे बीमार पड गये, कहकर आज केस मुल्तवी करने को कहा। कोर्ट ने उनकी अर्जी मान ली।
बाद मे बडकस, करदीकर, कालूराम के साथ 'चित्रा' के कागजात देखे। लेख पढ़ा। विचार।
डा० मजूमदार (हिंगणघाट वाले) व पटेल से बातें।
जानकी देवी दरबारीलाल के विवाह में नागपुर गई।

६-५-३७

यवन्त 'लालबावटा' ने 'चित्रा' २६-७-३६ के अंक मे 'चालीस हजार
ा सेगाव चार हजार मे कैसे पचाया' व 'जमनालाल बजाज नी जिकलेला
रोप' लेख के बारे मे आज मेरा बयान हुआ। जयवन्त की ओर से पाठक
ा नागले वकील थे। अपनी ओर मे बडकस व करदीकर थे। कोर्ट मे ११॥
े २ तक स्टेटमेन्ट चला।

रामेश्वर व श्रीनारायण से बातें।

जानकीदेवी, रामकृष्ण बम्बई गये, कमला को अस्पताल से घर लाना था
इसलिए।

रात को सावधान-केस के बारे में विचार-विनिमय हुआ।

७-५-३७

चि० उमा व नर्मदा से घूमते समय बातें, उनके रहन-सहन, सगाई आदि के
बारे मे विचार-विनिमय।

कोर्ट मे ११॥ से २ व २॥ से ४॥ तक क्रास एक्जामिनेशन, श्री बारलिंगे व
पाध्ये। श्री वांबडे का नाम आया तब व अन्य समय का दृश्य देखने योग्य
था।

काकासाहेब कालेलकर व हिन्दी प्रचार के बारे मे सुबह व शाम को बातें।
रात को सावधान तथा जयवन्त (चित्रा केस) के बारे मे विचार-
विनिमय।

८-५-३७

चि० उमा से उसके सम्बन्ध के बारे मे बातचीत। आश्रम से वापस आते
समय भागीरथी बहन, नाथूराम प्रेमी, जैनेन्द्र कुमार से प्रेमचन्द्र स्मारक
आदि की बातें। सावधान केस के कागजात देखे।

सावधान-केस ११॥ से २ व २॥ से १॥। तक चला।

पवनार का मकान देखा। नदी मे नाव मे बैठकर घूमे। जाजूजी, बडकस,
करदीकर साथ मे थे। फालतू प्रश्नों की चर्चा क्रास एक्जामिनेशन मे करते
है, उसका विचार-चर्चा थोड़ी देर।

घर पहुंचने पर हरिभाऊजी से बातें।

श्रीनारायणजी को जो पत्र लिखा, वह उसे बतलाया। उसने भेजना पसंद नहीं किया। उसके कहने पर पत्र नहीं भेजा।
श्री बडकस व कालूराम के साथ 'सावधान-केस' के कागजात देखे।

३-५-३७

चि० राधाकृष्ण, गंगाबिसन व जानकी देवी से मकानात की बातचीत।
श्री करंदीकर से 'सावधान'-केस के बारे में विचार-विनिमय।
'सावधान'—केस आज शुरू हुआ। १२-१॥ तक चला। अपनी ओर से गवाही पूरी हुई। क्रास एक्जामिनेशन कल से चलने का निश्चय हुआ। 'सावधान' वालों को मदद करने वाले श्री बारलिंगे, पाध्ये, वोवडे, बेनार बाल आदि नागपुर के व मनोहर पन्त व पार्टी वर्धा के थे। अपनी ओर से बडकस व करन्दीकर थे। रात को कागजात, लेख आदि पढ़े, विचार-विनिमय।

४-५-३७

बाबा साहब धर्माधिकारी, तात्याजी करंदीकर से 'सावधान'-केस पर विचार-विनिमय। शेतकरी संघ के बारे में विचार-विनिमय। बाबा साहब (विठ्ठल वालों) को दुःख पहुंचा। मालूम हुआ।
११॥ से २ व २॥ से ४॥ तक सावधान-केस का क्रास एक्जामिनेशन चला।
सेगांव जाकर बापू से मिलना, प्रार्थना।
चि० शान्ता, (बनारस) की सगाई रामगोपाल केजड़ीवाल से की।

५-५-३७

'सावधान' केस के बारे में विचार-विनिमय, पढ़ना आदि।
कोर्ट में केस, ११॥—२ तक चला। बाद में क्रास एक्जामिनेशन करने वालों में मतभेद हुआ। उन्होंने, बारलिंगे बीमार पड़ गये, कहकर आज केस मुल्तवी करने को कहा। कोर्ट ने उनकी अर्जी मान ली।
बाद में बडकस, करंदीकर, कालूराम के साथ 'चित्रा' के कागजात देखे। लेख पढ़ा। विचार।
डा० मजूमदार (हिंगणघाट वाले) व पटेल से बातें।
जानकी देवी दरबारीलाल के विवाह में नागपुर गईं।

श्रीनारायणजी को जो पत्र लिखा, वह उसे बतलाया। उसने भेजना पसन्द नहीं किया। उसके कहने पर पत्र नहीं भेजा।
श्री वडकस व कालूराम के साथ 'सावधान-केस' के कागजात देखे।

३-५-३७

चि० राधाकृष्ण, मदालसा व जानकी देवी से मकानात की बातचीत।
श्री करदीकर से 'सावधान'-केस के बारे में विचार-विनिमय।
'सावधान'—केस आज शुरू हुआ। १२-१॥ तक चला। अपनी ओर से गवाही पूरी हुई। क्रास एक्जामिनेशन कल से चलने का निश्चय हुआ। 'सावधान' वालों की मदद करने वाले श्री बारलिंगे, पाध्ये, बोबड़े, केलकर वाल आदि नागपुर के व मनोहर पन्त व पार्टी वर्धा के थे। अपनी ओर से वडकस व करन्दीकर थे। रात को कागजात, लेख आदि पढ़े, विचार-विनिमय।

४-५-३७

बाबा साहब धर्माधिकारी, तात्याजी करदीकर से 'सावधान'-केस पर विचार-विनिमय। शेतकरी संघ के बारे में विचार-विनिमय। बाबा साहब (बिट्ठल वाले) को दु:ख पहुचा। मालूम हुआ।
११॥ से २ व २॥ से ४॥ तक सावधान-केस का क्रास एक्जामिनेशन चला।
सेगांव जाकर बापू से मिलना, प्रार्थना।
चि० शान्ता, (बनारस) की सगाई रामगोपाल केजड़ीवाल से की।

५-५-३७

'सावधान' केस के बारे में विचार-विनिमय, पढ़ना आदि।
कोर्ट में केस, ११॥—२ तक चला। बाद में क्रास एक्जामिनेशन करने वालों में मतभेद हुआ। उन्होंने, बारलिंगे बीमार पड़ गये, कहकर आज केस मुल्तवी करने को कहा। कोर्ट ने उनकी अर्जी मान ली।
बाद में वडकस, करदीकर, कालूराम के साथ 'चित्रा' के कागजात देखे। लेख पढ़ा। विचार।
डा० मजूमदार (हिंगणघाट वाले) व पटेल से बातें।
जानकी देवी दुर्गाप्रसाद के विवाह में नागपुर गई।

श्रीनारायणजी को जो पत्र लिखा, यह उसे बतलाया। उसने भेजना पसन्द नही किया। उसके कहने पर पत्र नही भेजा।
श्री बडकस व कालूराम के साथ 'सावधान-केस' के कागजात देखे।

३-५-३७

चि० राधाकृष्ण, गगाविसन व जानकी देवी से मकानात की बातचीत।
श्री करंदीकर से 'सावधान'-केस के बारे में विचार-विनिमय।
'सावधान'—केस आज शुरू हुआ। १२-१॥ तक चला। अपनी ओर से गवाही पूरी हुई। क्रास एक्जामिनेशन कल से चलने का निश्चय हुआ। 'सावधान' वालो को मदद करने वाले श्री बारलिंगे, पाध्ये, योवडे, केलकर वाल आदि नागपुर के व मनोहर पन्त व पार्टी वर्धा के थे। अपनी ओर से वडकस व करन्दीकर थे। रात को कागजात, लेख आदि पढ़े, विचार-विनिमय।

४-५-३७

वावा साहब धर्माधिकारी, तात्याजी करंदीकर से 'सावधान'-केस पर विचार-विनिमय। शेतकरी सघ के बारे मे विचार-विनिमय। बाबा साहब (विरुल वालो) को दु ख पहुचा। मालूम हुआ।
११॥ से २ व २॥ से ४॥ तक सावधान-केस का क्रास एक्जामिनेशन चला।
सेगाव जाकर वापू से मिलना, प्रार्थना।
चि० शान्ता, (बनारस) की सगाई रामगोपाल केजडीवाल से की।

५-५-३७

'सावधान' केस के बारे मे विचार-विनिमय, पढना आदि।
कोर्ट में केस, ११॥—२ तक चला। बाद मे क्रास एक्जामिनेशन करने वालो मे मतभेद हुआ। उन्होने, बारलिंगे बीमार पड गये, कहकर आज केस मुल्तवी करने को कहा। कोर्ट ने उनकी अर्जी मान ली।
बाद में वडकस, करदीकर, कालूराम के साथ 'चित्रा' के कागजात देखे। लेख पढा। विचार।
डा० मजूमदार (हिंगणघाट वाले) व पटेल से बातें।
जानकी देवी दरबारीलाल के विवाह मे नागपुर गई।

६-५-३७

जयवन्त 'लालबावटा' ने 'चित्रा' २६-७-३६ के अंक मे 'चालीस हजार का सेगाव चार हजार मे कैसे पचाया' व 'जमनालाल बजाज नी जिकलेला यूरोप' लेख के बारे मे आज मेरा बयान हुआ। जयवन्त की ओर से पाठक व नागले वकील थे। अपनी ओर से बडकस व करदीकर थे। कोर्ट मे ११॥ से २ तक स्टेटमेन्ट चला।

रामेश्वर व श्रीनारायण से बातें।

जानकीदेवी, रामकृष्ण बम्बई गये, कमला को अस्पताल से घर लाना था इसलिए।

रात को सावधान-केस के बारे मे विचार-विनिमय हुआ।

७-५-३७

चि० उमा व नर्मदा से घूमते समय बातें, उनके रहन-सहन, सगाई आदि के बारे मे विचार-विनिमय।

कोर्ट मे ११॥ से २ व २॥ से ४॥ तक क्रास एक्जामिनेशन, श्री बारलिंगे व पाध्ये। श्री बोबडे का नाम आया तब व अन्य समय का दृश्य देखने योग्य था।

काकासाहेब कालेलकर व हिन्दी प्रचार के बारे मे सुबह व शाम को बातें। रात को सावधान तथा जयवन्त (चित्रा केस) के बारे मे विचार-विनिमय।

८-५-३७

चि० उमा से उसके सम्बन्ध के बारे मे बातचीत। आश्रम से वापस आते समय भागीरथी बहन, नाथूराम प्रेमी, जैनेन्द्र कुमार से प्रेमचन्द्र स्मारक आदि की बातें। सावधान केस के कागजात देखे।

सावधान-केस ११॥ से २ व २॥ से ३॥। तक चला।

पवनार का मकान देखा। नदी मे नाव मे बैठकर घूमे। जाजूजी, बडकस, करदीकर साथ मे थे। फालतू प्रश्नों की चर्चा क्राम एक्जामिनेशन मे करते है, उसका विचार-चर्चा थोड़ी देर।

घर पहुचने पर हरिभाऊजी से बातें।

९-५-३७

सेगांव जाकर पू० बापू से देर तक बातें। लार्ड जेटलैंड के भाषण, किशोरलालभाई का पत्र, मेरा राजीनामा व ट्रेजरार के बारे में बापू ने अपने विचार कहे। मंदिर की सभा हुई।

चि० शकुन्तला (हरिभाऊजी की पुत्री) का जन्मदिन। वहां शाम का भोजन, गाय का घी नहीं था। मैंरगमल हुई।

बापू सेगांव से आये। बंगले पर ही प्रार्थना, भजन। रामायण हुई।

मोहनलाल नायर से बातें।

जयवन्त ने सेगांव जाकर जो उपद्रव मचाया, वह मालूम हुआ।

बापूजी एक्सप्रेस से तीथल के लिए रवाना।

मारवाड़ी शिक्षा मंडल की संचालक मंडल की सभा हुई।

रेल में कलकत्ता के लिए, १०-५-३७

नागपुर मेल से कलकत्ता के लिए रवाना हुए। साथ में चि० रामेश्वर नेवटिया, चि०उमा, लाला जाट। इन्टर की तीन टिकिटें ली।

नागपुर में पूनमचन्दजी रांका, वृद्धिचन्द्रजी पोद्दार मिलने आये, नागपुर से इण्टर रिटर्न की ली ३२।) लगे।

रास्ते में कागजात पढ़े। चि० रामेश्वर से गोला मिल की बातें, विचार-विनिमय। शतरंज की एक बाजी। रायपुर के नजदीक गरमी ज्यादा पड़ी, भीड़ भी थी।

कलकत्ता, ११-५-३७

करीब ७ बजे हावड़ा पहुचे। श्री उर्मिलादेवी, चि० सावित्री, सीतारामजी, भागीरथजी, दुर्गाप्रसाद, रामकुमारजी आदि स्टेशन आये। नेवटियों से व खेतानों से मिलते हुए श्री लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार के यहां आये, स्नान आदि।

लक्ष्मण प्रसादजी व उर्मिला बहन से सावित्री के साथ विवाह के बारे में निश्चय।

विवाह कलकत्ता में होना तय हुआ। हम लोग ता० ३० को वहां पहुंचें विवाह, जैसा चि० पन्ना का हुआ था, उस मुजब करना। विवाह-पद्धति वर्धा से भेजना, पत्रिका में दोनों के नाम छपाना, विवाह में ज्यादा बरातं

१२-५-३७

लक्ष्मणप्रसादजी व सीतारामजी के साथ विवाह के समय ठहरने के मकानात देखे।

केशवदेवजी, रामेश्वर, श्रीगोपाल, नर्मदाप्रसादजी से सुबह व दोपहर को लक्ष्मणप्रसादजी के घर पर सोला मिल की व्यवस्था के बारे में विचार-विनिमय देर तक होता रहा।

रघुनाथप्रसादजी पोद्दार, मणीबाई, दीपचन्दजी पोद्दार आदि से विवाह किस माफक करना, उसका विचार-विनिमय।

श्यामसुन्दर व उसके पिता से बातें। गौरीशंकरजी गोयनका के देर तक बातचीत।

रामकुमार केजड़ीवाल के साथ बिड़ला पार्क व लेक पर जाना। मोटर की भयंकर दुर्घटना होने-होते बची।

१३-५-३७

महादेवलाल सराफ, रामकुमारजी केजड़ीवाल, उनकी लड़की सावित्री माधव बिड़ला, सीतारामजी खेमका वगैरा मिलने आये।

सीने की मशीन व टाइपराइटर वालों से मिले, उनका काम देखा।

रामानन्द चटर्जी से बनारसीदास चतुर्वेदी व सीतारामजी के साथ मिले राधाकिशनदास के घर उसके पुत्र से मिले। बिड़ला पार्क में भोजन। बाजरे की खिचड़ी बनी थी।

शाम को मणीबहन पोद्दार मिले। फिर बिड़ला हाउस जाकर चन्द्रकला उसके गीगले को देखा।

भगवान देवी के घर भोजन, बातें, पन्ना आदि भी थे। मित्रों के स
कटक रवाना, सुशीला मिली।

कलकत्ता, १५-५-३७

खड़गपुर के बाद उठे, गोलारामजी, भागीरथजी से बातें।
हावड़ा से लक्ष्मणप्रसादजी के घर स्नान आदि।
खद्दर भण्डार, भागीरथजी के घर शांति स्वरूप गुप्ता, यज्ञदत्त गुप्ता, हाउस सर्जन मेडीकल कालेज, लखनऊ तथा हरदत्तराय बी० ए० से सम्बन्ध के बारे में बातचीत।
केशवदेवजी व रामेश्वर से जमनादास गांधी के पत्र के बारे में विचार-विनिमय।
उनका भी बम्बई-वर्धा का विचार रहा।
देवीप्रसादजी खेतान, दुर्गाप्रसाद व त्रिवेणी से बातें।
चि० सावित्री, लक्ष्मणप्रसादजी व उर्मिलाबहन से बातें। सुशीला नायर से भी।
नागपुर मेल से वर्धा रवाना हुए। साथ मे केशवदेवजी, श्रीकृष्ण, बालकृष्ण, तारा, इन्दु, उसकी माता, उमा, लाला वगैरा।

वर्धा, १६-५-३७

बिलासपुर में वल्लभदास अग्रवाल रेलवे कान्ट्रैक्टर का साथ हुआ। बातचीत।

केस के कागजात पढ़े।
नागपुर मे वर्धा तक सेकण्ड क्लास का टिकिट लिया। पू० वृद्धिचन्दजी पोद्दार के साथ बैठे। उनकी स्थिति वगैरा समझी, विचार-विनिमय।
वर्धा के एक गुजराती मित्र के पिता का रेलवे के सेकण्ड क्लास मे देहान्त हो गया।
उसी गाड़ी से वर्धा उतरे। केशवजी वगैरा भी वर्धा उतरे।
चित्रा जयवन्त-केस के कागजात देखे। विचार-विनिमय।

१७-५-३७

केस के कागजात देखे। जमनादास गांधी बम्बई से आये। करीमभाई मिल के बारे मे केशवदेवजी के साथ बातचीत, विचार।
चित्रा जयवन्त केस ११॥ से २ व २॥ से ४॥ तक एक्जामिनेशन व साक्ष हुई।
श्री केशवदेवजी नेवटिया व उनके घर के लोग व चि० नर्मदा वगैरा आज मेल से बम्बई रवाना हुए।
रात को फिर केस के सम्बन्ध मे विचार-विनिमय देर तक होता रहा।

१८-५-३७

चित्रा केस; कोर्ट मे ११॥ बजे पहुचना, मुकदमे का काम १२। से २। व २॥। से ४। तक हुआ। केस धीरे-धीरे चलता रहा।
डा० मोनक के व्यवहार व पूनमचन्द रांका के विरुद्ध की कार्यवाई का विचार कर दादा धर्माधिकारी, घटवाई के सलाह से उनके साथ मोटर से नागपुर जाना-आना। नागपुर मे डा० खरे के यहा गये। वहां प्रान्तीय कमेटी की कार्यकारिणी की सभा थी। मैंने जो कुछ कहना था, बहुत ही स्पष्ट व साफ तौर से कहा। इन लोगो ने मेरा कहना स्वीकार किया, तथापि उनका व्यवहार दु खदायी रहा। चोट लगी। पूनमचन्द से मिलकर उसे दर्खास्त वापस लेने को कहकर वापस वर्धा रात ११॥ बजे पहुचना।

वर्धा, १६-५-३७

हरिभाऊजी से बातें।
चित्रा के कागजात, वच्छराज जमनादास की आर्थिक स्थिति व तिलक स्वराज्य कोष की स्थिति समझी।

पूनमचन्द व गगाविसन से माडवा स्टेट, द्वारकादास भइया आदि की
कोर्ट १२। से २--३ से ४। तक जयचन्द के मुकदमे की श्रास साक्षी
रही। गवाहिया ठीक चली।
दरवारीलालजी, रामेश्वर, शान्ता, लक्ष्मी, पुरुषोत्तम आदि मिलने आ
जाजूजी से गांधी-सेवा-सघ व कांग्रेस के बारे में बातचीत।
बालासाहब से नागपुर कांग्रेस, डा० खरे वगैरा के बारे मे बातें।
वडकम, आपाजी, माडगाव मालगुजार, नायडू वगैरा से बातें।
नागपुर एक्सप्रेस से थर्ड क्लास में चि० उमा, ऊषा, लाला के साथ ब
रवाना।

बम्बई, जुहू, २०-५-३७

माटुगा-केशवदेवजी, जमनादास भाई, आबिदअली साथ मे। चि० क
का लडका देखा, ठीक मालूम हुआ।
खान अब्दुल गफार खान से मिलना। उनका स्वास्थ्य थोड़ा खराब
ज्वर वगैरा।
महात्माजी के सबसे पुराने जर्मन मित्र हेर केलनबेक आज 'भलो
नामक जहाज से पहुचे।
भूलाभाई के घर मिलने दो बार गये। वह नही मिले। बिडला हाउस ग
श्री शारदा बहन व चि० गोपी मिली।

२२-५-३७

सुबह श्री मणीलाल नानावटी, चि० सुलोचना आदि से घूमते सम
बातचीत।
भोजन, आराम के बाद चि० ज्योत्स्ना (पन्ना की लड़की) को देखते हु

चि० ज्योत्स्ना के पास गये। उसकी हालत चिंताजनक ही थी। रात को टेलीफोन करके उसके इलाज की व्यवस्था की।

२३-५-३७

सुबह चि० श्रीकृष्ण नेवटिया के साथ बातचीत करते हुए पैदल शान्ताक्रुज।

चि० प्रह्लाद के यहा पहुचे। श्रीकृष्ण से उसके भावी प्रोग्राम व सगाई के बारे मे विचार-विनिमय हुआ।

चि० ज्योत्स्ना (पन्ना की लडकी) की हालत दयाजनक मालूम हुई। केसर से व नरीमान की माता से बातचीत।

चि० घनश्याम पोद्दार व केशव पोद्दार मिलने आये, दीक्षित वगैरा भी। आज से चर्खा शुरू किया।

श्री अडवाणी डायरेक्टर, रामेश्वरजी बिड़ला, गौरीशंकरभाई, हीरालाल, अमृतलाल शाह आदि से बातें।

२४-५-३७

चि० उमा के साथ शान्ताक्रुज चि० प्रह्लाद के घर तक पैदल घूमते हुए जाना। उमा से उसके सम्बन्ध के बारे मे ठीक तौर से विचार-विनिमय हुआ।

चि० ज्योत्स्ना की हालत अभी तक सुधरी नही। मौत से लड़ाई कर रही है।

केशव के यहा जाकर जुहू। मनोहर सिंह मिला।

बद्रीदास (हरनन्दराय सूरजमल), श्री निवास, मन्नू, सुशीला से बातचीत। खासकर बद्रीदासजी व मन्नू से।

शाम को रामकुमार भुवालका, माधो, कृष्ण, मोतीलालजी वगैरा आये, भोजन किया।

नवलकिशोर भरतिया व जगदभानु मिलने आये। भरतिया को शशी, विद्या, नर्मदा के बारे मे कहा।

२५-५-३७

चि० ज्योत्स्ना को देखा, थोड़ा सुधार मालूम हुआ।

नर्मदा, गणेश, सुलोचना, राधा वगैरा से बातें—चर्चा।
शाम को घनश्यामदास बिड़ला पहले आये। घूमते समय राजनैतिक व अन्य बातें। बाद मे उनके साथ का मित्र-मण्डल आया। देर तक बातचीत। अपने वही पर भोजन। स्त्री-पुरुष मिलाकर करीब चालीस लोग हो गये। चि० बनारसी रुक्मिनी से बातें।

२६-५-३७

सुबह ४।। बजे चि० श्रीराम का टेलीफोन आया, पन्ना की लडकी ज्योत्स्ना का सास बन्द व शरीर गरम था। जल्दी निवृत्त होकर जानकी, मदालसा, उषा व नरीमान की मा को लेकर वहा पहुचे। थोडी देर तपास वगैरा की। बाद मे खातरी हुई कि छोकरी चली गई। दुःख तो हुआ परन्तु उपाय क्या! सबो को, खासकर पन्ना को, समझाया। देर तक वहा ठहरना पडा। उसकी क्रिया आदि होने के बाद जुहू, स्नान आदि। केशवदेवजी से बातें।
बाबासाहब सोमण, काकासाहेब कालेलकर आये, भोजन, बातें।
डा० काजी, नर्मदा भुस्कुटे, गणेश आदि से बातें।
शाम को पन्ना, प्रह्लाद, श्रीराम, नर्मदा, केशर यहा आये। यही भोजन व रहे।
श्री रामकुमारजी केजडीवाल व रामकुमारजी भुवालका आये। भोजन, बातचीत देर तक।

२७-५-३७

सुबह घूमते समय जानकी के साथ चि० मदालसा से उसके भावी जीवन व सम्बन्ध के बारे मे बातचीत। उसे दुखी देख थोड़ा दु.ख हुआ।
आबिद अली, कागजात पर सही की।
घनश्यामदासजी बिड़ला, रामकुमार केजडीवाल, देशपांडे, बजरंग यूरोप रवाना हुए। टेलीफोन से बातें।
चि० श्रीनिवास के साथ थोडा घूमना।

२८-५-३७

कैलाशपत सिंहानिया के यहा गये। वह उठे नही थे। स्त्रिया मिलीं। मदालसा, जानकी साथ थी।

धीरजलाल मोदी, जयमुखलाल मेहता, मोती वगैरा मिले । बातें।
केशवदेवजी, आबिद अली से बातें।
श्री किशोरलालभाई मश्रूवाले मिलने आये, बातें।
शशीबाला व महेन्द्र मिलने आये। यही भोजन, शशी के सम्बन्ध के बारे में विचार-विनिमय। माथेरान जाने का निश्चय।

२९-५-३७

घूमना—रामकुमारजी भुवालका, प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका मोतीलालजी झवर के साथ वरसोवा दादाभाई के बगले तक, सुवह व शाम को भी। वहा तक श्री केशवदेवजी, जमनादास गाधी व बालक भी साथ मे रहे। हिन्दुस्तान टायर फैक्टरी के बारे मे श्री जोहरी से बातें। मेरी योजना उन्हे दी।
जमनादास गाधी आये। गोडल महराज से करीमभाई मिल की बातचीत। काकासाहेब आये।

३०-५-३७

काकासाहेब, स्वामी आनन्द, मणीभाई नानावटी, जानकी वगैरा घूमने वरसोवा तक जाकर आये। स्वामी को वर्धा का प्रेस बढाने को कहा। दामोदर, मीरा आये।
खान अब्दुल गफ्फार खान, सफिया, मेहर, मरियम, लाली, सादुल्ला आये। आबिद के लडके का नाम 'इकबाल' रखा।
डा० महोदय, उसका भाई व मित्र, केशव गाधी, जीवनलाल भाई का पूरा कुटुम्ब, केशवदेवजी, जमनादास गाधी, श्रीकृष्ण वगैरा आये। दो जापानी भी मिलने आये।
जुहू-कैंप समारभ मे ६ से ८ तक। सभापति का काम करना पडा।

३१-५-३७

खान अब्दुल गफ्फार के साथ घूमना। वह आज दोपहर की गाडी से तीथल गये।
चि० शशी रहने आई। उससे थोडी बातें।
शाम को घूमना, वरसोवा तक शशी, नर्मदा, उषा वगैरा के साथ।
जयन्ती हीरालाल, अमृतलाल शाह आया। सब मिलकर भोजन-बातें।

[illegible] बाई व [illegible] के नाम से दो तार किये ।
[illegible] के [illegible] ।
[illegible] । [illegible] ।

४-६-३७

सुबह घूमने न जाकर समुद्र में [illegible] थी, [illegible] देर तक समुद्र-स्नान किया, दुर्गाप्रसाद खेतान वगैरा के साथ ।
महेन्द्र आये । [illegible] के सम्बन्ध में बातें कर गये ।
[illegible], [illegible], [illegible], [illegible] आये । [illegible] बात कर गये ।
चि० [illegible] के विवाह में घर के सब लोग गये ।
इन्द्रमोहन गोयन्का का १ जून से दिसम्बर आखिर तक ७५ रु० मासिक निश्चित किया ।
श्री गुलाबचन्दजी गांधी का राजकोट में स्वर्गवास हुआ ।
श्री गोविन्दलालजी पित्ती का आग्रह-पूर्वक आने के बारे में फोन आया ।
वहां जाना पड़ा । रास्ते में गुलैदबहन व पेरीनबहन से मिलना ।

५-६-३७

श्रीमन्नारायण वर्धा से आये ।
केशवदेवजी, श्रीगोपाल जमनादास गांधी से लोहे के कारखाने तथा अन्य बातें ।
हरजीवन कोटक से बातें ।

जुहू बम्बई, ६-६-३७

सुबह उठने पर मालूम हुआ कि रात को वर्धा से 'मां' की ज्यादा बीमारी का फोन आया था । चिंता हुई । वर्धा फोन किया । थोड़ा सन्तोष हुआ ।
दो बजे के करीब फिर वर्धा से फोन आया । उससे थोड़ी चिंता कम हुई ।
वर्धा जाने के लिए हवाई जहाज की तलाश की, व्यवस्था नहीं हो सकी ।
समुद्र-स्नान, भोजन, हरजीवन कोटक डेढ़ दो महीना बतावें सो काम ।
केशवदासजी, श्रीगोपाल, हनुमान प्रसाद वगैरा से बातें—खेलना ।
नागपुर मेल से वर्धा रवाना, रास्ते में केशर से मिलते हुए । ... ।
लाला साथ में, दो टिकट इन्टर व एक थर्ड का लिया । रेल में ..

टिकट खो गये, उसकी थोड़ी चिंता।

वर्धा, ७-६-३७

बामनगांव में मारवाड़ियों की भीड़। हो-हल्ला, गड़बड़। वहीं भैरवलाल गोलेछा (उदयपुर वाले) से मा के स्वास्थ्य की खबर लगी।
वर्धा पहुंचकर बंगले पर मा से मिलना। उनके पास बैठना। शाम को भी दो घंटे से ज्यादा बैठना, वहीं जागना पड़ेगा।
जाजूजी, पूनमचन्दजी आदि सुबह व शाम को भी आये। मन्नू धर्माधिकारी व गोरपड़े से बातें।

८-६-३७

सुबह किशोरलालभाई व गोमतीबहन आये।
घूमते हुए आश्रम की इमारतें देखीं। भागीरथी बहन व नाना से बातें। वापस आते समय प्रार्थना।
सत्यनारायणजी, द्वारकानाथ, बाबा वकील द्वारकादास व रिषभदास से बातें।
'स्त्री-पुरुष मर्यादा' किशोरलाल मश्रूवाला के लेख का थोड़ा हिस्सा पढ़ा। ठीक मालूम हुआ। मा के पास बैठा। लक्ष्मण, मोती की स्त्री आई।
जाजूजी, किशोरलालभाई से देर तक बातचीत।
पार्वती, रमती व उसकी मा आई।

९-६-३७

पू० मा के पेट में सुबह काशी के साथ थोड़ी मालिश की।
पवनार का काम देखने जानकी व राधाकृष्ण के साथ गये। धामाजी व मोतीलाल वहा थे। रुपये तो ज्यादा लग जावेंगे, परन्तु मकान ठीक हो जायेगा।
क्रॉनीकल में सावधान केस के बारे में नागपुर का जो पत्र छपा, वह पढ़ा।
डेलीन्यूज में भारतन के विवाह के समाचार पढ़े।
भोजन, आराम। स्त्री-पुरुष मर्यादा का थोड़ा भाग पढ़ा।
कर्नाटक वाली लीलावती आज आई। इलाहाबाद जाने के सम्बन्ध में विचार।
नालवाड़ी जाकर कृष्णदास गांधी के साथ विनोबा से थोड़ी बातें। मनोहर

के यहा भोजन, बातें।
हिगणघाट से डा० मुराणा आये। आपबीती सुनाई। उन्हें धैर्य से काम लेने को समझाया।

१०-६-३७

मा के पेट मे तेल की मालिश ४ से ४।। तक की।
चि० गगाबिसन मे बातें—सावगी, पिपरी फाटक के बाहर की जमीन वगैरा।
यू० पी० के तीन विद्यार्थी मिलने आये, देर तक बातें।
रामेश्वर (एलिचपुरवाले) से बातचीत।
मि० जेटलण्ड का जवाब, खुलासा पढा।
आराम के बाद वर्तमान पत्र, पत्र-व्यवहार, मन्नालालजी व चादोर से आये हुए बोहरे से बातचीत। चान्दोर जीन बीस हजार मे मिल सकेगी, ऐसा कहा।
श्रीमन् से मारवाडी शिक्षा मण्डल के बारे मे बातें।
बाबासाहब देशमुख, दादाराव, कुमारप्पा, गगाबिसन, भणसाली आदि से मिले।
पूनमचन्द से चादा मॅच फैक्टरी की बातें।

११-६-३७

मा की तेल मालिश। पूज्य बापूजी व कैलनबैक ४।।। की पैसेन्जर से आये। घर पर नीबू पानी वगैरा लेकर उनके साथ पैदल सेगाव, बालकोबा को देखते हुए, गये। सेगाव से बैलगाडी से वापस।
चि० रामेश्वर व शान्ता से बातें। उनका एक वर्ष का बजट व भावी जीवन का उद्देश्य वगैरा समझा।
बडवस वकील, बालूराम आये। बातचीत, विनोद, आजूजी बम्बई गये।
गप्पू धर्माधिकारी से गोला मिल की व्यवस्था की तथा अन्य बातें।
किशोरलाल भाई से बातें।
लक्ष्मणप्रसादजी व सावित्री को कमल के पत्र के साथ पत्र भेजा।

१२-६-३७

श्री गपू धर्माधिकारी से देर तक बातचीत। अपनी मा के आग्रह से उसने

अपनी जाति में ही सम्बन्ध करने का निश्चय किया।
डा० महोदय ने अपने विवाह-सम्बन्ध की चर्चा की।
जानकी आज नागपुर मेल से बम्बई गई।
श्री कन्हैयालाल मुंशी काश्मीर से आये।
श्री मीराबहन व महादेवभाई के साथ सेगांव। बापू के साथ सेगांव (गांव में) गये, सभा में बापू बोले। मराठी में मैंने भाषांतर किया।
श्री कन्हैयालाल मुंशी से देर तक बातचीत—भारतीय परिषद, हिन्दी प्रचार, पत्र वगैरा के बारे में।

१३-६-३७

कन्हैयालाल मुंशी रह गये—गाड़ी लेट होने के कारण। रात की एक्सप्रेस से जाने का रहा।
गुलाबबाई आई। मीराबहन गई।
सावधान केस की तैयारी—मुंशी, वडकस, करन्दीकर, कालुराम वगैरा से दो से चार बजे तक विचार-विनिमय।
श्री गोपाल नेवटिया सुबह आया, मेल से बम्बई गया।
दाण्डेकर व लक्ष्मी (शारदा) से बातें। दाण्डेकर व कार्यकर्ताओं की योजना पर विचार-विनिमय।
किशोरलालभाई से केस व अन्य बातें-चर्चा।

१४-६-३७

मां को तेल मालिश, आश्रम गये। रुक्मिणी को वहां भरती कराया। राधाकृष्ण व धामाजी से बातें।
कल रात को नागपुर एक्सप्रेस के लेट होने के कारण मुंशी स्टेशन से वापस आयें, यह सुबह मालूम हुआ।
श्री मुंशी, केदार, वडकस, करन्दीकर व अन्य मित्रों से केस के सम्बन्ध में विचार-विनिमय।
१२ बजे कोर्ट गये। गोविंदराव पाण्डे ने बहीखातों के दिखाने के बारे में दरख्वास्त दी व बहस की।
के० एम० मुंशी ने सुन्दर जवाब दिया। बारलिंगे ने भी कहा। उसने कई के अटैक किये। केदार ने उसे जवाब दिया।

बारलिंगे बीमार हो गये। केस मुलतवी रहा।

वर्धा, १६-६-३७

घूमते समय लक्ष्मी, श्रीमन, आर्यनायकम्, लक्ष्मण बजाज वगैरा से नूतन भारत विद्यालय के सम्बन्ध में विचार-विनिमय।

सावधान केस के सम्बन्ध में विचार-विनिमय।

कोर्ट—११॥ से १॥ तक २, से ४॥ तक क्राम एक्जामिनेशन चला। आज बारलिंगे ने केस का काम छोड़ दिया। पाठक ने शुरू किया।

केदार, बडवम के साथ सेगाव। बापू से बातें। केस का थोड़ा हाल कहा। म्यूच्युअल बेनीफीट सोसायटी आदि बारलिंगे का वर्ताव, व्यवहार, विधवा-विवाह, शाता, मदन मोहन आदि के सम्बन्ध में बातें।

वर्धा, १७-६-३७

चि० शान्ता, धोत्रे, श्रीमन आदि से बातें।

केस के कागजात पढ़े। केस ११॥ से ४॥ तक चला।

अब्दुल गफार खान, साली, मेहर आये।

देहरादून वाले चतुर्वेदी मिले। भोजन सबने साथ में किया।

शाम को बडवम वगैरा आये।

देहली से डा० सौन्दरम आईं, उनके साथ बातें।

जे० सी० व भारतन कुमारप्पा दोनों मिलने आये।

१८-६-३७

सौन्दरम व श्रीमन्नारायण के साथ आश्रम। भागीरथी बहन नाना वगैरा से बातें।

चिदा केस के कागजात पढ़े। कोर्ट में १२-२ व २॥-४॥ तक क्राम एक्जा-मिनेशन श्री पाठक ने किया।

दो खास मुख्त्यार पत्र श्री केशवदेवजी के नाम रजिस्टर करके बम्बई भेजे।

डा० सौन्दरम, खानसाहब, साली, मेहरताज वगैरा शाम को भोजन को आये। बाद में आश्रम सब घूमने गये। आशादेवी व आर्यनायकम भी साथ थे।

१९-६-३७

जल्दी तैयार होकर, किशोरलालभाई से मिलते हुए खानसाहब के साथ स्टेशन। खानसाहब से गनी के सम्बन्ध की बातें।

नागपुर मेल से कमल वगैरा आये। श्री रघुनाथ प्रसादजी पोद्दार से बातचीत, वह कलकत्ता गये। कमल से थोड़ी बातें। वह बापू से मिलने सेगांव गया।

कोर्ट—१२ से ३।। तक केस चला। पाठक की मदद से जयवन्त ने खुद क्रास किया।

नाना खरे की लडकियो ने गायन सुनाया तथा डा० सौन्दरम ने वीणा।

२०-६-३७

सुबह पवनार का मकान देखने गये। साथ में कमल, राधाकृष्ण, डा० सौन्दरम, मदालसा आदि थे। मकान देखा।

डा० खरे बापूजी से मिलकर आये। उन्हे साफ-साफ स्थिति तथा जो बातें मन मे थी, वह समझाकर कह दिया।

अभ्यंकर मेमोरियल कमेटी का काम वर्धा मे हुआ। बारह सदस्य हाजिर थे।

घटवाई, दाण्डेकर, पूनमचन्दजी, भीकूलाल से देर तक बातें। दाण्डेकर का व्यवहार बराबर समझ मे नही आया।

२१-६-३७

गौरीलालजी के बारे मे नर्मदाप्रसाद (सिविल सर्जन) से बातें। फोटो देखी। टी० बी० का प्रथम स्टेज है। उन्होने समझकर बतलाया व उनके घर समझाकर कहा।

विद्याधर विद्यार्थी को आर्यनायकम लेकर आये। उससे पूछा। उसने अपना कसूर कहा। लडकी बिलकुल निर्दोष बतलाई।

ब्रिजलालजी बियाणी आकोला से एक्सप्रेस से आये। श्रीकृष्ण प्रेस वर्धा को बढ़ाने के बारे मे देर तक विचार-विनिमय। कमल का विवाह व पत्रिका, राजस्थान प्रेस डिबेन्चर व गुगनचन्दजी की जमानत पर उन्हे पचीस हजार, पाच हजार की किस्त पाच वर्ष मे छ: टका ब्याज से, उन्हें चाहिए। दूध आदि की चर्चा।

गांधी सेवा संघ की रकम रोकने व ब्याज उपजाने के बारे में भी ठीक विचार-विनिमय। भास्नन् (असोसिएटेड प्रेस वाला) वाइसराय का भाषण लेकर आया। पढ़कर सुनाया। खूब लम्बा था व नरम भी था।
कमल किशोर भरतिया कानपुरवाले आये। विद्या, गोपाल, नर्मदा आदि के सम्बन्ध की बातें। वह मेल से बम्बई गये।
डा० सौन्दरम ग्रान्ट ट्रंक से मद्रास गई।
पत्रिका छपवाना व भेजना शुरू करना है।

२३-६-३७

चि० कमल से बातचीत, भविष्य के बारे में मेरे विचार उसे कहे।
चि० श्रीमन से बातें—सम्बन्ध के बारे मे व मैनपुरी तथा कानपुर जाने के बारे मे प्रोग्राम निश्चित किया।
पत्र-व्यवहार, विवाह-पत्रिका भेजी।
श्री गौरीशंकरजी खबर मिलने आये।
भागवत शास्त्री (देवलीवाले) से बातचीत। विवाह का मुहूर्त ता० ३० जून १ या २ व ११ या १४ जुलाई के बताये, अषाढ सुदी ४ व ७ के मुहूर्त के बाद चार महीने मुहूर्त नहीं बताया।
शाम को घूमते समय सत्यनारायणजी से हिन्दी-प्रचार के बारे में बातचीत।
महिला-आश्रम मे प्रार्थना। नामा, भागीरथी बहन, रामप्यारी से बातें।

२४-६-३७

जानकी देवी से मदालसा के सगाई व सम्बन्ध की बारे मे विचार-विनिमय। शाम को महिला आश्रम में सभा। काकासाहब को साथ लेकर वहा गये सभा का कार्य ४ से ६॥ तक चला। छुट्टियों के नियम तथा बहनो भर्ती करने आदि का मुख्य कार्य हुआ। आशाबहन को एक वर्ष की

आदि पर विचार।
रामगोपालजी ने छुट्टी मांगी, स्वास्थ्य आदि के कारण। देने का तय किया।
दादा, सदाशिवन आदि से मदालसा के सम्बन्ध के बारे में बातें।
रामेश्वर दयालपुर वालों से बातें।

२५-६-३७

गुलाब मां को समझाया, हाथ फेरना। घूमने जानकी के साथ। राधाकृष्ण, बाबासाहेब भी साथ हो गये। विनोद, चर्चा।
विवाह-सम्बन्धी-विचार विनिमय।
हरिराम गुमाश्ता की जो जगह भाव से ली (बालाजी मंदिर के बगीचे के पास) वह पूनमचन्द के साथ देखी, बाजार की इमारत का नया मकान देखा। अन्य मकानात भी। गोविन्दलालजी को देखा।
दुकान पर ऊपर के मकान की सफाई कराई। मोटर ड्राइवर का फैसला सुना।
जाजूजी, किशोरलालभाई, सरस्वती देवी, मूलचन्द आदि कई मिलने आये; बातें।

वर्धा, नागपुर, इटारसी, झांसी (रेल में) २६-६-३७

जानकी से चि० मदालसा के सम्बन्ध में बातें।
ग्राण्ट ट्रंक से सुबह मैनपुरी के लिए रवाना। साथ में चि० मदालसा, श्रीमन्नारायण व लाला। थर्ड में रवाना हुए। वर्धा से नागपुर तक हरजीवनभाई कोटक बातें करते रहे। उन्हें दो पत्र लिखकर दिये। जुलाई से डेढ़ सौ रुपये मासिक उन्हें नावे मांडकर देना व उनसे पूरा काम लेने के बारे में केशवदेवजी को लिखा। दूसरा पत्र चर्खा संघ को।
नागपुर में वृद्धिचंद्रजी पोद्दार मिले। वह अगर घर छोड़कर तीर्थ, एकान्त स्थान जाकर रहें तो उन्हें, ज्यादा-से-ज्यादा तीन वर्ष तक, पचहत्तर रुपये मासिक सहायता भेजने का, उनके कहने से, कबूल किया।
दाण्डेकर काटोल तक साथ आया। उसे १ जुलाई से जून (३८) तक एक वर्ष के लिए पचास रुपये मासिक की आमदनी कराने की गारंटी दी।
चि० शान्ता को पत्र।

आगरा, मैनपुरी, २७-६-३७

आगरा ४ बजे पहुंचे। गोविन्द प्रसाद व महेन्द्र आये। रेल से ही आगे जाने का विचार रखा। श्री सर आनन्दस्वरूपजी (साहेबजी महाराज, उमर ५६, गद्दी पर १९१३ में बैठे) दयाल बाग वालों का मद्रास में ता० २४ की रात ८-३० बजे स्वर्गवास होने की खबर सुनी। आज ही सुबह ६॥ बजे स्पेशल ट्रेन से उनकी शव-यात्रा जावेगी। दुःख हुआ।

मैनपुरी पहुंचे। श्री धर्मनारायणजी व हृदयनारायणजी तो स्टेशन पर ही आ गये थे। श्रीमन्नारायण के घर स्नान, भोजन, बातें, आराम। वातावरण सुखकारक मालूम हुआ। चर्चा।

श्रीमन् के पिता श्रीधर्मनारायणजी से सब बातें खूब स्पष्ट तौर से कर ली गईं। उन्होंने सब घर वालों की राय लेकर प्रसन्नतापूर्वक सम्बन्ध करना स्वीकार किया। उनके आग्रह के कारण श्रीमन की माता ने चि० मदालसा की गोद वगैरा भरी। श्रीमन् की माता, भाभियां आदि का स्वभाव ठीक मालूम हुआ।

मैनपुरी शहर के बाहर व गांव में घूमकर देखा। मदनमोहन का घर देखा। गोविन्द ने जलपान कराया।

चि० मदालसा की सगाई की बात निश्चित हुई।

मैनपुरी, शिकोहाबाद, कानपुर २८-६-३७

श्री धर्मनारायणजी एडवोकेट (श्रीमन् के पिता) से विवाह की रीति-रिवाज आदि पर ठीक विचार-विनिमय। पूरी तरह से उन्हें समझाया। एक बार तो विवाह ता० ११ जुलाई का रखने का विचार हुआ।

मैनपुरी से सुबह ७ बजे की गाड़ी से रवाना। शिकोहाबाद गाड़ी बदली। हृदयनारायणजी व गोविन्द प्रसाद चौबे यहां तक आये थे।

२-२५ की पैसेंजर से कानपुर पहुंचे। तार नहीं पहुंचने से थोड़ी देर स्टेशन पर ठहरना पड़ा। नवलकिशोर के घर होते हुए।

कमला स्ट्रीट पहुंचे। वहां श्री पदमपतजी आ गये थे। उनसे बहुत देर तक बातचीत। उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक पांच वर्ष तक पन्द्रह हजार सालाना मेरी देखरेख में अहिन्दीप्रान्तों में हिन्दी-प्रचार के लिए देना स्वीकार किया। और भी बातें हुईं।

२५-६-३७

गुरुद मां को समझाया; राम पैगया। भूलने जानकी के साथ। राधाकृष्ण बजाजवाड़ेवाले भी साथ हो गये। विनोद, वर्धा।

विवाह-सम्बन्धी-विचार विनिमय।

हरिभाऊ गुराखणा को जो जगह मदन ने दी (बालाजी मंदिर के बगीचे के पास) वह पूनमचन्द के साथ देखी; बाजार की इमारत का नया मकान देखा। अन्य मकानात भी। गोपीलालजी को देखा।

दुकान पर ऊपर के मकान की सफाई कराई। मोटर ड्राइवर का फैसला सुना।

जानकी, किशोरलालभाई, सरस्वती देवी, मूलचन्द आदि कई मिलने आये; बातें।

वर्धा, नागपुर, इटारसी, झांसी (रेल में) २६-६-३७

जानकी से चि० मदालसा के सम्बन्ध में बातें।

ग्रान्ट ट्रंक से सुबह मैनपुरी के लिए रवाना। साथ में चि० मदालसा, श्रीमन्नारायण व लाला। यहां से रवाना हुए। वर्धा से नागपुर तक हरजीवन-भाई कोटक बातें करते रहे। उन्हें दो पत्र लिखकर दिये। जुलाई से डेढ़ सौ रुपये मासिक उन्हें नावे माडकर देना व उनसे पूरा काम लेने के बारे में केशवदेवजी को लिखा। दूसरा पत्र चर्खा संघ को।

नागपुर में वृद्धिचंदजी पोद्दार मिले। वह अगर घर छोड़कर तीर्थ, एकान्त स्थान जाकर रहें तो उन्हें, ज्यादा-से-ज्यादा तीन वर्ष तक, पचहत्तर रुपये मासिक सहायता भेजने का, उनके कहने से, कबूल किया।

दाण्डेकर काटोल तक साथ आया। उसे १ जुलाई से जून (३८) तक एक वर्ष के लिए पचास रुपये मासिक की आमदनी कराने की गारंटी दी।

चि० शान्ता को पत्र।

मैनपुरी पहुंचे। श्री धर्मनारायणजी व हृदयनारायणजी तो स्टेशन पर ही आ गये थे। श्रीमन्नारायण के घर स्नान, भोजन, बातें, आराम। वातावरण गुणकारक मालूम हुआ। वर्षा।

श्रीमन् के पिता श्रीधर्मनारायणजी से सब बातें खूब स्पष्ट तौर से कर ली गईं। उन्होंने सब घर वालों की राय लेकर प्रसन्नतापूर्वक सम्बन्ध करना स्वीकार किया। उनके आग्रह के कारण श्रीमन की माता ने चि० मदालसा की गोद वगैरा भरी। श्रीमन् की माता, भाभियां आदि का स्वभाव ठीक मालूम हुआ।

मैनपुरी शहर के बाहर व गांव में घूमकर देखा। मदनमोहन का घर देखा। गोविन्द ने जलपान कराया।

चि० मदालसा की सगाई की बात निश्चित हुई।

मैनपुरी, शिकोहाबाद, कानपुर २८-६-३७

श्री धर्मनारायणजी एडवोकेट (श्रीमन् के पिता) से विवाह की रीति-रिवाज आदि पर ठीक विचार-विनिमय। पूरी तरह से उन्हें समझाया। एक बार तो विवाह ता० ११ जुलाई का रखने का विचार हुआ।

मैनपुरी से सुबह ७ बजे की गाड़ी से रवाना। शिकोहाबाद गाड़ी बदली। हृदयनारायणजी व गोविन्द प्रसाद चौबे वहां तक आये थे।

२-३५ की पैसेंजर से कानपुर पहुंचे। तार नहीं पहुंचने से थोड़ी देर स्टेशन पर ठहरना पड़ा। नवलकिशोर के घर होते हुए।

कमला स्ट्रीट पहुंचे। वहां श्री पदमपतजी आ गये थे। उनसे बहुत देर तक बातचीत। उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक पांच वर्ष तक पन्द्रह हजार सालाना मेरी देखरेख में अहिन्दीप्रान्तों में हिन्दी-प्रचार के लिए देना स्वीकार किया। और भी बातें हुईं।

रात को भोजन के समय डा० जवाहरलाल के सब घर के व लोग, बालकृष्ण आदि से विनोद बातें। चन्द्रा, शशी भी थे।

कानपुर रेल में (कलकत्ता के लिए) २९-६-३७

सुबह प्रार्थना। डा० चन्द्रकान्ता, डा० जवाहरलाल, शशी, सरोजनी, महेन्द्र आये। कमला रिट्रीट में घूमना। तालाब के आजू-बाजू का दृश्य बहुत ही सुन्दर, रमणीक व देखने योग्य था। बालकृष्ण शर्मा, हरि विद्यार्थी, उसकी स्त्री व दोनों बहनें आईं। ठीक बातें, परिचय।

डा० मुरारीलालजी वगैरा मिलने आये।

श्री पदमपतजी से मिलने मिल में गये। उनसे व कैलाशपत, लक्ष्मीपत, रामरतनजी आदि से परिचय, बातें। मिल में जो नई छपाई दाखिल की, वह दिखाई। अन्य व्यापार आदि की बातें।

पदमपतजी ने हिन्दी प्रचार के लिए जो सहायता देना स्वीकार किया उस बारे में पत्र दिया। वह उन्होंने मंजूर किया।

हिन्दी प्रचार के काम के लिए अपनी ओर से भी सब मिलकर पचीस हजार की सहायता का निश्चय।

डा० जवाहरलाल के घर, गीता के घर, गौरीशकर हौजरी फैक्टरी व गंगा के घाट वगैरा देखते हुए कालका मेल से रवाना। खूब भीड़ थी। प्रयाग में पं० जवाहरलाल, इन्दु, कृपालानी आये। खाना लाये थे।

रास्ते में डा० चन्द्रा, गिरधारी, रामेश्वर आदि से बातें।

कलकत्ता, ३०-६-३७

चि० कमल वगैरा सब मिलकर पन्द्रह टिकट वर्धा से (नागपुर मेल से) पहुंचे। मैं, कानपुर से सुशीला भरतिया, चन्द्रकान्ता, मदालसा, रामेश्वर नेवटिया के साथ कालका मेल से पहुंचा।

लक्ष्मण प्रसादजी के घर अलीपुर होते हुए डेरे पर पहुंचे। स्नान आदि से निवृत्त। बातें, प्रोग्राम, टेलीफोन। भोजन में कच्ची रसोई थी।

थोडा आराम, बाद मे मिलने वालो से बातचीत।

विवाह के लिए लक्ष्मण प्रसादजी के यहा गये। व्यवस्था ठीक थी। जगह थोड़ी कम पडी। आनेवाले बहुत लोग आये। सर बद्रीदास, सर छाजूराम, कई अंग्रेज व सनातनी लोग भी आये। लेडी जे० सी० बोस, सरलादेवी

चौधरानी, मौलाना आजाद, प्रफुल्ल घोष आदि भी आये। कलकत्ता के मित्र तो प्रायः सब ही उपस्थित थे। कमल-सावित्री का विवाह ठीक तौर से व सुखकारक सम्पन्न हुआ। भोजन, विनोद।
मदालसा की सगाई श्रीमन्नारायण से की, उसकी घोषणा व नेग।

कलकत्ता १-७-३७

बनारसी प्रसाद झुनझुनवालों से बातें—मिल, सगाई आदि के बारे में।
बालकृष्णजी पोद्दार, किशोरी केडिया आदि से मिलना।
बिड़लों के यहां सबों से मिलना, विनोद, पार्टी। थोड़ी देर शतरंज।
उर्मिला बहन पोद्दार, बाद में मणीबहन वगैरा से मिलना।
जगन्नाथ घाट रोड पर जानकी देवी ने मैटरनिटी होम का उद्घाटन किया। सभापति मुझे बनाया।
शक्कर मिल व बिहार राष्ट्रीय मदद की चर्चा—बनारसीलाल झुनझुनवाले, रामेश्वरजी नोपाणी, घनश्यामदासजी लोयलका आदि से।
प्रभुदयालजी व राजकुमारजी से बातें। तीन हजार की सहायता, तीन या चार संस्थाओं में देने को कहा। सीतारामजी के घर पर मिलना व भोजन।
हावड़ा-नागपुर मेल से वर्धा रवाना।

बिलासपुर, नागपुर, वर्धा, २-७-३७

बिलासपुर में कई लोग मिलने आये। कई मित्र—शुक्लाजी डागाजी आदि मिलने आये। नागपुर में भी कई मित्र मिले।
वर्धा पहुंचे। चि० सावित्री व कमल को बंगले उतारकर फिर स्टेशन। फ्रन्ट ट्रक से पं० जवाहरलाल व मौलाना आजाद आये। राधाकृष्ण से बातें।
विवाह निमित्त भोजन।
जवाहरलाल व मौलाना आजाद के साथ सेगांव गये। रात को १० बजे बाद वहां से वापस आये। सबों से मिलना-बातें।

वर्धा, ३-७-३७

दुकान पर चि० मदालसा के विवाह की व्यवस्था विचार-विनिमय।
श्री शीतलप्रसाद श्रीवास्तव से नागपुर के सम्बन्ध के बारे में बातचीत।
पत्र-व्यवहार केशवदेवजी को श्रीकृष्ण के बारे में, दयालपुर, मदालसा के

बालकृष्ण शर्मा को लिखा कि व धर्मनारायणजी को श्रीमन के बारे में खास लिखना पड़ा।
श्री जाजूजी व किशोरलाल भाई से जमनालाल मल्ल के बारे में विचार-विनिमय। पं० जवाहरलालजी, मौलाना आजाद सेगांव से बैलगाड़ी व मोटर से आये। उनसे बातें।
चि० सावित्री का स्वास्थ्य थोड़ा ठीक नहीं था। ज्वर मालूम दिया। शाम को ठीक लगी। विवाह के तार-पत्र देखे।
चि० जयकृष्ण, रुक्मणी मिलने आये। लड़की अच्छी मालूम हुई।

४-७-३७

जवाहरलाल, मौलाना आजाद सेगांव गये। शाम को आये।
सरदार व भूलाभाई बम्बई से आये। शाम को सेगांव गये-आये।
राजेन्द्रबाबू आये, शरदबाबू भी।
शाम को भैया बन्धु के यहां मित्रों ने कमल, सावित्री, जयकृष्ण, रुक्मणी को भोज दिया। वहां गये। ठीक व्यवस्था थी। जवाहरलालजी, मौलाना आजाद, खान साहब आदि भी भोजन को गये थे।

५-७-३७

वर्किंग कमेटी का काम ६ से ११। व १॥ से ६॥ तक। रात में भी विचार-विनिमय।
आज बापू नहीं आये—सदस्य जवाहरलाल, मौलाना आजाद, राजेन्द्रबाबू, सरदार वल्लभभाई, खान अब्दुल गफार खां, सरोजनी, जमनालाल, नरेन्द्रदेव, शंकरराव देव, पटवर्द्धन, भूलाभाई, कृपलानी। दोपहर के बाद गोविन्द वल्लभ पन्त आये। निमंत्रण से राजाजी व शरदबाबू हाजिर थे।

६-७-३७

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से ११॥ व १॥ से ७ तक। रात को ८॥ से १० तक फिर हुई। १०॥ घंटे बैठक हुई। ऑफिस लेने आदि के बारे में ठीक चर्चा, विचार-विनिमय बापू के ठहराव पर। जवाहरलाल भी दूसरा ठहराव बनावेंगे।

७-७-३७

सुबह हिन्दी प्रचार संस्था की ओर से पू० बापूजी के हाथ से प्रचार-

हूं, यह भी कहा। देर तक विचार-विनिमय।
वर्किंग कमेटी ने ऑफिस लेने का ठहराव मंजूर किया।
जलियानवाला बाग कमेटी की सभा हुई।
हिन्दी प्रचार की इनफार्मल सभा सुबह व रात देर तक हुई। राजेन्द्रबाबू, काकासाहब, सत्यनारायणजी, हरिहर शर्मा आदि थे।

८-७-३७

नर्मदा के सम्बन्ध के बारे में कलकत्ता टेलीफोन किया।
वर्किंग कमेटी। सुबह ८-१२ व १२ से ५॥ तक चलती रही।
जवाहरलालजी ७-४० की गाड़ी से प्रयाग रवाना हुए।
हिन्दीप्रचार सभा का कार्य श्री टण्डनजी, काकासाहब, सत्यनारायणजी, अण्णा के साथ १० बजे रात तक हुआ।

९-७-३७

किशोरीलाल भाई व जाजूजी से बातें करके भूलाभाई व सरदार से बातें।
नागपुर प्रान्तीय कमेटी को जो पत्र भेजना था, उस पर दादा धर्माधिकारी के साथ विचार-विनिमय।
चि० अनसूया, नर्मदा आदि से बातें। थोड़ी मदालसा से भी।
सेगाव—हिन्दी प्रचार सभा का कार्य पू० बापूजी की उपस्थिति में पूरा हुआ। टण्डनजी हाजिर थे। टण्डनजी रात को प्रयाग गये।
मौलाना अबुल कलाम व नागपुर वाले रजाक व डा० हुसेन से बातें।
भूलाभाई व सरदार आज गये।

१०-७-३७

मौलाना अबुल कलाम मेल से गये।

दुकान पर विवाह की व्यवस्था का कार्य किया। बाबासाहब आदि से विवाह-चर्चा। की चर्चा।
मगनवाड़ी सेवा मंदिर ग्रामोद्योग संघ ट्रस्ट की सभा। बापू सेगांव से आये, बम्बई से गोकुलभाई, मिलनिया, मणीबेन, नानावटी, कुंवर बहन वकील, पेरीनबेन, देवदासी आदि आये।
सितलिया अव्यवहारिक मालूम हुए। उनको त्यागपत्र देना पड़ा। स्वीकार हुआ। मेरा त्यागपत्र मंजूर नहीं हुआ।
शाम को ग्राण्ड ट्रंक से जनेत, श्रीमन्, उनके पिता, माता आदि आये।
रात को मदालसा देर तक रोती व हंसती रही।
चि० गजानन्द, हिम्मतसिंगका से बातें।

११-७-३७

रात को डेढ़ घंटे के करीब ही सोने को मिला। सुबह जल्दी उठना। प्रार्थना, मदालसा के साथ गीताई-पाठ। मदालसा को समझाना।
मदालसा के विवाह की तैयारी। ६ । बजे दुकान पर (गांधी चौक) पहुंचे। सात बजे से विधि शुरू हुई।
पू० बापूजी, विनोबा की हाजिरी में विवाह सम्पन्न हुआ। ठीक समुदाय जमा था।
वहीं पर सबों ने एक पंगत में बैठकर भोजन किया।
चि० नर्मदा की सगाई, कलकत्ता वाले चि० गजानन्द (प्रभुदयालजी हिम्मतसिंगका के पुत्र) के साथ की। कलकत्ता टेलीफोन से प्रभुदयालजी की स्वीकृति ले ली थी।
विवाह सम्पन्न होने के बाद वर्षा आदि शुरू। बहुत जोर से पानी पड़ा। बरात के लोगों के जीमने में कष्ट पहुंचा। सब मकान पानी से भर गये। रामकिसन डालमिया से देर तक बातचीत। वह दोपहर की एक्सप्रेस से गये। शारदाबहन बिड़ला, वेंकट पित्ती, रमा जैन आदि भी आये थे।

१२-७-३७

प्रार्थना। चि० मदालसा को आज मैनपुरी विदा करने की तैयारी। उसको बरात के साथ ग्रान्ड ट्रंक से विदा किया। गाड़ी लेट आई। ठीक विनोद-प्रमोद रहा।

१३-७-३७

चि० नर्मदा व गजानन्द हिम्मतसिंगका के साथ घूमने जाना। दोनो से विचार-विनिमय। नर्मदा को २२ वर्ष श्रावण मे पूरे होवेंगे। गजानन्द का तीसवा वर्ष चल रहा है।

दोपहर को पत्र टीव भेजे गये। चि० रामेश्वर नेवटिया का स्वास्थ्य खराब रहने के कारण उसे ४-६ रोज यही रहने को कहा।

डा० वतरा, विजाणी, गाधी (नागपुरवाला), डा० महोदय आदि से बातचीत।

रात ६॥ बजे तक गिरधारी, सावित्री केडिया, उमा, नर्मदा, रमा, प्रभा, बगाली मित्र का गायन, विनोद हुआ। चर्चा।

आज का दिन व रात एक प्रकार से विचार-चिंता मे बीता।

१४-७-३७

चि० नर्मदा व गजानन्द के साथ घूमना। महिला-आश्रम जाना। किशोरी, भागीरथी बहन आदि से मिलना।

चि० सावित्री व कमल से बातें।

सावधान केस—सुबह करन्दीकर ने पढकर सुनाया। शाम को वडकस, करदीकर, कालूराम, पूनमचन्द वगैरा के साथ देर तक विचार-विनिमय।

भारतन व उनकी पत्नी सीतादेवी को भोजन के लिए बुलाया। भोजन के बाद गायन, विनोद, प्रमोद रात १० बजे तक चलता रहा।

आज नागपुर मे काग्रेस की मिनिस्ट्री ने चार्ज लिया।

१५-७-३७

सावधान केस मे आरोपी की ओर से श्री गोविन्दराव पाण्डे ने जिरह की। उन्हे मनोहर पन्त व कोल्हे मदद करते थे। अपनी ओर से मि० सालवे,

बडकम, करन्दीकर थे।
गजानन्द, नन्दू, सावित्री, नर्मदा आदि से थोडी बातें।

१८-७-३७

४ बजे प्रार्थना। थोडा घूमना। गजानन्द से बातें। ग्रान्ड ट्रंक से वह गया।
श्री केशवदेवजी व आबिदअली बम्बई से आये। उनसे कार्य-व्यवहार तथा चि० श्रीकृष्ण वगैरा के सम्बन्ध में सुबह व शाम बातचीत। वह मेल से वापस बम्बई गये।
श्री ब्रिजराज नेहरू के साथ भोजन, बातचीत। ठक्कर बापा भी आज आ गये।
बिहटा व पटना के बीच पजाब हावडा एक्सप्रेस की दुर्घटना की खबर सुनी, दु ख व मन को झटका पहुचा।

१९-७-३७

श्रीराम की पढ़ाई, बम्बई जाने के बारे में, जानकी देवी से मतभेद, मेरे व्यवहार आदि। केशर से बातें।
चिखा केस ७। से ९।। तक पढा, सुना, विचार किया।
नागपुर से दाण्डेकर आया, थोडी बातें।
१२ बजे कोर्ट गये। मि० जयवन्त व उसके वकीलों ने कहा कि वे केस ट्रासफर करना चाहते है। कोर्ट ने उन्हे समय दिया और कहा स्टे आर्डर ले आओ। वह नही ला सके। बाद मे कोर्ट ने कहा, केस चलाओ। उनके इन्कार करने पर मेरा क्रास पूरा समझा गया व छुट्टी दी गयी। दूसरे गवाह के लिए १६ अगस्त तारीख मुकर्रर हुई।
पूनमचन्द से जमनालाल सन्स कम्पनी के बारे मे व अन्य विचार-विनिमय।
गाव के मकान मे गये। जानकी का स्वास्थ्य देखा। थोडी देर बैठना।
बगले पर गगाबाई व दुबे रिटायर्ड तहसीलदार आदि से बातें।
आज मन दुखी व अशान्त रहा। केशर व जानकी के कारण।

२०-७-३७

आज देर से उठना हुआ। वल्लभ जाजू आदि से बातें। बिहार वालों से बातें। आश्रम गये।

किशोरी व चौथमल आज ग्राण्ड ट्रंक से गये। भागीरथीबहन से बातचीत।

बच्छराज सन्स व जमनालाल सन्स के बारे में विचार-विनिमय व निश्चय। जाजूजी, पूनमचन्द, कमलनयन व करंदीकर के साथ कम्पनी करने का निश्चय हुआ व नीचे मुजब शेअर देने का तय किया—

जमनालाल १॥ लाख, कमलनयन १॥ लाख व २५ हजार उसके शिक्षण निमित्त, सावित्री २५ हजार, रामकृष्ण १॥ लाख व २५हजार उसके शिक्षा, विवाह तथा विवाह के बाद उसकी पत्नी के लिए २५ हजार, कमला २५ हजार, मदालसा ५० हजार, उमा ५० हजार।[1]

जानकी यदि लेना चाहे तो उसके पास जो दूसरे शेअर है, उनकी जगह ये शेअर देना। नानू को एक हजार के शेयर देने बाबत विचारना है। धर्मार्थ ट्रस्ट के लिए इस्टेट अलग निकालना है। जाजूजी व पूनमचन्द के जिम्मे यह काम किया गया।

पत्र-व्यवहार में चि० सावित्री व कमल से भी मदद ली।

मकान पर जानकी व कमला से बातें। आज जो निश्चय हुआ, वह समझाकर कहा। वहीं भोजन, मन तो खास नहीं था।

२१-७-३७

विनोबा के पत्र के जवाब में उन्हें पत्र लिखा। गंगाबाई के बारे में ज्यादा गहराई में जाने की मेरी इच्छा व उत्साह नहीं। उनका पत्र आया कि मुझे जाना ही होगा।

मौलाना आजाद बम्बई से आये। उनसे मद्रास बम्बई नागपुर यु० पी०

---

१. जमनालालजी ने जमनालाल सन्स प्राइवेट लि० एक कम्पनी बनाई जिसके द्वारा होकर लड़कों के अलावा लड़कियों व बहुओं का भी हिस्सा रखा था। किसी की सम्पत्ति में लड़कियों का हिस्सा रहे, यह कानून तो स्वराज्य मिलने के बाद बना। पर जमनालालजी ने इसपर पहले से ही सोच विचार कर अमल किया था। लड़कों के अलावा उन्होंने बहुओं का भी हिस्सा रखा। वे चाहते थे कि लिमिटेड [illegible] अपने पैरों पर खड़ी रह सके और किसीकी मोहताज न रहे। नानू का भी, जो उनका [illegible] था, उनके मन में ख्याल था। इसके बाद में [illegible]।

सिलिल्ली, एलाउन्स आदि की बातें।
सेगांव—मौलाना व मैं बैल गाड़ी से गये। वर्षा खूब जोर की पड़ चुकी थी और थोड़ी आ भी रही थी। रास्ते में गाड़ी का चाक निकल गया। पहुंचने में देर। वहां बापू से मौलाना की व मेरी बातचीत। बापू भी थके हुए मालूम हुए। बापू से किशोरलालभाई व पंडितजी के पत्रों पर विचार। योगा के सम्बन्ध के बारे में उन्होंने पत्र लिखकर दिया। गगूबाई को भी पत्र लिखकर दिया। बंगले पर मौलाना से ठीक-ठीक बातें।
आखिर गगूबाई ने भावी व्यवस्था के बारे में स्वीकार किया।

२२-७-३७

दादा धर्माधिकारी से अच्युत धर्माधिकारी की मृत्यु के बारे में बातें।
मौलाना आजाद से बातें। उन्हें स्टेशन छोड़ा। वह इलाहाबाद गये।
नालवाड़ी-विनोबा से गंगादेवी की हालत पर देर तक विचार-विनिमय।
मेरी योजना उन्होंने पसन्द की। चि० योगा के बारे में बापू का पत्र भी उन्होंने पसन्द किया।
दुकान—बच्छराज जमनालाल के काम की सभा हुई। चि० कमल भी हाजिर था।
श्री जानकी देवी, केशर, नर्मदा से बातें। गंगादेवी से बातें हुईं। उसका खुलासा परिचय।
विश्वासराव मेघे, उसकी माता पार्वती बाई व वेंकटराव आये। उनका खाता मंदिर में डालने का विचार।
पत्र-व्यवहार—सावित्री से पत्र लिखवाये।
गंगादेवी को बापू के पास सेगांव भेजा।

नागपुर, २३-७-३७

मोटर से नागपुर जाना।
चि० सावित्री व कमल भी साथ थे। रास्ते में बालकपन की बातें।
पी० एस० पाठक का परिचय। दरबार, रायबहादुरी, पार्टी वगैरा का खुलासा।
अम्बाझरी तालाब, तैलनखेड़ी टैंक देखते हुए नागपुर पहुंचे।
पूनमचन्द रांका के घर भोजन। उन्होंने अपनी स्थिति कही।

गाजियाबाद की अग्रवाल बाल विधवा लड़की के बारे में मिलना हुआ।
सवारी व पटवारी मिले।
कॉलेज की जगह देखी। वृद्धिचन्दजी पोद्दार से मिले। उनके साथ धर्मशाला, अध्यापकों (जहां वह रहते हैं) व छात्रों के रहने की जगह देखी। उनसे विचार-विनिमय। कीमत, वह कहते हैं उस बगले की जमीन-सहित पचास हजार-अन्दाज। धर्मशाला की जगह ११ एकड़ या १० हजार। हाउसिंग कम्पनी की शाखा खोलने का निश्चय हुआ। गिरधारी, द्वारकादास, पूनमचन्द साथ थे।
अभ्यंकर मेमोरियल सभा का कार्य छगनलाल के घर पर हुआ। सदस्य व सेक्रेटरी ज्यादा उत्साह नहीं ले रहे हैं।
श्री पटवर्धन से बातचीत। परिणाम कुछ नहीं आया। मोटर से वापस वर्धा। केलझर के डाक बगले में भोजन किया।

२४-७-३७

बालासाहब से नागपुर प्रान्तीय कांग्रेस के सम्बन्ध में चर्चा। लक्ष्मीनारायण मंदिर की सभा।
शंकरराव देव व रामनाथम् मिनिस्टर से बातें।
बम्बई जाने की तैयारी। एक्सप्रेस से रवाना।

२६-७-३७

सुव्रता बाई रुइया से २ घंटे बातें—मदन रुइया के बारे में, राधाकृष्ण की सगाई व अन्य।
सरदार वल्लभ भाई के यहां भोजन व बातें। सर चुन्नीलाल आ गये थे।
रजिस्ट्रार की कोर्ट में रुइया कालेज व वार्डन रोड बगले के दो टायटल रजिस्टर किये।
ऑफिस में लाला मुकन्दलाल (लाहौर वाले) आदि से बातें।
अम्बालाल सॉलिसिटर (मणीलाल खेर) से बातें।
बच्छराज सन्स या जमनालाल सन्स के बारे में खुलासा बातें। चि० कमलनयन, केशवदेवजी, पूनमचन्द साथ थे। नासिक धर्मशाला के बारे में भी चर्चा।
बिड़ला ऑफिस में रामेश्वरदासजी से बातें।

इलाहाबाद, ३०-७-३७

डा० जीवराज व मास्टर माठे, भूता कम्पनीवाले आर्किटेक्ट भूता साथ में। कमला मेमोरियल के नक्शे-एस्टीमेट तथा अन्य चर्चा, विचार-विनिमय देर तक होता रहा। इटारसी से डा० चन्द्रकान्त को जीवराज ने तार भेजा।

जबलपुर से कटनी तक आबिदअली से थर्ड क्लास में बातचीत—खासकर हाउसिंग के बारे में।

कटनी से सतना तक श्री माधवराव अणे (यवतमाल वालों) से बातचीत।

इलाहाबाद—जवाहरलालजी स्टेशन पर आये। उनके साथ आनन्द भवन। दूध, फल लिया, कमला मेमोरियल वगैरा के बारे में बातचीत।

इलाहाबाद, ३१-७-३७

चि० डा० चन्द्रकान्ता कानपुर से आई। उससे थोड़ी बातें।

डा० जीवराज, भूता, जवाहरलाल आदि के साथ कमला मेमोरियल के बारे में देर तक विचार-विनिमय (प्लान आदि के बारे में) होता रहा।

आबिदअली, जौहरी, मगलप्रसाद आदि मिलने आये। दोपहर को तीन बजे हाउसिंग कंपनी की ऑफिस की जो इमारत जवाहर स्क्वायर में बन रही है, उसे तथा कायस्थ सोसायटी की जगह वगैरा देखी।

रामनरेश त्रिपाठी के यहां शाम का भोजन, फल वगैरा। उनसे एक घंटे से ज्यादा बातें—उनके 'हिन्दी मंदिर' के बारे में।

साहित्य भवन—के बारे में बृजराजजी से व मार्तण्ड से बातें, परस्थिति समझी, कपिलदेव मालवीय से मामूली बातें।

डा० चन्द्रकान्त से डा० जीवराज से, उसके बारे में बातें, खुर्शेद से भी।

हाउसिंग कमेटी, कमला मेमोरियल का काम करे या नहीं इसपर विचार-विनिमय।

१-८-३७

प्रार्थना। जवाहरलालजी से बातें—डा० महमूद के टेलीफोन के बारे में तथा मिनिस्ट्री की अगली कार्य-पद्धति के बारे में।
झण्डावन्दन मुहम्मद अली पार्क, जवाहर स्क्वायर में राजेन्द्रबाबू के हाथ से हुआ। खादी भण्डार देखा।
कमला मेमोरियल ट्रस्ट की मीटिंग सुबह व रात को देर तक हुई। हिन्दी प्रचार कमेटी का काम १२ से १ तक हुआ। साहित्य सम्मेलन की कार्यकारिणी १ से २॥ तक।
हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थाई समिति २॥ से ३॥ तक। काम ठीक तौर से हुआ। श्री प० अयोध्या सिंह जी उपाध्याय व रामदासजी गौड़ को मंगलाप्रसाद पुरस्कार, बारह सौ रुपया दिया गया।
जाहिर सभा में गये। ६॥ से ८॥ तक वहां बैठना पड़ा।

प्रयाग, बनारस, २-८-३७

प्रार्थना, थोड़ा घूमना। डा० चन्द्रकान्ता कानपुर गई।
सत्यवती, शिवमूर्तिसिंह, इनका जमाई तथा लीलावती वगैरा मिलने आये। डा० जीवराज व भूता बम्बई गये।
जवाहरलाल, राजेन्द्रबाबू व कृपलानी से विचार-विनिमय। वर्किंग कमेटी ता० १७-१ को वर्धा में रखना निश्चय हुआ।
म्युनिसिपल बोर्ड का म्यूजियम श्री व्यास ने दिखाया। ठीक था। जवाहरलालजी की सब चीजें यहां पर रखी हैं।
दीनानाथ तिवारी, सुरेन्द्रनारायण, मजूमदार आदि से मिलकर इलाहाबाद सिटी से १२-४० पर रामनरेशजी के साथ बनारस रवाना। पांच बजे के करीब पहुंचे। रास्ते में आबिद अली साथ।
बनारस में हिन्दुस्तान हाउसिंग के बोर्ड की सभा। राजा ज्वाला प्रसाद व श्रीप्रकाशजी आये। देर तक भावी काम के बारे में विचार-विनिमय।
पू० मालवीयजी व गुप्तजी से देर तक बातें।

बनारस, ३-८-३७

रामकृष्ण डालमिया को गया टेलीफोन किया।

मिलने—सुचिता कृपलानी, सरोजनी रोहतगी, चि० कृष्णा, चन्द्रकला, किशोरी उसकी बहिन, महादेवलाल श्राफ, श्रीनाथ सिंहजी, चौथमल, गोपाल बजाज आदि आये। बातचीत।

१२-५८ की गाडी से दिल्ली के लिए रवाना। रास्ते में बाबू भगवानदासजी से मिले। जौहरी, आबिदअली, बनारसी आदि बनारस से मुगलसराय तक साथ आये। गाडी लेट थी।

प्रयाग में जवाहरलालजी मिले। उन्होंने बापू के नाम पत्र व सन्देश दिया। कृपलानी दिल्ली तक साथ आये। खाना-पीना तथा राजनैतिक व अन्य बातें।

कानपुर—डा० जवाहरलालजी, महेन्द्र, सिद्धगोपाल वगैरा मिले।

दिल्ली, ४-८-३७

दिल्ली पहुंचे। हरिजन कालोनी गये। बापू से बातें। बापू ११॥ से १ तक वायसराय से मिले।

श्री रघुवीरसिंह जी (दिल्ली कश्मीरी गेट) के घर भोजन, बातचीत। उनके पिता से ठीक परिचय।

५-३५ की ग्रान्ड ट्रंक से बापूजी के साथ थर्ड में वर्धा रवाना।

स्टेशन पर गाडोदियाजी व श्रीराम अग्रवाल वगैरा आये थे। उन्हें कृपलानी ने 'ये रास्कल्स क्यों आये' यह कहा, सो सुनकर बुरा लगा, दुःख हुआ।

बापू ने वायसराय से जो बातें हुई व उनपर उसका जो असर हुआ, वह बताया।

सरदार नरीमान प्रकरण पर ठीक चर्चा। मैंने दूसरा पक्ष लेकर जो कहना था, सो कहा।

(रेल में), ५-८-३७

बापूजी से सुबह व शाम को बातचीत। विषय थे—

मदालसा, उमा सगाई, डा० बतरा व उनकी पत्नी सेगांव में दो छोटे घर, विनोबा सीकर या सेगांव, हरिहर शर्मा, पारनेरकर, सावित्री व विदर्भ वस्त्र प्रयोग, कार्यकर्ताओं का अभाव, आश्रम के नियमों का परिवर्तन,

हाउसिंग कम्पनी, कमला मेमोरियल का काम करे या नहीं इसपर विचार-विनिमय ।

१-८-३७

प्रार्थना । जवाहरलालजी से बातें—डा० महमूद के टेमीनेशन के बारे में तथा मिनिस्ट्री की अलग कार्य-पद्धति के बारे में ।
उद्घाटन महम्मद अली पार्क, जवाहर स्क्वायर में राजेन्द्रबाबू के हाथ से हुआ । खादी भण्डार देखा ।
कमला मेमोरियल ट्रस्ट की मीटिंग सुबह व रात को देर तक हुई । हिन्दी प्रचार कमेटी का काम १२ से १ तक हुआ । साहित्य सम्मेलन की कार्यकारिणी १ से २। तक ।
हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थाई समिति २। से ३।। तक । काम ठीक तौर से हुआ । श्री प० अयोध्या सिंह जी उपाध्याय व रामदासजी गौड को मंगलाप्रसाद पुरस्कार, बारह सौ रुपया दिया गया ।
जाहिर सभा में गये । ६।। से ८।। तक यहा बैठना पडा ।

प्रयाग, बनारस, २-८-३७

प्रार्थना, थोड़ा घूमना । डा० चन्द्रकान्ता कानपुर गई ।
सत्यवती, शिवमूर्तिसिंह, इनका जमाई तथा लीलावती रुइया वगैरा मिलने आये । डा० जीवराज व भूता बम्बई गये ।
जवाहरलाल, राजेन्द्रबाबू व कृपलानी से विचार-विनिमय । वर्किंग कमेटी ता० १७-१ को वर्धा में रखना निश्चय हुआ ।
म्युनिसिपल बोर्ड का म्यूजियम श्री व्यास ने दिलाया । ठीक था । जवाहरलालजी की सब चीजें यहा पर रखी हैं ।
दीनानाथ तिवारी, सुरेन्द्रनारायण, मजुमदार आदि से मिलकर इलाहाबाद सिटी से १२-४० पर रामनरेशजी के साथ बनारस रवाना । पाच बजे के करीब पहुचे । रास्ते में आबिद अली साथ ।
बनारस मे हिन्दुस्तान हाउसिंग के बोर्ड की सभा । राजा ज्वाला प्रसाद व श्रीप्रकाशजी आये । देर तक भावी काम के बारे में विचार-विनिमय ।
पू० मालवीयजी व गुप्तजी से देर तक बातें ।

कानपुर—डा० जवाहरलालजी, महेन्द्र, सिद्धगोपाल वगैरा मिले।

दिल्ली, ४-८-३७

दिल्ली पहुंचे। हरिजन कालोनी गये। बापू से बातें। बापू ११॥ से १ तक वायसराय से मिले।

श्री रघुवीरसिंह जी (दिल्ली कश्मीरी गेट) के घर भोजन, बातचीत। उनके पिता से ठीक परिचय।

९-३५ की ग्रान्ड ट्रंक से बापूजी के साथ थर्ड में वर्धा रवाना।

स्टेशन पर गाडोदियाजी व श्रीराम अग्रवाल वगैरा आये थे। उन्हें कृपलानी ने 'ये रास्कल्स क्यों आये' यह कहा, सो सुनकर बुरा लगा, दुःख हुआ।

बापू ने वायसराय से जो बातें हुई व उनपर उसका जो असर हुआ, वह बताया।

सरदार नरीमान प्रकरण पर ठीक चर्चा। मैंने दूसरा पक्ष लेकर जो कहना था, सो कहा।

(रेल में), ५-८-३७

बापूजी से सुबह व शाम को बातचीत। विषय थे—

मदालसा, उमा सगाई, डा० बतरा व उनकी पत्नी सेगाव में दो छोटे घर विनोबा सीकर या सेगाव, हरिहर शर्मा, पारनेरकर, सावित्री व विदेशी वस्त्र प्रयोग, कार्यकर्ताओं का अभाव, आश्रम के नियमों का परिणाम

हाउसिंग कम्पनी, कमला मेमोरियल का काम करे या नहीं इसपर विचार-विनिमय।

१-८-३७

प्रार्थना। जवाहरलालजी से बातें—डा० महमूद के टेलीफोन के बारे में तथा मिनिस्ट्री की भावी कार्य-पद्धति के बारे में।
झण्डावन्दन मुहम्मद अली पार्क, जवाहर स्क्वायर में राजेन्द्रबाबू के हाथ से हुआ। खादी भण्डार देखा।
कमला मेमोरियल ट्रस्ट की मीटिंग सुबह व रात को देर तक हुई। हिन्दी प्रचार कमेटी का काम १२ से १ तक हुआ। साहित्य सम्मेलन की कार्य-कारिणी १ से २। तक।
हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थाई समिति २। से ३।। तक। काम ठीक तौर से हुआ। श्री पं० अयोध्या सिंह जी उपाध्याय व रामदासजी गौड को मंगलाप्रसाद पुरस्कार, बारह सौ रुपया दिया गया।
जाहिर सभा में गये। ६।। से ८।। तक वहां बैठना पड़ा।

प्रयाग, बनारस, २-८-३७

प्रार्थना, थोड़ा घूमना। डा० चन्द्रकान्ता कानपुर गई।
सत्यवती, शिवमूर्तिसिंह, इनका जमाई तथा लीलावती रुइया वगैरा मिलने आये। डा० जीवराज व भूता बम्बई गये।
जवाहरलाल, राजेन्द्रबाबू व कृपलानी से विचार-विनिमय। वर्किंग कमेटी ता० १७-९ को वर्धा में रखना निश्चय हुआ।
म्युनिसिपल बोर्ड का म्यूजियम श्री व्यास ने दिखाया। ठीक था। जवाहरलालजी की सब चीजें यहां पर रखी हैं।
दीनानाथ तिवारी, सुरेन्द्रनारायण, मजुमदार आदि से मिलकर इलाहाबाद सिटी से १२-४० पर रामनरेशजी के साथ बनारस रवाना। पांच बजे के करीब पहुंचे। रास्ते में आबिद अली साथ।
बनारस में हिन्दुस्तान हाउसिंग के बोर्ड की सभा। राजा ज्वाला प्रसाद व श्रीप्रकाशजी आये। देर तक भावी काम के बारे में विचार-विनिमय।
पू० मालवीयजी व गुप्तजी से देर तक बातें।

बनारस, ३-८-३७

रामकृष्ण डालमिया को यहां टेलीफोन किया।

मिले—सुचिता कृपलानी, सरोजनी गोस्वामी, चि० कृष्णा, चन्द्रकला, विनोदी उनकी बहिन, महादेवलाल श्राफ, श्रीनाथ सिन्हा, चौथमल, गोपाल बजाज आदि आये। बातचीत।

१२-४८ की गाड़ी से दिल्ली के लिए रवाना। रास्ते में बाबू भगवानदासजी से मिले। जौहरी, आबिदअली, बनारसी आदि बनारस से मुगलसराय तक साथ आये। गाड़ी लेट थी।

प्रयाग में जवाहरलालजी मिले। उन्होंने बापू के नाम पत्र व सन्देश दिया। कृपलानी दिल्ली तक साथ आये। खाना-पीना तथा राजनैतिक व अन्य बातें।

कानपुर—डा० जवाहरलालजी, महेन्द्र, सिद्धगोपाल वगैरा मिले।

दिल्ली, ४-८-३७

दिल्ली पहुंचे। हरिजन कालोनी गये। बापू से बातें। बापू ११॥ से १ तक वायसराय से मिले।

श्री रघुवीरसिंह जी (दिल्ली कश्मीरी गेट) के घर भोजन, बातचीत। उनके पिता से ठीक परिचय।

५-३५ की ग्रान्ड ट्रंक से बापूजी के साथ थर्ड में वर्धा रवाना।

स्टेशन पर गाडोदियाजी व श्रीराम अग्रवाल वगैरा आये थे। उन्हें कृपलानी ने 'ये रास्कल्स क्यों आये' यह कहा, सो सुनकर बुरा लगा, दुःख हुआ।

बापू ने वायसराय से जो बातें हुई व उनपर उसका जो असर हुआ, वह बताया।

सरदार नरीमान प्रकरण पर ठीक चर्चा। मैंने दूसरा पक्ष लेकर जो कहना था, सो कहा।

(रेल में), ५-८-३७

बापूजी से सुबह व शाम को बातचीत। विषय ये—

मदालसा, उमा सगाई, डा० बतरा व उनकी पत्नी सेगाव में दो छोटे घर विनोबा सीकर या सेगाव, हरिहर शर्मा, पारनेरकर, सावित्री व विदेशी वस्त्र प्रयोग, कार्यकर्ताओं का अभाव, आश्रम के नियमों का परिणाम

हास्पिटल कमेटी, कमला मेमोरियल का काम करे या नहीं इसपर विचार-विनिमय।

१-८-३७

प्रार्थना। जवाहरलालजी से बातें—डा० महमूद के टेलीफोन के बारे में तथा मिनिस्ट्री की आम कार्य-पद्धति के बारे में।
झण्डावन्दन महम्मद अली पार्क, जवाहर स्क्वायर में राजेन्द्रबाबू के हाथ से हुआ। खादी भण्डार देखा।
कमला मेमोरियल ट्रस्ट की मीटिंग सुबह व रात को देर तक हुई। हिन्दी प्रचार कमेटी का काम १२ से १ तक हुआ। साहित्य सम्मेलन की कार्यकारिणी १ से २॥ तक।
हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थाई समिति २॥ से ३॥ तक। काम ठीक तौर से हुआ। श्री प० अयोध्या सिंह जी उपाध्याय व रामदासजी गौड को मंगलाप्रसाद पुरस्कार, बारह सौ रुपया दिया गया।
जाहिर सभा में गये। ६॥ से ८॥ तक यहां बैठना पड़ा।

प्रयाग, बनारस, २-८-३७

प्रार्थना, थोड़ा घूमना। डा० चन्द्रकान्ता कानपुर गई।
सत्यवती, शियमूर्तिसिंह, इनका जमाई तथा लीलावती रइया वगैरा मिलने आये। डा० जीवराज व भूना बम्बई गये।
जवाहरलाल, राजेन्द्रबाबू व कृपलानी से विचार-विनिमय। वकिंग कमेटी ता० १७-१ को वर्धा में रखना निश्चय हुआ।
म्युनिसिपल बोर्ड का म्यूजियम श्री व्यास ने दिलाया। ठीक था। जवाहरलालजी की सब चीजें यहां पर रखी हैं।
दीनानाथ तिवारी, सुरेन्द्रनारायण, मजुमदार आदि से मिलकर इलाहाबाद सिटी से १२-४० पर रामनरेशजी के साथ बनारस रवाना। पाच बजे के करीब पहुचे। रास्ते म आबिद अली साथ।
बनारस मे हिन्दुस्तान हाउसिंग के बोर्ड की सभा। राजा ज्वाला प्रसाद व श्रीप्रकाशजी आये। देर तक भावी काम के बारे में विचार-विनिमय।
पू० मालवीयजी व गुप्तजी से देर तक बातें।

बनारस, ३-८-३७

रामकृष्ण डालमिया को गया टेलीफोन किया।

मिले—सुचिता कृपलानी, सरोजनी शोरावजी, वि० कृष्णा, चन्द्रकला, किशोरी उनकी बहिन, महादेवलाल भार्गव, श्रीनाथ सिंहजी, चौखमल, गोपाल बजाज आदि आये। बातचीत।

१२-५८ की गाड़ी से दिल्ली के लिए रवाना। रास्ते में बाबू भगवानदासजी से मिले। जौहरी, आबिदअली, बनारसी आदि बनारस से मुगलसराय तक साथ आये। गाड़ी लेट थी।

प्रयाग में जवाहरलालजी मिले। उन्होंने बापू के नाम पत्र व सन्देश दिया। कृपलानी दिल्ली तक साथ आये। खाना-पीना तथा राजनैतिक व अन्य बातें।

कानपुर—डा० जवाहरलालजी, महेन्द्र, सिद्धगोपाल वगैरा मिले।

दिल्ली, ४-८-३७

दिल्ली पहुंचे। हरिजन कालोनी गये। बापू से बातें। बापू ११॥ से १ तक वायसराय से मिले।

श्री रघुवीरसिंह जी (दिल्ली कश्मीरी गेट) के घर भोजन, बातचीत। उनके पिता से ठीक परिचय।

५-३५ की ग्रान्ड ट्रंक से बापूजी के साथ थर्ड में वर्धा रवाना।

स्टेशन पर गाडोदियाजी व श्रीराम अग्रवाल वगैरा आये थे। उन्हें कृपलानी ने 'ये रास्कल्स क्यों आये' यह कहा, सो सुनकर बुरा लगा, दु:ख हुआ।

बापू ने वायसराय से जो बातें हुईं व उनपर उसका जो असर हुआ, वह बताया।

सरदार नरीमान प्रकरण पर ठीक चर्चा। मैंने दूसरा पक्ष लेकर जो कहना था, सो कहा।

(रेल में), ५-८-३७

बापूजी से सुबह व शाम को बातचीत। विषय थे—

मदालसा, उमा सगाई, डा० बतरा व उनकी पत्नी सेगाव में दो छोटे घर, विनोबा सीकर या सेगाव, हरिहर शर्मा, पारनेरकर, सावित्री व विदेशी वस्त्र प्रयोग, कार्यकर्ताओं का अभाव, आश्रम के नियमों का परिणाम,

मनुष्य की कमजोरी, बापू का भावी प्रोग्राम, आदि-आदि।
नागपुर-वृद्धिचन्दजी पोद्दार, गिरधारी कृपलानी, द्वारकादास भय्या आदि आये।
जमीन मकानों आदि की बातें।
वर्धा पहुचे। वर्षा थी। बगले पर बापू थोड़ी देर ठहरे। बाद मे सेगांव गये।
चि० नर्मदा का पत्र पढ़ा, विचार व दुःख हुआ। पत्र बम्बई जानकी देवी या कमल के पास भेजने का विचार।

वर्धा, ६-८-३७

प्रार्थना। आश्रम गये। हरिभाऊजी के स्वसुर (भगीरथी बहन के पिता) से मिलना, परिचय। साथ मे भोजन।
चि० वासन्ती के स्वास्थ्य का प्रश्न, उससे बातचीत। मानसिक हालत समझी।
पत्र-व्यवहार। चर्खा।
ज्योत्सना व उसकी मित्र आई—भोजन, बातें।
जाजूजी से व बाद में चिरंजीलाल से बातें।

७-८-३७

पू० विनोबा से विचार-विनिमय देर तक। ठीक विचार।
राजकुमारी अमृतकौर भी बम्बई से आई और सेगाव गई।
सेनापति बापट मिले।
बाबा सा० देशमुख व दादा से नागपुर प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के बारे मे बातें।
बापूजी का व विनोबा का पत्र पारनेरकर-रामेश्वरदास के बारे मे देखा।
बाद मे बापू के नाम का पत्र लिखकर सेगाव भेजने को दिया।
जानकी देवी को बगले पर रहने को समझाया। फिकर रही।

८-८-३७

श्री एन्ड्रूज बम्बई से आये, सेगाँव गये-आये।
अभ्यंकर मेमोरियल की सभा वर्धा में हुई। देर तक चर्चा, विचार-विनिमय वगैरा होता रहा। डा० सोनक व ट्रस्ट डीड पर ही अधिक समय गया।
नागपुर प्रान्तीय सभा के बारे मे कुछ सदस्यो ने अपने विचार कहे।

९-८-३७

घूमना, नालवाड़ी तक। जानकी साथ में। विनोबा के साथ बातें। डा० खरे आज नहीं आ सके।

दाण्डेकर, अवुलकर अवारी से देर तक बातचीत। काकासाहब व राधाकृष्ण से बातें।

आन्डमन के राजनैतिक कैदियों के बारे में विरोध-सभा, टाउन हाल में, मेरे सभापतित्व में हुई।

श्री एन्ड्रूज मुख्य वक्ता थे। सेनापति बापट भी हाजिर थे।

चि० सावित्री का आज जन्म-दिन था। ये लोग पवनार हो आये। दालबाटी चूर्मा की रसोई घर पर बनी थी।

श्रीमन्नारायण ने अपनी कविता 'रोटी की राग' रात को थोड़ी देर पढ़कर सुनाई।

१०-८-३७

महिला आश्रम जाकर वासन्ती को देखा। उसे प्रयाग का पत्र दिखाया, समझाया। ज्वर कम होने पर नागपुर जाने का निश्चय। आशाबहन व भागीरथीबहन से बातें—वासन्ती के बारे में।

श्रीकृष्ण प्रेस को बढ़ाने के बारे में काकासाहब, जाजूजी, पूनमचन्द, कालूराम, आदि के साथ विचार-विनिमय।

पद्मावती (कर्नाटक) मिलने आई। भावी प्रोग्राम के बारे में विचार-विनिमय।

श्री रविशंकर शुक्ल मिनिस्टर, शिक्षा विभाग, बापूजी से मिलने बातचीत, विचार-विनिमय, विनोद।

डा० खरे व पटवर्धन नागपुर से खास मिलने आये। डा० खरे का कहना हुआ कि मैंने जो पत्र लिखा है, उसे मैं वापस ले लूं। उन्होंने अपना दुःख व क्षमा आदि की बातें की, और कहा कि मुझे प्रान्त की जिम्मेदारी ले लेनी चाहिए, आदि। बहुत देर तक विचार व खुलासा। मैंने अपना दुःख फिर से कहा।

बाबा सा० देशमुख (विदर्भ वालों ने यह व्यवस्था कराई थी। सब मिलाकर

भोजन, विनोद बातें।

११-८-३७

साली की वर्षगांठ घर पर। सुबह उसे व कुछ और लोगों को भोजन करने बुलाया।

श्री आर्यनायकम्, श्रीमन, आशावहन से नवभारत विद्यालय के बारे में देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

बैरिस्टर गोविन्दराव देशमुख आये। अभ्यंकर मेमोरियल का ट्रस्ट डीड तैयार हुआ।

अभ्यंकर मेमोरियल की भी मीटिंग शाम को हुई। ट्रस्ट डीड पास हुआ। डा० सोनक ने अपना त्यागपत्र वापस लिया। सब लोगों के साथ भोजन। नागपुर प्रान्तीय कमेटी के बारे में श्री दाण्डेकर, अबुलकर, पूनमचन्द, छगनलाल से विचार-विनिमय।

१२-८-३७

पूनमचन्द रांका से घर-गृहस्थी की बातें।

गौरीलालजी को क्षय का दूसरा स्टेज हो गया, यह सुना। वहां गये, सब हालत जानी।

काकासाहब, सत्यनारायण, श्रीमन से हिन्दी-प्रचार के सम्बन्ध में बातचीत। श्री दुर्गाशंकर मेहता (मिनिस्टर फायनन्स), श्री गोले (मिनिस्टर आबकारी व रेवेन्यू) आये। बातें।

शाम को 'सावधान-केस' के कागजात देखे, विचार-विनिमय।

१३-८-३७

सरदार वल्लभभाई, बी०एफ० भरुचा मेल से आये। सेगांव गये।

सरदार से भोजन के समय बातें।

'सावधान'-केस के कागजात सुबह पढ़े। १२ से ४॥ तक सावधान का क्रास एक्जामिनेशन चला, पाण्डे ने क्रास किया।

... याभाई व पमाभाई के साथ घूमते हुए बातें।

१४-८-३७

... न गये। जवाहरलाल वगैरा आदि आये।

... ग कमेटी ६ से ११॥ व शाम को १॥ से ६॥ तक हुई। बापू भी हाजिर

थे।
अष्टमान दिन। गांधी चौक मे सभा। जवाहरलाल नेहरू, पटवर्धन, जयप्रकाश, चौयथराम बोले।

१५-८-३७

श्री खरे व गुलजारीलाल के साथ पैदल बातचीत करते हुए सेगाव के रास्ते जाना व वापस। पू० बापू से व खरे से बातचीत।
वर्किंग कमेटी सुबह ८ से ११। व शाम को २-६॥ तक हुई।
श्रीकृष्णबाबू व खरे वगैरा आज गये।

१६-८-३७

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से ११। व दोपहर को २ से ७ तक हुई।
भूलाभाई, दास, वगैरा आज सुबह गये।
शाम को जवाहरलाल, मौलाना आजाद वगैरा के साथ पवनार घूमने गये। स्थान व मकान पसन्द आया।
शांति प्रसाद जैन से बनारस बैंक, सीमेन्ट फैक्टरी, सी० पी० वच्छराज कम्पनी के शेयर, प्रभात की सगाई वगैरा के बारे मे विचार-विनिमय। गन्ने के भाव व इण्डस्ट्री की चर्चा।

१७-८-३७

बापू ७॥ बजे आये। डा० चौयथराम से बातें खान साहब तथा सिन्ध योजना के बारे में। वर्किंग कमेटी का काम सुबह ८ से ११॥ तक व २ से ६॥ तक हुआ। बापू पाच बजे तक हाजिर रहे।
शांति प्रसाद जैन से बातें। वह आज गया।
नागपुर मे आज रात्रि के १ बजे कुन्दनलाल गाधी की मृत्यु २३ वर्ष की उमर मे हुई। उसकी मृत्यु के समाचार सुनकर दुख हुआ। गौरी, मूलचन्दजी बागड़ी की लड़की से उसका विवाह हुआ था। इस लड़के से बहुत ज्यादा आशा की गयी थी।

१८-८-३७

प्रार्थना। बापू आये। चवडे महाराज से बातें।
बापू से देव की सरदार-नरीमान प्रकरण के बारे मे मेरे सामने बातें।
महाराष्ट्र-हिन्दी-प्रचार योजना।

बापू ने सरदार से व मुझसे मंत्रीमण्डल-प्रकरण के बारे में बात की। सरदार को बहुत चोट पहुंची, दुःख हुआ। रात को दो-अढ़ाई घंटे उनके पास रहे देश के साथ बातचीत।
जयप्रकाशजी वगैरा आज बम्बई गये। राजाजी मद्रास गये।

१९-८-३७

गंगाधरराव देशपाण्डे व स्वामी आनंद का आया पत्र व उन्हें लिखा हुआ जवाब दोनों सरदार वल्लभभाई को दिये—बापूजी को देने के लिए।
खान अब्दुल गफ्फार खान, डा० चोयथराम ग्राण्ड ट्रंक में करांची गये।
कमल मदालसा को लाने मैनपुरी गया। सावित्री आज ठीक मालूम हुई, बुखार नहीं आया।
सेगांव-बापू से बातें। सरदार बम्बई गये। वर्षा आदि जोरों की आई।
सावित्री के पास शंकरलाल बैंकर के साथ भोजन, बातें, ब्रिज।

२०-८-३७

शंकरलाल बैंकर आज लखनऊ गये।
वच्छराज जमनालाल की मीटिंग हुई।
खेती-कम्पनी के बोर्ड की व साधारण सभाएं हुईं।
पत्र-व्यवहार। मथुरादासजी मोहता से बातें।
नवभारत विद्यालय व मण्डल की कार्यकारिणी सभा, ब्रिजलालजी व मथुरादासजी मोहता से उस सम्बन्ध में बातचीत।

२१-८-३७

महिला आश्रम की सभा ८॥ से १०॥ तक हुई।
डा० गिल्डर व गुलजारीलाल नन्दा बम्बई से आये। बापू का ब्लड प्रेशर ज्यादा—२०० के करीब बताया। चिन्ता, विचार-विनिमय। डा० गिल्डर ने एक छोटा सा स्टेटमेन्ट दिया। वह बम्बई गये।
महिला आश्रम में भोजन, भागीरथीबहन के घर, वहां राखी बंधवाई। आशाबहन, मीराबहन, गुलाबबाई ने भी राखी बांधी। सुव्रता बहन व भाग्यवती व केशर की राखी भी बांधी।

वर्धा-नागपुर-वर्धा, २२-८-३७

आश्रम की बहनें व घर के लोग पवनार गये। वहीं दाल-बाटी,

चूरमा का भोजन, ग्रेन वगैरा।
गिरधारी व जानकी देवी के साथ नागपुर। इजीनियर अम्बरकर से बात-चीत।
वर्धा आये। वर्षा हो रही थी। गुलाब, राधाकृष्ण, जानकी से बातचीत। जल्दी सोया।

२३-८-३७

चि० राधाकृष्ण रइया बम्बई से आया।
शाम को थ्रान्ड ट्रक से रघुवीर सिंहजी दिल्ली वाले सपरिवार आये। उनकी व्यवस्था।

२४-८-३७

मौलाना आजाद बम्बई से आये। निर्मला गांधी भी आयी। शंकरलाल बैंकर लखनऊ से आये और ग्रान्ड ट्रक से मद्रास गये।
चि० राधाकृष्ण रइया व रीता से करीब दो घंटे बातचीत, जान-पहिचान, रीता सुशील व प्रेमल लडकी मालूम हुई।
नवभारत विद्यालय में श्रीमन व मदालसा के विवाह-निमित्त सम्मेलन, भोज। वहा सब गये। मौलाना ठीक बोले।
चि० पन्ना कलकत्ता से बम्बई गई। यहा उतर नही सकी। विचार व दुःख हुआ।
रघुवीर सिंहजी (दिल्लीवाले) उनकी मौसी सुशीला देवी व उनकी स्त्री प्रेम से बातें।
खानचन्द व पूनमचन्द से खादी फैक्टरी के बारे मे बातचीत।

२५-८-३७

मौलाना आजाद कलकत्ता गये।
वासन्ती के मित्र सुबोध कुमार राय भी आज इलाहाबाद गये। अरुण भी गया।
दामोदर को ज्वर कम हुआ। पत्र-व्यवहार देखा।
श्री रघुवीर सिंहजी, प्रेमदेवी व सुशीलादेवी से बातें।
नागपुर से सरदार भगवन्तसिंह, शोभासिंह श्रीरघुवीर सिंहजी से मिलने आये। उनकी पत्नी व साली साथ में थी।

चि० मदालसा व गोवर्धन से पत्र-व्यवहार का काम लिया।
चि० रीता व राधाकृष्ण के साथ घूमे। बातचीत।

२६-८-३७

आज मारवाड़ी शिक्षा मण्डल का चन्दा व मेम्बर बनाना शुरू किया।
जानकी देवी से पांच सौ रुपये मंगवाये।
पत्र-व्यवहार, चिरंजीलाल बड़जाते, पूनमचन्द रांका से बातें। चि० राधाकृष्ण रुइया के बारे में सुव्रता बहन को खुलासेवार पत्र।
चि० रीता व राधाकृष्ण के साथ पवनार गये। ठीक बातें। दोनों ने अपनी प्रसन्नतापूर्वक पूर्ण तैयारी दिसम्बर की बतलाई। श्री घनश्याम सिंहजी, सुशीला देवी, प्रेम देवी, उमा भी वहां आये। वहीं भोजन, बातचीत, विनोद। छगनलाल भारुका भी वहीं मिलने आया। तात्याजी देशमुख से मंदिर के बारे में व्यवस्था संबंधी बातें।
वापस रात में वर्धा आये।

२७-८-३७

सेगांव गये। बापूजी से हंसी व विनोद की बातें। बापू ने छोटे अंगूर खाना स्वीकार कर लिया। राधाकृष्ण रुइया व रीता का परिचय, विनोद। बापू ने शारदा की बात की। पूना व बम्बई जाने का प्रोग्राम बताया। भोजन, आराम, पत्र-व्यवहार।
शिवराजजी, तेजराम, भय्याजी, पूनमचन्द, चिरंजीलाल, देवचन्द वगैरा कांग्रेस के बारे में बात करने आये। विचार-विनिमय।
नालवाड़ी गये। विनोबा से उनके स्वास्थ्य के बारे में बातचीत। स्वास्थ्य ठीक नहीं मालूम हुआ। राधाकृष्ण रुइया व रीता का परिचय। वहां से टेकड़ी पर घूमने गये।
काकासाहब से हीरालालभाई, हिन्दी-प्रचार, भारतीय साहित्य आदि के बारे में देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

२८-८-३७

घूमते हुए मगनवाड़ी गये। रीता-राधाकृष्ण को सब दिखाया। महादेवभाई, दुर्गाबहन, जे० सी० कुमारप्पा, सीतादेवी आदि से मिले। भार घर देखकर खुशी हुई।

मेल से पूना के लिए रवाना-थर्ड में। श्री रघुवीर सिंह, प्रेमदेवी, सुशीलादेवी रीता, राधाकृष्ण इत्या साथ में।

दादर-पूना, २९-८-३७

कल्याण में श्री रघुवीरसिंहजी, राधाकृष्ण, रीता, सुशीलादेवी, प्रेमदेवी वगैरा उतर गये।

दादर में केशवदेवजी, मुकन्दलाल, जमनादासभाई, प्रह्लाद, फतेचन्द, गंगाबिसन, नर्मदा, राजकुमारजी वगैरा मिले। बातचीत।

दादर से पूना एक्सप्रेस से वापस पूना के लिए रवाना। केशवदेवजी साथ में। कल्याण में सब लोग साथ हो गये।

ना-मुव्रताबहन से बातें। स्नान, भोजन।

ीता व कमला को साथ लेकर आये।

केकाभाई व लेडी लीला बहन आदि से देर तक बातचीत। माणकलाल व ीराबहन से मिलना। बातें, किशोर के बारे में व रमेश की मृत्यु के बारे ं।

३०-८-३७

केशवदेवजी श्रीकृष्ण से मिले। खड्डूभाई के साथ मंगलदास पकवासा व मावलंकर से मिलना।

रीता, रघुवीर सिंहजी, मदन, राधाकृष्ण, प्रेमबहन, सुशीलादेवी वगैरा से बातचीत। मुव्रतादेवी की शंकाओं का समाधान।

रीता व राधाकृष्ण की सगाई का नेगचार करके सगाई पक्की हुई।

गंगाधरराव देशपाण्डे के साथ कौंसिल में गये। कई मित्र मिले। कौंसिल की कार्यवाई देखी। शंकरलाल बैंकर से बातें।

पूना-घोंड नदी, ३१-८-३७

फिरोदिया व नगीनदास मास्टर मिले। बाद में मावलंकर व मंगलदास पकवासा मिलने आये। देर तक बातचीत।

घोंड़नदी—पूना से ४२ मील पर सावरगांव के पास—गये। चि० राधाकृष्ण रीता साथ में। श्री मोतीलालजी सारडा के घर चि० मीरा व उसकी मां से मिले। वहीं पर भोजन। इकट्ठा हुए लोगों को कांग्रेस मेम्बर होने को कहा।

चि० मदालसा व गोवर्धन से पत्र-व्यवहार का काम लिया।
चि० रीता व राधाकृष्ण के साथ घूमे। बातचीत।

२६-८-३७

आज मारवाड़ी शिक्षा मण्डल का चन्दा व मेम्बर बनाना शुरु किया। जानकी देवी से पाच सौ रुपये मंगवाये।
पत्र-व्यवहार, चिरंजीलाल बडजाते, पूनमचन्द रांका से बातें। चि० राधाकृष्ण रुइया के बारे मे सुव्रता बहन को खुलासेवार पत्र।
चि० रीता व राधाकृष्ण के साथ पवनार गये। ठीक बातें। दोनो ने अपनी प्रसन्नतापूर्वक पूर्ण तैयारी दिसम्बर की बतलाई। श्री घनश्याम सिहजी, सुशीला देवी, प्रेम देवी, उमा भी वहा आये। वही भोजन, बातचीत, विनोद। छगनलाल भारुका भी वही मिलने आया। तात्याजी देशमुख से मदिर के बारे मे व्यवस्था सबधी बातें।
वापस रात में वर्धा आये।

२७-८-३७

सेगाव गये। बापूजी से हसी व विनोद की बातें। बापू ने छोटे अगूर खाना स्वीकार कर लिया। राधाकृष्ण रुइया व रीता का परिचय, विनोद। बापू ने शारदा की बात की। पूना व बम्बई जाने का प्रोग्राम बताया। भोजन, आराम, पत्र-व्यवहार।
शिवराजजी, तेजराम, भय्याजी, पूनमचन्द, चिरंजीलाल, देवचन्द वगैरा कांग्रेस के बारे मे बात करने आये। विचार-विनिमय।
नालवाड़ी गये। विनोबा से उनके स्वास्थ्य के बारे मे बातचीत। स्वास्थ्य ठीक नही मालूम हुआ। राधाकृष्ण रुइया व रीता का परिचय। वहां से टेकड़ी पर घूमने गये।
काकासाहब से हीरालालभाई, हिन्दी-प्रचार, भारतीय साहित्य आदि के बारे में देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

२८-८-३७

घूमते हुए मगनवाडी गये। रीता-राधाकृष्ण को सब दिखाया। महादेवभाई, दुर्गाबहन, जे० सी० कुमारप्पा, सीतादेवी आदि से मिले। भारतनं का घर देखकर खुशी हुई।

का इन्तजाम करना भूल गये थे सो आज किया। फलाहार।
केशवदेवजी, मुकन्दलाल, जमनादास गांधी आदि से मुकन्द आयर्न व वेग के बारे में बातचीत-खुलासा।
मदन पित्ती से अहमदाबाद के बारे में खुलासा।
चि० नर्मदा, मधिरा, शार्दूला, मग्दिम से मिलना। शान्ताक्रुज का अपना नया मकान व शार्दूला का बंगला देखा।
गौरीशंकरभाई, केशर, पन्ना, ब्रिजमोहन बिड़ला आदि से भी मिले।

३-९-३७

चि० धन्नू से बातें, घूमना। मोंघी बहन हीरालाल शाह मिलने आई। उसने अपनी स्थिति कही। बाद में दिनशा पेटिट सालिसिटर व मिट्ठूबहन पेटिट मिलने आये।
खुर्शेदबहन से कमला मेमोरियल के बारे में बातचीत। ब्रिजमोहन बिड़ला व रामेश्वरदासजी से बातचीत—माणिकजी पेटिट की जमीन व अन्य बातें।
बच्छराज कंपनी व हाउसिंग के शेअर के बारे में भी बातें।
बच्छराज कम्पनी व बच्छराज फैक्टरी की बोर्ड मीटिंगें हुईं।
मंगलदास पकवासा, रामनारायण पोद्दार, अमोलकचन्द चतुर्भुजजी, रामेश्वर, सुशीला, शान्ताबहन, भाग्यवती आदि से मिलना।
रात को ९-५ की नागपुर-एक्सप्रेस से वर्धा रवाना। चि० गंगाविसन व श्रीकृष्ण साथ में।

भुसावल-अकोला वर्धा, ४-९-३७

रास्ते में चि० श्रीकृष्ण नेवटिया से उसके भावी प्रोग्राम, व्यापार व सगाई-विवाह, गोद आदि के बारे में विचार जाने। मेरी राय कही। बनारस के सम्बन्ध का विचार।
चि० गंगाविसन बजाज से जीन प्रेस, बच्छराज फैक्ट्री, जावरा जीन व मोरशी प्रेस की जमीन बेचने के बारे में तथा लोकल कमेटी (बोर्ड) के जरिये फैक्ट्री का काम करने का निश्चय, विचार-विनिमय।
बडनेरा से चि० पार्वती, छुट्टी के कारण, बिना सूचना के साथ आई।
अकोला से कोटेपूर्णा स्टेशन तक चि० तारा व सुशीला साथ आई। तारा

मैंने ग्यारसी व सुशीला की घर की स्थिति समझी।
वर्धा पहुंचे।

वर्धा, ५-९-३७

चि० श्रीकृष्ण नेवटिया, मदालसा, श्रीमन, काकासाहब, नाना आठवले साथ में। बापू खूब थके हुए मालूम हुए।
ब्लड प्रेशर १६५-१०५ था। पल्स भी ठीक थी, तथापि थकावट खूब थी। आते समय रेंगी में आये।
सावधान केस के कागजात वगैरा देखे। आशाराम राठी यहां काम सीखने आया।

६-९-३७

सावधान केस के कागज देखे। कोर्ट में १२ बजे गये तो आरोपी की ओर से बीमारी का सर्टिफिकेट (प्रमाणपत्र) पेश हुआ। ता० २२ व २३ मुकर्रर हुई।
श्री मथुरादास मोहता से उनके कारखाने में मिले—चिरजीलाल बड़जाते साथ में। खासकर मारवाड़ी शिक्षा मण्डल व नवभारत विद्यालय की सहायता के बारे में बहुत देर तक बातचीत। मैंने उन्हें कहा कि ५ वर्ष तक दस-दस हजार की जिम्मेवारी आप ले लें। जब उनका इतना उत्साह नहीं दिखा तो कहा कि पांच हजार साल की जिम्मेवारी आप ले लें व पांच की मैं लूं। आखिर फिलहाल तो उन्होंने इस वर्ष से दो हजार सालाना पांच वर्ष तक देने का निश्चय किया है, ज्यादा के लिए बाद में विचार करने का निश्चय हुआ।

७-९-३७

बहुत से पत्रों का जवाब आज चला गया।
अभ्यंकर ट्रस्ट डीड के लिए स्पेशल पावर रजिस्टर कराकर दाण्डेकर के नाम नागपुर भेजा।

वर्धा-नागपुर, ८-९-३७

चि० गंगाबिसन व श्रीकृष्ण वगैरा के साथ नागपुर वृद्धिचन्दजी पोद्दार, पुलगांव मिल, नागपुर-वर्धा जीन प्रेस व नागपुर जमीन वगैरा की बातचीत।
... लिए रुपयों की व्यवस्था नहीं हो सकेगी, यह कह दिया। छगनलाल

संस्था को शायद मार्टगेज रखने के बारे में बातचीत। कानूनी अड़चन न हो तो रखने का निश्चय। ६॥। टका ब्याज, साल में दो बार आठ किस्त आदि। गिरधारी के साथ हिन्दुस्तान हाउसिंग की ऑफिस देखी। काम थोड़ा समझा। खर्चा ज्यादा बढ़ा रहा है, उसे मामूली सूचना। रामेश्वर अग्रवाल के घर चि० शान्ता वगैरा से मिलना। डा० खरे से मिलना।
जवाहरलाल व इन्दिरा को लेकर मोटर से वर्धा रवाना। पवनार में यमुना कुटी इन्दिरा को दिखाई, व्याख्यान हुआ।
वर्धा—मंत्री के साथ भोजन हिन्दी, उर्दू, प्रायमर आदि पर विचार-विनिमय।
महादेवभाई ने सेगांव की चिंता दूर की। टूर की रिपोर्ट दी।

वर्धा-सेगांव, ९-९-३७

पं० जवाहरलाल नेहरू व चि० इन्दिरा के साथ नाश्ता। ७॥ बजे सुबह त्र्यंबक की मोटर से सेगांव गये। वहीं २॥। बजे तक रहे। बापू कमजोर मालूम हुए। वहां का वातावरण ठीक करने का प्रयत्न। प्यारेलाल का आज सातवां उपवास था। उसमें देर तक बात करके उपवास छुड़वाया। एक बार नानावटी को मैनेजर मुकर्रर किया। बापू से व अन्य लोगों से बातचीत।
जवाहरलाल व इन्दु वापस आते समय थोड़ी दूर तक बैलगाड़ी में घर वापस आये।
चाय-पार्टी में थोड़े मित्र भी आये थे। बिहार का फैसला उन्हें दिखाया। दोनों को ठीक नहीं मालूम हुआ।
जवाहरलाल, इन्दु को मगनवाड़ी दिखाते हुये स्टेशन। मेल से वे बम्बई गये, थर्ड क्लास से।
अवारी से देर तक बातचीत। उसे कह दिया, पचास की और सहायता देकर अब मेरा सम्बन्ध नहीं रहेगा।

१०-९-३७

चि० श्रीकृष्ण की सगाई के बारे में बातचीत, विचार-विनिमय।
श्री मोहनलाल टिबड़ेवाला व जबलपुरवाले आये। देर तक बातचीत करते रहे। उन्हें समझाया कि जब झूठा मुकदमा है, तो तुम्हें घबराने का

के स्वास्थ्य व मुनीमों की पद की स्थिति समझी।
वर्धा पहुंचे।

वर्धा, ५-९-३७

चि० श्रीकृष्ण नेवटिया, मदालसा, ओम, बालासाहब, नाना आठ
साथ थे। बापू खूब खुश हुए मालूम हुए।
ब्लड प्रेशर १९२-१०२ था। रक्त भी ठीक थी, तथापि ब्लड प्रे
थी। बाते समय देरी से आये।
सावधान बेंक के कागजात वगैरा देखे। आसाराम राठी यहां काम सीख
आता।

६-९-३७

सावधान बेंक के कागजात देखे। कोर्ट में १२ बजे गये तो आरोपी की ओ
से बीमारी का सार्टिफिकेट (प्रमाणपत्र) पेश हुआ। ता० २२ व २
मुकर्रर हुई।
श्री मथुरादास मोहता से उनके कारखाने में मिले—चिरंजीलाल बड़जा
साथ थे। व्यापारी मारवाड़ी शिक्षा मण्डल व नवभारत विद्यालय की
सहायता के बारे में बहुत देर तक बातचीत। मैंने उन्हें कहा कि ५ वर्ष तक
दस-दस हजार की जिम्मेवारी आप ले लें। जब उनका इतना उत्साह
नहीं दिखा तो कहा कि पांच हजार साल की जिम्मेवारी आप ले लें व पांच
की मैं लूं। आखिर फिलहाल तो उन्होंने इस वर्ष से दो हजार सालाना
पांच वर्ष तक देने का निश्चय किया है, ज्यादा के लिए बाद में विचार
करने का निश्चय हुआ।

७-९-३७

बहुत से पत्रों का जवाब आज चला गया।
अभ्यंकर ट्रस्ट डीड के लिए स्पेशल पावर रजिस्टर कराकर दाण्डेकर के
नाम नागपुर भेजा।

वर्धा-नागपुर, ८-९-३७

चि० गंगाविसन व श्रीकृष्ण वगैरा के साथ नागपुर बृद्धिचन्दजी पोद्दार,
पुलगांव मिल, नागपुर-वर्धा जीन प्रेस व नागपुर जमीन वगैरा की बातचीत।
मकान के लिए रुपयों की व्यवस्था नहीं हो सकेगी, यह कह दिया। छगनलाल

के स्वास्थ्य व सुशीला की घर की स्थिति समझी।
वर्धा पहुंचे।

वर्धा, ५-९-३७

चि० श्रीकृष्ण नेवटिया, मदालसा, श्रीमन, काकासाहब, नाना आठवले साथ में। बापू खूब थके हुए मालूम हुए।
ब्लड प्रेशर १६५-१०५ था। पल्स भी ठीक थी, तथापि थकावट खूब थी। आते समय रेंगी में आये।
सावधान केस के कागजात वगैरा देखे। आशाराम राठी यहां काम सीखने आया।

६-९-३७

सावधान केस के कागज देखे। कोर्ट में १२ बजे गये तो आरोपी की ओर से बीमारी का सार्टिफिकेट (प्रमाणपत्र) पेश हुआ। ता० २२ व २३ मुकर्रर हुई।
श्री मथुरादास मोहता से उनके कारखाने में मिले—चिरंजीलाल बड़जाते साथ में। खासकर मारवाड़ी शिक्षा मण्डल व नवभारत विद्यालय की सहायता के बारे में बहुत देर तक बातचीत। मैंने उन्हें कहा कि ५ वर्ष तक दस-दस हजार की जिम्मेवारी आप ले लें। जब उनका इतना उत्साह नहीं दिखा तो कहा कि पांच हजार साल की जिम्मेवारी आप ले लें व पांच की मैं लूं। आखिर फिलहाल तो उन्होंने इस वर्ष में दो हजार सालाना पांच वर्ष तक देने का निश्चय किया है, ज्यादा के लिए बाद में विचार करने का निश्चय हुआ।

७-९-३७

बहुत से पत्रों का जवाब आज चला गया।
अभ्यंकर ट्रस्ट डीड के लिए स्पेशल पावर रजिस्टर कराकर दामोदर के नाम नागपुर भेजा।

वर्धा-नागपुर, ८-९-३७

चि० गंगाबिसन व श्रीकृष्ण वगैरा के साथ नागपुर। बृजलालजी पोद्दार, पुलगांव मिल, नागपुर-वर्धा जीन प्रेस व नागपुर जमीन वगैरा की बातचीत। मकान के लिए रुपयों की व्यवस्था नहीं हो सकेगी, यह कह दिया। [illegible]

के स्वास्थ्य व सुशीला की घर की स्थिति समझी।
वर्धा पहुंचे।

वर्धा, ५-९-३७

चि० श्रीकृष्ण नेवटिया, मदालसा, श्रीमन, काकासाहब, नाना आठवले साथ में। बापू खूब थके हुए मालूम हुए।
ब्लड प्रेशर १६५-१०५ था। पल्स भी ठीक थी, तथापि थकावट खूब थी। आते समय रेंगी में आये।
सावधान केस के कागजात वगैरा देखे। आशाराम राठी यहां काम सीखने आया।

६-९-३७

सावधान केस के कागज देखे। कोर्ट में १२ बजे गये तो आरोपी की ओर से बीमारी का सार्टिफिकेट (प्रमाणपत्र) पेश हुआ। ता० २२ व २३ मुकर्रर हुई।
श्री मथुरादास मोहता से उनके कारखाने में मिले—चिरंजीलाल बड़जाते साथ में। खासकर मारवाड़ी शिक्षा मण्डल व नवभारत विद्यालय की सहायता के बारे में बहुत देर तक बातचीत। मैंने उन्हें कहा कि ५ वर्ष तक दस-दस हजार की जिम्मेवारी आप ले लें। जब उनका इतना उत्साह नहीं दिखा तो कहा कि पांच हजार साल की जिम्मेवारी आप ले लें व पांच की मैं लूं। आखिर फिलहाल तो उन्होंने इस वर्ष से दो हजार सालाना पांच वर्ष तक देने का निश्चय किया है, ज्यादा के लिए बाद में विचार करने का निश्चय हुआ।

७-९-३७

बहुत से पत्रों का जवाब आज चला गया।
अभ्यंकर ट्रस्ट डीड के लिए स्पेशल पावर रजिस्टर कराकर दाण्डेकर के नाम नागपुर भेजा।

वर्धा-नागपुर, ८-९-३७

चि० गंगाविसन व श्रीकृष्ण वगैरा के साथ नागपुर वृद्धिचन्दजी पोद्दार, पुलगांव मिल, नागपुर-वर्धा जीन प्रेस व नागपुर जमीन वगैरा की बातचीत। मकान के लिए रुपयों की व्यवस्था नहीं हो सकेगी, यह कह दिया। छगनलाल

बातचीत।
चि० कमल व सावित्री कलकत्ता से मेल से आये। दादा के यहाँ गणपति के आगे बालकों का अभिनय।

११-९-३७

बच्छराज जमनालाल के काम की सभा दुकान पर ९ से ११ तक। पूनमचन्द, चिरंजीलाल, जगन्नाथ मिश्र थे। जमनालाल सन्स का मेमोरेन्डम व आर्टिकल्स देखे। काम ज्यादा लिया।
हैदराबाद से अकबर हुसैन व हरदोई से उनकी बीबी हमिदा आये।
सेगांव डा० नर्मदा प्रसाद श्रीवास्तव सिविल सर्जन साथ में। बापू का ब्लड प्रेशर १६५ + ११० था। तबीयत थोड़ी ठीक मालूम हुई।
श्री नानाभाई (भावनगर वाले) से बातचीत, वह मेल से गये।

१२-९-३७

बच्छराज जमनालाल की सभा। ट्रस्टेट जमनालाल सन्स में ट्रान्सफर करने के बारे में करीब अढ़ाई घंटे काम हुआ।
चि० कमल, जानकीदेवी, कमला, उमा वगैरा भी थे। चि० गंगाबिसन, पूनमचन्द व थोड़ी देर सावित्री भी थी।
भोजन, आराम, पत्र-व्यवहार। कुमारप्पा से चन्दा के बारे में देर तक बातचीत। उन्होंने ग्यानचन्द की कमियाँ बताईं। वह पहले से जानते थे, यह भी उन्होंने कहा।
श्री गौरीलालजी बजाज को देखने गये। नर्मदाप्रसाद सिविल सर्जन भी आये थे। स्वास्थ्य की हालत ठीक नहीं मालूम हुई।
किशोरलाल भाई मश्रूवाला व गोमतीबहन से देर तक बातचीत। नरीमान-प्रकरण के बारे में उन्होंने पूछा।

वर्धा-नागपुर, २१-९-३७

६॥ बजे मोटर से नागपुर रवाना। जयप्रकाशनारायण, करंदीकर, देवीदयाल तिवारी साथ में। डा० खरे के साथ गोंड हरिजन छात्रालय के समारंभ में गये। सभापति की हैसियत से उद्घाटन किया। डा० खरे से गवर्नर पार्टी, प्रान्तीय सभा, सरोजनी, अभ्यंकर आदि की बातें।

बाटलीवाला, मैनेजर एम्प्रेसमिल, से मिलना। बातचीत।

छगनलाल भारका के घर भोजन। विद्यार्थियों से बातचीत। दाण्डेकर के घर शारदा से मिलना।

४॥ बजे वापस वर्धा आये। सालवेजी साथ में। सावधान-केस की तैयारी।

वर्धा, २२-९-३७

सोतीबाई नागपुर मेल से गई। उसे मकान के बारे में कह दिया। हिन्दुस्तान हाउसिंग कम्पनी के कानून मुजब कर्ज लेकर बनाना हो तो बनाओ, परन्तु इतना कर्जा लेकर मकान बनाना ठीक नहीं रहेगा। आश्रम देखा। मोहनदेवी की मां की मृत्यु हुई। उससे मिलना। वीना को देखा। भागीरथी-बहन व आशाबहन से बातें।

बम्बई से—कु० हमीदा तैयबजी व प्रबोध आये। शंकरलाल बैंकर के सामने स्थिति समझी—सुबह व रात को भी।

नागपुर प्रांतीय कांग्रेस का सभापति मुझे सर्वानुमति से चुना, यह सूचना मिली।

सुबह सावधान-केस के थोड़े कागजात देखे। चर्चा। कोर्ट में १२ से ४॥ तक सावधान-केस में मेरी खास एक्जामिनेशन पूरी हुई। तारीख आगे की रखी गई। मुझे मुक्त किया गया।

सेगांव—डा० नर्मदा प्रसाद महादेवभाई के साथ पारनेकर व चिमनलाल भाई को टाइफाइड का सन्देह।

बापू से बातें—नागपुर प्रान्तीय सभापति बनाया गया। बापू ने लगड़े की तैयारी रखने को कहा, समग्र शिक्षण, क्रान्तिकारी लोगों की व्यवस्था, हमीदा का प्रश्न आदि बातें।

२३-९-३७

आश्रम। भागीरथीबहन, वीना, शरद आदि को देखा। श्रीमन, सरलाबहन

अच्छी खबर सुनाई।
शंकरलाल बैंकर बापू के पास सेगांव जाकर आये।
किशोरलालभाई मश्रूवाला से प्यारेलाल की स्थिति कही। कोई उपाय निकल सके तो निकालने को कहा। शंकरलाल बैंकर आदि से बातचीत। मन में दुःख व निरुत्साह था।

१७-९-३७

चर्खा संघ की सभा ८ से ११ व बाद में १ से २ व २ से ५ तक। चर्खा संघ व ग्राम उद्योग मण्डल दोनों की सम्मिलित सभा। पू० बापू सेगांव से आये। उन्होंने अपने विचार कहे। जिन प्रान्तों में कांग्रेस मिनिस्ट्री है, वहां रचनात्मक कार्य किस प्रकार करना, वह समझाया। जवाबदारी भी बतलाई। वह वापस ३। बजे सेगांव गये।
ग्राम उद्योग संघ के ट्रस्ट की सभा हुई।
मारवाड़ी बोर्डिंग में गणपति-उत्सव के निमित्त खेल-कूद वगैरा थे।

१८-९-३७

चर्खा संघ सभा ८-११ तक हुई।
कृपलानी, मसानी, शंकरलाल बैंकर की लेबर कमेटी के बारे में सभा हुई।
वर्षा आदि जोर से आई।
थत्ते, धोत्रे व दादा के घर गणपति-उत्सव के निमित्त गये। प्रसाद, विनोद, भाषण वगैरा।

१९-९-३७

चर्खा संघ की सभा ८ से ११ तक हुई। वैंड-डेट व घटना (विधान) पर विचार-विनिमय।
सेगांव—लक्ष्मीदास आसर (आश्रम वाले) के साथ बापूजी के पास गये।
गांधी सेवा संघ व शिक्षण-सभा व चर्खा-संघ के बारे में थोड़ी बातें।
श्री मसानी के साथ वापस आये।
दाण्डी-मार्च की फिल्म देखी।
डा० प्रफुल्ल घोष व गोपबन्धुबाबू से बातचीत।

२०-९-३७

पत्र-व्यवहार। जयप्रकाशनारायण व शंकरलाल बैंकर से बातें।

जरूर बढ़ आवेगा डेढ़-दो महीने में। जुहू पहुचे। फल, दूध लिये। सावित्री थोड़ी उदास हुई। उसे समझाया।

जुहू-पूना, २६-९-३७

सुलोचना व सोमेश्वर नानावटी से मिलना। लिखना-पढ़ना।

मूलजी सिक्का, जीवनलालभाई, शांति साह (हीरालाल अमृतलाल) आये। मूलजीभाई को गांधी सेवा संघ के लिए पांच वर्ष तक बीस हजार की हर वर्ष सहायता के बारे मे समझाया। उन्होने कलकत्ता में विचार करके सन्तोषकारक जवाब देने को कहा।

जीवनलालभाई से श्री जेठारामजी के बारे में बातचीत, मदद। शांति के बारे में भी बातें। केशवदेवजी से बातें।

पूना मेल से चि० सावित्री के साथ पूना रवाना। रास्ते मे सावित्री से बातें। उसने चाय वगैरा ली। १ रु० ७ आने का बिल आया। मैंने चिवडा वगैरा लिया। उसका १२ आने आया।

२७-९-३७

प्रार्थना। चि० रामनिवास बम्बई गया। तीन लाख की लिमिट, बच्छराज जमनालाल मे। सुव्रताबाई को समाज-सुधार की कसौटी व हिम्मत से दुःख सहने के बारे मे समझाया। कई उदाहरण दिये।

रामनरेशजी त्रिपाठी व श्रीगोपाल मिलने आये। देर तक 'हिन्दी-मंदिर' के बारे मे विचार।

२८-९-३७

डा० दिनशा मेहता के पास आज भी सावित्री को ले गये। कल सावित्री को जो लगाया, उसका खुलासा।

रामनरेशजी त्रिपाठी, श्रीगोपाल व सुभद्रा मिले। सावित्री साथ में।

श्री शंकरराव देव व जाईल मिलने आये।

सर गोविन्दराव मडगावकर से मिले। सावित्री को पर्णकुटी व बापूजी का उपवास का स्थान दिखाया।

'मीरा' सिनेमा देखा। सुव्रताबाई, कमला, बाबू, सावित्री साथ में। ठीक मालूम हुआ। गायन अच्छे थे।

व बधी में शिशु-मदिर की योजना समझी। श्रीमन से मारवाडी शिक्षा-मण्डल की बातें।
बगले पर श्री गोविंदराव देशपाण्डे, मनोहर पन्त, कोलते 'सावरकर-पर्स-फण्ड' के लिए आये। उन्हें समझाकर कहा कि सावरकर की काग्रेस के प्रति जो नीति है, उसे देखते हुए मैं उसमे भाग नही ले सकूगा। शायद मुझे इस बारे मे स्टेटमेन्ट भी निकालना पडे।
सेगाव मे बापू से देर तक हमीदा के सम्बन्ध के बारे मे विचार-विनिमय। शकरलाल बैंकर साथ मे थे।
चि० उमा से बाते। दादा, बाबासाहब देशमुख, करंदीकर, किशोरलाल-भाई, काले, शिवराजजी, तेजराम आदि से बातें।
नागपुर मेल से थर्ड मे बम्बई रवाना, पूनमचन्द, प्रबोध व हमीदा से बातें।

बम्बई-जुहू, २४-९-३७

प्रार्थना। पूनमचन्द बाठिया से जमनालाल सन्स व चांदा मैच फैक्टरी की बातें। शंकरलाल बैंकर, हमीदा, प्रबोध से कल्याण से दादर तक बातें।
दादर मे उतरे। केशवदेवजी व आबिद के साथ जुहू आना। नई झोपडी बनाने की जगह निश्चित करना।
जुहू गये। गोकुलभाई भट्ट मिलने आये।

२५-९-३७

जल्दी उठना। प्रार्थना, घूमना। कमल के यूरोप जाने की तैयारी। अरविंद पकवासा, शांति व उसकी माता मोघीबहन मिलने आये। मोघीबहन के साथ बेलार्ड पियर गये। जानकीदेवी, मदालसा, भाग्यवती के लिए तीन टिकिट नौ रुपयो की ली। श्री अम्बालाल साराभाई के लडके गौतम व विक्रम भी इसी जहाज से गये। डा० गिल्डर की लड़की भी। कमल का स्टीमर 'स्टेटहार्ड' १ बजे रवाना हुआ। सावित्री ने हिम्मत रखी। दानीजी के घर आराम। बैंकर के यहा बालको से मिलना, खेलना, घूमना। सावित्री, मदालसा को चाट खिलाना।
काग्रेस हाउस मे खादी-ग्राम-उद्योग, स्वदेशी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। ठीक समारभ था।
गौरीशंकरभाई से शान्ताक्रूज मे मिले। उन्होने कहा कि सावित्री का वजन

[illegible] दूसरी [illegible] हुई। [illegible]

बम्बई, २६-९-३७

[illegible] व गोविन्द नारायण से मिलना। शिक्षा-[illegible]।
[illegible] जीवनलालभाई, शांति लाल (हीरालाल अमृतलाल) आये। [illegible] की शादी [illegible] के लिए पांच वर्ष तक बीस हजार की हर वर्ष [illegible] के बारे में समझाया। उन्होंने कलकत्ता से विचार करके सन्तोषकारक जवाब देने को कहा।
जीवनलालभाई से श्री जेठालालजी के बारे में बातचीत, मदद। शांति के बारे में भी बातें। केशवदेवजी से बातें।
पूना मेल से चि० सावित्री के साथ पूना रवाना। रास्ते में सावित्री से बातें। उसने चाय वगैरा ली। १ रु० ७ आने का बिल आया। मैंने निवड़ा वगैरा लिया। उसका १२ आने आया।

२७-९-३७

प्रार्थना। चि० रामनिवास बम्बई गया। तीन लाख की निमिट, बच्छराज जमनालाल से। सुव्रताबाई को समाज-सुधार की कमेटी व हिम्मत से दुःख सहने के बारे में समझाया। कई उदाहरण दिये।
रामनरेशजी त्रिपाठी व श्रीगोपाल मिलने आये। देर तक 'हिन्दी-मंदिर' के बारे में विचार।

२८-९-३७

डा० दिनशा मेहता के पास आज भी सावित्री को ले गये। कल सावित्री को जो तपासा, उसका खुलासा।
रामनरेशजी त्रिपाठी, श्रीगोपाल व सुभद्रा मिले। सावित्री साथ में।
श्री शंकरराव देव व जाईल मिलने आये।
सर गोविन्दराव मडगावकर से मिले। सावित्री को पर्णकुटी व बापूजी का उपवास का स्थान दिखाया।
'मीरा' सिनेमा देखा। सुव्रताबाई, कमला, बाबू, सावित्री साथ में। ठीक मालूम हुआ। गायन अच्छे थे।

२९-९-३७

प्रार्थना। घूमना, गणेशखिंड तक सुव्रताबाई के साथ। रामनिरंजन झुनझुनवाला मिला। कमजोर हो गया। सुव्रताबाई ने राधाकृष्ण के विचार व हम लोगों के प्रति पूज्य भाव बताया। सगाई की व सार्वजनिक काम की चर्चा।

भगवानदासजी व रतन से मिलना। उनका स्वास्थ्य कमजोर लगा। रतन से बातें। डेरे पर भोजन। रामनरेशजी त्रिपाठी से देर तक खूब साफ-साफ बातें। मोहन देशपाण्डे मिला।

रामकुमारजी नेवटिया आदि से मिलकर घर पर आये।

पूना-जुहू, ३०-९-३७

७-१० की पूना मेल से चि॰ सावित्री के साथ बम्बई रवाना। दादर उतर-कर जुहू। टेकचन्द के साथ सुव्रताबाई के ट्रस्ट के कागज पढ़े व सूचना की। गोपीरामजी रुइया से मिले, बातें। सावित्री के साथ कॉफी ली।

पत्र पढ़े। थोड़ा आराम। बाद में सावित्री के इलाज के बारे में सूचना व्यवस्था।

वर्धा जाने की तैयारी। केशर वगैरा से मिलते हुए नागपुर मेल से, ५-४० पर थर्ड में चि॰ मदालसा, गजानन्द व नौकर के साथ वर्धा रवाना हुए।

वर्धा, १-१०-३७

वर्धा पहुंचे।

८॥ बजे सरकिट हाउस। वहां से मिनिस्टरों के साथ प्रोसेशन में। डा॰ खरे, शुक्ल, मिश्रा थे। बीमारी के कारण शरीफ प्रोसेशन में नहीं थे। ढोरों की अस्पताल से गांधी चौक तक पैदल जलूस निकला। ढेर लोग थे। मि॰ गजाना कमिश्नर भी साथ था। शहर अभिवादन—गांधी चौक में। बाद में नवभारत विद्यालय, महिला आश्रम, हरिजन बोर्डिंग, धर्मागार आदि इनके साथ देखे। सब मिलकर अपने घर भोजन। सारी पार्टी ने दोपहर को मगनवाडी व मेटरनिटी होम देखा। डि॰ कौंसिल तथा [illegible] मेयर का मानपत्र हिन्दी मन्दिर, खादी भण्डार, सत्यप्रभा औषधालय देखा। मैं साथ में रहा। रात को घर पर सब मिलकर भोजन। मि॰ गजाना भी थे। गांधी-चौक में जाहिर स्वागत। म्युनिसिपल कमेटी की ओर से भी

मेरे सभापतित्व मे सभा बड़ी व सुन्दर हुई। व्याख्यान अच्छे हुए। ११ बजे घर पर आये। कांग्रेस मिनिस्टरों का वर्धा में ठीक स्वागत हुआ।

२-१०-३७

तारीख से बापू का जन्मदिन। बापूजी को आज ६८ वर्ष पूरे होकर ६९ वा चालू हुआ।

पत्र लिखवाये।

श्री शुक्लाजी मंत्री, शिक्षा विभाग, का शिक्षा-सम्बन्धी योजना पर टाउन हाल में भाषण हुआ, करीब एक घंटे। सुना।

सेगांव गये। बापूजी लीलावती आसर को लेकर अस्पताल आये। लीलावती का टांसिल का आपरेशन हुआ। बापूजी ४॥ बजे तक अस्पताल में रहे, बाद में उन्हें सेगांव छोड़कर आया। आते व जाते समय मोटर मे बातचीत।

विनोबा का नवभारत विद्यालय में बापू के जन्म-दिन निमित्त भाषण हुआ—एक घंटा करीब। सुना।

रविशंकर शुक्ल के साथ डा० जगन्नाथ महोदय के घर भोजन।

गांधी चौक में वर्षा आदि के कारण बरामदे में दादा धर्माधिकारी व बाबा मा० बाड़ोले का बापू के जन्मदिन पर भाषण हुआ।

वर्धा-नागपुर-वर्धा, ३-१०-३७

प्रार्थना। पूनमचन्द बांठिया से बच्छराज जमनालाल के काम तथा चान्दा मेंच फैक्टरी आदि के बारे में विचार-विनिमय।

रामलाल व दादा महाजनी (अकोला वाले) आये।

नवभारत विद्यालय व मारवाड़ी शिक्षा मंडल के उत्सव और शिक्षण परिषद की व्यवस्था के बारे में आर्यनायकम्, श्रीमन, गणाबिगन, भिडे, नारन्दीवर आदि से विचार-विनिमय।

श्री मीनादेवी, भारतन् के घर भोजन करने गये। विनोद, बातचीत।

मोटर से रास्ते में पवनार का मकान (यमुना कुटी) देखते हुए नागपुर गये।

उमा, साली, बाबासाहब साथ में।

तिलक विद्यालय में [illegible] की सभा हुई। [illegible]

मैनेजिंग ट्रस्टी व मन्त्री मुकर्रर हुआ। मैं सभापति बना।
प्रा० कां० की कार्यकारिणी की सभा। डा० खरे भी आखिर तक ठहरे।
ठीक काम हुआ। थोड़ा परिचय भी हुआ।
वापस वर्धा।

४-१०-३७

श्री सत्यनारायणजी व लीलावती को दवाखाने में जाकर देखा। सत्यनारायणजी को टाइफाइड हुआ। थोडी चिन्ता।
वच्छराज जमनालाल दुकान की सभा व जमनालाल सन्स का काम जो बाकी रहा, वह हुआ।
पूनमचद बांठिया को दीवाली से बैंक के काम के लिए छुट्टा किया।
चिरजीलाल बडजाते को चार्ज दिया गया। द्वारकादास भइया मदद पर।
चादा मैच फैक्टरी की व्यवस्था।
महिला सेवा मण्डल की ओर से नागपुर के मूलाजी के मकान पर ६॥ टके ब्याज मे छगनलाल भारुका की जमानत से तीस हजार देने का निश्चय हुआ।
दो बार आश्रम गये।
अस्पताल में लीलावती व सत्यनारायणजी को देखना।
नागपुर मेल से बम्बई रवाना। शाती, रामेश्वर, अमतुल, शुक्ला नौकरानी, गोविन्द साथ में। थर्ड में भीड थी।

जुहू, ५-१०-३७

प्रार्थना। दादर उतरकर जुहू आते समय अमतुल को उसके घर छोड़ना।
गौरीशकर भाई से सावित्री के इलाज के बारे में बातचीत।
जुहू में डा० विधान राय मिले। देर तक यूरोप व हिन्दुस्तान की परिस्थिति पर विचार-विनिमय।
केशवदेवजी व जमनादास गाधी से मुकन्द आयर्न वर्क्स के बारे में ठीक विचार-विनिमय, निश्चय। मसौदा तैयार करके जमनादासभाई के सुपु[illegible]
[illegible]। सावित्री से बातचीत। उसके इलाज की व्यवस्था।
[illegible]ोगर ने छठा इंजेक्शन दिया।

गौरीशंकर भाई भी आये। नलिनी, मातृ-सदन व मन्दिर गई।

६-१०-३७

रामकुमारजी बिड़ला, सीतारामजी सेकसरिया, भगवती खेतान वगैरा मिलने आये।

मेहरजी आबिदअली व दुलालदास घोष मिलने आये।

मि० दालमिया, अब्दुल सत्तार व उनकी भतीजी मिलने आये।

मूलजीभाई से मई डायरी का निश्चय।

डा० कामो अदसरे, वसन्त अवसरे आये। समुद्रस्नान। देर से भोजन।

जीवनलालभाई मिलने आये।

केशवदेवजी, रामकुमारजी व श्रीगोपाल आये। वेंकटलाल पित्ती भी आया। यहीं पर भोजन—बातचीत। केदारमलजी लडीया की स्टेट के बारे में विचार-विनिमय।

७-१०-३७

शंकरलाल बैंकर, खण्डूभाई देसाई, मि० प्रबोध, हमीदा आये, बातचीत, ब्रिज।

सरदार वल्लभभाई से मिलना, बातचीत। गुमाश्तों की सभा के सभापति बनना स्वीकार करना पड़ा।

पेरीनबहन के यहां हिन्दी प्रचार की सभा। यहीं शाम का नाश्ता, दूध-रोटी खाई।

नरीमान मिलने आये। उसे बम्बई प्रान्त के एकाउन्ट के बारे में समझाया।

८-१०-३७

मि० वारीवा व म्हात्रे (इंजीनियर) मिलने आये। श्री सोफी बहन व शान्ती मिलने आईं।

श्री मगनदास पकवासा व उनका लड़का भी आया। यहीं भोजन व बातचीत।

श्री सुन्दरलाल भूलेश्वर कांग्रेस वाले भी मिलने आये।

९-१०-३७

प्रार्थना। दादर गये। नागपुर मेल से सीतारामजी सेकसरिया, भगवान-

देवी व बालक आये। माटुंगा सान्ताक्रूज होते हुए जुहू आये। उनकी व्यवस्था की।
अरविंद पकवासा से बातचीत।
भोजन व आराम के बाद बम्बई। सावित्री भी साथ थी।
चि० श्रीमन्नारायण को ज्वर आने की खबर सीतारामजी लाये। वर्धा तार किया। वहां से टेलीफोन आया। जानकी देवी नागपुर मेल से गोविन्द के साथ वर्धा गईं। श्रीमन की ओर से थोडी चिन्ता।
भूलेश्वर जिला राजनैतिक सभा का उद्घाटन किया। दरबार साहब सभापति बने।

१८-१०-३७

प्रार्थना, घूमना। चि० शांती व रामेश्वर साथ में। वरसोवा तक गये। बिड़ला परिवार मिलने आया। अरविन्द पकवासा से बातें। पत्र लिखे। आज इतवार होने के कारण बहुत लोग मिलने आये। मदनलाल जालान व श्री निवास बगड़का से मारवाड़ी अस्पताल की चर्चा। सीतारामजी वगैरा से बातचीत।
गोविन्दलालजी पित्ती व शान्ताबाई आये। केशर, नर्मदा, पन्ना, वगैरा भी।
आबिद अली, मूलजी, राजा, प्रभावती, अमतुल आदि परिवार सहित आये-रहे।

११-१०-३७

प्रार्थना। घूमना—चि० शांती व रामेश्वर साथ में।
चि० सावित्री से करीब एक घंटा स्वभाव आदि के बारे में बातचीत।
जीवनलालभाई व नानाभाई (रंगूनवाले) मिलने आये।
केशवदेवजी व श्रीकृष्ण से बातें। श्रीकृष्ण ने गोला की हालत कही।
सरदार से व मूलाभाई से बातें। सरदार से ईश्वरभाई के बारे में मेरी राय, गांधीसेवा संघ, खासगी सम्बन्ध वगैरा की चर्चा। गंगाधर राव देशपांडे से मिला।
आफिस में पेरीन बहन से बातें। वर्धा से टेलीफोन आया। ऐसा मालूम हुआ कि वहां जाना पड़ेगा।

श्री मनीलाल कोठारी की मृत्यु के समाचार सुने। दुख हुआ।
श्रीमन की बीमारी की चिंता।
जुहू मे सोशलिस्ट कैंप हुआ।

१२-१०-३७

प्रार्थना। समुद्र-स्नान। नर्मदा, शान्ता, वगैरा भी थे।
सोशलिस्ट कैम्प मे श्री मसानी का व्याख्यान ठीक मालूम हुआ।
श्रीमन की अस्वस्थता के कारण वर्धा जाने की तैयारी। गवो को पीछे का काम समझाया, सावित्री से बातचीत।
पत्र-व्यवहार। बम्बई रजिस्ट्रार के आफिस मे। सूरजमलजी का अंधेरी वाला मकान बेचा, उसपर सही की।
वर्धा से फोन आया कि श्रीमन की तबीयत ठीक, मत आओ। इससे वर्धा जाना स्थगित रखा।
माटुंगा होते हुए जुहू।

१३-१०-३७

प्रार्थना, समुद्र-स्नान। भगवान देवीजी साथ मे। थोडा घूमना।
सोशलिस्ट कैंप मे श्री दांतवाला का 'फेडरेशन'-विधान के बारे मे व्याख्यान।
डा० जवाहरलाल, शांतावाला, कंचन, नवनीतलाल, जयन्तीलाल, श्रीबहन आदि आये। शान्ती, अमृतलाल शाह भी। सब मिलकर भोजन, विनोद।
पत्र लिखना। सावित्री व शान्ता बम्बई गये। नर्मदा से मालूम हुआ कि सीतारामजी व भगवानदेवी मे केशर के यहा भोजन करते समय नर्मदा से जो बात हुई उससे गैरसमझ व सबको दुख पहुचा। रात मे सबों को समझाने का प्रयत्न किया गया।

१४-१०-३७

प्रार्थना, समुद्र-स्नान। भगवानदेवी, शान्ता, नर्मदा, दाई, वगैरा।
कृष्णा हठीसिंह व हठीसिंह-बालक वगैरा आये।
केशवदेवजी, श्रीगोपाल, श्रीकृष्ण मिलने आये। बातचीत। गुमाश्ता परिषद के बारे मे नोट तैयार किये। काशीप्रसादजी आये। थोडी देर ब्रिज; पत्र लिखना।

गोवर्धनदासजी मिलने में देर तक बातचीत।
सीतारामजी, भगवानदेवी, नर्मदा, प्रह्लाद से बातें। इनकी आपसी गैर-समझ दूर करने का प्रयत्न।
शाम को मोतीलालभाई वगैरा आये।

१५-१०-३७

प्रार्थना, समुद्र—स्नान। शान्ता, नर्मदा, भगवानदेवी, विजया के साथ घूमना।
मूलजी से जुहू जमीन के बारे में बातें। सावित्री से बातचीत।
शशिबाला मिलने आयी। हृषीकेश व वैद्यजी आये।
सावित्री, शशिबाला, शान्ता बम्बई गये। ज्ञानकुमारी (हैदराबाद वाली) आई। हीरालाल दवे आये।
हमीदा, प्रबोध, मजू, उसका भावी वर आये। बातचीत, विनोद, भोजन। हमीदा ने व प्रबोध ने सुन्दर गायन सुनाये।

१६-१०-३७

सावित्री से बातें। उसने अपनी कई प्रकार की कल्पनाएं कहीं, मैंने कई अनुभव बताये।
सीतारामजी, पन्ना, भगवानदेवी वगैरा शान्ताक्रूज रहने आज गये। सब व्यवस्था।
केशर, नर्मदा, प्रह्लाद से माटुंगा मिलना। बातचीत।
गुमाश्ता परिषद—६। से ११॥ तक हुई। परिषद ठीक थी। लोग भी अच्छे आये थे।
जुहू आये। नर्मदा, शान्ता, नर्मद वैद्य, जाफर साथ में।
नींद कम आई।

१७-१०-३७

प्रार्थना, घूमना। नर्मदा व शान्ता के साथ। समुद्र—स्नान में लड़के लोग भी साथ में थे।
आज सावित्री ने अपने मित्रों को दावत दी थी। छः सात जने आये थे।
भोजन, बातचीत, विनोद।

[illegible]

[illegible]

१८-१०-३७

[illegible]

[illegible]

[illegible] मे मिलना।

[illegible]

[illegible] आबिदअली साथ में।

वर्धा, १९-१०-३७

मेल से वर्धा पहुंचे। आबिद अली नागपुर गया।

श्री हृदयनारायणजी मैनपुरी गये। उनसे स्टेशन पर बातें। श्रीमन् को देखा।

सेगांव गये। बापू थके हुए मालूम हुए। मौन में ही उनके प्रोग्राम वगैरा की थोडी बातें कर लीं।

जानकी देवी अचानक जयपुर से ११॥ की गाडी से पहुंच गईं, यह जानकर खुशी हुई। आराम—पत्र व्यवहार।

शिक्षा मंडल की सभा।

२०-१०-३७

जल्दी तैयार होकर आचार्य पी० सी० रे को लेकर नवभारत विद्यालय गये।

मारवाडी शिक्षा मण्डल की रजत-जयन्ती थी। आचार्य रे का व्याख्यान हुआ। प्रदर्शनी-उद्घाटन आदि।

अनसूया बहन, इन्दुमति, शंकरलाल वगैरा आये।

महिला आश्रम—नवभारत विद्यालय के पारितोषिक वितरण, नाटक, आदि कार्यक्रम।

---

१. देखिये परिशिष्ट

शास्त्री ने ठीक काम किया।

२१-१०-३७

प्रार्थना। अनसूयाबहन के साथ बातें।
आचार्य रे के साथ नवभारत विद्यालय में साथ-साथ फोटो।
आचार्य रे के साथ सेगांव जाकर आना।
नवभारत विद्यालय में रात को उर्दू व हिन्दी में नाटक हुआ।

२२-१०-३७

राष्ट्रीय शिक्षण परिषद का काम ८॥ से ११॥ तक पू० बापूजी के सभापतित्व में हुआ। दोपहर को २॥ से पांच बजे तक सभा चली।

२३-१०-३७

सुबह राष्ट्रीय शिक्षण परिषद का काम ८ से ११, २ से ५॥ बजे तक हुआ। परिषद आज समाप्त हुई।
गांधी-सेवा-संघ की सभा रात को ७॥ से १० बजे तक हुई।

२४-१०-३७

नार्मल स्कूल प्रदर्शनी देखी। पू० बापू भी आये थे।
शिक्षण-समिति की पहली बैठक पू० बापूजी की उपस्थिति में हुई। बापूजी ने कार्य-पद्धति समझाई।
शाम को पवनार गये—सरदार, मणी, मृदुला, डा० सुब्बारायन, अविनाशलिंगम् आदि के साथ। वहीं भोजन किया।

वर्धा, २५-१०-३७

नागपुर मेल से थर्ड में कलकत्ता रवाना।
बापूजी, सरदार वगैरा भी इसी गाड़ी से चले थे। रास्ते में व स्टेशनों पर भी खूब भीड़ थी।
आराम कम मिला। सिर में थोड़ी चोट आ गई। बिलासपुर में दरवाजा नहीं खोलने देने के कारण क्रोध भी आया। सुशीला ने सिर दबाया। रास्ते में अखबार तथा 'हरिजन' वगैरा पढ़े। सुशीला, वीणा, सेलीवटी, लाली आदि साथ में।

कलकत्ता, २६-१०-३७

बापू के पास रहा। उनसे उमा की सगाई, वल्लभभाई के साथ के मतभेद

सुशीला व प्यारेलाल, बापू के स्वास्थ्य व आराम व भावी प्रोग्राम के बारे में बातें।
सुभाष व शरद बोस बापू को स्टेशन से अपने घर पर ले गये।
लक्ष्मण प्रसादजी के यहां (२५ राजा सन्तोष रोड, अलीपुर) गये। यहां शंकरलाल बैंकर, जयरामदास, उनकी स्त्री व गुलजारीलाल मिले।
वर्किंग कमेटी १॥ बजे शरदबाबू के घर पर हुई।
बिड़लों ने जो पार्टी दी, उसके बारे, में वर्किंग कमेटी में जो चर्चा हुई, वह ठीक नहीं मालूम हुई।

२७-१०-३७

प्रार्थना। प्रभुदयालजी हिम्मतसिंगका, गजानन्द, भागीरथजी, बसन्तलाल आदि कई मित्र मिलने आये।
प्रभुदयालजी से गजानन्द-नर्मदा के विवाह का फैसला। जन्मपत्री की घटना का खुलासा आदि। विवाह २७ नवम्बर को। जनेत में २० से ज्यादा नहीं आये, समय एक रोज; प्रह्लाद को वर्धा पत्र व तार भेजा।
वर्किंग कमेटी—८॥ से ११॥ व २ से ७॥ तक। श्री नेर व जवाहरलाल के विवाद से दुःख हुआ। नेर की थोड़ी गलती थी, इससे जवाहरलाल को रोक नहीं सका। परन्तु जवाहरलाल का व्यवहार ठीक नहीं था।
रात में जयरामदास, शंकरलाल, गुलजारीलाल आदि से मजदूर-संगठन पर विचार-विनिमय।

२८-१०-३७

वर्किंग कमेटी—८॥ से ११॥ व २ से ५ तक हुई। आज मौलाना आजाद व जवाहरलाल पर क्रोध आया। जो कहना था सो साफ तौर से कहा। जवाहरलाल का व्यवहार मिनिस्टरों के साथ असभ्यता का था व उनकी हिदायतें वर्किंग कमेटी की मेजोरिटी की नहीं थी।
बिड़ला पार्क में कांग्रेस के प्रीमियरों (मुख्य मंत्रियों) के सम्मान में पार्टी। वहां कई लोग मिले।
श्रद्धानन्द पार्क में सार्वजनिक सभा हुई। स्त्रियों की सभा में बोलना पड़ा।
लोगों को आसानी से भाग न लेने के बारे में समझाया। स्वदेशी प्रदर्शनी देखी।

थकावट मालूम हुई, तथापि जयरामदास व शंकरलाल से थोड़ी देर सगठन के बारे मे बातें।

२९-१०-३७

अतुलबाबू, गिरीशबाबू, आशालता (ढाका) सुरबाला, वासन्ती वगैरा मिलने आये।

वर्किंग कमेटी मे गये। स्वास्थ्य नरम था। वही विधान राय ने तपास। १०१॥ डिग्री ज्वर था। खांसी का जोर था। दवा लिख दी। ११॥ बजे वर्किंग कमेटी से घर आया। आज कुछ खाया नही। शाम को थोड़ी सब व दवा। आराम। दो बजे के करीब १०४ डिग्री अन्दाज ज्वर हुआ। आल इडिया काग्रेस कमिटी की बैठक मे जाना नही हुआ।

३०-१०-३७

डाक्टर ने आज वर्धा व मीटिंग मे जाने की व वर्धा जाने की मनाही की। प्रभुदयालजी, रामेश्वरजी नोपाणी, बनारसी प्रसादजी, सरदार, भूलाभाई, घनश्यामदासजी बिड़ला, ब्रिजमोहन, गोविन्ददासजी मालपाणी, सुरेश कृपलानी, श्यामसुन्दर, धन्नू, धीरेन्द्र मजूमदार, सुबालालजी, रामजी का लडका आदि मिलने आये। बाते।

थोडी देर ब्रिज, उर्मिला बहन, उमा, विमला, महावीर के साथ। विमला होशियार मालूम हुई।

शकरलाल बैंकर, गुलजारीलाल व जयरामदास के साथ रात को १२॥ बजे तक जवाहरलाल के व्यवहार व भावी स्थिति के बारे मे विचार-विनिमय।

३१-१०-३७

काग्रेस के काम व वर्किंग कमेटी से निकलने के बारे मे विचार मन मे चलते रहे।

वर्किंग कमेटी की मीटिंग मे गया, ८॥ से ११॥ तक। आल इंडिया कमेटी मे भी एक घटा गया २ से ३ तक।

फिर वर्किंग कमेटी मे ५ से ८ तक। रात मे बापू से कहकर वर्किंग कमेटी से त्यागपत्र का मसौदा बनाया। मित्रों को दिखाया। उसे आज न देकर सोमवार कल देने का निश्चय रहा। कई मित्रों से विचार-विनिमय। लक्ष्मणप्रसादजी से बहुत देर तक उनकी घरेलू बातें, विचार-विनिमय।

१-११-३७

[illegible] का [illegible] ठीक किया व [illegible] को दिया। उनको समझाया।

वर्किंग कमेटी—८॥ से ११॥—१२॥ से साढ़े बारह तक हुई। गरमा-गरम चर्चा व विचार। मैंने तो इसमें नहीं पड़ने का ही निश्चय रखा।

बापू का स्वास्थ्य चिन्ताजनक रहा।

लक्ष्मणप्रसादजी व उर्मिला देवी से ठीक बातचीत।

नागपुर मेल से वर्धा रवाना। बापू का ब्लड प्रेशर खूब बढ़ गया। वह वर्धा को रवाना नहीं हो सके।

वर्धा, २-११-३७

सरदार वल्लभभाई व शंकरलाल मेरे डिब्बे में आये।

बातचीत, नाश्ता।

रायपुर, गोंदिया व नागपुर में मित्र लोग मिलने आये, बातचीत।

वर्धा पहुंचे। बंगले पर स्नान व भोजन—डा० जाकिर हुसैन आदि के साथ।

दीपावली-पूजन।

किशोरलालभाई से गांधी सेवा संघ के बारे में विचार-विनिमय।

३-११-३७

प्रार्थना। सेगांव जाकर आया। पू० बा वगैरा से मिला।

बम्बई जाने की तैयारी—श्रीमन्नारायण से बातचीत।

दीपावली के निमित्त कई लोग मिलने आये।

महिला-आश्रम व नवभारत विद्यालय गये।

चिरंजीलाल व द्वारकादास से दुकान की बातें पटवर्द्धन व तेजराम से नागपुर प्रान्तीय कांग्रेस के बारे में विचार-विनिमय।

इण्टर में चि० विमला, शंकरलाल बैंकर, गंगाविसन के साथ बम्बई रवाना।

जुहू, ४-११-३७

इगतपुरी के बाद विमला को घाट दिखाये। शंकरलाल बैंकर से बातें।

दादर में सावित्री आई। ठीक मालूम हुई।

दीवानजी के निमित्त भागवत व मारवाड़ी चेम्बर में मिलन।

७-११-३७

गोविन्दरामजी भोला, डा० पुरुषोत्तम पटेल व बालक, भगवानदास काशी-नाथ, गुप्ता, केशवदेवजी व पार्टी, मुकुन्दलाल, रामेश्वरदासजी बंग, शान्ता, नर्मदा, पंडित भगवानदास (लाहौर वाले) आदि मिलने आये।

११-११-३७

वर्धा से— महादेव ड्राइवर आया। उसने धामणगांव व आकोला के बीच जो भयंकर मोटर दुर्घटना हुई, जिसमें चि० रामकृष्ण व श्रीराम थे, वह सब बताई। परमात्मा ने खैर की। बाप, भीले आदि मिले, यह भी कहा। गुरु श्री हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊजी, गोपीबहन, सीतारामजी आदि आये।

हीरालालजी ने प्रजामण्डल, जयपुर की स्थिति समझाई।

रात-जाल सीगोजी, पूर्णदबहन, गुलोचता आये।

सन्तोषबहन, राधा व केशव आये।

१२-११-३७

मुकन्दलालजी के यहां से विमला को लिया। सफिया को अस्पताल मे देखा। सीतारामजी से मिले।

डा० मेहता व प्रो० शाह वगैरा मिलने आये। देर तक बातचीत।

१५-११-३७

जानकी देवी व नर्मदा से विचार-विनिमय, व्रत, संयम के वातावरण, उपवास आदि पर।

मुझे आज ४८ वर्ष पूरे हुए, मिती के हिसाब से। जूना आंकड़ा व नये वर्ष का बजट, विचार। मुझे कैसा वातावरण चाहिए वह केशर, शान्ता, भगवानदेवी, नर्मदा, मदालसा, श्रीमन्, सावित्री आदि को समझाया। साथ में भोजन।

सूरजमलजी ट्रस्ट की सभा हुई। केशवदेवजी, मुकन्दलाल वैद, प्रकाश वगैरा आये।

श्रीनिवास रुइया ट्रस्ट कमेटी जुहू मे हुई। जसू भाई, शान्ता मेमराज, बद्री-दास, श्रीनिवास थे। देर तक काम हुआ।

कातन कमेटी भी जुहू मे हुई, भूलाभाई व शंकरलाल बैंकर के साथ विचार-विनिमय।

चि० सावित्री से थोडी देर बातें। उसे समझाया। वह आज डा० कुमुद मेहता के यहा गई थी।

जुहू, बम्बई रेल, १६-११-३७

समुद्र-स्नान, पत्र-व्यवहार। घूमना, जानकी देवी व मदालसा से भावी प्रोग्राम, व्रत आदि की चर्चा।

सीतारामजी से मिले।

नागपुर मेल मे रवाना।

वर्धा, १७-११-३७

वर्धा पहुचे। नर्मदा के विवाह की तैयारी बडे बगले पर हो गई थी, पर आखिर केशर के आग्रह से राधाकृष्ण के यहा सामने मडप बनाने का निश्चय करना पडा।

किशोरीलालभाई से मिलना। बच्छराज जमनालाल के काम की सभा हुई।

शाम को सेगाव गये। वहां बापू के रहने आदि की व्यवस्था देखी। रात वहीं सोया।

सेगांव, वर्धा, १८-११-३७

सुबह जल्दी उठा।

सेगाव से बालकोबा की झोपडी तक पैदल। बाद मे घोडा-गाडी मे वर्धा आना।

गांधी सेवा सघ की सभा का कार्य हुआ। महत्त्व की सभा। ठीक विचार-विनिमय हुआ। सरदार, गगाधरराव, जयरामदास, कृपलानी, शकरराव देव, प्रफुल्ल बाबू आदि कार्यकर्ता हाजिर थे।

कलकत्ता से मेल से बापू आये। डाक्टर ने तपासा। बापू के साथ सेगाव जाना। बापू वहां थोडा बोले—व्यवस्था।

१९-११-३७

बापू के साथ पैदल घूमना, डेढ मील तक। बापू की व्यवस्था। डा० महो-दय से बातें।

दीवानजी से निखिल भारतवर्षीय व मारवाड़ी चेम्बर में मिलन।

७-११-३७

गोविन्दरामजी सांभा, डा० पुरुषोत्तम पटेल व बाकर, भगवानदास बजो-रिया, पुत्रा, केशवदेवजी व पार्टी, मुकन्दलाल, रामेश्वरदासजी वगैरा, लाला मनोहर, पंडित मदनमोहन (लाहौर वाले) आदि मिलने आये।

११-११-३७

वर्धा से ... ड्राइवर आया। उसने धामणगांव व आर्वीला के बीच में भयंकर मोटर दुर्घटना हुई, जिसमें मि० रामकृष्ण व श्रीराम थे, बहुत बचाई। परमात्मा ने खैर की। बापू, मौने आदि मिले, वह भी कहा।
सुबह श्री हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊजी, गोपीबहन, सीतारामजी आदि आये।
हीरालालजी ने प्रजामण्डल, जयपुर की स्थिति समझाई।
रात-जाल गोरोजी, मुर्देवहन, सुलोचना आये।
सन्तोषबहन, राधा व केशव आये।

१२-११-३७

मुकन्दलालजी के यहां से विमला को लिया। सफिया को अस्पताल में देखा।
सीतारामजी से मिले।
डा० मेहता व प्रो० शाह वगैरा मिलने आये। देर तक बातचीत।

१५-११-३७

जानकी देवी व नर्मदा से विचार-विनिमय, व्रत, संयम के वातावरण, उपवास आदि पर।
मुझे आज ४८ वर्ष पूरे हुए, मिती के हिसाब से। जूना आंकड़ा व नये वर्ष का बजट, विचार। मुझे कैसा वातावरण चाहिए वह केशर, शान्ता, भगवानदेवी, नर्मदा, मदालसा, श्रीमन्, सावित्री आदि को समझाया। साथ में भोजन।
सूरजमलजी ट्रस्ट की सभा हुई। केशवदेवजी, मुकन्दलाल वेद, प्रकाश वगैरा आये।
श्रीनिवास इइया ट्रस्ट कमेटी जुहू में हुई। जसू भाई, शान्ता मेमराज, बद्री-दास, श्रीनिवास थे। देर तक काम हुआ।

टन कमेटी भी जुहू में हुई, भूलाभाई व शंकरलाल बैंकर के साथ विचार-विनिमय।

चि० सावित्री से थोड़ी देर बातें। उसे समझाया। वह आज डा० कुमुद मेहता के यहां गई थी।

जुहू, बम्बई रेल, १६-११-३७

समुद्र-स्नान, पत्र-व्यवहार। घूमना, जानकी देवी व मदालसा से भावी प्रोग्राम, व्रत आदि की चर्चा।

सीतारामजी से मिले।

नागपुर मेल से रवाना।

वर्धा, १७-११-३७

वर्धा पहुंचे। नर्मदा के विवाह की तैयारी बड़े बंगले पर हो गई थी, पर आखिर केशर के आग्रह से राधाकृष्ण के यहां सामने मंडप बनाने का निश्चय करना पड़ा।

किशोरीलालभाई से मिलना। बच्छराज जमनालाल के काम की सभा हुई।

शाम को सेगाव गये। वहां बापू के रहने आदि की व्यवस्था देखी। रात वहीं सोया।

सेगांव, वर्धा, १८-११-३७

सुबह जल्दी उठा।

सेगाव से बालकोबा की झोपड़ी तक पैदल। बाद में घोड़ा-गाड़ी में वर्धा आना।

गांधी सेवा संघ की सभा का कार्य हुआ। महत्त्व की सभा। ठीक विचार-विनिमय हुआ। सरदार, गंगाधरराव, जयरामदास, कृपलानी, शंकरराव देव, प्रफुल्ल बाबू आदि कार्यकर्ता हाजिर थे।

कलकत्ता से मेल से बापू आये। डाक्टर ने तपासा। बापू के साथ सेगाव जाना। बापू वहां थोड़ा बोले—व्यवस्था।

१९-११-३७

बापू के साथ पैदल घूमना, डेढ़ मील तक। बापू की व्यवस्था। डा० महोदय से बातें।

ाधी गेवा गंघ की सभा में विचार-विनिमय।
ी देखने डाक्टर लोग गये।
वभाई से बंगाल की हालत पूरी समझी, विचार-विनिमय।
पास जल्दी जाना।
ो सेगांव मे रहना।

२०-११-३७

बजे प्रार्थना। बापू का ब्लड प्रेशर १६४-११४, थोड़ी चिन्ता।
। महिला आश्रम तक पैदल, चि० प्रभावती चौकी तक साथ में

आश्रम में भागीरथीबहन, आशाबहन, मीरा, नीलम्मा, आदि से

पर सरदार व कृपलानी से देर तक बातचीत।
जाना। बापू का स्वास्थ्य, व्यवस्था आदि।

नागपुर, २१-११-३७

का ब्लड प्रेशर २२०-११८
व में प्रार्थना, ४ बजे उठना। बाद में पैदल वर्धा रवाना। रास्ते में
वगैरा देखे। कनु गांधी चौकी तक साथ में पैदल। बाद में घोड़ागाड़ी
र्धा।
आकर नागपुर जाने की तैयारी।
ई से—डा० गिल्डर व जीवराज मेहता बापू को देखने आये। स्टेशन
बातचीत।
सेंजर से नागपुर। शिवराजजी, दामोदर, तेजरामजी से बातें। डा०
बम्बावाले, टिकेकर मिले।
ीय कांग्रेस की कार्यकारिणी, अभ्यंकर मेमोरियल प्रान्तीय कमेटी
नहाल मे सार्वजनिक सभा। विजय चिन्ह (ट्राफी) श्री शुक्ल ने दी।

नागपुर-वर्धा, २२-११-३७

से नागपुर से वर्धा रवाना। दामोदर व बम्बावाला साथ

, जीवराज महादेवभाई के साथ गये। २१८-११८ रहा

प्रेशर बहुत ज्यादा था । थोड़ी चिन्ता । प्यारेलाल कल बम्बई गया । यह सुनकर विशेष विचार व चिन्ता । उसे वापस आने का तार भेजा ।
डा० जीवराज से बापू के स्वास्थ्य के बारे में देर तक बातचीत । नागपुर बैंक की सभा ।
सेगांव में प्रार्थना । बाद में बापू से सेगांव में न जाने के बारे में बातें । अपने विचार कहे ।

२३-११-३७

पू० बापू से बातें । विनोद । थोड़ा घूमना । ब्लड प्रेशर १६४-११२ रहा । चेहरा भी ठीक मालूम हुआ । प्यारेलाल व विजया भी आ गये ।
भागीरथी बहन, नर्मदा व चिरंजीलाल व उसकी मां को देखा ।
सत्यनारायणजी से हिन्दी प्रचार के सम्बन्ध में बातचीत ।

२४-११-३७

पू का ब्लड प्रेशर १६४-११२ ।
सोते समय लीलावती, प्रभावती, शारदा विजया से बातें । बाद में अपने न देखे । एक बाड़ी देखी ।
पू के पास घनश्यामदास बिड़ला व महादेवभाई से पत्रव्यवहार के [illegible] बारे में विचार सुने । शारदा को पत्र दिया ।
गंगाबहन, सुशीला आदि से बातें ।
आज दिन भर सेगांव रहा । गांव देखा ।

वर्धा-गांधी सेवा संघ की सभा में विचार-विनिमय।
बापू को देखने डाक्टर लोग गये।
महादेवभाई से बंगाल की हालत पूरी समझी, विचार-विनिमय।
बापू के पास जल्दी जाना।
रात को सेगांव में रहना।

२०-११-३७

सुबह ४ बजे प्रार्थना। बापू का ब्लड प्रेशर १६४-११४, थोड़ी चिन्ता।
सेगांव से महिला आश्रम तक पैदल, नि० प्रभावती चौकी तक साथ में आई।
महिला आश्रम में भागीरथीबहन, आशाबहन, मीरा, नीलम्मा, आदि से बातें।
बगले पर सरदार व कृपलानी से देर तक बातचीत।
सेगाव जाना। बापू का स्वास्थ्य, व्यवस्था आदि।

नागपुर, २१-११-३७

बापू का ब्लड प्रेशर २२०-११८
सेगाव में प्रार्थना, ४ बजे उठना। बाद में पैदल वर्धा रवाना। रास्ते में सेत वगैरा देखे। कनु गांधी चौकी तक साथ में पैदल। बाद में घोड़ा-गाड़ी में वर्धा।
वर्धा आकर नागपुर जाने की तैयारी।
बम्बई से—डा० गिल्डर व जीवराज मेहता बापू को देखने आये। स्टेशन पर बातचीत।
६। पैसेंजर से नागपुर। शिवराजजी, दामोदर, तेजरामजी से बातें। डा० खरे, बम्बावाले, टिकेकर मिले।
प्रान्तीय कांग्रेस की कार्यकारिणी, अभ्यंकर मेमोरियल प्रान्तीय कमेटी, टाउनहाल में सार्वजनिक सभा। विजय चिन्ह (ट्राफी) श्री शुक्ल ने दी।

नागपुर-वर्धा, २२-११-३७

५-५० की पैसेंजर से नागपुर से वर्धा रवाना। दामोदर व बम्बावाला साथ में।
बापू को देखने डा० जीवराज मेहता गये

प्रेशर बहुत ज्यादा था। थोड़ी चिन्ता। प्यारेलाल कल बम्बई गया। यह सुनकर विशेष विचार व चिन्ता। उसे वापस आने का तार भेजा।
डा० जीवराज से बापू के स्वास्थ्य के बारे में देर तक बातचीत। नागपुर बैंक की सभा।
सेगांव में प्रार्थना। बाद में बापू से सेगांव से न जाने के बारे में बातें। अपने विचार कहे।

२३-११-३७

पू० बापू से बातें। विनोद। थोड़ा घूमना। ब्लड प्रेशर १६४-११२ रहा। चेहरा भी ठीक मालूम हुआ। प्यारेलाल व विजया भी आ गये।
भागीरथी बहन, नर्मदा व चिरंजीलाल व उनकी मां को देखा।
सत्यनारायणजी से हिन्दी प्रचार के सम्बन्ध में बातचीत।

२४-११-३७

बापू का ब्लड प्रेशर १६४-११२।
घूमते समय सीतावती, प्रभावती, शारदा, विजया से बातें। बाद में अपने पैर देखे। एक डाटी देगी।
बापू के पास घनश्यामदास बिड़ला व महादेवभाई से कलकत्ता के हीरेन्द्र के बारे में विचार सुने। शरद को पत्र दिया।
मीराबहन, सुशीला आदि से बातें।
आज दिन भर सेगांव रहा। गांव देखा।

२५-११-३७

बापू का ब्लड प्रेशर १६८-११६ रहा।
सेगांव से महिला आश्रम तक बापू साहब से बातचीत करते हुए [illegible]
आए।
श्रीमन् का मकान देखा।
महिला आश्रम की सभा स्वागत व प्रार्थना हुई।
घनश्यामदासजी से देर तक बातचीत।
[illegible] बापू की [illegible]
[illegible]

२६-११-३७

बापू का ब्लड प्रेशर १६४-११२, शाम को १८०-११०।
सेगांव से [illegible] जाजूजी के साथ बात करते हुए आये।
मगनवाड़ी-म्यूजियम के बारे में विचार-विनिमय।
नर्मदा के विवाह के बारे में विचार, व्यवस्था आदि। बिड़लाजी से बातचीत।
प्रभुदयालजी वगैरा दस पर [illegible] व तीन नौकर मेल से आये। बातचीत। व्यवस्था सुन्दर थी।
भोजन करके सेगांव। प्रार्थना चल रही थी। बाद में कई कार्यकर्ताओं से बातें।

२७-११-३७

४ बजे प्रार्थना। बापू का ब्लड प्रेशर सुबह १६२-११२। शाम ८ बजे १८०-११० रहा।
मुन्नालाल, विजयाबहन, पारनेरकर, बलवंतसिंह, कन्नू से व्यवस्था आदि की बातें। विजया को ठीक तौर से समझाया कि वह अच्छी कार्यकर्ता बन सकती है। पैदल वर्धा। रास्ते में घोड़ा-गाड़ी मिली।
श्री प्रभुदयालजी वगैरा जनेतियों को महिला आश्रम, नवभारत विद्यालय व हरिजन बोर्डिंग वगैरा दिखलाया।
आज नर्मदा के विवाह तक उपवास किया। फल वगैरा भी नहीं लिया।
पत्र-व्यवहार। घनश्यामदासजी, लक्ष्मीनिवास आदि से बातचीत।
नर्मदा का विवाह सपन्न हुआ।

२८-११-३७

सुबह बापू को सेगांव देखकर घनश्यामदासजी के साथ आये। स्वास्थ्य साधारण।
प्रभुदयालजी, नर्मदा, गजानन्द वगैरा को महिला-आश्रम, नवभारत-विद्यालय ले गये। वे लोग खेल भी खेले। प्रभुदयालजी ठीक खेले।
बापू के साथ प्रार्थना का आनन्द।
गजानन्द, नर्मदा व प्रभुदयालजी से बातें।

२९-११-३७

[illegible] । [illegible] व [illegible] से [illegible] गई । स्टेशन पहुंचाया ।
[illegible] को विनोद देकर आया । [illegible] कैसा ही है ।
[illegible] जी [illegible] व लक्ष्मीनिवास से देर तक बातचीत । दोनों आज [illegible] व बम्बई गये ।

सेगांव, ३०-११-३७

हिन्दुस्तान ट्रेडिंग कंपनी के बारे में रिषभदास, चिरंजीलाल, पूनमचंद, [illegible] से बातचीत । गुस्सा । मार्च तक दूसरा कोई होशियार आदमी देखकर उसमें शामिल करना । जूना काम [illegible] । नौकरों का फैसला ।

१-१२-३७

प्रार्थना । बापू से मिलना । घूमते हुए बाल्कोबा को देखा । जानकी देवी व गोमतीबाई से उनकी स्थिति पर बातचीत विचार-विनिमय ।
बापूजी को नागपुर यूनिवर्सिटी डाक्टरेट की पदवी देना चाहती थी । बापू ने कहा, मैं योग्य नहीं हूं । विनोद आदि ।
कुमारप्पा, भारतन, मीनादेवी वगैरा आये ।

वर्धा, २-१२-३७

सुबह बापू से मिलकर वर्धा रवाना ।
बाबासाहब मिले । गोमतीबाई व विजया से बातचीत ।
ब्रिजमोहन गोयनका को बम्बई में काम करने के लिए सवा सौ रुपये मासिक पर ता० १५ दिसम्बर से रखा । वह अपना निजी दूसरा कोई काम नहीं करेंगे । फाटका बिलकुल नहीं करेंगे ।
गंगाबाई धूलिया व लक्ष्मी से बातें ।
सेगांव पैदल गये । चि० शान्ता साथ । बापू से मिला । रात को वहीं रहा ।

सेगांव, ३-१२-३७

प्रार्थना करके फिर सो गया । नाश्ता । बापू से विनोद ।
लिखना-पढ़ना । बापू ने बुलाया । हिंसामय वातावरण को दूर करने के लिए हम लोगों को जोरों से प्रयत्न करने को कहा ।
जल्दी सोना ।

जुहू, ७-१२-३७

कल्याण मे तैयार होकर बापू के डब्बे मे गये।

दादर उतरे। वहा से बापू को जुहू ले गये। अपनी छोटी कुटिया मे बापू बैठे। कुछ खाया। उन्हे तो यह पसन्द आई। नया मकान व बिड़ला हाउस दिखाया। डाक्टरों ने नये मकान मे सर्दी बताई। बापू को बिड़ला हाउस ले गये। वहा व्यवस्था की। खाना-पीना अपने यहा रखा।

शाम की प्रार्थना नये मकान के सामने हुई।

डा० जीवराज, गिल्डर, शाह, रजबअली वगैरा आये। बापू को तपासा।

जुहू, ८-१२-३७

बापू को रात मे नीद ठीक आई। बापू के साथ घूमना। डा० जीवराज वगैरा ने बापू के पेशाब व खून वगैरा की जाच की।

पत्र-व्यवहार। मिलने-जुलने वालों की तथा बापू को शांति मिले, ऐसी व अन्य व्यवस्था की।

सीतारामजी से बातें।

गाधी, परिवार मिलने आया।

मुकन्द आयर्न वर्क्स लिमिटेड की सभा जुहू मे हुई।

६-१२-३७

बापू को रात को नीद ठीक आई। शांति भी मिली। डा० गिल्डर व जीवराज ने तपासा। बापू के साथ घूमना।

ढवनभाई से सामवने के बारे मे बातें। श्रीमन्नारायण वर्धा गया। उससे बातचीत।

मुकन्द आयर्न वर्क्स की सभा हुई। आज की सभा मे रामेश्वरजी, मुकन्दीलालजी, वेदप्रकाश, लाला, शिवराज, किशनलाल, केशवदेवजी आदि थे।

१०-१२-३७

बापू का वजन ११२ रत्तल हुआ। बापू के साथ घूमना।

हरिहर शर्मा (अन्ना) से बातचीत। बापू की इच्छा के कारण उन्हें मिलाया भी, परन्तु बापू को दुःख पहुंचा। यहा आने की जरूरत नहीं थी कहा।

वर्धा ४-१२-३७

पैदल जानकी देवी के साथ महिला आश्रम तक गया। रास्ते में जानकी देवी थक गई। आश्रम से पास से घोड़े की गाड़ी में। बंगले। रास्ते में आर्यनायकम से नवभारत विद्यालय, महिला आश्रम, आदि के बारे में ठीक विचार-विनिमय हुआ। उन्होंने मेरी सूचना स्वीकार की।

जानकी व दामोदर मोटर से नागपुर गये। वहां मारवाड़ी छात्रों का सम्मेलन था।

डा० नर्मदाप्रसाद महादेवभाई के साथ मोटर से सेगांव जाकर आये। बापू का स्वास्थ्य वैसा ही है। सुबह ब्लड प्रेशर २००-११४ करीब व दोपहर को १६०-१०८। दोपहर का ठीक है।

मि० शान्ता के साथ महिला आश्रम में नाना व भागीरथीबहन से बातचीत।

प्रार्थना के बाद कई बातों का खुलासा। सूचनाएं बहनों को दी।

५-१२-३७

पैदल सेगांव रवाना—केशर, उमा, रामकृष्ण, श्रीराम, शान्ताबाई वगैरा साथ में।

सब पैदल चले। डा० जीवराज मेहता व नर्मदा प्रसाद वहां आये थे। बगीचे में दाल-बाटी की रसोई, वहीं भोजन। डा० मेहता से बातचीत। डा० जीवराज के आग्रह से कल मेल से बापू ने बम्बई (जुहू) जाने का निश्चय किया। तैयारी, टेलीफोन वगैरा किये।

सेगांव आश्रम की व्यवस्था। बापू ने ६ बजे के करीब मौन लिया।

६-१२-३७

४ बजे प्रार्थना। बापू का मौन।

नाश्ता, जानकी देवी व उमा के साथ पैदल वर्धा। रास्ते में बातचीत। घर पर डा० दिनशा मेहता (पूना वाले) आये हुए थे। उन्हें सेगांव भेजा। नालवाडी-वर्धा तालुका व खादी स्वावलम्बन पर विचार-विनिमय। बम्बई की तैयारी।

बापू को लेकर मेल से बम्बई रवाना हुए।

रास्ते में बापू को जरा शारीरिक आराम मिला। विचार चलते रहे।

जुहू, ७-१२-३७

कल्याण मे तैयार होकर बापू के डब्बे मे गये।

दादर उतरे। वहा से बापू को जुहू ले आये। अपनी छोटी कुटिया मे बापू बैठे। कुछ खाया। उन्हे तो यह पसन्द आई। नया मकान व बिड़ला हाउस दिखाया। डाक्टरो ने नये मकान मे सर्दी बताई। बापू को बिडला हाउस ले गये। वहा व्यवस्था की। खाना-पीना अपने यहा रखा।

शाम की प्रार्थना नये मकान के सामने हुई।

डा० जीवराज, गिल्डर, शाह, रजबअली वगैरा आये। बापू को तपासा।

जुहू, ८-१२-३७

बापू को रात मे नीद ठीक आई। बापू के साथ घूमना। डा० जीवराज वगैरा ने बापू के पेशाब व खून वगैरा की जाच की।

पत्र-व्यवहार। मिलने-जुलने वालो की तथा बापू को शांति मिले, ऐसी व अन्य व्यवस्था की।

सीतारामजी से बातें।

गांधी, परिवार मिलने आया।

मुकन्द आयर्न वर्क्स लिमिटेड की सभा जुहू मे हुई।

९-१२-३७

बापू को रात को नीद ठीक आई। शाति भी मिली। डा० गिल्डर व जीवराज ने तपासा। बापू के साथ घूमना।

छवनभाई से सासवने के बारे मे बातें। श्रीमन्नारायण वर्धा गया। उससे बातचीत।

मुकन्द आयर्न वर्क्स की सभा हुई। आज की सभा मे रामेश्वरजी, मुकन्दीलालजी, वेदप्रकाश, लाला, शिवराज, किशनलाल, केशवदेवजी आदि थे।

१०-१२-३७

बापू का वजन ११२ रत्तल हुआ। बापू के साथ घूमना।

हरिहर शर्मा (अन्ना) से बातचीत। बापू की इच्छा के कारण उन्हें मिलाया भी, परन्तु बापू को दुःख पहुचा। यहा आने की जरूरत नही थी कहा।

१६-१२-३७

बापू के साथ घूमना।
सर विश्वेश्वरैया मिलने आये। आटोमोबाइल कंपनी के बारे में बात की।
दिनशा पूना गये। ट्रीटमेन्ट उनके आदमी ने दी।
पत्र-व्यवहार, चर्खा।
बापू को आज डा० गिल्डर व जीवराज ने तपासा। शाम को ब्लड प्रेशर ज्यादा मालूम हुआ, विचार।

१७-१२-३७

बापू के साथ घूमना।
दिन में भी उनके पास रहा।

१८-१२-३७

आज भी बापू का ब्लड प्रेशर कम। उनके साथ घूमना।
बापू के पास, चर्खा।

२०-१२-३७

बापू के साथ घूमे।
आबिद अली व दामोदर से बातें। पत्रों के जवाब व बम्बई कांग्रेस-चुनाव की बातें।
नये घर में प्रवेश, भोजन। सफिया, मरियम, सीतारामजी आदि आये।
रामकिशन डालमिया, रामेश्वरदासजी बिड़ला केशवदेवजी से देर तक बातें।
प्रार्थना के बाद केशवदेवजी, आबिदअली से हिन्दुस्तान हाउसिंग कम्पनी के बारे में बातें।

२१-१२-३७

पीठ में दर्द ज्यादा मालूम हुआ। बापू ने सब करने को कहा।
रामकिशन डालमिया के आग्रह से सर पुरुषोत्तमदास से मिलने आज प्रथम बार बम्बई जाना पड़ा। उन्हें मिलाया। सीमेंट की बातें।
बापू के साथ थोड़ा घूमना।
महाराजा रीवां बापू के दर्शन को आये। उनसे बातचीत।

२२-१२-३७

यादवजी वैद्य व रामेश्वरदासजी बिड़ला आये। बापू के व मेरे स्वास्थ्य के बारे मे बातचीत।
वर्धा जाने की तैयारी—नागपुर के चुनाव के लिए,
घूमते समय महादेवजी, छाजूराम से बातें।
जुहू से सीतारामजी से मिलते हुए बोरी बन्दर। दामोदर, सहदेव साथ में।

वर्धा-नागपुर, २३-१२-३७

मेल से वर्धा पहुंचे। घर से मेटर्निटी होम गये। भागीरथीबहन को लड़की हुई, उसको देखा।
घर पर बाबासाहब से नागपुर-चुनाव के बारे मे बातचीत।
जल्दी भोजन करके मोटर से बाबासाहब, दामोदर व सहदेव के साथ नागपुर गये।
नागपुर-आफिस मे कोई नही मिला। भारुका भी नही था।
पूनमचन्द व ढवले के घर व ऑफिस। बहुत देर तक समझौते का प्रयत्न
कोई रास्ता दिखाई नही दिया। रात को ६ बजे बाद वर्धा पहुंचे।

२४-१२-३७

काकासाहब से ऊषा के सम्बन्ध के बारे मे तथा बाबासाहब से नागपुर के चुनाव के बारे मे बातें। बाबासाहब व दामोदर को नागपुर भेजा।
जाजूजी, किशोरलालभाई, नर्मदाप्रसाद सिविल सर्जन, लीलावती, आर्यनायकम, श्रीमन्, लक्ष्मीश्वर सिन्हा व प्रो० रामनारायण मिले। हैदराबाद की बहनों से बातचीत।
शिवराज माफी मागने आया।
कालूराम, द्वारकादास व चिरंजीलाल से दुकान व मुकदमे आदि की बातें।
सेगाव गये। वहा बापू के समाचार कहे।
महिला आश्रम मे प्रार्थना।

२५-१२-३७

प्रार्थना। चि० शान्ता व पूनमचन्द बाठिया से बातचीत, बैंक आफ नागपुर चान्दा मैच फैक्टरी, तेजेराम, सिनेमा आदि के बारे में।

जाजूजी व वि० दामू श्री मगाई के बारे मे विचार-विनिमय। महाराष्ट्र चर्खा संघ के बारे मे चर्चा।
भागीरथीबहन व परमानन्द को देखा।
नालवाडी—विनोबा का सुन्दर भाषण, वर्धा तालुका मे खादी उत्पत्ति के सम्बन्ध मे विचार-विनिमय।
महिला आश्रम—कु० ज्योत्स्ना ने क्रिसमस का उत्सव ठीक किया।
गणाचिसन से वर्धा म्युनिसिपल कमेटी के सबध मे विचार-विनिमय।

२६-१२-३७

नगर काग्रेस कमेटी के चुनाव के सिलसिले मे नागपुर के लिए ६ बजे रवाना। दादा करन्दीकर, दामोदर वगैरा साथ मे।
पहले तिलक विद्यालय गये। वहा से सब सेन्टरो मे घूमना, व्यवस्था, नगर कां० कमेटी का व्यवहार बाबासाहब व मेरे लिए भी अनुचित रहा। जितना न्याय देना सम्भव था, उसका प्रयत्न रखा। प्राय दिन भर घूमते रहना पडा, भोजन का समय छोडकर।
गिरधारी के यहा भोजन।
डा० खरे से मिलकर व पटवर्धन को सूचना देकर रात की मोटर से ९।।। बजे वर्धा पहुचे।

२७-१२-३७

श्रीमन् से नवभारत विद्यालय के लिए सरकारी ग्रान्ट लेने, प्रिंसिपल, व्यापारी कोर्स, आदि के सबध मे विचार-विनिमय।

२८-१२-३७

महिला परिषद के लिए नागपुर गये। आशाबहन, उमा, लीलावती साथ मे। राजकुमारी से मिलना, बातचीत।
महिला परिषद मे राजकुमारी का सुन्दर भाषण। मुझे भी बोलना पडा। परिषद मे जमाव ठीक था। रात को वापस वर्धा १० बजे बाद पहुचे। आशाबहन, लीलावती, श्रीमन्नारायण साथ मे।

२९-१२-३७

घूमना, नालवाडी। विनोबा से विजया, महादेवी अम्मा, सहदेव, आदि के बारे मे बातचीत।

बाबासाहब देशमुख से नागपुर चुनाव के बारे में बातचीत। उन्हें
दामोदर को एक्सप्रेस से नागपुर भेजा।
मथुरदासजी मोहता मिलने आये। कांग्रेस आदि की बातें।
बैंक आफ नागपुर के बोर्ड की सभा हुई।
सेगाव जाकर आये। वहां प्रार्थना में ठहरे। डाह्याभाई का मामला।

३०-१२-३७

सुबह जल्दी तैयार होकर, नागपुर के लिए नौ बजे निकलकर, ११ बजे वहां
पहुचे।
साथ में गोवर्धन, चिरजीलाल, रामकृष्ण, जाते समय थे। ११ से ७ बजे
शाम तक तिलक विद्यालय मे ही रहना पड़ा। नागपुर नगर तालुका
वर्धा, आर्वी, हिंगणघाट, नागपुर (अर्बन) की पेटियां खोली गईं।
परिणाम जाहिर किया गया।
नागपुर से मोटर से वर्धा। घर थोड़ी देर ठहरकर रात को ही एक्सप्रेस से
बम्बई रवाना।
दामोदर साथ मे।

जुहू, बम्बई, ३१-१२-३७

मनमाड के बाद नाश्ता किया।
रेल मे कागजात देखे। पत्रो के जवाब लिखवाये।
दादर उतरकर, २॥ बजे करीब जुहू पहुचे।
केशवदेवजी, रामेश्वरदासजी से,
शक्कर, सिंधिया आदि की बातें।

१९३८

जुहू-बंबई, १-१-३८

बापू के साथ घूमना।
श्री धर्मनारायणजी (मैनपुरी वाले) व हृदयनारायणजी आये। उनसे थोडी देर बातचीत।
सरदार वल्लभ भाई, राजेन्द्रबाबू, भूलाभाई, जयरामदास, शकरराव देव, शकरलाल बैंकर जुहू आये। वर्किंग कमेटी के सम्बन्ध मे देर तक विचार-विनिमय होता रहा।
प्रार्थना। बाद मे शरदबाबू व उनकी स्त्री भी आई।

२-१-३८

सुबह जल्दी तैयार होकर बापू से मिलकर बम्बई।
प० जवाहरलालजी से मिलना। बाद मे बिडला हाउस, राजेन्द्रबाबू, सरदार, जयरामदास, भूलाभाई, कृपलानी आदि से विचार-विनिमय, अपनी नीति के सबध मे बिडला हाउस मे ही भोजन।
वर्किंग कमेटी १॥ से ६ तक
वर्किंग कमेटी के मेंबरो ने मदीना स्टीमर सिन्धिया का देखा। साधारण स्टीमर ठीक था।
जवाहरलाल को ताज मे छोडा। बिडला-हाउस, वहा आपस मे खानगी चर्चा, विचार विनिमय।

३-१-३८

सुबह जल्दी तैयार हुआ। बापू से मिलकर बम्बई। वर्किंग कमेटी ८॥ से ११। व १॥ से ३। तक हुई। बाद मे प० जवाहरलाल, मौलाना आजाद सरदार, राजेन्द्रबाबू, राजाजी, बापू से मिलने आये। मामूली बाते।
'जानकी-कुटीर' मे नाश्ता, चाय वगैरा। बातचीत।

सुशीलाबहन से उसकी मानसिक स्थिति के बारे में विचार-विनिमय। राधाकृष्ण व मदन की सगाई—विवाह आदि के संबंध में बातें। सुबह वहीं भोजन।
कमला मेमोरियल मीटिंग ६।। से ८ तक जाल नवरोजी के यहां हुई।

४-१-३८

जल्दी तैयार होकर बम्बई जाते समय बापू से मिलकर कल का हाल कहा।
वर्किंग कमेटी सुबह ८।। से ११।। व १२।। से ८ तक हुई। महत्व की चर्चा व दो महत्व के ठराव पास हुए, खासकर कांग्रेस की नीति—मिनिस्टरों के मामलों में व हिंसा आदि के बारे में स्पष्ट की। बिहार किसान सभा के बारे में ठीक चर्चा, विचार-विनिमय।

५-१-३८

पूज्य बापूजी ने, कल शाम को उनकी लकड़ी, जिस पागल मुसलमान ने पकड़ी थी, उस घटना का हाल कहा।
कृपलानी व जयरामदास मिलने आये। बापू को कल के दोनों ठहराव ठीक मालूम हुए।
बम्बई, राजेन्द्रबाबू, सरदार, राजाजी, भूलाभाई, जयरामदास, खेर आदि से बातचीत। मिनिस्टरों के व्यवहार के बारे में विचार-विनिमय।
नेपाल के मेजर जर्नल मिलने आये। गोपीबहन, पेरीन, नरगिस, शूरजी भाई वगैरा आये। सरदार, राजाजी, कृपलानी, शरदबाबू भी।
बापू से मिलकर फिर बम्बई।
रामनारायण सन्स की सभा में थोड़ी देर, रुई हाजर का सौदा पक्का करने व जमीन के बारे में विचार-विनिमय। रामेश्वरजी बिड़ला से बातें।
डा० देसाई को दाढ दिखाई। उन्होंने निकालना जरूरी समझा, निकाल दी।
थर्ड व इन्टर में भीड, सेकण्ड में वर्धा रवाना।

वर्धा, ६-१-३८

वर्धा तक चित्रा केस के कागजात पढ़े।
वर्धा पहुंचे। बंगले पर आकर चित्रा केस के कागजात—बडकस, करन्दीकर,

१ बजे कोर्ट में गये। जयवन्त के न आने के कारण कोर्ट ने मेरी गवाह छोड़ दी।
महिला आश्रम में खरे पंडितजी के दो भजन सुने।

७-१-३८

सुबह स्टेशन गया। सीतारामजी, भगवानदेवी वगैरा आये।
सेगाव जाकर मिलकर आये। बालकोबा से मिलना। नागपुर से श्री पटवर्धन व ढवले आये। थोड़ी देर बातचीत।
कोर्ट ने चित्रा केस आज शुरू किया। बुलावा आने पर वहां गये।
१ से २ बजे तक रिमाण्ड, नागपुर वाले जयवन्त की ओर से, शान्ताराम वकील ने किया।
पवनार में शाम का भोजन, २०-२५ आदमी साथ थे। श्री खरे व रमाबाई के सुन्दर भजन हुए।

८-१-३८

पू० बापूजी बम्बई से आये। स्टेशन पर पैदल जाना।
बापू बंगले पर आये।
चित्रा केस की चर्चा।
कोर्ट में १२ से १॥ व २॥। से ५॥ तक चित्रा केस में रिमाण्ड मि० शान्ताराम वकील, नागपुर ने चलाया।
केव आय, नागपुर की सभा हुई।
पुरुषोत्तमदास आजोदिया के घर रामेश्वरजी (धुलिया वाले) के साथ भोजन।

९-१-३८

काई मेजर के साथ पैदल सेगाव। मेजर से उनके भविष्य, रहन-सहन, बीमारी पन्ना प्रह्लाद वगैरा के बारे में बातें। उसे समझाना।
सेगाव जाकर बापू से महादेवभाई के साथ बातचीत। उन्हें हरिपुरा कांग्रेस तक पूरा आराम लेने को कहा। परन्तु कोई फल नहीं निकला।
बापू की इच्छा के मुताबिक महादेवभाई मुलाकात प्रोग्राम आदि की व्यवस्था करेंगे।

[illegible] भाषा व [illegible], [illegible] बारे में कमेटी की [illegible]
लेकर आये। देर तक विचार-विनिमय। चर्चा।
काकासाहब, आर्यनायकम् के [illegible] के बारे में [illegible]।

१२-१-३८

जानकी का स्वास्थ्य थोड़ा नरम। उनके पास बैठना। [illegible] हैं।
वासुदेव दास्ताने [illegible] का [illegible] था। डा० मुरे [illegible] हैं। [illegible]
ठीक मालूम दिया।
डा० मुरे के साथ बापू के पास सेगांव गये। डा० मुरे ने बापू को स्वास्थ्य
ठीक बताया।
डा० मुरे के साथ नागपुर नगर व प्रान्त के बारे में देर तक विचार-विनिमय।
मन्नालालजी अग्रवाल से नागपुर जीन के बारे में बातें।
बाबा सा० देशमुख, बरन्दीकर से, सेनपुरा-कांग्रेस के प्रस्तावों के बारे में
विचार-विनिमय। चर्चा।
काकासाहब से हरिहर शर्मा, रामदेव, प्यारेलाल के बारे में बातें।

१३-१-३८

पैदल सेगांव। सरस्वती बाई माहोदिया, जानकी देवी, हकीमजी व ईश्वर-
प्रसाद साथ में।
बापू से हकीमजी की बातचीत। बापूजी को देखने को नागपुर से दुबलस-
राय व सिविल सर्जन आये।
प्यारेलाल से बातचीत। परसों बातें होने के बाद जो परिणाम आने की
आशा हुई थी, वह आज कम हुई।
"सेनपुरा जिला सेनकरी सभा, में प्रमुख होकर गया। साथ में विनोबा व
काका साहब थे। जिला कांग्रेस एक प्रकार से सफल हुई कही जा सकती
है। १॥ बजे से रात में ८॥ बजे तक एक बैठक में काम करना पड़ा।
लोगों से परिचय हुआ।
वापस वर्धा। विनोबा, काकासाहब, दामोदर, महादेवी, रमाबाई
(हैदराबाद) अनुसूया, आदि आठ जने एक मोटर में आये।

१४-१-३८

[illegible] सेगांव। कमलाबाई, शान्ता साथ में। आते समय मोटर में। [illegible] साथ में।
कृष्णा बाई [illegible] आये। कृष्णा की करुण कथा सुनी।
आश्रम में महिला मण्डल के बारे में विचार-विनिमय।
सत्यनारायणजी व श्रीमन के साथ हिन्दी प्रचार के बारे में विचार-विनिमय।
[illegible] विद्यालय व मारवाड़ी शिक्षा मण्डल के बारे में भी।
गंगाविसन, चिरंजीलाल, पूनमचन्द, दामोदर, मीरा, कमलाबाई लेले, रमाबाई, महादेवी आदि से बातचीत। कमला लेले ने पिचहत्तर रुपयों की आवश्यकता बतलाई।

१५-१-३८

शान्ता के घर तिल व दूध लिया।
सेगांव पैदल। शान्ता, सुमनी बाई, सुशीला, बिन्दू, महादेवी, रमाबाई, (हैदराबाद वाली) व मैं घर फाटक तक आई। सुशीला बहुत ही बुद्धिमान व होशियार लड़की मालूम हुई। ईश्वर उसे सुखी रखे। रास्ते में महादेवभाई मिले। बापू की हालत कही। ब्लड प्रेशर बढ़ा हुआ बतलाया, २०० के ऊपर। बापू से थोड़ी बातें। हकीमजी को भेजने का विचार।
सुशीला व प्यारेलाल से वापस आते समय बातचीत। किशोरलालभाई, गोमतीबहन, शान्ता साथ में। किशोरलालभाई को सब कहा।
भारतन से सीतादेवी व महिला मण्डल के मंत्री-पद संबंधी विचार-विनिमय।
काकासाहब सत्यनारायणजी व श्रीमन से हिन्दी प्रचार के बारे में बातें।
महिला आश्रम में—तिल-गुड़। विनोद।
रमाबाई व महादेवी मेल से गये।
मि० शरीफ मिनिस्टर व ताजुद्दीन मिलने आये। शरीफ ने नागपुर नगर कांग्रेस के बारे में विशेष बातें की।
बाबासाहब करंदीकर व दामोदर के साथ नागपुर प्रान्त का काम।
हकीमजी, सरस्वती, जानकी वापस सेगांव गये।

वर्धा-नागपुर, १६-१-३८

मेल से नागपुर ट्रेन। मैं आबिदअली से गाड़ी में हिन्दुस्तान हाउसिंग कम्पनी (बनारस) के बारे में बातें। उसे वहां का काम शीघ्र जाकर सम्भालने को कहा व प्रान्त बन्द करने को कहा। कंपनी के बारे में बंद करने का विचार, केशवदेवजी की रिपोर्ट आने पर बोर्ड में करना।

नागपुर में तिलक विद्यालय गये। पटवर्धन नहीं मिले। उसके घर पर भी नहीं मिले।

छगनलाल व भगवानदीनजी से उनकी पार्टी की स्थिति समझी।

डा० खरे नहीं मिल सके। मोहनी का घर देखा। गिरधारी के घर भोजन।

तिलक विद्यालय में कार्यकारिणी सभा का काम हुआ। हरिपुरा कांग्रेस के प्रतिनिधियों की सभा। मुझे सभापति चुना।

सुभाषबाबू को कांग्रेस का सभापति चुना। आल इंडिया के मेंबरों में डा० खरे, पूनमचन्द, चतुर्भुजभाई और मैं चुने गये। प्रान्त के कॉपशन में श्रीमती सालवे, पन्नालाल, खांडेकर, पटवर्धन चुने गये। अभ्यंकर ट्रस्ट की मीटिंग हुई।

रात में वर्धा वापस।

वर्धा, १७-१-३८

देर से उठना। धोत्रे व सुन्दरलाल के साथ महिला सेवा मण्डल के बारे में विचार-विनिमय।

सेगांव में चि० शान्ता के साथ। पू० बापूजी को देखकर जल्दी वापस—हकीमजी व सरस्वतीबाई को लेकर।

चिवा केस रिक्रास एक्जामिन की तैयारी घर पर। बाद में कोर्ट में १२। से ४।। तक। आखिर में आज गवाही पूरी हुई।

महिला सेवा मण्डल की सर्व-साधारण सभा, कार्यकारिणी सभा व महिला आश्रम की सभा पांच से साढ़े आठ तक हुई। शान्ता के यहां भोजन व सभा का काम।

श्री घनश्यामदास बिड़ला आज मेल से कलकत्ता से आये। मेरे आने के पहले ही वह सेगांव जाकर महादेवभाई से लार्ड लोथियन के प्रोग्राम के बारे में विचार कर आये।

१८-१-३८

जल्दी तैयार होकर लार्ड लोथियन के लिए स्टेशन जाना। गाड़ी १० मिनट जल्दी आ गई। काकासाहब व शान्ता को मिलाया। बाद में महादेवभाई व दोनों कुमारप्पा को मिलाया।

डा० नर्मदाप्रसाद की गाड़ी में सेगांव रवाना। रास्ते में आर्यनायकम् आदि से मिलाया।

सेगांव पहुंचकर लार्ड लोथियन बापू से मिले। बाद में मीराबहन को मिलाया।

अपने कच्चे मकान में ठहराया। बापू के साथ घूमना। वापस वर्धा। वियाना के डाक्टर बापू को देखने आये। उसकी व्यवस्था। घनश्यामदास-जी बिड़ला से बातचीत, भोजन, आराम, पत्र-व्यवहार।

घनश्यामदासजी के साथ पवनार तक घूमना व बातचीत।

सेगांव जाकर बापू से मिलना। लार्ड लोथियन प्रार्थना आदि में गये।

१९-१-३८

प्रार्थना। कागजात देखे। सरस्वतीबहन के साथ आश्रम वगैरा घूमना। लार्ड लोथियन नवभारत विद्यालय, महिला-आश्रम, मगनवाड़ी, खादी-भण्डार, लक्ष्मीनारायण मंदिर आदि देखने आये। उनकी व्यवस्था महिला आश्रम में की। वह थोड़े बोले, सुन्दर बोले।

दोपहर को व शाम को सेगांव लार्ड लोथियन के साथ। उनके साथ सेगांव घूमकर देखना।

बापू के पास प्रार्थना तक बैठना। घनश्यामदासजी बिड़ला आये। आज शाम को सेगांव में ही भोजन किया।

घनश्यामदासजी से राजनैतिक, हिन्दू-मुसलमान झगड़े आदि पर विचार-विनिमय। उनकी राय थी कि दो अलग फेडरेशन कर दिये जाय।

२०-१-३८

हिन्दी प्रचार विद्यालय व हरिजन बोर्डिंग देखा।

लार्ड लोथियन ने आज सुबह हरिजन-बोर्डिंग, हिन्दी प्रचार विद्यालय बालवाडी-टेनरी के काम आदि का ठीक तौर से निरीक्षण किया। उन्होंने करीब २०-२५ मिनट विनोबा के साथ अध्यात्मिक विचार-विनिमय में

किया।

लार्ड लोथियन घर पर आये। कार्यकर्ता व मित्रों से परिचय, बातचीत। समारम्भ ठीक रहा। करीब ३० कार्यकर्ता थे। साथ में भोजन। सब मिलकर ७५ लोग होंगे।

लार्ड लोथियन व बिड़लाजी सेगांव गये। बापू से बातें। प्रार्थना। आज बापू का ब्लड प्रेशर ज्यादा था।

२१-१-३८

सुबह दामोदर से बातें। सरस्वतीबाई व महादेवबाई के साथ रेलवे फाटक तक घूमने।

लार्ड लोथियन को ग्रान्ट ट्रंक ऐक्सप्रेस पर पहुंचाया। वह देहली गये।

बजाजवाड़ी का संघटन हुआ। आज प्रथम सभा हुई। हिन्दी प्रचार के लिए कालोनी बनाने के बारे में विचार-विनिमय।

जमाल मुहम्मद (मद्रास वाले) से बातचीत।

सेगांव—बापू से घनश्यामदासजी बिड़ला के इस वर्ष के एक लाख के फण्ड में से पचास हजार रुपये गांधी सेवा संघ के जनरल फण्ड में देने का निश्चय।

बापू के जिम्मे हरिजन मार्क फण्ड में से अढ़ाई हजार नालवाड़ी में विद्यार्थियों के लिए मकान बनाने व विट्ठलभाई फण्ड आदि के संबंध में विचार-विनिमय।

उत्तमचन्द शाह पेरिस वालों ने पांच हजार का चैक दिया।

किशोरलालभाई, धोत्रे, वैजनाथजी से गांधी-सेवा-संघ के बारे में बातें।

२२-१-३८

प्रार्थना के भजन। सेगांव पैदल। कमला व कु० सरला बियाणी साथ में बाद में ब्रिजलाल बियाणी व दामोदर भी साथ हुए।

बापू से, गुलनागाल व फ्रंटीयर, हृषीमजी के जाने के बारे में।

ब्रिजलाल बियाणी से सरला, कमला व राजनैतिक स्थिति के बारे विचार-विनिमय।

घनश्यामदास बिड़ला से बालकों की पढ़ाई व अन्य बातों पर विचार बातचीत।

बाबा साहब गिल्कार व पटवर्धन से नागपुर प्रान्तिक के बारे में विचार-विनिमय।
पवनार में घनश्यामदासजी के कहने से दाल बाटी की रसोई। घनश्यामदास, ब्रिजमोहन बिआणी, सरस्वतीबाई गाडोदिया आदि थे।
ईश्वरी प्रसाद ब्राह्मण की बातचीत से बुरा मालूम हुआ।

२३-१-३८

घूमने सेगांव तक पैदल, जानकी साथ में। उसमें बातचीत—मानसिक स्थिति स्वास्थ्य इत्यादि के बारे में।
सेगांव में बापू से कांग्रेस व शिक्षण बोर्ड, विद्यापीठ स्नातक, सरस्वतीबाई गाडोदिया, हकीमजी वगैरा सबंधी बातचीत। प्यारेलाल से बापू ने पूरी तैयारी, कांग्रेस सेशन में जाने के बारे में, रखने को कही। प्यारेलाल से बातचीत।
मथुरादास मोहता व घनश्यामदास बिड़ला के साथ बातचीत।
डा० विधान राय व नलिनी रंजन सरकार बंगाल के मिनिस्टर आज आये। अपने यहां ठहरे। उन्होंने देर तक बंगाल की हालत पर बातचीत की।

२४-१-३८

प्रार्थना। घूमने गये। दो मील का चक्कर लगाया। घनश्यामदास बिड़ला, विधानराय, नलिनी रंजन सरकार से बंगाल की स्थिति पर व कांग्रेस-संगठन के बारे में देर तक ठीक विचार-विनिमय होता रहा। साथ में भोजन, बाद में ये लोग सेगांव गये। ठक्कर बापा भी आज आये। शाम को पवनार में उपरोक्त तीनों सज्जन के साथ जाना। वहां, भोजन के समय व बाद में भी यही चर्चा होती रही।
राजाजी आज देहली से मद्रास गये। उनसे स्टेशन पर मिलने गये। वाइसराय व लोथियन से जो बातें हुईं, उसका सार कहा।

२५-१-३८

घनश्यामदासजी बिड़ला, डा० विधानराय, नलिनी रंजन सरकार मेल से कलकत्ता गये।
सेगांव जाकर बापू से व अन्य लोगों से मिलना। वापस घर आकर भोजन, बाद में दो बजे फिर महादेवभाई के साथ सेगांव जाना हुआ। बापू से २ से

३ तक बातचीत। 'गांधी सेवा संघ', विट्ठलभाई पटेल ट्रस्ट, वर्किंग कमेटी, फेडरेशन, मलकानी, आर्यनायकम्, डा० बतरा, प्यारेलाल आदि के संबंध में।
वर्धा आकर दादा धर्माधिकारी व मदनमोहन से बातें। किशोरलाल भाई, व दादा, बाला साहब खेर से गांधी सेवा संघ की चर्चा।

स्वतन्त्रता दिन २६-१-३८

गाजर का रस लिया। बाल बनाये।
गांधी चौक में झंडा वन्दन। सिविल लाइन वार्ड कमेटी स्थापित हुई।
हिंगणघाट मिल (मोहता) में स्ट्राइक। वहां जाने के बारे में विचार, पर मथुरादासजी के वहां न होने के कारण नहीं जाना पड़ा।
सेगांव में बापू से सेगांव का हिस्सा व अन्य इमारतें आदि 'ग्राम सेवा मण्डल' को देने पर विचार-विनिमय। बापू ने अपना भावी कार्यक्रम व इच्छा बतलाई। उन्हें अब सेगांव छोड़ना नहीं है। फ्रन्टीयर रहना पड़ा, हिन्दू मुसलिम एकता के लिए तो विचारणीय है। कांग्रेस वर्किंग कमेटी व स्वतन्त्रता के प्लेज पर विचार। प्यारेलाल की स्थिति कही। मैंने भी कहा।
वर्धा में स्वतन्त्रता दिन की जाहिर सभा गांधी चौक में मेरे सभापतित्व में हुई।
डा० महोदय व श्रीमती चोरघडे दवाखाने में गये।
मथुरादासजी मोहता नागपुर से आये। हिंगणघाट में हुई भड़काने वाली व भीषण हिंसा का वर्णन सुनाया। दामोदर को भेजा।
बच्छराज जमनालाल के काम की सभा हुई—रात में ८-६ तक।
चि० शान्ता आज बम्बई से आई। मदालसा वगैरा का हाल कहा।

२७-१-३८

प्रार्थना। गाजर का रस। मां से भजन सुने। हिंगणघाट से पत्र लेकर आदमी आया। पैदल स्टेशन। पुखराज से बातें। चि० सुशीला नागपुर गई। हिंगणघाट रेल से गये। मजूमदार से बहुत देर तक बातचीत। बाद में मजदूरों से व फिर मथुरादासजी से बात की। पूरी स्थिति समझी। श्री मजूमदार का मजदूरों पर प्रभाव नहीं दिखाई दिया।

वर्धा पहुंचे। मिनिस्टर, शरीफ, गोले आदि मिलने आये। बच्छराज जमनालाल की सभा।

२८-१-३८

मां के भजन। आज सरस्वतीबाई गाडोदिया हकीम व ईश्वरी प्रसाद को देखने गये।

दाण्डेकर व छगनलाल भारुका से देर तक बातचीत।

सेगांव। जानकी साथ में। बापू से मिलकर प्यारेलाल से देर तक बातचीत।

हिंगणघाट जाने की तैयारी। जाते समय श्री गोविन्ददासजी जबलपुर वाले मिलने आ गये।

हिंगणघाट पहुचकर मजूमदार व मथुरादास से मिलना। मजूमदार का पूरा काबू मजदूरों पर नहीं है।

आज दारुबन्दी के संबंध में जाहिर सभा हुई। श्री गोले (मिनिस्टर) व दुर्गा ताई का भाषण ठीक हुआ।

२७-१-३८

हिंगणघाट से पत्र लेकर आदमी आया। पैदल स्टेशन। वहां से रवाना. पुखराज से बातें। सुशीला नागपुर गयी। हिंगण घाट में मजुमदार से बहुत देर तक बातचीत। बाद में मजदूरों से व फिर मथुरादासजी से बातें की। पूरी स्थिति समझी, मजुमदार का मजदूरों पर प्रभाव नहीं दिखाई दिया।

वापस वर्धा पहुंचे। मिनिस्टर शरीफ, गोले आदि मिलने आये।

बच्छराज-जमनालाल की सभा हुई।

वर्धा, २८-१-३८

दांडेकर और छगनलाल भारुका से देर तक बातचीत।

सेगाव। जानकी साथ में। बापू से मिलकर प्यारेलाल से देर तक बातचीत।

हिंगणघाट जाने की तैयारी। जाते समय जबलपुर वाले गोविंददासजी मिलने आये। बातें।

हिंगणघाट में मजुमदार व मथुरादास से मिलना।

मजुमदार का मजूरों पर पूरा काबू नहीं है।

बंदी की जाहिर सभा में गोले मिनिस्टर व दुर्गाताई का ठीक।

घूमते हुए नालवाडी गये। चि० शान्ता साथ में। विनोबा से सेगांव के बारे में ठीक विचार विनिमय। विनोबा का स्वास्थ्य आज थोड़ा ठीक मालूम हुआ। चि० शान्ता व महिला सेवा मण्डल के बारे में तथा आत्म-विश्वास आदि के बारे में विनोबा से विचार विनिमय।

श्री दुर्गाताई जोशी (अकोला वाली) ने अपनी हालत, त्यागपत्र व अकोला की स्थिति कही। ब्रिजलालजी के बारे में जो कुछ कहा उससे दुःख व मन में विचार हुआ। वर्तमान स्थिति खूब विचारणीय है।

जानकी देवी का स्वास्थ्य थोड़ा खराब।

सेगांव में बापू से सेगांव को दान देने के बारे में बातचीत। मालगुजारी का हिस्सा दान देने के बारे में व्यवहार की अड़चन। बगीचा व जमीन दान देने का निश्चय, वसंत पंचमी से।

दादा धर्माधिकारी, बाबा सा० से गांधी सेवा संघ के सदस्य की चर्चा। वच्छराज जमनालाल, जमनालाल सन्स व जमनालाल गृह विभाग का कार्य हुआ।

वर्धा, नागपुर, ३०-१-३८

प्रार्थना, पत्र व्यवहार। घटवाई, बाबा सा० शिवराजजी व गोपालराव के साथ ६। बजे की गाड़ी से नागपुर जाना। पहुंचने पर हिंदुस्तान हाउसिंग में जाना। छगनलाल भारुका, बाद में पटवर्धन आदि से बातचीत। घटवाई से व शिवराजजी से भी। चि० शान्ती-रामेश्वर, गिरधारी, सोनीबाई, गोपीचंदजी मिले। छोटालाल वर्मा से बैंक के बारे में बातचीत।

तिलक विद्यालय। आज नागपुर प्रान्तिक कमेटी के लिए जो सदस्य आये थे उनसे खुले दिल से विचार-विनिमय। मेरी स्थिति साफ तौर से समझाई।

सभापति का चुनाव हुआ। मुझे पच्चीस वोट मिले। दो विरुद्ध, मैंने अपना वोट दिया नहीं। सब मिलकर २८ हजार थे। चुनाव में पूनमचन्द-पक्ष का व्यवहार आज आशा से ज्यादा समाधानकारक रहा। खरे व अन्य मित्रों का व्यवहार ठीक नहीं रहा। दुःख भी पहुंचा। आज पूनमचन्द-पक्ष की मेरी ममता से नैतिक विजय हुई। छगनलाल से बातें।

एक्सप्रेस से वर्धा। मन में काफी विचार व दुःख रहा।

३१-१-३८

सेगांव में बापू का स्वास्थ्य ठीक था। चि० सुशीला ने कहा नार्मल हालत रखी जा सकती है। बापू को नागपुर कांग्रेस के चुनाव, डा० खरे पूनम-चन्द की स्थिति, का हाल थोड़े में कहा। बापू का मौन था।
वर्धा आकर पत्र व्यवहार। नागपुर बैंक के बारे में व महिला मण्डल की रकम जमा रखने पर विचार विनिमय।
भोजन के समय आज गोभी के साग में बिच्छू पका हुआ निकला। क्रोध व ग्लानि आई। मन को रोक कर भोजन किया।
'महिला सेवा मण्डल' की कार्य कारिणी की सभा हुई।
राजकुमारी अमृतकौर व मिसेज लेन्केस्टर आये, उन्हें लेने स्टेशन गया।
हिन्दी प्रचारक विद्यालय में गया।

१-२-३८

जानकी से सुबह तीन घंटे तक बातचीत, मनःस्थिति का वर्णन।
भागीरथी बहन, चि० शान्ता, मोतीलाल से बातचीत। गंगाधरराव देश-पाण्डे व मिसेज लेन्केस्टर से बात।
'बैंक ऑफ नागपुर' के बोर्ड की मीटिंग। मारवाड़ी शिक्षा-मण्डल की कार्य कारिणी की सभा। हिन्दी प्रचार कमेटी की भी सभा हुई।
जाजूजी, किशोरलाल भाई से सेगाव, महिला आश्रम की जगह आदि की बातें।
श्री पटवर्धन, घटबाई, बाबा सा० (विठ्ठलकर) से नागपुर प्रान्तीय कमेटी के बारे में व राजकारण के बारे में देर तक विचार-विनिमय। मेरे विचार से पटवर्धन व घटबाई सहमत थे। डा० खरे से बात करने का निश्चय।

२-२-३८

नागपुर से मोटर से—जवाहरलाल व कृपलानी आये। जवाहरलाल को लेकर सेगाव जाना।
मेल से सुभाष बाबू वर्धा आये। स्वागत। सुभाष बाबू को लेकर सेगांव गया।

३-२-३८

सेगाव में बापू से मिलना। सुभाष बाबू को लेकर गये, खाना। वर्किंग कमेटी ९ से ११॥ व दोपहर को ३॥ से ८ तक हुई।

४-२-३८

वि० उमा साथ में पैदल सेगाव। रास्ते में उनकी देवी मिली। रास्ते में ही प्रार्थना। सेगाव पहुंचने पर बापू से वर्किंग कमेटी का थोड़ा हाल कहा।
वर्किंग कमेटी—८॥ से ११॥ व २ से रात ९॥ तक होती रही। फेडरेशन का ठहराव हुआ।
मिनिस्टर यूसुफ शरीफ का मुसलमानों में व्याख्यान हुआ। वहाँ जाना पड़ा। रात में ११॥ बजे सोना।

वर्धा, ५-२-३८

प्रार्थना, आश्रम में उत्सव। झण्डा वन्दन। सभा आदि।
वर्किंग कमेटी-८॥ से ११॥ व २ से ८॥ तक होती रही। बीच में कुछ लोग सेगाव बापू के पास गये। मैं महिला आश्रम के उत्सव में, बीच में दो बार जा आया।
आज वर्किंग कमेटी में—हगर स्ट्राइक, मिनिस्ट्री, इंडियन स्टेट्स आदि पर खास विचार-विनिमय हुआ।

वर्धा-नागपुर, ६-२-३८

रात में वर्षा आदि। हवा जोर की चली। सुभाष बाबू मेल से कलकत्ता रवाना हुए। भूलाभाई देहली गये।
जवाहरलालजी से खासगी थोड़ी बातें। टेलीफोन के लिए दुकान गये।
श्रीकृष्ण सेट मुख्यमंत्री बिहार से बातचीत हुई। हगर स्ट्राइक व जूने राजनैतिक कैदियों को छोड़ने के बारे में। लखनऊ फिर से टेलीफोन किया। पन्तजी नहीं मिले। जवाहरलालजी, मौलाना ने आज मंदिर वगैरा देखा।
वर्किंग कमेटी की सभा हुई। इंडियन स्टेट्स का ठहराव बहुत वाद-विवाद व विचार विनिमय के बाद, पंडित जवाहरलाल ने जो ठराव पेश किया वह सबों ने मंजूर किया।
सेगाव में बापू से मिलना। जवाहरलालजी की बातचीत। आते सम

महिला आश्रम के उत्सव में ठहरना।
जवाहरलालजी, सरोजनी, कृपलानी का नागपुर के लिए निकलना। ४॥
पहुंचे व गिरधारी के यहां चाय नाश्ता।
अभ्यंकर स्मारक सभा आज जवाहरलाल के हाथ से कोणशिला की क्रिया हुई। सभा अच्छी थी।
श्री शुक्लजी (मिनिस्टर) से बातें। विद्या मंदिर के संबंध में।
ग्रान्ड ट्रंक से वर्धा पहुंचे। गाडगे महराज का कीर्तन सुना-अच्छा हुआ।

७-२-३८

पंडित खरेजी का कल शाम को हरिपुरा में स्वर्गवास होने की खबर सुनकर दु:ख व धक्का लगा। किशोरलाल भाई, गोमती बहन, काका सा० से बातचीत।
श्री मणिलाल गान्धी व सुशीला व बालक आये। उन्हे सेगांव भेजा।
धामाजी, आनन्दराव (सेवा समिति वाला) आदि मिले।
पत्र व्यवहार।
दामोदर, गोवर्धन, श्रीमन, शान्ता, हरिभाऊजी, बक्षी आदि से बातचीत।
आज ही रात में एक्सप्रेस से बम्बई जाने का निश्चय किया। साथ में जानकी, रामकृष्ण व विट्ठल नौकर। थर्ड क्लास में रवाना। गाड़ी के चलते ही सो गये।

दादर-जूहू, ८-२-३८

जूहू में केशवदेवजी से मुकन्द आयर्न वर्क्स, हिन्दुस्तान हाउसिंग, हिन्दुस्तान शुगर मिल्स आदि के बारे में वर्तमान स्थिति समझी। मुकन्दलालजी, जमनादास भाई, फतेचन्द, प्रह्लाद, मूलजी, आबिदअली आदि से बातचीत।

जूहू, ९-२-३८

समुद्र तट पर वरसोवा तक घूमे। चि० रामकिसन साथ था। उसकी आगे की पढाई आदि पर विचार विनिमय।
आबिद अली से हिन्दुस्तान हाउसिंग कम्पनी के बारे मे विचार-विनिमय।
मदालसा से बातचीत।

चर्चा। महादेवी (कर्नाटक) ने बद्रीयात्रा का थोड़ा हृदय-द्रावक वर्णन सुनाया।
मन पर असर हुआ।

१०-२-३८

काशिनाथ मिलने आया। भाग्यवती दानी, मिलने आई।
दामोदर, श्रीमन्, शान्ता वर्धा से आये।
केशवदेवजी से बातचीत। मद्रास मिल की रुई की आढ़त के बारे में चर्चा।
फतेचन्द भी था।
शान्ता, मेमराज रुइया से 'महिला मण्डल' के खजानची के बारे में बातचीत।

११-२-३८

बच्छराज कम्पनी आदि की आफिस फोर्ट में ले जाने का विचार चल रहा था।
ऑफिस आदि देखा।

१२-२-३८

बम्बई से कई मित्र मिलने आये—सुव्रता बहन भी आई। हरिभाऊजी, केशवदेवजी रामकुमारजी, छगनलाल आदि। आज समुद्र स्नान के लिए गये तो बहुत बड़ी मच्छी किनारे के नजदीक दिखाई दी। बहुत बड़ा मुंह दिखाई देता था।
मित्रों के मना करने के कारण, जल्दी वापस आ गये। भोजन, आराम, थोड़ी देर ब्रिज। ब्रिजमोहन गोयनका से दुकान के काम के बारे में बातचीत, हिसाब।
विर्वा बहन वगैरा मिलने आये।
श्री शान्तिकुमार, मास्टर, पहदा मिलने आये। वर्किंग कमेटी के ठहराव के बारे में विचार-विनिमय।

हरिपुरा, (विट्ठल नगर) १३-२-३८

दादर से बैठकर मढ़ी स्टेशन पर उतरना। रास्ते में सुभाष बाबू पट्टाभि से इंडियन स्टेट्स के बारे में ठीक बातचीत। सुभाष बाबू के साथ भोजन।
बाद में उन्हें इन तीन वर्ष की स्थिति से व वर्किंग कमेटी के अन्दर के काम

से ठीक मोर से शामिल किया।
मढ़ी से मोटर द्वारा हरिपुरा पहुंचे। विट्ठलनगर में वर्किंग कमेटी के कैम्प में डेरा लगाया।
बापू को—सुभाष से जितनी बातें हुईं वह सब घूमते हुए सुना दी। उन्हें पसन्द आई। सुभाष बापू से मिल लिये। यही बातें हुईं।

हरिपुरा, १४-२-३८

वर्किंग कमेटी—८॥ से ११॥ व २ से ६॥ तक हुई। ठीक काम हुआ। रात में सब-कमेटी बैठी।
प्रदर्शनी में थोड़ी देर जवाहरलाल व मौलाना के साथ गये।

१५-२-३८

प्रार्थना। घूमने निकले। गोशाला वगैरा देखी। ब्रजकृष्ण (दिल्लीवाले) से वहां की हालत समझी।
वर्किंग कमेटी—८॥ से १॥ व २ से ६ तक हुई। आज श्री जवाहरलाल की रिपोर्ट पर गरमागरमी रही।
बापू से वर्किंग कमेटी का हाल कहा। शाम की प्रार्थना में गये।
बापू के साथ—जवाहरलाल, सुभाष, मौलाना, सरदार और मैं बातचीत में रहे।
मिनिस्टरी के बारे में, खासकर बिहार व यू० पी० के बारे में बातचीत। उन्होंने अपने विचार कहे।

१६-२-३८

बापू के साथ बातचीत। मैंने उनको कहा कि मैं वर्किंग कमेटी में नहीं रहूंगा। मुझे उसमें से निकाल लें।
उन्होंने कबूल तो किया। और दूसरी हालत बताई।
बापू का खादी प्रदर्शनी में प्रार्थना के स्थान पर आज 'खादी के महत्व' पर मार्मिक भाषण हुआ।
वर्किंग कमेटी ८॥।-११ तक हुई। रात में ६ से १०॥। तक चली।
विषय निर्वाचिणी व आल इंडिया २ से ७ तक हुई। ठीक काम चला।

१७-२-३८

प्रार्थना। डा० घोष व अन्नदा बाबू से घूमते समय बंगाल की हालत पर

विचार विनिमय ।
पू० बापू को श्री खेर ने बम्बई के गवर्नर के बारे में हुई बातचीत कही ।
वर्किंग कमेटी ६ से ११, ३।। व ६-१०।। तक तीन बार हुई ।
कार्यकारिणी सभा १२।।-५ तक हुई । नियम बोर्ड, फेडरेशन आदि के महत्व के ठहराव मंजूर हुए । देशी रियासत-सम्बन्धी ठहराव के बारे में विचार विनिमय-चर्चा । चिन्ता ।
शाम को वर्किंग कमेटी की बैठक में प्रीमियर श्री गोविन्दवल्लभ पन्त, श्रीकृष्ण बाबू के निवेदन, स्थिति का वर्णन सुनने पर दुःख व चिन्ता हुई ।

१८-२-३८

महावीरप्रसादजी पोद्दार से बातचीत ।
बिहार रिलीफ कमेटी (सेन्ट्रल) की मीटिंग व जनरल सभा हुई । ठहराव पास हुए ।
वर्किंग कमेटी ८।। से ११। तक हुई ।
विषय निर्वाचिनी सभा में आखिर देशी राज्य सम्बन्धी ठहराव पास हुआ । भाषण आदि मूर्खता व बेजवाबदारी भरे हुए थे ।

१९-२-३८

काका साहब व सत्यनारायणजी से हिन्दी प्रचार के बारे में देर तक बातचीत ।
झण्डा वन्दन । करीब एक लाख आदमी होंगे । बाद में विषय निर्वाचनी सभा ।
केशवदेवजी, प्रभुदयालजी वगैरा आये । वर्किंग कमेटी २-४। तक हुई ।
बापू से बातें —मेरे वर्किंग कमेटी में न रहने के बारे में ।
कांग्रेस का खुला जलसा शुरू ५।। बजे हुआ । प्रोसेसन आदि । ९ बजे तक होता रहा । ठीक व्यवस्था थी ।

२०-२-३८

विषय निर्वाचिनी सुबह ६ से १२।। तक चली । मैं १०।। तक बैठा ।
मिनिस्ट्री के ठहराव पर सरदार का प्रथम भाषण सुन्दर हुआ । आखिरी का ठीक नहीं हुआ, ऐसा मित्र लोगों ने कहा । मैं हाजिर नहीं था ।
हिन्दी प्रचार सभा का कार्य २ से ३।। तक हुआ । लोग ठीक जमा हुए थे ।

मालूम हुआ।
नवसारी में श्री मनीलाल तेली व मामाभाई मनीलाल तेली, शिवजी कोठारी व मणीभाई कोठारी की लड़कियों वगैरे से मिलना।
श्री मनीलाल भाई ने तेल की मिल दिखाई। ठीक कमानी मालूम हुई।
उनके घर पर ही प्रार्थना, भोजन व बातचीत। पैदल स्टेशन। शिवजी कोठारी से देर तक मणीभाई की लड़कियों की हालत जानी। नवसारी से सुभाष बाबू के साथ सेकण्ड क्लास में बैठे। जानकी व शान्ता साथ में थे।

दादर, जुहू, २४-२-३८

दादर में उतरे, सुभाष बाबू भी वहां उतरे।
जुहू पहुंचे।
अखबारों में बापू का स्टेटमेन्ट देखा। जवाहरलाल नेहरू से टेलीफोन से बातचीत।
शाम को जाहिर सभा—आजाद मैदान में। लाउड स्पीकर बिगड़ जाने से सभा नहीं हो सकी। बहुत गड़बड़ी हुई। प्रबन्ध ठीक नहीं था। कई स्त्रियों व बच्चों को चोटें आईं, दुःख हुआ। कई को उनके स्थान पर पहुंचाया।
श्री कन्हैयालाल मुन्शी के घर भोजन। श्री सुभाष बाबू वगैरा भी थे। देर हो गई।

जुहू-बम्बई, २५-२-३८

महिमतूरा मदन मोहन के बारे में सिफारिश करने आये। उन्हें मैंने कहा कि मैं विशेष कुछ नहीं करना चाहता। सादुल्ला, महिमतूरा व गोविन्द चौबे फिर आए। वही बातें।
डा० रजब अली के वहां वर्किंग कमेटी के मेम्बरों की इनफार्मल सभा हुई। आठ मेम्बर हाजिर थे। मिनिस्टरी की स्थिति टेलीफोन से समझी व उन्हें स्वीकृति दी। बापूजी के स्टेटमेन्ट के आधार पर बयान करने को कहा।
पोली क्लीनिक में मौलाना आजाद का दांत निकलवाया। उनसे मिलना व व्यवस्था करना।
जाल नौरोजी को पीटीट अस्पताल में देखना; उसे टी० बी० का सुनकर चिन्ता व विचार हुआ। नारियलवाला से बातें।

खुला अधिवेशन ५।। से १० तक हुआ। सुभाष बाबू ने कमजोरी दिखाई। जैरामदास का भाषण बहुत ही सुन्दर हुआ—खासकर आखिर का जवाब। सरदार भी ठीक बोले।

आज मन व स्वास्थ्य खराब रहा—आपसी, अन्दर के मतभेदों के कारण। शारिराम याना का पत्र आया—मदन मोहन के बारे में। पढ़कर दुख व चिंता हुई।

२१-२-३८

वर्किंग कमेटी की चर्चा में मैंने अपने विचार, मेरे न रहने के बारे में, साफ कहे।

विषय निर्वाचनी सभा का काम चला। बापू से जवाहरलाल, सुभाष वगैरा शाम को मिले।

कांग्रेस का खुला अधिवेशन। आज की कार्यवाही आखिर तक की ठीक रही।

मौलाना ने बापू से बात हुई उसका सार कहा। मुझे वर्किंग कमेटी में रहना चाहिए इसका आग्रह किया। मेरी कठिनाई मैंने कही।

२२-२-३८

बापू के जाने की तैयारी। उनसे मिला। बापू ने अन्दर बुलाया व मित्रों का व सुभाष बाबू का जो आग्रह था कि मैं वर्किंग कमेटी में रहूं वह उन्होंने चालू रखा। मैंने इनकार किया।

ऑल इंडिया कमेटी में सुभाष बाबू ने मेरा नाम जाहिर कर दिया। सरदार ने जो खुलासा किया था, वह पूरा खुलासा नहीं किया, अधूरा किया। मैं पूरा कराना चाहता था, तो सुभाष बाबू ने कहा कि यहां ठीक नहीं मालूम होगा। वर्किंग कमेटी में मुझे बुला भेजा।

२३-२-३८

सरदार ने कानजी भाई के लड़के से मिलाया। उससे बातचीत, उसके विचार जाने।

स्वागत वालों के सुभीते के कारण जल्दी मोटर से रवाना होना पड़ा। बारडोली जाकर श्री किशोरलाल भाई को देखा। उन्हें आज बुखार नहीं था। स्वास्थ्य ठीक था। वायसराय का स्टेटमेन्ट पढ़ा। साधारण ठीक

मालूम हुआ।
नवसारी में श्री मणीलाल तेली व मायाभाई मणीलाल तेली, शिवजी कोठारी व मणीभाई कोठारी की लड़की वगैरों से मिलना।
श्री मणीलाल भाई ने तेल की मिल दिखाई। ठीक कमाती मालूम हुई। उनके घर पर ही प्रार्थना, भोजन व बातचीत। पैदल स्टेशन। शिवजी कोठारी से देर तक मणीभाई की लड़कियों की हालत जानी। नवसारी में सुभाष बाबू के साथ सेकण्ड क्लास में बैठे। जानकी व शान्ता साथ में थे।

दादर, जुहू, २४-२-३८

दादर में उतरे, सुभाष बाबू भी यहां उतरे।
जुहू पहुंचे।
अखबारों में बापू का स्टेटमेन्ट देखा। जवाहरलाल नेहरू से टेलीफोन से बातचीत।
शाम को जाहिर सभा—आजाद मैदान में। लाउड स्पीकर बिगड़ जाने से सभा नहीं हो सकी। बहुत गड़बड़ी हुई। प्रबन्ध ठीक नहीं था। कई स्त्रियों व बच्चों को चोटें आईं, दुःख हुआ। कई को उनके स्थान पर पहुंचाया। श्री कन्हैयालाल मुन्शी के घर भोजन। श्री सुभाष बाबू वगैरा भी थे। देर हो गई।

जुहू-बम्बई, २५-२-३८

महिमतुरा मदन मोहन के बारे में सिफारिश करने आये। उन्हें मैंने कहा कि मैं विशेष कुछ नहीं करना चाहता। सादुल्ला, महिमतुरा व गोविन्द चौबे फिर आए। वहीं बातें।
डॉ० रजब अली के यहां वर्किंग कमेटी के मेम्बरों की इनफार्मेल सभा हुई। आठ मेम्बर हाजिर थे। मिनिस्टरों की स्थिति टेलीफोन से समझी व उन्हें स्वीकृति दी। बापूजी के स्टेटमेन्ट के आधार पर बयान करने को कहा। पोनी वर्गीनिक में मौलाना आजाद का दांत निकलवाया। उनसे मिलना व व्यवस्था करना।
शाम गोविंदजी को पीटिट अस्पताल में देखना; उसे टी० बी० का सुनकर चिन्ता व विचार हुआ। शान्तिप्रसादजी से बातें।

२६-२-३८

जवाहरलाल नेहरू, डा० सैयद महमूद, ब्रिजराज नेहरू, रामेश्वरी नेहरू, कृष्णा, हठीसिंग, रणजीत नवाब और उनकी स्त्री व लड़की आदि आये। जवाहरलाल व राजा घोड़े पर घूमे, बाद मे समुद्र में स्नान किया। कमला नेहरू स्मारक कमेटी का काम देर तक हुआ। कमला नेहरू स्मारक, कांग्रेस व अनिमा वाला फंड की रकम में से (१२०) ८०, १ हजार चार महीने के लिए चार टका ब्याज से फिक्स डिपाजिट में बच्छराज कंपनी में व हिन्दुस्तान शूगर मे रखने का निश्चित किया।

२७-२-३८

डा० दास (होमियोपैथ) अपनी स्त्री को लेकर आये। उन्होंने बड़े कामदार सालीसिटर की मोटर दुर्घटना से मृत्यु के समाचार कहे। दु:ख हुआ।

२८-२-३८

हीरालालजी शास्त्री व रतन बहन आये। समुद्र-स्नान। बातचीत। प्रजामण्डल के बारे में।
भोजन थोड़ा आराम।
बम्बई में मोटर दुर्घटना मे कामदार की मृत्यु हो गई सो उनके यहा बैठने गये।
जुहू पहुंचने पर पद्मा से बातें। भोजन, बाद में बच्छराज कम्पनी, फैक्टरी, व हिन्दुस्तान शुगर के बोर्ड की मीटिंग हुई—देर तक।

१-३-३८

बम्बई मे श्रीमती रमीबाई कामदार व उनके लड़के प्रताप से देर तक बातचीत।
समवेदना, धीरज देना।
गोविन्द रामजी लोहिया की स्त्री की मृत्यु पर बैठने गए।
ऑफिस मे मुकुन्द आयर्न वर्क्स का काम हुआ। बोर्ड की मीटिंग हुई।
सेकण्ड क्लास से वर्धा। उसमे भी भीड़ थी। नागपुर के पारसी कुटुम्ब से परिचय। कल्याण तक हरकचन्द भाई के ट्रस्ट के कागजात देखे। सुधार सुझाया।

मेल से वर्धा पहुंचे।

बाल बनाते व तेल लगाते हुए हीरालालजी शास्त्री ने जयपुर स्टेट व उनके बीच प्रजामण्डल के बारे में जो पत्र व्यवहार हुआ, वह पढ़कर सुनाया। सन्तोष हुआ।

हीरालालजी व रतनबहन के साथ सेगांव। बापू से जयपुर-प्रजामण्डल की स्थिति, वार्षिक उत्सव, मेरा वहां जाना आदि के सम्बन्ध में विचार-विनिमय।

रमीबाई कामदार, मौलाना, सुभाष बाबू, हरिपुरा-कांग्रेस व खर्च वगैरा पर थोडी बातें।

नालवाड़ी में विनोबा से देर तक बातचीत। जुहू जाने के बारे में जानकी का तार आया। उन्होंने विचार करके जवाब देने का कहा।

दुकान पर से जानकी से फोन पर बातचीत। चिन्ता कम हुई।

३-३-३८

नागपुर प्रान्तिक कांग्रेस के काम के बारे में बाबा सा० पटवर्धन, घटवाई, दादा, करन्दीकर, जाजूजी आदि से ११॥ बजे तक विचार विनिमय—बापू के पास सेगांव। विनोबा व महादेवभाई साथ में। बापू से मदन मोहन का हाल कहा। नागपुर प्रान्तिक कांग्रेस कमेटी से त्यागपत्र देने के बारे में विचार विनिमय। बापू ने देर तक अपनी नीति समझाई। सब जवाबदार कार्यकर्ताओं को कांग्रेस में सम्मिलित होना चाहिए। विनोबा व शिक्षण बोर्ड आदि की भी बातें।

नागपुर बैंक की सभा हुई।

वर्धा-पुलगांव-देवली, ४-३-३८

मेल से शान्ति कुमार, मास्टर व गगनबिहारी आये।

दोपहर को बापू के पास सेगांव गये।

[illegible]टर से गगनविहारी, केसर, शान्ता के साथ पुलगांव। आज से पुलगांव [illegible] चालू हुई। यहां केशवदेवजी, नागरमलजी पोद्दार वगैरा मिले। मि० जाला, सक्सेना आदि भी आये थे। वापस लौटते समय थोडी देर देवली ठहरकर, वर्धा ११-२५ को पहुंचे।

सेगांव में डा० कुमारप्पा, मास्टर, गगनविहारी का महादेवभाई व बापू से विदेशी व्यापारी भारत में किस नीति से व्यापार करें इसपर विचार विनिमय।
आना बहन, मृदुला, भागीरथी बहन, चि० शकु, शान्ता, राधा, रुक्मिणी वगैरा से बातें।

वर्धा, ५-३-३८

श्री केशवदेवजी नेवटिया पुनगांव से आये। देर तक म० ज० व जमनालाल गग के बारे में विचार विनिमय।
श्रीगणपतराय पान्डे नागपुर (भण्डारवाले) डा० मोडक व हरिभाऊ व दूसरे दिवानजी के साथ पच्चीस हजार कर्ज की व्यवस्था कराने के लिए मोटर से आये। उनके दोनों दिवानजी को हिंगणघाट श्री मथुरादासजी मोहता के पास चिरंजीलाल के साथ भेजा।
श्री मणीलाल गांधी, सुशीला वगैरा अकोला से आये। बालकोबा भावे डाक्टर को दिखाने आये।
केशवदेवजी, चिरंजीलाल, पूनमचन्द, दामोदर वगैरा मिलकर खर्च कम करने की पर विचार विनिमय।

६-३-३८

स्टेशन गये। सुभाषबाबू व मौलाना बम्बई से आये।
सुभाष बाबू को कलकत्ता दो बार शरद बाबू को टेलीफोन करना पड़ा। बापू के प्रोग्राम व डिटेनू के प्रचार आदि के सम्बन्ध में। सुभाष बाबू ने मंदिर, खादीभण्डार व मगनवाड़ी देखी।
सुभाष बाबू व मौलाना के साथ सेगांव जाना। बापू से मिस्टर जिना का पत्र-व्यवहार, शहीदगंज का मामला, सिक्कों का खून, बंगाल का प्रोग्राम, वर्किंग कमेटी की जगह पूरी करना, वर्किंग कमेटी की सभा उड़ीसा में रखना आदि पर बातें।
शिक्षण बोर्ड के बारे में भी। उस समय पंडित रविशंकर शुक्ल मौजूद थे।

ष बाबू को नालवाड़ी, पवनार दिखाया।
धी-चौक में जाहिर सभा। सुभाष बाबू हिन्दी में सुन्दर बोले।

म्युनिसिपल कमेटी के बारे में बहलाना पड़ा। ठीक नहीं मालूम हुआ।

७-३-३८

मौलाना से कलकत्ता की हालत व सुभाष बाबू के विचारों के बारे में बातचीत।

मौलाना आजाद कलकत्ता व सुभाष बाबू नागपुर रवाना हुए।

कमनार में लक्ष्मी (दक्षिण प्रान्त वाली बहन) को देखा।

गांधी सेवा संघ की इनफार्मल सभा हुई। राधाकृष्ण, दामोदर, गोवर्धन आदि से बजाजवाड़ी बच्छराज कोष के जमाखर्च वगैरा के बारे में विचार विनिमय।

मणीलाल, सुशीला व सुभती बहन सेगांव से आये। जल्दी भोजन कर इनके साथ वापस सेगांव जाना। बापू का मौन था। मौलाना से जो बात हुई वह बापू को सुनाई। प्रार्थना। वापस।

बच्छराज जमनालाल के बारे में विचार विनिमय। कल जाने का विचार था, पर सुभाष बाबू का फोन आने से रहना पड़ा।

८-३-३८

राधाकृष्ण के साथ विचार विनिमय, बजाजवाड़ी के बजट आदि की सभा।

जमनालाल सन्स के बोर्ड की प्रथम सभा बगले पर हुई। कंपनी रजिस्टर हो गई व काम शुरू करने की परवानगी मिल गई।

सुभाष बाबू नागपुर से आकर सेगांव गये। साथ में महादेव भाई को भेज दिया। मैं नहीं गया।

नवभारत विद्यालय व महिला आश्रम में सुभाष बाबू के साथ गये। उन्हें दिखाया। महिला आश्रम का प्रोग्राम ठीक हुआ।

हरिजन मण्डल की सभा हुई। काका साहब की योजना के पक्ष में लोग प्रायः नहीं के बराबर थे।

वर्धा-नागपुर, (रेल में) ९-३-३८

जल्दी तैयार होकर मेल से रांची के लिए रवाना। कागजात पर सही की। वर्धा से नागपुर तक। ना० प्रां० का० कमेटी के काम के बारे में श्री पटवर्धन घटवाई, करन्दीकर, दामोदर के साथ विचार-विनिमय।

१३-३-३८

[illegible] । [illegible] । [illegible] से [illegible]।

[illegible] ठीक तरह से [illegible] लिया।
[illegible], [illegible] डा० [illegible] लिखे आदि। [illegible]।

[illegible] कमजोर मालूम दिया।
डा० [illegible] के साथ उनके घर भोजन। उनका बहुत आग्रह।
[illegible] देखा। श्रीमद् का [illegible] चन्द मेहर्जी की जीवनी आदि।

१४-३-३८

प्रार्थना। घूमने गया—तीन मील। वापस [illegible] आदि।
सावित्री से पत्र लिखवाये। चर्चा।
जुगल किशोर शाह से गांधी की हालत समझी।
निर्वाण आश्रम देखा। गूंगे बहरों का स्कूल देखा भजन आदि।

१५-३-३८

घूमकर आना तीन मील। बाद में रंग आदि का खेल। लक्ष्मण प्रसादजी, महावीर, उर्मिला देवी, उमा, ललिता विमला आदि के साथ। रंग बहुत पक्का होने से उतरा नहीं। कई वर्षों के बाद इस प्रकार रंग का खेल खेलने का मौका आया। मन में प्रसन्नता थी।
कई लोग मिलने आये—चर्चा।
सावित्री से पत्र, तार लिखवाये और भिजवाये। शाम को मोटर में घूमने निकले। भोजन के बाद थोड़ी देर ब्रिज खेले।
तेल से पांव साफ किये।

१६-३-३८

घर के कम्पाउण्ड में ही घूमना। तेल, मट्टी, बेसन, साबुन से रंग निकालने का प्रयत्न किया। बहुत कुछ रंग निकला।

चर्चा। श्यामकिशोर, जुगलकिशोर से बातचीत।
चि० सावित्री से बातें। उसका स्वास्थ्य थोड़ा नरम रहा। पत्र व तार बम्बई केशवदेवजी को भेजा।
रांची व्यायामशाला में प्रीति-सम्मेलन था। वहां गये। कुछ परिचित व्यक्ति मिले।
झरिया गये मोटर से। करीब २३-२४ मील है। श्री लक्ष्मणप्रसादजी व महावीर साथ थे। श्री श्यामकिशोर व जुगलकिशोर साहू भी थे। झरिया का आश्रम तथा बालकों का काम देखा। मणीबाबू ठीक व्यक्ति मिन से मालूम हुआ।
यहां के जमींदार, दोनों भाई, मिले।
वापस लौटते समय रास्ते में ही भोजन किया। चांदनी रात थी। ठीक मालूम हुआ। घर पर ६ बजे के बाद पहुंचकर सो गये।

१७-३-३८

चि० सावित्री की तबीयत थोड़ी नरम थी। उसके व उसके माता पिता आदि के साथ मिलकर बातचीत। जापा कलकत्ते कराना या रांची; इस सम्बन्ध मे। आखिर कलकत्ते का ही निश्चय हुआ।
चर्चा। कई बंगाली सज्जन बिहार सरकार के सरक्युलर के बारे में शिकायत करने आये। अन्य मित्र भी आये।
सावित्री के पास से कमल को पत्र लिखवाया।
यहां का श्रद्धानन्द अनाथालय देखा। नाम बदलने की व बाजा बजाकर भिक्षा न मांगने की सूचना की।
सार्वजनिक सभा मे कांग्रेस के महत्व पर ठीक व्याख्यान हुआ।
शिवनारायणजी मोदी के यहां भोजन। रात मे सावित्री आदि से बातचीत।

१८-३-३८

रांची से ८॥। बजे लक्ष्मणप्रसादजी व महावीरप्रसाद पोद्दार के साथ
के लिए रवाना।
लया करीब १॥ बजे निवारण बाबू के शिल्प आश्रम में पहुंचे।
, लावण्य प्रभा देवी, अतुलबाबू आदि मिले। केदारनाथ

आदि से बातें। चर्खा, भजनाश्रम विद्यालय, बालिका विद्यालय, मारवाड़ी समाज की ओर से मानपत्र। सार्वजनिक सभा केदारनाथ के घर के सामने हुई। म्युनिसिपल कमेटी ने मानपत्र दिया व पुर्लिया की जनता ने भी। एक घंटे तक कांग्रेस का कार्य व महत्त्व समझाया।
केदारनाथ के घर पर भोजन। पुरुलिया से ८ बजे करीब रवाना सेकन्ड क्लास में—आदरा, आसनसोल, सोन ईस्ट बैंक में गाड़ी बदली।

डेहरी ऑन सोन, १९-३-३८

सुबह सोन ईस्ट बैंक पर श्री ज्वालाप्रसादजी कानोड़िया व दुर्गाप्रसादजी सेनान मिले। डेहरी ओन सोन तक रास्ते में बातचीत।
डेहरी पर जयदयाल पैदल स्टेशन आया था। डेरे पर चले। रामकिसनजी मिले।
पटना, बनारस टलीफोन किया। राजेन्द्र बाबू का स्वास्थ्य ठीक था। वह डेलांग जायेंगे, गुप्ताजी की स्त्री का स्वास्थ्य आदि की बातें।
रामकृष्ण से बच्छराज कंपनी, हिन्दुस्तान शुगर, हिन्दुस्तान हाउसिंग, मुकन्द आयर्न वर्क्स आदि पर विचार विनिमय। रामकृष्ण ने बिहार मिनिस्ट्री की शिकायत की। तारा की सगाई के बारे में बातें। महाबीर की सगाई राजगढ़ियों के यहां हो गई।
चि० रमा व प्रभात मिले। चर्खा व चि० शांतीप्रसाद, जयदयाल से बहुत देर तक बातचीत। त्रियकलाल शाह, तथा अन्य व्यापार सम्बन्ध में।
सिमेंट फैक्टरी देखी। पेपर मिल्स व पावर हाउस भी बाहर से देखा।
शाम को—स्टाफ के लोगों ने मानपत्र दिया। उनके सामने मालिक व काम करने वाले के सम्बन्ध के बारे में जो कहना था सो कहा। शाह के घर पर गये।

डालमिया नगर, बनारस, २०-३-३८

मोतीलालजी झुनझुनवाले, परमेश्वरी, आदि से बातचीत।
मजदूरों की सभा में थोड़ा परिचय। मजदूर व कांग्रेस नीति के बारे में कहा।
श्री ए० के० सराफ, जीवाप्रसाद आदि से मिलना।

देहरादून एक्सप्रेस से बनारस रवाना। सेकण्ड में भी भीड़ थी।
बनारस पहुंचे। यहां हिन्दू मुसलमान झगडा व कतल चालू है
शिवप्रसादजी गुप्त के यहां ठहरे। उनसे बातचीत।
महावीरप्रसादजी पोद्दार, बनारसीलाल बजाज, (परिवार सहित,) जौहरी व आबिद अली आये।
राजा ज्वालाप्रसाद से देर तक हिंदुस्तान हाउसिंग कम्पनी के बारे मे विचार-विनमय। उनकी राय रही कि ब्रांच बन्द न की जाये। ईमानदार व होशियार व्यापारी लाईन के आदमी के चार्ज मे दी जाये। इंजीनियरिंग काम वे सभाल लेंगे इत्यादि।

बनारस, २१-३-३८

प्रार्थना। महावीरप्रसाद पोद्दार से बातचीत। बाद मे श्री भगवानदासजी (गुप्ताजी के जवाई) के पिता श्री वैद्यनाथदासजी (चीफ जज) बीकानेर, व उनके पुत्र व पौत्र श्री गोपीकृष्ण, सत्यनारायण प्रसाद व केदारनाथदास, आदि के साथ गगास्नान बातचीत-परिचय।
श्री चद्रभाल जौहरी व आबिद अली से हाउसिंग कम्पनी के बनारस ब्राच के सम्बन्ध मे बातचीत। आखिर यह निश्चय हुआ कि श्री जौहरी को मुक्त कर दिया जाय, यानी उनका कम्पनी से किसी प्रकार का भी सम्बन्ध न रहे, व एक बार जो काम हाथ मे है वह पूरा किया जाय। बाद मे भविष्य का विचार किया जावे। शाम को हाउसिंग के ऑफिस मे गये। के० नायर इंजीनियर से बातचीत। गौरी शकर से भी। एक मकान भी देखा।
श्री अधिकारी एक मित्र को लेकर मिले।
बनारसी लाल बजाज के घर गये।
पार्सल एक्सप्रेस द्वारा ६-४० को इन्टर से लखनऊ रवाना हुए। श्री ज्योतिभूषण, आबिद अली साथ मे।

लखनऊ-गोलागो कर्णनाथ, २२-३-३८

लखनऊ पाच बजे पहुंचे। मोटर से गोला फार्म ६। बजे करीब पहुंचे।
रामेश्वर से मिल की स्थिति समझी।
हरगाव से चूडीवाला व दूसरे काम करने वाले आये थे।
केशवप्रसाद तिवारी, धर्माधिकारी, निर्भयराम की लडकी व उर्मिया आदि

से मिलना।
मि० गिल्डर से देर तक मिल के बारे में बातचीत।
रामेश्वर व आनन्दकुमार आदि से बातें।

गोलागोकर्णनाथ-लखनऊ, २३-३-३८

मिल अंदर से घूमकर देखी।
चि० रामेश्वर से मिल की व्यवस्था व खर्च के सम्बन्ध में सुबह व दोपहर को विचार-विनिमय किया। नोट किये। मि० गिल्डर, गनी, जोशी आदि से बातचीत।
रामेश्वरदासजी बिड़ला का टेलीफोन आने से बनारस जाने का निश्चय किया। बाद में मालूम हुआ कि वह नहीं जा रहे हैं। चर्चा।
५॥ के करीब चि० ज्योतिभूषण के साथ मोटर से लखनऊ रवाना हुए।
रास्ते में ज्योतिभूषण से बातचीत।
लखनऊ पहुंचे। श्री पन्तजी घर पर नहीं मिले। घूमने चले गये थे।

बनारस, २४-३-३८

प्रार्थना। जौनपुर में हिन्दुस्तान हाउसिंग कम्पनी वाले श्रीयशवंत शहा (पटनावाले) मिलने आये। बातचीत करने से होशियार आदमी मालूम हुए।
बनारस पहुंचे। गुप्ताजी के यहां सेवा उपवन गये। शिवप्रसादजी से देर तक बातचीत।
जौहरी (दोनों भाई) व आबिदअली आये। दोनों भाइयों से बहुत साफ-साफ बातचीत हुई। मैंने मेरी कल्पना व विचार बिलकुल स्पष्ट तौर से उन्हें बतला दिये।
भगवानदासजी से गोपीकृष्ण व सत्यनारायण प्रसाद के शिक्षा-कार्य आदि की बातें।
पंजाब मेल से सैकण्ड में कलकत्ता के लिए रवाना।

कलकत्ता, २५-३-३८

प्रार्थना। सुबह ७ बजे हावड़ा पहुंचे। लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार के यहां, २५ राजा सन्तोष रोड अलीपुर में, ठहरे।
स्नान कर श्री सीतारामजी सेकसरिया से मिले। वहीं भोजन, आराम,

बातचीत।
मुन्नालालजी, बुद्धिसेन मिले। आर्थिक अड़चन बतलाई।
सुभाष बाबू से मिलना-बातचीत।
घर लौटकर चर्खा।
पुरी एक्सप्रेस से डेलांग जाने की तैयारी।

बेरबोई (डेलांग), २६-३-३८

प्रार्थना। डेलांग से उतरकर पैदल बेरबोई गांधी सेवा संघ कान्फ्रेंस में पहुंचे। साथ मे लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार, महावीरप्रसादजी पोद्दार, रामकुमारजी केजड़ीवाल, हीरालालजी सराफ आदि थे।
गांधी सेवा संघ की कार्यकारिणी-सुबह ८ से १०। कान्फ्रेंस ३-५।
बापूजी के साथ घूमना। थोड़ी बातें।
रात मे गांधी सेवा संघ कान्फ्रेंस ७॥ से ६॥ तक।
जमीन पर सोया।

बेरबोई (डेलांग), २७-३-३८

मैदान मे दूर महावीरप्रसाद पोद्दार के साथ निपटने गये।
'गांधी सेवा संघ' की कार्यकारिणी की सभा, सुबह ८-१० व शाम को ७॥ से ६॥ दोपहर को कान्फ्रेंस ३ से ५ तक हुई।
रामकुमार केजड़ीवाल ने, सौ रुपये मासिक मार्च १९३८ से, जब तक जिंदा रहे या वह मोटर गाड़ी रखने की ताकत रखे तबतक, चालू रखने का इरादा बतलाया।
हिन्दी प्रचार सभा। जाहिर व्याख्यान राजेन्द्र बाबू, काका साहब व मैं, थोड़ा बोले। प्रदर्शनी देखी।

बेरबोई (डेलांग), २८-३-३८

परिश्रम के काम मे एक घंटा करीब लगा।
गांधी सेवा संघ की कार्य कारिणी कमेटी ८-१० तक हुई। व दोपहर को १॥। से ३॥ तक भोजन, आराम। चर्खा, यज्ञ १-१॥ तक।
कान्फ्रेंस ३ से ५ तक।
[illegible] ने, हिन्दू-मुस्लिम-दंगे के बारे मे जो प्रस्ताव रखा था मेरी शंकाओं का समाधान करते हुए करीब एक घंटे भाषण

बातचीत।
मुरलालालजी, बुद्धिसेन मिले। आर्थिक अड़चन बतलाई।
सुभाष बाबू से मिलना-बातचीत।
घर लौटकर चर्चा।
पुरी एक्सप्रेस से डेलांग जाने की तैयारी।

बेरबोई (डेलांग), २६-३-३८

प्रार्थना। डेलांग से उतरकर पैदल बेरबोई गांधी सेवा संघ कान्फ्रेंस में पहुंचे।
साथ मे लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार, महावीरप्रसादजी पोद्दार, रामकुमारजी केजड़ीवाल, हीरालालजी सराफ आदि थे।
गांधी सेवा संघ की कार्यकारिणी-सुबह ८ से १०। कार्फेंस ३-५।
बापूजी के साथ घूमना। थोड़ी बातें।
रात मे गांधी सेवा संघ कान्फ्रेंस ७।। से ६।। तक।
जमीन पर सोया।

बेरबोई (डलांग), २७-३-३८

मैदान मे दूर महावीरप्रसाद पोद्दार के साथ निपटने गये।
'गांधी सेवा संघ' की कार्यकारिणी की सभा, सुबह ८-१० व शाम को ७।। से ६।। दोपहर को कार्फेंस ३ से ५ तक हुई।
रामकुमार केजड़ीवाल ने, सौ रुपये मासिक मार्च १६३८ से, जब तक जिंदा रहे या वह मोटर गाडी रखने की ताकत रखे तबतक, चालू रखने का इरादा बतलाया।
हिन्दी प्रचार सभा। जाहिर व्याख्यान राजेन्द्र बाबू, काका साहब व मैं, थोडा बोले। प्रदर्शनी देखी।

बेरबोई (डेलांग), २८-३-३८

परिश्रम के काम में एक घंटा करीब लगा।
गांधी सेवा संघ की कार्य कारिणी कमेटी ८-१० तक हुई। व
१।।। से ३।। तक भोजन, आराम। चर्खा, मज्ञ १-१।। ...
कार्फेंस ३ से ५ तक।
प्रार्थना के बाद बापू ने, हिन्दू-मुस्लिम-दंगे के बारे ...
उस बारे मे, मेरी शंकाओं का समाधान करते

वर्किंग कमेटी सुबह ८-११।। व तीसरे पहर २-७ तक हुई। २ से ५ तक बापूजी के साथ नागपुर का शरीफ-प्रकरण चला। सुबह सुभाष बाबू के घर डा० खरे ने जो परिस्थिति कही थी, उससे तो स्थिति एकदम बदली हुई मालूम हुई। विचार-विनिमय।

बापूजी के सामने मैंने मि० शरीफ को यहां बुलाने के बारे में जो विचार कहे वह सरदार को बिलकुल पसन्द नहीं आये। और कई मित्रों को बहुत पसन्द आये—खरे, जयरामदास आदि को। स्नान भोजन आदि।

शाम को सीतारामजी के यहां भोजन। डेडराजजी को मुरलीलालजी के कर्ज के बारे में समझाना व भागीरथजी से कहना। भागीरथजी व सीतारामजी से मित्र धर्म व पैसे के व्यवहार पर चर्चा।

लक्ष्मणप्रसादजी, सावित्री, उर्मिला बहन से बातें।

कलकत्ता, ४-४-३८

वर्किंग कमेटी ८।। से ११।। व दोपहर को २ से ४।। बजे तक, वहां रहा। बाद में पू० बापूजी से मिला। चि० सावित्री, वगैरा को मिलाया।

सीतारामजी से मिलकर हावड़ा स्टेशन। श्री सुभाष बाबू व मौलाना का आग्रह था कि मैं न जाऊं, परन्तु जाना तो था ही—नागपुर के मामले में सरदार का रुख देखकर भी जाना ही उचित समझा।

हावड़ा—चि० सावित्री, उर्मिलाबहन व उमा पहुंचाने आये। उन्हें बाहर से भेज दिया। बाद में अन्य मित्र लोग आये। बातचीत। थर्ड क्लास से वर्धा रवाना। दामोदर, विट्ठल, साथ में थे। शकरलाल बैंकर भी साथ थे।

वर्धा, ५-४-३८

शकरलाल बैंकर से बातचीत। वर्किंग कमेटी में त्यागपत्र देने के बारे में खूब विचार-विनिमय के बाद यही विचार रहा कि आज तो तार से त्यागपत्र न भेजें।

नागपुर के शरीफ प्रकरण के बारे में मैंने कलकत्ता में, बापू के सामने ३ ता० की वर्किंग कमेटी में जो यह राय दी थी कि, डा० खरे का खुलासा सुनने के बाद मेरी यह राय हुई है कि, अब हम इस स्थिति में विशेष ज्यादा कुछ नहीं कर सकते, क्योंकि पार्टी मीटिंग में सर्वानुमति से उन्हें माफी दे

मुन्दन गुप्त मालूम हुआ। जमीन बेचने का निश्चय। श्री जगन्नाथजी अगरवाल टाटा नगरवाला (नरसींग कपनी) वालो से मिलना। व्यवस्था करने का विचार।

१-४-३८

प्रार्थना। स्वास्थ्य साधारण। धन्नू दानी, पूर्णचन्द्र बजाज, कौशल्या, चि० हेडराजजी सेतान आदि मिलने आये। हेडराजजी व मुन्नालालजी की आर्थिक स्थिति के बारे मे बात की। उन्हे थोड़ा समझाया। सिन्दीया वाले मास्टर व गगन बिहारी मिलने आये। वकिंग कमेटी के ठहराव के बारे मे बातचीत। शकरलाल बैंकर व प्रफुल्लचन्द्र घोष भी आये।

२। से ८ तक वकिंग कमेटी का कार्य हुआ—सुभाष बाबू के घर, एलगिन रोड पर।

घनश्यामदासजी बिड़ला से मिलना। बातचीत। फल वगैरा लिये। स्वास्थ्य नरम मालूम हुआ। १०।। बजे रात को सोया।

कलकत्ता २-४-३८

चि० मदालसा व महादेवी के पत्र के कारण फिर से थोडी चिन्ता हुई। मन व स्वास्थ्य पर भी थोडा परिणाम।

वकिंग कमेटी ८-११।। व १ से ६ तक सुभाष बाबू के घर पर हुई। विदेशी कम्पनी के बारेमे हमारी नीति का ठहराव, विचार विनिमय के बाद, पास हुआ।

जवाहरलालजी भोज के लिए लक्ष्मणप्रसादजी के यहां आये। भोजन, विनोद।

शाम को थोडी देर लेक पर घूमने गये। बालक वहा मिले।

सीतारामजी से बातचीत। नवल-(धर्मचन्द) (मणीभाई कोनरी) बालक व मोहन मिलने आये।

मकई के सिट्टे खाये।

कलकत्ता,३-४-३८

रामदेवजी चोखानी, ईश्वरदासजी जालान आये। देशी रियासतो के बारे में वकिंग कमेटी मे विचार।

घनश्यामदास व ब्रिजमोहन से मिलना।

डा० दास (होमियोपैथ) आये। बम्बई सरकार जो ,बिल पास करना चाहती है उस बारे मे बातें।

थोडी देर खेलना। बाद मे ऊपर सोने जाना। कई कारणो से प्राय. रात भर सो नही सका।

८-४-३८

फतेचन्द झुनझुनूवाले से बातचीत।

जानकी से करीब साढे तीन घटे बातचीत। उसका दु ख मानसिक चिंता का कारण धीरज के साथ सुना। दु ख भी हुआ। आखिर मे उससे कहा तुम अपनी योजना देखो। उस प्रकार चलने का प्रयत्न किया जावे आदि। साथ मे भोजन किया।

कमला मेमोरियल सब-कमेटी की सभा हुई। डा० जीवराज मेहता, पूर्णिमा बहन, भूता, आर्किटेक्चर दिक्षित आये।

वैकुंठभाई मेहता व उनके घर के लोग आये।

९-४-३८

जानकी देवी के साथ विचार-विनिमय।

कई प्रकार के विचार अधिक पैदा होते रहे। उत्साह व रस नही मालूम होता।

उपाय सोचता रह गया और दिन उग गया। चि० राधाकृष्ण रुइया आया।

मदन आदि की स्थिति कही। राधाकृष्ण वर्धा से आया।

मि० नरीमन (नेचर क्योअर वाले) के यहा मालिश व स्टीम बाथ लिया।

आज से तीन रोज अनाज न खाने का विचार किया।

सुव्रता बहन रुइया मिलने आई। देर तक बातचीत।

१०-४-३८

सुबह जानकी देवी से बहुत देर तक उसके मन की स्थिति, धीरज, शान्ति के साथ सुनी।

भाग्यवती व यशोदा देवी आये।

मुकन्दलाल, जमनादास गाधी, केशवदेवजी, चिरजीलाल, ब्रिजमोहन, हरजीवनभाई आये।

ी गई, व मिनिस्टरो की सयों की भी यही राय है। तब फिर शरीफ को ुलाने से लाभ क्या ? इससे सरदार वल्लभ भाई नाराज हो गये, ऐसा ालूम हुआ था; परन्तु आज सुबह जब ज्यादा हाल मालूम हुआ तो रायपुर बापू व सुभाष बाबू को एक्सप्रेस तार दिया कि मेरी राय का विचार नही किया जाय।

ागपुर मे सर पटवर्धन, सोनक वगैरा मिले।

र्धा पहुंचे। तार पत्र पढे।

वर्धा ६-४-३८

कशर व बाद मे राधाकृष्ण से बातें करके स्नान आदि के बाद घूमने गये। कशर, नर्मदा साथ मे। प्रह्लाद की दादी को साथ रखने व श्रीराम की गाई आदि की बातें। आश्रम वगैरा घूमकर आया। नर्मदा के शेअर का ैसला राधाकृष्ण के साथ।

म्बई जाने की तैयारी। जाजूजी व किशोरलाल भाई से देर तक वर्किंग कमेटी के त्यागपत्र, सरदार से मतभेद आदि की व मानसिक दुर्बलता का ाल कहा।

ागपत्र नही देने की दोनो ने राय दी। विचार करना। डा० महोदय से रीफ आदि घटना के बारे मे बातचीत की।

ागपुर मेल से थर्ड में बम्बई रवाना। ब्रिजलाल बियाणी व उनकी स्त्री से ोडी देर बातचीत। भीड़ मे ही सोया।

जुहू, ७-४-३८

दर उतरे।

शवदेवजी से डायरेक्टर्स, मुकन्द आयर्न वर्क्स, हिंदुस्तान शुगर आदि के ारे मे बातचीत।

कन्दलालजी (लाहोरवाले) व जमनादासभाई से लोहे की कम्पनी के बारे विचार-विनिमय।

मेश्वरजी बिड़ला (परिवार सहित) आये। भोजन सब लोगों के साथ। ातचीत। ब्रिज।

ष्ण कुमार के स्वास्थ्य का विचार। डा० जीवराज मेहता भी आये। ानकी देवी के बारे मे विचार-विनिमय।

१३-४-३८

जानकी व बच्चों से बातचीत। मि० रामगोपाल गाडोदिया आया। [illegible] आदि के बारे।

घनश्यामदासजी व रामेश्वरदासजी बिड़ला आये। बातचीत, विचार-विनिमय।

केशवदेवजी, गोविंदजी, मुरारीभाई से हार्डिंग के बारे में बातचीत।

१४-४-३८

केशव, रामेश्वर, पन्ना, प्रह्लाद, श्रीराम, वगैरा आये, समुद्र स्नान, भोजन। आज जानकी का व्यवहार इन लोगों के साथ बहुत ही सन्तोष कारक रहा।

लादूरामजी जोशी जयपुर से आये। उन्होंने सारी स्थिति समझाई।

सर पुरुषोत्तम, घनश्यामदास बिड़ला, कस्तूरभाई आदि से देर तक राजनैतिक व व्यापारिक चर्चा। मैंने अपने विचार कहे।

मि० ए० के० दलाल व सर नौरोजी से जमशेदपुर व वर्तमान स्थिति पर देर तक बातचीत।

जुहू आकर भी घनश्यामदास व रामेश्वरदास बिड़ला से देर तक बातचीत। भोजन, ब्रिज।

१५-४-३८

मुकन्दलालजी पित्ती मिलने आये। घर की स्थिति मतभेद का वर्णन किया।

१ बजे करीब जानकी देवी से बिदा लेकर माटुंगा होते हुए बिड़ला हाउस करीब दो बजे पहुंचे।

बिड़ला हाउस में राजस्थानी मण्डल के कार्य पर विचार-विनिमय।

जिन प्रान्तों में राजस्थानी बसे हुए हैं वहां उन्हें उस प्रान्त की सब प्रकार की बेहतरी में पूरा हिस्सा व प्रेम रखने को मैंने कहा। राजस्थानी रियासतों में भी जवाबदार राज्य-पद्धति दाखल कराने का प्रयत्न करना।

पेरीन बहन से हिन्दी-प्रचार वगैरा के बारे में बातें। स्टेशन।

बोरी बन्दर से सेकण्ड में केशवदेवजी के साथ। फतेचन्द व उसकी लड़की नासिक तक साथ रवाना हुए।

मुकन्द आयर्न वर्क्स की बोर्ड की सभा हुई। रामेश्वरजी, बिड़ला, मैं, मुकन्दलाल थे। केशवदेवजी व जमनादास भाई भी थे।
जमनालाल सन्स की बोर्ड की सभा हुई। मदालसा, उमा और मैं व केशवदेवजी, चिरंजीलाल तथा जगन्नाथ मिश्र थे।

११-४-३८

सुबह जानकी देवी, मदालसा, उमा, रामकृष्ण, दामोदर वगैरा मिलकर घर के लोगों के स्वभाव के नंबर लगाये।
समुद्र स्नान। बाद मे जानकी देवी ने अपना आखिरी फैसला किया कि मैं उसे एक वर्ष तक तो केशर, नर्मदा से बोलने या प्रेम करने के लिए नही कहूं। वे आवें और जानकी उनसे न बोले तो मैं नाराज न होऊं। उन्होंने अपना सात वर्ष का दु ख, गैर समझ, आपस की वर्णन इन तीन दिनो में पूरी बताई। वर्धा मे मा के पास वह लोग मां की इच्छा हो तब आ सकते है। वहां भी जानकी रहे तो उसे बोलने के लिए दबाया न जावे।
माटुंगा जाकर केशर, नर्मदा, पन्ना को थोडे मे स्थिति समझा कर कही। केशर की भी पूरी भूल दिखाई दी। पन्ना को भी न आने को समझाया, उसके ध्यान मे नही आया।
डॉ० रज्जबअली जुहू देखने आ गये थे इसलिए वहा से जल्दी वापस आना पडा। उसने तपासा। जानकी देवी, मदालसा, महादेवी को भी तपासा, हालत कही। डा० दास (होमियोपैथ) आये। देर तक बम्बई सरकार व नया एक्ट के बारे मे बोलते रहे।

१२-४-३८

श्री नागेश्वर राव पन्तलू का स्वर्गवास होने के समाचार पढे। सज्जन पुरुष थे।
सुव्रताबाई आई। मदन, राधाकृष्ण, ज्ञान मंदिर आदि के संबंध मे विचार-विनिमय।
प्राणलाल, देवकरण नानजी, मथुरादास, जमनादास, केशवदेवजी, मुकन्दलाल आदि से देर तक बातचीत। इन्हे डायरेक्टर लेने को कहा। विचार करके जवाब देंगे।
घूमना

१३-४-३८

जानकी व बच्चों से बातचीत। मि० रामगोपाल गाडोदिया आया। हरजीवनभाई आदि से बातें।

घनश्यामदासजी व रामेश्वरदासजी बिड़ला आये। बातचीत, विचार-विनिमय।

केशवदेवजी, आबिदअली, मूलजीभाई से हाउसिंग के बारे में बातचीत।

१४-४-३८

केसर, नर्मदा, पन्ना, प्रह्लाद, श्रीराम, वगैरा आये, समुद्र स्नान, भोजन। आज जानकी का व्यवहार इन लोगों के साथ बहुत ही सन्तोष कारक रहा।

नाथूरामजी जोशी जयपुर से आये। उन्होंने सारी स्थिति समझाई।

सर पुरुषोत्तम, घनश्यामदास बिड़ला, कस्तूरभाई आदि से देर तक राजनैतिक व व्यापारिक चर्चा। मैंने अपने विचार कहे।

मि० ए० के० दलाल व सर नौरोजी से जमशेदपुर व वर्तमान स्थिति पर देर तक बातचीत।

जुहू आकर भी घनश्यामदास व रामेश्वरदास बिड़ला से देर तक बातचीत। भोजन, ब्रिज।

१५-४-३८

मुकन्दलालजी पित्ती मिलने आये। घर की स्थिति मतभेद का वर्णन किया।

१ बजे करीब जानकी देवी से विदा लेकर माटुंगा होते हुए बिड़ला हाउस करीब दो बजे पहुंचे।

बिड़ला हाउस में राजस्थानी मण्डल के कार्य पर विचार-विनिमय।

जिन प्रान्तों में राजस्थानी बसे हुए हैं वहां उन्हें उस प्रान्त की सब प्रकार की बेहतरी में पूरा हिस्सा व प्रेम रखने को मैंने कहा। राजस्थानी रियासतों में भी जवाबदार राज्य-पद्धति दाखल कराने का प्रयत्न करना।

पेरीन बहन से हिन्दी-प्रचार वगैरा के बारे में बातें। स्टेशन।

बोरी बन्दर से सेकण्ड में केशवदेवजी के साथ। फतेचन्द व उसकी लड़की नासिक तक साथ रवाना हुए।

मुकन्द आयर्न वर्क्स की बोर्ड की सभा हुई। रामेश्वरजी, बिड़ला, मैं, मुकन्दलाल थे। केशवदेवजी व जमनादास भाई भी थे।
जमनालाल सन्स की बोर्ड की सभा हुई। मदालसा, उमा और मैं व केशवदेवजी, गिरजीलाल तथा जगन्नाथ मिश्र थे।

११-४-३८

सुबह जानकी देवी, मदालसा, उमा, रामकृष्ण, दामोदर वगैरा मिलकर घर के लोगों के स्वभाव के नबर लगाये।
समुद्र स्नान। बाद में जानकी देवी ने अपना आखिरी फैसला किया कि मैं उसे एक वर्ष तक तो केशर, नर्मदा से बोलने या प्रेम करने के लिए नहीं कहू। वे आवें और जानकी उनसे न बोले तो मैं नाराज न होऊं। उन्होंने अपना सात वर्ष का दुःख, गैर समझ, आपस की वर्णन इन तीन दिनों में पूरी बताई। वर्धा में मां के पास वह लोग मां की इच्छा हो तब आ सकते हैं। वहा भी जानकी रहे तो उसे बोलने के लिए दबाया न जावे।
माटुंगा जाकर केशर, नर्मदा, पन्ना को थोड़े में स्थिति समझा कर कही। केशर की भी पूरी भूल दिखाई दी। पन्ना को भी न आने को समझाया, उसके ध्यान में नहीं आया।
डॉ० रज्जबअली जुहू देखने आ गये थे इसलिए वहा से जल्दी वापस आना पड़ा। उसने तपासा। जानकी देवी, मदालसा, महादेवी को भी तपासा, हालत कही। डा० दास (होमियोपैथ) आये। देर तक बम्बई सरकार व नया एक्ट के बारे में बोलते रहे।

१२-४-३८

श्री नागेश्वर राव पन्तलू का स्वर्गवास होने के समाचार पढ़े। सज्जन पुरुष थे।
सुव्रताबाई आई। मदन, राधाकृष्ण, ज्ञान मंदिर आदि के संबंध में विचार-विनिमय।
प्राणलाल, देवकरण नानजी, मथुरादास, जमनादास, केशवदेवजी, मुकन्दलाल आदि से देर तक बातचीत। इन्हे डायरेक्टर लेने को कहा। विचार करके जवाब देंगे।
घूमना

१३-४-३८

जानकी व बालकों से बातचीत। मि० रामगोपाल गाडोदिया आया। हरजीवनभाई आदि से बातें।

घनश्यामदासजी व रामेश्वरदासजी बिड़ला आये। बातचीत, विचार-विनिमय।

वैकुण्ठदेवजी, कांतिदासजी, मूलजीभाई से हाउसिंग के बारे में बातचीत।

१४-४-३८

केशर, नर्मदा, पन्ना, प्रह्लाद, श्रीराम, वगैरा आये, समुद्र स्नान, भोजन। आज जानकी का व्यवहार इन लोगों के साथ बहुत ही सन्तोष कारक रहा।

साद्दुरामजी जोशी जयपुर से आये। उन्होंने सारी स्थिति समझाई।

सर पुरुषोत्तम, घनश्यामदास बिड़ला, कस्तूरभाई आदि से देर तक राजनैतिक व व्यापारिक चर्चा। मैंने अपने विचार कहे।

मि० ए० के० दलाल व सर नौरोजी से जमशेदपुर व वर्तमान स्थिति पर देर तक बातचीत।

जुहू आकर भी घनश्यामदास व रामेश्वरदास बिड़ला से देर तक बातचीत। भोजन, ब्रिज।

१५-४-३८

मुकन्दलालजी पित्ती मिलने आये। घर की स्थिति मतभेद का वर्णन किया।

१ बजे करीब जानकी देवी से बिदा लेकर माटुंगा होते हुए बिड़ला हाउस करीब दो बजे पहुंचे।

बिड़ला हाउस में राजस्थानी मण्डल के कार्य पर विचार-विनिमय।

जिन प्रान्तों में राजस्थानी बसे हुए हैं वहां उन्हें उस प्रान्त की सब प्रकार की बेहतरी में पूरा हिस्सा व प्रेम रखने को मैंने कहा। राजस्थानी रियासतों में भी जवाबदार राज्य-पद्धति दाखल कराने का प्रयत्न करना।

पेरीन बहन से हिन्दी-प्रचार वगैरा के बारे में बातें। स्टेशन।

बोरी बन्दर से सैकण्ड में केशवदेवजी के साथ। फतेचन्द व उसकी लड़की नासिक तक साथ रवाना हुए।

पुलगांव, सोनेगांव, वर्धा, १६-४-३८

केशवदेवजी से थोड़ी बातें।

पुलगांव-उतरकर जल्दी स्नान आदि से निबटकर मोटर से सोनेगांव खा
यात्रा में शामिल। विनोबा का भाषण मार्मिक हुआ—खादी के साथ वहां
के बारे में। चर्खा-यज्ञ। एक घंटा काता।

सोने गांव से ४ बजे के बाद रवाना होकर देवली होते हुए। वर्धा। स्टेशन
ग्रान्ट ट्रंक से बापूजी देहली से वर्धा आये।

उन्हें सेगांव के आधे रास्ते तक पहुंचाकर वापस आया।

वर्धा, १७-४-३८

श्री रविशंकर शुक्ल मिलने आये। थोड़ी बात हुई। बाकी की सोनेगांव से वापस आने पर।

श्री घनश्यामदासजी बिड़ला बम्बई से आये।

जल्दी भोजन करके सोनेगांव गया।

शेतकरी परिषद (तालुका) में थोड़ी देर बैठना।

प्रांतीय कांग्रेस कमेटी का काम साढ़े पांच घंटे तक चला। महत्व की चर्चा, ठहराव आदि पास हुए। एक प्रकार से तो मेम्बरों का वर्ताव ठीक मालूम हुआ। परन्तु प्रान्तीय कमेटी में चार सदस्य नियुक्त करने का अधिकार सभापति को न देना ठीक नहीं मालूम हुआ।

वर्धा पहुंचे। शुक्लजी व मिश्र दोनों, बहुत देर तक अन्दर की परिस्थिति का परिचय कराते रहे। मैंने भी साफ-साफ जो कहना था कहा। इन्होंने स्टेटमेन्ट ठीक करके प्रेस में भेज दिया।

वडकश वकील से सावधान केश की बातें।

१८-४-३८

राधाकृष्ण व घनश्यामदासजी के साथ थोड़ा घूमना।

घनश्यामदासजी बिड़ला कलकत्ता गये।

डा० सौन्दरम् व केशवदेवजी आये।

महिला आश्रम का काम, माता व भागीरथी बहन के साथ मिलकर, किया।

मि० महाजन व साठे मिलने आये।

केशवदेवजी से हाउसिंग, शंकर मिल, वगैरा के बारे में बातचीत।
नागपुर प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का काम, पटवर्धन, घटवाई, बाबा सा० कारन्दीकर आदि के साथ अढ़ाई घंटे तक चला। पूनमचंद रांका, पुखराज (चान्दावालो) की दरख्वास्तों का फैसला।
सेगांव गये। प्रार्थना, बाद में बापू का मौन खुलने पर थोड़ी देर बातचीत। डा० सौन्दरम साथ थे।
डा० सौन्दरम ने तमिल व हिन्दी के सुन्दर भजन सुनाये।

१९-४-३८

डा० सौन्दरम, सत्यदेवजी, उनकी स्त्री, राधाकृष्ण व अनुसूया मिलकर पवनार गये।
विनोबा से देर तक विचार-विनिमय। मानसिक अशान्ति, रमण महर्षि आदि।
महिला आश्रम में कु० ज्योत्स्ना, शिक्षिका व अन्य लड़कियों से बातचीत।
यादवजी वैद्य व श्री दवे (बम्बई वाले) वैद्य नागपुर से आये। उनसे बातचीत। उन्हें लेकर सेगांव जाना।
बापू से करीब सवा घंटा बातचीत—जयपुर प्रजामण्डल व खादी प्रदर्शनी, वर्किंग कमेटी, स्वास्थ्य व मानसिक स्थिति, महिला मण्डल व परीक्षा, मानसिक अशान्ति व महर्षि रमण इत्यादि बातों पर विचार-विनिमय।
महिला आश्रम में भोजन; प्रार्थना। बहिनों ने धोती जोड़ा दिया, लेने का साहस कम था।
बाबा साहब, श्रीमन्, सत्यनारायणजी से हिन्दी-प्रचार आदि के सम्बन्ध में देर तक बातचीत।

२०-४-३८

मारवाड़ी शिक्षा मण्डल, नव भारत विद्यालय, महिला आश्रम व परीक्षा के बारे में श्रीमन् से बातें।
राधाकिसन, दिनकर पाण्डे, बाबासाहब से द्वारकानाथजी हरकरे के बारे में बातें। दुःख व विचार। मैंने विशेष भाग न लेने का निश्चय किया।
सावधान-केस के कागजात देखे। शंकरलाल बैंकर, जाजूजी आदि से बातें।

पत्र-व्यवहार, भोजन, आराम।
मुकुन्दजी व मित्र नागपुर से आये। रात में देर तक उनसे बातचीत। गोविन्ददासजी के बारे में भी।

२१-४-३८

बापूजी सेगांव से आये। पर थके हुए मालूम हुए। उनका भाषण। उन्होंने आज 'विद्यार्थी-मन्दिर' योजना के अंतर्गत स्कूल का शिलान्यास व ट्रेनिंग स्कूल का उद्घाटन किया।
श्री मुकुन्द व मित्र का घर पर चाय-पानी हुआ।
ग्राम उद्योग संघ की ट्रस्ट-कमेटी की बैठक हुई। जाजूजी, कुमारप्पा, वैकुंठभाई और मैं थे।
आज सावधान-केस में विभाग-विरुद्धाभिनेशन थी, वहां तैयारी करके जाना पड़ा। थोड़ी देर गवाही होकर डिस्चार्ज मिला।
घर आकर सोया।
महिला आश्रम की सभा का कार्य। जाम का काम हाथ में लिया।

२२-४-३८

महिला आश्रम। कु० ज्योत्स्ना, दीनदयालजी, सुन्दरलाल मिश्र, उनकी स्त्री, दीनदयालजी की स्त्री के पत्र पर सत्यदेवजी से बहुत देर तक विचार-विनिमय होकर आखिर फैसला किया गया कि आगामी वर्ष से ज्योत्स्ना, सुन्दरलाल मिश्र व दीनदयालजी को 'मण्डल' व 'आश्रम' के काम से मुक्त किया जाय। मन पर विचार व चिन्ता।
बापू से सेगाव जाकर दिल खोलकर स्पष्ट तौर से मन की स्थिति व अपनी कमजोरी का वर्णन किया। बापू ने समझाया और अपनी स्थिति का वर्णन किया। किशोरलालभाई, राजकुमारी, प्यारेलाल, मीराबहन वगैरा भी वहा मौजूद थे। मन थोड़ा हलका भी हुआ व दु:ख भी हुआ।
रात के १० बजे तक विचार होता रहा। श्री कृष्ण प्रेस की सभा व अन्य कार्य हुआ। काफी थक गये।
बा वहीं सोईं।

वर्धा २३-४-३८

बा, सरस्वती, कान्ती वगैरा सेगाव गये।

नागपुर प्रान्तीय कमेटी की स्वागत का काम। शिक्षण बोर्ड का काम करने का शुरू हुआ। श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर ट्रस्ट की सभा हुई।
चिरंजीलाल, हरकचन्द का गुस्सा ली।
राजकुमारी अमृतकौर ने बापू के नेताओं लिखे नोट पढ़कर सुनाये।
प्यारेलाल ने बापू का वह स्टेटमेंट, जो उन्होंने जिन्ना की मुलाकात के बारे में दिया, सुनाया।
आशादेवी, सौन्दरम्, राजकुमारी, दादा सा० की पत्नी आदि से मामूली बातें।
राधाकृष्ण व पुष्कर बजाज से लेन-देन का पचनामा।
नागपुर मेल से बम्बई रवाना। सेकण्ड में जगह नहीं। पुलगाव से केशवदेवजी के साथ इन्टर में बैठे। बातचीत, रात में पूरी नींद नहीं आई।

जुहू, २४-४-३८

दादर उतरकर जुहू, हजामत व बाद में देर तक समुद्र-स्नान।
केशवदेवजी, प्रह्लाद, पन्ना व नाना रानीवाला आये, बातचीत।
सरदार वल्लभभाई, मालचन्द भाई, मणिलाल नानावटी वगैरा मिलने आये, देर तक बातचीत।

२५-४-३८

प्रार्थना। घूमना, जानकी, मदालसा, उमा, रामकृष्ण साथ में। बालादत्त रसोइया के बारे में चर्चा, दुःख। आखिर बालकों पर फैसला करना छोड़ा।
बम्बई में रामनारायणजी के बंगले पर सीकर की स्थिति पर डेपुटेशन आया। १२॥ बजे तक उनसे बातचीत। समझाया व उन्हें कहा कि सीकर रावराजाजी व वहां की जनता ने बड़ी भूल की है। अपने कार्यों से अपना मामला एकदम कमजोर व हानिकर कर लिया।
सुशीलाबहन के साथ भोजन, बातचीत—मदन व कान्ता के सम्बन्ध का खुलासा; राधाकृष्ण की सगाई, रामनारायण रुइया ज्ञान मंदिर के लिए पचास हजार की मदद व विचार-विनिमय।
गोविन्दलालजी पित्ती, शान्ताबहन, सुलभा, पद्मा वगैरा आये।
सरदार वल्लभभाई व कृपलानी से मिलना। सी० पी० (मध्य प्रांत)

नागरिक आये। मैसोनिक में ठहरने का निश्चय। यहां पहुंचने पर थकावट मालूम दी। थोड़ी देर हरिभाऊजी वगैरा से बात करके नि० मार्तण्ड से सस्ता साहित्य मंडल के बारे में बातचीत की। बाद में बिना नहाये-खाये सो गया।

जयपुर, १-५-३८

हरिश्चन्द्र, चिरंजीलाल अग्रवाल आदि मिलने आये। देर तक बातचीत। वनस्थली आश्रम की बालिकायें आईं।
हरिभाऊजी व कपूरचन्दजी से भाषण के बारे में बातचीत।
माधोलालजी चौधरी ने अपना दुःख कहा। रामनारायणजी, दुर्गाप्रसाद के व्यवहार व हरकतों का विचार। वह भी दुःखी थे। उनकी राय थी कि रामनारायणजी को अजमेर नहीं रहना चाहिए।
सीकर रावराजाजी को, सीकर जाने के बारे में, टेलीफोन से सन्देश दिया।
२-१० की गाड़ी से सीकर रवाना। रास्ते में चौमू के मुस्लिम कार्यकर्ता व बाद में जयपुर के वकील वगैरा मिले।
सीकर पहुंचे। कैप्टन वेब मिले। अन्य लोग भी मिले।
राणीजी का बहुत आग्रह होने के कारण डोडीयों पर जाकर आना हुआ।

सीकर, २-५-३८

कई लोग मिलने आये। उन्हें समझाया गया। राणीजी का सन्देश लेकर गौरीलाल बियाणी आये। उन्हें भी, मेरी राय जो थी वह स्पष्ट कहलाकर भेजी।
आज प्रजामण्डल का भाषण आखिरी रूप से तैयार करके जयपुर भेज दिया गया।
सीतारामजी, सागरमल, नगीखा आदि कई लोग मिलने आये।

३-५-३८

मोरों का नाच व खेल देखा।
हरिभाऊजी व रामसिंहजी रजपूत से बातें।
गाडोदा ठाकर मिलने आये। सागरमल बियाणी, सीतारामजी सोढाणी व हिन्दू सभा वाले आये।
जानकीदेवी वगैरा राणीजी से मिल आये। सीकर के कई खास-खास लोग

सीकर, बागी का बाग ४-५-३८

हरिभाऊजी गुप्त की गाड़ी में [illegible] रवाना हुवे।

बद्रीनारायण सोढाणी की बीमारी का सुन कर उनसे मिलने उनके घर गये। थोड़ी बातचीत।

रमाबाई जोशी ने अपनी आपबीती सुनाई। [illegible]। [illegible] मो० भार्गव, डाक्टर गुप्ता व [illegible] आदि के बारे में बातें।

बम्बई दुकान से तार आया कि श्रीनिवास रुइया की माता सुन्दरबाई का आज सुबह देहान्त हो गया। तार-पत्र भेज दिये।

मोटर से सब घर के, बागी के बाग गये। कुछ लोग जीण माता भी जाकर आये। वहां स्कूल का काम देखा। [illegible]जी, सीता, गुलाबचन्द से बातचीत।

५-५-३८

जयपुर प्राइममिनिस्टर का तार जुगल से आया। कुबेरदानजी वगैरा मिले। बद्रीनारायण व माधवप्रसाद विद्यार्थी से मैंने अपने विचार कहे।

चि० उमा घाघरा, ओढ़ना, पहनकर मारवाड़ी पोशाक में घूंघट निकाल कर आई। पहचान में नहीं आई। धोखा हुआ।

श्रीहीरालालजी वियाणी, बाबूजी विश्वेश्वरनाथजी, गोपीलालजी बियाणी आदि से मिलना हुआ। यहां की स्थिति के विषय में। कोर्ट खुलने चाहिए, यह राय सबों की हुई। मैंने भी जोर दिया।

सीकर-जयपुर, ६-५-३८

प्रहलाद वैद के घर पर, भोजन सुन्दर व प्रेमपूर्वक हुआ।

दोपहर की गाड़ी से सब साथ में जयपुर रवाना।

जयपुर स्टेशन पर स्वागत। इम्पीरियल होटल में ठहरे। कार्यकर्ताओं के

साथ प्रोसेशन के बारे में विचार-विनिमय देर तक हुआ। प्रोसेशन निकालने का फैसला। जयपुर सरकार की स्थिति समझी।

जयपुर, ७-५-३८

पूज्य बा, देवदासभाई, कान्ती, सरस्वती गाडोदिया देहली से आये।
प्रोसेशन बहुत सुन्दर ढंग से व उत्साहपूर्वक धूमधाम के साथ निकला।
ग्राम की प्रदर्शनी का उद्घाटन पू० बा-कस्तूरबा ने किया।
देवदास ने भी भाषण दिया। मि० यग भी आये थे। उनसे देर तक वहीं पर बातचीत। कल फिर मिलने का निश्चय।

८-५-३८

मि० यग से बहुत देर तक राजनैतिक, खासकर सीकर के सम्बन्ध में, विचार-विनिमय होता रहा। मैंने अपने मन का दर्द साफ तौर से कहा।
दो-अढाई घटे तक बातचीत। उसने भी प्रजामण्डल से पूरी सहानुभूति रखते हुए अपनी अडचनें बताई।
आखिर मे यहां से आकर पू० बापूजी को व जयरामदास को, न आने के बारे मे तार करना पडा।
विषय निर्वाचिनी समिति व वकिंग कमेटी का काम हुआ।
प्रजा मण्डल का खुला जलसा ठीक तौर से ७॥। बजे के करीब शुरू हुआ और ११ बजे पूरा हुआ। बीच मे थोडी गडबड गोपीलाल वगैरा ने की। बाद में शांति हो गई। जलसे की व्यवस्था वगैरा सब ठीक रही।

९-५-३८

रामबाग मे थोडा घूमना—पार्वती, गिरधारी (देहली वाले) साथ मे।
प्रजामण्डल की वकिंग कमेटी का कार्य व बाद के विषय-निर्वाचनी की सभा ११॥ से ५ बजे तक होती रही। सीकर ठहराव (प्रस्ताव) पर विशेष परिश्रम, विचार व प्रयत्न हुआ। आखिर रास्ता ठीक निकला।
प्रजामण्डल का जलसा साढे सात को शुरू हुआ। रात मे डेढ बजे बाद पूरा हुआ।
कार्य सतोषजनक रहा। खाली गोपीलाल शर्मा की गडबड के कारण कुछ समय बीच मे थोडी चिन्ताकारक स्थिति हो गई थी, सो बाद में सब ठीक हो गई।

पार्वती का भाषण बेमौके व लम्बा हुआ। वह अपनी आदत से लाचार है। श्री चिरंजीलाल (दोनों), पाटणी, हरिश्चन्द्र आदि के भाषण ठीक हुये। जनता ने ठीक भाग लिया।

जयपुर-सीकर, १०-५-३८

मि० एफ० एस० यंग से बातचीत। उन्होंने प्रजामंडल की सफलता पर बधाई दी।

सीकर की स्थिति पर विचार-विनिमय। उनकी इच्छा थी कि मेरा सीकर जाना हो सके तो बहुत उपयोगी होगा। मैंने कुछ महत्व की शर्तें रखीं। उन्होंने टेलीफोन से सर बीचम से उनकी स्वीकृति ले ली।

श्री हुकमचंदराय जेल सुपरिटेन्डेन्ट के आग्रह व प्रेम से जेल व पागलखाने का निरीक्षण किया।

दोपहर की गाड़ी से सीकर रवाना। रास्ते में विचार-विनिमय।

शाम को सीकर पहुंचे। इसी गाड़ी में श्री यंग व कौल भी थे।

सीकर में मित्रों से मिलना।

सीकर, ११-५-३८

सीकर की स्थिति पर विचार-विनिमय। बातचीत अलग-अलग और थोड़े-थोड़े समुदाय में भी करनी थी। समझाना भी था।

पूज्य मां, जानकी देवी, पार्वती, दोपहर की गाड़ी से जयपुर से सीकर पहुंचे। जनता ने उनका स्वागत किया।

मि० यंग से मिला। बहुत देर तक बातचीत, विचार-विनिमय। जनता में कोर्ट वालों के विरुद्ध जोश ज्यादा बढ़ा हुआ है। उसका खास कारण कोर्ट आफ वार्ड्स का जाहिर करना व राजाजी को पागल करार देना है।

श्री रावराजाजी को, कलकत्ता व बम्बई वगैरा मित्रों को तार भिजवाना।

१२-५-३८

यंग के साथ कोठी गये। सीकर की स्थिति पर देर तक विचार-विनिमय।

पूज्य मां, जानकी, पार्वती, गुलाब, रानी साहब से देर तक मिलकर आईं। उन्हें साफ-साफ समझाकर आये।

जनता की ओर से जो लोग यहां आये, उन्हें बहुत देर तक समझाया गया। उनकी शंकाओं को दूर किया गया।

श्री रामगोपालजी जाट सभा के मंत्री (अलीगढ़ वालों) से सुबह-शाम बातचीत।
मि० एफ० एस० यग से भी देर तक बातचीत। उन्हे यहा की हालत समझाई।
पान मार्ग लिखकर दी।
रात मे फिर बद्रीनारायण आदि से बातचीत।
पूज्य बा, पार्वती वगैरा काशी के बाग जाकर आये।

१३-५-३८

श्री बद्रीनारायण सोढानी आदि से बातचीत।
मि० एफ० एस० यग और कर्नल बी० एल० कौल, कोर्ट आफ वार्डस सु० डे०, से बहुत देर तक सीकर-स्थिति पर विचार-विनिमय। बिना बल प्रयोग किये स्थिति किस प्रकार काबू मे आ सकती है, इस सम्बन्ध मे मैंने अपने विचार कहे। शकाएं। बाद मे शाम को फिर उनका पत्र आया तो देर तक बातचीत। के० बँब भी शामिल हुआ। मैंने उसे खुद होकर त्यागपत्र देने की सलाह दी। थोडी चर्चा भी, परन्तु उन्होंने दिक्कतें पेश की।
सीकर के मानेजाने वाले नेताओ को खूब जोर के साथ व स्पष्ट तौर से समझाने का प्रयत्न किया। एक बार आशा भी हुई, परन्तु आखिर नतीजा नही निकला। मेरे विचार छपाकर बाटे भी गये। रात मे १२॥ बजे तक लोगो को समझाया गया। हीरालालजी शास्त्री ने भी खूब समझाया, परन्तु कोई परिणाम नही आया।

सीकर-जयपुर, सवाई माधोपुर, १४-५-३८

तीन बजे उठना। मुह-हाथ धोकर मि० यग से मिलना। बहुत देर तक बातचीत। उसे मारकाट व हिंसा न करने पर ठीक तौर से कहा। आज सीकर की जनता मेरी बात नही मानती है, पर उम्मीद है कि जल्दी ही मानेगी।
उसने कहा, कर्नल कौल की इच्छा है कि मैं यहा रहूं, परन्तु वकिंग कमेटी व अन्य कारणो से मेरा बम्बई जाना जरूरी है, यह समझाया।
रीगस से बा देहली गई। गुलाबचन्द पहुचाने गया।
जयपुर मे पहुचे। वहा से चिरजीलाल अग्रवाल, हरिश्चन्द्र, पाटणी, साथ

शाम को २ बजे से वर्किंग कमेटी बम्बई में, भूलाभाई के घर हुई। ५।। बजे तक वहां रहना।
श्री हरिभाऊजी के साथ जुहू। रास्ते में माटुंगा से उनका सामान लिया। केशर से मिले।
जुहू-प्रार्थना, बापू के पास।

१९-५-३८

बापू के पास वर्किंग कमेटी के खास-खास लोग आये। फ्रन्टियर, मैसूर, सीकर, जयपुर आदि के बारे में देर तक चर्चा-विचार।
राजाजी व डा० खान साहेब ने अपने घर भोजन-बातचीत की।
चि०शान्ता से मिलना। उसकी मां के मरने के बाद उससे आज ही मिलना हुआ।
राजेन्द्रबाबू बीमार हो गये। उन्हें डा० खान साहब के साथ देखा। श्री ढवले (नागपुर वालों) से बातचीत।
वर्किंग कमेटी ४-६।। तक हुई। सीकर व जयपुर की हालत का बयान लिखकर दिया और जबानी सुनाया।
जुहू में प्रार्थना। कई लोग मिलने आये थे। खेल-कूद।

२०-५-३८

पूज्य बापू के पास सुभाषबाबू, सरदार, मौलाना, जयरामदास, कृपलानी आदि से देर तक मैसूर, फ्रन्टियर, सी० पी०, कम्युनिस्ट आदि प्रश्नों पर विचार-विनिमय।
सरदार व किशोरलालभाई के साथ बातचीत। सरदार, राजाजी, मौलाना आदि मित्रों का सी० पी० की स्थिति पर मुझे जबाबदारी लेने का आग्रह। मैंने अपनी कमजोरी व स्थिति साफ की।
किशोरलालभाई, हरिभाऊजी के साथ श्री नाथजी से बातचीत। केशर से थोडी देर बातचीत। राजेन्द्रबाबू बीमार है, उनके पास थोडी देर रहे। आज वर्किंग कमेटी दो बजे से थी। मेरी समझ ४ बजे की रह गई। उसका दुःख व आश्चर्य हुआ। बापू के पत्र दे दिये।
बापू के पास प्रार्थना। जवाहरलालजी पचगनी से आये। लड़कियों का गायन-वादन।

डा० पट्टाभि वगैरा का अपने यहां भोजन।

२१-५-३८

घूमना। जानकी देवी, उमा, पार्वती, दामोदर, हरिभाऊजी आदि साथ में।

रास्ते में मणीभाई नानावटी व सीकर के पुरोहितजी मिले।

बापूजी, सुभाष बाबू, मौलाना आजाद, सरदार, खान साहब से ११ बजे तक विचार-विनिमय।

सीकर व जयपुर के बारे में सुभाषबाबू स्टेटमेन्ट देंगे। सी० पी० मिनिस्ट्री की चर्चा। मैंने अपनी कठिनाई साफ तौर से बतलाई। हरिभाऊजी को रामनारायणजी चौधरी का आज आया पत्र दिखाया।

केशवदेवजी के यहां चि० रामेश्वर के साथ भोजन। गोला मिल के बारे में देर तक विचार-विनिमय।

सरदार, पुर्शेद, पेरीन, राजेन्द्रबाबू के पास देर तक। रामेश्वरदासजी बिड़ला से देर तक बातचीत।

जूहू गये। बापूजी सीधे जिन्ना से मिलते हुए व राजेन्द्रबाबू को देखकर वर्धा जाने के लिए स्टेशन गये।

२२-५-३८

चि० कृष्णा व राजा हठीसिंग आये। समुद्र-स्नान। कई मित्र मिलने आये।

राजेन्द्रबाबू को आखिर डा० गिल्डर व डॉ० पटेल की राय न होते हुए भी वर्धा ले जाने का निश्चय करवाया। यह जूहू जाने पर मालूम हुआ।

उन्हें १०४ डिग्री तक ज्वर हो गया। चिन्ता रही। आखिर ज्वर घटा।

जूहू के काम की व्यवस्था के सम्बन्ध में केशवदेवजी व रामेश्वर से बातें।

जयरामदास, लालजी मेहरो वगैरा से बातें।

बम्बई आकर जानकी देवी, दामोदर विट्ठल के साथ थर्ड से वर्धा रवाना। रास्ते में माटुंगा होते हुए राजेन्द्रबाबू फर्स्ट में। कल्याण से इगतपुरी तक उनके साथ बाद में थर्ड में आ गया।

वर्धा-नागपुर, २३-५-३८

बडनेरा में राजेन्द्रबाबू को देखा। रात में ४॥ घंटे नींद आई। सुबह खांसी का जोर रहा।

वर्धा पहुंचे। राजेन्द्रबाबू को गेस्ट हाउस मे ठहराया। ११ बजे तक वही रहा।

सिविल सर्जन डा० गुप्ता आया, तपासा।

दादा धर्माधिकारी ने ऊषा के विवाह के सम्बन्ध मे अपने मन की स्थिति व चिन्ता कही। दमयन्ती बाई व ऊषा से भी बातचीत। ऊषा ने यही सम्बन्ध रखना पसन्द किया।

सेगाव मे बापू से मिलकर आये, जाजूजी, व राधाकृष्ण साथ में। पचमढ़ी जाना जरूरी है, ऐसा बापू ने कहा। रामनारायण चौधरी का व बम्बई के पारसी ने जो पत्र दिया था वह उन्हे दे दिया।

जाजूजी से नागपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय। ३॥। बजे मोटर से नागपुर रवाना। ६-५ की पैसेंजर से थर्ड मे पिपरिया रवाना।

पचमढ़ी, २४-५-३८

पिपरिया उतरकर श्री बापूजी अणे के साथ डा० खरे की मोटर से पचमढ़ी पहुचे।

डा० खरे, शुक्ला, माखनलालजी, केदार, खुशालचन्द, पुखराजजी, भिकूलाल, सुगनचन्द, दीपचन्द, खाडेकर, घनश्यामसिहजी गुप्ता, डा० डिसलवा, डा० महोदय, ब्रिजलाल बियाणी, छेदीलाल आदि मित्र लोग मिले। परिस्थिति से वाकिफ हुआ।

सरदार व मौलाना भी पहुंच गये।

श्री ब्रिजलालजी व छेदीलाल के साथ तीनो प्रान्त की ओर से वर्तमान स्थिति पर विचार-विनिमय करके नोट तैयार किया व सरदार और मौलाना को दिया।

नागपुर असेम्बली पार्टी की सभा हुई, उसमे समझौता करने का प्रयत्न करने का निश्चय हुआ। अनुसूया बाई काले को कडक जवाब दिया।

व मिनिस्टरों के साथ उपरोक्त मित्रो ने देर तक बैठकर बात-

पचमढ़ी, २५-५-३८

॥, नहाना। दुर्गाबाई बीमार, उन्हे देखना। रतीलालभाई। बारलिंगे गिरधारी वगैरा भी मिले।

वर्धा पहुंचे। राजेन्द्रबाबू की गेस्ट हाउस मे ठहराया। ११ बजे तक
रहा।
सिविल सर्जन डा० गुप्ता आया, तपासा।
दादा धर्माधिकारी ने ऊषा के विवाह के सम्बन्ध मे अपने मन की चिन्ता
चिन्ता कही। दमयन्ती बाई व ऊषा से भी बातचीत। ऊषा ने यही स्वरू
रखना पसन्द किया।
सेगाव मे बापू से मिलकर आये, जाजूजी, व राधाकृष्ण साथ में। इनको
जाना जरूरी है, ऐसा बापू ने कहा। रामनारायण चौधरी का व वर्मा के
पारसी ने जो पत्र दिया था वह उन्हे दे दिया।
जाजूजी से नागपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय। ३॥ बजे मोटर से
नागपुर रवाना। ६-५ की पैसेंजर से थर्ड मे पिपरिया रवाना।

पचमढ़ी, २४-५-३८

पिपरिया उतरकर श्री बापूजी अणे के साथ डा० खरे की मोटर से पचमढ़ी
पहुचे।
डा० खरे, शुक्ला, माखनलालजी, केदार, खुशालचन्द, पूनमचन्द
भिकूलाल, शुगनचन्द, दीपचन्द, खाडेकर, घनश्यामसिंहजी गुप्ता, डा०
डिसतावा, डा० महोदय, ब्रिजलाल बियाणी, छेदीलाल आदि मित्र लोग
मिले। परिस्थिति से वाकिफ हुआ।

आदि से मिलकर विचार-विनिमय। बाबा वकील को काम पर रखा, चालीस रु० पर।
सेगांव में बापूजी से चि० राधाकृष्ण की मालवाड़ी के काम बढ़ाने की योजना पर विचार-विनिमय। बापूजी ने उसकी जिम्मेवारी लेना उचित समझा। चालीस हजार अन्दाज था मैंने कहा। विनोबा व जाजूजी की लिखी स्वीकृति होना जरूरी है। बापूजी मुझसे भी सलाह व मदद की आशा रखते हैं।
बापूजी से श्री आप्टे, रामनारायण चौधरी, टाटा, प्रो० बारी, जगतनारायण, सरदार आदि की बातें हुई।
दादा के घर पर भोजन। कढ़ी गिर गई, बुरा मालूम हुआ।
बम्बई जाने की तैयारी।
श्री नारायणजी (अमरावती वाले) मिलने आये। गजानन्द हिम्मतसिंग को वर्धा उतरा।
वर्धा से बम्बई। आप्टे, बापूजी, अणे, मणिलाल गांधी, तारा व हरिभाऊजी से बातचीत।

जुहू, १-६-३८

श्री हरिभाऊजी उपाध्याय कल्याण से दादर तक साथ आये।
दादर से जुहू। लालजी मेहरोत्रा से बातें। वह एअर से कराची गया।
श्रीमन्, रामेश्वर नेवटिया व ब्रिजमोहन से बातचीत।
माटुंगा होते हुए बम्बई। हिन्दुस्तान शुगर कम्पनी के बोर्ड की सभा हुई। महत्व की चर्चा। मि० गिल्डर को तार देकर बुलवाया। रामेश्वर को सूचना की।
पं० जवाहरलाल से देर तक बातचीत।
श्री चन्द्रोजीराव आंग्रे, फारेन मिनिस्टर ग्वालियर से जुहू तक बातचीत। हरिभाऊजी उपाध्याय भी साथ थे। देशी रियासत व कांग्रेस वगैरा के बारे में तथा राज्य में प्रजामण्डल व जवाबदार पद्धति दाखल करने के बारे में चर्चा।

२-६-३८

घूमते समय पार्वती डिडवानिया साथ में। मन स्थिति, स्वभाव इत्यादि

सरदार के साथ बापूजी के पास सेगांव जाना। सरदार ने सारी स्थिति का वर्णन बापूजी से किया। स्टेटमेन्ट की बात की। डा० खरे व शुक्ला को तार भेजा। मुझे जहां दुरस्ती करना था की।
वर्धा में सरदार, किशोरलालभाई, जाजूजी, बडकस वगैरा से सावधान-क्रेम की चर्चा। गवाह आदि की व अन्य बातें।

वर्धा-सेगांव २८-५-३८

रामगोपालजी सिंगी (हैदराबाद वाले) से बातचीत।
सरदार वल्लभभाई, महादेवभाई, जल्दी भोजन करके पू० बापूजी के पास गये। बापूजी ने स्टेटमेन्ट बनाया। पं० रविशंकर शुक्ल व मिश्रा ने उसे देखा। कुछ शब्दों में फरक किया। सरदार बम्बई गये।
बापूजी को पेरीनबहन व सुभाष का पत्र पढाया। मुझे जो कुछ कहना था, वह कह दिया।
श्री रविशंकर शुक्ला, मिश्रा आदि मित्रों के साथ भोजन बातचीत।

वर्धा, २९-५-३८

जानकी से बातचीत। परिणाम नहीं के समान। घूमते समय अस्पताल में विजया को देखा।
चि० पार्वती ने सगाई-विवाह की इच्छा बतलाई, कारण भी बतलाया।
राजेन्द्रबाबू के पास बैठना। बाद में।

३०-५-३८

राजेन्द्रबाबू को देखना। काकासाहब से मिला।
चि० उमा बम्बई से आई। उसने समुद्र में डूबने की घटना का वर्णन सुनाया, ईश्वर ने बचाया।
डा० बनर्जी वगैरा के साथ भोजन, आराम।
चि० गंगाबिसन, पार्वती, रमती से थोड़ी बातचीत।
राजेन्द्रबाबू से मिलना। दादा के सम्बन्धी लोगों से मिलना, परिचय।

३१-५-३८

चि० ऊषा व गप्पू के विवाह सुबह ६-४० व ६-४५ के लगभग सानन्द हो गये। राजेन्द्रबाबू के पास दो बार गया।
नागपुर प्रा० का० को काम के बारे में श्री पटवर्धन, बाबा सा०, घटवाई

आदि से मिलकर विचार-विनिमय। बाबा वकील को काम पर रखा, चालीस रु० पर।
सेगाव में बापूजी से चि० राधाकृष्ण की नालवाड़ी के काम बढ़ाने की योजना पर विचार-विनिमय। बापूजी ने उसकी जिम्मेवारी लेना उचित समझा। चालीस हजार अन्दाज का मैंने कहा। विनोबा व जाजूजी की लिखी स्वीकृति होना जरूरी है। बापूजी मुझसे भी सलाह व मदद की आशा रखते हैं।
बापूजी से भी आपे, रामनारायण चौधरी, टाटा, प्रो० वारी, जगतनारायण, सरदार आदि की बातें हुईं।
दादा के घर पर भोजन। कढ़ी गिर गई, बुरा मालूम हुआ।
बम्बई जाने की तैयारी।
गी नारायणजी (अमरावती वाले) मिलने आये। गजानन्द हिम्मतसिंग से वर्धा उतरा।
यहां से बम्बई। आपे, बापूजी, अणे, मणिलाल गांधी, तारा व हरिभाऊजी से बातचीत।

जुहू, १-६-३८

श्री हरिभाऊजी उपाध्याय कल्याण से दादर तक साथ आये।
दादर से जुहू। लालजी मेहरोत्रा से बातें। वह एअर से कराची गया।
श्रीमन्, रामेश्वर नेवटिया व ब्रिजमोहन से बातचीत।
मार्कुण्ट होते हुए बम्बई। हिन्दुस्तान शुगर कम्पनी के बोर्ड की सभा हुई। महत्व की चर्चा। मि० गिल्डर को तार देकर बुलवाया। रामेश्वर को सूचना की।
प० जवाहरलाल से देर तक बातचीत।
श्री कन्होजीराव आंग्रे, फारेन मिनिस्टर ग्वालियर से जुहू तक बातचीत। हरिभाऊजी उपाध्याय भी साथ थे। देशी रियासत व कांग्रेस वगैरा के बारे में तथा राज्य में प्रजामण्डल व जवाबदार पद्धति दाखल करने के बारे में चर्चा।

२-६-३८

घूमने समय पार्वती डिडवानिया साथ में। मन स्थिति, स्वभाव इत्यादि

[illegible] हुआ।

बम्बई-नासिक, ३-६-३८

सुबह समय [illegible] के साथ थे। जेठालाल रामजी के घर ब्रेक-भोज, [illegible] हिन्दी प्रचार के बारे में।

(आगरावाले) [illegible] अग्रवाल के यहां। यह ब्लड प्रेशर से बीमार थे। बातचीत।

गजानन्द [illegible], के साथ केशवदेवजी के यहां नाश्ता। वहां से ३॥ बजे मोटर से नासिक रवाना। ७॥ बजे नासिक पहुंचे। बिड़ला सेनिटोरियम ठहरे।

रामेश्वरदासजी बिड़ला, केशवदेवजी साथ थे। गोला मिल के बारे में ठीक बातचीत हुई, और भी व्यापारी बातें होती रहीं।

नासिक, ४-६-३८

सुबह घूमना। बाद में केशवदेवजी के साथ जीवणलाल भाई मोतीचन्द के यहां। वहां से उनके व स्वामी आनन्द के साथ उनका फार्म देखने गये। प्रयत्न तो ठीक दिखाई दिया।

भोजन के बाद रामेश्वरदासजी बिड़ला ने अपनी निजी व्यापार व घर की हालत कही। मैंने भी अपनी हालत बताई। विचार-विनिमय।

ब्रिज आदि। आम खाये, पपड़ी अच्छी लगी।

[illegible] पंचवटी घूमकर, शाम को जीवनलालभाई के यहां भोजन। वि॰

रामकृष्ण साथ मे था। बातचीत।

रात मे रामेश्वरजी लोयलका से बाते, विनोद, खेल-कूद। महाभारत पढ़ा।

नासिक, ५-६-३८

जीवनलाल मोतीचन्द का फार्म, आज भी फिर से रामेश्वरदासजी बिड़ला वगैरे के साथ देखने गया।

भोजन, विश्राम, ब्रिज। बाद में पौने चार की गाड़ी से बम्बई रवाना। सेकन्ड क्लास मे जगह नहीं मिलने से रामेश्वरजी बिड़ला के आग्रह से फर्स्ट क्लास मे बैठना पड़ा। शुगर मिल के बारे में, खासकर गोना के बारे मे ठीक विचार-विनिमय होता रहा।

दादर ८ बजे उतरे। माटूगा से कम्पनी की मोटर लेकर जुहू।

जुहू, ६-६-३८

घूमते समय मणीलालजी नानावटी ने बडोदा महाराज के जीवन के बारे मे व उनकी योग्यता के बारे मे ठीक परिचय करवाया।

जानकी से बातें। प्रयाग नारायणजी (आगरा वाले) को देखा।

श्री पुस्तकेजी ग्वालियर प्रजा मडल व कार्यकर्ताओ के बारे मे बातचीत करने आये।

गजानन्द, नर्मदा, केशर, बालक, शान्ता वगैरा आये।

नवाब, फख्र यार जग बहादुर व डा० दीनशा मेहता मिलने आये।

जुहू-बम्बई, ७-६-३८

श्रीमन्नारायण आज आये। सुबह घूमते समय बातचीत।

सुरेन्द्र ने फर्स्ट डिवीजन मे बी ए. पास किया।

पत्र-व्यवहार। माटूगा होकर बम्बई जाना, चि० केशरबाई नर्मदा, साथ मे। डा० पुरन्दरे को दिखाया। गजानन्द, श्रीराम साथ थे। दोनो को तपास कर उनने दवा लिख दी।

मि० गिल्डर (शुगर एक्सपर्ट) से बातचीत। उसके बाद रामेश्वरदासजी बिड़ला से बातें।

सौभाग्यवती दानी के यहाँ भोजन।

८-६-३८

मथुरादास खिमजी के जीवुभाई मिलने आये।

१०-६-३८

घूमना, आसनों, बातचीत करीब साथ में। [illegible] के यहाँ तार आया। मालवीयजी को सदमा हुआ। दोनों साथी हैं, लिखा।

कमला का टेलीफोन किया। मालवीयजी को रात में ढाई बजे के अंदाज पुत्र हुआ। वजन ७ पाउंड १० औंस। पुत्री [illegible] प्रसादजी से दी, जानकी देवी को आज खूब खुशी व शांति मिली।

डा० शाह ने गोंदा के टोंसिल का आपरेशन किया, दो टुकड़े निकले। अस्पताल में करीब दो घंटे ठहरना पड़ा।

मथुरादास त्रिकमजी के घर भोजन। बापू की स्थिति की चर्चा। मैंने जो पत्र महादेवभाई को लिखा था, वह बतलाया व आज भेज भी दिया।

प्राणलालभाई देवकरण नानजी ने शुगर मिल में डायरेक्टर होना स्वी-

कार किया। दस हजार के सेयर १३५ के भाव मे दिये।
सरदार वल्लभ भाई से बातचीत, विनोद। नरीमान प्रकरण आदि का।
मि० गिल्डर को गोला मे मैनेजर रखा। पगार बारह सौ, अलाउस ढाई परसेंट नेट प्राफिट पर।
नर्मदा को देखा। मुनशी के यहां दूध लिया।

११-६-३८

घूमना—जानकी, पार्वती, मणीलाल भाई नानावटी साथ मे। अपनी छोटी जमीन उन्हे दिखायी।
कल रात मे टेलीफोन खराब होने के कारण कलकत्ता फोन नही हो पाया।
वेंकटलाल पित्ती, (हैदराबाद वाले) जयावहन व वल्लभदास, काति पारेख, रामेश्वरजी बिडला, देशपाडे, नवलचन्द, केशवदेवजी, फतेचन्द व ब्रिजमोहन मिलने आये। प्रयागनारायणजी अग्रवाल का परिवार भोजन करने आया। परिचय, विनोद, बातचीत। इनके छ लडके व पाच लडकिया हैं, जिनमे से दो लडको व चार लडकियों का विवाह हो गया। एक लडका करीब २२ वर्ष का यूरोप मे शवकर एक्सपर्ट का काम सीखने गया हुआ है।
विश्वम्भरदयाल-मुकटजी (गुर्जवाले) के लडके न वर्ली का प्लाट ले लिया। पन्द्रह हजार मुनाफा १६॥= का भाव देना निश्चित। पाच हजार किस्त सोमवार को, बाकी ता० २४।६ के आसपास चुकते।

१२-६-३८

केशवदेवजी व फतेहचन्द से बच्छराज फैक्टरी के काम के बारे मे देर तक विचार-विनिमय, योजना।
सीकर के पुरोहितजी मिलने आये। आबू मे राव राजाजी का जो सदेश लाये, वह सुनाया।
आज बहुत लोग मिलने आये। पित्ती परिवार, बिडला परिवार, शान्ता, सुशीला, बनराजजी, पार्वती डिडवानिया का परिवार—गीता, गौरीशकर, चतुर्भुजजी आदि।
गोविन्दरामजी सेकसरिया भी मिलने आये। गोविन्दरामजी ने नेचर क्युअर (प्राकृतिक चिकित्सा) की इमारत के लिए एक लाख रुपये तक

१३-६-३८

गोपीवल्लभ पिनाट व गुलोपना गानायटी मिलने आये।

श्री वायूमालजी सिंघल बी० ए० बी० एल० श्री प्रयागनारायण बी० ए० बी० एल० आगरा वालों की ओर से मिलने आये। Labour is always fruitful (परिश्रम फलप्रद होता है) यह प्रयागनारायणजी का मोटो है। प्रेमनारायण के बारे में विशेष जानकारी व बातचीत की।

श्री प्रयागनारायणजी के बालक आये। मूलजीभाई व गोविन्दरामजी सेकसरिया का फोन आया। जुहारमलजी रूगटा से बात कर यह निश्चय हुआ कि जुहू याजम जमीन करीब चार सौ एकड़ है वह सीर में रहेगी, वह अपनी दरख्वास्त वापस निकाल लेवेंगे। सीर की पाती कितनी रहे, इसका फैसला रामेश्वरदासजी बिड़ला करेंगे, वह सबको मंजूर।

१४-६-३८

केशवदेवजी, फतेचन्द, प्रह्लाद आये। श्रीनारायण (धामणगाव वाले) सागरमल बियाणी व मूलजीभाई भी आये थे।

आज नीचे लिखी हुई कम्पनियों के सभाए जुहू में हुईं।

(१) वच्छराज फैक्टरी, लिमिटेड, कार्य-पद्धति। मेमराज रुइया को डायरेक्टर लिया।

(२) वच्छराज कम्पनी, हिन्दुस्तान शुगर के शेयर श्री देवकरण (नानजी वालों) को १३५ में दस हजार के शेयर दिये।

हिन्दुस्तान शुगर कम्पनी की सभा हुई। मि० गिल्डर को मुकर्रर किया, वह नोट किया गया व श्री प्राणलाल देवकरण नानजी को हिन्दुस्तान शुगर में डायरेक्टर लिया।

रामेश्वरदासजी बिड़ला, जीवनलाल भाई वगैरे सबों ने यहीं पर भोजन व बातचीत।

१५-६-३८

मोतीबहन चिनाइ वगैरे मिलने आये। मोतीबहन अंधेरी की हाउसिंग की जमीन ४॥ रुपये गज से ११ सौ गज अंदाज लेने आई थी।

प्रयागनारायणजी के घर के लोग मिलने आये।

चि० गजानन्द, केशर, नर्मदा, श्रीराम आदि मिलने आये, शाम को भोजन किया।

राजा गोविन्दलालजी पित्ती ने अपने घर की स्थिति, खासकर मुकन्दलाल-जी व बेंकट के बारे में बहुत देर तक बातचीत की।

राजा मुकन्दलालजी पित्ती भी मिलने आये। उन्होंने भी अपनी स्थिति सम-झाई।

सीकर-जयपुर के मामले को लेकर रायबहादुर मणीशंकरभाई बैरिस्टर, सुन्दर, पुरोहितजी, लच्छीरामजी, लोहिया, केशवदेवजी, रामदत्तजी वगैरे आये। रात में १०॥ बजे तक विचार-विनिमय। स्थिति समझाई। कल-कत्ता फोन वगैरे किया। आखिर में मैंने जो सीकर में कहा था वही ठीक बतलाया।

१६-६-३८

जूहू की अपनी जमीन के बारे में अम्बालाल सालीसिटर, बान्द्रेकर, आबिद-अली, मूरजी के साथ सरकार से रास्ते के अधिकार के बारे में विचार-विनिमय देर तक बातचीत।

प्रयागनारायणजी वकील के बालक मिलने आये, बातचीत, विनोद।

८॥ बजे करीब बम्बई रवाना। रास्ते में थोड़ी देर माटूंगा केशर, नर्मदा से बातचीत।

केशर ने अपने विचार शारीरिक व मानसिक स्थिति, प्रह्लाद के व्यापार आदि में मदद व महिला आश्रम की जमीन पर मकान बनाने की इच्छा आदि प्रकट की। उसकी कई बातों पर मुझे क्रोध भी आया व मैंने उसे बहुत ही कड़क भाषा में टपका व उलाहना दिया।

उसको क्रोध आया व रोना शुरू किया।

स्टेशन पहुंचे। गाड़ी को देर थी। बम्बई का स्टीमर भी जल्दी आ गया।

माटूंगा केस में क्यों जाना सम्भव मालूम हुआ।

मेल से वर्धा पहुंचे। डा० अभ्यंकर पुलगांव में साथ हुए।
राजेन्द्रबाबू व सबों से मिले।
राजेन्द्रबाबू, जानकी, मदालसा, कमलनयन को साथ लेकर पू० बापू के पास सेगांव जाना व सबों से मिलना-मिलाना।
मेहमानों के साथ भोजन आराम, पत्र-व्यवहार।
चि० गंगाविशन, लक्ष्मीदेवी, चि० पार्वती से श्यामसुन्दर (कलकत्तेवाले) के साथ सगाई के बारे में विचार-विनिमय व निश्चय।
माता आठवले से महिला आश्रम के बारे में बातचीत।
कानूराम बाजोरिया, चिरंजीलाल बड़जाते, मि० रजाक (नागपुर वाले), किशोरलालभाई, जाजूजी, बड़कस वगैरे से बातचीत।
चिरंजीलाल ने कब्जे के समय का थोड़ा वर्णन कहा। मनोहर पंत आदि के बारे में थोड़ा विचार। उन्हें अपनी नीति समझाई।
चि० कमल व जानकी से देर तक बातचीत।

१८-६-३८

चि० कमलनयन कलकत्ता गया। मदालसा, श्रीमन, सुरेन्द्र, भण्डारा गये।
भूलाभाई देसाई बम्बई से आये, बातचीत। यूरोप की हालत कही।
श्री चँडके वकील से मिलना। उसके लड़के का देहान्त हो गया।
महिला आश्रम की सभा ६ से ११। तक हुई। विद्यार्थिनियों को भरती, अध्यापकों की नियुक्ति आदि का काम हुआ।
भूलाभाई, राजेन्द्रबाबू के साथ सेगांव। बापू से १ से ४॥ तक भूलाभाई ने यूरोप के राजनीतिज्ञों से जो बातचीत हुई वह कही।
बापू से—डा० खरे व शरीफ मिल गये, उसका थोड़ा हाल कहा। विट्ठलभाई पटेल के बिल के बारे में विचार-विनिमय।
वर्धा में भूलाभाई से सेन्टीनल, विविधवृत्त, आदि के बारे में थोड़ा विचार-

२१-६-३८

गेस्ट हाउस में माखनलालजी शर्मा व कृपलानी आदि से मिला।

गंगाबिसन के घर—पुरुषोत्तम व गीता आज शामगांव गये। गंगाबिसन व सरस्वती से देर तक बातचीत। चि० पार्वती को समझाकर उसका खुलासा आदि।

सरदार वल्लभभाई व मणीबहन बम्बई से आये, मिलना।

किशोरलालभाई से मेहमानों की व्यवस्था, गांधी सेवा संघ व इमारतें, चरखा सं० के मकानात, वैजनाथजी व राजपूताना-खादीवाला फंड व बिड़ला मजदूर मित्र डिबेन्चर आदि के बारे में बातें।

पत्र-व्यवहार। विश्वासराव शेषे की माता वगैरे मिलने आये। वेंकटराव गोडे की लड़की अनुसूया ने विश्वासराव के साथ विवाह करने की इच्छा बताई। विश्वासराव शाम को आया। बातचीत।

रामरिछपालजी (भिवनीवाले) व उनके लड़के आये। उनकी बहू दूसरा विवाह करना चाहती है, आदि। उन्हे समझाया व चतुर्भुजभाई के नाम पत्र लिखकर दिया।

सरदार वल्लभभाई से रात को १०॥ बजे तक सी० पी० की हालत व उनके व मेरे खानगी मतभेद के बारे में विचार-विनिमय होता रहा।

२२-६-३८

घूमना। चि० उमा से बातचीत। सत्यप्रभा रास्ते में मिलकर अपनी स्थिति कहने लगी।

आशाबहन, कृष्णाबाई, इन्दू, कमला, नाना, श्रीमन, मदालसा वगैरे से मिलना, बातचीत।

कलकत्ता से सुभाषबाबू का फोन आया—कल शाम को आने का बताया।
बजाजवाडी के शाम की सभा हुई। सागरमल वियाणी को चार्ज दिया।
पचहत्तर रुपये मासिक वेतन।
जानकी ने दो दिन से भोजन नहीं किया। बहुत देर तक उससे बातचीत, क्रोध, आवेश, दुःख आदि।
सरदार ने बुलवाया। वहां चार मिनिस्टर—श्री शुक्ला, मिश्रा, गोले, रामराव तथा बापूजी अणे, ब्रिजलाल वियाणी व कृपलानी थे। सरदार ने उन्हें पचमढ़ी का समझौता कायम रखने के लिए समझाया।
हिंगणघाट से बहुत से लोग शिकायत लेकर आये। थोड़ा क्रोध आया—डा० मजुमदार के प्रति। लिखकर कुछ न भेजकर इतने आदमी बिना मतलब भेजे।
सरदार व मिश्र से बातचीत।
आज सिक्ख लोग यहां ट्रेनिंग को आये। उनको भोजन दिया, देर तक बरसात होती रही।

२३-६-३८

सरदार, अम्बुलकर, जुहारमल (हैदराबाद वाले) से बातचीत।
सेगांव में जानकी, मां के साथ। वहां बा व बापूजी से मिलना। श्री धनुस्कर ने एक नवयुवक को वहां सत्याग्रह के लिए बैठा दिया, उसे समझाया।
बालकोबा के पास थोड़ी देर बातचीत। मन को थोड़ी शांति मालूम हुई।
बा के पास प्रसाद लिया। जानकी से बापू को कहकर मन हलका करने को कहा, परन्तु वैसा नहीं हो सका।

२४-६-३८

जानकी का आग्रह था कि मैं स्टेशन नर्मदा व गजानन्द से मिलने जाऊं।
कई कारणों से मैंने नहीं जाने का विचार पहले ही कर लिया था। थोड़ा दुःख व रंज पहुंचा—इसके आग्रह के कारण।
महिला आश्रम गया। नाना व कृष्णाबाई से मिलना।
सुभाषबाबू, मौलाना, सरदार, कृपलानी, राजेन्द्रबाबू के साथ विचार-विनिमय, जिला-प्रकरण, नागपुर मिनिस्ट्री प्रकरण। बाद में विट्ठलभाई बिल के बारे में केवल मौलाना व सुभाषबाबू से मेरी बातचीत।

नागपुर में मुख्यमंत्री डा० खरे से करीब एक घंटा बातचीत। पचमढ़ी समझौता वह पूरी तौर से पालेंगे, ऐसा वचन दिया। मुझे ता० २९ को वह फिर बहुत करके बुलवावेंगे, ऐसा कहा।

डा० सोनक से मिलकर या मैं ही पत्र लिखूं, यह निश्चय हुआ।

२७-६-३८

हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊजी उपाध्याय से राजस्थान के काम की बातचीत।

प्रजामंडल जयपुर, बालिका विद्यालय वनस्थली व राजस्थान संघ हटूंडी के बारे में। मैंने मेरी राय इस प्रकार कही: फायनन्स की विशेष जिम्मेवारी व्यवस्था करने की जयपुर प्रजा मण्डल की हीरालालजी, कपूरचन्दजी व जमनालाल की। बालिका विद्यालय की रतनजी, सीतारामजी व भागीरथ-जी की। राजस्थान संघ के बारे में हरिभाऊजी से विचार-विनिमय होकर 'गांधी सेवा संघ' से क्या सहायता दी जा सकेगी, उसका किशोरलालभाई की सलाह से फैसला करना।

महिला आश्रम के नवीन विद्यालय का मुहूर्त हुआ। थोड़ी देर वहां रहे। वहां मोहनबहन (उदयपुरवाली) से व भागीरथीबहन से बातचीत।

मोहन से कहा कि तुम्हारा उत्साह हो तो वनस्थली जा सकती हो।

शाम को व रात्रि को भी राजस्थान के काम के बारे में चर्चा। प्रजामण्डल की वर्किंग कमेटी बनाई। सीकर के बारे में शास्त्रीजी वहां जाकर सब-कमेटी की मीटिंग करके कार्रवाई करेंगे।

२८-६-३८

श्री हीरालालजी शास्त्री के साथ पैदल स्टेशन तक, बातचीत करते हुए। हरिभाऊजी साथ में थे।

मोहनबहन वनस्थली गई।

चि० गंगाबिसन के यहां—पार्वती, मदमी व गंगाबिसन से विवाह आदि बातें।

बच्छराज जमनालाल के काम की सभा दुकान पर हुई।

सेगांव में बापू से मिल कर आया। जवाहरमल (हैदराबादवाले) के बारे में पूछा।

उन्होंने कहा कि महिला आश्रम में एक वर्ष के लिए रख लिया जाय और सौ रुपये दिये जाय।
बापू की चिन्ता का कारण सुना। सरस्वती का बंगलोर का आग्रह।
प्यारेलाल वगैरे से मिलना।
हरिभाऊजी, जानकीदेवी, मदालसा के साथ घूमने जाना।

२९-६-३८

घूमना—जानकी देवी, हरिभाऊजी साथ में। महिला आश्रम में भागीरथी-बहन व कृष्णाबाई से बातचीत।
पार्वती बाई डिडवानिया बम्बई से आई। किसनलाल गोयनका का लड़का अकोला से आया।
डा० खरे नागपुर से आये व सेगांव गये। आगे बातचीत।
डा० खरे बापू से मिलकर वापस आये और बाद में देर तक मुझे कुछ कागजात व पत्र-व्यवहार दिखाया। मैंने उन्हें अपने विचार भली प्रकार समझाने की कोशिश की व पत्र न भेजने को कहा। आपस में सफाई करना ठीक रहेगा, यह जोर देकर कहा। आखिर उनके साथ नागपुर गया।
नागपुर में फायनन्स मिनिस्टर श्री मेहता, भालजा, बाद में कलप्पा, फुले, रुईकर, बलवाई आदि तथा लेबर लीडर नायडू वगैरे से, देर तक बातचीत, विचार-विनिमय।
रुईकर की वृत्ति ठीक नहीं थी। कलप्पा दोनों तरह की बात करता था। मैंने अपने विचार साफ तौर से कहे। बाद में डा० खरे, मेहता, गोले के साथ बातचीत।
मिश्रा, रामराव आ नहीं सके, बीमार थे। छगनलाल व दांडेकर के साथ स्टेशन रात में वापस।

३०-६-३८

घूमते समय जानकी देवी, पार्वतीबाई डिडवानिया, हरिभाऊजी, सोनीराम आदि से बातचीत। पत्र-व्यवहार पर सही की।
राजेन्द्रबाबू से देर तक बातचीत।
बम्बई से दीक्षित का फोन आया, कमला मेमोरियल की रकम के व्याज के बारे में। मैंने कहा कि जहां तक केशवदेवजी न आवें, वहां तक बच्छराज

[illegible] के बारे [illegible] ओर से [illegible] सकते हैं।
अर्विन्दजी व गिरधारी कानपुर से आये। अर्विद ने आगरा, दिल्ली, लाहौर, (मुकन्द आयर्न), लखनऊ, बनारस, इलाहाबाद, नागपुर के काम की रिपोर्ट दी।
'हिन्दी प्रचार विद्यालय' में, यहां मारवाड़ी सभा की ओर से, जो विशेष वर्ग खोला गया उसकी आज समाप्ति थी, वहां गया। आये हुए मेहमानों से परिचय, औपचारिक भाषण वगैरे।
मेल से रानीगंज से श्री जगन्नाथजी, कन्हैयालाल, बनारसीप्रसाद वगैरे पन्द्रह आदमी बागान में आये, उन्हें स्टेशन से राधाकिशन के यहां पहुंचाया।
शाम को बारात के लोगों के साथ घर पर भोजन, बातचीत, गायन।
विगाऊ के शान्तिकारी ब्राह्मण का रामायण पर प्रवचन वगैरे।

१-७-३८

लक्ष्मीनारायण मन्दिर में चि० अनुसूया (वेंकटराव गोडे की लड़की) विश्वासराव मेधे के साथ विवाह हुआ, उसमें गये।
जमनादासभाई गांधी बम्बई से आये। मुकन्द आयर्न वर्क्स की हालत समझी।
रानीगंज वाले व विश्वासराव के घर के तथा वेंकटराव के घर के लोग सब मिलकर भोजन किया। १॥ बजे तक बंगले पर रहे।
ब्रिजमोहन गोयनका बम्बई से आया। उसने श्री फतेचन्द रुइया के देहान्त हो जाने का समाचार दिया। दु:ख हुआ, पत्र-व्यवहार।
चि० पार्वती (सुशीला) का विवाह शाम को श्यामसुन्दर के साथ आनन्द के साथ हो गया।

२-७-३८

श्री जगन्नाथजी वगैरे मेहमानों से मिलना, बातचीत।
चि० गंगाबिसन के घर भोजन, श्री जगन्नाथजी व राजेन्द्रबाबू भी भोजन करने आये। जलेबी ठीक खाई (पेट भर कर)।
फोटो वगैर लेने में समय चला गया।
चि० पार्वती (सुशीला) श्यामसुन्दर से बातचीत। उसे स्थिति समझा दी,

स्वभाव आदि की। बाराती पवनार, सेगांव जा आये।
बारातवालों ने आज ही जाने का निश्चय कर लिया। शाम की पैसेंजर से से रवाना हुए।

३-७-३८

जानकी देवी, पार्वती बाई के साथ घूमना—आश्रम जाकर आना।
नागपुर प्रान्तिक कांग्रेस कार्यकारिणी की सभा, सुबह ८—११॥ तक व १ से ७ तक तथा रात में ८॥ से १० तक काम होता रहा। महत्व का काम। मजदूरों के सम्बन्ध के अधिकार का ठराव।
श्री शरीफ आये थे, परन्तु बातचीत नहीं हो सकी, कमेटी में लगे रहने के कारण।
नागपुर ऑफिस का काम बराबर नहीं है, बहुत ही लापरवाही तथा गैर-जिम्मेदारी से काम होता दिखाई दे रहा है।
राजेन्द्रबाबू ने छपरा इलेक्ट्रिक कम्पनी के शेयर बेचने के सम्बन्ध का एग्रीमेंट का ड्राफ्ट दिखाया।
फैसला किया।
चि० शान्ता को इस साल दो सौ की छात्रवृत्ति देनी पड़ेगी, निश्चय किया।

४-७-३८

भूरेलाल (उदयपुरवाले) से उदयपुर प्रजा मण्डल की स्थिति समझी।
पवनार में मा के साथ वर्तमान स्थिति की थोड़ी बातचीत की। वापस महिला-आश्रम में बाल मन्दिर का उद्घाटन हुआ।

५ जुलाई ३८

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की साधारण समिति की सभा का कार्य, सुबह ८॥ से ११॥ व दोपहर को २॥ से ६ बजे तक, बाद में शाम को ८ से १०॥ तक। बीच में हिन्दी प्रचार का काम भी हुआ। श्री टंडनजी से व मुझसे बाबूरामजी की गरमागरम बहस हो गई; थोड़ा दुःख पहुंचा। मेरी भी थोड़ी गलती थी।
पू० बापूजी साहित्य सम्मेलन की सभा के लिए वर्धा आये, ३ से ५ तक बैठे।

शिमला अधिवेशन, प्रचार समिति के अधिकार आदि पर तथा नियमावली वगैरे सम्बन्ध में विचार-विनिमय।

६-७-३८

चि० घनश्याम की तबीयत देखना व किशोरलाल भाई तथा बैजनाथजी से मिलना।

सुभाष बाबू का तार आया। स्वास्थ्य के कारण वर्किंग कमेटी एक सप्ताह टर में रखने का लिखा।

हिन्दी साहित्य भवन की सभा ८।।-११।। तथा दोपहर को भोजन बाद रात में भी हुई।

चि० शान्ता (राणीवाला) बम्बई से आई। भोजन के समय बातचीत।

७-७-३८

जानकी, पार्वती, रतनजी, वगैरे के साथ घूमना। रतनजी से वनस्थली आश्रम के बारे में बातचीत। स्थिति समझी।

दुकान पर खेती कम्पनी के बोर्ड की व जनरल सभा हुई।

मुकुन्दलाल (लाहौर वाले) व जमनादासभाई बम्बई से आये। मुकुन्द आयर्न वर्क्स के बारे में देर तक बातचीत।

मारवाड़ी शिक्षा मंडल की कार्यकारिणी की सभा हुई।

महिला सेवा मंडल की कार्यकारिणी व साधारण सभा महिला आश्रम में हुई।

पुरुषोत्तमदासजी टंडन प्रयाग गये। राजेन्द्र बाबू से बातें। पत्र व्यवहार किया।

८-७-३८

चि० शान्ता, भागीरथी बहन, तारा आदि से मिलना।

जयपुर से हीरालालजी शास्त्री का तार, यहां जल्दी आने के बारे में आया।

सेगांव में जाकर बापूजी से मिले। उनकी सलाह हुई कि यहां जाना जरूरी है। श्री छेदीलाल (महाकोशल वाले) नहीं आ सके इसलिए रात की एक्स-प्रेस से ही जाने का निश्चय रखा।

नागपुर, विदर्भ तथा महाकोशल की सभा हुई। श्री ब्रिजलाल बियाणी,

छेदीलाल व वामनराव जोशी आये। ठीक विचार विनिमय के बाद कई बातों का फैसला हुआ।
श्री छेदीलाल ने जिस मजिस्ट्रेट को पत्र लिखा था उसका खुलासा किया। महाकोशल कांग्रेस कमेटी, नागपुर विदर्भ-कांग्रेस को (कानूनी-विविध) समझेगा ऐसा उन्होंने कहा।
नागपुर एक्सप्रेस से बम्बई रवाना। जानकी, दामोदर, विट्ठल साथ में।

दादर-बम्बई, ९-७-३८

रात मे व सुबह भी रेल मे खूब सोया। आराम मिला; सिर हलका हुआ।
दादर उतर कर माटूगा केशवदेवजी के यहां ठहरना।
अंधेरी में ब्रिजलाल झुनझुनवाला व फतेचन्द रुइया की मृत्यु हो गई इस लिए उनके घर मिलने व सात्वना देने गया। वापस लौटते समय जुहू होकर माटूगा। वहा बद्रीनारायण (सीकरवाला) व बम्बई सीकर कमेटी के कार्यकर्त्ता पूरणमलजी, लछीरामजी, वगैरे मिले। देर तक बातचीत। उन्हें बहुत सुनाया। उनकी राय हुई कि मैं कल जयपुर जाऊं। बाद मे बम्बई में सरदार वल्लभभाई व रामेश्वरदास बिड़ला की राय भी कल ही जाने की होने के कारण, आज सीकर-जैपुर नही रवाना हुआ। सरदार से व रामेश्वरजी बिड़ला से बहुत देर तक सीकर-स्थिति पर विचार-विनिमय। बाद में सरदार ने सी० पी० के बारे में बातें की। चिन्ता हो रही थी।

जुहू-बम्बई, १०-७-३८

श्री मणीभाई नानावटी मिले। उन्होंने इक्कीस रुपये वार की जमीन जुहू में ली, यह बताया।
उदयपुर का डेपूटेशन मिलने आया, बातचीत।
माटूगा मे केशर, प्रह्लाद, श्रीराम के साथ भोजन। वैंकट पित्ती वहां आया। उसने भी वहां भोजन किया। श्रीराम के स्वास्थ्य के बारे मे विचार विनिमय। उसे हिम्मत बधाई। केशर को भी चिंता न करने को समझाया। हवा फेर के लिए देस जाना या नासिक वगैरे जाने का कहा। वर्धा आने के बारे में उत्साह नहीं बढाया। केशर की हालत से दुःख व चिन्ता हुई। प्रश्न विकट है। परमात्मा की मदद की जरूरत है।
रामनाथ गोयनका से मद्रास हिन्दी प्रचार की बातें। रुपये सेफ सेक्युरिटी

मे रखने को कहा।
सरदार वल्लभभाई से मिलना। वहां पर सीकर डेपुटेशन के लोग आये।
सरदार ने उनको ठीक तौर से समझाया।
मुनशी आये। बातचीत।
फंटियर मेल से सेकेन्ड से जयपुर रवाना।

जयपुर, ११-७-३८

रतलाम स्टेशन पर श्री मित्तलजी से सीकर के बारे में बातचीत। भोजन वगैरा।
सवाई माधोपुर में गाडी बदली। स्टेशन पर ठहरना पड़ा।
जयपुर स्टेशन पर मित्र-मंडल ठीक संख्या में आया। बिड़ला हाउस में ठहरना। चि० कमल भी मिल गया।
मित्रों से बातचीत। प्रजामंडल व सीकर-स्थिति पर विचार-विनिमय।
जयपुर पुलिस के किशोरसिंगजी ने कहा कि डी० आइ० जी० ने कहलाया है कि आप इस समय सीकर बिलकुल न जायें। देर तक बातें, बुरा लगा।
मैंने कह दिया कि मैं तो जरूर जाऊंगा।
श्री शास्त्रीजी व पाटनीजी से इस बारे में विचार-विनिमय।

१२-७-३८

सुबह फिर किशोरसिंहजी आये और रात वाली बात फिर से दुहराई—सीकर न जाने बाबत। थोड़ी देर बाद कैप्टन वेब व डी० आइ० जी० मिलने आये और कहा कि प्राइम मिनिस्टर सर बीचम मिलना चाहते हैं। शाम को मुझे उनसे मिलने का निमंत्रण स्वीकार करना पड़ा व सीकर जाना मुलतवी किया।
भोजन के बाद अचरोल ठाकुर साहब, पंडित अमरनाथ अटल, जोबनेर ठाकुर साहब से हीरालाल जी के साथ मिले। सीकर के बारे में परिस्थिति समझाने का प्रयत्न किया। कैप्टेन वेब से व डी० आय० जी० से भी देर तक बातचीत। सर बीचम से मिले। सवा घंटा बातचीत। उन्होंने सीकर न जाने के बारे में खूब समझाने का प्रयत्न किया। मैंने कांग्रेस व प्रजा मंडल की स्थिति साफ की। उनका यश के नाम का पत्र ठीक नहीं आया। फिर पत्र व्यवहार।

छेदीलाल व मामनराव जोशी आये। ठीक विचार विनिमय के बाद कई बातों का फैसला हुआ।
श्री छेदीलाल ने जिस मजिस्ट्रेट को पत्र लिखा था उसका सुनाना किया। महाकोशल कांग्रेस कमेटी, नागपुर विदर्भ-कांग्रेस को (कानूनी-विधिवत्) समझेगा ऐसा उन्होंने कहा।
नागपुर एक्सप्रेस से बम्बई रवाना। जानकी, दामोदर, विट्ठल साथ थे।

दादर-बम्बई, ९-७-३८

रात में व सुबह भी रेल में खूब सोया। आराम मिला; फिर हलका हुआ। दादर उतर कर माटूंगा केशवदेवजी के यहां ठहरना।
अंधेरी में ब्रिजलाल झुनझुनवाला व फतेचन्द रुइया की मृत्यु हो गई इस लिए उनके घर मिलने व सान्त्वना देने गया। वापस लौटते समय जूहू होते माटूंगा। वहां बद्रीनारायण (सीकरवाला) व बम्बई सीकर कमेटी के कार्यकर्त्ता पूरणमलजी, छबीरामजी, वगैरे मिले। देर तक बातचीत। उन्हें बहुत सुनाया। उनकी राय हुई कि मैं कल जयपुर जाऊं। बाद में बम्बई में सरदार वल्लभभाई व रामेश्वरदास बिड़ला की राय भी कल ही जाने की होने के कारण, आज सीकर-जैपुर नहीं रवाना हुआ। सरदार से व रामेश्वरजी बिड़ला से बहुत देर तक सीकर-स्थिति पर विचार-विनिमय। बाद में सरदार ने सी० पी० के बारे में बातें की। चिन्ता हो रही थी।

जूहू-बम्बई, १०-७-३८

श्री मणीभाई नानावटी मिले। उन्होंने इक्कीस रुपये वार की जमीन जूहू में ली, यह बताया।
उदयपुर का डेपूटेशन मिलने आया, बातचीत।
माटूंगा में केशर, प्रह्लाद, श्रीराम के साथ भोजन। वेंकट पिल्ले वहां आया। उसने भी वहां भोजन किया। श्रीराम के स्वास्थ्य के बारे में विचार विनिमय। उसे हिम्मत बधाई। केशर को भी चिंता न करने को समझाया। हवा फेर के लिए देस जाना या नासिक वगैरे जाने का कहा। वर्धा आने के बारे में उत्साह नहीं बढ़ाया। केशर की हालत से दुःख व चिन्ता हुई। प्रश्न विकट है। परमात्मा की मदद की जरूरत है।
रामनाथ गोयनका से मद्रास हिन्दी प्रचार की बातें। रुपये सेफ सेक्युरिटी

मे रखने को कहा।
सरदार वल्लभभाई से मिलना। वहां पर सीकर डेपूटेशन के लोग आये।
सरदार ने उनको ठीक तौर से समझाया।
मुनशी आये। बातचीत।
फ्रंटियर मेल से सेकेन्ड मे जयपुर रवाना।

जयपुर, ११-७-३८

रतलाम स्टेशन पर श्री मित्तलजी से सीकर के बारे मे बातचीत। भोजन किया।
सवाई माधोपुर मे गाडी बदली। स्टेशन पर ठहरना पडा।
जयपुर स्टेशन पर मित्र-मडल ठीक सख्या मे आया। बिडला हाउस मे ठहरना। चि० कमल भी मिल गया।
मित्रो से बातचीत। प्रजामडल व सीकर-स्थिति पर विचार-विनिमय।
जयपुर पुलिस के किशोरसिंगजी ने कहा कि डी० आइ० जी० ने कहलाया है कि आप इस समय सीकर बिलकुल न जायें। देर तक बातें, बुरा लगा। मैंने कह दिया कि मैं तो जरूर जाऊगा।
श्री शास्त्रीजी व पाटनीजी से इस बारे मे विचार-विनिमय।

१२-७-३८

सुबह फिर किशोरसिहजी आये और रात वाली बात फिर से दुहराई—सीकर न जाने बाबत। थोडी देर बाद कैप्टन वैब व डी० आइ० जी० मिलने आये और कहा कि प्राइम मिनिस्टर सर बीचम मिलना चाहते हैं। शाम को मुझे उनसे मिलने का निमत्रण स्वीकार करना पडा व सीकर जाना मुलतवी किया।
भोजन के बाद अचरोल ठाकुर साहब, पडित अमरनाथ अटल, जोबनेर ठाकुर साहब से हीरालाल जी के साथ मिले। सीकर के बारे मे परिस्थिति समझाने का प्रयत्न किया। कैप्टेन वैब से व डी० आय० जी० से भी देर तक बातचीत। सर बीचम से मिले। सवा घटा बातचीत। उन्होंने सीकर न जाने के बारे मे खूब समझाने का प्रयत्न किया। मैंने काग्रेस व प्रजा मडल की स्थिति साफ की। उनका यश के नाम का पत्र ठीक नही आया। फिर पत्र व्यवहार।

जयपुर-सीकर, १३-७-३८

मित्रों से सीकर के बारे में व जयपुर अधिकारियों के बारे में ठीक विचार विनिमय।

सर बीचम से आज फिर ११ बजे देर तक बातचीत। पत्रों का मसविदा बताया गया। उसमें कांग्रेस व प्रजा मंडल की नीति का स्टेटमेंट भी दिया। प्रेस के मामले के बारे में वह बहुत घबराये। समझाने का बहुत प्रयत्न किया। परन्तु पुराने जमाने के व उनका मगज कम काम देने वाला मालूम हुआ। खूब साफ-साफ बातें हुईं। मिलने आदि के बारे में भी।

दो बजे की गाड़ी से सीकर रवाना। शास्त्रीजी, कमल जानकी आदि साथ में।

रींगस मे मालूम हुआ कि सीकर मे गोलीबार के बाद लोग घबराये हैं। सीकर पहुंचे। मि० यंग से मिले। एक घंटे करीब बातें। बाद मे भिनाय राजा साहेब से मिलना हुआ।

सीकर, १४-७-३८

सुबह गोलीबार जहां हुआ था वह मौका देखा। दोनो जगह की स्थिति समझी।

गढ़ मे जाना और वहां पर कमेटी के लोगो से साफ-साफ बातें की व उनकी असली हालत समझी व उन्हे समझाया।

भिनाय राजा व ठाकुर सा० डुडलोद के साथ देर तक बातचीत, विचार विनिमय।

रात मे मि० यग से मिले। शास्त्रीजी, कमल साथ मे। उसकी मनशा समझी। लादूरामजी के बारे मे भी बातें।

१५-७-३८

गच्ची पर घूमते समय श्री जानकी व चि० कमल से देर तक घर की, जानकी की व मेरी मनःस्थिति, चिन्ता आदि पर विचार-विनिमय।

मे श्री राणी जोधीबाईजी से मिल कर आई व उन्हे समझाया इस प्रकार मुकाबला करने से हानि है।

कमेटी के पचो से व जनता के लोगो से देर तक बातचीत। क्रोध भी आता रहता था। आखिर शाम को सही करके

श्री राणीजी ने व डिक्टेटर नन्दूगिरजी ने पांच जनों को अधिकार दिया; ये हैं भिनाय राजा, डूडलोद ठाकुर सा, मंडावा ठाकुर व नवलगढ़ ठाकुर व मैं। आपस में विचार-विनिमय।
मि० यंग से मिले। भिनाय राजा, डूडलोद ठाकुर व मण्डावा के साथ देर तक बातचीत।
जनरल एमनेस्टी (आम रिहाई) पर ही गाड़ी अड़ गई। ठाकुर सा० डूंडलोद ने बीच-बीच में थोड़ी कमजोरी दिखाई।
भिनाय राजा से कमरे में देर तक बातचीत।

सीकर-जयपुर १६-७-३८

हीरालालजी शास्त्री व दामोदर से सीकर परिस्थिति पर विचार विनिमय। तार पत्र आदि तैयार किये।
मि० यंग से मेरी व हीरालालजी की देर तक बातचीत—खासकर जनरल एमनेस्टी देना क्यों जरूरी है इस बारे में। मैंने कई प्रकार से समझाया, और भी बातें कीं। मि० रिचलू से मिलना। बाद में गढ़ में खास-खास लोग थे, उनसे मिलकर बातें कीं।
दोपहर की गाड़ी से सीकर से जयपुर के लिए रवाना।
स्टेशन पर, चि० कमल, जानकी, गुलाब, डेडराजजी वगैरा लोसल से आये, मिले। कमल साथ में जयपुर चला। कमल व शास्त्रीजी से बातचीत।
जयपुर में भिनाय राजा सा० व बैरिस्टर चूड़गर से सब स्थिति समझी।
प्रजा मंडल की वर्किंग कमेटी का कार्य ११ बजे तक हुआ।

जयपुर, १७-७-३८

चि० कमल से बातें, थोड़ी चिन्ता। वह आज कलकत्ता गया।
बैरिस्टर चूड़गर मिलने आये। बातचीत। उन्हें कई महत्व की सूचना की।
प्रजा मंडल वर्किंग कमेटी ८॥ से १२, व २ से ७ तक हुई। रात में प्रजा मंडल की जनरल कमेटी ८ से ११ तक हुई।
सर बीचम को पत्र भेजा। उनका जवाब आया। सम्भव है श्री दरबार से कल मिलना होवे।
सीकर निर्णय किस प्रकार सुधरे इस बारे में विचार-विनिमय।

१८-७-३८

सीकर के बारे मे विचार-विनिमय।

शिवप्रसादजी खेतान के यहा सबो से मिलना। गणेशदास सोमाणी मिलना। उनकी लड़की की मृत्यु हो गई।

कपूरचन्दजी के घर भोजन।

प्रजा मंडल कार्यकारिणी की १॥ से ७ तक सभा चलती रही। प्रजा मंडल की साधारण सभा ८-१०॥ तक हुई।

डी० आइ० जी०दो बार मिलने आये। दरबार से मुलाकात के बारे में बातचीत, पोशाक आदि के सम्बन्ध मे।

आज प्रजा मडल वर्किंग कमेटी मे आपस मे ठीक खुलासा व सफाई हुई।

१९-७-३८

हीरालालजी से बातचीत। प्रजा मडल कार्यकारिणी कमेटी ६॥ से १०॥ तक। ठीक काम हुआ।

प्राइम मिनिस्टर के यहां कैप्टन वैब से बातचीत। प्राइम मिनिस्टर नहीं मिले, दरबार वही आ गये थे।

न्यू होटल मे भिनाय राजा से बातचीत।

श्री भिनाय राजा, बैरिस्टर चुडगर, हीरालालजी शास्त्री, रतन बहेन, प्रकाशजी, किसनचन्दजी वगैरा दो मोटर से वनस्थली गये। वहां पहुंचने पर आश्रम की इमारतें लड़कियो के खेल-कूद आदि देखे। भोजन, परिवार के बाद जल्दी ही मोहन व सज्जन से मिलकर सो गये।

वनस्थली, जयपुर, सीकर, २०-७-३८

बरसात थी। पानी थम जाने के बाद करीब साढ़े सात बजे रवाना। ६॥ बजे जयपुर पहुचे।

शास्त्रीजी से कहकर जयपुर महाराजा के नाम पत्र लिखवाया। मित्रों से चर्चा।

जयपुर महाराजा से मर बीचम के बगले पर मिलना। थोड़ी देर कैप्टन वैब से बातचीत।

बाद मे महाराजा से मिलना हुआ। करीब एक घटा व दस मिनट बातचीत। मर बीचम भी थोड़ी दूर पर बैठे रहे। सीकर के बारे मे वर्किंग

रात में मि० यंग व अचरोल ठाकुर से बहुत देर तक बातचीत हुई। महाराज के आने के बारे में। सर बीचम का व्यवहार ठीक नहीं रहा। चिन्ता रही व बुरा लगा।

२३-७-३८

पहले राजपूत लोग, बाद में नवलगढ ठाकुर सा० मिलने आये। देर तक बातचीत। सर बीचम के व्यवहार व वर्ताव से दुःख व चोट पहुंचती थी। सब कड़वा घूट पीना पड़ा।

गढ में बुलाने पर जाना पडा। मि० यंग भी वहां पर आये। बातचीत से वहां तो यह उम्मीद हुई कि शायद जयपुर दरबार गढ मे आ जावें पर कुछ निश्चित नही था।

स्टेशन पर सीकर की जनता खूब संख्या में आवे, बाजार खुला रहे, आदि लोगों को समझाया। मि० यंग को कहा कि महाराज का व्यवहार आदि ठीक रहे।

नजर का प्रश्न विकट पैदा हुआ। आखिर में सीकर की जनता के हित के दृष्टि से देना तय किया। जयपुर दरबार की स्पेशल आने से पहले सर बीचम ने जो पढा वह ठीक नही लगा।

जयपुर महाराज की स्पेशल आई। बरसात खूब हुई। शामियाना गिर गया। नजर आदि की। राजकुमार साथ में थे। मुझे ठीक नही लगा। नजर पेश करके मैं कमरे मे चला आया।

सीकर-देहली, २४-७-३८

सुबह तीन बजे उठे। जल्दी निवृत्त होकर पैदल स्टेशन। सीकर से देहली के डिब्बे मे बैठे।

रास्ते मे हीरालालजी शास्त्री ने स्टेटमेंट बनवाया। फेर-फार कर ठीक किया। वह तो रींगस से जयपुर चले गये। साथ मे दीक्षित भी थे। हम लोग देहली १॥ बजे करीब पहुंचे।

देहली में गाडोदियाजी के यहा स्नान, भोजन। श्री मामा, जयसुखलाल आदि से बातचीत।

ग्रान्ड ट्रंक से थर्ड क्लास मे वर्धा रवाना ५॥ करीब। जानकी, दामोदर, विट्ठल साथ मे।

आगरा तक बहुत ही गरमी मालूम हुई। आगरा में श्री [illegible] मिले। श्री इन्द्रमोहन भी मिला। नई देहली तक देवीलाल [illegible] साथ आये।

वर्धा, २५-७-३८

सुबह मिलने के पहले तैयार। हवा व दृश्य सुन्दर दिखाई देते थे।
जयपुर दरबार को व यंग को पत्र भेजना। मसविदा बनवाना।
नागपुर में श्री पटवर्धन मिले। उनसे गाड़ी चलने तक बातचीत। डा० खरे ने इस प्रकार की भयंकर भूल किस प्रकार की इस बारे में उन्होंने कहा कि मुझे बिलकुल मालूम नहीं। विचार व सलाह मेरे से नहीं की। बाद में श्री खुशालचन्द खजानची, मि० रजाक, तान्याजी उत्तरेश्वर वर्धा तक साथ आये। खुशालचन्द से बहुत सारी स्थिति मालूम हुई। मि० रजाक के आज के बयान में पहले से फर्क था। तान्याजी ने कहा कि मेलू की तरफ पानी व बाढ़ से बहुत हानि हुई है, ऐसा सुना है।
वर्धा में सीकर के निवासियों ने स्वागत किया। घर पहुँचते ही उसी समय मुझे सेगाव जाना पड़ा। बापू ने डा० खरे को भली प्रकार समझाने का प्रयत्न किया। एक बार तो बापू को कह दिया कि आप जैसा कहेंगे वैसा ही करूंगा। पर बाद में बदल गये।

२६-७-३८

घर में खूब भीड़ थी।
वर्किंग कमेटी का कार्य ८।। से ११ व २ से ८ बजे तक चला। पूज्य बापू जी २।। से ८ बजे तक बैठे। सी० पी० मिनिस्ट्री का ठहराव एकमत से (सर्वानुमत से) खूब सोच समझ कर विचार विनिमय के बाद पास हुआ। मन में बुरा तो लगता था, परन्तु दूसरा कोई उपाय, कांग्रेस की प्रतिष्ठा की दृष्टि से, दिखाई नहीं दिया।
वर्किंग कमेटी के प्राय. सभी सदस्यों की राय हुई कि अगर श्री जाजूजी स्वीकार कर लें तो उनका नाम लीडर के लिए सुझाया जाये। मैं भी जाजूजी से किशोरलाल भाई के साथ मिला। हम दोनों ने खूब समझाया। बाद में उन्हें शरद बाबू, मौलाना, सरदार, आदि से मिलाकर आखिर में सुभाष बाबू से मिलाया। सुभाष बाबू ने बड़े ही अच्छी तरह से प्रेमपूर्वक व जोर

देकर समझाने का प्रयत्न किया। आखिर में कल सुबह बापू के पास जाकर शंकाओं का समाधान होने पर, विचार करने का तय किया।

२७-७-३८

४ बजे उठकर श्री आजूजी को लेकर सेगांव बापूजी के पास गये। किशोरभाई साथ थे। बापूजी ने उनकी शंकाओं का भली प्रकार समाधान-कारक उत्तर दिया। एक बार तो लगा कि वह मुख्य मंत्री होने के लिए तैयार हो जायेंगे। मैंने भी काफी जोर लगाया। बाद में मोटर से वर्धा वापस आने, तो उन्होंने इस जवाबदारी को लेने से इन्कार कर दिया। मैंने सुभाष बाबू को सब हालत बता दी। मुझे भी निराशा हुई।

नवभारत विद्यालय में नागपुर असेम्बली पार्टी की सभा हुई। मुझे कोई उत्साह नहीं रहा। मेरी राय थी कि अगर पार्टी, वर्किंग कमेटी पर लीडर चुनने की जवाबदारी देती हो तो उसे हमें ले लेनी चाहिए, या बाद में बाहर कोई मिले तो बाहर का अन्यथा शुक्लजी को चुन लिया जावे। उनके साथ योग्य व्यक्तियों को देकर प्रभावशाली कैबिनेट बनाई जाय। पर मेरी यह योजना पार नहीं पड़ी। डा० खरे घर पर भोजन करने आये। मुझे बहुत अच्छा लगा।

वर्किंग कमेटी की सभा हुई। सीकर सम्बन्धी प्रस्ताव हुआ।

श्रीशुक्ल जी को मैंने अपने विचार व राय बहुत साफ तौर से कही, सरदार आदि के साथ गांधी-सेवा-संघ की सभा हुई।

वर्धा (सेलू) २८-७-३८

सेलू जाकर आये। जानकी देवी, कमला, शांता साथ में थी। सेलू की हालत भयानक व दुःखकारक दिखाई दी। विचार-विनिमय।

जयपुर दरबार व मि० यंग आदि को पत्र भेजे। श्री ईश्वर व मजुमदार को भी पत्र भेजे।

श्री अन्ना सा० दास्ताने से खानगी स्थिति आदि पर विचार-विनिमय। अभी तक यह सफल नहीं हो सके।

सरदार वल्लभभाई से नागपुर प्रान्त के बारे में विचार-विनिमय। [illegible] की स्थिति कही।

[illegible] हाउस में गये। वहां मैं, सरदार, राजेन्द्रबाबू व कृपलानी के

हिंगणघाट मिल की पिकेटिंग व कानपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय। बापू ने कहा हिंगणघाट की पिकेटिंग इस प्रकार बिलकुल नहीं हो सकती। यह जल्द बन्द होनी चाहिए।
मेरा कर्तव्य बतलाया। मद्रास श्री रमण महर्षि के पास जाने को कहा। राजेन्द्र बाबू ने नागपुर के बारे में पार्लामेंट्री बोर्ड का स्टेटमेंट बताया।
शाम को चि० शांता ने बताया कि नाना आठवले को हैजा हो गया सो वहां गया हालत चिंताजनक। डाक्टर की व मोटर आदि की व्यवस्था की। बाद में मालूम हुआ काका सा० व अन्य लोगों को भी थोड़ी शिकायत हुई। चिंता रही।

१-८-३८

श्री काका सा०, नाना तथा काका सा० के चार विद्यार्थी—कार्यकर्ता—पाडुरंग, दावके, सबनिस व श्रीपाद ने सेगांव से परसों आई जो नीरा पी थी, उससे हैजा हो गया था। हालत चिन्ताजनक व वातावरण एकदम गम्भीर तथा विचारणीय हो गया।
सेगांव जाकर बापू से मिलकर आया। उन्हें स्थिति कही।
हैजे के बीमारों की व्यवस्था आदि की चिन्ता में प्रायः रात के साढ़े ग्यारह बज गये। कई बार उन्हें जाकर देखा।
'महाराष्ट्र' का थोड़ा भाग पढ़ा। झूठा लिखने की कमाल है!
रात्रि में कलकत्ता से प्रभुदयालजी का व नर्मदा का फोन आया। प्रभुदयाल-जी ने भी मेरे वहां आने पर जोर दिया।। थोड़ी चिन्ता और बढ़ी।
हिंगणघाट मिल की हड़ताल की चिन्ता। लिखा पढ़ी की।

२-८-३८

काका सा० व नाना को देखा। बाद में अस्पताल में जाकर दावके, पाडुरंग, सबनीस, श्रीपाद को भी देखा। पाडुरंग व दावके की हालत चिन्ता-जनक मालूम हुई, उन्हें हिम्मत दी।
महिला आश्रम तक पैदल गया आया। कलकत्ता व मद्रास का प्रोग्राम निश्चित करना। भालेराव देशमुख, दादा, धोत्रे आदि से बातचीत।
आखिर आज शाम को पांडुरंग चला गया। दुःख व चोट तो लगी, पर उपाय क्या? दूसरे बीमारों के पास देर तक बैठना। उन्हें हिम्मत दी व

इलाज की व्यवस्था की।
काका व नाना को फिर देखा। सिविल सर्जन से देर तक बातचीत—इलाज व हैजे के बारे में।
हिंगणघाट मिल हड़ताल के बारे में चिन्ता। विचार-विनिमय।

३-८-३८

रात में निद्रा बराबर नहीं आई। चिन्ता रही, विशेषतः बीमारों की।
सुबह काका सा० के इलाज के बारे में बहुत देर तक विचार-विनिमय के बाद श्री दफ्तरी (नागपुरवाले) का इलाज चालू किया। दावके की हालत खराब जोखमवाली मालूम हुई। उन्हें भी डा० दफतरी ने दवा दी, परन्तु वह १॥ बजे दिन के चल बसा, दुःख हुआ। उसके पिता पांच मिनट बाद आये। बहुत ही समझदार व हिम्मतवाले मालूम हुए। उन्हें देखकर व उनसे बात कर मन में हिम्मत मालूम हुई। नाना की तबीयत साधारण ठीक है। सर्वनिम व श्रीपाद भी ठीक है।
हिंगणघाट मिल की हड़ताल के बारे में डा० मजुमदार, बंसीलाल, अबीरचन्द के व रेखचन्द मोहता के मैनेजरों से करीब तीन घंटे बातचीत। स्थिति समझ में आई। आखिर में एक सप्ताह की सूचना देकर मिल चलाने का निश्चय पक्का हो जाए तो पिकेटिंग उठा दिया जाने का डा० मजुमदार ने स्वीकार किया।
रात में ग्यारह बजे तक मिलने आने वाले व काम की गड़बड़ रही।

वर्धा, ४-८-३८

जानकी देवी, चि० शान्ता (राणीवाली) व विट्ठल के साथ थर्ड क्लास में मेल से कलकत्ता रवाना हुए।
नागपुर में पटवर्धन को डा० खरे व उनके नाम का पत्र दिया व जबानी समझा कर कहा।
बिलासपुर में घटे हुए दूध की काफी पी।
रात में ८॥ करीब सोया। साधारणतः ठीक नींद आई।

कलकत्ता, ५-८-३८

हावड़ा से ही सीधे नर्मदा को देखने चि० शान्ताबाई के साथ गये। नर्मदा का बरताव व दिमाग का पागलपन देखकर आश्चर्य व दुःख हुआ। डा०

बराट से बातचीत। करीब दो घंटे वहां ठहरा।
श्री लक्ष्मणप्रसादजी के यहां उतरे। वहां स्नान, आदि के बाद चि० सावित्री व बच्चे (राहुल) को देखा। बाद में भोजन।
नर्मदा के यहां जाकर देर तक बैठना व केशर को समझाना। रात में डा० बराट ने डा० कर्नल पी० गाव को बुलाया। दोनों से देर तक विचार करने के बाद इन लोगों ने यही निश्चय किया कि बच्चा तो निकाल ही डालना चाहिए। मेरी राय यह रही कि निश्चय का अमल एक रोज ठहर कर किया जाय। परन्तु नर्मदा की हालत सुबह से शाम को ज्यादा खराब हो गई, इससे सबो की राय कबूल की।

६-८-३८

सात बजे चि० नर्मदा का डा० पी० गाव आपरेशन करने वाले थे, परन्तु आज आधा काम किया। आपरेशन कल करने का निश्चय। वहा करीब दो-ढाई घटे ठहरा। वापस आते समय चि० पार्वती को उसके घर से साथ लेते हुए आये। उसका घर देखा व सबो से मिला।
नर्मदा को फिर देखने गये। घनश्यामदासजी बिड़ला मिले व जयपुर तथा सीकर सम्बन्धी चर्चा। उनको स्थिति समझाई।

७-८-३८

सुबह सात बजे प्रभुदयालजी के यहा। डा० गाव व बराट ने नर्मदा के डेढ महीने करीब का बच्चा आपरेशन करके निकाला।
चि० गोपी व गजानन्द बिड़ला से मिलकर घर।
श्री सुभाष बाबू भोजन को आये। सावित्री व बच्चे को देखा। उसका नामकरण करने का प्रयत्न। भोजन के बाद मौलाना आजाद भी आये। बंगाल व सी० पी० मिनिस्ट्री की चर्चा, विचार-विनिमय।
घनश्यामदासजी बिड़ला से सीकर-स्थिति व प्रजा-मडल के बारे में विचार-विनिमय।
इस वर्ष के छ हजार देने का निश्चय। बाद मे पाच सौ रुपये मासिक तीन वर्ष तक।
कमल के बारे मे सब मिलकर विचार हुआ। भारत मे ही रहने का निश्चय हुआ।

वातचीत। लेडी हैदरी भी मौजूद थी।

करीव ७। वजे मदर ने मालाएं दीं; मुझे तुलसी की माला मिली। मित्रों से मिलना।

कडलूर के लिए (१३ माइल) रवाना। कडलूर आश्रम मे जादू के खेल, विनोद आदि। सोया।

कडलूर-तिरुवण्णामलै, १६-८-३८

श्री वाल गुरुकुलम् का निरीक्षण किया। पिनाकिनी गंगा मे स्नान। आनन्द के साथ प्रेमपूर्वक वालको के साथ नाश्ता। वालको की दोनो प्रार्थना में शामिल हुये।

कुछ कहा। झाड़ों के नीचे वर्ग देखे।

८।।। वजे वहा से तिरुवण्णामलै के लिए रवाना हुए। करीव ६७ मील मोटर से आए।

करीव १२ वजे पहुच कर भोजन किया। पोस्ट देखी।

साढ़े तीन वजे करीव रमण महर्षि के पास गये। वहा देर तक वैठे। आज महाराज से प्रश्न-उत्तर व शका-समाधान का मौका भी मिला। 'सद्‌वुद्धि' कैसे कायम् रहे, 'नत्वह कामये राज्य न स्वर्ग, न मोक्षये' का ध्येय रखा जावे तो कैसा है, आदि पूछे। प्रश्न-उत्तर अलग लिखे हुए है। वहीं पर दूध लिया।

६।। वजे करीव डेरे पर (याने एड० एन० एस० छल्लप चेट्टियार के यहा गये)। वहा डा० सौन्द्रम् व उसकी भाभी ने भजन सुनाये।

सिर मे दर्द होने लगा।

१७-८-३८

नाश्ता वगैरा करके रमण-आश्रम। करीव सवा दो घटे रमण महर्षि के पास विताये।

वहा की सरकारी अस्पताल मे विट्ठल को देखने गये। वाद मे अस्पताल भी घूमकर देखी। डा० सौन्द्रम् साथ थी। तिरवण्णामलै अस्पताल के डा० एस० एम० नटेसन मुद्‌लियार योग्य व सेवाभावी मालूम दिये।

तार, पत्र। सर वीचम जॉन को पत्र भेजा। असोसियेटेड प्रेस को पोस्ट से मद्रास स्टेटमेंट भेजा।

बातचीत । लेडी हैदरी भी मौजूद थी।
करीब ७। बजे मदर ने मालाए दी; मुझे तुलसी की माला मिली। मित्रो से मिलना।
कडलूर के लिए (१३ माइल) रवाना। कडलूर आश्रम मे जादू के खेल, विनोद आदि। सोया।

कडलूर-तिरुवण्णामलै, १६-८-३८

श्री बाल गुरुकुलम् का निरीक्षण किया। पिनाकिनी गंगा मे स्नान। आनन्द के साथ प्रेमपूर्वक बालकों के साथ नाश्ता। बालकों की दोनो प्रार्थना मे शामिल हुये।
कुछ कहा। झाडो के नीचे वर्ग देखे।
८।। बजे वहा से तिरुवण्णामलै के लिए रवाना हुए। करीब ६७ मील मोटर से आए।
करीब १२ बजे पहुच कर भोजन किया। पोस्ट देखी।
साढे तीन बजे करीब रमण महर्षि के पास गये। वहा देर तक बैठे। आज महाराज से प्रश्न-उत्तर व शका-समाधान का मौका भी मिला। 'सद्बुद्धि' कैसे कायम् रहे, 'नत्वह कामये राज्य न स्वर्गं, न मोक्षये' का ध्येय रखा जावे तो कैसा है, आदि पूछे। प्रश्न-उत्तर अलग लिखे हुए है। वही पर दूध लिया।
६।। बजे करीब डेरे पर (याने एड० एन० एस० छल्लप चेट्टियार के यहा गये)। वहा डा० सौन्द्रम् व उसकी भाभी ने भजन सुनाये।
सिर मे दर्द होने लगा।

१७-८-३८

नाश्ता वगैरा करके रमण-आश्रम। करीब सवा दो घटे रमण महर्षि के पास विताये।
यहा की सरकारी अस्पताल मे विट्ठल को देखने गये। बाद मे अस्पताल भी घूमकर देखी। डा० सौन्द्रम् साथ थी। तिरुवण्णामलै अस्पताल के डा० एस० एम० नटेसन मुदलियार योग्य व सेवाभावी मालूम दिये।
तार, पत्र। सर बीचम जॉन को पत्र भेजा। असोसियेटेड प्रेस को पोस्ट से मद्रास स्टेटमेट भेजा।

रमण-आश्रम ४। बजे करीब गये। बरसात ज़ोर से हुई। भजन वगैरा में शामिल।

अरुणाचलेश्वर मंदिर में ट्रस्टियों की ओर से व अफसरों की कोशिश से जाहिर सभा हुई। हरिजन व मंदिर-प्रवेश पर करीब एक घंटे तक बोला व अनुवाद भी ठीक प्रामाणिक हुआ लगा। ठीक परिणाम आया।

रमण महाराज के साथ प्रेमपूर्वक भोजन। रात में ६। बजे तक उनके पास बैठे। भजन हुए।

तिरुवण्णामलै, १८-८-३८

जल्दी उठकर निवृत्त। रमण-आश्रम में वहीं पर महर्षि के साथ नाश्ता।

आज अरुणाचलम पर्वत के चारों तरफ घूमना। कई स्थान, जहां रमण महर्षि ने तपश्चर्या की वह देखे। बहुत ही सुन्दर व रमणीक पहाड़ है।

करीब चार मील से ज्यादा पैदल घूमना हुआ। आखिर में स्कन्द आश्रम में स्नान, भोजन, आराम। स्थान बहुत ही सुन्दर था। यहीं रहने की इच्छा होती थी।

रमण-आश्रम में डेरे पर। वहां जाहिर सभा थी। हिन्दी, खादी, हरिजन व मंदिर-प्रवेश पर थोड़ा बोला।

शाम ५। फिर रमण-आश्रम में कई स्थान देखे। कॉफी ली। महाराज के पास बैठे। देवराज व गजानन्द शास्त्री के भजन, नृत्य आदि।

रात को आश्रम में ही राजेन्द्र बाबू व मेरे सोने की व्यवस्था की गई।

तिरुवण्णामलै-मद्रास, १९-८-१९३८

रात में निद्रा बहुत कम। विचार-विनिमय, आश्रम में सोने के कारण।

रमण महर्षि के साथ सुबह ३ बजे से ४।। बजे तक बैठे। उनका साग काटना, रसोई का काम करना आदि देखा। देखकर संतोष हुआ। थोड़ी बातें भी हुईं।

थोड़ा आराम करके सुबह पांच बजे से ६ बजे तक फिर रमण महाराज के पास बैठा, प्रार्थना।

महाराज के साथ नाश्ता करके ७।। बजे तिरुवण्णामलै से मद्रास रवाना हुए। राजेन्द्र बाबू, जानकी, मदालसा साथ थे। मद्रास (१२० मील करीब) ११-१० पर पहुंचे। हिन्दी प्रचार कार्यालय में ठहरे। रास्ते भर खूब भजनों

व गायन का आनन्द रहा। मित्रो से मिलना-जुलना। तार-पत्र देखे।
राजाजी के साथ उनके यहां गया। उनका घर देखा।
मद्रास कॉरपोरेशन ने मुझे व राजेन्द्रबाबू को मानपत्र दिया। समारंभ ठीक हुआ।
भाष्यम् व नागेश्वरराव के घर गए। मे कई मिनिस्टर मिलने आये।

मद्रास, २०-८-३८

राजेन्द्रबाबू ग्रांड ट्रंक से वर्धा गये। जाने के पहले हिन्दी प्रचार कार्यकर्ताओं के साथ फोटो। राजाजी वगैरा भी थे। सन्ध्यावन्दन।
दक्षिण में हिन्दी प्रचार कार्य के बारे में विचार-विनिमय—८॥ से ११॥ तक होता रहा। हिसाब जानकर संतोष मिला।
दक्षिण प्रान्त हरिजन कांफ्रेंस में थोड़ी देर रहे।
राजाजी के घर —खरे, गवर्नर, हिन्दी प्रचार ट्रस्टों, मद्रास गवर्नमेंट, डेढ़ करोड़ सोन आठ आने सैकड़ा कमीशन आदि पर चर्चा।
डा० मोहम्मद का अनाथालय व गरीबों का दवाखाना देखकर उसके घर। बाद में मि० याकूब हुसैन के यहां। उनकी बीबी ने दावत दी थी। कई मुसलिम बहनें वहां आई थी। विद्यालय संस्था देखी।
दक्षिण हिन्दी प्रचार ट्रस्ट की मीटिंग, भाष्यम्, रगलालजी व सत्यनारायणजी को लेने का निश्चय। मेरे त्याग-पत्र की बातें।
मित्रों के साथ भोजन व बातचीत।
आज जानकी देवी को कड़े शब्द कहे गये, उसका दु:ख व विचार रहा।

२१-८-३८

सुबह जल्दी तैयार होकर—राजाजी के घर पहुचकर, श्री रगलालजी व रामनाथ से देर तक बातचीत। राजाजी के साथ स्टेशन। ग्रान्ड ट्रंक से थर्ड के डिब्बे मे वर्धा रवाना। जानकी देवी, शान्ता, विट्ठल साथ मे। रगलालजी व रामनाथ कुछ दूर तक साथ आये। रामनाथ ने आखिर मे मेरी बात मान ली। (राजाजी के सम्बन्ध मे)।
जानकी को कल मेरे कटु व कड़े शब्दो के प्रयोग से अत्यन्त दु:ख पहुचा। वास्तव मे उसकी समझने मे भूल थी, तथापि मुझे भी कल से दु:ख था, उसका खुलासा व निराकरण किया।

वर्धा, २२-८-३८

हिंगणघाट से श्री रुईकर साथ हुए। उन्होंने कहा कि आपकी कांग्रेसवाले ही बुरी तरह से गालियां वगैरा निकाल रहे हैं, हम लोगों ने कभी ऐसा नहीं किया, आदि। हिंगणघाट एम्प्रेस मिल की हड़ताल के बारे में उन्होंने कहा कि यह उनकी टेकनिकल गलती हो सकती है, नैतिक नहीं।

वर्धा पहुंचे। पी० आर० दास वगैरा बिहार व बंगाल आदि से आये हुए अतिथि मिले।

बापू के पास सेगांव जाकर आया। प्यारेलाल को देखा। बापू को रमण महर्षि तथा श्री अरविन्द व मदर के दर्शन तथा आश्रम का इतिहास कहा। बापू का उस दिन मौन था।

वर्धा में नागपुर से श्री शेरलेकर, अम्बूलकर, सहस्रबुद्धे, वगैरा आये। वहां की स्थिति बताने लगे।

२३-८-३८

पत्र लिखवाये। पी० आर० दास आदि कलकत्ता गये। उन्हें स्टेशन पहुंचाया।

पवनार जाकर आया। गोपालराव से बातचीत, कुआं देखा। विनोबा सोये हुए थे।

पत्र-व्यवहार। नागपुर से दाण्डेकर वगैरा आये। वहां की स्थिति समझी।

काका सा० से देर तक रमण आश्रम व अरविन्द आश्रम की बातचीत।

पवनार में विनोबा से रमण महर्षि व श्री अरविन्द के बारे में देर तक बातचीत।

पवनार, वर्धा, २४-८-३८

विनोबा के साथ बातचीत। डेढ़ मील तक पैदल घूमकर आया। वर्धा से साप्ताहिक पत्र निकालने का विचार। दादा धर्माधिकारी व गोपालराव काले को सम्पादक बनाने का सोचा।

वर्धा में दादा से वर्तमान स्थिति पर बातचीत व पत्र के बारे में विचार-विनिमय।

बजाजवाड़ी गृह-विभाग की सभा का कार्य देर तक हुआ।

वर्धा, २५-८-३८

सुबह जल्दी उठना। किशोरलाल भाई, धोत्रे, जाजूजी, दादा, राधा
दामोदर आदि से, देर तक नागपुर के वातावरण, वर्तमान-पत्र आ
विषय मे विचार-विनिमय होता रहा।

काका साहब को बापू के पास सेगाव ले जाना। बीमारी के बाद बापू
और काकसा की प्रथम बार बातचीत। प्यारेलाल ठीक थे।

नागपुर से पटवर्धन आये। प्रान्तीय कमेटी वगैरा का एजेन्डा तैयार कि
पटवर्धन से डा० खरे के बारे मे देर तक बातचीत।

२६-८-३८

श्री पटवर्धन को नागपुर पत्र भेजा। डा० खरे के सम्बन्ध मे रुईकर
स्टेटमेन्ट का जवाब तैयार किया।

चि० शान्ता के विल (मृत्युपत्र) का मसविदा देखा।

ब्रिजमोहन गोयनका के नाम माहिम जमीन के बारे मे पावर आफ अट
रजिस्टर करके भिजवाया। नागपुर बैंक के डायरेक्टरो की सभा हुई।

राजेन्द्र बाबू से नागपुर लेबर समस्या सम्बन्धी वक्तव्य पर विचार।

पत्र व्यवहार। कृष्णा बाई कोल्हटक आदि से महिला-मडल के बारे मे
बातचीत।

राजेन्द्र बाबू, हस डी० राय आदि से राजनैतिक व १९०६ से जीवन वृतान्त
सम्बन्धी बातचीत ठीक रही।

वर्धा, नागपुर, २७-८-३८

श्री पटवर्धन का नागपुर से फोन आया कि मैं आज ही आकर डा० खरे
से मिल जाऊ, क्योकि बाद मे वह गणपति उत्सव के निमित्त बाहर
जावेगे।

महिला आश्रम की सभा, काका साहब के यहा हरिजन बोडिंग मे हुई।
श्री नाना के बारे मे ठहराव। कृष्णाबाई को कार्य भार सौपा। काशिनाथ
को भी।

एक्सप्रेस से नागपुर गये। दादा धर्माधिकारी साथ थे। रास्ते मे विचार-
विनिमय। वर्तमान पत्र के बारे में। द्रविड भी उसी गाड़ी मे थे।
नागपुर मे पटवर्धन स्टेशन आये थे। टागा करके डा० खरे के यहा गये।

दो बजे करीब राजेन्द्रबाबू, काशी बहन गांधी, केशवदेवजी, गौरीशंकर नेवटिया और मैं मोटर से सेगाव गये। रास्ते में वर्षादि से सेगाव को सड़क के पास गाड़ी कीचड़ में फंस गई। थोड़ी दूर पैदल।
बापूजी से, रात को सुभाष बाबू का जो फोन आया, वह बताया।
बापू ने कहा कि वर्धा में ता० २० अक्तूबर के बाद वर्किंग कमेटी व ए० आई० सी० सी० की सभा रखी जा सकती है। उस समय तक वह बंगलौर से आ जावेंगे। पहले रखना हो तो देहली में रखें।
रात में धनचक्कर क्लब में दादा का सुन्दर व्याख्यान हुआ।
केशवदेवजी, गौरीशंकर पुलगाव गये। श्री शुक्लाजी नागपुर से १० बजे आये। राजेन्द्रबाबू सो गये थे। सो मेरे पास देर तक बैठे रहे।

३०-८-३८

श्री शुक्ल व राजेन्द्रबाबू आये। शुक्लजी नागपुर गये। राजेन्द्रबाबू से बंगाल, बिहार आदि पर बातचीत। सुभाष बाबू से फोन पर बातचीत। मीटिंग देहली रखने का निश्चय।
केशवदेवजी नेवटिया पुलगाव से आये। मुकुन्द आयर्न, हिन्दुस्तान हाउसिंग कंपनी व हिन्दुस्तान शुगर फैक्टरी के बारे में थोड़ी बातें।
बच्छराज जमनालाल के लेन-देन, शेअर आदि बेचने के बारे में विचार-विनिमय।
शिवराजजी, करन्दीकर, गणाविमन आदि से वर्धा म्युनिसिपल ऑफिस के बारे में विचार-विनिमय।
आज फिर दाहिने पांव के नीचे जहां पहिले दो बार मोच आ गई थी दर्द होना शुरू हुआ। जेठारामजी (सिंध वाले) का परिवार भोजन करके मिलने आया।
किशोरलालभाई मशरूवाला के पत्र, वैजनाथजी महोदय के बड़े भाई, जो सूरदास हैं, के बारे में।
[illegible] नागपुर से आये थे। उनसे [illegible] बताई।

३१-८-३८

[illegible] बाबू से बातचीत। बिहार में [illegible] बातें।

अ-ब्राह्मण पार्टी के लोग श्री बाजीराव, भालेराव, अमृतराव, मोतीबाबा, वगैरा मिलने आये। उन्हें कांग्रेस की नीति साफ तौर से समझाई। कांग्रेस से सौदा, लेन-देन की बात नहीं। मेरी समझ से अ-ब्राह्मण पार्टी की जरूरत नहीं। कांग्रेस ने रचनात्मक प्रोग्राम ले ही लिया है।

राजनैतिक प्रोग्राम से भी विशेष लाभ भारत के बहुजन समाज को ही मिलने वाला है। मद्रास की जस्टिस पार्टी वगैरा के उदाहरण भी दिये।

पत्र व्यवहार।

राजेन्द्र बाबू का धनचक्कर क्लब में व्याख्यान।

१-६-३८

पूज्य मां से बातचीत। उसे केशर व जानकी के आपस के मन न मिलने के बारे में समझाया। उसे पूरा हाल मालूम नहीं था, इसलिए केशरबाई को वर्धा रखने का आग्रह न करने का समझाया।

सरदार, कृपलानी, चोइथराम आये। रमण महर्षि व अरविन्द के बारे में जो कुछ देखा, समझा वह कहा।

श्री नारायणजी गनेडीवालों के चार लड़के मिलने आये। अर्जुनलाल के साथ बातचीत परिचय।

श्री द्वारकाप्रसाद मिश्र नागपुर से सरदार से मिलने आये। थोड़ी देर बातचीत—नीरा आदि के मिथ्या आंदोलन के बारे में।

मौलाना आजाद शाम को कलकत्ता से आये। उनसे मिला, बातचीत।

धनचक्कर क्लब में कृपलानी व डा० चोइथराम के भाषण, बातचीत। मैं सभापति बना।

२-९-३८

सरदार वल्लभभाई, मौलाना आजाद, राजेन्द्रबाबू, कृपलानी, डा० चोइथराम से देश की वर्तमान स्थिति पर विचार-विनिमय, तथा वर्किंग कमेटी तथा आल इंडिया के बारे में गंभीरतापूर्वक विचार। राजेन्द्र बाबू के जिम्मे प्रस्ताव बनाने का काम सौंपा गया।

मौलाना से आगामी वर्ष के चुनाव आदि तथा मेरा वर्किंग कमेटी में न रहने के बारे में व सभापति वगैरा के बारे में थोड़ी बातें।

ना० प्रा० बा० कमेटी का कार्य।

नागपुर में मिनिस्टर शुक्ल, मिश्र, वगैरा आये। नागपुर में डा० खरे स्टेटमेंट प्रकाशित हुआ।

नागपुर के लिए जो मुख्य प्रस्ताव करना था, उसपर विचार-विनिमय [illegible] पर भी रात में देर तक [illegible] बाबू के साथ विचार-विनिमय।

वर्धा नागपुर, ३-९-३८

नागपुर जाने की तैयारी। मौलाना, सरदार वगैरा से मिलना। देहली रघुवीर शरणजी आये। नागपुर ९-१५ की गाड़ी से रवाना। गाड़ी में अखबार देखे।

नागपुर में पहुंचकर गिरधारी के यहां सामान रखा व थोड़ी देर १० मिनट लेटा।

बाद में ना० प्रा० का० कमेटी के लिए म्युनिसिपल स्कूल में १२ बजे पहुंचे।

शाम के ६। बजे तक कार्य होता रहा। प्रस्ताव वगैरा ठीक पास हुए। ना० न० कमेटी व ना० म्यु० कमेटी का झगड़ा। म्यु० आफिस में ६॥ से ८। तक सब स्थिति समझी। पटवर्धन की भूल मालूम हुई। रात में गिरधारी के यहां ८॥ बजे थोड़ा खाया।

जानकी भी वर्धा से दांत दिखाने आई थी।

नागपुर-वर्धा, ४-९-३८

७॥ बजे नाश्ता वगैरा से निपटकर म्यु० स्कूल धनतोली में ना० प्रा० का० कमेटी की सभा के लिए गया। काटोल, भण्डारा के नामिनेशन पर विचार। चतुर्भुजभाई, भीकूलाल तथा वहां से आये हुए लोगों से स्थिति समझना।

ना० प्रा० का० की साधारण सभा—९ से ११ व १-२॥ तथा ३॥ से ८ तक। बीच में डेलीगेटों की सभा २॥ से ३॥ तक हुई। सुबह ८ से रात में ८ तक वहीं रहकर काम हुआ। डेलीगेटों का चुनाव। चौबीस डेलीगेट हाजिर थे। गोपालराव काले को १५ व हरकरे को ९ मत मिले। प्रा० क० के गन्दा प्रचार रोकने के बारे के ठहराव पक्ष में २, विरुद्ध में १ मत मिले।

वकिंग कमेटी का ठहराव सर्वथा योग्य था। डा० खरे हाजिर थे। वर्धा आफिस में डा० के पक्ष में २० व विरुद्ध में ७ वोट। कुछ तटस्थ थे। हरकरे, गार्डेकर का बर्ताव शोभा के योग्य नही था। श्री काले ठीक बोले। पटवर्धन का व्यवहार भी ठीक नहीं रहा। आखिर में काम ठीक तौर से निपटा। रात में एक्सप्रेस से वर्धा रवाना।

५-९-३८

नर्मदा की हालत केसर ने थोड़ी समझी।

वर्धा से मराठी अखबार निकालने के बारे में गोपालराव काले, राधाकृष्ण, दादा, शर्मा से चर्चा। दशहरा से शुरू करने का विचार। गोपालराव सम्पादक रहेंगे।

दादा से नागपुर प्रान्त की वर्तमान स्थिति में मेरी व अन्य जवाबदार कांग्रेस कार्यकर्ताओं के सम्बन्ध में विचार-विनिमय। मेरी विचारधारा उनको समझाई। राजेन्द्र बाबू, मौलाना कृपलानी, चोइथराम, सुभाष बाबू वगैरा का मत, नागपुर की प्रा० का० कमेटी के प्रस्ताव, डा० खरे व उनके पक्ष के लोगों का व्यवहार आदि सब स्थिति भी समझाई।

डा० खरे के स्टेटमेन्ट के जवाब पर विचार-विनिमय।

सेगाव में बापू से जाहिर सभा के बारे में व अ० भा० कांग्रेस कमेटी में ठहराव करने के बारे में विचार-विनिमय।

बन्नू के डेपुटेशन का डा० के बारे में कहना सुनना।

६-९-३८

जानकी से घूमते समय बातचीत। मदालसा के घर खाने-पीने आदि का झगड़ा।

पत्र वगैरा लिखे। अखबार पढ़े।

जानकी, चि० कमला, सुशीला, बॉबे मेल से जावरा गये। उनकी तैयारी। नाग, विदर्भ, महाकौशल, बोर्ड की सभा। ब्रिजलालजी व वामनरावजी रात में आये। डा० खरे का पूरा स्टेटमेन्ट पढ़ा। हिन्दी प्रचार सभा हुई। विद्यामन्दिर ट्रेनिंग स्कूल (नार्मल स्कूल) में पुरस्कार समारम्भ। वहां सभापति का काम किया।

७-९-३८

डा० खरे के स्टेटमेंट का जवाब तैयार। नाग, विदर्भ, महाकौशल बोर्ड की बातें।

श्री [illegible] मैनेजर 'बाम्बे क्रानिकल' व डा० गोरलेकर से नीरा-प्रकरण की बातें।

श्री [illegible] आये। उनसे भी बातचीत।

[illegible] सभा गांधी चौक में हुई। श्री सुभाष बाबू व डा० चोइथराम का ठीक भाषण हुआ। सभा में पूरी शान्ति थी।

वर्धा, नागपुर, ८-९-३८

हीरालालजी, भागीरथीबहन, कृष्णाबाई से महिला आश्रम के बारे में बातचीत।

जमनालाल सन्स लिमिटेड की सभा दुकान पर। कमल व रामकृष्ण भी हाजिर थे।

नागपुर प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के कार्य की व्यवस्था।

जयपुर प्रजामण्डल व सीकर स्थिति के बारे में हीरालालजी शास्त्री व हुत डी० राय से बातचीत विचार-विनिमय।

मोटर में नागपुर। डा० चोइथराम, कमल, दामोदर, रामकृष्ण के साथ। भारुका के बंगले, वहा से सुभाष बाबू के साथ व्यंकटेश थियेटर मे ना० नगर की ओर से जो जाहिर सभा हुई थी। वहा गये। मैं सभापति बना। श्री सुभाष बाबू का व्याख्यान। खरे-पार्टी के लोगो ने गडबड़ मचाने की कोशिश तो खूब की, पर सभा ठीक हुई। सुभाष बाबू को खूब परिश्रम करना पडा। रात मे १ बजे वर्धा रवाना।

वर्धा, ९-९-३८

नागपुर से रात मे तीन बजे वर्धा पहुंचे। थोडी देर ही सोने को मिला। मौलाना आजाद व रणजीत पंडित से मिला।

नाश्ते के बाद १ घंटा सोया। सिर पर मट्टी की पट्टी रखी।

जयपुर प्रजामण्डल व सीकर मे जनरल माफी के बारे मे मि० यंग को पत्र भेजा। हीरालालजी से बातचीत व विचार-विनिमय।

पत्र-व्यवहार। नागपुर प्रान्तीय कांग्रेस का काम अम्बुलकर, घटवाई

वगैरा के साथ हुआ।

शरद बाबू, राजेन्द्र बाबू, मौलाना आदि से बातचीत।

मौलाना आज़ाद, राजेन्द्र बाबू को व हीरालालजी शास्त्री को स्टेशन पहुचाया।

सेगाव मे बापूजी से कांग्रेस प्रेसिडेंट के सम्बन्ध मे उनके विचार जाने। जयपुर व सीकर की परिस्थिति, हैदराबाद व सर हैदरी का स्टेटमेन्ट, शिमला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हरिजन सत्याग्रह वगैरा के सम्बन्ध मे उनसे चर्चा व विचार जाने। काका साहब, गोपालराव, कमल, दामोदर भी थे।

भोजन व आराम के बाद मुख्त्यार पत्र रजिस्ट्री करने कचहरी जाना पड़ा।

नागपुर प्रान्तीय का० कमेटी की ऑफिस का कार्य। आर्डर वगैरा दिये।

नागपुर मेल से थर्ड क्लास मे बम्बई रवाना हुए। कमल, हुस डी० राय, विट्ठल, चोइथराम साथ मे। रास्ते मे श्रीगोपाल नेवटिया व गौरीशकर भी थोडी देर के लिए आये। बातचीत।

जुहू, ११-९-३८

दादर से जुहू। केशवदेवजी, जमनादास गाधी, कमल के साथ मुकन्द आयर्न वर्क्स के बारे मे विचार-विनिमय।

दोपहर को मुकन्दलाल, वेदप्रकाश के साथ भी देर तक इस सम्बन्ध मे विचार-विनिमय।

शान्ति प्रसाद जैन (डेहरीवाले) मिलने आये। देर तक व्यापारिक बातचीत।

सीमेन्ट की स्थिति समझी।

जुहू, पूना, १२-९-३८

दादर से ८-२१ की एक्सप्रेस से चि० शान्ता के साथ पूना रवाना।

पूना मे मुक्ता बहन, कमला, विनय वगैरा से मिलकर भोजन। थोड़ा आराम।

मुक्ता बहन से देर तक बातचीत। चि० राधाकृष्ण की सगाई, श्री निवास की सगाई, ज्ञान-मन्दिर, बम्बई-हिन्दी प्रचार, स्वास्थ्य (मानसिक)

बच्छराज कम्पनी के शेयर, जुहू जमीन इत्यादि की बातें।
एम्प्रेस गार्डन मे फ्लावर [illegible] की प्रदर्शनी देखी। सुन्दर थी।
११॥। की पैसेंजर से सेकण्ड क्लास मे बम्बई रवाना। चि० शान्ता साथ थी।

जुहू, १३-९-३८

जुहू मे थोड़ा घूमना। बाद मे केशवदेवजी, श्रीगोपाल वगैरा आये। पाली-रामजी व फतेचन्द से बच्छराज फैक्टरी वगैरा के बारे मे देर तक बात-चीत।
बच्छराज फैक्टरी व कम्पनी, हिन्दुस्थान शुगर कम्पनी के बोर्ड की मीटिंग शहर में हुई।
रामेश्वरजी बिडला से बातचीत। सरदार पटेल से मिलना। भाग्यवती दानी से भी मिला। पन्नू दानी के बारे मे निश्चय करने वह जुहू साथ आई।
लक्ष्मीनारायण, मालपाणी व लाहोटी मिलने आये। बातचीत।

१४-९-३८

घूमते समय हुस डी राय, प्रह्लाद पोद्दार, वगैरा से थोडी बातें। भाग्यवती से भी।
केशवदेवजी वगैरा आये। मुकन्द आयर्न वर्क्स के बारे मे विचार-विनिमय।
मुकन्दलाल, विद्याप्रकाशजी आदि मिले।
बम्बई—रास्ते मे डा० रजब अली पटेल को देखा। उनकी बीमारी बढ़ी हुई लगी।
चिन्ता की बात मालूम हुई।
ऑफिस मे हिन्दुस्तान हाउसिंग के बोर्ड की सभा हुई। बाद मे मुकन्द आयर्न वर्क्स की सभा व कम्पनी की सभा।
रामनिवास रुईया मे देर तक बातचीत। रामेश्वरदासजी बिड़ला के यहा भोजन। बातें।

१५-९-३८

सुबह जमनादासभाई व केशव गाधी से घूमते समय मुकन्द आयर्न कारखाने के बारे में बातचीत।

काकूभाई व केशवदेवजी के साथ बम्बई प्रान्तीय कमेटी का हिसाब देखा।

नारायणलालजी पित्ती मिलने आये। हैदराबाद की हालत कही। रामेश्वरदासजी का उनसे जो मन-मुटाव चलता है, उस बारे में बातचीत। श्री गोविन्द लालजी व बैंकट के बारे में।

श्री शान्तिप्रसाद जैन (डालमिया के जवाई) आये। उन्होंने अपनी कम्पनी की हालत कही। यहीं पर भोजन भी किया। सीमेन्ट के सिंडीकेट के बारे में विचार-विनिमय।

सफिया खान मिलने आई। चि० शान्ता वगैरा भी आये।

जूहू का छोटा प्लाट लुकमानी को मूलजी के मार्फत (हिन्दुस्तान हाउसिंग) पौने आठ रुपये गज से सौदा पक्का किया।

विले पारले छावनी ट्रस्ट की मीटिंग हुई। जूहू मे छावनी की जो इमारत है उसे बेचने का फैसला हुआ।

फ्रन्टीयर मेल मे इण्टर मे शिमला के लिए रवाना।

दिल्ली, १६-६-३८

मुकन्दलालजी (लाहोरवाले) से मुकन्द आयर्न कम्पनी के बारे मे बातचीत।

श्री हम की राय से बातें। वह सवाई माधोपुर में उतर गये।

हिसारवाले आनन्द से बातचीत।

देहली मे कालका-कलकत्ता-एक्सप्रेस गाडी पकडी। स्टेशन पर स्नान किया। रास्ते में गर्मी बहुत ज्यादा थी। कोटा से मथुरा तक लू भी चलती थी। स्नान करने से ठीक मालूम हुआ। स्टेशन पर पार्वती बाई डिडवानिया, दुर्गादेवी, जयसुखभाई गांधी आये थे। जयसुखलाल भाई दूध वगैरा लाये थे। देहली से शान्ता केजडीवाल साथ हुई। इण्टर में भीड़ थी—नींद बराबर नहीं आई। खांसी भी आती रही।

शिमला, १७-६-३८

कालका में गाडी बदली।

रास्ते में दृश्य देखते हुए १२॥ बजे करीब शिमला पहुंचे। वहां से पैदल जैन धर्मशाला में। वहां स्नान, भोजन वगैरा के बाद पैदल सभापति के जलूस में गये। थोड़ी वर्षा थी।

आर्य समाज हाल में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन शुरू हुआ। साढ़े सात बजे तक वहां ठहरना। बाद में कृष्णकान्त मालवीय के आग्रह पर होटल में ठहरे। वहीं सोया।

कमलनयन, दामोदर, शान्ता, विट्ठल, उमा, कमलाबाई कीबे वहा नहीं आये।

१८-९-३८

साहित्य सम्मेलन में काका साहेब का भाषण ठीक हुआ। बाद में साहित्य के विषय पर वर्माजी का भाषण ठीक हुआ। केशर, दामोदर, कमल, उमा, शान्ता वगैरा पहाड़ पर घूमने व देखने गये।

साहित्य सम्मेलन का खुला अधिवेशन हुआ। वहा सात बजे तक ठहरना हुआ।

शिमला में कांग्रेस की ओर से जाहिर सभा हुई। वहा मानपत्र, व्याख्यान। सम्पूर्णानन्दजी, दादा धर्माधिकारी, बद्रीदत्तजी पाण्डे व मैं बोले। सत्यो-देवी भी।

साहित्य सम्मेलन की विषय निर्वाचिनी सभा में रात के १० बजे तक बैठे।

नियमावली पास की।

१९-९-३८

शान्ता केजडीवाल के साथ साहित्य सम्मेलन की विज्ञान सभा में गये। रास्ते में उससे उसके भावी विचार आदि की बाते।

साहित्य सम्मेलन की विषय-निर्वाचिनी सभा में देर तक—दो अढ़ाई बजे तक विचार-विनिमय ठीक हुआ। श्री टण्डनजी, काका साहब, वर्माजी आदि के विचार-विनिमय व बातचीत का ठीक परिणाम हुआ। वातावरण ठीक बना दिखाई दिया।

साहित्य सम्मेलन में साढे पाच बजे तक ठहरे।

खादी भण्डार देखते हुए ६ बजे मोटर द्वारा शिमला से कालका के लिए रवाना।

भाडा १२) दिया। केशर बाई, दामोदर, विट्ठल साथ में।

कालका १० बजे पहुचे। भूलाभाई, सर रजा अली, मास्टर आदि से

मिलना।

दिल्ली, २०-९-३८

हरिजन कालोनी, किंग्सवे में ठहरे। राजेन्द्र बाबू व लक्ष्मी वगैरा से मिलना हुआ। कॉफी ली।

हरिजन कालोनी में चक्की व चर्खा-यज्ञ चल रहा था। वहां वियोगी हरिजी की राय से भाग लिया। आधे घण्टे चक्की चलाई। पार्वतीबाई डिडवानिया साथ थीं। चर्खा भी आध घण्टा काता। फलाहार के बाद आराम।

हरिभाऊजी उपाध्याय से राजस्थान, जयपुर, अजमेर की स्थिति पर विचार-विनिमय।

उदयपुर के बारे में भूरेलाल बया से बातें। दिन में गाडोदियाजी, सरस्वती-बाई, पार्वतीबाई, प्रभुदयाल, द्वारकाप्रसाद, वगैरा कई लोग मिलने आये। नलिनीरंजन सरकार आये।

वियोगी हरिजी की रामायण में गया।

२१-९-३८

सुबह ४॥ से ५ बजे तक चक्की चलाई, दामोदर वियोगी हरिजी आदि के साथ। चर्खा।

केसर के साथ घूमना। उसे नर्मदा के बारे में समझाया कि पहाड़ पर ले जाना अच्छा नहीं। उसकी मनःस्थिति के बारे में भी देर तक व गम्भी-रता के साथ समझाने का प्रयत्न।

इस मामले में मेरी जिम्मेवारी व भूल का पूरा चित्र देकर देर तक समझाने का प्रयत्न। कुछ बातें तो उसकी समझ में बैठीं।

आज रेंटीया बारस (चर्खा द्वादशी) थी। हरिजन बालकों के साथ भोजन किया।

बापू के पास तीन बजे से पांच बजे तक वर्किंग कमेटी के मित्रों के साथ विचार-विनिमय।

रात्रि में केसर के कारण कलकत्ता फोन करना पड़ा। नर्मदा की हालत ठीक है वजन बढ़ रहा है।

आज मन व शरीर ठीक नहीं मालूम देता था, सिर में दर्द था।

२२-९-३८

चि० उमा के साथ थोड़ा घूमना।

प्रभूदयाल (चर्खीदादरी वाले) व साथ में परमेश्वरी, बदामी बाई, गोदावरी, कमला, सुभद्रा, शान्ता, आये। बाद मे इन्द्र मोहन व उनके पिता से थोड़ी देर बातचीत—सम्बन्ध के बारे में।

विडला हाउस मे वर्किंग कमेटी की सभा हुई।

हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊजी उपाध्याय, घनश्यामदासजी बिड़ला के साथ जयपुर व सीकर स्थिति के बारे मे देर तक विचार-विनिमय। वहीं पर भोजन।

बापू के साथ वर्किंग कमेटी के लोग तीन से पाच तक बैठे।

२३-९-३८

वर्किंग कमेटी की सभा विडला हाउस मे सुबह ८ से ११ तक हुई।

मि० यंग इन्सपेक्टर जनरल, जयपुर मिलने आया। उससे ढाई घंटे-(११ से १॥ तक) बातचीत हुई। बहुत साफ तौर से उसने अपनी कठिनाइयां व जो अडचनें आई वे बतलाई।

कौंसिल ने पहले स्वीकार कर लिया था। महाराज के जन्म दिन पर छोड़ने का निश्चय हो गया था, बाद में ऊपर से ए० जी० जी० की तरफ से जोर पड़ा, इससे वह नहीं कर सका। और भी कई बातें उसने बतलाई। आखिर मे उसको कहना पड़ा कि उसे और थोडा समय मिले तो वह प्रयत्न कर देखे। उसकी बातचीत से आशा तो कम मालूम हुई। हीरालालजी शास्त्री व चिरजीलाल मिश्रा भी मिले।

आकोला के सहस्त्रबुद्धे की सूचना को कोई ने दुजोरा-समर्थन भी नहीं दिया।

२५-९-३८

वर्किंग कमेटी की बैठक सुबह व शाम को हुई।

ऑल इंडिया कमेटी शाम को ४॥ बजे से शुरू हुई। रात में जोर की आंधी व तूफान आने के कारण सरदार का भाषण पूरा नहीं हुआ व बैठक बन्द करनी पड़ी।

२६-९-३८

बापूजी के पास-वर्किंग कमेटी हुई, ८-११ तक।

जलियावाला बाग मेमोरियल की सभा हुई, ३ से ४॥ तक।

ऑल इंडिया का० कमेटी की सभा में पांच बजे से रात के ढाई बजे तक—वहां एक सरीखा बैठना पड़ा। सोशलिस्ट लोगों की वाक आउट देखी व भाषण सुने। पता नहीं भविष्य किस प्रकार का आनेवाला है।

जयपुर के बारे में हीरालालजी शास्त्री से बातचीत। वह आज गये।

२७-९-३८

गंगाधर राव, कमल, इंदू के साथ घूमना, स्मारक तक।

चर्खा संघ की कमेटी बापू के यहां, सुबह ९-११ तक हुई। तथा वर्किंग कमेटी की सभा दोपहर को बापू के पास २ से ५॥ तक हुई।

आज भी जलियावाला बाग मेमोरियल की सभा हुई।

सुभाष बाबू ने बुलवाया।

महात्मा भगवानदीनजी, सत्यदेवजी, सुभद्रा, सत्यप्रकाश वगैरा मिलने आये।

२८-९-३८

सुबह घूमना, गंगाधर राव, इंदू, वगैरे साथ थे।

श्री चतुर्सेन शास्त्री व डा० युद्धवीर सिंह आये। माफी मांगने की बातचीत।

वर्किंग कमेटी सुबह बापूजी के यहां ८॥ से ११, व शाम को बिड़ला हाउस में ४॥ से ६॥ तक हुई।

चर्खा संघ की सभा दोपहर को बापू के पास हुई।

चि० शान्ता—रामगोपाल केजड़ीवाल के यहां भोजन। सीतारामजी सेख-सरिया से बातचीत, आराम वगैरा के बारे मे।

रात मे भटिंडा मेल से सेकन्ड मे लाहौर रवाना।

लाहौर-अमृतसर, २९-९-३८

लाहौर पहुचे।

मुकन्द आयर्न वर्क्स का लाहौर का कारखाना, स्टेशन से सीधे जाकर देखा। दो घटे से ज्यादा समय तक सब कारखाना लाला मुकन्दलाल, विद्या-प्रकाश, जयप्रकाश, कमल के साथ देखा।

लाला मुकन्दलाल के घर भोजन।

मुकन्द आयर्न वर्क्स के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की सभा हुई—२॥ से पाच बजे तक।

महत्व के निर्णय हुए। लाला शिवराज की योग्यता की ठीक छाप पड़ी।

लाला मुकन्दलाल ने पार्टी दी। वहा कई मित्र लोगों से मिला व परिचय। मानपत्र, भाषण।

मोटर से अमृतसर गये। जलियावाला बाग मे जाहिर सभा हुई। वर्त-मान स्थिति व बापूजी के जन्म दिन के सम्बन्ध मे बोलना हुआ।

पजाब काग्रेस की स्थिति का परिचय हुआ।

दिल्ली, ३०-९-३८

लाहौर व अमृतसर से सुबह फ्रंटियर मेल से सेकन्ड मे दिल्ली पहुचा।

हरिजन कालोनी मे पू० बापूजी के सामने वर्किंग कमेटी की सभा हुई, ८॥ से ११ तक। आसाम की परिस्थिति पर खास चर्चा हुई।

चर्खा सघ की सभा २-५ तक हुई। खजान्ची के काम का त्यागपत्र दिया।

गाधी आश्रम मेरठ के ट्रस्टी पद का त्यागपत्र दिया।

सरदार वल्लभ भाई व घनश्यामदासजी बिड़ला आये। मुझे बिड़ला हाउस ले गये।

आसाम के बारे मे सुबह वर्किंग कमेटी मे मैंने जो कहा उस बारे मे बात-चीत। सरदार को मेरे व्यवहार से दुःख व नाराजी थी। मुझे भी उनके व्यवहार से पूरा असन्तोष था। कल बापू के पास बैठकर आखरी फैसला करने का निश्चय हुआ।

रात मे राजेन्द्र बाबू से थोड़ी बातें। मन हलका नहीं हुआ।

१-१०-३८

सुबह थोड़ा घूमना। जाजूजी से वर्तमान स्थिति तथा रात मे सरदार व घनश्यामदासजी से बातें हुई थी, उस सम्बन्ध में विचार-विनिमय।

बापू के पास वर्किंग कमेटी ८॥ से ११। तक हुई।

हिन्दुस्थान हाउसिंग कम्पनी की ऑफिस मे गये। वहीं भोजन तथा भावी काम के बारे में बातचीत। आबिदअली बम्बई से आया।

पू० बापू के पास सरदार व घनश्यामदासजी तीन बजे से साढ़े चार बजे तक रहे।

वल्लभ भाई का व मेरा जो मतभेद था उसका खुलासा मतभेद बहुत तीव्र-रूप का व दुःखदायक था। मैंने बताया कि और तो दूसरे कारण थे ही, यह भी एक महत्व का कारण था, जिससे मुझे वर्किंग कमेटी से निकल जाना आवश्यक मालूम हुआ।

पू० बापू ने अपनी स्वीकृति दी। त्यागपत्र के मसविदे में बापू ने थोड़ी दुरुस्ती की।

विद्यापीठ पुस्तकालय (काका), देव, गंगाधर राव को पत्र, आसाम मिनिस्ट्री, नरीमान शरीफ प्रकरण आदि साथ थे। महादेव भाई ने पत्र भेजा। सीकर व वर्किंग कमेटी का प्रस्ताव, सीकर जाना आदि की चर्चा। पेरीन बहन से मिलना हुआ।

पलवल (गुड़गांव जिले) में गांधी आश्रम का शिलान्यास श्री सुभाष बाबू ने रखा। वहां गये। रात मे १० बजे वापस। वहां बोलना पड़ा। पार्वती देवी व अन्य लोग साथ थे।

२-१०-१९३८

घूमना, पार्वतीदेवी डिडवानिया साथ थी। भावी जीवन शांतिमय कैसे बीते, इसपर विचार।

वर्किंग कमेटी की बैठक बापूजी के यहां ८॥-११॥। तक होती रही। डा० खरे को, अगर वर्किंग कमेटी चाहे तो, और समय दे सकते हैं, मैंने कहा। आखिर आज ही फैसला हुआ।

वर्किंग कमेटी के पद का त्यागपत्र दिया। बापूजी ने मेरी सुन्दर व साफ

तौर से वकालत की। मुझे भी जो कहना था थोड़े में कहा।
सदस्य लोग स्वीकार नहीं करना चाहते थे; पर पू० बापू ने विश्वास दिलाया कि वह ठीक कर लेवेंगे।
सर हैदरी को पत्र भेजा।
सीतारामजी सेखसरिया वनस्थली से आये। जावरा जाने का निश्चय। पू० बापूजी से इजाजत ली।
राजेन्द्र बाबू से बहुत देर तक बातचीत, मानसिक स्थिति व सरदार की बातचीत का साराश कहा। उन्हें मेरे वकिंग कमेटी से निकल जाने का रंज था।
शंकरराव देव भी मिले। अन्य मित्रों से व ठक्कर बापा, वियोगी हरि आदि से मिला। डा० अग्रवाल (आग्रवाले) व बैरिस्टर आसफ अली से मिलना। १०-१० की दिल्ली एक्सप्रेस से थर्ड में रवाना।

चालू रेलवे, ३-१०-३८

रतलाम से जावरा जाने को सामान उतारा पर बालकृष्ण जाजोदिया ने कहा कि जानकी व कमला इंदौर गये हैं। सो इंदौर जाने की तैयारी। बाद में वहां की राजनैतिक स्थिति के कारण जाना स्थगित किया और सीधे बम्बई रवाना।
रास्ते में खासकर बड़ौदे में बहुत ज्यादा भीड़ हुई। घबराहट होने लगी।
सूरत के आगे बरसात शुरू हो गई थी।
रास्ते में जमनादास भाई गांधी से बातचीत। रतलाम में लक्ष्मण रसोइया भी मिला।

दादर-जुहू, ४-१०-३८

दादर में छ बजे उतरे।
माटुंगा में केशवदेवजी से बातचीत।
जमनादास भाई, सन्तोक बहेन, केशव व राधा से बातचीत। केशव गांधी की सगाई मथुरादास त्रिकमजी की साली की लड़की बिन्दुमति से होने की खबर मिली।
चि० शान्ता का फोन आने से बम्बई आना पड़ा। सुशीला को १०-३ [illegible]

वहा थोड़ी देर ठहरकर भाग्यवती दानी से मिलना। पन्नू से बातें।

जुहू, ५-१०-३८

कलकत्ता वाले बन्सीधर खेमका से बातें। मुस्तफा ग्रान मे जुहू जमीन के बारे में बातें।

सुलोचना व नन्दू बहन (मोती बहन की लड़कियां, आईं। भगवती प्रसाद खेतान, उसकी स्त्री व लड़के मिलने आये।

माणक, धन्नू की स्त्री भाग्यवती (दानी) की माताजी मिलने आईं।

सफिया मिलने आई। जूनी नई बातें पेशावर आदि की करती रही।

राधा, बिन्दुमती (केशव गांधी से जिसकी सगाई हुई उस लड़की) को लेकर आई।

केशवदेवजी, मूलजी, प्रह्लाद वगैरा आये। हाउसिंग व मुकन्द आयर्न की बातें।

६-१०-३८

राधाकृष्ण रुइया आया। यहीं पर भोजन-बातचीत। चि० गंगाबिसन से बातें।

अंधेरी, माटुंगा होते हुए शाम को बम्बई। बिड़ला हाउस में फल-वगैरा। ब्रिज खेलना; माधव व बन्सीधर थे।

रामनारायणजी के बंगले पर सोये। चि० राधाकृष्ण से बातचीत।

७-१०-३८

बालकेश्वर पर रामनारायणजी के बंगले पर वर्षा आदि के कारण घर में ही घूमना।

चि० राधाकृष्ण व रामनिवास से देर तक बातचीत। रामनिवास के पत्र पर शान्तीप्रसाद जैन मिलने आया।

टाटा (बम्बई आफिस) ए० आर० दलाल, जहांगीर रतन टाटा, सर मोदी तीनों से शामिल व अलग-अलग १२ से १॥। तक बातचीत हुई—खासकर डालमिया सीमेन्ट व एसोसियेटेड सीमेन्ट के बारे में। ठीक विचार-विनिमय हुआ।

मि० नारियलवाला से, गोविन्द ने कहा था उस बारे में, बातचीत। शाम को उनके साथ सुभाष बाबू से मिलना।

मट्ठभाइ जमीयतराम ने चान्दाड फैक्टरी के पावर ऑफ अटर्नी के लिए सही कराई।

८-१०-३८

घूमने, चि० शान्ता, वेंकट, श्री निवास साथ में। ग्वालियर का बंगला देखा।

वेंकटलाल से समझौते के बारे में बातचीत।

शान्तिप्रसाद से सीमेन्ट के बारे में सब स्थिति समझी।

मगलदास सेठ गोण्डल की जमीन के लिए आये। १२ हजार वार-१०, का भाव।

चि० राधाकृष्ण रुइया मिलने आया।

चिरंजीलाल बडजाते वर्धा से आये। व्रिजमोहन से शेअरों की स्थिति समझी।

भगवतीप्रसाद खेतान, सब परिवार सहित आया, यहीं भोजन किया। खेल-कूद।

देवीप्रसादजी की स्त्री व त्रिवेणी वगैरा भी आये।

चि० शान्तिप्रसाद जैन आज दिनभर यहां रहा। टाटा वालों से बात करने के लिए स्टेटमेन्ट तैयार किया।

९-१०-३८

घूमना शान्तिकुमार व हरजीवन भाई के साथ। गोन्डल की जमीन देखी। विचार-विनिमय।

श्री मगलदास से शान्तिकुमार ने जो बातचीत की वह कही। उससे आशा कम रही।

केशवदेवजी, मूलजी, आबिदअली आदि से बातचीत। बम्बई से कई लोग मिलने आये।

थोडी देर खेलना। बम्बई से १५-२० लोग-बाग आ गये।

मगलदास मिले। जमीन लेने की इच्छा व तैयारी बताई।

१०-१०-३८

घूमना, चि० रमा से बातचीत। बाद में शान्ता से श्री मणीलाल नाणावटी मिले।

श्री शान्तिप्रसाद जैन आये। उन्होंने श्री बोस से, सर मोदी मिले यह बताया और मुझसे बोस मिलना चाहते हैं यह कहा। जल्दी तैयार होकर उनके साथ सुभाष बाबू से मिलने गया। डालमिया सीमेन्ट व असोसिएटेड सीमेंट के मर्जर के समझौते के बारे में बातचीत। विचार हुआ कि भाव मुकर्रर करने, कोटा फिक्स करने वगैरा के बारे में सर मोदी से मिलना। १२ से १२॥ तक। उन्हें स्टेटमेंट दिया। उसपर चर्चा। कोटा फिक्स होना कम सम्भव है यह कहा। भाव में डालमिया को चान्स व कैसेलिटी दी जा सकती है। उन्होंने ५-७ दिन में वर्धा रिपोर्ट भेजने को कहा।
बच्छराज कम्पनी के आफिस में गये। बाद में डालमिया ऑफिस। शान्ति-प्रसाद को बातचीत का सारांश कहा। भारत का बम्बई मैनेजर आफिस में गोन्डल की जमीन के बारे में ऑफर, साढ़े पांच रुपये वार व डा रुपये दलाली। इस मास के आखिर तक तय करने का कहा।
चि० पन्ना को प्रह्लाद के साथ पुरन्द्रे को दिखाया।
मुन्नाबाई व राधाकृष्ण से देर तक सगाई की बातें।
शान्ति प्रसाद व महादेवलाल मिलने आये।

११-१०-३८

चि० रमा व शान्ता से सगाई के बारे में खुलासेवार बातचीत, मुन्नाबाई व राधाकृष्ण के बारे में भी।
श्री केशवदेवजी, आबिदअली ६॥ बजे आये। मरवा की जमीन देखने गये। जमीन पसन्द नहीं आई। मथुरादास जीवनदास के यहां मिले।
चि० नर्मदा, गजानन्द वर्धा से आये। दोनों से बातचीत। स्थिति समझी। पहले से वह ठीक मालूम हुई, पर ज्यादा बोलती है व अतिशयोक्ति खूब करती है।
श्री सुभाष बाबू से मिलना। वहीं पर ए० आर० दलाल (टाटा वाले) भी आ गये थे। खासकर सीमेंट डालमिया व असो० सीमेंट व मर्जर के समझौते के बारे में देर तक बातचीत होती रही।
जर्मन डा० ने खून का फरक समझाया। इन्जेक्शन लेने व आराम का कहा।
चि० राधाकृष्ण व रामनिवास से राधाकृष्ण की सगाई व चि० रमा के

बारे में गुलासेवार बातचीत। व्यापार व फायनन्स की भी बातचीत होती रही।
दादा वर्धा गये, तार आया। चिन्ता हुई।

१२-१०-३८

नर्मदा के मन में जो तीन-चार बातें (वहम की) बैठ गई थी, उसका केसर, नर्मदा, गजानन्द के साथ में खुलासा। नर्मदा की समझ गलत व झूठी थी।
बाल कालेलकर से बातचीत।
शान्तिप्रसाद जैन आज प्राय दिन भर यही रहा। सीमेन्ट, शुगर आदि के बारे में बातचीत।
राची से घनश्यामदास बिडला का फोन आया। मि० यग ने फोन मे कहा है कि सीकर के जो २० कैदी रहे हैं वे कल छूट जावेगे। प्रजामण्डल के बारे में भी ठीक सफलता मिलने की आशा है। सर बीचम, पद्रह रोज मे आने वाला है। मैं अभी सीकर न आऊ व आदि।
रामेश्वरदासजी बिडला ने फोन किया कि शुगर मिल बेचना हो तो १६ से १८ लाख तक मे बिक सकती है। कीमत कम मालूम हुई।
केशवदेवजी से व शान्ति प्रसाद से शुगर मिल बेचने के बारे मे बातचीत।

१३-१०-३८

शान्तिप्रसाद जैन मिलने आया। ए० आर० दलाल से जो बातें हुई वह कही।
श्री नारायणलाल पित्ती से बातचीत। हैदराबाद स्टेट शक्कर फैक्टरी, वेंकट व मुकन्दलालजी का फैसला, बच्छराज कपनी व बच्छराज जमनालाल के खाते के बारे मे।
सर चुन्नीलाल मेहता से डालमिया सीमेट, नागपुर बैंक, व्यापार व राजनैतिक स्थिति पर विचार-विनिमय। वही पर राची से रामेश्वरजी बिड़ला का फोन आया। गोला शक्कर मिल २२-२३ लाख से कम मे नही बेचने का कहा।
सुभाष बाबू से मिलना।
सर पुरुषोत्तमदास से डालमियां सीमेट व ऐसोसियेटेड सीमेट के बारे में देर

तक बातचीत।

डा० ऐ० दास (होमियोपैथिक) से सर्दी-खांसी की दवा ली।

भाग्यवती दानी से दो हजार का खाता। पेरीन बहन से बम्बई हिन्दी प्रचार के सम्बन्ध की बातें।

ज्वाल व ब्रिजमोहन पिलानी से मिलने आये।

१४-१०-३८

घूमना, केशर व शान्ताबाई साथ में डा०। पटेल ने जांच की, ब्लड प्रेशर १००-१५० अन्दाज।

झोपड़ी का भाड़ा २५०) मूलजी भाई से बातें।

बच्छराज फैक्टरी के बोर्ड की सभा हुई।

श्री लक्ष्मणदासजी डागा से कम्पनियों के बारे में बातचीत, खाते का फैसला।

मुकन्दलाल (लाहौरवाले) आज आये। बीमार थे। दो घंटे से ज्यादा देर तक बातचीत।

केशवदेवजी से मुकन्द आयर्न की बातें।

श्री गुरुजी को अमलनेर फोन किया, उन्हें समझाने का प्रयत्न, बम्बई सरकार को समय देने के बारे में।

१५-१०-३८

समुद्र स्नान देर तक। जुहू म्यु० चुनाव में मत दिया। त्रिभुवनदासजी, राजा (पोरबन्दर वाले) आये। बैंक की बात की। चेअरमन बनने को कहा। श्री मुंशी से टेलीफोन से बातें।

मुकन्द आयर्न वर्क्स के बारे में बातें।

गोकुलभाई, रमणीकराय मेहता, हरजीवन भाई आये। स्वदेशी स्टोर्स वगैरा के बारे में विचार-विनिमय, योजना। रमणीकराय हरजीवन भाई को यह काम सौंपा गया।

केशवदेवजी, फतेचन्द, जमनादास भाई वगैरा आये। मुकन्द आयर्न वर्क्स बम्बई शाखा के बारे में, मुकन्दलाल से जो बातें हुई वह कही। अन्य बातें बच्छराज फैक्टरी व अनर्मी, गेहूं गोदाम, महलाद व दलाली आदि।

चि० पन्ना की लड़की का जन्म दिन था यहां नाश्ता किया।

बारे में गुलासेयार बातचीत। व्यापार व फायनन्स की भी बातचीत होती रही।

दादा वर्धा गये, तार आया। चिन्ता हुई।

१२-१०-३८

नर्मदा के मन में जो तीन-चार बातें (वहम की) बैठ गई थी, उसका केसर, नर्मदा, गजानन्द के साथ में खुलासा। नर्मदा की समझ गलत व झूठी थी।

बाल कालेलकर से बातचीत।

शान्तिप्रसाद जैन आज प्राय दिन भर यही रहा। सीमेन्ट, शुगर आदि के बारे में बातचीत।

रांची से घनश्यामदास बिडला का फोन आया। मि० यग ने फोन में कहा है कि सीकर के जो २० कैदी रहे हैं वे कल छूट जावेंगे। प्रजामण्डल के बारे में भी ठीक सफलता मिलने की आशा है। सर बीचम, पद्रह रोज में आने वाला है। मैं अभी सीकर न आऊ व आदि।

रामेश्वरदासजी बिडला ने फोन किया कि शुगर मिल बेचना हो तो १६ से १८ लाख तक में बिक सकती है। कीमत कम मालूम हुई।

केशवदेवजी से व शान्ति प्रसाद से शुगर मिल बेचने के बारे में बातचीत।

१३-१०-३८

शान्तिप्रसाद जैन मिलने आया। ए० आर० दलाल से जो बातें हुईं वह कही।

श्री नारायणलाल पित्ती से बातचीत। हैदराबाद स्टेट शक्कर फैक्टरी, वेंकट व मुकन्दलालजी का फैसला, बच्छराज कंपनी व बच्छराज जमनालाल के खाते के बारे में।

सर चुन्नीलाल मेहता से डालमिया सीमेंट, नागपुर बैंक, व्यापार व राजनैतिक स्थिति पर विचार-विनिमय। वहीं पर रांची से ५।
का फोन आया। गोला शक्कर मिल २२-२३ लाख से कम
कहा।

सुभाष बाबू से मिलना।

सर पुरुषोत्तमदास से डालमिया सीमेंट व ऐसोसिये

१८-१०-३८

नारायणदासजी बाजोरिया व देवशर्माजी के साथ पवनार। पू० विनोबा का स्वास्थ्य ठीक देखकर सुख मिला। वजन १२० पौण्ड होने की उन्हें आशा है।

नागपुर प्रा० का० कमेटी की ऑफिस में गये। बाबा साहब करन्दीकर, गोपालराव काले आजूजी के साथ विचार-विनिमय।

अ-ब्राह्मण पार्टी की ओर से निमंत्रण देने भाऊराव व भाजीराव आये।

कलकत्ता से चि० सावित्री व लीला जगदीश प्रसाद के साथ आये। दोनों अच्छे थे।

१९-१०-३८

सेगाव में श्री भणशाली व बालकोबा को देखा। भणशाली ठीक हो जायेंगे बालकोबा की हालत ठीक नहीं दिखी।

सर अकबर हैदरी को हैदराबाद स्टेट कांग्रेस पर प्रतिबन्ध के बारे में पत्र भेजा।

मि० यंग के पत्र का ड्राफ्ट दादा से बनवाया। अ-ब्राह्मण कानफ्रेंस, नागपुर का तार आया। बदले में तार दिया।

हिन्दी प्रचार कार्य के लिए व काका साहब के लिए झोपड़ी तथा मकानात के लिए जमीन महिला आश्रम, पाने नामकमजी घर के सामने का खेत देखा। वह उन्होंने पसन्द किया। दरबारीलालजी भी साथ थे। कृष्णाबाई के साथ महिला आश्रम के बारे में देर तक विचार-विनिमय।

महिला-आश्रम प्रार्थना में रहे। वर्किंग कमेटी व आल इंडिया कमेटी के बारे में कहा।

२०-१०-३८

पदमपतजी को पत्र लिखवाया।

श्रीमती आर० शाह, हॉर्टीकल्चरिस्ट, नागपुर से मिलने आईं। बहुत जरूरी काम के लिए पाच सौ नहीं तो तीन सौ कर्ज मांगती थी। रुडमलजी व शिवनारायणजी लधधड़ की हालत सुनाई।

दामोदर से हैदराबाद स्टेट कांग्रेस की हालत पर चर्चा। उसको छुट्टा करना पड़ेगा।

सुभाष बाबू ने बुलवाया; सिन्ध मिनिस्ट्री, आसाम, बम्बई, मजदूरों का ट्रेड बिल के लिए विरोध आदि की बातें। वर्किंग कमेटी से न निकलने के बारे में भी समझाने लगे।

नागपुर मेल से वर्धा रवाना। थर्ड में जगह नहीं। २॥ टिकट इण्टर की ली। ६॥) एक टिकट पर ज्यादा लगा। रमा, सुशीला साथ में।

वर्धा, १६-१०-३८

धामणगाव से वर्धा तक श्री नानालाल व बेचरलाल बन्सीलाल (बर्मावालों) से बातचीत।

वर्धा पहुंचे। नारायणदासजी बाजोरिया से मिलना।

नवभारत विद्यालय (मा० शिक्षा मण्डल) की कार्यकारिणी की सभा।

महिला आश्रम में प्रार्थना।

वर्धा का मालगुजार मिलने आया उसे चिरंजीलाल व द्वारकादास का सन्तोष करने को कहा।

इन्दू गुणाजी कृष्णाबाई से थोडी बातें।

१७-१०-३८

बम्बई मेल से सुभाष बाबू आये।

श्री सुभाष बाबू का वर्धा, अमरावती, नागपुर का प्रोग्राम निश्चित किया। सब जगह टेलीफोन वगैरा करने पड़े।

हैदराबाद वाले रामकिसनजी धूत व नारायणदास आये। वहां की स्थिति समझी।

नागपुर से दाण्डेकर, ललताशंकर वगैरा आये।

सुभाष बाबू से देर तक बातचीत। उनका आग्रहपूर्वक कहना था कि तुम्हारे वर्किंग कमेटी से त्यागपत्र स्वीकार किये जाने से बहुत ज्यादा गलतफहमी फैलेगी। कई उदाहरण दिये। कमल से बात हुई वह कही। वर्किंग कमेटी के सभी मेम्बरों की इच्छा है कि मुझे त्यागपत्र नहीं देना चाहिए इत्यादि। मैंने मेरी मानसिक स्थिति समझा कर कही। उन्होंने आराम लेने व छुट्टी लेने का कहा। उन्होंने कहा कि वह पूज्य बापू को पत्र लिखेंगे।

गांधी चौक में सुभाष बाबू की जाहिर सभा।

१८-१०-३८

नारायणदासजी बाजोरिया व देवशर्माजी के साथ पवनार। पू० विनोबा का स्वास्थ्य ठीक देखकर सुख मिला। वजन १२० पौण्ड होने की उन्हें आशा है।

नागपुर प्रा० कां० कमेटी की ऑफिस में गये। बाबा साहब करन्दीकर, गोपालराव वाले जाजूजी के साथ विचार-विनिमय।

अ-ब्राह्मण पार्टी की ओर से निमन्त्रण देने भालेराव व बाजीराव आये।

कलकत्ता से चि० सावित्री व लीला जगदीश प्रसाद के साथ आये। दोनों अच्छे थे।

१९-१०-३८

सेगाव में श्री भणशाली व बालकोबा को देखा। भणशाली ठीक हो जायेंगे बालकोबा की हालत ठीक नहीं दिखी।

सर अकबर हैदरी को हैदराबाद स्टेट कांग्रेस पर प्रतिबन्ध के बारे में पत्र भेजा।

चि० श्याम के पत्र का ड्राफ्ट दादा से बनवाया। अ-ब्राह्मण कानफ्रेंस, नागपुर का तार आया। बदले में तार दिया।

हिन्दी प्रचार कार्य के लिए व बाबा साहब के लिए झोंपड़ी तथा मकानात के लिए जमीन महिला आश्रम, माने नायकमजी घर के सामने का खेत देखा। वह उन्होंने पसन्द किया। दरबारीलालजी भी साथ थे। कृष्णाबाई के साथ महिला आश्रम के बारे में देर तक विचार-विनिमय।

महिला-आश्रम प्रार्थना में रहे। वर्किंग कमेटी व आल इंडिया कमेटी के बारे में कहा।

२०-१०-३८

पदमपतजी को पत्र लिखवाया।

श्रीमती आर० शाह, हॉर्टीकल्चरिस्ट, नागपुर से मिलने आईं। बहुत जरूरी काम के लिए पांच सौ नहीं तो तीन सौ कर्ज मांगती थी। रुद्रमलजी व शिवनारायणजी लधुधड़ की हालत सुनाई।

दामोदर से हैदराबाद स्टेट कांग्रेस की हालत पर चर्चा। उसको छुड़ा करना पड़ेगा।

बच्छराज जमनालाल, जमनालाल सस, लक्ष्मीनारायण मन्दिर व बच्छराज फैक्टरीज के काम के बारे में दुकान पर कार्यकर्त्ताओं में चर्चा-विचार।
बच्छराज जमनालाल की सभा।
आबिदअली को जुहू जमीन के सेटलमेन्ट के बारे में तार किया व पत्र लिखा।
चि० रामेश्वर नेवटिया मेल से आया। गोलामिल की हालत समझी।
श्रीमन्नारायण, मदालसा, काका साहब कानपुर होते हुए उड़ीसा गये।
पद्मपतजी सिंघानिया को खुलासेवार पत्र भेजा।

२३-१०-३८

हैदराबाद स्टेट कांग्रेस का पत्र। बापू का तार। अन्य पत्र।
हैदराबाद स्टेट कांग्रेस से जो सज्जन आये थे उनसे बातचीत।
दीपावली पूजन। भोजन। गांव में पैदल—खासकर मन्दिर व दुकान जाना आना।
जाजूजी, कुमारप्पा, नायकम्, भारतन्, किशोरलाल भाई वगैरा से मिला
दुकान पर कमल ने पूजा करी। कपास का भाव ४३। था। आज ४१ व भाव चाहिए कहा। रुई बहुत मंदी मालूम हुई।

२४-१०-३८

दुकान व फैक्टरी की मीटिंग हुई। वहां देर तक रहना पड़ा।
बच्छराज जमनालाल के काम का भी विचार। नये आदमी रखना व उम्मीदवारों की व्यवस्था।
पत्र-व्यवहार बहुत सा साफ हुआ। जगन्नाथ मिश्र काम पर आया।
शाम को महिला आश्रम। मोहन साथ में। चि० शान्ता के यहां भोजन।
भागीरथी बहन से खुलासेवार बातें। मैंने समझाया कि मैं महिला आश्रम से क्यों अलग होना चाहता हूं।
मन स्थिति व आराम की जरूरत के कारण बाहर जाना जरूरी है आदि बातें कहीं।

२५-१०-३८

सागरमलजी के लिए मकान के बारे में विचार। मैं जिसमें रहता था, वह मकान दुरस्त कराने का निश्चय। दुकान व बच्छराज फैक्टरी की मीटिंग।

११॥ बजे तक काम किया।

गोमती बहन व किशोरलाल भाई के साथ भोजन। मन. स्थिति आदि पर विचार, खासकर महिला आश्रम व मण्डल की जिम्मेदारी से छूटने मे इनकी मदद लेने पर देर तक विचार-विनिमय। धोत्रे व काका साहब का विचार।

पत्र व्यवहार—नागपुर प्रां० का० के भावी कार्य के बारे मे श्री घटवाई, करन्दीकर, दादा, बारलिंगे व बाद मे किशोरलाल भाई से देर तक विचार-विनिमय।

२६-१०-३८

घूमते समय चिरजीलाल बडजाते से दुकान सम्बन्धी व उनकी खानगी बातें।

दुकान पर शिवनारायणजी लघ्पड को बच्छराज फैक्टरी मे वर्धा के काम के लिए रखने की बातचीत व अन्य विचार-विनिमय।

नागपुर प्रातीय काग्रेस कार्य के सम्बन्ध मे विचार-विनिमय।

महिला आश्रम की बहनें व कृष्णाबाई मिलने आईं। उद्योग बढाने पर विचार।

सेगाव मे एकदम बहुत से लोग बीमार पड गये। डा० नर्मदाप्रसाद (सिविल सर्जन) को वहा भिजवाया। उन्होंने आकर रिपोर्ट दी। थोडी चिन्ता। सुबह मोटर लेकर राधाकृष्ण को वहा जाने की व्यवस्था की। पारनेरकर को वर्धा अस्पताल मे दाखिल कराया।

नागपुर, वर्धा २७-१०-३८

नागपुर रवाना। साथ मे चि० रामेश्वर नेवटिया व कमलनयन। ६-५५ की मोटर मे रवाना ८। को वहा पहुचे। बैंक, आफिस, स्टेशन। इतवारी मे गोपीजी का वह मकान देखा जिसे हाउसिंग कपनी बनाती थी।

बैंक आफ नागपुर का उद्‌घाटन ६॥ बजे हुआ। श्री पूर्णचद्र बूटी के सभापतित्व मे। मैने भी थोड़ा कहा व खुलासा किया। ठीक लोग आये थे। बाद मे बैंक मे खाते खोले गये।

गिरधारी के घर भोजन। श्री कानिटकर, अम्बुलकर, रामेश्वर अग्रवाल आदि वहा मिलने आये। कानिटकर से साफ बातें की।

बैंक आफ नागपुर के बोर्ड आफ डायरेक्टर की मीटिंग, बैंक कार्यालय मे, हुई। देर तक विचार-विनिमय।
हिन्दुस्तान हाउसिंग के प्लाट घूमकर देखे। वही नाश्ता।
श्री मथुरादासजी मोहता के साथ मोटर मे वर्धा तक आया।

वर्धा, २८-१०-३८

आबिद अली के साथ बजाजवाडी, महिला आश्रम, हिन्दी प्रचार कालोनी आदि घूमना। प्लानिंग आदि का विचार।
नागपुर प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय में गये। विचार-विनिमय।
आबिदअली, गिरधारी, पटेल, इंजीनियर और सब जगह देखकर आये, बातचीत।
जानकी देवी का कमल के लडके के नाम से दस हजार की पूजी से काम करने के बारे मे आग्रह।
नागपुर प्रांतीय कांग्रेस के आफिस मे तीन बजे से ८ बजे तक कार्यकारिणी का काम—विशेष तथा श्री हरकरे, खाण्डेकर, देशपाण्डे के बारे मे अनुशासन भंग पर देर तक चर्चा। प्रायः सभी मेम्बरो का आग्रह था कि कार्यवाही होना आवश्यक है।
श्री दीक्षित की राय दोनो तरफ थी। भीकूलालजी, खोडे साहब आदि से बाते।

२९-१०-३८

'प्रसाददीक्षा' पूरी की। सब मिलाकर किताब ठीक है। कुछ पत्रो के बारे में गैर-समझ हो सकती है।
इन्दौर के हजारीलाल जडिया व खरगोन के खोडेजी के साथ भोजन। वहा की स्थिति समझी।
नागपुर प्रांतीय कांग्रेस कार्य। श्री खाडेकर के पत्र के जवाब मे पत्र भेजा। अधिक खुलासा मगाया।
धोत्रे व किशोरलाल भाई से बातचीत। बापू का पत्र। 'गाधी सेवा सघ' से त्याग-पत्र देने के बारे मे किशोरलालभाई के पत्र से गैर समझ हुई।
महिला आश्रम के काम में धोत्रे मदद करें, यह निश्चय हुआ।
कृष्णाबाई कोल्हटकर, अम्बिका बाबू आदि के साथ महिला आश्रम का

स्पष्ट कह दिया। उन्होंने स्वीकार कर लिया।
हरिभाऊ उपाध्याय भी आज आये। उनसे व हीरालालजी से त्यागपत्रों के बारे में विचार-विनिमय। बाद में हरिभाऊजी से शाम को घूमते समय मन स्थिति आदि पर विचार। महिला-आश्रम में भागीरथी बहन से शकु की सगाई वगैरा की बातें।
बच्छराज-भवन में हीरालालजी शास्त्री के जयपुरी भाषा में प्रचार व उपदेशपूर्ण गीत व भजन।

१-११-३८

घूमना, हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊजी उपाध्याय, दामोदर साथ में। जयपुर प्रजामण्डल, अजमेर कांग्रेस वगैरा के बारे में बातचीत।
चौधरी हरलालसिंह (झुंझनूवाले) से जाट पंचायत बोर्डिंग आदि का परिचय।
मि० यग को पत्र भेजा। साथ में प्रजा-मण्डल की ओर से अकाल-कार्य के बारे में जो स्टेटमेंट निकाला, उसकी कापी भी भेज दी। स्टेटमेंट तैयार नहीं हो सका। हीरालालजी व हरिभाऊजी गये।
डा० बारलिंगे, दादा, भिकूलाल आये। जाजूजी व बाबा सा० करंदीकर भी।
श्री हरकरे रिन्हीजन करना चाहते है। इसपर देर तक विचार।
विनोबा, जाजूजी, किशोरलालभाई जो निर्णय कर देंगे, उसे मानने को वह तैयार हैं।
चतुर्भुजभाई व सुखदेवजी, गोंदिया से आये। हैदराबादवाले मिलने आये।

२-११-३८

हैदराबाद स्टेट कांग्रेस के बारे में श्री जाजूजी व दामोदर के साथ विचार-विनिमय। दिन में बच्छराज-भवन में जानकी के पास भोजन।
शाम को बालकों के वहा जानकीदेवी के पास नाश्ता।
पवनार में विनोबा से विचार-विनिमय।

३-११-३८

ना के बाद विनोबा से वार्तालाप। नालवाड़ी में विनोबा को छोड़ा।

फिर महादेवी अम्मा व गोपालराव काले के साथ पैदल वर्धा।

राव साहब पटवर्धन (अहमदनगर वाले) आये। हैदराबाद की स्थिति समझी।

विट्ठलदास राठी (आर्वीवाला) आया। पत्र-व्यवहार।

विनोबा, जाजूजी, किशोरलालभाई के साथ दायगांव के कोढ़ियों का दवाखाना देखा। श्री मनोहर दिवाण का प्रयत्न सुखदेने वाला व अनुकरण करने लायक मालूम हुआ। बाबूराव हरकरे-प्रकरण को लेकर दादा व उनका भाई आया। खानगी तौर से वह अपना समाधान विनोबा, जाजूजी व किशोरलालभाई से कर ले।

काकासाहब श्रीमन्न, मदालसा वगैरा से मिलकर पवनार की प्रार्थना में शामिल।

४-११-३८ (जन्म-दिन)

सुबह प्रार्थना के बाद विनोबा के साथ, मनुष्य अगर अपनी कमजोरी निकाल सके तो आत्म-हत्या में क्या दोष, इस विषय पर भली प्रकार विचार-विनिमय। अप्पा पटवर्धन आदि भी थे। विनोबा के साथ घूमना, अप्पा पटवर्धन साथ में थे।

बापट व गुरुजी के सत्याग्रह पर विचार सुने।

बालूभाई मेहता आये। सेवक के खर्च के बारे में विचार-विनिमय। ज्यादा से ज्यादा बीस रुपये काफी हो सकते हैं, एक आदमी को। विनोबा ने प्रमाण देकर समझाया।

बाबूराव हरकरे के बारे में दादा ने विनोबा से बातें कहीं। मैंने भी मंजूर किया कि अगर सचमुच में हृदय-परिवर्तन हुआ हो और यह विश्वास हो जाय तो ठीक है।

पू० बापू, सरदार, जानकीदेवी, कमल को, हृदय के दु:ख व उद्गारों तथा मन में जो मथन चल रहा है, उसके बारे में महत्त्व के पत्र लिखे। कुछ पत्र विनोबा ने देखे।

राधाकृष्ण ने नकलें की।[1]

---

1. 'सस्ता साहित्य मंडल' से प्रकाशित पुस्तक 'बापू के पत्र'। पृष्ठ सं० १२६ से १९०।

स्पष्ट कह दिया। उन्होंने स्वीकार कर लिया।

हरिभाऊ उपाध्याय भी आज आये। उनसे व हीरालालजी से त्यागपत्रों के बारे मे विचार-विनिमय। बाद में हरिभाऊजी से शाम को घूमते समय मन स्थिति आदि पर विचार। महिला-आश्रम में भागीरथी बहन से शकु की सगाई वगैरा की बातें।

बच्छराज-भवन मे हीरालालजी शास्त्री के जयपुरी भाषा मे प्रचार व उपदेशपूर्ण गीत व भजन।

१-११-३८

घूमना, हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊजी उपाध्याय, दामोदर साथ मे। जयपुर प्रजामण्डल, अजमेर कांग्रेस वगैरा के बारे मे बातचीत।

चौधरी हरलालसिंह (झुझनूवाले) से जाट पंचायत बोडिंग आदि का परिचय।

मि० यंग को पत्र भेजा। साथ मे प्रजा-मण्डल की ओर से अकाल-कार्य के बारे में जो स्टेटमेंट निकाला, उसकी कापी भी भेज दी। स्टेटमेंट तैयार नही हो सका। हीरालालजी व हरिभाऊजी गये।

डा० बारलिंगे, दादा, भिकूलाल आये। जाजूजी व बाबा मा० करंदीकर भी।

श्री हरकरे रिज़ीजन करना चाहते है। इसपर देर तक विचार। विनोबा, जाजूजी, किशोरलालभाई जो निर्णय कर देंगे, उसे मानने को वह तैयार हैं।

चतुर्भुजभाई व सुखदेवजी, गोंदिया से आये। हैदराबादवाले मिलने आये।

२-११-३८

हैदराबाद स्टेट कांग्रेस के बारे मे श्री जाजूजी व दामोदर के साथ विचार-विनिमय। दिन मे बच्छराज-भवन मे जानकी के पास भोजन।

शाम को बालकों के यहां जानकीदेवी के पास नाश्ता।

पवनार मे विनोबा से विचार-विनिमय।

३-११-३८

प्रार्थना के बाद विनोबा से वार्तालाप। नालवाड़ी मे विनोबा को छोड़ा।

चर्चा। शाम को बालकों के आग्रह से भोजन बजाजवाड़ी में। प्रार्थना
विनोद।

मैंने मन के भाव कहे, दु:ख-दर्द भी कहा।

५-११-३८

विनोबा से चर्चा। चि० राधाकृष्ण के साथ अढ़ाई मील पैदल। बाद में मोटर में।

नागपुर प्रांतीय कांग्रेस के आफिस में।

हरिभाऊजी उपाध्याय से बातचीत। मेरे कल के खुलासे से उनका सम
हो गया।

भागीरथीबहन का भी खुलासा। एक वर्ष का नोटिस देने का निश्चय।
चि० शान्ता साथ थी।

चि० रामेश्वर अग्रवाल व चि० शान्ता गंगाबिसन से खुलासेवार ब
बम्बई में स्थायी तौर से रहना होगा। हाल में १०० मिलेंगे। धीरे-
हर साल पचीस बढ़ते हुए अढ़ाई सौ तक।

पवनार, ६-११-३८

प्रार्थना के बाद विनोबा से विचार-विनिमय।

भोजन। जवारी की भाखरी व दाल बहुत स्वाद लगी।

नागपुर के श्री हरकरे विनोबा के पास आये। दादा धर्माधिकारी उन्हें
आये थे। उन्होंने अपने त्यागपत्र दिये। देर तक विवाद। साफ-साफ बातें
मैंने कहा, अहंकार बहुत बढ़ गया है।

पवनार, ७-११-३८

विनोबा के साथ विचार-विनिमय। घूमना, चि० शान्ता साथ में। नदी में स्नान। जानकी, शान्ता, बालूभाई मेहता वगैरा के साथ।

नागपुर से गिरधारी, द्रौपदी व राममनोहर लोहिया आये। देर तक बातचीत, विनोद।

हैदराबाद वाले हरिश्चन्द्र, दामोदर तथा औरंगाबादवाले लोग आये। वहां की स्थिति समझी।

---

१. इस चर्चा का सम्बन्ध जमनालालजी का बापू के साथ का उपरोक्त पत्र से था।

पवनार-वर्धा, ८-११-३८

तीन बजे करीब उठना। चद्र-ग्रहण ग्रास हुआ देखा। प्रार्थना। उसके बाद विनोबा से बातें।

६ बजे करीब नदी में स्नान करके गोपालराव काले व शान्ता के साथ घूमकर आया।

नागपुर प्रांतीय काग्रेस कमेटी का ८॥ से १२ बजे तक कार्य किया। नागपुर टेलीफोन।

सालवे, ढवले वगैरा को टेलीफोन किये। श्री सहस्रबुद्धे व अप्पाजी गाधी को म्युनिसिपल कमेटी के बारे में कहा।

नागपुर से शेरलेकर, नायडू, पन्नालाल, अवारी व मिसेज सालवे मिलने आये। उन्होंने नागपुर म्यु० क० की स्थिति समझाई। रात में १०॥ बज गये। पवनार जाना नही हुआ।

वर्धा, ९-११-३८

प्रार्थना के बाद काका सा०, कृष्णदास गाधी, राधाकिसन से बातें। काका-साहब के साथ घूमना। हिन्दी-प्रचार, 'प्रसाद दीक्षा', 'सर्वोदय', महिला-आश्रम आदि के बारे में ठीक विचार-विनिमय।

बच्छराज जमनालाल व जमनालाल सस की सभाए हुईं, ठीक काम हुआ।

सर अकबर हैदरी का पत्र आया। फखूयारजग बहादुर को व मि० यग को पत्र लिखवाए। देशपाण्डे (चर्खा सघ वाले) जयपुर से आये। वहा की राजनैतिक स्थिति पर विचार-विनिमय। उन्हे कह दिया, चर्खा सघ को राजनैतिक सघर्ष में नही पड़ना है। इतने पर भी स्टटवाले गैरवाजिब हैरान करेगे तो तैयारी रखनी चाहिए। काम नही बढाना चाहिए।

पवनार-वर्धा, १०-११-३८

प्रार्थना के बाद विनोबा से विचार-विनिमय।

पवनार से महिला आश्रम तक पैदल करीब ६ मील, चि० शान्ता व रामकृष्ण साथ मे, मशाना गाव होते हुए, पैदल खेतो में से चले।

महिला आश्रम की सभा हुई। मेरे त्यागपत्र पर विचार-विनिमय। धोत्रे, काकासाहब, किशोरलालभाई की सलाह से पत्र लिख दिया।

श्रीमती अगाथा हेरिसन व मि० देसाई के साथ भोजन।

पत्र-व्यवहार। प्रेमू (भरत नेवटिया) को १०४ डिग्री बुखार। थोड़ी चिंता। सिविल सर्जन को बताया।
सर हैदरी का तार आया। रात में एक्सप्रेस से बम्बई रवाना होना पड़ा।

बंबई, ११-११-३८

मनमाड से नासिक तक बिहार-बंगाल रिपोर्ट व अन्य कागजात पढ़े।
नासिक में जीवनलालभाई व चन्द्रावहन साथ हुए। भोजन, बातचीत।
सर हैदरी से रात्रि में ६॥। से १२ बजे तक बातचीत, हैदराबाद स्टेट कांग्रेस के बारे में विशेष स्थिति। मैंने उनकी भूल बताई। उन्होंने अपनी दिक्कतें बताई, सीमेंट के बारे में भी थोड़ी बातें।

१२-११-३८

पन्ना के पास भोजन। शांतिप्रसाद भी वहीं आ गया।
डा० सरदेसाई ने दोनों आखें तपासी। चश्मे का नंबर ३.२५ याने जूना नम्बर ही बताया।
सर अकबर हैदरी का फोन आया। उससे मिलने निजाम पैलेस गये। उ देर तक स्टेट के मामले में, खासकर स्टेट कांग्रेस के बारे में बातचीत। उ जो कहना था, बहुत साफ तौर से कहा गया। उन्होंने ५-७ रोज हैदराबाद से खुलासेवार पत्र भेजने को कहा।
पन्नालालजी पित्ती व गोविन्दलालजी वगैरा से बातचीत।
आफिस में गंगाधर राव देशपांडे, राजपूताना शिक्षा मण्डल, हरजीवन भाई आदि का कार्य व बातें।
सरदार वल्लभभाई से मिलना।
जुहू में रामेश्वरजी बिड़ला से बातचीत।

जुहू, १३-११-३८

घूमना। ओंकारनाथ वाकलीवाल अजमेरवाले ने अपनी स्थिति कही।
मणीलाल नानावटी से स्टेट के बारे में बातचीत।
कमलनयन से जुहू वगैरा के बारे में व नौकरों के बारे में विचार।
दामोदर मूंदड़ा से हैदराबाद स्टेट के बारे में बातें। सर अकबर ने जो कई बातें कही, उस बारे में विचार-विनिमय।
श्री पन्नालालजी पित्ती से व्यापार व हैदराबाद स्टेट के बारे में देर तक

श्री कन्हैयालाल मुंशी, मुंगालाल गोयनका, उमादत्त नेमाणी मिलने आये। मुंगालाल ने जो आठ लाख रुपये दिये, उसका हाल कहा। गोविन्दराम सेकसरिया के बारे में बातें। मुंशी ने बैंक के बारे में व सर अकबर हैदरी के बारे में बातें कीं।

मुकन्द आयरन वर्क्स लि० की सभा हुई, ३। से ८॥ बजे तक काम हुआ। बिड़ला-हाउस गये।

१७-११-३८

सर अकबर को हैदराबाद भेजे जाने वाले पत्र का मसविदा ठीक किया। रामेश्वर व विट्ठलदास राठी साथ में।

चि० पन्ना के टांसिल का डा० शाह ने आपरेशन किया। दो टांसिल बड़े हुए थे।

रामेश्वरदासजी बिड़ला के साथ भोजन, बातचीत।

सर अकबर हैदरी का पत्र आदमी के हाथ आया। पत्र पढ़ने से यह साफ मालूम देता था कि वह लड़ना चाहते हैं।

रामेश्वरजी के साथ ओरियंटल बिल्डिंग की आफिस देखी, पसन्द नहीं आई।

गोविन्दरामजी सेकसरिया के भाई रामनाथ सेकसरिया को देखा। सांत्वना दी।

प० जवाहरलाल व इन्दू से मिले। देर तक बातचीत।

किशोरलालभाई के यहां गये। वे नहीं मिले, नाथजी मिले।

डा० पट्टाभी के साथ हैदराबाद स्टेट के बारे में बातचीत, पत्र का मसविदा बनाया।

केशवदेवजी व कमल से लाला मुकन्दलाल व विद्याप्रकाश के बारे में बातचीत।

१८-११-३८

घूमते हुए खार पैदल। चि० दामोदर साथ में। चि० नीलकंठ मश्रूवाला के घर किशोरलालभाई व नाथजी से मिले।

रामेश्वरजी बिड़ला जुहू आये, उनके साथ मणीलाल नानावटी से मिलना; बैंक के बारे में विचार-विनिमय।

कमला मेमोरियल की मीटिंग का काम हुआ।

देशी रियासत कार्यालय में प० जवाहरलाल का स्वागत हुआ, वहा गया।

वकील स्कूल की लड़कियों ने १० मिनट का खेल किया, जवाहरलाल के साथ वहां गये।

बम्बई की सार्वजनिक सभा मे। थोड़ी देर अस्पताल में।

१९-११-३८

मणीलाल नानावटी से बातचीत। विट्ठलदास राठी ने अपनी योजना दिखायी।

इन्दिरा का जन्म-दिन। इक्कीस वर्ष पूरे हुए, बाईसवां लगा। जुहू मे अपने यहा भोजन।

सरदार वल्लभभाई, जवाहरलाल, राजा, कृष्णा, इन्दिरा, बच्चे वगैरे आये। बातचीत, भोजन।

स्पेन की सहायता के बारे मे बम्बई प्रान्तीय कमेटी मे व्यापारियों की सभा हुई, मैं सभापति बना।

मेवाड़ के बारे में विचार-विनिमय।

हिन्दी प्रचार आफिस व दानी के यहा जाना। वहा से मुकन्द आयरन वर्क्स का बम्बई कारखाना देखा।

२०-११-३८

श्री केशवदेवजी नेवटिया, जमनादास गाधी मिलने आये। थोड़ी देर बाद लाला मुकन्दलाल व विद्याप्रकाश भी आये। उनसे थोड़े में साफ-साफ बातें की।

चीन मे व स्पेन में लड़ाई के समय उन लोगों की जो खून-खराबी हुई व जिस प्रकार वे लड़े, उसकी फिल्म १० से १ बजे तक देखी। प० जवाहरलाल भी थे।

श्री बशीधर डागा व चन्द्रकला के यहा फल वगैरा लिये।

सर विश्वेश्वरैया से मिलना, बातचीत।

कांग्रेस हाउस में स्पेन-सहायता व मेवाड़ प्रजामंडल के बारे में विचार-विनिमय।

नागपुर-मेल से वर्धा रवाना। रास्ते में पं० जवाहरलाल से देर तक बातचीत।

वर्धा, २१-११-३८

वर्धा पहुंचे। जवाहरलालजी, इन्दिरा वगैरा घर पर ठहरे।
सबके साथ भोजन। बापू के पास इन्दिरा व अगाथा हेरिसन के साथ मिलना हुआ। थोड़ा विनोद, हैदराबाद की स्थिति कही।
वच्छराज भवन में बीमारों को देखना।
पं० जवाहरलाल व डा० जाकिरहुसेन के साथ देर तक हैदराबाद की स्थिति पर विचार-विनिमय होता रहा।

२२-११-३८

केशवलालभाई व नटवरलाल बम्बई से आये।
अप्पाजी गवाने व वेंकटराव आये, उनसे बातें।
दुकान पर म्युनिसिपल प्लाट के बारे मे जाच की, पोद्दार के खेत की समाधि के बारे में झूठा प्रचार, अपने आदमियों की भी गलती लगी।
जानकीदेवी वगैरा से मिलकर दु:ख व थोड़ी चिन्ता हुई।
जवाहरलाल, जाकिर हुसेन, कृपलानी, पट्टाभि, अगाथा हेरिसन वगैरा के साथ भोजन।
काशीनाथ राव वैद्य (हैदराबाद वाले) से बातचीत, वहा की स्थिति पूरी तौर से समझी।
जानकीदेवी आदि बीमारो को वच्छराज-भवन मे देखा, प० जवाहरलाल भी आ गये थे।
प० जवाहरलाल का सार्वजनिक व्याख्यान अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति पर हुआ।

२३-११-३८

घूमते समय वच्छराज-भवन मे बीमारो को देखा, इलाज वगैरा के बारे मे बातचीत।
नागपुर प्रांतीय कांग्रेस कार्यालय मे नागपुर म्युनिसिपैलिटी के लिए गोपालराव काले व तेजराम गेहलौत को जाच के लिए भेजा।
प० जवाहरलाल को राजा ज्वालाप्रसाद व सुभाषबाबू के पत्र दिखाये।

खानगी बातें व अन्य बातचीत।
सेगाव जाकर बापू से थोड़ी बातें, खासकर जानकी के बारे में सुशीला से चर्चा।
जानकी का रामकृष्ण के डाक्टरी इलाज के बारे में विवाद—बातचीत।
जवाहरलालजी ने खादी वगैरा के बारे में सावित्री से देर तक बातचीत की।

२४-११-३८

मदनलाल भट्ट व नर्मदा से घूमते समय बातचीत।
प० जवाहरलालजी, इन्दिरा के साथ स्टेशन। कृपलानी और उपाध्याय भी प्रयाग गये।
बच्छराज-भवन में जानकी से देर तक बातचीत, आपरेशन इलाज वगैरा के बारे में।
सी० एफ० एण्ड्रूज, सुरेश बनर्जी व शंकरलाल बैंकर वगैरा आये।
पत्र-व्यवहार।
मूलचन्द खजाची ने नागपुर की स्थिति कही।
डा० पट्टाभि सीतारामैया का गांधी चौक में देशी रियासतों के बारे में जाहिर व्याख्यान। मुझे भी सभापति के नाते बोलना पड़ा।

२५-११-३८

घूमना—शान्ता, नर्मदा, मदालसा साथ में।
गोपालराव काले से नागपुर की स्थिति समझी।
शंकरलाल बैंकर व कुमारप्पा के साथ मगन-म्यूजियम की सभा हुई।
सी० एफ० एण्ड्रूज व पट्टाभि वगैरा से मिलना।
आज 'सावधान' व 'चित्रा' याने माचवे व जयवन्त का फैसला हुआ।
माचवे को ६ मास की सादी सजा, एक हजार दंड (उसमें से २५० अपने को मिलेगा)। दण्ड वसूल न हो तो चार मास अधिक।
'चित्रा' के जयवन्त को छ मास की सजा, पांच सौ रुपये दंड (उसमें से २५० अपने को मिलेगा)। दण्ड वसूल न हो तो दो मास अधिक।
बापूजी की रुजी मथीबाई चूड़ीवाले व काशीबाई आयी। रकम धर्मादि में लगाने का विचार कहा।

वर्धा-साटोडा, २६-११-३८

चि० चन्द्रकला व वंशीधर डागा वम्बई से आये। उनसे बातचीत।
दोपहर को—पैदल साटोडा जाने को १। बजे निकले। करीब ३। मील जाना-आना। थोड़ी दूर साइकल पर भी गये। आज सब मिलाकर करीब ८।।-९ मील घूमना हुआ।
साटोडा मे खेती कम्पनी के बोर्ड की सभा हुई।
घर आकर गरम दूध लिया व गरम पानी में नमक डालकर पैर मे सेंक दिया।

२७-११-३८

अप्पा सा०, (औंध महाराज के पुत्र) तथा सातवलेकरजी वगैरा आये।
बापू से बात करने के नोट तैयार किये।
सेगांव मे बापू से करीब सवा घंटे बातचीत। मेरे जन्म-दिन का पत्र उन्हें (बापू को) नही मिला। आश्चर्य हुआ। प्यारेलाल से बातचीत। उसे भी पत्र नही मिला। बापू से खुलासा।
मेरे त्यागपत्रों के बारे मे मैंने पूछा कि वर्किंग कमेटी के समय मैं बाहर रह सकता हूं? उन्होने कहा, "हां।" जयपुर की जिम्मेवारी नही छोड़ी जा सकती; नागपुर की भी।
परन्तु नागपुर की, अगर वे लोग मेरा कहना न माने तो, शायद छोड़ी भी जा सकती है। बापू ने साफ व जोर से कहा कि राजकोट का उदाहरण जयपुर, उदयपुर, हैदराबाद को नही लागू करना चाहिए।

२८-११-३८

वंशीधर व चन्द्रकला डागा कलकत्ते गये। गागोली व मिना जर्मनी से आये।
गोपालराव, जाजूजी, बाबासा०, तेजराम, घटवाई से नागपुर प्रांतीय कांग्रेस खासकर नागपुर म्यु० क० के बारे में देर तक विचार-विनिमय। गोपालराव व तेजराम की रिपोर्ट पढी। श्री ढवले को तार भेजा। दादा ने श्री मडप्पोलकर को तार भेजा।
श्री काने (नागपुरवाले) मिलने आये।
नागपुर प्रांतीय कांग्रेस कार्यकारिणी की सभा का कार्य २ बजे से रात मे १२। तक चला। ना० म्यु० क० के व दूसरी पार्टी के व्यवहार से दुःख व

शीघ्र आना सम्भव था।

२९-११-३८

श्रीमन्नारायण जाजूजी, गोपालराव, घटवाई, अम्बुलकर, विनायकराव, देशमुख, हरजीवनभाई, ममूताई, मालतीबाई पत्ते मिले। चिनाई-परिवार के चार लोग बम्बई से आये।

नागपुर से श्री काने डाक्टर आया। भैयालाल सेक्रेटरी व चौहान आये।

घटवाई, अम्बुलकर से बातें ना० म्यु० के बारे मे।

नवभारत पत्र के विश्वम्भरप्रसाद से एक हजार कर्ज के बारे मे बातें।

अप्पा साहेब (औंध वाले) से व बम्बई के चायनीज कौंसिल के प्रतिनिधि वगैरा से बातचीत।

डा० गागोली से जर्मनी की हालत समझी।

३०-११-३८

श्री जाजूजी, गोपालराव, घटवाई आदि से नागपुर म्युनिसिपैलिटी के बारे में बातचीत।

नागपुर से श्री सालवे, श्रीमती सालवे, शेरलेकर, अवारी, गुप्ते आदि १० बजे करीब आये। १॥ बजे तक म्युनिसिपल कमेटी नागपुर के बारे मे विचार-विनिमय। जाजूजी, काले, घटवाई भी हाजिर थे। आशा तो हुई कि भविष्य में वह इस प्रकार की भूल नही करेंगे। और बातो का खुलासा उन्होंने किया। श्री ढवले को आज फिर फोन करवाया। वह आने को तैयार नही; पत्र भी नही भेजा।

डा० मोट नागपुर से आये और सेगाव गये।

डा० गागोली व उसके कुटम्ब के लोगों से बातें।

१-१२-३८

श्री मन्चरशा अवारी से ना० म्यु० क० के बारे मे बहुत देर तक बातचीत होती रही।

नवभारत विद्यालय के उर्दू वर्ग के सबध मे बात करने को अजुमन इस्लाम वर्धा का डेपूटेशन आया। श्री आर्यनायकम व श्रीमन्नारायण की उपस्थिति मे उन्हे पूरी स्थिति साफ तौर से समझाकर कही।

२-१२-३८

नागपुर से शुक्लाजी व मिश्रा आये, जबलपुर-कांग्रेस तथा अन्य बातचीत, मुझे जो कहना था वह कहा।

आज कुटुम्ब के लोगों को भोजन।

हरीभाऊ जी, नरसिंहदासजी आये—अजमेर-कांग्रेस की बातें करने। मैंने ज्यादा रस नही लिया।

जयपुर से टेलीफोन आया। मिश्रजी व हीरालालजी शास्त्री आज सुबह गिरफ्तार कर लिये गये।

शेखावाटी जाने के बारे में मैंने कहा कि मै वहां आने को तैयार हूं। विचार-विनिमय। कमर मे दर्द।

३-१२-३८

जानकीदेवी के इलाज के लिए बम्बई जाने की तैयारी।

हरीभाऊ उपाध्याय से अजमेर कांग्रेस के बारे मे बातचीत। स्थिति समझी। रात मे जयपुर से टेलीफोन आया, हीरालालजी शास्त्री की गिरफ्तारी के बारे मे।

मि० यंग व सीकर वगैरा तार भेजे। जयपुर जाने की तैयारी।

बरवे (पूनावाले) आये। वैदिक विषय मे बातचीत। श्री हरिभाऊजी व देशपांडे से जयपुर व अजमेर के बारे मे बातें।

आर्वी का डेपुटेशन आया। वहा के डाक्टर के बारे में डा० नर्मदाप्रसाद से बातचीत।

सेगांव जाने को रुईकर, छगनलाल भारुका व दाडेकर आये।

भारुका सेगांव जाकर आये। अभ्यंकर मेमोरियल व नागपुर-परिस्थिति पर विचार-विनिमय।

जानकीदेवी व कमल बम्बई गये।

आज फिर जयपुर से फोन आया कि कल की खबर गलत है। बम्बई से दामोदर का भी फोन इसी बारे में आया।

४-१२-३८

लक्ष्मीनारायण मूंदड़ा से हैदराबाद स्टेट के बारे मे बातचीत। प्रकाशवती मिलने आयी, सम्बन्ध के बारे मे।

सरदार किबे व वैद्य से बातचीत।

बापू से मिलना। सरदार किबे के बारे में विचार-विनिमय। अगर वे नागपुर रहना चाहते हों तो रह सकते हैं। मेरे प्रश्नों के उत्तर बापू ने दिये —

(१) हैदराबाद स्टेट—'लोटस' (सरोजिनी) नायडू का पत्र पढ़कर जवाब भेजने को कहा।

(२) जयपुर प्रजामंडल व मग का तार बताया। अभी गिरफ्तारी की सम्भावना कम मालूम होती है।

(३) राजकोट वगैरा के बारे में बापू 'हरिजन' के अगले अंक में लिखनेवाले हैं। इस अंक में भी स्टेटों के बारे में लिखा है। बापू ने मेरे बारे के खुलासे का मसविदा दिया है।

(४) ना० म्यु० क० की स्थिति के बारे में उन्होंने कहा कि डबले व पटवर्धन को त्यागपत्र देना ही चाहिए। मालवे-ग्रुप को खुलासा करना चाहिए व भूल कबूल करनी चाहिए।

(५) नागपुर प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के बारे में कहा कि जब कहना न माने तो छोड़ देना ठीक होगा। ज्यादा दिन तक exploit नहीं होने देना चाहिए।

(६) जयपुर जाने के बारे में कहा कि मैं अभी बम्बई जा सकता हूं। वहां से जयपुर, या आराम के लिए जहां जाना हो, जा सकता हूं। डाक्टरी इलाज कराकर देख सकते हो।

(७) वर्धा में न्यू रेस्ट हाउस। (८) मेरा पत्र नहीं मिला। (९) त्रिकमलाल भट्ट व मेरा लगाव। (१०) जनवरी में बारडोली रहेंगे।

लाहौर विद्या प्रकाश को फोन। मंदिर में राष्ट्रीय रामायण का पाठ।

५-१२-३८

गुलाब, नर्मदा, राधाकिसन, मोतीलाल राठी वगैरा से बातें।

पौनार गया। गुलाब, नर्मदा, गोपालराव, बाबटे साथ में। विनोबा से ना० म्यु० क० के बारे में विचार-विनिमय।

बाबासा०, गोपालराव व भरदाई से बातें।

शाम को नागपुर में भोंसले, नायडू (ना०न०पा० के अध्यक्ष) नागपुर म्यु०

फमेटी के मामले में वातें करने आये। देर तक विचार-विनिमय।

वर्धा-नागपुर-केलोद, ६-१२-३८

पाव में दर्द कम। केलोद जाना था सो जल्दी तैयार हुए।

वर्धा से नागपुर तक चि० नर्मदा व अमरचन्द पुंगलिया से बातचीत। न
को भावी जीवन के बारे में समझाया।

नागपुर से किराये की मोटर में, बाबासा० देशमुख, धर्माधिकारी, गोपा
राव काले के साथ, केलोद। वहा भिकूलाल चाण्डक के घर भोजन।

केलोद—किसान परिषद में। दादा धर्माधिकारी सभापति। मैं
उद्घाटन किया।

श्री दुर्गाशकर मेहता, छगनलाल भारुका, श्री गोखले भी परिषद में हाजि
थे।

परिषद ठीक रही व दादा का व्याख्यान अच्छा हुआ। बाद मे मेहता व
छगनलाल के साथ नागपुर पहुचकर मेल से वर्धा रवाना।

७-१२-३८

हरगोविन्द को भी थोडा ज्वर।

स्टेशन गये। औंध के राजा साहेब, बाला साहेब व उनके चिरजीव अप्पा
सा० व दीवान वगैरा की पार्टी आई। जापान की पार्लियामेंट का सदस्य
भी आया।

सुरेश बनर्जी भी आये।

औंध राजे साहेब को ऊपर ठहराया।

पू० बापूजी से मिलने का इन सबो का समय निश्चित किया।

सुरेश बनर्जी, रुईकर, मिसेज रुईकर वगैरा भी थे।

रेल से नागपुर गया, बाला सा० देशमुख, गोपालराव काले, तेजराम साथ मे
थे।

नागपुर स्टेशन से न० का० के आफिस मे। वहा म्यु० क० पार्टी की सभा।

८-१२-३८

नागपुर से मोटर से सुबह ४ बजे पहुचे। मां व गुलाब के पास थोड़ी देर
रहा। बाद मे एक-डेढ़ घटा सोया।

केशवदेवजी, मुकुन्दलाल, आबिदअली बम्बई से आये। मुकुन्द आयरन स्टील

वर्क्स लि० के बारे में सुबह व दोपहर का समय दिया। सिर भारी हो गया। दोपहर को करीब सवा घंटा आराम मिला।

आज दामोदर के सम्मान में बजाजवाड़ी के लोगों ने पार्टी, भोजन वगैरा की व्यवस्था ठीक की। परन्तु आज ही गांधी चौक में श्रीमत राजे श्री भवानराव श्रीनिवासराव, उर्फ श्री बाला सा० पंत प्रतिनिधि औंध निवासी को म्यु० क० की ओर से मानपत्र, स्वागत व व्याख्यान ८॥ बजे रखा था, सो जल्दी करनी पड़ी।

गांधी चौक में ८॥ बजे औंध के राजा साहेब व अप्पा सा० का प्रभावशाली सुन्दर व मनन करने योग्य भाषण हुआ। इनके प्रति आदर बढ़ा।

९-१२-३८

औंध के राजा पन्त प्रतिनिधि श्री भवानजी पन्त के सूर्य-नमस्कार सुबह पांच बजे केशवदेवजी के साथ देखे। उनके साथ महिला-आश्रम गया। वहां स्त्रियों के व्यायाम, पोशाक व उद्योग पर उनका सुन्दर भाषण हुआ। 'पक्का घेऊ नये, कच्चा देऊ नये—पक्का खावा, कच्चा द्यावा।'—इसकी व्याख्या भी की।

बम्बई से कमल का फोन आया, जिसमें उसने जानकीदेवी की ट्रीटमेंट कल से शुरू करने के बारे में व मेरे वहां आने के बारे में पूछा। सरदार वल्लभ-भाई भी वहीं बैठे थे।

मैंने कह दिया कि मैं आता हूं।

बापू से मिलकर सर हैदरी के पत्र का जवाब तथा बम्बई जाने का विचार आदि की बातें।

केशवदेवजी, मुकन्दलाल, आबिदअली से बातचीत। मुकन्दलाल से कहा कि विद्याप्रकाश से बात कर लो।

हिन्दी प्रचार समिति। ना० प्रा० का० का काम। जाजूजी व गोपालराव से बातचीत। मैंने छुट्टी ले ली।

मेल से बम्बई रवाना।

बम्बई, १०-१२-३८

रात में गाड़ी में भीड़ थी। दादर गाड़ी एक घंटा लेट पहुंची।

औंध के राजा सा० व अप्पा सा० भी इसी गाड़ी में थे। अप्पा साहेब व

टी० एम० पारधी (विलेपार्लेवाले) के साथ जुहू।
जुहू पहुंचकर जानकीदेवी व कमल से बात करके आज ही डो
दादाभाई के अस्पताल में दाखिल होकर ट्रीटमेंट शुरू करने का निश्च
बम्बई में डा० डोशीबाई से बात की व रेडियम ट्रीटमेंट के इलाज
तैयारी।

१२-१२-३८

लाला मुकन्दलाल, केशवदेवजी, आबिदअली आदि से बातचीत। आखि
आज भी निश्चित फैसला नहीं हो पाया। मुकन्दलाल के व्यवहार से
होना पड़ा।
बुरा फसा व गलती मालूम होने लगी। दया व क्रोध दोनों आते थे।
दोपहर को जल्दी डा० डोशीबाई के अस्पताल में गया। १॥ से ६। बजे
तक वहां रहा। आज रेडियम निकाल लिया। भाग्यवती, सफिया वहां
आईं।

१३-१२-३८

डा० काशी से मिलने बस में बैठकर गया।
डा० डोशीबाई के अस्पताल से जानकीदेवी जुहू, १० बजे करीब कमल-
नयन, मदालसा के साथ आई। उसके रहने व आराम की व्यवस्था।
कमल आज मेल से वर्धा गया। उससे बातचीत, भावी प्रोग्राम की सूचना
आदि।

१४-१२-३८

रामेश्वर अग्रवाल से मुकन्द आयरन की स्थिति समझी।
भवरलाल (उदयपुरवाले), केशव रुइया वगैरा आये।
जयरामदास दौलतराम से खार में मोटवानी के घर मिलते हुए तथा गोई
के कारखाने होते हुए, कालबादेवी-आफिस। बच्छराज कम्पनी लिमिटेड
के बोर्ड की सभा हुई, देर तक काम चला।
मुकन्दलाल की पूरी स्थिति बोर्ड के सदस्यों को समझाई। कमलनयन डाय-
रेक्टर चुना गया।

बम्बई-वज्रेश्वरी, १५-१२-३८

सुबह जल्दी तैयार होकर मदालसा के साथ वज्रेश्वरी मोटर से गये। जाते

समय अंधेरी-परई के रास्ते गये। वापस आते समय पोइवदर, ठाणा, बोरीवली होते हुए शाम को छ बजे के करीब पहुंचे। आते-जाते समय ठाणा-आश्रम में ठहरे थे। परन्तु स्वामी वहां नहीं थे। बाबा सा० सोमण मिले।

वज्रेश्वरी में गधक के गरम पानी के झरने हैं। कई लोग जाते हैं, खासकर चमड़ी के रोग, लकवा, डायबिटीजवालों को ज्यादा लाभ होता है। झरने का स्थान गंदा रहता है। इसकी व्यवस्था करनी है। डा० कोठावाला ने एक सेनेटोरियम बना रखा है। रहने व खुराक के पांच रुपये लेता है। यह स्थान सुन्दर व साफ है, वहीं स्नान-भोजन-आराम किया।

१६-१२-३८

सफिया का फोन आया, डा० रजबअली की मृत्यु की दुखदायक खबर मिली।

डा० रजबअली के घर, सुबह करीब ४ घंटे व रात में कोई २॥ घंटे, सब मिलकर ६-७ घंटे बिताये। जैनाबेन व बच्चों से बातचीत। हिम्मत आदि। डा० रजबअली के चले जाने से ऐसा लग रहा है कि घर का एक सच्चा प्रेमी, मित्रता के योग्य सज्जन पुरुष चला गया। रजबअली ६८ वर्ष के थे।

माणिकलाल वर्मा व उनके साथ कई लोग, उदयपुर (मेवाड़) सत्याग्रह के बारे में विचार-विनिमय करने आये।

रात ने फिर रजबअली के घर गया, श्री जैनाबेन व बालकों से बातचीत, की, हिम्मत बधाई। आगे की योजना आदि पर बातें, विचार।

१७-१२-३८

इण्डस्ट्रियल प्लानिंग कमेटी का सेक्रेटेरियट में उद्घाटन। वहां जाना पड़ा। सुभाषबाबू व जवाहरलाल के व्याख्यान के बाद वापस।

खादी-भण्डार में एक गरम बंडी सिलाई।

सर इब्राहीम ने बुलवाया; भाड़े आदि के बारे में देर तक बातचीत।

१८-१२-३८

सादुलखां, साबिदअली व श्री बोल (कण्ट्राक्टर) मिलने आये। वहीं भोजन।

डॉ० एम० पारधी (विलेपार्लेवाले) के साथ जुहू।
जुहू पहुंचकर जानकीदेवी व कमल से बात करके आज ही डोशीबेन दादाभाई के अस्पताल में दाखिल होकर ट्रीटमेंट शुरू करने का निश्चय। बम्बई में डा० डोशीबाई से बात की व रेडियम ट्रीटमेंट के इलाज की तैयारी।

१२-१२-३८

लाला मुकन्दलाल, केशवदेवजी, आबिदअली आदि से बातचीत। आखिर आज भी निश्चित फैसला नहीं हो पाया। मुकन्दलाल के व्यवहार से दंग होना पड़ा।
बुरा फंसा व गलती मालूम होने लगी। दया व क्रोध दोनों आते थे।
दोपहर को जल्दी डा० डोशीबाई के अस्पताल में गया। १॥ से ६। बजे तक वहां रहा। आज रेडियम निकाल लिया। भाग्यवती, सफिया वहां आईं।

१३-१२-३८

डा० काशी से मिलने बस में बैठकर गया।
डा० डोशीबाई के अस्पताल से जानकीदेवी जुहू, १० बजे करीब कमलनयन, मदालसा के साथ आई। उसके रहने व आराम की व्यवस्था। कमल आज मेल से वर्धा गया। उससे बातचीत, भावी प्रोग्राम की सूचना आदि।

१४-१२-३८

रामेश्वर अग्रवाल से मुकन्द आयरन की स्थिति समझी।
भवरलाल (उदयपुरवाले), केशव रुइया वगैरा आये।
जयरामदास दौलतराम से खार में मोटवानी के घर मिलते हुए तथा लोहे के कारखाने होते हुए, कालबादेवी-आफिस। बच्छराज कम्पनी लिमिटेड के बोर्ड की सभा हुई, देर तक काम चला।
मुकन्दलाल की पूरी स्थिति बोर्ड के सदस्यों को समझाई। कमलनयन डायरेक्टर चुना गया।

बम्बई-वज्रेश्वरी, १५-१२-३८

सुबह जल्दी तैयार होकर मदालसा के साथ वज्रेश्वरी मोटर से गये। जाते

मय अंधेरी-परई के रास्ते गये। वापस आते समय घोडबदर, ठाणा, ोरीवली होते हुए शाम को छ: बजे के करीब पहुंचे। आते-जाते समय ागा-आश्रम में ठहरे थे। परन्तु स्वामी वहां नहीं थे। बाबा सा० सोमण मिले।

व्रजेश्वरी में गंधक के गरम पानी के झरने हैं। कई लोग जाते है, खासकर चमडी के रोग, लकवा, डायबिटीजवालों को ज्यादा लाभ होता है। झरने का स्थान गंदा रहता है। इसकी व्यवस्था करनी है। डा० कोठावाला ने एक सेनेटोरियम बना रखा है। रहने व खुराक के पांच रुपये लेता है। यह स्थान सुन्दर व साफ है, वहीं स्नान-भोजन-आराम किया।

१६-१२-३८

नफिसा का फोन आया, डा० रजबअली की मृत्यु की दुःखदायक खबर मिली।

डा० रजबअली के घर, सुबह करीब ४ घंटे व रात में कोई २।। घंटे, सब मिलकर ६-७ घंटे बिताये। जैनाबेन व बच्चों से बातचीत। हिम्मत आदि। डा० रजबअली के चले जाने से ऐसा लग रहा है कि घर का एक सच्चा प्रेमी, मित्रता के योग्य सज्जन पुरुष चला गया। रजबअली ६८ वर्ष के थे।

माणिकलाल वर्मा व उनके साथ कई लोग, उदयपुर (मेवाड) सत्याग्रह के बारे में विचार-विनिमय करने आये।

रात में फिर रजबअली के घर गया, श्री जैनाबेन व बालकों से बातचीत की, हिम्मत बधाई। आगे की योजना आदि पर बातें, विचार।

१७-१२-३८

इण्डस्ट्रियल प्लानिंग कमेटी का सेक्रेटेरियट में उद्घाटन। वहां जाना पडा। सुभाषबाबू व जवाहरलाल के व्याख्यान के बाद वापस।

खादी-भण्डार में एक गरम बंडी सिलाई।

सर इब्राहीम ने बुलवाया; भाडे आदि के बारे में देर तक बातचीत।

१८-१२-३८

साहुलबाबा, आबिदअली व श्री शौन (कण्ट्राक्टर) मिलने आये। यहीं भोजन।

स्पेनिश रिलीफ कमेटी के लिए कांग्रेस हाउस गये। जवाहरलाल नेहरू भी थे।

रात में बहुत-से मेहमानों के साथ भोजन, घूमना, ब्रिज।

१९-१२-३८

घूमना, राधा गांधी साथ मे। उसके भविष्य के जीवन के सम्बन्ध मे बातें, समुद्र-स्नान।

लतीफ रजबअली मिलने आया। उसके साथ जैनाबेन से मिलना—दो बार बातचीत।

डा० डोशीवाई दादाभाई को जानकी देवी को दिखाया। उसने सब ठीक बताया। तीन महीने तक नियमित जीवन रखने से पूरा लाभ पहुंचेगा, कहा।

घनश्यामदासजी बिड़ला से देर तक फोन पर बातचीत। वायसराय व पंत से जयपुर के बारे मे जो बातें हुई, वे उन्होने कही।

अकबर, रजबअली, डा० काशी, अवसरे, मणी, सूरसिंग वगैरा से बातें। लीलावती मुंशी जानकी से मिलने आईं।

२०-१२-३८

डा० खरे को पत्र लिखवाया। पन्तजी को व जयपुर तार भेजे।

डा० रजबअली के घर। वहा मिनोचेर मचरशा हीरालाल एण्ड कम्पनी के सालीसीटर ने पाचो लडके, एक लडकी व जैनाबेन के साथ उनका विल (वसीयतनामा) पढकर बताया।

ट्रस्टो की हकीकत बतलाई। यूसुफ, लतीफ, सलीम, रोशन, अकबर, कुलसम व जैना हाजर थे। बाद मे केशवदेवजी, आबिदअली भी आ गये थे।

घनश्यामदास बिडला से मिलकर जुहू।

जीवनलाल भाई, रामजी भाई व केशवदेवजी से मुकन्दलाल के कारखाने व नई कम्पनी के बारे मे विचार-विनिमय।

२१-१२-३८

घूमना—सलीम रजबअली साथ मे। उसमे परिचय, बातचीत। दामोदर का वर्धा से फोन आया, हैदराबाद के बारे मे।

लाला मुकन्दलाल, विद्याप्रकाश, आबिदअली वगैरा आये। आज सुबह व शाम को व रात में भी बहुत देर तक विचार-विनिमय होकर, आखिर लाला मुकन्दलाल ने जो दो योजनाएं दी थी, उनमें से एक मंजूर की गई; उनकी प्रसन्नता से व बाद में मि० अम्बालाल सालीसिटर को बुलवाकर रात में १२ बजे तक शर्तें नोट हुईं।

घनश्यामदासजी बिड़ला आये, यहीं पर भोजन किया। जयपुर प्रजामंडल के बारे में देर तक बातचीत, विचार-विनिमय, चिरंजीलाल मिश्र से भी बातचीत।

सफिया, मरियम, भाग्यवती, दानी, केदारनाथजी वगैरा आये। बातचीत।

२२-१२-३८

घूमना। रामेश्वर, गोवर्धन, मनोम से बातें। 'लोकशक्ति' वाले आये।

मुकन्दलाल, विद्याप्रकाश, केशवदेवजी, आबिदअली, रामेश्वर अग्रवाल आदि से विचार-विनिमय। कल के ठहराव के अनुसार लाला मुकन्दलाल व विद्याप्रकाश ने थोड़ा फर्क करके सही कर दी, मैंने भी सही कर दी, यानी उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

मुकन्द आयरन वर्क्स के बोर्ड की सभा हुई। उसमें उपरोक्त पत्र पढ़ा गया; खुलासे के बाद नोट किया गया।

आज दोपहर के दो बजे करीब भोजन। सिर में दर्द व भारीपन। थोड़ी थोड़ी देर आराम।

केशवदेवजी, जीवनलालभाई व रामजीभाई से देर तक विचार-विनिमय, नई कम्पनी शुरू करने के बारे में तथा मुकन्दलाल के फैसले के बारे में।

श्री चिरंजीलाल मिश्र से जयपुर प्रजामंडल के बारे में विचार-विनिमय।

२३-१२-३८

रामेश्वर अग्रवाल से बातें, उसके काम के बारे में व चि० शान्ता के बारे में।

माणिकलालजी वर्मा (उदयपुरवाले) मिलने आये।

हरजीवनभाई के दोनों खाते उठा देने का निश्चय। पच्चीस सौ रुपयों की नैतिक जिम्मेवारी उनकी रहेगी।

मुकन्द आयरन वर्क्स के बारे में मुकन्दलालजी, विद्याप्रकाश, जीवनलालभाई,

रामजीभाई, केशवदेवजी वगैरा से विचार-विनिमय करके मसविदा तैयार किया।

बच्छराज कम्पनी व मुकन्द आयरन वर्क्स लिमिटेड के बोर्ड की सभा हुई।

सुभाषबाबू से मिलना व देर तक बातचीत हुई। थोड़े दुःखी व चिन्तित दिखे।

सिंधिया कम्पनी के नये मकान का उद्घाटन। सरदार का प्रभावशाली भाषण हुआ।

सिंधिया का तारीफ कुछ ज्यादा हुई।

चुन्नीलाल माईदास (तारवाले) मिलने आये।

२४-१२-३८

मुकन्दलाल-विद्याप्रकाश के मामले मे आज भी पूरा समय देना पड़ा।
जीवनलालभाई, रामजीभाई, पूनमचन्द के साथ कम्पनी बनाने का निश्चय।
पाच लाख की पेडअप प्राइवेट कम्पनी। तीन लाख के शेयर जीवनलालभाई व मित्र, दो लाख बच्छराज कम्पनी के। मुकन्द आयरन वर्क्स का काम उसके जिम्मे किया।

डा० रजबअली के घर जैनाबेन से मिलना। ट्रस्टी मैं नही बन सकता, यह उसे समझाकर कहा।

सरदार व सुभाष से सरदार के घर पर मिलना। बाद मे कम्पनी के आफिस में गये।

नागपुर मेल से सेकण्ड मे वर्धा रवाना, जीवनलाल, दीक्षित, नवलचन्द नासिक तक साथ मे।

वर्धा, २५-१२-३८

धामनगाव के बाद उमाशंकर दीक्षित से बातचीत।

वर्धा पहुंचकर पैदल ही बच्छराज-भवन। कमला, झेबू, सावित्री, बच्छु से मिलकर—ज्ञान हेडा से मिलते हुए बंगले।

सेगाव जाकर बापू से बातचीत—सुभाष के आने के बारे में; नारायणदास बाजोरिया व गो सेवा मडल की चर्चा; जयपुर व अकाल परिस्थिति; बापू का भावी प्रोग्राम व स्वास्थ्य, नागपुर मिनिस्ट्री व उनके अलाउस के

बारे मे।

मेहमानो से मिलना, बातचीत।

मिश्रजी के दो बार फोन।

दुर्गाशंकर मेहता की स्त्री की मृत्यु हुई।

अलाउंस का खुलासा।

२६-१२-३८

सुबह डा० मन्नू त्रिवेदी (पूनावाले) से बातचीत।

सावित्री ने अपनी स्थिति व भावी रहन-सहन के बारे में बातचीत की।

बम्बई साथ जाने का विचार।

'सर्व धर्म परिषद' तिलक हाल मे हुई। पूज्य जाजूजी, किशोरलालभाई, कुमारप्पा व कमल के भाषण हुए।

लक्ष्मीनारायण मंदिर ट्रस्ट कमेटी की बैठक हुई। आज देवला के पुंडलीकराव हरिजन को ट्रस्टी मुकर्रर किया। दो-तीन वर्ष के विचार-विनिमय के बाद यह कार्य हुआ।

पू० बापू को अपने जन्म-दिन के रोज लिखे पत्रो की नकलें व असली पत्र पढ़ाये, बापू के नाम का, सरदार के नाम का, जानकीदेवी का, उसका जवाब व राधाकृष्ण का। बापू कल पत्र लिखकर भेजेंगे।

शंकरलाल बैकर का जन्म-दिन। उन्हे आज पचासवा वर्ष शुरू हुआ।

बैकर, सागरमलजी, मदन कोठारी, मन्नू त्रिवेदी, शाताबाई वगैरा से बातें।

वर्धा २७-१२-३८

सुभाषबाबू मेल से आज आ गये; देर तक उनसे बातचीत, जयपुर स्थिति पर विचार-विनिमय। उन्होने बापू की राय, ठीक बताई।

बच्छराज जमनालाल व जमनालाल सन्स की सभाए हुईं।

राजकोट का फैसला होने के समाचार सुभाषबाबू ने बताये। खुशी हुई।

बापू का खानगी पत्र मिला। उसकी नकल उमा ने की। उन्हे जवाब भेजा।

पत्र-व्यवहार की सफाई।

सुभाषबाबू बापू से मिलकर आये। ज्वर के कारण आज उनका मद्रास जाने का प्रोग्राम रद्द किया। डॉ० दास भी आये।

नागपुर मेल से सेकंड क्लास मे बम्बई रवाना। चि० सावित्री, कमल,

नई दिल्ली, ३०-१२-३८

करीब छः बजे सुबह दिल्ली पहुंचे। बिडला हाउस की मोटर व आदमी आये थे, वहा गये। घनश्यामदासजी, रामेश्वरदासजी, सर बद्रीदासजी गोयनका आदि से मिलना। घूमना। प्रतिबन्ध लगाने की स्थिति पर विचार।

हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊजी वगैरा आये। प्रतिबन्ध व जयपुर प्रजा-मंडल की स्थिति पर बहुत देर तक विचार-विनिमय होता रहा, रात में ६ बजे तक। बारडोली में ता० ४ को बापू से मिलकर फैसला करने का निश्चय। प्रेस स्टेटमेंट आदि। शास्त्रीजी की बातचीत से दुःख पहुंचा। मेरी भी गलती थी।

नई दिल्ली, ३१-१२-३८

घूमना—सर बद्रीदास व रामेश्वरदास बिडला साथ में।

जयपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय।

काकासा० व हरिभाऊजी मिलने आये।

घनश्यामदासजी सर ग्लैंसी से मिले। पूरी खातरी हो गई कि मेरे जयपुर-प्रवेश-प्रतिबन्ध में गवर्नमेंट आफ इंडिया का हाथ है। सर ग्लैंसी से, मैंने जापानी कपड़े के व्यापार में पैसे कमाये, आदि बातें पूछी।

हरिजन कालोनी में पूज्य लक्ष्मी वगैरा से मिला। हरिभाऊजी के पिता से मिलना हुआ। सरस्वतीबाई के यहां भोजन। बाद में प्रदर्शनी देखी।

बच्छू, सागरमलजी, विट्ठल साथ में।

बम्बई, २८-१२-३८

रात में मि० सावित्री, वच्छू (राहुल) को बहुत ही अच्छी तरह से प्यार से व नियमित रूप में दूध वगैरा सभालती रही, यह देखकर सुख मिला।
दादर उतरकर जुहू। केशवदेवजी व आबिदअली से मुकन्दलाल वगैरा के बारे में स्थिति समझी।
लाला मुकन्दलाल, विद्याप्रकाश, जयप्रकाश (छोटा लड़का) जुहू आये, थोड़ी देर बातचीत।
सरदार वल्लभभाई से सुबह फोन से व बाद में राजकोट के बारे में मुद्दे की बात समझ ली। बाद में जयपुर की स्थिति पर देर तक विचार-विनिमय हुआ। बापू ने जो सलाह दी, वह कही।
रजबअली के घर जैनाबाई से व मुकन्दलालजी पित्ती के यहां पन्नालालजी पित्ती से हैदराबाद की बातें।
सागरमल बियानी के साथ फ्रण्टियर से जयपुर रवाना।

सवाई माधोपुर, गुरुवार, २९-१२-३८

'जन्म-भूमि' व 'टाइम्स' पढ़ा। राजकोट का वर्णन पढ़कर सुख मिला।
सवाई माधोपुर में उतरकर जयपुर राज्य के स्टेशन को जाते समय, रास्ते में ही, रायबहादुर दीवानचन्द, डिप्टी इस्पेक्टर जनरल, ने ता० १६ दिसम्बर १९३८ का सेक्रेटरी कौंसिल आफ स्टेट, जयपुर की ओर से नोटिस दिया।[1] उस समय डी० एन० चक्रवर्ती, सुपरिंटेंडेंट पुलिस, हसनअली सब-इस्पेक्टर व लक्ष्मीनारायण तहसीलदार सवाई माधोपुर हाजिर थे। बाद मे मि० एफ० एस० यंग इस्पेक्टर जनरल भी आ गये। बहुत देर तक बातचीत। उन्होंने अपनी दयाजनक हालत कही। उन्होंने एक पत्र घनश्यामदासजी के नाम लिखकर दिया व खास तौर से आग्रहपूर्वक प्रार्थना की कि दस रोज का समय मुझे और दीजिये। महाराज कलकत्ते मे है। सर बीचम भी दौरे पर हैं। टेलीफोन की भी उन्होंने कोशिश की, पर मिल नही पाया, इत्यादि। बाद मे बड़े स्टेशन से तार वगैरा किये। दीवानचन्द व चक्रवर्ती बातें करते रहे। अन्त में देहली जाने का निश्चय।

1. इस नोटिस की नकल पृष्ठ २६६ पर है।

नई दिल्ली, ३०-१२-३८

करीब छ. बजे सुबह दिल्ली पहुंचे। बिडला हाउस की मोटर व आदमी आये थे, वहां गये। घनश्यामदासजी, रामेश्वरदासजी, सर बद्रीदासजी गोयनका आदि से मिलना। घूमना। प्रतिबन्ध लगाने की स्थिति पर विचार।

हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊजी वगैरा आये। प्रतिबन्ध व जयपुर प्रजा-मंडल की स्थिति पर बहुत देर तक विचार-विनिमय होता रहा, रात में ९ बजे तक। बारडोली में ता० ४ को बापू से मिलकर फैसला करने का निश्चय। प्रेस स्टेटमेंट आदि। शास्त्रीजी की बातचीत में दुःख पहुंचा। मेरी भी गलती थी।

नई दिल्ली, ३१-१२-३८

घूमना—सर बद्रीदास व रामेश्वरदास बिडला साथ में।

जयपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय।

बाबासा० व हरिभाऊजी मिलने आये।

घनश्यामदासजी सर ग्लैंसी से मिले। पूरी खातरी हो गई कि मेरे जयपुर-प्रवेश-प्रतिबन्ध में गवर्नमेंट आफ इंडिया का हाथ है। सर ग्लैंसी ने मैंने जापानी कपड़े के व्यापार में पैसे कमाये, आदि बातें पूछीं।

हरिजन कालोनी में पूज्य लक्ष्मी वगैरा से मिला। हरिभाऊजी व पिता से मिलना हुआ। सरस्वतीबाई के यहां भोजन। बाद में प्रदर्शनी देखी।

१. जमनालाल को दिये गये नोटिस की नकल—

Notice

(Seal of Jaipur state)
To

Seth Jamnalal Bajaj
of Wardha (C. P.)

Whereas it has been made to appear to the Jaipur Government that your presence and activities within the Jaipur State are likely to lead to a breach of the peace, it is considered necessary in the public interest and for the maintenance of public tranquility to prohibit your entry within the Jaipur State.

You are, therefore, required not to enter Jaipur territory until further orders.

By Order of the Council of State
M. Altaf a. Khan
Secretary, Council of State
Jaipur

Jaipur
Dated the 16th of December 1938

१९३९

नई दिल्ली, १-१-३९

सुबह घूमना। सर बद्रीदास, रामेश्वरदास बिड़ला साथ में।

रामेश्वरदास बिड़ला से मुकन्द आयरन वगैरा सम्बन्धी व्यापारिक बातचीत।

घनश्यामदास बिड़ला से खानगी बातें—मित्रों के मतभेद व व्यवहार के सम्बन्ध में।

चि० रामगोपाल केजड़ीवाल, शान्ता, सिद्धगोपाल, माधोप्रसाद चौधरी, सुशीला, राजेन्द्रलाल, राजेश्वरी, नरेन्द्रलाल वगैरा मिलने आये, बातचीत।

जुगलकिशोरजी ने नई दिल्ली में लक्ष्मीनारायण व बुद्ध भगवान का जो मन्दिर बनवाया था, उसे भली प्रकार देखा। मन प्रसन्न हुआ। सुख मिला।

सर शादीलालजी से बहुत देर तक सीकर-जयपुर के भावी प्रोग्राम पर बातचीत।

राजकुमारी अमृतकौर, रानी लक्ष्मीबाई, अगाथा हैरिसन से जयपुर की परिस्थिति की चर्चा।

२-१-३९

सर बद्रीदासजी, रामेश्वरदास के साथ घूमना। डा० अग्रवाल (आंखवाले) भी आ गये थे।

रामेश्वरदासजी बिड़ला से शुगर फैक्टरी सब एक जगह करने पर विचार। बैंक के बारे में मुझे उत्साह नहीं, मुझे सफलता मिलना कठिन मालूम देता है।

पूज्य बा कल नहाने गईं तो उनको मूर्च्छा आ गई। उन्हें देखने गये।

बापू से भोजन के समय बातें हुईं। उनको मि० यग से सवाई माधोपुर मे जो बातें हुईं, घनश्यामजी की सर ग्लैंसी से हुई मुलाकात, वायसराय को उनके लिखे पत्र व मिस अगाथा हेरिसन की सर ग्लैंसी से हुई मुलाकात तथा वायसराय को हेरिसन भी पत्र लिखनेवाली है, वगैरा बातो से पूरी तरह परिचय करवाया। आपस मे भी जयपुर के मित्रो से देर तक विचार-विनिमय।

शाम की प्रार्थना के बाद पू० बापू से करीब १। घटे जयपुर के मामले के बारे मे, जयपुर के मित्रो के साथ विचार-विनिमय। बापू ने सारी स्थिति समझी। मित्रो को थोड़ा निरुत्साह हुआ, परन्तु उसकी जरूरत थी। सरदार से मिलकर उन्हे भी स्थिति समझाई व लडने के सिवाय अब दूसरा उपाय नही रहता, यह जोर देकर कहा। बापू से स्वीकृति व आशीर्वाद दिलाने के लिए भी कहा।

बारडोली, ५-१-३९

पू० बापू के साथ घूम —सरदार भी साथ थे। बापू ने पहले राजकोट के बारे मे व बाद मे जयपुर के बारे मे मेरी स्थिति, उत्साह व विचार समझे। मैने उन्हे आग्रहपूर्वक प्रतिबध तोड़ने के पक्ष की दलीलें व उसमे मुझे किस प्रकार मानसिक शाति मिल सकेगी, वगैरा कहा। बापू से भोजन के समय फिर थोड़ी देर व बाद मे दो बजे से मित्रो के साथ बातचीत। मसविदा बनाया।

पाटीदार जीन प्रेस मे आज जयपुर मित्रो के साथ पोक (हुरड़ा) खाया व आपस मे जयपुर-स्थिति पर विचार। मैने मेरी स्थिति बहुत ही साफ तौर से उन्हे बतलाई। इन सबो का आग्रह था कि "सब प्रकार की जोखम उठाकर भी लड़ाई लड़नी ही चाहिए। हम सब पूरी तरह से तैयार हैं। आपकी आज्ञा का पूरा पालन करेंगे, आप हमारे सत्याग्रह के नेता रहेंगे," वगैरा कहा।

वगैरा का मसविदा तैयार किया । प्रेसीडेंट कौंसिल आफ स्टेट के नाम प
तैयार हुआ, परन्तु देरी होने से रजिस्ट्री आज नहीं हो सकी। कल भेज
का निश्चय । सीकर के बारे मे व वर्तमान मे मैं क्या कर रहा हू, इसका भ
एक सार्वजनिक वक्तव्य तैयार किया ।
शाम को बापू के साथ घूमा, प्रार्थना के बाद थोड़ी देर उनके पास विचार-
विनिमय ।

बारडोली, ७-१-३९

बापू के साथ प्रार्थना । बापूजी को आज २२० तक ब्लड-प्रेशर हो गया।
लीलावती से बातचीत, बापू की स्थिति के बारे में विचार-विनिमय।
जयपुर-प्रतिबध के बारे मे सरदार व घनश्यामदासजी की राय का मैंने
थोड़ा इशारा किया ।
राजकुमारी ने जयपुर-सीकर की फाइल पढकर प्रेसीडेंट कौंसिल आफ
स्टेट के नाम एक ड्राफ्ट तैयार किया। बापू ने उसे सुधारकर ठीक कर
दिया । उसे सोमवार ता० ९ को बारडोली से भेजने का निश्चय हुआ।
प्रेसीडेट कौंसिल को प्रतिबध के बारे मे, बापूजी ने जो पत्र तैयार किया
था, जिसमे सुधार वगैरा किये गये थे, वह पत्र (अल्टीमेटम) आज छोटू-
भाई के मार्फत रजिस्ट्री द्वारा भेजा गया ।
शास्त्रीजी, हरिभाऊजी व शकरलाल वर्मा के साथ जयपुर लड़ाई की
रचना ।
बापू से दो बजे थोड़ी देर के लिए मिलना । प्रेस को वक्तव्य भेजा। ५ की
गाडी से बम्बई के लिए सूरत रवाना ।

८-१-३९

बान्द्रा उतरकर जुहू पहुंचे ।
केशवदेवजी, जीवनलालभाई, रामजीभाई वगैरा से मुकद आयरन व मुकुद
सन्स के बारे मे देर तक विचार-विनिमय ।

जुहू, ९-१-३९

सुबह घूमना—मणीलाल नानावटी व बालचन्द भाई से बातचीत,
हिन्दुस्तान हाउसिंग कम्पनी व जयपुर वगैरा के बारे में ।
जयपुर प्रजामडल व वहा की स्थिति के बारे मे, मदनलाल जालान व पो-

निवास बगडका, भालचन्द्र शर्मा वगैरा से बातचीत। पीरामलजी बगडका मिलने आये।

जयपुर-निवासियो की आज जाहिर सभा भूलाभाई देसाई के सभापतित्व मे ठीक हुई। भूलाभाई, हरिभाऊजी, हरिश्चन्द्रजी, शास्त्रीजी, मदनलाल जालान, श्रीनिवास बगडका, भालचन्द्र शर्मा वगैरा के सुन्दर भाषण हुए, सो सुने।

मुकन्द मस के बारे मे जीवनलालभाई से आखिर मे फैसला हुआ।

जुहू, १०-१-३९

हरिभाऊजी, हरिश्चन्द्रजी, शास्त्रीजी साथ मे सागरमलजी बियाणी सीकर से आये। उन्होने वहा की स्थिति सुनाई।

हठीसिंग की यहा जवाहरलाल की उपस्थिति मे कमला मेमोरियल की मीटिंग हुई।

गुलाबबाई को डा० पुरन्दरे को दिखाया। उन्होने साफ कहा कि गर्भ बिलकुल नही है।

नवाब फखयार जंग बहादुर की आख का आपरेशन करवाया। उनसे मिले, कल फिर मिलना है। हैदराबाद स्टेट की थोडी बातें।

जवाहरलालजी ने नीबू डालकर चाय पिलाई। बाते। मेहरअली वगैरा मिले।

मौलाना आजाद अपनी स्थिति कहने लगे। सभापति न बनने का कारण। मैने तो उन्हे बनने को कहा; अपनी स्थिति भी कही।

जैनाबेन रजबअली से बातें।

जुहू, ११-१-३९

धानचन्द्र भाई व मणीलाल नानावटी के साथ घूमना। जयपुर-स्थिति पर विचार-विनिमय।

केशवदेवजी नेवटिया से जीवन कम्पनी तथा बच्छराज कम्पनी वगैरा के सम्बन्ध मे बातें।

मदनलाल जालान, श्रीनिवास बगडका, केशवदेवजी, हरिभाऊजी, हरिश्चन्द्रजी, भालचन्द्र, सागरमलजी आदि से जयपुर की लडाई के बारे मे विचार-विनिमय।

नवाब फख्रयार जंग बहादुर से डागा अस्पताल में मिला। हैदराबाद की स्थिति पर बातचीत।

बच्छराज कम्पनी की सभा हुई। जीवन कम्पनी (जीवनलाल कम्पनी) का एग्रीमेंट-पत्र स्वीकार हुआ।

जयपुर से १२३ नम्बर से पीरामलजी बगड़का का टेलीफोन आया। आशा कम बताई।

चिरंजीलाल मिश्र को १७० नम्बर पर फोन किया। बातचीत हुई।

जुहू-बारडोली, १२-१-३९

दादर मे केशवदेवजी, प्रहलाद, हरिश्चन्द्रजी शास्त्री से जयपुर के सम्बन्ध मे बातचीत।

८।। की एक्सप्रेस से बारडोली के लिए रवाना, हरिभाऊजी व रामकृष्ण साथ थे।

बारडोली मे कल्याणजी भाई से बातें। वर्किंग कमेटी मे बैठना, सुनना।

प्रार्थना के बाद बापू ने मेरी मानसिक स्थिति के बारे मे पूछा। उन्होंने जो पूछा, उसका सच्चा व साफ जवाब दिया।

देवदासभाई से बहुत देर तक बातचीत, विचार।

बारडोली, १३-१-३९

बापू से मानसिक स्थिति के बारे मे थोडी बातें।

बारडोली के तार आफिस से केशवदेवजी को बम्बई फोन किया, जयपुर के बारे मे।

देवदासभाई व प्यारेलाल से मानसिक स्थिति वगैरा के बारे मे देर तक विचार-विनिमय।

सरदार वल्लभभाई को भी मानसिक हालत व कमजोरी की स्थिति का थोडा परिचय दिया।

वर्किंग कमेटी की चर्चा मे भाग लिया।

बैरिस्टर चुडगर का तार आया। कुंवर हरदयाल सिंह के बारे में टेलीफोन पर उनसे बात करनी पडी। एक घंटा वहां लगा।

वर्किंग कमेटी ने जयपुर के बारे मे प्रस्ताव पास किया। हरिजन के लेख की नकल पढी।

१४-१-३९

हरिभाऊजी साथ घूमते हुए बातें। बाद में प० जवाहरलाल से जयपुर स्थिति पर बातचीत, विचार-विनिमय। बापू व सरदार से, जयपुर के बारे में बातचीत।

जयपुर से पूर्णचन्द्र आये। उन्होंने वहां की स्थिति कही। उन्हें पत्र वगैरा दिये। प्रश्नों के उत्तर दिये।

हैदराबाद स्टेटवालों को बापू से मिला दिया व उनकी बातचीत भी करा दी।

जयपुर के बारे में तार, पत्र, फोन वगैरा किये।

राजकोट के बारे में श्री ढेबर, नानाभाई, जयंतीलाल, जीवनपुत्रा से बापू से व सरदार से जो बातचीत हुई व सुनी, उसमें भी थोड़ा भाग लिया।

बापू से थोड़ी बातें। देर बहुत हो गई थी।

१५-१-३९

सुबह पू० बापू से जयपुर व मेरी मन स्थिति पर थोड़ी देर बातें। बाद में सरदार से भी। श्री बैरिस्टर चुडगर नवसारी से मोटर से आ गये। उनसे बातचीत। सीकर रावराजा कुंवर हरदयालसिंह व जयपुर में सर बीचम सेंट जॉन से जो बातचीत हुई वह सब समझी। उन्होंने मेरे नाम एक पत्र लिखकर दिया, वह मैंने बापू को दे दिया। हरिश्चन्द्रजी बम्बई से आये, जयपुर गये।

सर आगा खां से जयपुर के मामले में देर तक बातचीत। बातचीत उन्होंने स्वयं शुरू की। मैंने उन्हें सर बीचम से चुडगर की हुई बातचीत का पत्र पढ़ाया। 'हरिजन' का अंक भी दिया। उन्होंने कहा कि उन्होंने जयपुर-महाराज से बातें की थी, फिर और करेंगे। मुझे बम्बई में मिलने को कहा।

पू० बापू से थोड़ी बातचीत। उन्हें चुडगर का पत्र ठीक मालूम हुआ। सीकर रावराजा का केस कमजोर है। अपनी लड़ाई में उसे नहीं मिलाने का निश्चय।

जुहू, १६-१-३९

जुहू पहुंचे। घूमते समय जानकी से बारडोली में बापू से व अन्य मित्रों से

जो बातचीत हुई, वह थोड़े मे कही। सन्तोक बहन से फोन पर बातें। रा
मे ८ बजे मथुरादास व केशव के सामने खुलासेवार बातें।
मेरी समझ में तो मामला निपट गया।
जयपुर के बारे में केशवदेवजी, मदनलाल जालान, श्रीनिवासजी बगड़का
से बात चीत, योजना।
सुव्रताबहन के बगले पर, जयपुर के बारे मे, पीरामलजी बगड़का से बहुत
देर तक बातचीत। उनकी वृत्ति देखकर उनके प्रति प्रेम व दया-भाव
उत्पन्न हुआ, मैंने उन्हे दिलासा दिलाया।
सर बद्रीदासजी गोयनका से जयपुर की स्थिति पर ठीक विचार-विनिमय।
बाद मे उन्होंने मिल के बारे में आदमी भेजा।
सुव्रताबहन से जयपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय, सहायता। मौलाना
आजाद व जैनाबेन से बातचीत।

१७-१-३९

मणीभाई नानावटी से जयपुर के सम्बन्ध में बातचीत। बाद मे केशवदेवजी,
मदनलाल वगैरा से भी।
मथुरादास, देवदास, महादेवभाई मिले व कल रात की बातो से सन्तोक-
बहन वगैरा को पूरा सन्तोष नही हुआ आदि दु:ख पहुचानेवाली बातें।
उनसे फिर मथुरादास के घर मिलना।
जयपुर के साहूकार मित्रो से चेम्बर मे मिलकर बातचीत।
हीराबाग मे—जयपुर के बारे मे सभा। राजा गोविन्दलालजी पित्ती
सभापति।
मैं बोला। ठीक बोल सका।
मारवाडी सम्मेलन मे जयपुर के कार्यकर्त्ताओं से देर तक बातचीत।

१८-१-३९

सुबह चि० केशव गाधी को फोन किया। बाद मे महादेवभाई, देवदास
आये। बातचीत, केशव को पत्र लिखा। एक प्रकार से दु:ख का अन्त हुआ।
श्री घनश्यामदासजी बिड़ला से जयपुर-स्थिति पर फोन से देहली बातचीत
की। उन्होंने वाइसराय से ता० २३ को मिलने का कहा। कलकत्ता आना
नही हो सकेगा। मुझे वहा बुलाया।

केसरबाई ने अपनी स्थिति व मनोदशा का चित्र कहा। उसे सात्वन
उसमे लोभ की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है, यह देखकर थोडा दुख ।
नर्मदा से मिलने-जुलने की दृष्टि से वह कलकत्ता रहना चाहती है।
बारडोली मे पू० बापूजी से व महादेवभाई तथा देवदास से जो बातें
उनपर पौनार मे जानकीदेवी से विचार-विनिमय। भविष्य में
मुजब सयम का निश्चय करने मे ही समाधान व उत्साह रह सकता
इत्यादि।

विनोबा से राधाकृष्ण को जयपुर-लडाई के लिए लेने का निश्चय। बु
के बारे मे विचार। विनोबा का उत्साह खूब था।

उमा ने इन्दू का पत्र व उसके जवाब मे उसने जो पत्र दिया, वह प
बताया।

नागपुर प्रान्तीय कार्य का विचार-विनिमय। काकासा०, किशोरलाल भ
जाजूजी से बातें।

महिला-आश्रम मे प्रार्थना। बाद मे जयपुर की स्थिति समझाई।

२१-१-३९

नागपुर रवाना। मदनलाल कोठारी, विट्ठल साथ मे। वर्तमान पत्र देखे
नागपुर तक गिरधारी से जयपुर के बारे मे बातें। पूनमचन्द बांठिया
नागपुर बैंक के बारे मे, तथा अम्बुलकर से नागपुर कांग्रेस सबधी बातचीत
नागपुर स्टेशन पर मौलाना आजाद सवार हुए सेकड मे। पूनमचन्द रांका
पन्नालाल, छगनलाल भारूका से, मौलाना को सभापति होना चाहिए, इस
विचार किया।

बिलासपुर से रामगढ़ तक मौलाना आजाद से सेकण्ड क्लास मे बातचीत।
रात मे चक्रधरपुर मे स्टेशन पर जयपुर के कुछ लोग आये। उठना पड़ा
और उनके लिए कुछ बोलना पड़ा।

बिलासपुर मे भी थोड़े लोग आये थे।

कलकत्ता, २२-१-३९

नागपुर मेल से थर्ड क्लास मे कलकत्ता पहुंचे। स्टेशन पर ठीक भीड़ थी।
लोग स्वागत के लिए आये थे। भागीरथजी कानोड़िया के घर ठहरे।
विचार-विनिमय, प्रचार-कार्य की व्यवस्था।

१ बजे कार्यकर्ता जयपुर के सम्बन्ध में मिलने आये।
सिक्खों के गुरुद्वारा में जयपुर के बारे में स्वागत-भाषण।
रात में हनुमानप्रसादजी पोद्दार के यहा जयपुर-सत्याग्रह में भाग लेने के बारे में विचार-विनिमय। ज्यादा लोग नही आ सके—विवाहो के कारण।
श्री लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार व उर्मिलादेवीजी से बातचीत। जयपुर-सत्याग्रह के लिए लक्ष्मणप्रसादजी की तैयारी मालूम हुई।

२३-१-३६

जयपुर-सत्याग्रह के बारे में विचार-विनिमय। कुछ जयपुर-वासी श्रीमन्तो के यहा सहायता के लिए गये। उन्हे समझाया। रुपये तो ये लोग देंगे, परन्तु इनका पूरा उत्साह न देख थोडा खराब लगा।
रामकुमारजी भुवालका के घर भोजन। वसन्तलाल मुरारका की लडकी व उनकी माता से व रामकुमारजी के भतीजे से बातें।
चि० पार्वती, श्याममुन्दर के घर बातें। श्याममुन्दर को सत्याग्रह में भेजने के बारे में।
श्री देवीप्रसाद डालमिया, रामकिशन डालमिया, दुर्गाप्रसाद खेतान, लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार, उर्मिलादेवी पोद्दार वगैरा से जयपुर-सत्याग्रह के संबध में ठीक विचार—बातें।
महेश्वरी भवन में सुभाषबाबू के सभापतित्व में जयपुर के बारे में ठीक उत्साहदायक सभा हुई।

२४-१-३६

जयपुर सगठन के सम्बन्ध में विचार-विनिमय।
सिद्धराज ढड्ढा से जयपुर-सत्याग्रह की चर्चा। उसने थोडे समय बाद तैयारी की रहा।
बिडलों के यहा भोजन, जयपुर की लडाई के बारे में बातें। सबो ने प्रेम व उत्साहपूर्वक सुना।
प्रभुदयालजी, सीतारामजी, भागीरथ जी, रामकुमार भुवालका, लक्ष्मीनिवास से जयपुर के बारे में विचार-विनिमय।
सरदार वल्लभभाई का तार आया। सुभाषबाबू व पट्टाभि के चुनाव के

बारे में। सुभाष के स्टेटमेंट का खण्डन ठीक करने की परवानगी। मौला आजाद से फोन पर बातें व सुभाषबाबू से बहुत देर तक बातें, उन्हें समझाने का काफी प्रयत्न किया, न खड़े रहने के बारे मे। कांग्रेस को हानि पहुंचेगी, साथ मे उन्हें भी। कई प्रकार से समझाया।
शाम को जवाब देने को कहा। दुःख पहुचा, नई चिन्ता। रामकिशन डालमिया से बातें। नागपुर मेल से वर्धा रवाना—टाटानगर में बहुत-से लोग आये।

वर्धा, २५-१-३९

हरिभाऊजी से जयपुर के बारे मे बातचीत।
मोहनलाल वाकलीवाल ने राजनादगाव की स्थिति समझाई।
नागपुर मे—वेंकटराम (डेली न्यूज वाला) मिला। ऐसोसिएटेड प्रेस का जयपुर का तार बताया। थोड़ा निरुत्साह। बिरदीचन्दजी वगैरा मिले।
वर्धा पहुचे। स्टेशन से सीधे बोरगाव। दरबारीलालजी ने सत्य आश्रम के कुए की नीव का मुहूर्त करवाया।
पूनमचन्द रांका से नागपुर प्रान्तीय कमेटी के बारे मे देर तक विचार-विनिमय। घटवाई, अम्बुलकर, गोपालराव भी थे।
जयपुर फोन किया। वहां की स्थिति समझी।
धोत्रे ने महिला आश्रम के बारे मे पत्र भेजा, विचार रहा।

२६-१-३९

जाजूजी, किशोरलालभाई से मिलना, बातें। सुबह प्रार्थना। गांधी चौक मे झंडा-वन्दन।
सेगाव मे भी झंडावदन हुआ, थोड़ा भाषण देना पड़ा।
मास्टर जवाहरमलजी से महिला आश्रम के काम के बारे में [illegible] के सामने बातचीत।
चि० रमा की सगाई चि० श्रीनिवास रुइया के साथ आज पक्की कर दी।
श्री कानूनगो, रेवेन्यू मिनिस्टर व पुरोहित मिनिस्टर व [illegible] आये। उनके साथ रात्रि-भोजन।
अनसूया के स्वभाव आदि के बारे में उनसे व अन्य [illegible] विनिमय। मैंने अपनी समझ कही।
रजिस्ट्रार कोर्ट में मैंने आम मुख्त्यार पत्र—कमल, [illegible]

चिरजीलाल, गगाबिसन को दिया। महिला आश्रम का दस्तावेज आज रजिस्टर नही हुआ। मा० शिक्षामण्डल की इमारत का सेल डीड रजिस्टर हुआ। मथुरादासजी मोहता, पुखराज वगैरा से बैंक के बारे मे बातें।
बाबा साहेब, घटवाई, अम्बुलकर से नागपुर प्रा० का० के बारे मे विचार-विनिमय।
स्वतन्त्रता-दिन मनाया गया। जयपुर-विदायगी का समारम्भ उत्साहजनक व भावपूर्ण हुआ।
मन्दिर मे उत्सव। शुभ मुहूर्त मे रात मे एक्सप्रेस से विदा। मन मे उत्साह।
अकोला मे पुरुषोत्तम झुनझुनवाला व सीता मिले।

बारडोली, २७-१-३९

जलगाव मे रिषभदास के घर आराम।
जलगाव मे सार्वजनिक सभा हुई, जयपुर की परिस्थिति पर भाषण।
अमलनेर-स्टेशन पर सभा। भाई प्रताप सेठ वगैरा आये। जयपुर-स्थिति पर भाषण। विदाई। रेल मे भविष्य के काम के बारे मे विचार-विनिमय। शालिग्रामजी वगैरा आये।
नन्दुरबार से—हीरालालजी शास्त्री, चिरजीलालजी मिश्र शामिल हुए। उनसे वहा की स्थिति समझी, मैने अपने विचार कहे।
बारडोली स्टेशन पर सरदार आये। बापू को व सरदार को सुभाष व मौलाना की बातचीत का साराश कहा।
बापू ने मसविदा तैयार करके सुबह देने को कहा।
बम्बई से १० बजे के बाद दामोदर का फोन आया। जयपुर सरकार व वहा के मुसलमानो मे मस्जिद के दरवाजे के बारे मे लड़ाई हुई। सात जने गोली से मारे गये। कई घायल हुए, इत्यादि। यही खबर श्री मुशी ने भी कही। विचार रहा।

बारडोली, २८-१-३९

सीकर के बारे के कागजात देखे। सरदार से जयपुर-स्थिति पर बातें।
बापू को रात मे टेलीफोन द्वारा प्राप्त जयपुर मे मुसलमानो व जयपुर-सरकार के बीच लड़ाई होने व उसमे सात आदमी गोली लगने से मारे जाने व कई के घायल होने के समाचार कहे।

इस हालत मे भी ता० १ का जाना निश्चय।
वापू से स्टेटमेंट बनाकर दिया, सबो को पसन्द आया।
वापू से सुबह घूमते समय जयपुर, मेरी मनःस्थिति, दीपक आदि के बारे मे वातें। वापू ने थोडे मे मनःस्थिति के बारे मे समझाया। मैंने भी कहा कि उत्साह का विश्वास तो होता है।
वापू ने शुद्ध सत्याग्रह के उदाहरण आदि दिये।
जयपुर सत्याग्रह कौंसिल की रचना, अन्य विचार-विनिमय।
महादेवभाई से दीपक के बारे मे बातचीत।
कान्ती पारेख ने अपनी हालत कही, दया व दुःख हुआ।

बम्बई, २९-१-३९

जुहू पहुचे।
मणीलाल नानावटी से घूमते समय जयपुर, बडौदा, राजकोट के बारे मे वातें।
पेरीनबेन, गोपीबेन वगैरा आईं। हिन्दी-प्रचार के बारे मे बातचीत।
और कई मित्र लोग आये। जयपुर के सम्बन्ध मे श्री उमादत्त नेमाणी ने काम करने का, खासकर रुपये जमा करने मे मदद देने का, निश्चय बताया।
मारवाडी विद्यालय मे वार्षिक उत्सव। सर पुरुषोत्तमदास ने जयपुर की लडाई की सफलता व मेरा स्वागत किया। ठीक बोले।
ईस्ट इडिया इमारत मे जाहिर सभा। बहुत ज्यादा भीड थी। ठीक स्वागत, ब्रेलवी सभापति।

३०-१-३९

रतलाम, कोटा, बयाना, सवाई माधोपुर, मथुरा, भरतपुर वगैरा मे जनता ने स्वागत किया।
रास्ते में—मदनलाल जालान, राधाकृष्ण बजाज, दामोदर, आबिदअली, मदनलाल कोठारी, सत्यनारायण सराफ आदि से जयपुर-सत्याग्रह के बारे मे विचार-विनिमय। थोडी देर ब्रिज खेली।
देहली पहुचे। स्टेशन पर स्वागत। पार्वतीदेवी डिडवानिया के यहां ठहरने की व्यवस्था। चि० रामकिशन आ गया।
हरिभाऊजी, हीरालालजी शास्त्री वगैरा से थोडी देर बातचीत।

३१-१-३९

घनश्यामदास, रामेश्वरदास बिड़ला से बातें। वायसराय के सेक्रेटरी से जो बातें हुई, वे उन्होंने कहीं। कोई आशा नहीं दिखाई दी, तो भी उनका आग्रह था कि अगर मुझे छोड़ दें तो, कुछ दिन बाहर रहना बहुत जरूरी है।

मर शादीलाल से बातें, प्रिंसेस प्रोटेक्शन एक्ट आदि के बारे में।

लक्ष्मीनारायणजी गाडोदिया व सरस्वतीदेवी से बातें, उन्होंने रुपयों की मदद देना स्वीकार किया।

प्रजा-मण्डल के कार्यकर्ताओं से देर तक विचार-विनिमय।

प्रेस-प्रतिनिधियों को मुलाकात दी। ठीक प्रश्नोत्तर हुए।

मृणालजी के घर स्वागत।

जाहिर सभा—ठीक हुई मानपत्र आदि। मेरा भाषण भी सुन्दर, प्रभावशाली व मुझे सन्तोष हो ऐसा हुआ। बिड़लों से मिलना।

जयपुर, १-२-३९

कर्ली पान किया। जानकी व कमल से बातें।

प्रार्थना। जयपुर के लिए स्टेशन पर बिदाई। कई मित्र व कार्यकर्ता लोग स्टेशन पर मिलने व बिदा देने आये। शुभ मुहूर्त, उत्साही वातावरण।

बहुत से प्रेस-रिपोर्टर साथ थे।

'स्टेट्समैन', रायटर, ए० पी० आदि के प्रतिनिधियों से रेल में बातचीत।

साथ सभी स्टेशनों पर लोग आते रहे। थोड़ा बोलना भी पड़ा। बांदीकुई में कुछ लोग गड़बड़ मचाना चाहते थे, पर नहीं मचा सके। जयपुर स्टेट के स्टेशनों पर ज्यादा साफ बोलता था।

बनारसी के साथ, कपूरचन्दजी, चिरंजीलाल अग्रवाल, मिश्र वगैरा आये, [illegible]।

[illegible] में खूब भीड़ थी, बहुत हार वगैरा पहनाये गये। स्टेशन पर ही [illegible]।

[illegible] जयपुर को जो रास्ता साफ बनाना चाहते हैं, आदि।

[illegible] के पास ही स्टेट की सुन्दर मोटर व मि० यंग साथ ही थे। मि० केनेडी रेलवे सुपरिटेंडेंट, मिस्टर यंग ने गिरफ्तार किया।

[illegible] के साथ रवाना।

सवाई माधोपुर वापस। वहां से फिर मथुरा के लिए रवाना।

मोह, मथुरा, आगरा, २-२-३९

सुबह करीब पांच बजे ठाकुर फूलसिंह पुलिस इन्स्पेक्टर ने र
दीवानचन्द, डी० आई० जी० से कहा कि ड्राइवर को नीद आ र
थोडा आराम लेना जरूरी है। इसलिए मोह डाक-बगले मे ठहरे।
सवा घटे सोया। मुह-हाथ धोया और बाद मे फिर मोटर से रवान
यहा भी पता नही चला कि ये कहा ले जा रहे हैं। बाद मे मालूम हुअ
मथुरा ले जाते है। कल रात-भर से, यानी जयपुर स्टेशन से जयपुर
की मोटर मे डी० आई० जी० व फूलसिहजी के साथ, वे जहा-जहा ले
वह सब मिलाकर करीब साढे तीन सौ मील से ज्यादा प्रवास हुआ। र
शिवदासपुर स्टेशन के पास याने सागानेर के आसपास के स्थान मे ले
तब तो यही मालूम हुआ और डी० आई० जी० ने भी साफ कहा था
अब आपको यही ठहरना पड़ेगा।

मथुरा से डी० आई० जी० वगैरा वापस जयपुर चले गये।

श्री हीरालालजी शास्त्री, हरिश्चन्द्रजी व हरिभाऊजी वगैरा गाडी मे ह
हो गये। उनसे बातचीत।

आगरा—लक्ष्मी की मा (जौहरीजी) के यहा ठहरे, आराम किया
हीरालालजी, हरिश्चन्द्रजी, राधाकृष्ण, हरिभाऊजी वगैरा से बातचीत
योजना। वर्धा, देहली को फोन।

आगरा, ३-२-३९

कपूरचन्दजी पाटनी, चिरजीलाल अग्रवाल (जयपुरवाले) से देर तक
बातचीत। परिस्थिति समझी व उन्हे कहा कि तुम लोग अपने को गिरफ्तार
कराना जल्दी शुरू करो।

चिरजीलाल मिश्र का स्टेटमेट नुकसान पहुचानेवाला था, मैंने खुलासा
किया।

जाट नेता हरलालसिंह, देवराज आदि से देर तक बातचीत।

जयपुर के मित्र वापस जयपुर गये।

कई जगह रात मे १२ बजे तक टेलीफोन करते रहना पड़ा। जयपुर सूचना
कर दी कि मैं कल रात को सीकर के लिए फुलेरा होकर जाने का प्रयत्न

करूगा। और भी जगह सूचना की।
घनश्यामदास व महादेवभाई ने कहा कि 'अभी और थोडे रोज नही जाना चाहिए। जयपुर कौसिल को पत्र देना चाहिए,' इत्यादि। पर मुझे पसन्द नही आया। बापू का तार आ गया कि तुम्हे जाना चाहिए। उससे मुझे सन्तोष हुआ। बापू को लगा होगा कि मैने देर क्यो की। परन्तु सारा हाल उन्हे मालूम होने से सन्तोष मिलेगा। आगरा मे जाहिर सभा हुई। ठीक थी।

आगरा, ४-२-३९

प्रयागनारायणजी वकील के घर धर्मनारायणजी (मैनपुरीवाले) के साथ भोजन। सुशील (राजा) लडका होनहार मालूम हुआ।

महादेवभाई का पत्र लेकर आदमी आया। पढकर चोट लगी।

जवाहरलालजी नेहरू, गोविन्दवल्लभ पत, काटजू, घनश्यामदास व महादेवभाई तथा वर्धा को दो बार फोन किया।

आखिर बापू की, मेरा मन हो उस मुताबिक करने की, इजाजत आ गई। सुख मिला।

जाट नेताओ से लडाई के प्रोग्राम की योजना व चर्चा। विद्यार्थियो से व कार्यकर्ताओ मे बातें।

भार्गवजी के यहा भोज दिया गया। आगरा के खास-खास आदमी आये थे। आज सुबह आगरा के दो सी० आई० डी० को बडे जौहरी ने पकडा, ठीक रौनक रही।

पुलिस अधिकारी माफी मागने आये। फोन मे ठीक कार्य हुआ। ऑफिस का मकान व छावनी का स्थान देखा।

रात मे ६॥ बजे की गाडी मे रिजर्व सेकड मे सीकर के लिए रवाना। बादीकुई मे डिब्बा कटने की शका हुई, पर नही कटा। इसी प्रकार रात मे जयपुर पहुच गये। साथ मे हरिभाऊजी, दामोदर, मदन, रामकृष्ण, चन्द्रभाल जौहरी, विट्ठल तथा वकील कपूर आदि थे।

जयपुर, ५-२-३९

जयपुर से हीरालालजी शास्त्री, कपूरचन्दजी, हरिश्चन्द्रजी आदि फुलेरा तक साथ मे आये। जयपुर मे मि० यग व अन्य अधिकारी स्टेशन के बाहर

मोटर वगैरा लेकर खड़े थे। फुलेरा में साभर से जनता ठीक आई। व्याख्यान। वहां से डिब्बा रीगस की गाड़ी में आकर लगा। स्टेटमेंट तैयार किया। रास्ते में ठीक स्वागत।

रीगस में भीड़ ज्यादा थी। जयपुर से मुझे गिरफ्तार करने स्पेशल ट्रेन, हथियारबन्द पुलिस व मिलिट्री के साथ ठीकरिया बावड़ी गई। ठीकरिया बावड़ी में डिब्बे में डी० आई० जी० आये और मुझे कहा कि आप गिरफ्तार हैं, डिब्बा वापस जयपुर जायेगा। और बातें भी की। मैं वहीं पर उतर गया और कहा कि मुझे तो सीकर जाना है। आप बलपूर्वक मुझे डिब्बे में डाल सकते हैं। इस पर उन्होंने याने डी० आई० जी० चक्रवर्ती व दूसरे अधिकारियों ने कहा कि इस बार आपको जयपुर के बाहर जाने की नौबत नहीं आयेगी। आपका मुकदमा आज नहीं तो जल्दी ही हो जायेगा। तब मित्रों ने भी आग्रह किया कि, जब इतना कहते हैं तो मान लेना ठीक है। चक्रवर्ती ने हाथ लगाकर उठाया। पर डी० आई० जी० ने गाडी चलने पर बातचीत का ढंग बदलना शुरू किया। जयपुर वेस्ट पर मि० यंग आये। उनसे बात हुई। उन्होंने कहा कि आपको जयपुर से बाहर नहीं भेजे जाने की व आपको कहा रखा गया है, यह सूचना मित्रों व घर के लोगों को देने की बात वाजिब है। मैं सर बीचम से बात करके आपके पास आता हूं। मुझे 'छपरवाडा' ले गये जो वहां से करीब ४५-५० मील है। थकावट व सिर-दर्द होने लगा।

छपरवाड़ा, ६-२-३९

सुबह करीब १।। बजे मि० यंग आये। डी० आई० जी० ने उठाया और कहा कि अभी यहां से चलना होगा। बाद में मि० यंग ने बताया कि कल जो दो बातें आपने कही थी, सर बीचम उनको नहीं मानते। अब मैं लाचार हूं। मुझे हुक्म मिला है कि अभी आपको यहां से बाहर भेज दिया जाय। मैं नहीं बता सकता कि किस जगह। बहुत देर तक बातचीत होने के बाद यह निश्चित हो गया कि सर बीचम ने मुझे जयपुर के बाहर निकालने का हुक्म दिया है। मैंने जाने से इन्कार किया और कहा कि आप बल-प्रयोग करके ले जा सकते हैं। इसपर पूरा बल-प्रयोग करके मुझे मोटर में डाला। मि० यंग की इच्छा बल-प्रयोग करने की नहीं थी, परन्तु मौका ऐसा ही

आ गया। मुझे वहा से डी० आई० जी० दीवानचन्द के साथ मोटर मे रवाना किया गया। थोड़ी रगड़ आई; श्वास १०-१२ मिनट तक जोर से चलता रहा। थकान भी मालूम हुई। बाद मे मुझे जयपुर लाये। वहा से ८६ मील दूर अलवर स्टेट मे या गुड़गाव मे या देहली मे छोड़ने का हुक्म है, ऐसा डी० आई० जी० ने कहा। मैंने कहा कि जयपुर के बाहर मैं अपनी खुशी से मोटर से नही उतरूगा। देर तक विचार करने के बाद उन्होंने मुझे जयपुर स्टेट मे वापस इस्माइलपुर चौकी पर लाकर बैठा दिया। चक्रवर्ती करीब २॥ बजे आये और कहने लगे, अब आपको जयपुर मे ही रखने का हुक्म मिला है। यहा से डेढ़-दो घंटे का रास्ता है। पर रास्ता बहुत लम्बा था। २॥। बजे रवाना होकर रात मे ८॥ बजे भाडौती पहुचे।

भाड़ौती (जयपुर), ७-२-३९

सुबह २ बजे मु० पु० श्री चक्रवर्ती ने उठाया और कहा कि मुझे हुक्म आया है कि आपको अभी यहा से ले जाया जाय। मेरे इनकार कर देने पर फिर बल-प्रयोग करके चक्रवर्ती व सिपाहियो ने मुझे मोटर मे डाला। वहा रास्ते मे चक्रवर्ती ने आर्डर पढकर सुनाया। उसकी नकल देने का कबूल करके फिर इनकार कर गया। भरतपुर व आगरा की सरहद पर चिकसाना कस्टम नाका, जो भरतपुर स्टेट का है, वहा पर मुझे जबर्दस्ती गाडी से नीचे उतारा। मोटर का न० १२३ था। थोडी रगड व बाये हाथ की बीच की अगुली मे चोट आई, जिसके कारण खून भी निकला। धोती व कपडो पर छीटे लगे। बाद मे वहा मुह-हाथ धोया। वहा से दो-तीन फर्लांग पर स्टेशन था। वहा मोटर गाड़ी का कोई बन्दोबस्त नही था। चि० रामकृष्ण को साइकल पर अछनेरा भेजा। मैं चिकसाना फ्लैग स्टेशन से रेल मे बैठा। स्टेशन-मास्टर गुजराती सज्जन था। अछनेरा व आगरा मे भीड, स्वागत। आगरा पहुचकर सब जगह टेलीफोन, तार किये, स्थिति समझी। ११ बजे करीब सोया। इन दो रातो व एक दिन मे मुझे करीब पाच सौ मील मोटर मे घूमना पड़ा।

आगरा, ८-२-३९

सरदार वल्लभभाई से छ. मिनट तक फोन पर बात चीत। जयपुर की स्थिति बतलाई, बाद मे श्री मुशी से भी फोन पर देर तक बातचीत हुई। दिल्ली मे

रामेश्वरजी बिड़ला से बातें। वह आज बम्बई रवाना हुए। बनारस में घनश्यामदास बिड़ला से फोन पर बातें। उन्होंने मुझे फिर से जयपुर स्टेट में न जाकर बाहर से ही संगठन का काम करने की सलाह पहले मुजब दी। पिलानी की ओर जाना भी उन्हें पसन्द नहीं आया। विद्यार्थी वगैरा में उत्तेजना फैलेगी। डा० गोपीचन्द से लाहौर फोन करके पंजाब-सरकार की नीति के बारे में भी पूछताछ करवाई। चन्द्रभाल जौहरी को जवाहरलालजी को खबर करने प्रयाग व लखनऊ भेजा। कार्यकर्ताओं से बातचीत। कपूरचन्दजी व हरिश्चन्द्रजी से बातें। दामोदर ने दिल्ली के बारे में सूचना दी।

आगरा में जाहिर सभा हुई। जयपुर के सम्बन्ध में हरिभाऊजी, कपूरजी, दामोदर, जौहरीजी (चन्द्रधर) और मैं बोले।

आगरा, ९-२-३९

सुबह मित्रों से विचार-विनिमय। रोगस होकर ता० १२ को पहुंचने का विचार। उसकी तैयारी। कानूनी प्रश्नों पर मित्रों से देर तक विचार-विनिमय होता रहा। दामोदर दिल्ली गया।

शाम को हिन्दुस्तान हाउसिंग के मकानात देखे, थोड़ा घूमा।

श्री उर्मिला (महिलाश्रम वर्धा वाली) वर्धा गई। उसके हाथ बापूजी, कमल व शान्ता के नाम पत्र भेजे।

वर्धा से फोन पर बापू का संदेश आया। जानकीदेवी स्वास्थ्य के कारण अभी नहीं जा सकेगी, ऐसा बापू ने कहलवाया।

१०-२-३९

चन्द्रधर जौहरी इत्यादि मित्रों से विचार-विनिमय।

दामोदर का दिल्ली से फोन आया व आदमी पत्र लेकर आया। जयपुर से फोन आया। मेरे प्रोग्राम का भार उनपर ही छोड़ दिया। वहां परसों बहुत जोरदार सभा हुई। हालत सुनकर सुख मिला।

हरलालसिंह, देशराज वगैरा मिलने आये।

डेडराजजी व सुलतानसिंह सीकर से आये। सारी स्थिति समझी। किसानों से तथा राजपूतों से किसी प्रकार की सौदेबाजी न करने की नीति स्पष्ट की। आंदोलन में अगर किसीको भाग लेना हो तो वह हमारे प्रोग्राम के

अनुसार बिना शर्त भाग ले, अन्यथा हम लड लेंगे।

रीगल का प्रोग्राम बदलने के कारण सिर थोड़ा भारी मालूम देने लगा।

बापू के नोट मे यग के बारे मे जो गलत खबर छपी, उस सबध मे उनको तार-पत्र भेजे।

हरिभाऊजी व राधाकिसन से देर तक बातचीत। स्टेटमेंट वगैरा तैयार किये।

११-२-३९

दामोदर देहली से आया। वहा की हालत व भूलाभाई से हुई बातचीत कही।

ओमदत्तजी व पालीवालजी से देर तक बातचीत। चन्द्रभाल जौहरी, इलाहाबाद व लखनऊ होकर आये। वहा की स्थिति सुनी। जवाहरलाल का पत्र पढ़ा, उन्हे पूरी स्थिति की जानकारी नही दी गई। थोडा बुरा लगा।

बम्बई से हनुमानप्रसादजी पोद्दार (कलकत्तावाले) व रामेश्वरदासजी बिड़ला का फोन आया।

राममनोहर लोहिया व चन्द्रभाल जौहरी से बातें। राधाकृष्ण व हरिभाऊ-जी को जो सूचना देनी थी, वह दी।

गुलाबबाई वर्धा से शाम को हरगोविन्द के साथ आई व ये लोग जल्दी ही मोटर से डेंगाजी व मदन कोठारी के साथ भरतपुर के रास्ते जयपुर रवाना हुए।

जौहरी, राममनोहर, ओम्जी, विट्ठल वगैरा आगरा कार्यालय की दूसरी मोटर से रवाना हुए।

मै, चिरजीलालजी मिश्र (दलपति) के साथ रात मे १०-२० पर प्रोफेसर शर्मा के घर से आगरा से जयपुर के लिए मोटर से रवाना। रात भर मोटर मे। बहुत कम सोने को मिला।

मोरांसागर, १२-२-३९

(दोसरी बार गिरफ्तार) आगरा से जयपुर २०० मील,

जयपुर से मोरांसागर १०६ मील,

आगरा से कल रात १०-२० पर श्री चिरंजीलाल मिश्र (प्रथम दलपति)

भजन, रामायण वगैरा।

आज का दिन शांति से कटा। यहां गांव नजदीक न होने से सामान आदि मिलने में कठिनाई होती है। भोजन वगैरा की भी अभी बराबर व्यवस्था नहीं हो सकी है। दाल-आटा वगैरा की व्यवस्था कल तक, सम्भव है, हो जायगी। अधिकारी व सिपाहियों का व्यवहार प्रेमपूर्ण है व इज्जत करते हैं।

१४-२-३९

रात में सिपाहियों की गड़बड़ के कारण नींद में थोड़ी खलल पड़ी। वैसे नींद सात घंटे से ज्यादा हो गई।

आज डेरे पर ही निवृत्त होकर घूमा, साथ में रामप्रसाद। साग, हरी मिर्च वगैरा लाये। जापानी व्यायाम किया। चर्खा।

भोजन में बाजरे की रोटी व छाछ का रायता मिला। दाल नहीं थी।

थोड़ी देर शतरंज। शाम को घूमकर आया। रामप्रसाद व जगन्नाथ साथ में थे।

प्रार्थना, भजन।

भोजन में मूंग की दाल, रोटी व दूध।

आज भी जयपुर से सामान, अखबार वगैरा कुछ भी नहीं आये।

आश्रम-भजनावली के सिवाय पढ़ने को कोई और पुस्तक नहीं थी।

१५-२-३९

रामप्रसाद के साथ मोरासागर की परिक्रमा की—करीब पांच मील। चर्खा। मस्तक व्यायाम। बाद में शतरंज दो बाजी।

जयपुर से रामसिंह १२३ नम्बर की मोटर लेकर आया। यंग सा० का पत्र, अखबार ता० १४ व १५ के 'हिन्दुस्तान टाइम्स', 'हिन्दुस्तान' व 'सैनिक' तथा सर्वोदय के सात अंक। यंग सा० के पत्र का जवाब हिन्दी में दिया। जानकी के नाम पत्र व वर्धा के लिए तार भी लिखकर दिया। रामप्रसाद व जगन्नाथ के साथ ये लोग वापस गये।

रात में देर तक अखबार पढ़ता रहा।

१६-२-३९

सुखराम हवलदार के साथ करीब चार मील घूमा।

जयपुर, व छुट्टनलाल की मोटर में मि० दामोदर व रामकृष्ण के साथ रवाना हुए। दूसरी मोटर मे राममनोहर लोहिया, चन्द्रभान जौहरी, विट्ठल व थॉमसजी थे। आगरा, मथुरा, डीग रोड व अलवर होते हुए बैराटनगर पहुंचे। वहां सु० पु० फूलसिंहजी ने करीब ३॥ बजे सुबह गिरफ्तार किया। आमेर में मि० यंग, आई० जी० पी०, स्पेशल मजिस्ट्रेट, पत्रकारों व पुलिस के दस्ते ने स्वागत किया। मि० यंग ने कहा कि इस बार आप स्टेट में ही रखे जायेंगे, आपको बाहर बिल्कुल नही भेजा जायेगा। फूलसिंहजी ने तो कहा कि अगर इस बार आपको बाहर भेजा जाये तो मैं नौकरी छोड दूंगा। मुझे चिरंजीलालजी मिश्र की मोटर से उतरवा कर मि० यंग ने अपने साथ बैठाया व जयपुर से रामगढ के जंगल के रास्ते से, दौसा-लालसोट होते हुए, करीब १०६ मील के चक्कर से, ११-२० बजे करीब, मोरांसागर पहुंचाया। मुह-हाथ धोया व थोड़ा नाश्ता किया। स्नान के बाद करीब २ बजे भोजन किया—मूग की दाल, रोटी व आलू का साग।

दामोदर व रामकृष्ण को वापस भेजा। विट्ठल आ गया। वह स्थान बहुत ही एकान्त व सुन्दर मालूम हुआ। मि० यंग ने कहा कि मुझे स्टेट प्रिजनर रखने का हुक्म है। मित्रों के पास (जेल में) नही रख सकते।
मुझे अपना रसोइया वगैरा रखने को कहा। पर मैंने इनकार कर दिया तथा बाहर से खाने का सामान वगैरा भेजने की भी मनायी कर दी।

१३-२-३९

रात मे नीद ठीक-ठीक आई। पर बीच मे झूठा संदेह हो गया कि रात को फिर कही ले जावें, इससे कुछ समय तक विचार रहा।
सुबह मैदान मे निपटना, बाड़ियो मे से सेंगरी व बैंगन, छः आने के लिये।
बाद में जगन्नाथ व रामप्रसाद आये। जगन्नाथ ने मशहूर मीणा डाकू पकडा था, उसका नाम भी जगन्नाथ है।
ठाकुर खुशालसिंह, पुलिस सब-इन्स्पेक्टर से आध्यात्मिक व सेवा आदि के संबंध में विचार-विनिमय।
चर्खा काता।
शाम को रामप्रसाद के साथ बन्द के ऊपर घूमा।

भजन, रामायण वगैरा।

आज का दिन शांति से कटा। यहां गांव नजदीक न होने से सामान आदि मिलने में कठिनाई होती है। भोजन वगैरा की भी अभी बराबर व्यवस्था नहीं हो सकी है। दाल-आटा वगैरा की व्यवस्था कल तक, सम्भव है, हो जायगी। अधिकारी व सिपाहियों का व्यवहार प्रेमपूर्ण है व इज्जत करते हैं।

१४-२-३९

रात में सिपाहियों की गड़बड़ के कारण नींद में थोड़ी खलल पड़ी। वैसे नींद सात घंटे से ज्यादा हो गई।

आज डेरे पर ही निवृत्त होकर घूमा, साथ में रामप्रसाद। साग, हरी मिर्च वगैरा लाये। जापानी व्यायाम किया। चर्खा।

भोजन में बाजरे की रोटी व छाछ का रायता मिला। दाल नहीं थी।

थोड़ी देर शतरंज। शाम को घूमकर आया। रामप्रसाद व जगन्नाथ साथ में थे।

प्रार्थना, भजन।

भोजन में मूंग की दाल, रोटी व दूध।

आज भी जयपुर से सामान, अखबार वगैरा कुछ भी नहीं आये।

आश्रम-भजनावली के सिवाय पढ़ने को कोई और पुस्तक नहीं थी।

१५-२-३९

रामप्रसाद के साथ मोरांसागर की परिक्रमा की—करीब पांच मील।

चर्खा। मानक व्यायाम। बाद में शतरंज दो बाजी।

जयपुर से रामसिंह १२३ नम्बर की मोटर लेकर आया। यंग सा० का पत्र, अखबार ता० १४ व १५ के 'हिन्दुस्तान टाइम्स', 'हिन्दुस्तान' व 'सैनिक' तथा सर्वोदय का सात अंक। यंग सा० के पत्र का जवाब हिन्दी में दिया। जानकी के नाम पत्र व वर्धा के लिए तार भी लिखकर दिया। रामप्रसाद व जगन्नाथ के साथ ये लोग वापस गये।

रात में देर तक अखबार पढ़ता रहा।

१६-२-३९

रघुनाथ हवलदार के साथ करीब चार मील घूमा।

आज फलाहार किया। एकादशी के रोज नही किया था, क्योंकि उन दि
फलाहार की कोई व्यवस्था नही थी।
'सर्वोदय' प्रथम अक पढ़ना शुरू किया।

१७-२-३६

प्रार्थना, भजन। सर्वोदय पढा।
सुखराम के साथ ७ से ६ बजे तक घूमा, करीब पाच मील।
चर्खा। जापानी व्यायाम।
आज मोरासागर तालाब का पानी नगर मे छोडना शुरू हुआ। घो
तक उसे देखा। फिर शतरज।
'सर्वोदय' प्रथम अक पूरा किया। दूसरा अक शुरू किया। देर तक
रहा।
डि० सु० पु० ने आज स्याही व घूमने की छडी की व्यवस्था की। तुर
दाल तथा बरतनों की व्यवस्था अभीतक नही हो सकी। लिफाफे, का
कार्ड वगैरा मंगाने को कहा।
आज चप्पल पर चप्पल चढ़ गई। इसकी वजह से जल्दी ही दूसरी मु
फिरी होने की सम्भावना है, ऐसा कहा गया।

१८-२-३६

प्रार्थना। सर्वोदय पढा।
पाच मील से ज्यादा घूमना हुआ, सुखराम साथ मे था।
चर्खा। सर्वोदय दूसरा अक पूरा किया। तीसरा अक शुरू किया।
शतरज। आज सागर का पानी, नहर मे पानी जाने के कारण, बहुत क
होता हुआ मालूम हुआ।
'सर्वोदय' अक ३, पृष्ठ ३२ पर आया.
"बापूजी १६०८ की दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह की लड़ाई मे जेल मे थे।
वहा उन्हें खबर मिली कि 'बा' ज्यादा बीमार हुई। बापू की उमर उस
समय करीब ४० वर्ष की थी। बापू ने लिखा कि 'तेरी बीमारी का तार
मि० वेस्ट ने दिया। मेरा हृदय व्यथित है। मैं रोता हू। परन्तु तेरी सेवा
के लिए वहा आ नही सकता। सत्याग्रह की लड़ाई मे मैंने अपना सब कुछ
अर्पण कर दिया है। कुछ भी बस नही...। मैं निश्चयपूर्वक कहता हू कि

अगर तुझे इस दुनिया से कही चल बसना पडे, तो मैं तेरे पीछे दूसरी पत्नी नही करूगा। ईश्वर पर दृढ़ विश्वास रखकर प्राण-विसर्जन करना।"

१९-२-३९

पाच मील घूमा। चर्खा।

निर्दोष दान और श्रेष्ठ कला का प्रतीक 'खादी' नामक लेख पढ़ा।

बापू के पत्र मे से पृष्ठ ३७, अक ३ मे यह आया .

१ अपने प्रति करुणा करके सब जीवो को समान मानकर उनपर करुणा करे और अपने किसी प्रकार के भी सुख के लिए जीव-हानि करते हुए काप उठे।

२. देह की उपेक्षा न करते हुए मृत्यु का जरा भी भय न रखे।

३. देह अत्यन्त धोखेबाज है, ऐसा मानकर इसी क्षण से मोक्ष की तैयारी करे।

२०-२-३९

आज सर्द हवा थी। थोडी-थोडी छीटे भी आ रही थी। सुबह तीन मील से ज्यादा घूमना नही हुआ। शाम को ठीक हो गया।

चर्खा—शतरज, 'सर्वोदय' का चौथा अक पढ़ा।

मि० यग व जानकी को पत्र लिखे।

२१-२-३९

यग सा० के नाम पत्र भेजा। जयपुर मे लाने के सामान की फेहरिस्त भवरसिंह को दी, पाच मील घूमा, रामदास जाट साथ मे।

चर्खा। सर्वोदय का चौथा अक पूरा किया। शतरज। दोपहर को भी चर्खा काता।

जयपुर से रामप्रसाद पत्र, अखबार व सामान लाया।

लालसोट से डाक्टर कन्हैयालालजी गुप्त आये। उन्होने वजन लिया; २०५ रत्तल हुआ, छाती वगैरा तपासी। कब्जी के लिए पेराफीन तेल वगैरा भेजने को कहा।

रात मे देर तक अखबार पढ़ता रहा।

वर्धा से खबर आई कि विट्ठल का भाई सालोड मे मर गया। विट्ठल ने कहा कि वहा उसके जाने की जरूरत नही। वह बहुत कष्ट पा रहा था।

अब जो दुःख करता सो मुक्त हो गया।

२२-२-३९

आज सवेरे भी नाई आया, बाल कटवाये। यह एक नाई होशियार नवयुवक है।

तार व पत्र रामनारायण के हाथ भेजे। अखबार देखने में ज्यादा समय गया।

रामनारायण, गुलाब, रामसिंह व यहां से हिरालालजी जयपुर गये।

थोड़ा घूमना भी हो गया।

बुरा ठाकुर का बगीचा देखा, उसमें अमरूद काफी थे।

चर्चा। गुमानसिंहजी ने 'हरिजन-सेवक' पढ़कर सुनाया।

२३-२-३९

साढ़े पांच मील घूमा, गढ़ के समीप तक। साग खाया।

भोजन ठीक तौर से हुआ।

चना व गेहूं का होला भूनकर खाया।

बंध पर घूमा। सागर का पानी निकल जाने से मछलियां बहुत ज्यादा परिमाण में मरी हुई देखीं और पक्षियों का हाल भी दयाजनक व शोचनीय हो रहा था। पारधी लोग सारस तथा अन्य पक्षियों को पकड़ने के लिए जाल डाले बैठे थे।

गुमानसिंहजी ने कहा कि सब परिस्थितियों का विचार करते हुए आपको यहीं संतोष मिल सकेगा। आप भी संतोष प्राप्त करने की कोशिश करें, इत्यादि।

चर्खा काता। अखबार पढ़े।

२४-२-३९

पैदल मोरध्वज नगर याने मोरा गये, रास्ते में बायां पैर दुखने लगा, तो भी धीरे-धीरे कुंड व मंदिर पर पहुंच गये। कुंड में साधारण गरम पानी था। वह बहुत ही साफ व निर्मल था। बहुत देर तक स्नान किया, मन प्रसन्न हुआ। मोरध्वज राजा की कथा सुनी। वापस लौटते समय आधा मील करीब पैदल, बाद में साढ़े तीन मील करीब मोटर में बैठे। आज यहां आने के बाद पहली बार मोटर में बैठा। पैर में दर्द न होता तो बैठने की इच्छा नहीं थी। मोरा कुंड पर गाय चमक कर आई; कुत्ते ने उसे धमका

दिया था। उससे चोट पहुंचती, पर ईश्वर ने बचा दिया।

२५-२-३६

कौंसिल आफ स्टेट जयपुर के मंत्री के नाम पत्र लिखकर श्री कुशलसिंहजी को दिया।

कुम्हारो की बारात देखी। गधो के ऊपर बींद व बीनणी, सात-आठ वर्ष की उमर के थे। बीनणी घूंघट किये हुए थी। गेस्ट हाउस के सामने से जाने लगे तो बीन व बीनणी को गधे के ऊपर से उतार लिया। कई गधे व मनुष्य थे।

कई दिनो से विचार हो रहा था कि वायसराय के जयपुर आने के बारे मे कौंसिल आफ स्टेट को पत्र लिखूं कि इस समय उनका आना प्रजा व राज्य के हक मे ठीक नही रहेगा। जयपुर राज्य मे भयंकर अकाल पड रहा है। दूसरी ओर वायसराय के स्वागत मे लाखो रुपयो का रोशनी आदि मे नाश होगा। मैंने तो यह भी सोचा कि वायसराय जबतक जयपुर मे रहे, उसके विरोध मे उपवास रखू। बाद मे कई कारणो से पत्र नही भेजा। मेहतरो के भजन व गायन सुने। नारायण मेहतर ने बहुत ही सुन्दर व भावपूर्ण भजन सुनाये।

२६-२-३६

भंवरसिंह राजपूत (मान बावडी, रेवाडी के पास बेगराजजी गुप्ता के गांववाला) के साथ जानकी व कमल को पत्र भेजा। मुलाकात वगैरा के बारे मे व रुपया जमा करने के बारे मे लिखा।

रामप्रसाद २४, २५ ता० के अखबार व सामान लेकर आया। नियमित अखबार नही आता, इस बारे मे उसे कहा।

डाक, तार व चिट्ठिया जो आई, वे देखी।

ता० २३ का राजेन्द्रबाबू का तार आज मिला, अन्य कई पत्र मिले। कमल को व केशवदेवजी को पत्र लिख भेजे। केशवदेवजी को तार भी लाहौर बसन्त के पते से भेजा। बापू को कैलनबैक की बीमारी के बारे मे वर्धा तार भेजा।

कलकत्ता के गवर्नर लार्ड ब्रबोर्न के मरने की खबर पढी, बुरा मालूम हुआ। पी० डी० शर्मा व बी० पी० शर्मा, शर्मा-बन्धु एरोप्लेन पायलट की मृत्यु के

समाचार पढ़कर दुःख हुआ।

२७-२-३९

गाजर का हलवा डा० कुशलसिंह ने बहुत प्रेम से बनवाया था, सो लिया। आज आगरा से यहां आने के बाद, सारे बदन में तेल-मालिश करवाई। दर्द कुछ कम मालूम दिया।

'क्षात्रधर्म', जिसे अजमेर से श्रीनारायणसिंहजी निकालते हैं, देखा। श्री केसरीसिंह जी (कोटावालों) की कविता सुन्दर व भावपूर्ण मालूम हुई।

एस० जे० टॉड (भरतपुरवाले) के जयपुर के दीवान होने की खबर छपी है। यह भरतपुर में १६३६ से कौसिल के प्रेसिडेण्ट का काम करते हैं।

ता० १ को किसान-दिन मनाने का कमेटी ने तय किया, ठीक जचा नहीं। जयपुर-दिन तो ता० १२ को ही हर महीने मनाना ठीक रहता, खैर...।

जयपुर के भविष्य के बारे मे रात में सोते हुए व सुबह खूब विचार मन में चलते रहे। खुद के भावी जीवन के बारे में भी मन में विचार होता रहा। एक प्रकार से भविष्य उज्ज्वल दिखाई देता है। दूसरी ओर से विचार करने पर अन्धकार ही दिखाई देता है। कांग्रेस मे सुभाष ने अपनी हालत बिगाड ली, उसे कलकत्ता मे, भविष्य के परिणाम की जो बातें कही थी, वे सब हो रही हैं।

२८-२-३९

जयपुर महाराज से मिलकर उन्हे भविष्य के बारे मे कहने की तीव्र इच्छा हुई।

वर्तमान बम्बई-घटना का विचार करने पर साफ मालूम देता था कि इन्साफ नही हो सका। महादेवभाई के व अन्य मित्रो के व्यवहार से चोट तो जरूर पहुची, परन्तु आगे मेरे लिए परिणाम ठीक निकलेगा, इसी एक आशा पर सहन करना व कड़वा घूट पीना उचित समझा। बापू के अनुयायियो में उदारता, सेवा एव प्रेम की वृत्ति तो दिखाई देती है, परन्तु न्याय (जस्टिस) का माद्दा कम रहता ही दिखता है। ऐसे विचार आये सो नोट कर लिये। मेरे अन्दर इतना नीचापन व हलकी वृत्ति इन वर्षों मे क्यो हुई! विचार करने पर कई बातें दिखाई दी, परन्तु साफ कारण समझ में नही आया।

मुझे विनोबा के सम्पर्क में अधिक रहना चाहिए। उसीसे मेरा मार्ग साफ व निष्कंटक हो सकेगा और जीवन में असली उत्साह प्राप्त हो सकेगा।

बापू के प्रेम का व उदारता का ख्याल करता हूं तो अपने को बहुत नीचा, नालायक समझने लगता हूं। बापू को समय बहुत कम मिलता है, इसलिए उनसे भी कई बार न्याय के मामले में गलतियां होती दिखाई देती हैं, परन्तु उनके मन में द्वेष, ईर्ष्या व किसीका बिगाड़ हो, ऐसी वृत्ति न होने से उसका परिणाम ज्यादातर ठीक ही आता है।

'सर्वोदय' का छठा अंक पढ़ा। चाक मिट्टी की खदान देखी। मीणों की गरीबी देख हृदय रो उठा।

'सर्वोदय' छठा वां अंक पूरा हुआ।

१-२-३९

किशोरलालभाई का आन्ध्र का भाषण ठीक था। कल से कुछ चिन्ताजनक खबरें मिलने का आभास मन में आ रहा है।

किशोरलालभाई लिखते हैं, "आत्मा की शुद्धि और जागृति के लिए हमें, आत्मा को कमजोर करनेवाले सब दुर्गुण छोड़ने चाहिए। जैसे—

(१) शराब, अफीम, चरस, गांजा, भांग आदि नशीली चीजों का त्याग, (२) व्यभिचार तो नहीं ही करें। अपने गृहस्थाश्रम में भी संयम रखें, (३) तेज व मसालेदार खुराक, उत्तेजक तमाशे (नाटक, सिनेमा, गान, नाच) आदि, तथा शिकार व क्रूर खेलों को न देखें, (४) चोरी न करें, (५) जूआ न खेलें, (६) झूठ न बोलें, (७) शरीर, कपड़े, मकान, आंगन तथा गांव साफ रखें, (८) हमेशा काम में लगे रहें, (९) अज्ञान को बुरा मानें व सदा ज्ञान की खोज में रहें, (१०) लालच न करें, दूसरों को हानि पहुंचाकर अपना लाभ न करें, (११) किसी का बुरा न चाहें, अपने पड़ोसियों आदि से प्रेम व उदारता रखें तथा (१२) नम्र और ईश्वर-परायण रहें।

दामोदर व राम ने भविष्य की विनोदी बातें तथा वकिंग कमेटी की रिपोर्ट आदि का हाल कहा।

पू० बापूजी राजकोट पहुंच गये। अब आशा है, वहां का मामला सुलट जायगा। जयपुर का भी २५ अप्रैल तक सुलट जाने की आशा है।

अखबार देर तक पढ़ना रहा। शास्त्रीजी वगैरा की भूख-हड़ताल व उनका समाधान हुआ, यह जानकर शान्ति हुई।

२-३-३९

'नवधान' व 'जयवन्त' केस के फैसले पढ़े।

बापूजी का राजकोट का वर्णन व स्टेटमेंट देखे। राजकोट का फैसला जितना जरूरी है, उतना ही उनका त्रिपुरी (कांग्रेस) में जाना भी।

३-३-३९

डेरे पर ही घूमा। मेहतर के बालकों से भजन व गायन सुने।

ता० २५-२ का 'हरिजन' पूरा पढ़ा। लेख 'A good Samaritan' Dr Chesterman वाला का पढ़ा।

प्रतिवर्ष मृत्यु—२ लाख स्त्रियों की मृत्यु प्रसूति में; १ लाख चेचक ३६ लाख सब प्रकार के बुखारों में; १० लाख कोढ़ी है व ६ लाख हैं। त्रावणकोर की स्थिति पूरी पढ़ी। लींमडी की पढ़कर तो आश्चर्य व हुआ। जयपुर पर बापू का छोटा नोट, सच्ची स्वदेशी, सद्गत गिरिजा वगैरा।

ता० १८-२ का 'हरिजन' पढ़ना शुरू किया। नई भजनावली में से दो भ पुरानी में लिखे।

श्रीकुशलसिंहजी ने तुलसी-रामायण सुनाई; यहा के मेहतर के लड़के बु ने भजन सुनाये।

४-३-३९

खड़िया मिट्टी की खदाने देखते हुए, गांव के पास से होते हुए, करीब पा मील से ज्यादा घूमा। करीब ११ बजे डेरे पर आया। रास्ते में एक मीणे ने यहा से खातरी बन्ध गाय का घी एक रुपया का सवा सेर लिया। एक छोटी हाडी ली। किसनलाल मीणा के लड़के ने पहुंचा दिया। चौकीदार मीणे व किसान मीणों का भेद व सामाजिक ऊंच-नीच का भाव समझा।

ाज दिन को सोये तो सपना आया कि वेकट तालाब मे डूब गया व बहुत मुश्किल से निकल पाया; मदन उसे निकालने गया तो उसका पता नही लगा।

'हरिजन' पढा; जानकीदेवी, मदालसा, उमा वगैरा के नाम पत्र लिखकर रखे।

विट्ठल का सिर दर्द करता था। कुशलसिहजी ने उसके सिर मे बहुत प्रेम से मालिश की। सज्जन पुरुष है।

५-३-३९

एक बूढा गूजर, ७० वर्ष का, सवत १९२६ की साल मे पैदा हुआ मिला। गाय-भैसे चरा रहा था, साथ मे छोटे-छोटे बालक थे। उससे बातें करके सुख मिला। उसने कहा, राजा के पाप से हम सबो की यह खराब हालत हो रही है, इत्यादि। वह तो गढवाले ठाकुर भवानीसिहजी को ही राजा समझता है। जयपुर महाराज का नाम तो इधर बहुत ही कम लोग जानते है। विद्या का प्रचार नही के बराबर है। बूढे को समझाकर एक रुपया होली के निमित्त दिया।

मेहदीपुर के बालाजी की जात्रा का किस्सा श्री कुशलसिहजी ने सुनाया। जयपुर राज्य मे भूत-प्रेत की बाधाओ के लिए यह स्थान प्रख्यात माना जाता है। पीरामलजी (बगडवाले) भी वहा ताजीम मिलने के बाद प्रसाद करने गये थे, इत्यादि। यहा से यह स्थान चौदह मील है।

जैनियो का महावीरजी का मेला व मीणो का व गूजरो का मेला चैत्र सुदी १५ को होता है। हजारो की सख्या मे स्टेट के बाहर के लोग आते है।

बाहर चबूतरे पर बैठकर कई ग्रामो की होली के दर्शन किये। प्रार्थना, सब छोटे-बडे लोगो के साथ मे भोजन—मूग, चावल, दूध व मालपूआ। मेहतर के तीन बालक भी भोजन करने नीचे बैठे। मुसलमान, राजपूत, जाट, गूजर, बनिये, कायस्थ साथ मे ऊपर बैठे।

जयपुर रियासत का भूगोल थोडा समझा।

६-३-३९

आज भी जयपुर मे पत्र व अखबार नही आये, याने ता० १-३ के बाद से कोई खबर नही मिली।

प्रेसीडेंट कौंसिल ऑफ स्टेट व श्री यंग के नाम पत्र लिखकर भेजने को दिए।
जानकी को पत्र व तार वर्धा व एक कार्ड राधाकिसन को आगरा भेजा।'
की नकलें वगैरा करने मे रात के सवा दस बज गये।
आज पहली बार चने की दाल का साग खाया (बराबर नही बन प
था)।
श्री कुशलसिहजी ने कहा—"गडवाले ठाकुर भवानसिहजी कहते थे
इधर बाघ आया हुआ है। आप मैदान जावें तो ख्याल रखें।" बाघ दे
की इच्छा हुई।

७-३-३९

बापू ने आज २-१६ पर फास्ट छोडा।
कल कौसिल प्रेसीडेंट, मि० यग व घर के लोगों को जो पत्र व तार लिखे थे
उन्हे आज सवेरे रामनाथ सिपाही लेकर गया।
घूमा, मेघासिह हवलदार साथ मे। रास्ते मे बाघ के खोज मिले। डेढ़ मील
पर एक गाव की गाय उसने कल मार डाली। छोकरो ने बाघ को देखा।
एक आदमी को साथ लेकर वहा की तराई मे बाघ की गुफा देखी। दूसरी
गुफा मे उसके पावो के ताजा चिह्न भी मिले। अन्दर से बास भी आती
थी; बाघ उसके अन्दर है ऐसा कहना पडा। उस गाव मे गये तो एक
बूढ़ा करीब ८०-८५ वर्ष का मिला। उससे बात करके उसे थोडी मदद की।
इन गावो मे यह चर्चा है कि "बन्दे पर एक सीकर-खेतडी का महाजन सौ
करोड का आसामी है। वह कहता है कि लगान बहुत ज्यादा है, कम किया
जाय। उसे यहा लाकर रखा गया है। हमेशा नगी मगीनों का पहरा रहता
है। किसी को देखने नही देते। उसके लिए खाने वगैरा का सामान रोज
जयपुर से आता है। हमारी भलाई की कोशिश करता है। बड़ा धर्मात्मा
है। हम तो उसका कहना करने को तैयार हैं, इत्यादि। हम पर बहुत जुल्म
हो रहा है।"
आज मन उदास व बेचैन रहा, स्वास्थ्य के कारण व जयपुर से साफ रोज
से कोई खबर न मिलने के कारण भी।
किशोरलालभाई का लिखा लेख 'सुवर्ण नी माया' पूरा किया।

८-३-३९

आज वर्धा में कमला को लड़की हुई, ६.४३ पर।

रात को जोर की खांसी आई। करीब १ बजे सांस (दम) घुटने लगा। कठिनाई से सांस आने लगा। लेमवा का काढ़ा विट्ठल ने बनाया, वह लिया, बाद में नींद आई। चौथा गूजर जो सत्तर वर्ष का है उसका घर, उसके खाने-बैठने की जगह देखकर आश्चर्य और उसके प्रति श्रद्धा व मान बढ़ा। उसकी स्त्री अन्धी हो गई है। वह भी सत्तर के करीब है।

रामप्रसाद क्लर्क ने मि० यंग का पत्र लाकर दिया व पांच तार व पत्र भी लाया। अखबार भी लाया। रात को ११॥ बजे तक पढ़ता रहा।

बापू के उपवास करने की व छोड़ने की व राजकोट का मामला सुलटने की खबरें पढ़कर सुख मिला। दो-तीन रोज में मन में जो निरुत्साह था, वह चला गया।

९-३-३९

मि० यंग के पत्र ता० ८-३ के पत्र का जवाब लिखकर व पांच तार व राजकुमारी, जानकीदेवी को पत्र लिखकर रामप्रसाद के साथ भेजा।

विट्ठल ने आज सवेरे करीब पांच बजे बघेरा या नाहर देखा।

१०-३-३९

'तिमिर मां प्रभा' (The light shines in darkness के अनुवाद) का पहला अंक पढ़ा, उसका मन पर ठीक परिणाम हुआ। कुछ बातें छोड़कर, (मेरी व्यक्तिगत कमजोरी आदि) ऐसा लगा कि यह पवित्र पुस्तक मेरे लिए ही लिखी गई हो, प्रायः बहुत-सी घटनाएं मिलती-जुलती हैं।

ठाकुर भवानीसिंहजी ने एक बघेरा (चित्ता) पकड़ा, उसे देखने गया। पकड़ने का मचान व व्यवस्था देखकर नया अनुभव मिला। बघेरे को जब छेड़ा गया तो उसने इस तरह घुड़की दी कि डर मालूम हुआ। अभी भी उसको देखा। वह परसों से पानी व खाना कुछ नहीं खाता है। घबराया है। दया भी आई। जानवर सुन्दर है।

भोजन के बाद मि० यंग आई० जी० पी० (करीब १२॥ बजे) आज प्रथम बार यहां आये और कहने लगे, "आपका पत्र मुझे रात को २ बजे पढ़ने को मिला और मैं डर-सा गया।" उन्होंने चिरंजीलाल अग्रवाल से व अन्य

खलील जिब्रान—सन १८८३ मे सीरिया देश मे माउट लेबनान मे [illegible]
और सन १९३१ मे उनकी मृत्यु हुई।

अखबार व चिट्ठिया आज जल्दी आ गईं। श्री यंग का पत्र ता० [illegible]
का पढ़ा। उसका जवाब लिखकर मेघाराम के हाथ भेजा। वि० [illegible]
भी पत्र लिखा। चर्खा सघ के चुनाव का फार्म भरकर भेजा।

लार्ड लिनलिथगो (वायसराय) ने राजाओं की सभा मे परसों [illegible]
दिया, वह पूरा विचारपूर्वक पढा। एक तरह से भाषण ठीक कहा जा [illegible]
है।

पडित जवाहरलाल का पत्र पूरा पढा।

बापू कल रात को जयपुर होकर दिल्ली गये होंगे। मेरा पत्र उन्हें [illegible]
जायगा, ऐसा यग ने लिखा है। मनुष्य-कर्त्तव्य पर विचार हुआ।
'सर्वोदय' पढना शुरू किया। बाद मे चर्खा काता, परन्तु बराबर नहीं [illegible]
सुस्ती रही।

१६-३-३९

आज कुशलसिंहजी से राजपूत, बनिये आदि का विवाद चालू हो [illegible]
राजपूत मनोवृत्ति का पता लगा। इतने शान्त व ईश्वर मे [illegible]
भी जब यह स्थिति है तो अन्य राजपूतों की तो बहुत ही विचारणीय [illegible]
इस प्रकार के विवाद से लाभ के बदले हानि व मनोमालिन्य ही [illegible]
कर है। भविष्य मे सावधानी रखने का निश्चय। अपनी भूल के लिए [illegible]
हुआ।

दाहिने पाव मे, जहा पहले कलकत्ता, बम्बई व वर्धा मे दर्द हुआ था, [illegible]
दर्द होना शुरू हुआ। डा० गुप्ता लालमोटवाले आये, [illegible]
[illegible] हुआ।

श्री यग सा० आये। उनसे देर तक बातचीत। उन्होंने कहा कि [illegible]
[illegible] आपको मोरासागर ही रखना चाहते हैं। उन्होंने यह भी कहा
कि आपने महात्माजी को पत्र भेजा उसका जवाब [illegible]
[illegible] उसी समय भेज दूंगा। वहां तक आप ठहरें। [illegible]
[illegible] है।

ता० ६ के नोटीफिकेशन। हरिश्चन्द्र शर्मा के बारे में चर्चा। उन्हें काफी पिलाई। आज प्रथम बार मैंने भी कॉफी पी।

१७-३-३९

भजनावली में से कुछ श्लोक, जो प्रिय मालूम हुए, उतारे। 'सर्वोदय' का आठवां अंक पूरा किया।

आज मूंग की दाल व मूली का साग बहुत ही स्वाद मालूम हुआ। साग तीन बार लिया। और भी लेने की इच्छा रही।

दो-तीन पत्र लिखकर रखे, अखबार देखे, वायसराय के जवाब में राजाओं की ओर से जाम सा० का भाषण पढ़ा। 'स्टेट्समैन' व 'मैंचेस्टर गार्जियन' की आलोचना पढ़ी, ठीक थी।

कुशलसिंहजी से कल के बारे में खुलासा बात कर भविष्य के रहन-सहन का स्पष्टीकरण किया।

आज के 'हिन्दुस्तान' में, पटियाला के ज्योतिषी शालिग्राम शर्मा ने ३१ प्रश्नों पर भविष्य जाहिर किया है।

१८-३-३९

भजन छाटना व लिखना। जयपुर राज्य का नूतन भूगोल पूरा किया।

'सुख आणि शान्ति' (पीस एण्ड हैपीनेस), मूल लेखक लार्ड एवरी, पी० सी०, का मराठी-अनुवाद (अनुवादक महादेव हरि मोदक) आज से पढ़ना शुरू किया।

आज घी न होने से बिना घी की रसोई हुई। कल से प्रायः मौन ही रहता है। चर्खा काता।

रात को ६ बजे रामप्रसाद श्री मग का, पू० बापूजी का सीलबन्द, चि० राधाकृष्ण का व अन्य पत्र तथा अखबार लेकर आया। पहले सब पत्र पढ़े, बाद में देर तक अखबार पढ़ता रहा। राजकोट बापूजी को ठीक हैरान कर रहा है। उन्हें फिर वापस राजकोट जाना पड़ेगा, आदि। बापूजी के स्वास्थ्य का विचार आया; परमात्मा सब ठीक करेगा।

यूरोप की हालत गम्भीर होती जा रही है। हिटलर खूब जोरों से बढ़ता जा रहा है। देखें, क्या होता है!

बापू की सूचनाओं पर लेटे-लेटे देर तक विचार, शान्ति मिली।

१९-३-३९

[illegible] नाम पत्र लिखे। नकलें की व रामप्रसाद के साथ [illegible]
भेजे।

[illegible] जानकीदेवी के नाम लिखे
[illegible] के पत्र में [illegible] का आया हुआ पत्र व उसका [illegible]
[illegible]तीफ व अकबर के

[illegible]

घूमना न होने के कारण व अन्य विचारो से आज एक ही बार भो[जन]
किया। शाम को दूध ही लिया।

'स्टेट्समेन' मे यूरोप का वातावरण ध्यान देकर पढ़ा। अपनी जीवनी [भी]
देखी; इसमें बहुत फर्क की आवश्यकता है।

कुशलसिंहजी ने भोजन के समय व बाद मे अलवर महाराजा व सर [आग]
की बुद्धिमत्ता के सस्मरण सुनाये।

मास्टर जवाहरमलजी के उर्दू के नोट समझने का प्रयत्न किया, कुछ लि[खे]
भी।

'सुख आणि शाति' पढ़ना शुरू किया।

२०-३-३९

यहा का मदिर पहली बार देखा। नीचे तक जाकर आया। बाद मे चबूतरे
पर थोड़ा घूमा।

'सुख आणि शाति' पढी। धूप मे पाव की मालिश।

श्री कुशलसिंहजी ने खुलासा किया कि मुझे, व्यक्तिगत तो किसी से द्वेष न
था और न रहेगा।

आज रात मे १२॥ बजे तक भोजन वगैरा हुए। १ बजे के लगभग सोया।

२१-३-३९

'सुख आणि शाति' पढता रहा।

कई दिनो से पेट साफ नही हुआ। यहा का पानी ठीक नही है। जाच करने
से मालूम हुआ कि यहाँ यह शिकायत प्राय. बहुतो को है। रात को सोते
समय अरडी का तेल आधा औंस लिया।

आज भी एक ही बार भोजन किया व शाम को दूध-पपीता लिया। सुबह

[illegible] से पेट की [illegible] थी। उससे भी पेट में थोड़ा भारीपन व बेचैनी मालूम हुई।

ता० १८ के बाद आज अखबार व पत्र आदमी के साथ आये। हिन्दुस्तान टाइम्स व [illegible] एक दो रोज बाद आया। हिन्दुस्तान, सैनिक, अर्जुन व जय-प्रजा, जयपुर सरकार ने बन्द कर दी। ता० १७-२ से स्टेट्समेन आना शुरू हुआ।

ता० २१-२ के सत्याग्रह के समाचार हिन्दुस्तान से पढ़ने से मालूम हुआ कि जयपुर सरकार अभी समझौते के लिए तैयार नहीं है। पूरा दमन करके देखना चाहती है।

[illegible] की स्थिति के समाचार रात को देर तक पढ़ता रहा।

२२-२-३९

आज से नया [illegible] चालू हुआ है, मन में विचार।

श्री कृष्णदासजी के साथ मोटर में मोरासागर गये। कुंड में देर तक स्नान।

[illegible] के [illegible] के साथ [illegible] के अन्दर [illegible]।

याद पड़ती है कि मैंने इसे २०-२५ वर्ष पहले भी पढ़ा था।
'मधुकर' (विनोबा का लिखा) शुरू किया।
साढ़े पांच के करीब चि० राधाकृष्ण, दामोदर, गुलाबबाई, हरगोविन्द, रामप्रसाद (पुलिस क्लर्क) के साथ श्री यंग का पत्र लेकर आये। इनसे मिलकर प्रसन्नता हुई। देर तक बातचीत, पूरी तरह से सारी स्थिति समझी। पू० बापूजी ने जिस उद्देश्य से सत्याग्रह स्थगित किया, वाइसराय से जो बातें हुईं, भविष्य में अगर सत्याग्रह चालू करना पड़े तो बापू की इच्छा, उसमें कठिनाई वगैरा का विचार किया। आज की मुलाकात खास थी।

२४-३-३९

राधाकृष्ण से देर तक बातचीत— मानसिक स्थिति तथा सत्याग्रह के संबंध में।
मि० यंग के पत्र का जवाब लिखवाया व सन्देश का जवाब लिखवाया।
नौ बजे करीब चि० राधाकृष्ण, दामोदर, गुलाबबाई, हरगोविन्द नाश्ता करके जयपुर रवाना हुए।
अखबार देखे। आज कुछ बेचैनी व शरीर में हरारत मालूम होने लगी।
शाम को दूध के साथ कुनैन ली।
कुशलसिंग रामकृष्ण परमहंस का जीवन-चरित्र पढ़ते रहे।
चि० राधाकृष्ण व श्री यंग की बात हुई। उसमें उन्होंने जयपुर स्टेट के सामने बड़ोदा का आदर्श, वर्तमान व भविष्य का, रखने की जो बात एक तरह से पहले ठीक समझी थी, वह अब मंजूर नहीं।
मि० यंग से बात करने में कोई लाभ नहीं दिखाई देता, उसे समझना भी एक बड़ा भारी प्रश्न हो रहा है।
पू० बापूजी की सत्याग्रहियों के बारे में नई प्रतिज्ञा व मेरे विचार नहीं दिये।
मेरे लिए तो यह सम्भव नहीं है। मेरी समझ में तो बापू के विचार और किसी के लिए भागकर जयपुर में ना और कोई मिलना कठिन हो है।

२५-३-३९

८-१० रोज के बाद आज रात भर पूरा ठीक आराम था। शरीर ठीक मालूम हुआ।

पाव मे दर्द कम मालूम हुआ। रात को खासी भी कम आयी, नीद ठीक आ गई।

'मधुकर' थोडा पढा। आज कई दिनो बाद भोजन मे रुचि मालूम हुई।

कल बेचैनी व हरारत मालूम होने के कारण कल शाम को व आज सुबह भी कुनैन ली। चर्खा काता।

जयपुर के साधु-सन्यासियो के नाम नोट किये, उनके बारे मे देर तक विचार। उनकी जीवनी सुनी।

श्री कुशलसिंगजी रामकृष्ण परमहस को जीवनी पढते रहे।

२६-३-३९

मेघाराम हवलदार के साथ घूमे। दो ढाणियो मे से एक मे एक मीणा बूढा बहुत दिनो से बीमार था। उसकी हालत देखी। एक रुपया दिया व थोडी खादी दी। मोनू गुजर के ऊपर से नार (बाघ) कूदा, उसे चोट लगी, वह भी देखी। आदमी बहादुर मालूम हुआ। उसने कहा, बघेरे से तो कुश्ती लडने को तैयार रहता हू।

श्री यग० सा० का पत्र लेकर भवरसिंह आया। पढने से आश्चर्य व दु:ख हुआ। इस प्रकार के पत्र का पहले तो जवाब न देना ही ठीक समझा। परन्तु भोजन के बाद फिर पढा तो जवाब देना जरूरी मालूम हुआ। उनकी दो दफे की मुलाकात का मुख्य साराश लिखा। नकल की। रात को डि० सा० को दिया। अब तो काफी समय तक यहा रहना होगा। ठीक है।

सारस पक्षियो के बहुत से जोडे देखे, इनका वर्णन सुनकर व देखकर आश्चर्य व शिक्षण लेने योग्य मालूम दिया। इनके बारे मे अधिक जानकारी करनी चाहिए।

अखबार देखे। स्त्री कैदियो को छोड दिया गया। बापूजी प्रयाग गये। सत्याग्रहियो के छोडने के समाचार पढे।

२७-३-३९

गूगा गुजर जो ८० वर्ष के ऊपर की उम्र का था, मिला। बहुत ही सज्जन मालूम हुआ। आखो से नही दीखता था। उसे जबरदस्ती एक रुपया दिया। एक बूढे गाडीया लोहार को एक दिया। गाडीया लोहारो का आदर्श बहुत ही उत्साह बढाने वाला है। ये लोग चोरी नही करते, भीख

नही मागते, पर नही बनाते, भूखे रह जाते हैं, परन्तु अपने प्रण पर रा
रहते है ।

कल रात को यंग सा० के नाम जो लम्बा पत्र लिखा था, वह रामनाथ
साथ आज जयपुर गया । जानकी को भी पत्र भेज दिया ।

जयपुर से अखबार आये, सुभाषबाबू का स्टेटमेंट पढ़कर बुरा मालूम हुअ
रात को चर्खा कातते समय श्री कुशलसिंगजी रमण महर्षि की जीवनी प
कर सुनाते रहे ।

'म्हणशर' शेखावाटी (जयपुर) में भयकर दुर्घटना के समाचार पढ़े । ठ
नारायणसिंगजी की अर्थी के चलावे के समय छज्जा टूट जाने से ।
स्त्रिया व पाच बालक तो उसी समय मर गये । बाकी कई घायल हुए
दु.ख हुआ ।

दिल्ली मे दो कालेज के विद्यार्थी-मित्रो ने आत्महत्या की, शोचनीय वा
वरण !

२८-३-३६

चर्खा काता । श्री कुशलसिंगजी ने रमण महर्षि का जीवन पूरा किया ।
दोपहर को चर्खा चलाते समय फिर कुशलसिंगजी ने रामकृष्ण परमह
की जीवनी पढकर सुनाई ।

ऊपर की पहाडी पर घूमने गये । गढ के ठाकुर मिले ।

जल्दी ही नौ बजे के करीब सो गये । आज अखबार वगैरा नही आये ।

२६-३-३६

प्रार्थना के बाद रामायण मे से रामजन्म का प्रसग पढा । फिर पैदल रेवाश
होते हुए मोराकुड । रेवाशा मे भी एक छोटा-सा सुन्दर कुण्ड है व एक
सुन्दर स्थान भी है । मोराकुड में देर तक स्नान । १२ बजे डेरे पर पहुंचे ।
भोजन के बाद रामनाथ अखबार लाया था । वे पढ़े, आराम, बाद मे
दूसरे रोज के जो अखबार आये, वे पढ़े ।

महात्माजी ने त्रावणकोर-काग्रेसवालो को ता० २७ के अखबार मे जो
सदेश भेजा है उसका साराश है—"Watch, Wait and pray." अ
मे कहा

The tremendous implications of non-violence, and I

माया है सो सेवा करने से मिल जायेगा। बूढ़े ने वह रुपया तो उधार वाले को वापस दे दिया और मरे दम तक भ्रम ढका रक्खा।

एक आदमी ने कहा कि लाट ने जयपुर महाराज से कहा, महाराज बापू शिवराज (स्वराज) तो हमको देना ही पड़ा, तो आप भी क्यों नहीं देते, दे दीजिये। ये लोग अपनी गद्दी तो छीनते नहीं वगैरा वगैरा।...बड़े लाट से मेरी (जमनालालजी की) बहन मिली है। लाट ने या गांधीजी ने जयपुर महाराज पर सवा लाख का दंड कर दिया, क्योंकि मेरा वजन उनकी देख-रेख में कम हो गया, आदि कई तरह की विनोदी अफवाहें—चारों तरफ फैल रही हैं। मुझे जिस प्रकार से रखा जा रहा है—महाराज की खास मोटर, संगीन सिपाहियों का पहरा, बड़े-से-बड़े आफीसर सभालने आते हैं, खाने-पीने का सामान जयपुर से आता है, इत्यादि चर्चा भी खूब फैली हुई है। कई तो मुझसे ही पूछ बैठते हैं कि बन्दे पर जिस करोड़पति सेठ को रखा है, उसके दर्शन कैसे हो सकते हैं ? इन बातों से ठीक विनोद व दुःख होता है।

कामठी का ब्राह्मण आ निकला। इसकी बहन अबारा में ब्याही है।

बागवान की चाची (मुसलमान) को चर्खा कातते देखा। मैंने भी वहाँ थोड़ा काता।

कुशलसिंगजी रामायण सुनाते रहे।

१-४-३९

रासना का मंदिर वगैरा देखा। वहां का महंत पहले ब्राह्मण था अब संजोगी माना जाता है। उसने जोगी स्त्री रख ली है। मंदिर बहुत ही गंदा कर रखा है। इसलिए जो कुछ देने की इच्छा थी, वह नहीं रही। एक गंगाबिसन नाम के बूढ़े बीमार मीणा को, जो ८० के करीब का था, एक रु० दिया।

बापू का ब्लड प्रेशर फिर बढ़ गया यह जानकर थोड़ी चिन्ता हुई। बापू दिल्ली में ही हैं।

राजकोट का फैसला ठीक हो गया, ऐसा अंदाज से मालूम होता है। बापू का ब्लड प्रेशर २७ मार्च को २२०-११२ था, राजकोट के उपवास के बाद १६०-६० हो गया था, जो ठीक समझा जाता था। कांग्रेस व देशी

रियासतो की चिंता के कारण ही ऐसा हुआ दीखता है।

इंदौर के वर्तमान महाराजा ने भी यूरोपियन मिस मार्गरेट लॉलर के साथ विवाह कर ही लिया। विनाशकाल आ गया दिखता है। अच्छा नवयुवक मालूम देता था, भाषण तो अच्छा किया है।

कलकत्ता हाईकोर्ट में भुवाल-केस की अपील चल रही है। स्त्री विभावती देवी व कुमार रामेन्द्रनारायण राय। यह केस दिलचस्प व बोध लेने योग्य है।

कालेज की लड़की कु. सुजाता सरकार (वय २१) का केस पढ़ा। यह समाज की वर्तमान शिक्षा की दुःखदायक हालत बतलाता है। चर्चा।

ता० ३०-३ के हिन्दुस्तान टाइम्स ने देशी रियासत—खासकर जयपुर पर नोट लिखा है।

सत्याग्रहियों को छोड़ने के बारे में श्री भूलाभाई ने श्री जिन्ना को ठीक जवाब दिया। सत्यमूर्ति ने भी।

ओम् मण्डली का प्रकरण पूरा समझ में नहीं आया।

त्रावणकोर में सत्याग्रहियों को छोड़ दिया गया।

२-४-३९

अपनी जीवनी प्राय पढ़ डाली, दूसरी लिखनी पड़े तो सुधार की बहुत आवश्यकता है। यह बात वाजिब मालूम होती है कि जीवित आदमी की जीवनी जहा तक बने, वहा तक न लिखी जाये।

मैं अपने दोषों का ख्याल करता हू तो शर्म, लज्जा व दुःख से मन भर आता है। मनुष्य को हमेशा सत्संग व उत्तम पुस्तकों आदि के पठन व विचार करते रहने की, हमेशा मरते दम तक, जरूरत समझनी चाहिए।

डिप्टी सुपरिन्टेण्डेण्ट आज उदासीन व चिंतित दिखाई देते थे। उनके साथ मन बहलाने को दो बाजी बाहर चादनी में चबूतरे पर शतरंज खेला।

३-४-३९

एक ब्राह्मण-स्त्री अपनी बहू को लेकर माताजी के यहा जा रही थी, घाटी पर मिल गई। उसका पति, जिसका नाम भोगीलाल है, बाजार चान्दोड़ में हलवाई का काम करता है। स्त्री बहुत ही सरल व भोली दिखाई दी। इसके लड़के

लाया है सो सेवा करने से मिल जायेगा। बूढे ने वह रुपया तो उधार वाले को वापस दे दिया और मरे दम तक भ्रम ढका रक्खा।

एक आदमी ने कहा कि लाट ने जयपुर महाराज से कहा, महाराज का शिवराज (स्वराज) तो हमको देना ही पड़ा, तो आप भी क्यों नहीं हमें दे दीजिये। ये लोग अपनी गद्दी तो छीनते नहीं वगैरा वगैरा।...वहां पर से मेरी (जमनालालजी की) बहन मिली है। लाट ने या गांधीजी ने जयपुर महाराज पर सवा लाख का दंड कर दिया, क्योंकि मेरा वजन उनकी देख-रेख मे कम हो गया, आदि कई तरह की विनोदी अफवाहें—बातें यहां फैल रही हैं। मुझे जिस प्रकार से रखा जा रहा है—महाराज की [illegible] मोटर, सगीन सिपाहियो का पहरा, बडे-से-बड़े आफीसर सम्भालने आते हैं, खाने-पीने का सामान जयपुर से आता है, इत्यादि चर्चा भी खूब फैली हुई है। कई तो मुझसे ही पूछ बैठते है कि बन्दे पर जिस करोड़पति सेठ ने रखा है, उसके दर्शन कैसे हो सकते हैं? इन बातों से ठीक विनोद बहुत होता है।

कामठी का ब्राह्मण आ निकला। इसकी बहन अवारा में ब्याही है। बागवान की चाची (मुसलमान) को चर्खा कातते देखा। मैंने भी वहां थोडा काता।

का नाम दुर्गा है। शायद ये लोग दान-भिक्षा नही लेते।

आज तीन दिन के अखबार एकसाथ आये; देखे, बापू ने जयपुर, रच-नात्मक कार्य व सत्याग्रह की शर्तों पर लिखा।

श्रीमती सरोजनी नायडू ने वायसराय के साथ पार्टी मे भोजन किया।

यूरोप की स्थिति। लखनऊ मे जो दगा हुआ, उसमे मुझे तो कांग्रेस वालो की गलती ज्यादा दिखाई दी। सभा के सभापति डा० सप्रू थे। सर श्रीवास्तव की भी चालाकी तो है।

वर्तमान दुनिया की हालत से भविष्य ठीक नही दिख रहा है; चारो ओर अशाति पैदा हो रही है।

४-४-३९

रास्ते मे कुछ मुसलमान मिल गये। उन्होने दो गायन सुनाये।

मोरागढ, जहा सब इन्स्पेक्टर रहते है, के कुएं का पानी अनाज हजम करने मे ठीक है। आज से वह मगाना व पीना शुरू किया।

पूर्णिमा थी। सो रात मे बाहर चबूतरे पर १२ बजे तक रहे; शतरज भी खेली।

कुशलसिंगजी ने मक्खी उडाने के बारे मे, चार मूर्खों के व्यवहार की सुन्दर वार्ता (कहानी) कही। मूर्ख नौकर व मित्र से बडी भारी हानि उठानी पडती है। इन्हे वार्ताए बहुत आती हैं।

५-४-३९

सामने की पहाडी की ओर जंगल मे घूमते रहे। झाड़ों पर भूरे, काले व लाल फूल (पलाश के) खूब फूले हुए देखे, सुहावने मालूम होते थे। पाच मील से शायद ज्यादा घूमना हुआ।

राजाजी की जेल डायरी, थोडी देर सुबह व शाम को पढ़ी।

चर्खा। ता० ३ के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' व 'स्टेट्समेन' रात मे पढ़े।

आज शाम को परमात्मा का चितन ठीक हुआ, मन को शाति व समाधान मिला।

अखबार मे—जयपुर के मुसलमानो ने हिजरत शुरू कर दी। ता० २-४ को लगभग ५५० मुसलमानो ने रिवाड़ी के टिकट कटाये। सात डिब्बे रिजर्व थे। कई हजार मुसलमानो ने कुरान की सौगध खाकर प्रतिज्ञा की

है कि गोनीबार का व मस्जिद का समाधान-कारक फैसला नही हुआ तो ता० २१-४ मे सत्याग्रह शुरू करेंगे ।
जयपुर अधिकारियों की मूर्खता की कमाल है ।
ता० १-४ का हिटलर का भाषण पढा । भाषण ठीक मालूम हुआ । ब्रिटिश सरकार को उसने ठीक खबर ली है । उसने कहा है
Speaking of those who divide the nations into virtuous and non-virtuous, Herr Hitler said, "For 300 years Britain acted unvirtuously and now in her old age she speaks of virtue"
उसी तारीख को मुसोलिनी ने कहा·
"If there is no sufficient space for us, some-one must give it to us," "neither printed paper nor ink will stop us, because above them are our will and our blood"

६-४-३९

घूमना, करीब चार घटे, अदाज सात माइल । लोडा की ढाणी तक, जहा ब्राह्मणो की गुबडी है, कुछ लोग चान्दोड गये हुए हैं, वहा रास्ते मे जाते-आते सात-आठ ढाणिया आई । एक बूढी व अधी ब्राह्मणी को एक रु० दिया ।
आज सारस पक्षी के पचासो जोडे खेत मे दाने चुगते हुए देखे । एक गूजर ने बहुत प्रेमपूर्वक आग्रह किया कि पावेक दूध पीलो ।
सालसोट से मूलचन्द नाई आया । बाल काटे । भोजन मे आज घी नही था । दामोदर ब्राह्मण से कहा कि वह आज से सामान मोरा से ले आया करे । भवरसिंह व रामनाथ सामान लाने मे बहुत ही लापरवाही करते हैं । कई दिनो से ये लोग घडी-घडी सामान के बहाने बामनवास मोटर ले जाते हैं और वहा दारू वगैरा पीते है, जिससे पैसा व समय बिगडने की सम्भावना है ।
श्री कुशलसिंगजी से कह दिया कि उपरोक्त दोनो सी० आय० डी० वालो का समय प्राय दारू पीने, तीतर वगैरा पक्षी मारने व पत्ते खेलने और सोने मे बीतता है । इनसे दूसरे अधिकारी—हवलदार व सिपाही भी डरते है, क्योंकि ये लोग ऊपर के अधिकारियो के मुह लगे है और उन्हे डर

लगता है कि ये झूठी चुगली या शिकायत कर देंगे।
कुशलसिंगजी ने रामायण सुनाई। चर्खा काता।
कुशलसिंगजी ने एक बादशाह की बोधदायक कहानी कही, जो [illegible]
भूंजे के यहां नौकर था। कुशलसिंगजी से गुरु-प्राप्ति पर भी ठीक [illegible]
विनिमय होता रहा।

७-४-३९

टेकडी की परिक्रमा की, पाच मील से ज्यादा घूमना हुआ, एक [illegible]
के नीचे आराम लिया, गूजरो की रिवाज समझी।
तुलसी रामायण का पाठ किया।
आज दूसरे कुएं से पानी मगाया था। पानी का स्वाद तो [illegible]
पेट को साफ करने मे मदद करता मालूम हुआ।
चर्खा काता। राजाजी की जेल डायरी पढ़ी।
कुशलसिंगजी ने, रात को लुहार के यहां काम करने वाले राजा की [illegible]
कही। एक दूसरी वार्त्ता भी कही। दोनों अच्छी थीं।

८-४-३९

आज रेवासी की घाटी से, ऊपर पहाड़ पर चढ़े। वहां से दो मील [illegible]
हरदेव नाम का एक बूढ़ा गूजर मिला, जिसकी उम्र ९०-९५ के करीब
होगी।
इसे आंख से दिखता नहीं, कान से सुनाई भी बहुत कम देता है। [illegible]
सरल व सीधा आदमी मालूम हुआ। इसके लड़के का नाम [illegible]
है। हरदेव के पास एक पांच-सात वर्ष की लड़की सेवा में रहती है।
गूजर बालक बघेरे वगैरा से नहीं डरते। बहादुर होते हैं।
हरदेव के लिए रोज नीचे से भोजन व पानी आता है।
यहां रहने से घूमने की हिम्मत व आराम ठीक बढ़ रहा है।
[illegible] के बालक ने सुन्दर भजन सुनाए।
[illegible] मेमोरियल के लिए दादा धर्माधिकारी को पत्र लिखा।

९-४-३९

[illegible]
[illegible]

नही था। दूसरा कुआ गुढ़ा के बाग मे देखा। हजारी (मीना लडका) बीमार था, वाड़ा मे उसको देखा। उसकी मा आखो की तकलीफ से बहुत ज्यादा पीड़ित है।

मेरे नाम कुछ पत्र गगापुर की डाक से आये है, वे मुझे जयपुर से इजाजत आने पर शायद दिये जायेगे।

भवरसिंह व रामनाथ की लापरवाही तथा दारू आदि के बारे मे डि० सु० (श्री कुशलसिंगजी) से बात करते समय क्रोध व गरमागरमी। मेरी विचार-पद्धति व इनकी विचार-पद्धति मे इस बारे मे बहुत ज्यादा फर्क है। मेरी यह समझ होती जाती है कि ये अपने नीचे के लोगो पर दूसरी धाक तो नही ही रख सकते, परन्तु नैतिक धाक भी नही रख सकते।

इनके कहने मे और करने मे काफी फर्क दिखाई देता है। इन्हे मेरे अदर दो दोष खास तौर से दिखाई देते है, एक तो यह कि मैं छोटी-छोटी बातो का ज्यादा ख्याल करता हू, दूसरे मुझे बडाई ज्यादा पसन्द है। हो सकता है, यह सच हो, परन्तु इस कारण इनकी योग्यता तो नही बढ़ पाती।

पान मे कत्था ज्यादा पड गया था, ऐसी मन मे शका पैदा हो जाने से, बिना कारण ही दूसरे पर अन्याय न हो जाय, इसलिए पान न खाया जाय तो अच्छा है, यह तय किया।

राजाजी की जेल डायरी पढी। मन को थोडा समाधान मिला।

१०-४-३९

'मधुकर' म पढ़ा—'स्वच्छंनचे इन्द्रिय आवरा।' घूमने, भवरसिंग व मिश्री साथ मे।

रेवाशा के बगीचे मे समाधि पर बैठ, परमात्मा का चिन्तन किया। रणजीत गूजर को मेरे फेरने की माला, उसके वृद्ध पिता हरदेव गूजर के लिए दे दी। आज रणजीत गूजर की मा मिली। बूढ़ी होशियार व बहादुर मालूम हुई। डूगर पर ढोर चरते है उसका भी महसूल लेना शुरू कर दिया, दु ख से यह फरियाद की।

एक बूढ़ा राम बगुस तमोली जिसका जन्म स० १९२० के आसपास हुआ होगा, कहने लगा कि इन अंग्रेजो ने रेल चलाकर सत्यानाश कर दिया। चारो तरफ से रवन्ने से भी पान आने लग गये। हम लोगो का रोजगार

मारा गया। राज्यवाले भी बहुत अन्याय करते हैं, महसूल बढ़ा दिया आदि।

भवरसिंग राजपूत सिपाही (सी० आय० डी०) ने होली के समय से जो लापरवाही का व अनुचित व्यवहार शुरू कर रखा था, वह उसने आज सब स्वीकार किया और रामनाथ की संगत से दारू पीना शुरू कर दिया, उस कारण सब अनुचित बाते हुईं, कोचर पहाड़ का किस्सा तथा अन्य बातें कही। उसने विश्वास दिलाया कि वह न दारू पियेगा, न इस तरह का कोई कसूर करेगा। उसे भली प्रकार समझाया; मन को समाधान दिया। मेरी भी आख मे पानी आ गया।

राजकोट का फैसला पढकर सुख व समाधान मिला। बापूजी फिर वाइसराय से मिलकर राजकोट गये।

जयपुर मे खादी प्रदर्शनी ता० ९-४ को भूलाभाई के सभापतित्व में होने वाली थी।

जयपुर से मुसलमान जा रहे हैं।

चर्खा कात रहा था तो डि० सु० कुशलसिंगजी ने एकाएक कहा कि कमलाबाई व सावित्रीबाई आपसे मिलने आई हैं, मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि कमला व सावित्री इस हालत मे कैसे आई होगी। पर बाद मे देखा तो बिजलालजी बियाणी की स्त्री सावित्रीबाई व लड़की कमला व भामोरवालो पानोड़िया व मदनलाल कोठारी रामप्रसाद के साथ आये हैं। सबसे मिल कर सुख मिला। बातचीत विनोद भोजन। ता० १० के अखबार भी आ

ज्यादा हुआ और मैं जाकर अन्दर बैठ गया। मेरी लडने की वृत्ति है, आदि उनके विचार हैं।

मैंने कहा कि उनकी वृत्ति व कार्य-पद्धति मे व हम लोगो के पद्धति मे काफी फर्क है। मैंने यह तो पहले ही कह दिया था कि जिनको असतोष हो, उनसे सहायता न ली जाये। मि० यग की बात का कोई मूल्य नही। परमात्मा सब ठीक करेगा, इसका मुझे पूरा विश्वास है।

ठीक अनुभव मिल रहा है। जयपुर राज मे खूब काम करना होगा।

चि० शान्ताबाई का पत्र आज मिला। चि० नर्मदा ने राधाकृष्ण के नाम जो पत्र लिखा वह पढा। चिन्ता व दु ख हुआ। परमात्मा इसे आरोग्य व सुखी करे। ऐसी हालत मे आपरेशन करना भी ठीक नही, भावी जो होने वाला है, वह होगा। चिन्ता करने मे क्या लाभ ! केशर प्रेम व मूर्खता के कारण दु खी होगी

११-४-३९

घर के लोगो को पत्र लिख रखे।

शतरज खेली। उमरावसिंह मेरे से अच्छी खेलते है।

उमरावसिंह अलीगढ जिले के राजपूत है। तोतारामजी राठी का ग्राम व इनका गाव एक ही है।

यहा यग सा० के पास जो क्लर्क है, वे होशियार मालूम होते है।

ता० ११ का जो अखबार आया वह भी पढा। बापू ने अपने लेख मे वायसराय से मिलना, राजकोट के बारे मे उपवास करना, त्रिपुरी नही जाना, फेडरल कोर्ट के चीफ जज से फैसला करवाना, दिल्ली इतने रोज न बैठे रहना, इत्यादि बातो का खुलासा किया।

उपवास के बारे मे बापू की नकल दूसरा कोई न करे तो अच्छा है।

सुभाष का स्टेटमेट; गरीब बेचारे सुभाष ! रहा-सहा सब भ्रम दूर होते देख बुरा भी लगता है, दया व क्रोध भी आता है।

रामदुर्ग स्टेट (जो कर्नाटक मे है) मे जनता की ओर से हुई भयकर हिंसा के समाचार पढकर दु ख व चिन्ता हुई। इस घटना का विचार करने पर तो एक बार स्टेटो का सत्याग्रह स्थगित किया गया, यह ठीक हुआ। अन्यथा रोष, द्वेष, उत्तेजना ज्यादा फैल जाती व बाद मे सम्भालना कठिन

ता।

१२-४-३९

आता का मेला, गमना के आते 'आवड़ा' में था। वन्दे से करीब पांच यह देखा।

पपुर राज्य की या इस जिले को चीज बहुत थोड़ी मालूम हुई। के बरतन व टोकरियां वगैर तथा थोड़ा लोहे का सामान भी था। यों विदेशी वस्तुएं बहुत ज्यादा थी। इस जिले की गरीब जनता- । के ठीक दर्शन हुए। उनके रीति-रिवाज भी देखे। गरीबों में भी तो उत्साही व आनन्दी देखकर शिक्षा मिली। पुरुषों की अपेक्षा ज्यादा बहादुर व मेहनती हैं।

ो मे मर्द व औरतें अश्लील गीत गाती हैं। मैं तो सुन ही नहीं नाच तो बराबर देखा ही नही। उसमे सुधार होकर अच्छे गीत व पूर्ण भजन-गायन आदि की प्रथा हो जाये तो ठीक हो।

त ग्राम धूला ठाकुर सा० का है, जो खेड़े के पास ही है। उन्हीके बैठे रहे। जल्दी वापस आने का इरादा था, परन्तु साथियो की नही थी।

ाना चाहता था, परन्तु उमरावसिंह ने राज्य के ऊंट देवता पर भेजा। प्रेमपूर्वक आग्रह करके ऊंट महाराज पर सामने के आसन । थोड़ी दूर चलने पर ऊंटजी एकाएक बैठ गये। सवार ने समझा दूसरे ऊंट को देखकर बैठ गया। सच बात तो यह मालूम देती थी देव मेला छोड़कर जाना बिलकुल नही चाहते थे। बाद में पीछे के र बैठा। ऊंट ढीला तो था ही, साथ मे इतने धीरे चलता था कि आदमी जो पैदल चलते थे वे आगे चले गये। मैं भी तंग आ गया।

१३-४-३९

ारण लड़का, जो करीब दस वर्ष का है, उसे मेले के लिए दो आने दिये थे, उसने हिसाब बताया—टोपी २, कठी ३ का १, कांच १, कड़ी १, पुड़ी (पापड़ी) १, लूजी (आलू) १। इस प्रकार उन हिसाब बताया।

अखबार व पोस्ट लाया। ता० १२-४ का अखबार देखा। राज-

कोट ठाकुर फिर गड़बड़ी कर रहा है, यह देखकर आश्चर्य व चिंता शुरू हुई। विश्वास होता है कि आखिर में सब ठीक हो जायेगा। बा के स्वास्थ्य का ठीक होने का समाचार मिला।

हैदराबाद स्टेट-कांग्रेस के करीब चार सौ कैदियों को ता० १०-४ को छोड़ दिया गया। यह एक तरह से ठीक हुआ।

यूरोप का वातावरण काफी अशांत होता जा रहा है।

इस वर्ष का भविष्य विश्व भर के लिए बहुत ही अशांत व चिन्ताकारक मालूम हो रहा है।

आज राष्ट्रीय सप्ताह का आखिरी दिन है, विचार आते रहे।

'सर्वोदय' देखना शुरू किया। विनोबा का प्रवचन ठीक नहीं छपा। कई पृष्ठ दुबारा लग गये। गांधीवाद-साम्यवाद के प्रश्न-उत्तर ठीक हैं।

रामदुर्ग स्टेट के संबंध में श्री गंगाधरराव देशपांडे का स्टेटमेंट देखा, अच्छे राजा के होते हुए भी ऐसी घटना हुई! आश्चर्य है।

चि० नर्मदा, गंगाविसन, शान्ता, मदू, जानकी देवी को पत्र लिखे।

१४-४-३९

घूमने गया, देवराम साथ में। चार, साढ़े चार मील के करीब। एक बूढ़ा ७० वर्ष का मिला। उसके यहां पाता हुआ, खाने को कुछ नहीं। एक रुपया दिया। राजाजी की जेल डायरी, जिसका गुजराती अनुवाद जुगतराम दवे ने किया, ता० २१-१२-२१ से २०-३-२२ तीन महीने की है। राजाजी तीन मास जेल में रहे, उस समय के उनके कई अनुभव विचारणीय हैं।

'मधुकर' आज ठीक पढ़ा गया। चर्खा भी शाम से पहले काता। उमरावसिंह के साथ आज शतरंज भी ठीक खेला गया, मन लगा।

उमरावसिंह ने कहा कि भंवरसिंह अपने काम से जयपुर जा रहा है, पत्र वगैरा भेजने हों तो लिख दें; सो पत्र लिखे। कल रात को जो पत्र लिखे थे वे उमरावसिंह ने अरजेंट भिजवाने को कहकर बामनवास जाकर पत्र जयपुर भेजकर आया। इन पत्रों में चि० नर्मदा के आपरेशन के बारे में नर्मदा व गंगाविसन को लिखा है, चि० शान्ता, मदालसा व उमा के प्रोग्राम के बारे में भी लिखा है।

विचारणीय व लाभकारक हैं।

दूध का प्रयोग शायद कल से बन्द करना पड़े। एनिमा वगैरा का यहां साधन नहीं व फल भी नहीं मिलते।

बालकों के लिए ठाकुर राजबहादुरसिंग का लिखा 'स्वामी रामतीर्थ' ठीक है। बालकों को व बड़ों के लिए भी उपयोगी है।

ठाकुर भवानीसिंगजी उमरावसिंग से मिलने आये थे।

"सर्वोदय' अंक ६ पृष्ठ ३२ गांधीजी ने कहा है—

'जिसने बंधुत्व की भावना को हृदयस्थ कर लिया है, वह यह नहीं कहेगा कि उसका कोई शत्रु है।"

१७-४-३९

हजारी मीणा के विवाह की तैयारी चल रही है। टीबड़ेवाला कुवा देखा, इसका पानी ठीक बतलाते हैं।

एक बूढ़े मीणा ने मेरी उमर पूछी, मैंने पचास कहे, तो उसने कहा कि मैंने तो १०७ गुनी है।

मेवाराम हवलदार ने रामनाथ सिपाही के दारू पीने की शिकायत के बारे में मुझसे पुछवाया। मैंने रामनाथ की इसकी लापरवाही, दारू पीने व शिकार वगैरा में वह और भवरसिंग किस तरह पागल हो गये थे, यह बतलाया। यह भवरसिंग का दोष बतलाता है, भवरसिंग इसका। श्री उमरावसिंग ने भवरसिंग को बहुत ज्यादा झूठ बोलनेवाला बताया। उन्होंने कहा कि वह राजपूत नहीं, नाई है। यह सुनकर आश्चर्य हुआ। बाद में उन्होंने एक-दो घटनाएं इसकी और भी बतलाई। इनकी राय में भवरसिंग से रामनाथ अच्छा है।

'सर्वोदय', अंत का ६ वां अंक, आज पूरा किया। डा० पट्टाभि ने प्रो०

विचारणीय व लाभकारक हैं।

दूध का प्रयोग शायद कल से बन्द करना पड़े। एनिमा वगैरा का यहां साधन नहीं व फल भी नहीं मिलते।

बालकों के लिए ठाकुर राजबहादुरसिंग का लिखा 'स्वामी रामतीर्थ' ठीक है। बालकों को व बड़ों के लिए भी उपयोगी है।

ठाकुर भवानीसिंगजी उमरावसिंग से मिलने आये थे।

"सर्वोदय' अंक ६ पृष्ठ ३२ गांधीजी ने कहा है—

'जिसने बंधुत्व की भावना को हृदयस्थ कर लिया है, वह यह नहीं कहेगा कि उसका कोई शत्रु है।"

१७-४-३९

हजारी मीणा के विवाह की तैयारी चल रही है। टीबड़ेवाला कुवा देखा, इसका पानी ठीक बतलाते हैं।

एक बूढ़े मीणा ने मेरी उमर पूछी, मैंने पचास कहे, तो उसने कहा कि मैंने तो १०७ सुनी है।

मेवाराम हवलदार ने रामनाथ सिपाही के दारू पीने की शिकायत के बारे में मुझसे पुछवाया। मैंने रामनाथ को उसकी लापरवाही, दारू पीने व शिकार वगैरा में वह और भवरसिंग किस तरह पागल हो गये थे, यह बतलाया। यह भवरसिंग का दोष बतलाता है, भवरसिंग इसका। श्री उमरावसिंग ने भवरसिंग को बहुत ज्यादा झूठ बोलनेवाला बताया। उन्होंने कहा कि वह राजपूत नहीं, बारी है। यह सुनकर आश्चर्य हुआ। बाद में उन्होंने एक-दो घटनाएं इसकी और भी बतलाईं। इनकी राय में भवरसिंग से रामनाथ अच्छा है।

'सर्वोदय', अप्रैल का ६ वां अंक, आज पूरा किया। डा० पट्टाभि ने प्रो० वि. बर्टमर का उतारा नीचे मुजब दिया—

'एक आदमी के साथ सावधानी से पेश आओ, जिसे न तो वैयक्तिक सुखों की रत्ती भर भी परवाह है न आराम, प्रशंसा या पद-वृद्धि की, बल्कि जो केवल उस काम को करने का निश्चय कर लेता है, जिसे वह ठीक समझता है। ऐसा आदमी भयंकर और दु:खदायी शत्रु है, क्योंकि उसके शरीर पर तो तुम आसानी से विजय प्राप्त कर सकते हो, पर उसकी आत्मा पर

तुम्हारा जरा भी कब्जा नही हो सकता।"

रात को देर तक ता० १५-१६ के अखबार पढ़ता रहा। चि० राधाकिसन का स्टेटमेंट ता० १६-४ के हिन्दुस्तान में छपा है। वह मेरी वर्तमान मनःस्थिति के खिलाफ पड़ता है। उसे पत्र लिखना है। राजकोट का रास्ता नही बैठा व यूरोप मे लडाई के बादल जोर के हो रहे हैं।

१८-४-३९

रामनाथ ने अपनी स्थिति, दारू पीने की, लापरवाही आदि की सफाई दी। समाधान तो नही हुआ, पर मैंने जो भवरसिंग को कहा था, वही इसे कह दिया।

अखबार देखे। नेतरामसिंग आदि किसान-मित्रों की हालत ठीक नहीं है, यह पढ़कर चिन्ता हुई।

चि० राधाकिसन के नाम पत्र लिख रखा।

डा० भवानीसिंगजी (गढ़वालो) से धार्मिक व सामाजिक रूढ़ि आदि पर विचार-विनिमय।

राजकोट मे ग्रामिये (भयात) लोगो ने बापू की प्रार्थना के समय भद्दा प्रदर्शन किया, यह पढ़कर दुख व आश्चर्य हुआ। मुझे तो अब विश्वास हो रहा है कि राजकोट ठाकुर का व दरबार वीरावाला का विनाश-काल नजदीक आ रहा है। वहा के मुसलमानो को लीग (जिन्ना) के लोगों ने भड़काया, मालूम देता है। राजकोट का मामला बड़ा पेचीदा बन गया है। दूसरी स्टेटो पर इसका बुरा असर पड़ेगा।

सर बीचम का चार्ज ता० १५-४ को मि० टॉड (भरतपुर के पोलिटिकल एजेण्ट) ने ले लिया।

कलकत्ता मे आल इंडिया की सभा हो रही है, भविष्य ठीक नहीं मालूम दे रहा है।

१९-४-३९

मेवाराम (जाट) हवलदार की बदली हो गई।
भला व ईमानदार दिखता है। उमरावसिंग (राजपूत) भी नया आया। वह होशियार व भला मालूम देता।
आज अन्न व नमक का [illegible] रोज है। [illegible]

मालूम होता है।

उमरावसिंह के साथ एक बाजी शतरंज, बाद में चर्खा।

चि० कमलनयन, जगदीश पोद्दार, चिरंजीलाल बडजाते, मदन कोठारी मिलने आये, व्यापार, इनकम टैक्स, जाने-आने के बारे में (गर्मियों में) सलाह-चर्चा की। मोराकुंड गये। वहा स्नान किया, इन सबों का भोजन हुआ। बाद में सब वापस गये।

डा० गुप्ता (लालसोटवाले) आये। वजन किया १६१ पौंड हुआ। डा० ने कहा कि कल से थोड़ा अनाज शुरू करें, पानी ठंडा पीकर देखें व फल तथा दही ज्यादा लें। उन्होंने और सब तपास कर कहा कि सब बहुत ठीक है, (याने पहले से भी ठीक है)।

अखबार ता० १८-१९ के आये, सो पढ़े। राजकोट की हालत खराब होती जा रही है। अखबार वालों ने बापू को कोसना शुरू कर दिया। प्रजा में भी भेद डाला जा रहा है। मुझे तो इसमें वहा के पोलीटिकल एजेण्ट व वायसराय की नीति पर भी सन्देह होने लग गया है, जयपुर के कारण भी।

२०-४-३९

टोडा व टुण्डिला जाकर आये। रास्ते में एक बूढ़ी (मीनी) नंगे पैरों से तेजी से जा रही थी। मुझे देखकर रास्ते से हट गयी। मैंने पूछा कि बुढ़िया, कहा जाती है? उसने गाव का नाम बताया और कहा कि मैं तेजी से इस-लिए चलती हूं कि पीछे दिन चढ़ने पर जमीन गरम हो जायेगी।

मैंने पूछा, जूती क्यों नहीं पहनती? (यहा प्रायः सभी स्त्रिया जूती पहनती हैं।) उसने कहा कि इस साल खेती पकी नहीं, जूती कहा से लेती? उसकी बातचीत, चेहरा, हिम्मत, रंगरूप देखकर मुझे 'मा' की याद आई। मैंने उसे रोक कर जूती के लिए एक रुपया दिया। मन-ही-मन व ऊपर से प्रणाम किया, आंख भर आई।

(कल चिरंजीलाल छोड़ दिये गये।) 'विविध-वृत्त' ता० १६ अप्रैल, पृष्ठ १८ में डा० श्री ना० वारवे (पूना वाले) का 'अर्धवट गांधी-विनोबा भावे' नामक लेख पढ़कर आश्चर्य व बुरा मालूम हुआ। इन्होंने पहले भी कुछ लेख लिखे हैं। मौका लगे तो उन्हें पढ़ना है। श्री हरीभाऊ फाटक ने इनकी

रहा था। इसका छोटा भाई, जो ७० के करीब का है, वह भी कष्ट पा रहा था। गणेश की दूसरी स्त्री खूब सेवा करती थी। लडका छाजू भी सेवा-भावी व सदाचारी है। गणेश भगत की हालत बहुत ही खराब है, तो भी स्वाभिमान है।

इसी गाव में एक जीवन (माली) जिसका जन्म स० १८६७ के आखिर मे हुआ, १०० के करीब का है, उससे मिले। उसकी मा सौ वर्ष के ऊपर की होकर मरी। एक ब्राह्मण भी यहा सौ वर्ष के करीब होकर तीन वर्ष पहले मरा। इस गाव मे बूढे बहुत हैं। यहा का वातावरण, धन्ना के कारण, अच्छा हो रहा है।

बुद्धि (मेहतर के लडके) ने इकतारे पर सुन्दर भजन सुनाये। अखबार आये। ता० २०-४ के अखबार मे राधाकिसन ने प्रजा मडल की ओर से ता० १२ जयपुर सरकार ने कमेटी कायम की, उसके विरोध मे स्टेटमेंट निकाला है। यह जल्दी निकलना चाहिए था।

२३-४-३९

मीणा कोलता तक जाकर आये, सात-साढे सात मील। मीणा कोलता में जयमाल मीणा सज्जन पुरुष है, उसके घर थोडा दूध लिया। पुष्पा मीणा ९० वर्ष के करीब का, अधा है। उसे एक रु० दिया। यहा बरोडे में रहने वाले गौड ब्राह्मण हैं।

गूजर कोलता के पुष्यु जमादार (चमार) की लडकी का विवाह था, उसने आग्रह किया तो वहा गये। बरातियों ने दो अच्छे भजन सुनाये।

कल से याने आखा तीज के, इतने ज्यादा विवाह इधर हो रहे हैं कि इस जगल मे भी चारो ओर सैकडो बीद की चहल-पहल हो रही है। ८ वर्ष से लगाकर २०-२५ वर्ष के बीद व ६ वर्ष से लगाकर १३-१४ वर्ष की बीनणिया।

ता० २१-४ का 'हिन्दुस्तान' देखा। बापूजी को राजकोट मे ज्वर हो रहा है। राजकोट तो बापूजी की पूरी ताकत ले रहा है। मि० जिन्ना व डा० आम्बेडकर भी जान लेने वहा पहुच गये हैं। श्री राजा (हरिजन नेता) ने भी मद्रास से हल्ला मचाना शुरू कर दिया, बापूजी ता० २६ को कलकत्ता पहुचने वाले है।

सुभाष व जवाहरलाल ता० १६-४ को बिगवाड़ी (झरिया) मे मिले, बातें। बहुत सी जगह आग से, मोटर दुर्घटना से—बगाल में बहुत हानि हुई। यह वर्ष बहुत ही भयंकर बीत रहा है।

In view of the grave international situation, Mr. Winston Churchill to join the cabinet ?

२४-४-३९

दरबारीलालजी की गीता देखी।

चर्खा व शतरंज। शाम को बाड़े तक घूमने गये। चबूतरे पर बैठे। दामोदर रसौया (दौसा वाले) को स्थाई नौकरी मिल गई। वह सुबह चला जायेगा, दूसरी व्यवस्था करनी होगी।

२५-४-३९

खेड़ा धुलाराबजी के जाकर आये; आधे घटे करीब खेड़ा में ठहरे। यहा अग्रवाल महाजनों के घर ज्यादा हैं। गगाधर छीपा जन्म अध है, जो पीस कर गाय, दुहकर व कुंदे मे से लोटा वगैरा निकालकर गुजरान करता है। उसे एक रु० दिया। ओंकार चमार ने भजन सुनाये।

जयपुर से अखबार आये ता० २३-२४ के। राजकोट का रास्ता जल्दी बैठने की कुछ आशा दिखाई देती है।

भवरसिंह सिपाही (सी० आई० डी०) की बदली हुई। वह आज दुखी था। उसे दुखी देखकर बुरा मालूम हुआ। जोकि यह बहुत ही झूठ बोलता है—यह जात का बारी होकर भी अपने को राजपूत कहता रहा, और भी कई ऐब हैं, तो भी इसके सुधरने की आशा हो गई थी। आज ही से इसने घूमते समय भजन सुनाना शुरू किया था।

जयपुर से यहां, डाक वगैरा के लिए, ऊंट आने की खबर आई है। इससे विश्वास हो गया कि अब यहा आराम से ठीक समय तक रहने को मिलेगा। कुशलसिंगजी से कहा है कि जयपुर से गायों के लिए पानी की व्यवस्था तथा ऊट पर बैठकर घूमने आदि के बारे में पुछवा लें।

२६-४-३९

जानकी देवी, उमा, पेरीनबेन, लक्ष्मणप्रसादजी, राजेन्द्रबाबू, राधाकिसन को भवरसिंग के साथ पत्र भेजे।

एक झाड़ के नीचे देर तक बैठे रहे व चूहों का खेल देखते रहे। शेजपुर मीणो के गाव में हनुमानजी के चबूतरे पर बैठे। पीपल व बोर के झाड बहुत पुराने मालूम हुए। छाया ठीक थी। नारायण मीणा पटेल मिला। मोटर में वापस आये। बहुत दिनो के बाद मि० यग का खानगी पत्र, रोसासे भेजा हुआ, मिला।

राजकोट का फैसला नही हुआ। बापू कलकत्ता रवाना हो गये।

वर्धा से कालूराम का तार मिला 'सावधान व चित्रा' केस की अपील जो उन्होंने की थी, खारिज हो गई, नीचे की कोर्ट का फैसला जो अपने पक्ष में था वही कायम रहा।

बिचारे कुशलसिंगजी की, काग्रेस व उसके कार्यकर्त्ताओ के बारे में, विचित्र कल्पना है। मुझसे पूछते थे आप कितना अलाउन्स लेते है? क्या काग्रेस के पास दो तीन करोड रुपये हैं, इत्यादि। लहरी व आरामी जीव हैं, आज-कल तो मस्त रहते है।

२७-४-३९

'जैकल व हाइड' पढ़ी उसके पढ़ने से मन में प्राय विचार आते रहे। भविष्य के जीवन के बारे में भी कई प्रकार के विचार आते ही रहते हैं। किसी जबरदस्त साथी (मित्र) के बिना सफलता कठिन है।

'गाधी सेवा सघ' की १९३८ की रिपोर्ट देखी। कई प्रकार के विचार मन में पैदा हुए।

२८-४-३९

हजारी मीणा से उसके विवाह के खर्च व रीति-रिवाज समझे। पाव में मालिश करवाई।

कई दिनों से हिन्दी अखबार नही आता है।

राजकोट के मामले पर बापूजी ने दुखित हृदय से जो स्टेटमेंट दिया, वह पढ़ा। एक बार तो बुरा भी लगा और दुख भी पहुचा, तथापि यह विश्वास है कि परमात्मा ने चिंता तो जल्दी ही कोई समाधान-कारक रास्ता निकल आवेगा। बापू को व सरदार को खूब कष्ट व दुख पहुचना स्वाभाविक है। सुभाषबाबू के कारण कलकत्ता का वातावरण खूब गन्दा हो रहा है। सरदार आल इंडिया का० क० की बैठक में नही जावेंगे। बापू का स्टेटमेंट देखा।

४२ दिन बाद कल डाक्टर ने आग्रहपूर्वक कहा कि वजन अब ज्यादा कम होना ठीक नही। चिंता बढ़ेगी। विट्ठल का भी यही कहना था, सो आज से ही दूसरी बार भोजन शुरू किया।

१-५-३९

चौरास्ता का मौका देखा। यहा पानी की जरूरत है। मैने इन्हें कहा कि बोरिंग करके देख लो, पानी लगता है तब तो दो सौ रुपये तक मैं दे दूगा। ज्यादा नही। अगर नही लगता है तो बोरिंग के तीस रुपये दे दिये जावेगे। पर दो शर्त रहेगी। पानी निकालने की किसी को मनाई नहीं रहेगी व गर्मियो मे खेल भरी रखना होगी, इसकी जिम्मेवारी कमेटी पर रहेगी।

मुस्लिम सतो का परिचय पढा।

जायरा मे बूढे पडित, आखातीज को जो मिले थे और जिन्होने कई उदाहरण व श्लोक कहे थे, वैदक भी करते थे, वे बिचारे चल बसे।

२-५-३९

एक बूढा मुसलमान बनजारा मिला। जायरा के बलाई ने भजन सुनाये।

श्री सुभाषबाबू ने त्यागपत्र दे दिया। राजेन्द्रबाबू काग्रेस सभापति बने। सारे समाचार पढकर दुख हुआ।

गगापुर स्टेट (उडीसा) मे गोलीबार से तीस आदमी मर गये, चालीस घायल हुए।

शिया-सुन्नी झगडा बढ ही रहा है। हैदराबाद के आर्य-सत्याग्रह के चार सत्याग्रहियो की मृत्यु जेल मे हो गई।

डा० खरे की मूर्खता से भरी हुई खुली चिट्ठी छपी।

जौहरी बाजार की मस्जिद के बारे मे ता० २९-४ को जयपुर सरकार ने दूसरा स्टेटमेट निकाला।

चर्खा। पत्र, अखबार व मुस्लिम सत पढे। पीरामलजी बम्बई गये।

यहा योही कम बोलना होता है, पर आज से विशेष रूप से कम बोलने का खयाल रखना है। इच्छा तो मौन लेने की ही होती है, परन्तु उसके लायक वातावरण हाल मे नही है।

कारक है। प्रजा-मंडल बाहर की संस्था के साथ अफीलियेट (सम्बद्ध) नही रखा जायगा। महाराज के लिए लॉयलटी (राजभक्ति) तब ही ली जा सकती है जब महाराज भी प्रजा की सेवा व उनके साथ न्याय करने की प्रतिज्ञा करें। बाहर की संस्था से तो खासकर मेरा ही सम्बन्ध आता है, अतः मेरे लिए यह शर्त नही मानी जा सकती है। कई उदाहरण दिये गये। उन्होंने सब नोट कर लिये। आखिर मे जाते-जाते भी कहते गये कि ईश्वर के लिये मैं उनकी बात कबूल कर लू। शायद जल्दी ही मोहनपुरा-जेल मे अन्य साथियो से मुझे मिलावेगे। बाकी के लोगो को छोड भी देंगे। मैंने तो उनसे कहा कि मैं अगर इतना नुकसान पहुँचाने वाला हू तो मुझे अकेले को ही रखे, औरो को छोड दें। मैंने सर बीचम व चक्रवर्ती के बारे मे भी कहा, इनके बारे मे कौंसिल को जो पत्र लिखा था, वह भी कहा। उनमे सत्याग्रहियो के बारे मे यह कहा कि किसी जिम्मेदार सत्याग्रही ने बहुत करके (मोहनपुरा मे) कहा बताते है कि हम तो यहा मौज उडाते हैं, खूब माल खाते है और मजा करते है। एक औरत (स्त्री) की कमी है, वह और ले आओ। मुझ तो इस बात का बिलकुल विश्वास हो नही सकता था। मैंने तो उन्हे कहा कि आप पूरी जाच करें। ऐसी बात हो नहीं सकती। मुझे तो लगता है कि सी० आई० डी० वालो ने बदनाम करने को यह रिपोर्ट दी होगी। मैंने कहा कि अगर यह साबित हो जाय तो वह व्यक्ति प्रजा-मडल मे बिलकुल नही रह सकता। मैंने झूठी रिपोर्ट वगैरा के अपने अनुभव भी कहे। जयपुर के अधिकारियो के बारे म भी कहा व सीकर की परिस्थिति व उस सम्बन्ध मे मैंने जो काम किया, वह भी बताया।

चर्खा काता। 'मुस्लिम संत' पढ़ी।

५-५-३९

दरबारीलालजी का 'निरतिवाद' पूरा किया। ठीक मेहनत करके बुद्धिमानी के साथ लिखा गया है। अब 'सर्वोदय' पढ़ना शुरू किया। गढमोरा के दोनो भाई जो पडित वैद्य व ज्योतिषी है, आए। बडे भाई सज्जन पुरुष मालूम हुये।

६-५-३९

गढमोरा के पडितजी को 'रमण महर्षि' व 'रामतीर्थ' पढ़ने को दिया।

बागवान व उसके लड़के व स्त्री की तकरार का किस्सा सुना।
नारायण मेहतर ने भजन सुनाये व लिखाये।
श्री कुशलसिंगजी के पास से उर्दू सीखना शुरू किया। चर्खा काता, मुस्लिम संतो के चरित्र पढ़े।
श्री भवानीसिंह जी व प्रभूजी (लालसोट के ब्राह्मण) मिले। प्रभूजी मस्त-राम हैं। उनसे चिंतन व विचार-विनिमय।
मुस्लिम संत तपस्वी जुन्नेद ने कहा है कि—"ईश्वर के आश्वासनों की कथा-वार्ता तो ऐसी असाधारण फौज है, जो दुर्बल को बलवान और निराश को आशावान बनाती है। कुरान शरीफ मे भी कहा है कि 'ऐ मुहम्मद! तुम्हारे आगे पूर्वकाल के साधु-सन्तो का दर्शन इसलिए किया जाता है कि तुम्हारा मन बलवान, आशान्वित और तेजस्वी बने।"

७-५-३९

जयपुर सरकार ने सत्याग्रहियो को छोडना शुरू कर दिया है। राजकोट का रास्ता नही बैठ रहा है। वृन्दावन (चम्पारन) मे दिया बापू का भाषण पढा।
नाथू खण्डेलवाल (मोरावाला) आया। उससे जायरा कुए के बारे में बातें। वह घूम-फिर कर कुए बनवाता है। उसे एक रुपया जूतो के लिए दिया।
भवरीलाल (प्रभूजी) सनाढ्य ब्राह्मण (लालसोट वाले जन्म सं० १६६२) के बाप का नाम रामकुमार; दादा का नाम रामनाथ, भाई कन्हैया, उमर करीब २० वर्ष। रामलीला मे काम करता है। भवरया (प्रभूजी) के माता-पिता छोटी अवस्था मे चले गये; दादा रहे। दमे की बीमारी १०-१२ वर्ष की उमर मे हो गई; विवाह कर दिया गया, स्त्री नही आई; गैरचलन हो गई। एक महाजन ने धोखा दिया, रुपया जेवर खतम हुआ—व्यापार के नाम से। छोटे भाई कन्हैया की स्त्री उससे बड़ी उम्र की थी। गंगापुर के एक मुसलमान ने उडाई; मुकदमा चला। बाद मे जयपुर के आर्य समाज ने उसका दूसरे से विवाह कर दिया। भंवरय, (प्रभू) ने ठीक सगत को मालूम देती है। वह बरेली मे पाच वर्ष रहा।

८-५-३९

तूफान इतने जोर का था कि बाहर बैठकर प्रार्थना करना कठिन हो गया। घूमना सम्भव ही नही रहा। अबतक ऐसा तूफान रात-भर व दिन मे भी पहली बार देखा।

दाहिने गोडे मे दर्द वैसे ही रहा, कम नही हुआ। अगर यह दर्द नही गया तो पूरी तकलीफ हो जायेगी। यहा तो किसी प्रकार के उपचार का साधन नही है। वैसे एक प्रकार से तो ठीक है।

चि० राधाकिसन को महत्व का पत्र लिखा। विश्वनाथ वायदे, मोहनी केडिया को पोस्टकार्ड लिखा।

उर्दू पढना, चर्खा, 'मुस्लिम सत' मे यूसुफ हुसेन, अल हुसेन नूरी बगदादी, हुसेन मन्सूर इन तीनो सतो का जीवन-चरित्र पढा। मन्सूर का चरित्र पूर्ण सत्याग्रही जैसा था। इन सब सन्तो के जीवन मे अहिंसा व सत्य कूट-कूट कर भरा हुआ है।

९-५-३९

प्रार्थना के बाद चबूतरे पर बैठे-बैठे एकाग्र विचार, बाद मे थोडा नीचे जाकर धूडीवालो के बगीचे तक घूमना। आज दर्द थोडा कम मालूम दिया, पाच मील घूमा। पानी भी खीचा, रामनाथ साथ मे।

मदन कोठारी ने जो दो सौ रुपये भेजे, उसकी पहुच व राधाकिसन को जो पत्र कल लिखा था, वह उसे भेजा और राधाकिसन के पास पहुचाने को लिखा।

काग्रेस की रसीद पच्चीस हजार की आई, उस पर जे० बजाज सही करके केशवदेवजी के पत्र मे भेजी। कुशलसिंगजी (डी० ई०) से कहा कि जयपुर मे रजिस्ट्री करने को लिख दो। उन्होने कहा कि जयपुर वाले परवाह तो करते नही, कल उन्होने रजिस्ट्री नही की व जोखम हुई तो मुझे साफ झूठ बोलना होगा। हमारा पुलिस का नियम यह है कि अपने ऊपर या अधिकारी पर जोखम या जवाबदारी आती हो तो झूठ बोल देना। इतने भले आदमी की भी यह हालत देख कर विचार हुआ। चोट पहुची।

कुशलसिंगजी को समझाकर प्रेमपूर्वक कहा कि आप काग्रेस की अनुचित टीका न किया करें। अगर करने की इच्छा है तो उसे पहले पूरी तरह से

समझ लेना चाहिए। काग्रेस में बड़े-बड़े महापुरुष, त्यागी, सेवाभावी सज
हो गये है। उन्हें भला-बुरा कहने से क्या लाभ, इत्यादि समझाया। आखि
में इन्होने स्वीकार किया कि मैं समालोचना नही करूंगा। मैंने कहा
कोई भी हिन्दुस्तानी, जिस सस्था के प्रताप से आज लोग मनुष्य समझे ज
लगे व थोड़ा सिर ऊचा हुआ है, व उसीके जरिये भविष्य मे भी भा
को लाभ पहुचना संभव है, उस काग्रेस पर जब अनुचित टीका या आरो
करता है, तब मुझे चोट व दुःख पहुचता है।

१०-५-३९

कुशलसिंगजी के साथ ग्यारह पीपा पाणी खेचा।

मुस्लिम सन्त अब्दुल्ला खफीफ पारसी, मुहम्मद अली हकीम तरयोबी
तपस्वी अबदुल्ला, अल हाफिज खुरासानी वाली किताब आज पूरी हुई
तीस सन्तो के चरित्र इसमे है। श्री कुशलसिंगजो ने बहुत ही प्रेम व भक्ति
से इसे सुनाया।

करीब ११॥ के विट्ठल ने कहा कि यहा से अभी चलना पड़ेगा। बाद मे
मालूम हुआ कि जयपुर से लारी लेकर हरचरनदास पुलिस क्लर्क आये।
रात को दो बजे रवाना होने को कहा गया। सामान की व्यवस्था की।
इनाम वगैरा दिये तथा खादी आदि बाटी। गायो के लिए पानी की टंक
भरी रखने की व्यवस्था आदि को कहा।

स्नान व प्रार्थना के बाद बराबर ढाई बजे मोटर से रवाना।

मोरासागर मे तीन महीने रहने मिला। इस भूमि मे प्रेम हो गया।

कनवितों का बाग, ११-५-३९

मोरासागर से २॥ बजे निकल कर लालसोट डाकबगले ४ बजे के करीब
पहुचा। वहा मोटर मे पेट्रोल वगैरा भरा। डाक बगला घूमकर, बाहर से
देखा। दौसा होते हुए पुराना घाट के रास्ते 'कनवितो का बाग' (ठाकुर
साहब नरवाडो का बाग) जो जयपुर से चार-पांच मील की दूरी पर व
सडक से एक मील अन्दर है, सुबह ६॥ बजे पहुचे।

थोडी देर बाद सामान व विट्ठल लारी मे आया। यहा का हवा-पानी ठीक
बताते हैं। इमारत वगैरा जूने ढग की व बेमरम्मत है।

चीरामल जी (बनड़ाके) आये। उनको प्रेसिडेंट जयपुर कौंसिल मि०

टाड मे, व महाराजा मे जो बातें हुईं, उन्होंने कही। उन्होंने यह भी कहा कि टॉड सा० आप से मिलकर खुश हुए हैं। वह आप चाहते हैं, उससे ज्यादा सुधार करना चाहते हैं, इत्यादि। मैंने उनके कहने पर समझौते की कुछ शर्तें उन्हें लिखकर दी और ठीक तौर से समझा दिया, खासकर यह कि "मुझपर व प्रजा-मडल पर का बेन (प्रतिबध) बिना शर्त उठा लिया जावे। अगर महाराज सा० व प्रेसिडेंट वचन दें तो दो मास तक मागो के बारे में जोर का प्रचार न करके सत्याग्रह स्थगित रखा जाये। दो मास मे सतोषकारक परिणाम नही आया तो प्रजा-मडल जो उचित समझेगा, वह कारंवाई करेगा। अगर अधिकारियो को यह स्वीकार हो, तो मैं अपने मित्रो से सलाह करके निश्चित जवाब दे सकूगा।"

अखबार पढे। ता० १०-५ के 'हिन्दुस्तान' मे सरदार का भाषण है—जयपुर की चर्चा भी है। बापू के स्टेटमेंट, राजेन्द्रबाबू, सुभाष व सरदार के भाषण वगैरा पढे।

जयपुर पुलिस के तीनो बडे अधिकारियो ने मि० यग, डी० आई० जी०, व दीवानचन्द व चक्रवर्ती के जाने की बात सुनी। श्री कुशलसिंगजी को दौसा जाने का हुक्म आया।

१२-५-३६

लूणियावास तक जाकर आये। एक खाती की मा, जो बहुत बूढ़ी, बहरी व अधी थी, उसे एक रुपया दिया। चौकीदार भवराज का घर देखा।

कुशलसिंह से बातें। उनके साथ देर तक शतरज खेली, क्योकि यह अब जाने वाले है। उर्दू सीखी। चर्खा काता। यहा भी गरमी ठीक पडती है। जयपुर से आम आये, पर ठीक नही निकले।

आजतक तीन महीनो मे सूत ३२ लट्टी (६४० तार—८५३ वार के हिसाब से) हुई; याने २७२६६ रोज मे ३०६॥। वार रोज का औसत आया।

१३-५-३६

घाटी-खटीको के गाव (हरदेवाठेकेदार के बाग) की ओर घूमकर आये। रामनाथ व गोविन्दा (छोकरा) साथ मे। मोती खटीक मिला, जो बूढ़ा है, उसके दो जवान लड़के मर गये, आख से दिखता नही, बहुत खराब हालत है। उसे एक रुपया दिया।

जगन्नाथ मीणा को चार आना रोज मे पानी भरने वगैरा के लिए रखा। बाबा नरसिंहरामजी वैद्य, बीमार हो जाने के कारण, नही जा सके। देवनारायणजी व अट्टार पटरो छोड दिये गये। वे सोमन (फतेहपुर) गये

१४-५-३९

घोस, जहां नागोरी मुसलमान ज्यादा सख्या मे रहते है, वहा एक मीणा राजा भान्दो नाम का हो गया था। वहां के इमाम वकरा बूढ़े थे, जो गदर के समय १८-२० वर्ष का था, देर तक बातचीत। वह सौ वर्ष के ऊपर का हो गया है। उसने राज्य की घोर निंदा की, खासकर शिकार खाने व जगलात के बारे मे और भी बातें कही। नाहर, बघेरे कई मनुष्यो को खा गये। ५-७ दिन पहले ही कई गायो व एक गुजर को खा गये। कुछ महीने पहले दो-तीन आदमियो को खा गये। उसे एक रुपया दिया। करीब ११ बजे मि० टॉड प्राइम मिनिस्टर व ठाकुर हरीसिंग होम मिनिस्टर, मिलने आये। करीब २। घटे बातचीत होती रही। १-२० पर गये। बातचीत का सारांश यह कि किस प्रकार परस्पर विश्वास व सहकार बढ़े। बिना शर्त मुझे व प्रजा-मडल के मुख्य कार्यकर्ताओ को छोड़ दें तो फिर क्या स्थिति पैदा हो। मुझे दो सस्थाओ मे से एक मे रहना चाहिए, आदि मुद्दो पर चर्चा। मैंने कहा कि विश्वास तो दोनो ओर से किया जाना चाहिए। प्रजा-मडल के अस्तित्व को स्वीकारना ही चाहिए। इसके बीच मे मेरा प्रश्न नही लाना चाहिए अगर विश्वास बढाना हो तो। जयपुर दरबार के अन्य कार्यों पर विचार-विनिमय हुआ। मैंने उदाहरण के तौर पर शिकारखाने व जगलात खाते के बारे मे जोर से विरोध किया। वर्तमान कैबिनेट का तथा पुलिस खाते का विरोध तो पहले ही किया था, आज भी किया। आखिर में यही ठहरा कि मुझे मेरे साथियो से मिलकर उनकी पूरी स्थिति समझ लेने दी जाये। महाराज से मिलकर उनका मानस भी समझ लिया जाये। अगर महाराज प्रजा के साथ प्रजा की भलाई व न्याय करने की लॉयल्टी लेंगे तो फिर हमे विशेष अडचन नही आयेगी। अचरोल ठाकुर ने कहा कि मैं तो आपके लड़के के समान हू। मेरे पिता जीवित होते तो ५१-५२ के होते।" उन्होने बहुत प्रेम दिखाया। मैंने कहा कि आपमे कोई भी लायक नही है।

१५-५-३९

लुणियावास (हरीपुरा) की दो अनाथ मा-बेटी (वैश्य) को एक रुपया दिया। अचरोल ठाकुर हरीसिंगजी (होम मिनिस्टर) को पत्र भेजने का विचार। मसविदा बनाया तो श्री मूलसिंगजी (मेगोती रींगस) सुपरिंटेंडेंट पुलिस जयपुर, ने आकर कहा—दरबार मुझसे पाच बजे मिलने वाले हैं। मेरे लिए मोटर आयेगी और जहा मिलने का स्थान निश्चय हुआ है, वहा ले जायेगी। मूलसिंगजी सु०पु० जयपुर, पाच बजे आये। वह मुझे प्राइम मिनिस्टर के बगले पर ले गये। साढे पाच को वहा पहुचे। अचरोल ठाकुर सा० पहले वहा आये। बाद में ५.४० के करीब महाराज सा० आये। मि० टॉड, ठा० हरीसिंगजी और मैं—इन चार जनो की बातें शुरू हुई। दरबार ६-५० तक रहे। बाद मे टॉड व हरीसिंगजी से बाते हुई। महाराज के साथ दिल खोलकर बाते हुई। उन्होने यही कहा कि जूनी बाते सब भूल जाये, आगे का रास्ता बैठाओ। मैं सब तरह से सेवा करने व न्याय करने को तैयार रहूगा, उनकी मशा तो यह मालूम हुई कि वह ता० १८ को गर्मियो के लिए बाहर जाना चाहते हैं उसके पहले रास्ता साफ हो जाये तो उन्हे शाति रहेगी। प्रजा-मडल सीकर कैदी, भावी विधान (कास्टीट्यूशन) आदि पर विचार-विनिमय हुआ। कल राधाकिशन व हीरालालजी वगैरे मित्र-लोग आयेगे। परसो १० बजे दरबार से व ६॥ बजे प्राइम मिनिस्टर व हरीसिंगजी से मिलना ठहरा।

आज की बातो की नोट—

(१) अगर मुझे मिलने का मौका दिया जाता तो प्रजा-मडल पर व मुझपर प्रतिबध लगाने का मौका नही आता। यह भयकर भूल राज से नही होती।

(२) कई वर्षों से प्रयत्न करने पर भी मेरी आपसे दिल खोलकर बात नही हो सकी, यह दुःख की बात रही।

(३) सीकर की सेवा का यह इनाम मिला।

तीनो प्रश्नो का जवाब—'जूनी बातें भूल जायें, व नये सिरे से विश्वास रखकर काम शुरू किया जाये। मैं सब तरह से तैयार हू।'

(४) आपके मिनिस्टरो ने अपना कर्तव्य पूरा नही किया। मुझपर यह असर है कि उनमें सच्चाई व हिम्मत की कमी है व राजा व प्रजा की बदनामी न हो, इसकी भी उन्हे परवाह नही है, नही तो यह मौका नही आता।

(५) यह सब अचरोल ठाकुर के सामने कहा गया। पंडित अमरनाथ अटल ने प्रिंस चेम्बर में जो स्टेटमेन्ट दिया व जिसका बीकानेर महाराज ने उल्लेख किया, उस बारे में कहा।

(६) राज्य में व कर्मचारियों में काफी परिवर्तन करना होगा। उन्होंने कहा कि करेंगे। मैंने कहा कि जंगल व शिकारखाने पर सुना है, आपके मामा साहब हैं। मैंने उनकी बहुत बदनामी सुनी है। रिश्तेदार के नाते उनसे प्रेम है तो अपने पास से उन्हें मदद कर दें, परन्तु इस प्रकार की वृत्ति के आदमी को जवाबदार जगह पर बिलकुल न रखा जाये। वह हंसे और कहा कि 'मुझसे किसी ने शिकायत नहीं की।' इस पर मुझे जो कहना था, वह कहा।

(७) प्रजा-मंडल की पूरी सहायता लेने के बदले मुझे कांग्रेस से अलग हो जाना चाहिए, इस पर ठीक चर्चा हुई। मैंने कई उदाहरण दिये। रिफार्म कमेटी जल्दी मुकर्रर होनी चाहिए। उन्होंने कहा, 'हां बड़ौदा या मैसूर का आदर्श रखा जाये।' अचरोल ने कहा, 'कॉपी क्यों की जाये? हम अपना अलग ही विधान बनावें। शायद हमारी नकल दूसरे करें।'

१६-५-३९

ठाकुर कुशलसिंगजी (सर्कल इस्पेक्टर) आज यहां से दौसा चले गये। उनकी जगह यहां सरदारसिंग पहाडी (टेहरी राज्य वाला) हवलदार आया।

हीरालालजी शास्त्री, हरिश्चन्द्रजी शर्मा, चिरंजीलाल अग्रवाल, केवल इन तीनों को ही श्री गाजी हुसेन सु० पु० सी० आई० डी० लेकर आये। प्रजा मंडल की वर्किंग कमेटी के अन्य सदस्यों को नहीं लाये। इनका चुनाव भी अधिकारियों ने ही कर लिया। आजतक की सारी परिस्थिति इन्हें समझाई व इनके मन की स्थिति समझी। इस समय मेरा प्रजा-मंडल से हटना मुमकिन नहीं, असम्भव है, ऐसा इन्होंने कहा। देर तक विचार-विनिमय होने के बाद यह निश्चय हुआ कि जेल में वर्किंग कमेटी के जितने मेम्बर हैं, उनसे एक बार मिलकर विचार-विनिमय करना आवश्यक है। मुझे तो पूरा अधिकार है ही।

राधाकिसन के साथ भोजन किया। पन्ना को लड़का हुआ। वृन्दावन सम्मेलन आदि का हाल समझा।

१७-५-३९

आज जयपुर महाराज से व प्राइम मिनिस्टर से मिलने जाना है। सो उसके पाइंट नोट किये।

श्री आई० जी० साहब (कोटेवाले) एकाएक मिलने चले आये। सरदारसिंग व रामनाथ ने उन्हे बिना परवानगी नही मिलने का कहा। इनकी आपस मे कहासुनी भी हो गई। मैने उन्हे समझाकर कहा कि आप इत्तला करके आराम से पधारेगे तो ठीक रहेगा।

श्री मुकर्जी लेने आये। जल्दी स्नान व भोजन करके नौ बजे रवाना। पहले मेयो हास्पिटल गये। वहां गोडे का, जहा दर्द था, एक्सरे लिया। श्री यग का फोन आया। उनसे मिलने उनके लडके के घर गये। वहां ठाकुर हरीसिगजी मिल गये। थोडी देर बातचीत होती रही--समझौते आदि के बारे मे।

प्राइम मिनिस्टर की कोठी पर १०॥। बजे पहुचे। वहा सिवप्रसादजी पेशन, इजीनियर, सर्जन वगैरे, नये अस्पताल की मीटिंग के लिए बैठे हुए थे।

११ से १ बजे तक, याने दो घटे, प्राइम मिनिस्टर मि० टॉड, होम मिनिस्टर हरिसिगजी व जयपुर महाराज मानसिंगजी से बातचीत हुई। करीब सवा बारह बजे तक तो तीनो के साथ बात हुई। उसमे मेरे नोट किये हुए प्राय सभी प्रश्नो पर चर्चा व खुलासा हुआ। आखिर प्रजा-मडल के नाम के परिवर्तन करने के बारे मे देर तक वाद-विवाद होता रहा। मैने इनकार कर दिया। सीकर की बात क्यो छोडनी चाहिए, इसका खुलासा किया। महाराज के ध्यान मे आया। बाद मे महाराज से अकेले मे पौन घटे के करीब बाते हुई। उन्होने अपनी अडचने बताई। ठीक वातावरण हुआ। उन्होने कहा कि अबकी ठाकुर को मै पूरा अधिकार देकर जाता हू।

१८-५-३९

श्री हरीसिगजी (होम मिनिस्टर) को मैने आज को मिलने के लिए कह भेजा था। वह आज यहां पर मिलने आने वाले है। इस बाद स्नान वगैरे से जल्दी निबटा।

हरीसिंहजी ८-३० को मिलने आये। १०-१५ तक बातचीत रही। हुकूमत

के नोट्स नोट बुक में लिखे हैं।
महाराज सा० व प्राइम मिनिस्टर के साथ मुलाकात का समय निश्चि
करके मुझे सूचना देने को कह गये। मुझे श्री आई० जी० ओंकारसिंगजी
(कोटावालों) के घर जाकर ठहरने को कहा। बुलाने व बात करने के
लिए वह स्थान नजदीक पड़ेगा। दिवान कोटा के यहां चला गया। उन्हों
मोटर भेजकर ठाकुर हरीसिंगजी को बुलवा लिया। समझौते आदि के
बारे में वह देर तक चर्चा करते रहे। मैंने कहा, पहले आप महाराज सा० व
प्राइम मिनिस्टर की राय जान लें। वह अगर आपके हाथ से फैसला करना
पसन्द करते हो तो फिर मुझसे बातें करना ज्यादा ठीक रहेगा, क्योंकि
इस समय दूसरी हालत में हू। तभी होम मिनिस्टर का फोन आया कि
महाराज सा० आज यूरोप जा रहे हैं। अतः अभी समय नहीं है।
और प्राइम मिनिस्टर आपसे मिलेंगे।

१९-५-३९

चि० राधाकिसन को आज से मेरे पास रहने की इजाजत मिली।
चि० शान्ताबाई व काशिनाथजी महिला-आश्रम के काम के लिए आये।
देर तक विचार-विनिमय। आज पूरा काम नहीं हो सका। उनका दोनों
समय यहीं भोजन हुआ। उनके साथ मदनलाल कोठारी व श्री रतनबहेन
शास्त्री भी आये थे।
डेडराजजी खेतान व चि० प्रहलाद पोद्दार मिलने आये। प्रह्लाद का
विनोद। चि० पन्ना के लड़का हुआ, उसका तार मिला।
प्राइम मिनिस्टर ने कहलाया कि मैं कोटावाले आई० जी० सा० से मिलने
जाऊं। मैंने कहलाया कि उनसे मिलने के पहले आपसे व होम मिनिस्टर
से मिलना जरूरी है। उनसे मैं किस हैसियत से मिलूं, यह मुझे समझ लेना
चाहिए। जवाब नहीं मिला।
पत्रों के जवाब मदनलाल से लिखवाये—बापूजी, खान सा० व सावित्री
को। केशवदेवजी को पचास हजार की रसीद सही करके भेजी।
उमरावसिंग को नय पत्र भेजने को दिये।

२०-५-३९

ता० १९-२० के अखबारों में बापू के व राजकोट ठाकुर के स्टेटमेंट देखे

चि० शान्ताबाई व श्री काशिनाथजी महिला-आश्रम के काम के लिए आज भी आये, छात्रवृत्ति वगैरे का निर्णय। महिला-आश्रम से मेरा नैतिक सम्बन्ध बिलकुल न रहे तो मुझे शांति मिलेगी, यह मैंने काशिनाथजी, शान्ताबाई व राधाकिसन को समझाकर कहा। चर्खा काता। शाम को भोजन करके शान्ता व काशिनाथजी गये।

पूज्य बापूजी ने वृन्दावन (चम्पारन-बिहार) मे 'गाधी-सेवा-सघ' के अधिवेशन मे जो भाषण दिया वह ता० १३ मई के 'हरिजन सेवक' मे से लिया—"सत्याग्रही की ईश्वर मे जीवित श्रद्धा होनी चाहिए। यह इसलिए कि ईश्वर मे अपनी अटल श्रद्धा के सिवाय उसके पास कोई दूसरा बल नही होता। बगैर उस श्रद्धा के सत्याग्रह का अस्त्र वह किस प्रकार हाथ मे ले सकता है ? आप लोगो मे से जो ईश्वर मे ऐसी जीवित श्रद्धा न रखते हो, उनसे तो मैं यही कहूगा कि वे 'गाधी-सेवा-सघ' को छोड दे, और सत्याग्रह का नाम भूल जायें।"

२१-५-३९

जोगियो ने 'गोपीचन्द' वगैरा सुनाया। लाला दुनीचन्द (अबालावाले) मिलने आये। उनके लडके का विवाह इदौर मे हुआ, इस सम्बन्ध मे व महाराजा इदौर मे उसके विवाह आदि के बारे मे जो बाते हुई वह बताते रहे। यहा खान बहादुर अब्दुल अजीज जो रेवेन्यू मिनिस्टर है, उनके बारे मे बताया कि वह पजाब के अच्छे प्रभावशाली व्यक्तियो मे व सरकारी बडे नौकरो म से हैं। इनका उनसे परिचय है। यह उनसे मिलने वाले भी हैं।

पीरामलजी (बगडवाले) को भेजने के लिए पहले भी कहलाया था। आज फिर तपास की तो मालूम हुआ कि वह चले गये हैं। प्राइम मिनिस्टर ने कहलाया बतलाते हैं कि मैं चाहू तो पीरामलजी को बम्बई से व आई० जी० ओकारसिंगजी को कोटा मे बुलाया जा सकता है।

होम मिनिस्टर हरीसिंगजी को पत्र लिखकर भेजा। पत्र की कापी नोटबुक मे है। सरदारसिंग जबानी जवाब लाया कि कल सुबह प्राइम मिनिस्टर से मिलकर जवाब भेजेगे।

स्टेट्समेन ने बापू के राजकोट स्टेटमेट पर एक लम्बा अग्रलेख लिखा है।

चि० शान्ताबाई व श्री काशिनाथजी महिला-आश्रम के काम के लिए आज भी आये, छात्रवृत्ति वगैरे का निर्णय। महिला-आश्रम मे मेरा नैतिक सम्बन्ध बिलकुल न रहे तो मुझे शांति मिलेगी, यह मैंने काशिनाथजी, शान्ताबाई व राधाकिसन को समझाकर कहा। चर्खा काता। शाम को भोजन करके शान्ता व काशिनाथजी गये।

पूज्य बापूजी ने वृन्दावन (चम्पारन-बिहार) मे 'गाधी-सेवा-सघ' के अधिवेशन मे जो भाषण दिया वह ता० १३ मई के 'हरिजन सेवक' मे से लिया—"सत्याग्रही की ईश्वर मे जीवित श्रद्धा होनी चाहिए। यह इसलिए कि ईश्वर मे अपनी अटल श्रद्धा के सिवाय उसके पास कोई दूसरा बल नही होता। बगैर उस श्रद्धा के सत्याग्रह का अस्त्र वह किस प्रकार हाथ में ले सकता है? आप लोगो मे से जो ईश्वर मे ऐसी जीवित श्रद्धा न रखते हो, उनसे तो मैं यही कहूगा कि वे 'गाधी-सेवा-सघ' को छोड दे, और सत्याग्रह का नाम भूल जायें।"

२१-५-३९

जोगियो ने 'गोपीचन्द' वगैरा सुनाया। लाला दुनीचन्द (अबालावाले) मिलने आये। उनके लडके का विवाह इदौर मे हुआ, इस सम्बन्ध मे व महाराजा इदौर मे उसके विवाह आदि के बारे में जो बाते हुई वह बताते रहे। यहा खान बहादुर अब्दुल अजीज जो रेवेन्यू मिनिस्टर है, उनके बारे में बताया कि वह पजाब के अच्छे प्रभावशाली व्यक्तियो मे व सरकारी बडे नौकरो मे से हैं। इनका उनसे परिचय है। यह उनसे मिलने वाले भी है।

पीरामलजी (बगडवाले) को भेजने के लिए पहले भी कहलाया था। आज फिर तपास की तो मालूम हुआ कि वह चले गये हैं। प्राइम मिनिस्टर ने कहलाया बतलाते हैं कि मैं चाहूं तो पीरामलजी को बम्बई से व आई० जी० ओकारसिंगजी को कोटा से बुलाया जा सकता है।

होम मिनिस्टर हरीसिंगजी को पत्र लिखकर भेजा। पत्र की कापी नोटबुक मे है। सरदारसिंग जबानी जवाब लाया कि कल सुबह प्राइम मिनिस्टर से मिलकर जवाब भेजेंगे।

स्टेट्समेन ने बापू के राजकोट स्टेटमेंट पर एक लम्बा अग्रलेख लिखा है।

राधाकिसन ने कहा कि जानकी देवी कल सुबह आ रही हैं। दिल्ली का व वर्धा का तार था। खुशी हुई।

अधिकारियो का बर्ताव सख्त हुआ है। नजदीक मे समझौते की कोई आशा नही दिखाई देती। राधाकिसन गया। थोडा बुरा मालूम हुआ।

रात को एक मुसलमान ने गाने सुनाये।

२४-५-३९

जल्दी तैयार हुआ। जानकी देवी की राह देखी। सरदारसिंग से जानकी के यहा भोजन वगैरे के बारे मे पूछ लेने को कहा। 'सन्त तुकाराम' (हिन्दी) व 'जयपुर डायरेक्टरी' देखी। जानकी देवी की ११॥ बजे तक राह देखी। वह भी नही आई और यहां की मोटर सरदारसिंग लेकर गये थे, वह भी नही आई। तब विचार-तरग आने लगे। बाद मे अकेले ही भोजन। जब नीद खुली तो १॥-१॥। बजे के करीब जानकी व डा० चोइथराम बैठे हुए दिखाई दिये। दोनो से मिलकर खुशी हुई। ५॥ बजे के करीब दोनो वापस गये।

जानकी वर्धा से अकेली ही आई। विनोबा ने यहा आने की सलाह दी तो वह दूसरे ही रोज रवाना होकर आ गई।

मुकर्जी से कह दिया कि अगर जयपुर सरकार समझौता चाहती है तो मुझे मिलने-जुलने का पूरा सुभीता देना होगा। प० लादूराम के सिवा राधाकिसन, देशपाडे से भी मिलने की जरूरत पडेगी। अगर वह नही चाहते हो तो मुझे कुछ कहना नही है।

जानकी से कहा कि मुलाकात की इजाजत दे दी है। सुबह ८ बजे आकर शाम को चली जाना।

२५-५-३९

कल रात से मौन शुरू किया—रात को ८॥ बजे से सुबह प्रार्थना तक।

जानकी आई। साथ मे भोजन।

दिन-भर जबतक जानकी रही, एक सी० आई० डी० का आदमी बैठा ही रहा, भोजन के समय को छोड़कर।

उमरावसिंग पुलिस क्लर्क कहने आया कि आई० जी० कोटावाले आ गये हैं। आप चाहे तो उनसे मिल सकते हैं। मैंने कहा कि 'अगर प्राइम

"It is only by adding to the spiritual dignity andmaterial happiness of human life in all its myriad homes that an Empire can claim to be of service to its own peoples and the world."

२७-५-३१

आठ सेर भर का एक मतीरा एक मालिन ने दिया। उसे एक रु० दिया।

'संत तुकाराम' का तीसरा और चौथा भाग पूरा हुआ। रात को पांचवां भाग शुरू किया।

जानकी आई। उसे रोज दो घंटे के लिए आने देने का लिखा। इजाजत मिली। भोजन करके वापस भेजना पड़ा। कल शाम को धूप में नहीं आएगी।

'हरिजन सेवक' पढ़ा। थोड़ी वर्षा हुई। बाद में गरमी का जोर हुआ।

मौन में एक प्रकार से शान्ति तो मिलती है।

२८-५-३१

काना मीणा की दाणी गये, उसकी मां को एक रु० दिया।

जानकी देवी मिलने आईं। ५ से ७॥ तक यहां सा० से जो बात हुई वह सरदार सिंह बताता रहा।

मौन लिया।

रात को ६ बजे के करीब श्री महा० का पत्र मिला।
आज दिन भर मौन रखा। शायद जीवन में यह प्रथम बार हो।

१०-५-३९

प्रार्थना करके, मौन खोला। इस प्रकार के मौन का यह पहला ही मौका है। ठीक था पूर्ण हुआ।
महदेशिया ने जानकी के मुलाकात के बारे का दूसरा हुक्म बताया—एक दिन छोड़कर आने का। पावर रिपोर्ट व पर्व के असाउन्स वगैरा के बारे में भाव ताव देकर कहना पड़ा।
श्री महा० का कल रात को जो डी० ओ० नं० ४१६ आया था, उसका जवाब लिख भेजा।
उनको एक दूसरा पत्र भी लिख भेजा, जिसमें अलाउन्स, एनुअल रिपोर्ट, गांधी, हिन्दी अखबार आदि के बारे में लिखा।
मौसम में आज प्रथम बार आमरस लिया। ठीक मालूम हुआ।

३१-५-३९

प्रजामण्डल व जयपुर सरकार के बारे में ही देर तक विचार चलते रहे। बाद में परमात्मा का चिंतन शुरू किया। तब नींद आई।
सुबह फिर मदालसा व श्रीमन् आने वाले हैं, सो उनके विचार आते रहे।
श्रीमन्नारायण, मदालसा व जानकी आये। दोनों समय यहीं भोजन किया।
श्रीमन् से नवभारत विद्यालय, शिक्षा-मण्डल, महिला-आश्रम आदि के बारे में देर तक विचार विनिमय। अन्य बातें भी होती रहीं। उमा के सम्बन्ध के बारे में भी।
गिरफ्तार होने के बाद आज प्रथम बार कढ़ाई की पूरी खाई। आमरस व फजीता भी जानकीजी के प्रताप से मिला।
देशी रियासतों के बारे में स्टेट्समेन के संवाददाता की ओर से छपा जवाहरलाल का स्टेटमेंट पढ़ा। स्टेट्समैन ता० ३१-५-३९ उसमें जवाहरलालजी ने कहा है :

"But we must remember that Seth Jamnalal Bajaj is still a prisoner in Jaipur, that in Bharatpur satyagraha is going on and in a large number of states fierce repres-

on is in progress."

U.P. officers on *Deputations Ministry Against Grant of* xtension

"Lucknow 'The latter difficulty may be felt particularly in regard to officers in the employ of Indian States whose system of government and executive methods are, in the opinion of the Ministry, *out of time with modern* times Recently Jaipur affairs brought into prominence an official of U.P. Government who though personally popular had to carry out orders of his govt against Seth Jamnalal Bajaj and others"

—स्टेट्समैन ३१-५-३६

१-६-३९

बहुत जल्दी आंख खुल गई। शायद दो-तीन बजे होंगे। जयपुर प्रजामण्डल व अधिकारियों के विचार आते रहे। देर तक एक प्रकार का कार्यक्रम मन में तैयार हुआ। बाद में ईश्वर की प्रार्थना ठीक तौर से हुई। घूमने लूणिया-वास तक जाकर आये। एक खण्डेलवाल वैश्य गणेशी बहुत तकलीफ में है उसकी व्यवस्था करना। जानकी, मदालसा, श्रीमन् को इसकी हालत देखने भेजना है।

sion is in progress."

U.P. officers on Deputations Ministry Against Grant of extension

"Lucknow 'The latter difficulty may be felt particularly in regard to officers in the employ of Indian States whose system of government and executive methods are, in the opinion of the Ministry, out of time with modern times Recently Jaipur affairs brought into prominence an official of U P Government who though personally popular had to carry out orders of his govt against Seth Jamnalal Bajaj and others"

—स्टेट्समैन ३१-५-३९

१-६-३९

बहुत जल्दी आंख खुल गई। शायद दो-तीन बजे होंगे। जयपुर प्रजामण्डल व अधिकारियों के विचार आते रहे। देर तक एक प्रकार का कार्यक्रम मन में तैयार हुआ। बाद में ईश्वर की प्रार्थना ठीक तौर से हुई। घूमने लूणियावास तक जाकर आये। एक खंडेलवाल वैश्य गणेशी बहुत तकलीफ में है उसकी व्यवस्था करना। जानकी, मदालसा, श्रीमन् को इसकी हालत देखने भेजना है।

रात को ६ बजे के करीब यंग सा० का पत्र मिला।
आज दिन भर मौन रखा। शायद जीवन मे यह प्रथम बार हो।

३०-५-३९

प्रार्थना करके, मौन खोला। इस प्रकार के मौन का यह पहला ही [illegible] है। ठीक मालूम हुआ।
सरदारसिंग ने जानकी के मुलाकात के बारे का दूसरा हुक्म बताया—एक दिन छोड़कर आने का। एक्सरे रिपोर्ट व खर्च के अलाउन्स वगैरा के बारे में आज जोर देकर कहना पड़ा।
यंग सा० का कल रात को जो डी० ओ० नं० ४१६ आया था, उनको जवाब लिख भेजा।
उनको एक दूसरा पत्र भी लिख भेजा, जिसमें अलाउन्स, [illegible] साथी, हिन्दी अखबार आदि के बारे मे लिखा।
मौसम में आज प्रथम बार आमरस लिया। ठीक मालूम हुआ।

३१-५-३९

प्रजामण्डल व जयपुर सरकार के बारे मे हो देर तक विचार [illegible]
बाद में परमात्मा का चिन्तन शुरू किया। तब नींद आई।
सुबह फिर मदालसा व श्रीमन् आने वाले हैं, सो उनके [illegible]
श्रीमन्नारायण, मदालसा व [illegible] आये। [illegible]
श्रीमन् से नवभारत विद्यालय, शिक्षा-मण्डल, महिला-आश्रम [illegible] में देर तक विचार विनिमय। [illegible] बारे में भी।

गिरफ्तार होने के बाद आज प्रथम बार [illegible]
[illegible] भी जानकी जी के द्वारा [illegible] मिला।
[illegible]

sion is in progress."

U.P. officers on Deputations Ministry Against Grant of extension

"Lucknow 'The latter difficulty may be felt particularly in regard to officers in the employ of Indian States whose system of government and executive methods are, in the opinion of the Ministry, out of time with modern times Recently Jaipur affairs brought into prominence an official of U P. Government who though personally popular had to carry out orders of his govt against Seth Jamnalal Bajaj and others."

—स्टेट्समैन ३१-५-३९

१-६-३९

बहुत जल्दी आंख खुल गई। शायद दो-तीन बजे होंगे। जयपुर प्रजामण्डल व अधिकारियों के विचार आते रहे। देर तक एक प्रकार का कार्यक्रम मन में तैयार हुआ। बाद में ईश्वर की प्रार्थना ठीक तौर से हुई। घूमने लूणियावास तक जाकर आये। एक खंडेलवाल वैश्य गणेशी बहुत तकलीफ में है उसकी व्यवस्था करना। जानकी, मदालसा, श्रीमन् को इसकी हालत देखने भेजना है।

जानकी, मदालसा, श्रीमन् आये। भोजन, विनोद। आम खूब चूसे। बाद में सब लोग सो गये। आज से खाने आदि का अपना इन्तजाम शुरू किया। मदालसा अपना चर्खा, जिस पर बापू ने वृंदावन में काता था, छोड़ गई, और मेरा ले गई। चर्खा ठीक भी कर गई।

श्रीमन् से 'नव भारत विद्यालय' की आर्थिक हालत व हिन्दी-प्रचार के बारे में चर्चा।

एक गाय पीपल के झाड़ के पास पड़ी थी। जानकी ने कहा तो उसे उठवाकर लाये। भूख से मर रही थी। पावों में ताकत नहीं रही; जोर देकर पानी पिलाया।

रात को १ बजे के करीब मदन मा० का पत्र मिला।
आज दिन भर मौन रखा। शायद मौन में यह अन्त बार हो।

३०-५-३९

प्रार्थना करके मौन खोला। इस प्रकार के मौन का यह पहला ही मौका है। ठीक मालूम हुआ।

भारतसिंह ने बालकों के मुलाकात के बारे का दूसरा हुक्म बताया—एक दिन छोड़कर आने का। प्यारे रिपोर्ट व पत्रों के अनाउन्स वगैरा के बारे में आज चार रोज कहना पड़ा।

मदन मा० का कल रात को जो टी० सी० न० ४११ आया था, उसका जवाब लिख भेजा।

उनको एक दूसरा पत्र भी लिख भेजा, जिसमें अनाउन्स, एसमरे रिपोर्ट, गांधी हिन्दी अखबार आदि के बारे में लिखा।

भोजन में आज प्रथम बार आमरस लिया। ठीक मालूम हुआ।

३१-५-३९

प्रजामण्डल व जयपुर सरकार के बारे में ही देर तक विचार चलते रहे। बाद में परमात्मा का चिन्तन शुरू किया। तब नींद आई।

सुबह फिर मदालसा व श्रीमन् आने वाले हैं, सो उनके विचार आते रहे।

श्रीमन्नारायण, मदालसा व जानकी आये। दोनों समय यहीं भोजन किया। श्रीमन् से नवभारत विद्यालय, शिक्षा-मण्डल, महिला-आश्रम आदि के बारे में देर तक विचार विनिमय। अन्य बातें भी होती रहीं। उमा के सम्बन्ध के बारे में भी।

गिरफ्तार होने के बाद आज प्रथम बार कढ़ाई की पूरी खाई। आमरस व फजीता भी जानकीजी के प्रताप से मिला।

देशी रियासतों के बारे में स्टेट्समैन के संवाददाता की ओर से छपा जवाहरलाल का स्टेटमेंट पढ़ा। स्टेट्समैन ता० ३१-५-३९ उसमें जवाहरलालजी ने कहा है :

"But we must remember that Seth Jamnalal Bajaj is still a prisoner in Jaipur, that in Bharatpur satyagraha is going on and in a large number of states fierce repres-

ion is in progress."

U.P. officers on *Deputations* Ministry Against Grant of extension

"Lucknow 'The latter difficulty may be felt particularly in regard to officers in the employ of *Indian States* whose system of government and executive methods are, in the opinion of the Ministry, *out of* time with modern times Recently Jaipur affairs brought into prominence an official of U P. Government who though personally popular had to carry out orders of his govt against Seth Jamnalal Bajaj and others "

—स्टेट्समैन ३१-५-३९

१-६-३९

बहुत जल्दी आंख खुल गई। शायद दो-तीन बजे होंगे। जयपुर प्रजामण्डल व अधिकारियों के विचार आते रहे। देर तक एक प्रकार का कार्यक्रम मन में तैयार हुआ। बाद में ईश्वर की प्रार्थना ठीक तौर से हुई। घूमने लुणियावास तक जाकर आये। एक रहनेवाले वैश्य गणेशी बहुत तकलीफ में है उसकी व्यवस्था करना। जानकी, मदालसा, श्रीमन् को इसकी हालत देखने भेजना है।

ता० ३-६ के स्टेट्समैन से लिया

Lord Samuel continued "Provincial [illegible] working on the whole well in the provinces [illegible] clearly essential in the States also that the [illegible] be more closely associated with the government [illegible] respect Mysore and Baroda have set the fullest example [illegible] Great changes are needed in many smaller states

"The British people, Lord Samuel [illegible] sincerely desired the peace, progress and freedom [illegible] people of India Regarding untouchability [illegible] as it was by the energy and influence of Mr Gandhi was warmly welcomed

४-६-३९

गणेशी बढ़ोया बीमार था उसका घर देखा। उन गुराही [illegible]। मेहतर का घर देखा प्याऊ वाली बुढ़िया घर भी।

नाथूलाल ब्राह्मण ने, जो मिरजा नालवाले का चेला है, गोड़े का दर्द [illegible] धनी का दर्द देखा। उसने कहा, जोड़ की जगह कमजोर हो गई है। [illegible] लगाने से ठीक हो जायेगी।

वर्धावाले सीताराम पिपलवा, चम्पालाल शर्मा, द्वारका जोशी, केशवदेव जोशी, सत्यनारायण वैद्य, गोविन्द पिपलवा, खेमराज पिपलवा जेल से छूटे। वर्धा जाते हुए मिलने आये।

ignored. To our countrymen in South Africa, I say that we are with you in every act of courage that you perform in honour of India and her dear name. It is never right to submit to evil and national humiliation, and every attempt to improve these must be resisted, whatever the consequences. Dead nations submit to dishonour, but we are a living and proud people and I would rather, that—*we face extinction than submitted to dishonour*." Reuter and A P I

८-६-३६

रात को विचित्र स्वप्न के कारण नींद में बाधा। जानकी ने कलकत्ता में किसी बड़े सनातनी आदमी की लड़की से राम की सगाई बिना मुझे पूछे व राम को लड़की दिखाये बिना कर डाली। लड़की वाला विवाह की जल्दी करने वर्धा आया। देर तक विचार चलता रहा। स्वप्न में ही खूब खींच-तान व लड़ाई भी हो गई।

श्री यंग साहब को दामोदर को भेजने व एक्सरे व रिपोर्ट पत्रों के जवाब के लिए पत्र भेजा।

पूज्य बापूजी आज सेगांव (वर्धा) पहुंच गये होंगे।

श्री एस० एम० यंग को नौकर के बारे में बारह पेज का पत्र भेजा।

सरदारसिंह के साथ—दामोदर की शाम तक राह देखी। डा० यंग सा० ने नहीं भेजा।

वर्धा। यंग साहब ने रामनाथ द्वारा जवाब भेजा कि [illegible] बीमार हैं। एक-दो रोज में दो-तीन सप्ताह के लिए आबू जाने वाले हैं। रिपोर्ट जल्दी भेजने वाले हैं। दामोदर का बुलाना शाम तक करने वाले हैं। भोजन के बाद '[illegible]' देखी।

९-६-३६

[illegible] उमा से बातचीत। पढ़ाई ने उसका (रत्न) करने का निश्चय हुआ। कोई होनहार योग्य युवक मिल जावे तो सगाई हो जा सकती है अन्यथा जल्दी नहीं है। उमा की इच्छा हो, दो वर्ष बाद विवाह हो तो ठीक रहेगा ऐसी मालूम हुई। यह गरीब व अग्रवाल जाति के बाहर भी शिक्षित-लोगों के साथ सम्बन्ध करने को तैयार है। मीरा मूंदड़ा वर्धा-महिला-आश्रम का ही काम करना चाहती है। दामोदर को भी वर्धा में ही सार्वजनिक काम दिया जाय तो ठीक रहेगा, ऐसी इसकी इच्छा है। दामोदर से बात करना होगा।
लुनियावास गये। सरदार सिंह साथ थे। गणेशी व शिवनौरी को जानकी की ओर से पांच रुपये सहायता में दिये।
'सतवाणी' सुनी। सरदार सिंह व ड्राइवर सुना रहे थे। ड्राइवर अच्छी मनन किया हुआ मालूम दिया।
आज आसलपुर गांव में जोर की आग लगी। जान-माल की बड़ी हानि हुई, सुना। दुःख हुआ।

१०-६-३९

सरदार सिंह के हाथ श्री यंग व जानकी देवी के नाम से दो पत्र भेजे।
आसलपुर की आग से भारी हानि हुई, उस बारे में उमरावसिंह राजपूत के साथ बाग में घूमना। भवरसिंह व सीकर के कुमार हरदयाल सिंह की बातें करते रहे।
और हाल सुना।
यंग सा० की ओर से जगन्नाथ व रामप्रसाद ने आसलपुर की आग का वर्णन लिख भेजा। काफी हानि हुई, वहां मदद की जरूरत है।
अनाउन्स के बारे में यंग सा० को पत्र भेजा।
अबदुल्ला खान को १८ महीने की सख्त कैद की सजा मिली। बाप प्राइम मिनिस्टर है। ठीक उदाहरण है।
पू० राजेन्द्र बाबू को कांग्रेस के खजानची व वर्किंग कमेटी की सदस्यता का अपना त्यागपत्र भेजा।
[illegible] जी (महिला-आश्रम वालों) को पत्र भेजा। उन्हें हिम्मत रखने को लिखा। काका सा०को महिला-आश्रम के सभापति बनने के लिए लिखा।

लिया।

११-६-३९

नया कोट व पायजामा पहनकर करीब तीन मील घूमे। सरदारसिंह साथ में।

जानकी आई। भोजन साथ में। दोपहर को साढ़े तीन बजे करीब गुलाब-बाई, हरगोविन्द, पन्ना, बुद्धीसिंह की स्त्री, उमा, मीरा, मृदुला आदि। जलेबी वगैरा बनाई। शाम को सब साथ में भोजन। गुलाब पन्ना से थोड़ी बातें। उमा व मीरा ने भजन सुनाये।

रात में सन्तों की वाणी पढ़ी।

आज जयपुर में कैद हुए बराबर चार महीने हो गये।

आज का मिलाकर कुल ४३ लटी हुई यानी ३६६७९ तार सूत हुआ। हर रोज २०५ तार का औसत आया।

१२-६-३९

गोराडा (भोगी) गाँव में छाजू मीणा को एक रुपया दिया।

श्री यादवजी वैद्य, नन्दकिशोरजी व नाथूलाल आये। यादवजी (बम्बई वाले) को कहना पड़ा कि [illegible] दर्द [illegible]
नन्दकिशोरजी को दवा बता दी। बाद में वह दवाई दी।

जानकी व दामोदर ने यहीं भोजन किया। दामोदर को [illegible] अशोक व गुलाबचन्द के बारे में सब बातें [illegible] करने के लिए [illegible] दिया।

काशिनाथजी को महिला आश्रम वर्धा के पते पर पत्र भेजे। जवाहरमलजी मास्टर व माणिकलालजी की लड़कियों की छात्रवृत्ति तथा लीलावती वगैरा के बारे में दो पोस्टकार्ड भेजे।

सरदारसिंग के साथ शाम को मीणा की ढाणी की ओर घूमने गये। वहां से माली सुखदेवा (हरलाल का बेटा), जिसका बाग दौसावाले वकील ने नीलाम में अढाई हजार रु० में लिया, उसने सारी हकीकत कही।

'सत्याणी' थोडी देखी।

१५-६-३९

सुखदेवा हरदेवा माली का बाग, जिसे दौसावाले ने खरीदा, आज फिर ठीक तौर से देखा।

राधाकिसन मिलने आया। रेल-दुर्घटना का वर्णन सुनाया। डब्बे में से खिडकी पर चढकर नीचे गिट्टी पर कूदना पडा। पर चोट वगैरा बिलकुल नहीं आई। परमात्मा की अजब लीला है। बापूजी व अन्य मित्रों के समाचार कहे।

किशोरलालभाई को संघ के ट्रस्टी पद का व तीसरे दर्जे की सदस्यता का त्यागपत्र लिखकर भेजा।[1]

कमल को केशवदेवजी के पत्रों की नकल व कटिंग भेजी। घन मा० को उनके पत्र का जवाब भेजा।

जयपुर के बारे में बापूजी का स्टेटमेन्ट पढा।

ग्वालियर महाराज ने ठीक रिफार्म जाहिर किये।

जानकी के साथ विचार-विनिमय। पर उसमें दोनों को दुःख पहुंचा। मैं उसे कहे बिना नहीं रहता, यह मेरी कमजोरी है और वह इस उमर में अपना स्वभाव केवल मेरे कहने से कैसे बदल सकती है। उदारता, त्याग, सेवावृत्ति यह उपदेश से नहीं पैदा होते हैं और मुझे उसे उपदेश करने का अधिकार भी तो नहीं है।

शाम को भोजन में जानकी ने गुलाबजामुन बनाये। उसे यह मिठाई बहुत पसन्द है, ऐसा उसने बताया। भोजन के बाद जानकी व उमा गये।

[1] देखिये जमनालालजी के पत्र-व्यवहार, भाग ३, पृष्ठ ५५।

१६-६-३९

आज हिन्दी अखबार भी आये। देखे। कटिंग काटना है।
बाग मे रहने की इमारत के सामने कुआ है, उसमे ४०-५० रुपये लगाने से एक चरस दिन भर चले, इतना पानी हो जायेगा, यह हनुमान पुरोहित (रूपगढ़वालो) ने कहा। इस ठिकाने के कामदार कानसिहजी आये। उनसे तय हुआ कि पचास रुपये तक मैं दू। यह वे मेरे जमा कर लेंगे और लगान आने पर दे देंगे। इतवार से काम शुरू होगा। इस कुए मे पानी हो जाने से सबो को आराम हो जायेगा।

१७-६-३९

आज बगीचे के सारे काम करने वाले छोटे, बड़े व सिपाई वगैरा कोई पचीस लोगो का भोजन, सीरा-साग कराये। आठ रुपये खर्च आये।
अमावस्या के कारण जानकी व उमा के साथ खीर खाई।
यग सा० ने आखिर आज एक मास बाद एक्स-रे रिपोर्ट भेजी। यग साहब को ता० ७-६ को जो १२ पन्नो का लम्बा पत्र भेजा था, उसका अंग्रेजी तरजुमा भी उन्होने भेजा।
स्टेट्स के बारे मे राजेन्द्रबाबू का स्टेटमेंट .
"If things are left where they are, one may take it that federation is dead...It is to be doubted very much, if the conditions insisted upon by the princes will be fulfilled."

१८-६-३९

गंगाबक्श की गाय देखने गये। गाय को खड़ी कराई। उसे थोड़ी ताकत आई, ऐसा मालूम हुआ। खड्डा खुदाने की बात हुई। सेवला मीणा बुड्ढे को एक रुपया दिया।
दामोदर आया। मि० यंग को ता० ७-६ को जो लम्बा पत्र खास तौर पर सीकर के बारे मे लिखा था, उसका अंग्रेजी ठीक नही हुआ था। उसे ठीक किया। इसमे करीब अढ़ाई घंटे लग गये। दामोदर को एक्स-रे रिपोर्ट, जानकीजी का प्रोग्राम, व शिकार जगलात के बारे में समझाया। दामोदर को पैदल ही जयपुर जाना पड़ा, बिना खाये बुरा तो लगा, परन्तु दूसरा उपाय नही था।

श्री हुकमाराव के डी० आई० जी० होने की खबर सुनकर खुशी हुई। सज्जन व निष्पक्ष व व्यवस्थित काम करने वाले समझे जाते हैं। आई० जी० पी० की जगह पर सी० पी० में रिटायर्ड अंग्रेज के आने की सुनी। तमाम को कहा।

विट्ठल, गोपाल, सूरज, कल्याण, ये चारों और जगन्नाथ मिलाकर पान-परमेश्वर वहां विराज रहे हैं। सूरज व गोपाल का दो-दो रुपये महीना व एक समय का भोजन निश्चित किया।

१९-६-३९

'नवीन चिकित्सा-विज्ञान' का एक प्रकरण पढ़ा। अखबार देखे, पत्र लिखे, वमन, वर्धा दुकान व केशवदेवजी को। चर्चा।

रुधा माली को मोतीझरा निकला। ये लोग बहुत ही खराब तरह से रहते हैं। कुवें में पानी दिखाई देने लगा। तीन रुपये खर्च हुए।

शाम को भोजन में अमरस बनाया तो उसमें शक्कर की जगह नमक पड़ गया !

२०-६-३९

सरदारसिंग से मोटर के बारे में पूछने को कहा। दामोदर की घटना को लेकर थोड़ी चर्चा। उसे समझाकर कह दिया था कि तुम्हें जो आर्डर हो, उस मुताबिक चलना चाहिए। मुझे साफ बता देना चाहिए कि यह हुकम है। लेखी हुक्म मिल जाये तो ज्यादा ठीक रहे, और गैरसमझ का मौका नहीं हो।

कल्याण रसोइया से बातचीत। उसकी स्थिति समझी, छुआछूत व बीडी के बारे में भी। आदमी तो गरीब व भला मालूम देता है।

डा० खान सा० का छोटे लड़के जॉनखान (बैरिस्टर) उम्र २६ वर्ष, की मृत्यु का समाचार पढ़कर दुख हुआ। इसकी माता को तो भारी चोट पहुंचेगी। डाक्टर सा० इससे आशा भी बहुत रखते थे। इसके ऊपर खर्च भी बहुत किया था। तार भेजा।

जयपुर महाराजा का लन्दन में गंभीर मोटर एक्सीडेन्ट हो गया। बाल-बाल बचे। ईश्वर को धन्यवाद। तार भिजवाया।

चन्द्रधर जौहरी (आगरावाले), इन्द्रमोहन, द्वारकादास भैया, दामोदर,

छोटनलाल वगैरा मिलने आये। मामूली बातचीत व नाश्ता। करीब सा
पाच आये व साडे सात को चले गये।
कामदार ठाकुर करनसिंह आये। कुए के बारे मे बातचीत। मैंने कहा कि
पचास रुपये तक की बात थी, वहां तक तो मैं तैयार था। अब अढ़ाई सौ
रुपयो की आप बात करते हैं। तो पहले जोवनेर ठा० सा० की राय ले लेनी
चाहिए कि आपको मुझसे कर्ज लेना या मुझे आपको देना ठीक रहेगा क्या?

२१-६-३९

भोजन करते समय जानकी, उमा व द्वारकादास भैया आये। उमा
जोर का बुखार चढ गया। उसे शाम तक यही रख लिया गया।
सूत की ४४ गुडी (वार ३७५३२) कपडा बनाने के लिए द्वारकादास के
भेजी। नालवाडी मे या गोविन्दगढ़ मे व्यवस्था कर लेंगे। पहले चर्खा
मे जमा करवा देंगे।
सरदारसिंग की सलाह से होम मिनिस्टर अचरोल ठा० को पत्र लिख
दर्द व खर्च के हिसाब के बारे मे।

२२-६-३९

गोडे मे दर्द रहने के कारण घूमना तो हुआ नहीं। दवा और दूध लेकर
गया। करीब डेढ़ घण्टे बाद होम मिनिस्टर अचरोल ठा० को सरदार
के हाथ पत्र भेजा, इलाज की व्यवस्था व खर्च के हिसाब के बारे
लिखा।
सरदारसिंग ने आकर बताया कि श्री वग ने मेरे पत्र के साथ ही गुद
भी सविस्तार एक पत्र लिखकर सारकल पर होम मिनिस्टर के य
भिजवा दिया। इलाज, खर्च (एलाउन्स) मोटर, फर्नीचर आदि की बा
उन्होंने लिख भेजी।
आज दोनों समय रोटी व साग, गुर्दे कुने के लेख अनुसार, बनवाये। स्वा
भी लगी। सन्तोष मिला।
पत्र लिखे—हिन्दुस्तान हाउसिंग कपनी का धामा का दावा, बच्छराज
जमनालाल का दावा, रामेश्वरदास बिरला, प्रभुदयाल जी, नर्मदा, भो दल
सा० को १२ हाकुम आम भेजे।
— बापूजी को रामेश्वरदासजी के पत्र मे जो छोटा-सा नोट भेजा, उसमे

दामोदर को लिखा।

राधाकिसन मिला। उसे कहा कि मेरी चिन्ता का कारण नहीं। मुझे जितना ज्यादा रहने को मिलेगा, उससे मेरा तो लाभ है ही, साथ में स्वतन्त्रता के काम को भी लाभ पहुंचेगा इतना ही लिखा। सारे पत्र सुपरिटेंडेंट के द्वारा यग सा० के यहां भिजवा दिए। चलो।

रमा मानी को मोतीलाल लिखा उनके इलाज व दवा की व्यवस्था।

२६-६-३९

विचित्र सपने आये —जगन्नाथ व निजामस्थान बाद श्री मैकलिन्टो को अन्याय से बचाने के लिए, आश्रम में बाहर पर जो प्रयोग किया गया वह प्रयोग, इनकार किया। बहुत लिखा-पढ़ी व बातचीत की। बाद में यह बयोरा दूसरे के हाथ से कराने के बदले मैंने खुद ही करना व्यापार में ठीक समझा क्योंकि उसकी सजा भी भोगने के लिए मुझे तैयार रहना चाहिए, बिचारे किसान क्यों भुगतें, वगैरा। दूसरे सपने में श्री यग सा० बड़े डाक्टर व एक दूसरे अंग्रेज अधिकारी के साथ आये। यहां भी कुर्सियों पर बैठ नहीं सके, गिर गये, इत्यादि। विनोद भी हुआ। दोनों बातें सपने में ही थीं।

मि० यग व होम मिनिस्टर के पत्र मिले।

He is detained under the pleasure of His Highness the Maharajasahib of Jaipur

यग साहब ने दामोदर को बताया कि इस प्रकार मेरे बारे में कौंसिल ने निश्चय किया है।

आज दोनों गोडों के व नीचे के जोड़ का एक्स-रे फिर से लिया गया। कर्नल विलियमसन ने ब्लडप्रेशर, आंख, छाती, नाड़ी ठीक-तौर से तपासी। ब्लडप्रेशर ज्यादा बढ़ा हुआ मालूम हुआ। १७८ ऊपर का व १०५ नीचे का। नाड़ी ७३। डा० ने कहा कि गोडे का दर्द एकदम नहीं मिटने वाला है। उसमें नई हड्डियां निकल रही हैं। बिजली के इलाज से थोड़ा आराम मिल सकता है।

उन्होंने नक्शा खींचकर बताया और कहा कि अभी तो सप्ताह में दो बार बिजली का इलाज लेना होगा। अस्पताल में ११। से १।। बजे तक रहना पड़ा। विलियमसन तपास रहे थे कि इतने में ही श्री यंग का फोन आया।

उन्होंने रिपोर्ट बहुत नरम करके लिखी होगी, ऐसा लगता था।
ब्लड प्रेशर ज्यादा बढ़ गया, इससे एक बार थोड़ी चिन्ता हुई। कारण मालूम नहीं हुआ। मैं तो समझता था कि ब्लडप्रेशर मामूली-सा होगा और गोडे का दर्द भी मिट जायेगा। खैर, जो होना होगा, सो होगा; चिन्ता से क्या लाभ, जबकि मरने तक की पूरी तैयारी की हुई है। केवल विचार, घूमना-फिरना बन्द हो जाने का या अपग होकर पड़े रहने का, हुआ। मैंने तो कर्नल विलियमसन से कहा कि आपरेशन से ठीक हो सकता हो तो मेरी उसकी भी तैयारी है। वह हंसने लगा। १० रोज बाद फिर नपामेगा। कहा कि तेल-पट्टी लगाने में हर्ज नहीं।
हृदय नारायणजी (मैंनपुरीवाले), दामोदर, मदन कोठारी, चि० उमा मिलने आये।
विलियमसन की रिपोर्ट व इलाज के बारे में तथा अन्य विचार।
शिकारखाने व जंगलात के जुल्म आदि के बारे में परसों फिर एक नौजवान मुसलमान को दिन के समय बाघ के खा डालने की खबर सुनी। दो रोज पहले एक बघेरा व कल कई सुअर इस बाग के अन्दर भी आ गये थे। खलबली मची रही। इस बारे में समझ कर कहा।

२४-६-३९

८।। बजे अस्पताल, बिजली के इलाज के लिए रवाना। बराबर नौ बजे बिजली की ट्रीटमेन्ट शुरू की। बिजली दाहिने गोडे में लगाई गई। सिर तक ठीक पसीना आया। गरमी तो बहुत मालूम दी, पर डा० भवानी सिंहजी भटनागर ने कहा कि जितना सहन हो सके, उतना लाभ है। कल जो एक्स-रे लिया था, देखा व समझा। यह कान में थोड़ी देर अल्ट्रा वायलेट—ये डा० सज्जन पुरुष मालूम हुए।
बाघ ने परसों जिस मुसलमान युवक को जख्मी किया था, उसकी हालत की तपास की। शायद वह बच जायेगा।
होम मिनिस्टर अचरोल ठा० को पत्र भेजा। अखबार पढ़े।
श्री गंग सा० ने कल ता० २३-६ को जो डाक्टरी जांच हुई, उसकी यह रिपोर्ट भेजी—

State Medical Department, Jaipur (Rajasthan)

Mayo Hospital, 23-6-39

I have examined Seth Jamnalal Bajaj and find that he is suffering from chronic osteo- arthritis of both knees and ankles, more severe in the right knee. His blood pressure 178-105 slightly raised but this need not cause anxieties as his heart is very good and his general condition is most satisfactory. Appropriate treatment has been prescribed.

H. W. Williamson, M D.M R.C P,F R.C.S (Edinburg) Lt. Col. I.M S.

२५-६-३९

रात को नींद कम आई। दर्द तो ज्यादा नहीं था, परन्तु बेचैनी मालूम होती रही। करीब २ बजे मुंह-हाथ धोकर कुर्सी पर स्मरण, ध्यान करता रहा।

जून मास के 'सर्वोदय' से बापू के भाषण में से उतारा

' अपने प्रतिपक्षी से जल्दी समझौता करो

अगर किसी के बारे में तुम्हारे दिल में कुछ गुस्सा हो तो उस पर सूर्य को न डूबने दो। सूर्यास्त के पहले ही उसके पास चले जाओ और उससे बात-चीत कर लो।" बापूजी कहते हैं, "मेरे लिए ये वाक्य वेद-वाक्य से कम कीमती नहीं है। यही अहिंसा की जड है। अहिंसा को हिंसा के मुह में

कहा।

पगार का निश्चय किया। जयपुर राज्य मे (देश मे—राजपूताना में) रहे वहां तक आठ रुपया मासिक मिलेगा। वर्धा—बम्बई, गोला की ओर जाना हुआ तो गोला दश, सूका पंद्रह। बारह महीने मे एक महीने की वेतन के साथ छुट्टी। ये शर्तें उसने स्वीकार की। जून तक की उसे पगार दी। पर्व के लिए एक रु० व बच्चो के लिए एक रु० दिया।

गूजर माली के छोकरे को ८-१० रोज हुए एक रुपया देकर बन्द किया। गोपाल सेठ को भी जून तक एक रुपया दिया। आगे दो रुपये महीना व खाना देने को कहा। जगन्नाथ मीणा रसोई करेगा वहा तक वही खायगा। हकीम (ड्राइवर) के खाने का इन्तजाम अलग करने को सरदार सिंह से कहा। बदली चाहता हो तो बदली करा दी जाय।

सरदार सिंह की छुट्टी एकाएक मंजूर हो गई। वह गया व उसकी जगह उमरावसिंह राजपूत (अलीगढ वाला) आया। सरदार सिंह के जाने से थोड़ा बुरा मालूम दिया।

२७-६-३९

कल ७॥। बजे जो मौन लिया था वह आज २४ घटे बाद खोला। उमराव-सिंह से थोड़ी बातें। ८॥ बजे अस्पताल गये। डा० भटनागर ने बिजली की ट्रीटमेन्ट दी बीस मिनट तक। जानकी, दामोदर वहा आये। शास्त्री के छोटे लड़के श्याम को, उमरावसिंह की परवानगी से साथ ले आये। श्याम बड़ा नटखट बालक है। यश सा० ने ६ आम व ६ सेव भिजवाई। अखबार देखे। आज एकादशी व्रत (निर्जल) किया। बीस घंटे बाद, रात को बारह बजे बाद पानी पिया जब नींद आई।

दूधाराम जिसे लड़के नीचे से उठाकर लाये थे और जानकी ने जिसे ता० १ जून को मरने की हालत मे देखा था, वह आज २० दिन के बाद प्रात-काल शुभ-मुहूर्त मे स्वर्गधाम पधार गई।

व्यापार मे दक्षता रखने को फतेहचंद से कहा। सीकर जाने, जानकीजी व उमा का आने का अनसूया को लिखा। शास्त्रीजी को स्वास्थ्य ठीक रखने को कहलवाया। घनश्यामदासजी बिड़ला के पत्र का जवाब भेजा। बम्बई भी पत्र भेजा।

कहा।
पगार का निश्चय किया। जयपुर राज्य मे (देश में—राजपूताना में) रहे वहां तक आठ रुपया मासिक मिलेगा। वर्धा—वम्बई, गोला की ओर जाना हुआ तो गोला दश, सूका पद्रह। वारह महीने में एक महीने की वेतन के साथ छुट्टी। ये शर्तें उसने स्वीकार की। जून तक की उसे पगार दी। खर्च के लिए एक रु० व बच्चों के लिए एक रु० दिया।
गूजर माली के छोकरे को ८-१० रोज हुए एक रुपया देकर वन्द किया। गोपाल सेठ को भी जून तक एक रुपया दिया। आगे दो रुपये महीना व खाना देने को कहा। जगन्नाथ मीणा रसोई करेगा वहा तक वही खायगा। हकीम (ड्राइवर) के खाने का इन्तजाम अलग करने को सरदार सिंह से कहा। वदली चाहता हो तो वदली करा दी जाय।
सरदार सिंह की छुट्टी एकाएक मजूर हो गई। वह गया व उसकी जगह उमरावसिंह राजपूत (अलीगढ वाला) आया। सरदार सिंह के जाने से थोडा वुरा मालूम दिया।

२७-६-३९

कल ७।। बजे जो मौन लिया था वह आज २४ घंटे वाद खोला। उमरावसिंह से थोडी वातें। ८।। बजे अस्पताल गये। डा० भटनागर ने बिजली की ट्रीटमेन्ट दी बीस मिनट तक। जानकी, दामोदर वहा आये। शास्त्री के छोटे लडके श्याम को, उमरावसिंह की परवानगी से साथ ले आये। श्याम वडा नटखट वालक है। यग सा० ने ६ आम व ६ सेव भिजवाईं। अखवार देखे। आज एकादशी व्रत (निर्जल) किया। बीस घंटे वाद, रात को वारह वजे वाद पानी पिया जब नींद आई।
दूधागाय जिसे लडके नीचे से उठाकर लाये थे और जानकी ने जिसे ता० १ जून को मरने की हालत में देखा था, वह आज २७ दिन के वाद प्रात:-काल शुभ-मुहूर्त में स्वर्गधाम पधार गई।
व्यापार में दक्षता रखने को फतेहचद से कहा। सीकर जाने, जानकीजी व उमा का आने का अनसूया को लिखा। शास्त्रीजी को स्वास्थ्य ठीक रखने को कहलवाया। घनश्यामदासजी विड़ला के पत्र का जवाव भेजा। वम्बई भी पत्र भेजा।

उमराव सिंह ने कहा कि मुसलमान सत्याग्रही खूब संख्या मे माफी माग रहे हैं। उनके नेता चौमूवाला ने भी माफी माग ली है, इत्यादि। इन लोगो की समझ है, यह आन्दोलन जल्दी खतम हो जायेगा।

२८-६-३९

भोजन करके उठे तो जानकी मीकर जाते हुए मिलने आ गई। उसे मेरे स्वास्थ्य की चिन्ता है। हिम्मत व उत्साह रखकर जाने का कहा। उमरावसिंह का वर्ताव ठीक रहा। इन्हे लाया भी व बाद मे पहुचा भी दिया।

कपूरचन्दजी पाटनी के घर से इनकी पत्नी, सुभद्र कुमार, सुभद्रा, विमला, दो छोटे बालक मिलने आये। सात बालको मे पाच मिलने आये। बालको से विनोद, पढाई वगैरा बातें, खुशी हुई।

२९-६-३९

थाना दूधवाले की ढाणी के पास तक घूमकर आये। एक मकान गिरी हुई दशा मे देखा। थाना से कहा, सौ रुपये तक मिले और उसमे कोई झझट न हो तो ले लेंगे।

श्री केशवदेवजी का लम्बा पत्र आया। खण्डूभाई के मामले का समाधानकारक खुलासा नही हुआ। उन्हे फिर लम्बा पत्र लिखा। आज पत्र लिखने मे करीब पाच घटे लगे। थकान मालूम देने लगी। कई पत्र लिखे।

Harijan—24th June 39—How far ? (By Gandhiji) In case like Jaipur, of course, there can be no question of lowering. The demand it-self is in the lowest pitch There is no room in it for lowering anything In essence it is one for civil liberty consistant with the observance of non-violence is the first step towards Swaraj. It is the breath of political and social life. It is the foundation of freedom There is no room there, for dilution or compromise It is the matter of life. I have never heard of water being diluted.

पच्चीस मिनट गरमी ज्यादा लगती रही, जल गया, फफोले आ गये। पांव सूज गया। डा० बिचारा घबरा गया। वास्तव में दोष तो मेरा ही था। ज्यादा गरमी हुई तो मुझे बन्द करने को कहना चाहिए था। मलहम लगाने का दिया। डा० विलियमसन मुझे तो नही मिले। दामोदर से मिले। पाव मे जलन होती रही। मलहम लगाया। शाम को व रात को भी जलन व दर्द कम तो हुआ, पर नीद पूरी नही आई, पाव मे जो बडा-सा फफोला हो गया, उसके फूटने के डर के कारण।

जयपुर महाराज के मिलिटरी सैक्रेटरी श्री सुमेरसिहजी का पत्र आया। महाराज ने तार के लिए धन्यवाद भेजा।

द्वारकादास भैया का पत्र पढकर थोडा बुरा लगा। इस पत्र मे उसके प्रति भाव कम ही हुआ।

२-७-३९

डा० भवानी शकर भट्ट आये। फफोलो मे से पिचकारी से पानी निकाला। सेककर मरहम-पट्टी की। डा० सज्जन व शुभचिंतक मालूम हुए। कल डा० विलियमसन देखने वाले हैं।

दामोदर व प्रह्लाद वैद्य (सीकरवाले) मिलने आये। दामोदर ने यश का पत्र-व्यवहार बतलाया। थोडे पत्र लिखवाये।

३-७-३९

फफोले मे थोडा दर्द।

कर्नल विलियमसन ने तपासा। ब्लड प्रेशर १६२-११० है। उसने फिर यूरोप (जर्मनी) जाने का आग्रह किया, नही तो जुहू मे रहने को कहा। गौरीलालजी की तबीयत का हाल जानने के लिए वर्धा तार भिजवाया।

४-७-३९

भूलाभाई (लालकोट वाले) के साथ साडे सात बजे अस्पताल। डा० विलि-यमसन ने घाव देखा। थोडे चिन्तित दिखाई दिये। वही अस्पताल मे रखने का विचार किया, परन्तु स्थान खाली नही था।

वजन १६८ रत्तल हुआ। आज भी विलियमसन का कहना हुआ कि यूरोप जाना जरूरी है। मैने तो कह दिया कि मेरी इच्छा नही है। पर आपके जो भी विचार हो, वह लिखकर दे दें। दामोदर महात्माजी से कह देगा। कमला-

उण्डर को मेरे पास ही रखने का निश्चय हुआ।

घर आये। आराम किया। आज छाती में दर्द (भारीपन) मालूम होने लगा। थोड़ी देर विचार आया। मोटर भी यहां नहीं थी व कोई जवाबदार आदमी भी हाजिर नहीं था। बाद में दर्द चला गया।

आज के अखबार से उतारा—

Prime Minister of England, said, "We are living in critical and dangerous times. We are ourselves a peaceful nation, and we desire no quarrels with anyone. But let no one make the mistake of supposing that we are not ready to throw whole strength in the scales if need be, to resist, aggression whether against ourselves or against those whose independence we have undertaken to defend."

किशोरलालभाई के पत्र का जवाब लिखा, द्वारकादास भइया के पत्र का जवाब भी।

५-७-३९

किशोरलालभाई को कल जो पत्र लिखा था, वह भिजवा दिया। दामोदर मिल गया। बापू को सन्देश, डा० विलियमसन का जवाब व देहली वगैरा के बारे में बातें हुई। उसने आज भी श्री यंग से जो बातें हुईं, वह कही। श्री यंग के मार्फत विलियमसन की रिपोर्ट मिली। वह रिपोर्ट इस प्रकार है:

Jaipur 4th July

Dear Mr. Damodardas,

Many thanks for your letter It is evident from the symptoms and the X Ray pictures that Seth Sahib must have been suffering from Arthritis for sometime, probably years. As you now, the disease is not dangerous to life, but is a source of pain and inconvenience to the patient, and is apt to get worse as he gets older. With regard to the blood pressure if this continues to rise it will, of course, be a grave menace to Seth Sahib's life though at the present time and probably for the next few years there is no immediate danger. 'A Stitch in time saves nine' and I think that if he could have specialised treat-

ment now it would save him a great deal of pain and chronic ill-health in the years to come I have been considering the question of giving him gold injection for the arthritis, but these have to be given under very careful supervision and are not so effective in the t[illegible] of the disease from which he suffers as they are in the other type, so I think it is better to try other things first In the present state of the medical knowledge both arthritis and the tendency to high blood pressure are best treated at a spa on some similar establishment that specialises in these complaints the ones I know to be good being as follows

1. Bad Nauheim, Germany
2. Aix Les Baines, South of France
3. Aix La Chapelle, Belgium
4. Bath Harrogate or Droitwich England

If it is impossible for Seth Salab to visit [illegible] places he should live in a place with an equal [illegible] at or near sea level where he could be under the [illegible] a specialist. I have arranged for a [illegible] after him, but as I have to take this tour away [illegible] normal work of looking after poor patients [illegible] not wish to suffer, and as the hospital is very [illegible] not spare him for long

शाम को बाघ की गर्जना सब लोगों ने सुनी। मैं नहीं सुन सका।
रात को १२ बजे तक वर्षा हुई। अन्दर सोना पड़ा। बुद्धा ने भजन सुनाये।

१४-७-३९

श्री बी० सी० टेलर का पत्र सायकल सवार लेकर आया। वह कल नौ बजे मिलने आने वाले हैं। होम मिनिस्टर का सन्देश भी उसी समय कहने वाले हैं।

होम मिनिस्टर वचरोल को व श्री टेलर को पत्र भेजे—मुलाकात की गड़बड़ी के बारे में। चर्खा काता।

१५-७-३९

बी० सी० टेलर (आई० जी० पी०) मिलने आये। ९ बजे से १० बजे तक रहे। इन्होंने होम मिनिस्टर का सन्देश कहा। मेरे कहने पर यह लिखकर दिया। मुलाकात का खुलासा किया, अलाउन्स की चर्चा। ये इन्दौर स्टेट से आये हैं और सी० पी० सर्विस के हैं। आठ-दस रोज में मिलते रहेंगे। होम मिनिस्टर का सन्देश इस प्रकार है :

The Three conditions for release are not approved, specially the one that the reason of his release on medical grounds should not be mentioned in the release notice

होम मिनिस्टर व श्री टेलर, दोनों के पत्र तैयार हुए।
'सावधान' व 'चित्रा' का हायकोर्ट ने फैसला कर दिया। 'सावधान' को ५००) रुपये का दंड और 'चित्रा' को ६ महीने की सजा।

१६-७-३९

जानकी व उमा जल्दी आये। प्रार्थना के बाद मोरों व कबूतरों को ज्वारी खिलाई।

आज अस्पताल नहीं गये। लेकिन बरोल की ढाणी तक पैदल घूम कर आए। यहां स्त्रियों ने जानकी व उमा को गीत सुनाये।
होम मिनिस्टर व टेलर के पत्र उमराव सिंह के हाथ भेजे।
भोजन के बाद, आबिद अली, श्रीनिवासजी बगड़का व दामोदर आये।
थोड़ी देर बाद—रतनजी, राधाकिसन, नेमीचन्द कासलीवाल आये।

कहा।

11-7-39

स्वामी लच्छीरामजी (राजवैद्य) की कल दोपहर को मृत्यु हो गयी। समाचार सुनकर दुःख हुआ।

रतनदेवी शास्त्री, रामेश्वर अग्रवाल (रींगस) कमल चौधरी, धन्नारायण दानी, दामोदर मिलने आये। चर्खा कातते हुए बातचीत। दामोदर से पत्र लिखवाये। करीब सात-आठ पत्र लिखे गये। धन्नारायण दानी ने आर्य भवन का किस्सा बतलाया।

कमल चौधरी का कारखाने व जंगलात का काम करने का निश्चय।

12-7-39

आज थोड़ा पैदल चले बाद में अस्पताल गये। डा० विलियमसन व सेन ने घाव देखा।

चमड़ी काटकर निकाली। दवा बदली। घाव के आसपास, जहां खाज आवे वहां चन्दन का तेल लगाने को कहा। पैदल घूमने की मनाई। दिन में तीन बार ड्रेसिंग करने को कहा।

डा० सेन ने कहा कि घाव ठीक होने में पंद्रह रोज लगेंगे, पूरा आराम देते रहेंगे तो।

होम मिनिस्टर यहीं हैं। आबू नहीं गये।

देर तक पत्रों के जवाब लिखे, जानकीजी को व अन्य को।

आज प्रथम बार मोटर में घूमने के लिए गये। डा० विलियमसन ने इसके लिए यहां के अधिकारी से कहा। पर मोटर में घूमने में आनन्द नहीं आया, बेचैनी-सी मालूम हुई।

मि०वी०सी०टेलर का खत मिला, अपमानकारक व असमाधानकारक था।

13-7-39

आज डा० विलियमसन ने चमड़ी उतारी। घाव बढ़ता ही जा रहा है। जलन व खाज दोनों है। आज करीब दो घंटे लग गये, जली हुई जगह के इलाज में व गोड़े में बिजली देने में। मौन के कारण बातें लिखकर हुईं। डा० भटनागर को काफी चिन्ता हुई। यह जख्म ठीक तकलीफ देता मालूम दे रहा है। शरीर के भोग!

शाम को बाघ की गर्जना सब लोगों ने सुनी। मैं नहीं सुन सका।
रात को १२ बजे तक वर्षा हुई। अन्दर सोना पड़ा। बुद्धा ने भजन सुनाये।

१४-७-३९

श्री बी० सी० टेलर का पत्र सायकल सवार लेकर आया। वह कल नौ बजे मिलने आने वाले हैं। होम मिनिस्टर का सन्देश भी उसी समय कहने वाले हैं।

होम मिनिस्टर अचरोल को व श्री टेलर को पत्र भेजे—मुलाकात की गड़बड़ी के बारे में। चर्खा काता।

१५-७-३९

बी० सी० टेलर (आई० जी० पी०) मिलने आये। ९ बजे से १० बजे तक रहे। इन्होंने होम मिनिस्टर का सन्देश कहा। मेरे कहने पर यह लिखकर दिया। मुलाकात का खुलासा किया, अलाउन्स की चर्चा। ये इन्दौर स्टेट से आये हैं और सी० पी० सर्विस के हैं। आठ-दस रोज में मिलते रहेंगे। होम मिनिस्टर का सन्देश इस प्रकार है :

The Three conditions for release are not approved, especially the one that the reason of his release on medical grounds should not be mentioned in the release notice

[illegible]

[illegible]

१७-७-३९

[illegible]

१८-७-३९

आबिदअली से मिलने आया। हरीभाऊ व मुकुन्द आपटे को बातें कीं। उन्हें [illegible] ही वापस जाना पड़ा, क्योंकि रामनाथ व उमरावसिंह ने कहा कि वे पद को ही [illegible] है। [illegible] की बात है।

१९-७-३९

सुबह ही मालूम हुआ कि गांव में ३ बजे के करीब बघेरा या बाघ पड़ोस के माली की गाय मार गया। मोटर में वहां जाकर मौका देखा। यह घटना यहां से यो कदम के फासले पर हुई। कई तरह से बाघ को खाना बुरा तो बहुत ही मालूम दिया। इस गरीब किसान की सब गायों में यही अच्छी व मोटी-ताजी थी। बाद में मालूम हुआ कि परसों रात को माने सुबह तीन-चार बजे के करीब, यहां से २॥-३ फर्लांग पर, एक माली की झोंपड़ी में से बाघ खूंटी सहित बकरी को ले गया व सड़क के उस पार ले जाकर दूसरे बाघों के साथ उसे खाया। खोजों पर से पता लगा। पुरुष, स्त्री, बच्चे वहीं सोये हुए थे। उन्होंने अपना दुःख वर्णन किया।
जानकी व उमा से बातें, पत्र लिखवाये।
हिन्दुस्तान टाइम्स ने जयपुर पर अग्रलेख लिखा है।

२०-७-३९

राधाकिसन को रामकिसन डालमिया ने मिलने बम्बई बुलवाया था। बाद में टेलीफोन से खबर मिली कि जाने की जरूरत नहीं रही। वह यहां मिल- ,

घर लौकर चला गया। उनके साथ झुंझनू रो शिक्षामंडल के इंस्पेक्टर आये थे।

कमल, शंकरलाल बैंकर, देशपाण्डे, दामोदर, आबिदअली वगैरा आये। शंकरलाल व कमलनयन ने स्वास्थ्य के बारे में, खासकर बिजली से पैर जला था उस बारे में, लम्बा-चौडा व्याख्यान सुनाया। देर तक चर्चा करते रहे। बाद मे हाउसिंग कंपनी के बारे में व मुकन्द आयर्न तथा नागपुर बैंक से त्यागपत्र देने का फैसला हुआ। नागपुर में हाउसिंग मकान बनाने का इन्द्रमोहन व द्वारकादास का हाल थोडा समझा। बुरा तो लगा। चर्खा काता।

२१-७-३९

अस्पताल में डा० भटनागर ने ड्रेसिंग व नीचे के हिस्से में बिजली का सेक किया। वहीं शंकरलाल बैंकर, कमल, जानकी व उमा भी आ गये। घाव देखकर शंकरलाल को ठीक नहीं लगा। जानकी व उमा तो मेरे साथ आ गये। कमल ११ बजे आया। भोजन साथ में किया। आज दाल बाटी चूर्मा बनाया था।

जानकी को उमा के बारे में तथा थोडा और समझाने का प्रयत्न किया। वह रो दी। मुझे भी बुरा तो लगा। आखिर ठीक-ठाक हो गया। चि० उमा को भी थोडे में समझाया।

वे लोग सवा दो बजे की गाडी से जाने के लिए यहां से गये। कमलनयन पहुंचाने गया। मिलने कल फिर आयेगा।

२२-७-३९

कमल से बातचीत होती रही। उसे कहा कि तुम मेरे स्वास्थ्य के बारे में जो रिपोर्ट दो, वह मुझे दिखाकर दे सकते हो। झुनझुनू-जेल के बारे में मैंने उसे कहा कि वह बहुत ही खराब हालत में है। व्यापार सम्बन्धी बातें। अखबार।

सीसम का पेड बाग वालों से दस रुपये में खरीदा। जितना उन्होंने कहा, उतना ही दिया। गुना खाती (रूपगढ वाला) ने पलंग, टेबल आदि फर्नीचर बनाने का काम शुरू किया।

२३-७-३९

मोटर में घूमते हुए सिटी स्टेशन व कल्याणजी के मंदिर की ओर होते हुए

कान्स्टेबल आया। यह फसिउल्लाखां का आदमी है।

सुबह कमलनयन, सागरमल बियाणी, हरिभाऊजी, भागीरथीबहेन, चि० शकुन्तला, माधव, शीला, बाबू वगैरा आये। बातचीत। कमल को वकिंग कमेटी की व्यवस्था के लिए, वर्धा जल्दी जाने को कहा। मेहमान, अतिथियों की सेवा व स्वागत की मेरी जो दृष्टि है, वह समझाकर विस्तार से कही। भोजन करके ये लोग वापस गये। हरिभाऊजी से भी वापना के बारे में लम्बी-चौडी बातें हुईं, मित्तल के बारे में भी। बाद में 'सस्ता साहित्य मण्डल' के बारे में चर्चा। अजमेर कांग्रेस से अलग रहना नहीं ठीक बतलाया।

मगनचन्दजी डालमिया आये। कमल ने उनका फैसला उनकी इच्छा के अनुसार निरत करके करने को कहा।

शाम को दामोदर, बंशीधरजी शर्मा (श्रीमाधोपुरवाले) राजरूपजी टांक, देवीशंकरजी तिवारी, नागर, सोहनमलजी गोलेच्छा वगैरा आये। स्वास्थ्य के बाद शिकारखाना व जगलात की चर्चा की व उसमें दिलचस्पी लेने को कहा।

रात को हकीम ड्राइवर के साथ शतरंज।

२१-७-३९

पांडिचेरी (पोंडिचेरीवासी) मि० एडम कारपिन्स्की और बेराल्ड ब्रिकेन्नी दोनों बर्फ की आंधी के कारण हमेशा के लिए हिमालय की गोद में शान्ति से सो गये, नन्दा देवी के पास २०५०० फुट की ऊंचाई पर ता० १८ या १९ जुलाई को। कितनी सुन्दर मृत्यु है।

कोठारी वाले टी० पूनम चल बसे, तार भेजा।

डा० सिडर शराबबन्दी के काम में उत्साह व हिम्मत बता रहे हैं।

सुबह कमल, राधाकिसन, दामोदर, गुलाबचन्द, पूनमचन्द बांठिया हरि-कृष्ण चौबडीवाल मिलने आये। शाम को रतनलाल, शास्त्री मदन, बंशीधरजी शर्मा, मास्टर रामनाथजी नेचरोपैथ (बदरेस ठाकुर का नगर वाले) व शिवभगवान (सीकरवाला) आये। रामनाथजी से प्राकृतिक चिकित्सा के बारे में विचार-विनिमय होता रहा।

धी हेनर के दो पत्र आये। वे एक प्रकार से उकताये हुए हैं। कमल

स्पष्ट खुलासा न हो जाय, तबतक मोटर मे न बैठने का विचार किया होम मिनिस्टर को मि० टेलर के आज के आये हुए पत्र की नकल व मेरे जवाब की नकल भेजने का निश्चय किया। श्री रामचन्द्र की रिपोर्ट बराबर होती तो श्री टेलर को मोटर के बारे में पत्र लिखने की जरूरत नही पड़ती।

२९-७-३९

श्री रामचन्द्र (एल० एच० सी०) के साथ श्री बी० सी० टेलर को दो पत्र व होम मिनिस्टर को एक पत्र भेजा। श्री टेलर की ओर से जवाब आया। जवाब ठीक नही था। रामचन्द्र कहता था कि उसपर वह बहुत ज्यादा नाराज हुए।

श्री गणेश नारायण सोमाणी व उनकी पत्नी मिलने आये। सोमाणीजी ने राजपूताना रेजीडेन्ट मि० कोरेफील्ड (आबूवालों) से जो बातचीत मेरे बारे मे हुई, वह कही। ए०जी०जी० की राय मे मैं अनडिजायरेबिल (अवाछनीय) व बहुत जिद्दी आदमी हू। मुझे जयपुर राज्य के बाहर कोई काम नही है क्या? यहा आने की इतनी जिद क्यो? इतने बड़े अधिकारी की मनोदशा का पता चला। सोमाणीजी की राय है कि मेरे पर लगे प्रतिबंध में ब्रिटिश अधिकारियो का पूरा हाथ है। बदनाम वे महाराजा को करते हैं। सोमाणीजी ने कहा कि उनकी अपनी इच्छा जयपुर के लिए सेवा करने वाली संस्था की मदद करने की है।

कमल, दामोदर व पूनमचन्द बांठिया मिलने आये। नागपुर बैंक के बारे में देर तक बातचीत। चतुर्भुज भाई (मूलजी जेठावाले) डायरेक्टर हो गये। नागपुर का काम बढ़ाने के बारे मे व मैं हाल में त्यागपत्र न दू, इस बारे में विचार।

३०-७-३९

नाथू मीणा (सिपाही) के पेट मे एकाएक बहुत ज्यादा दर्द हो गया। फ्रूट साल्ट व सोडा गरम पानी मे नारायण कम्पाउन्डर ने दिया। बाद में उसे मोटर मे पुलिस अस्पताल ले गये।

रामचन्द्र, लॅस हेड कान्स्टेबल का एकाएक तबादला हो गया। इसने अपने हाथ से ही अपने को मूर्ख बनाया। इसकी जगह श्री मुलतानुलहक

कान्स्टेबल आया। यह फसिउल्लाखां का आदमी है।

सुबह कमलनयन, सागरमल वियाणी, हरिभाऊजी, भागीरथीबहेन, चि० शकुन्तला, माधव, मोला, बाबू वगैरा आये। बातचीत। कमल को बकिंग कमेटी की व्यवस्था के लिए, वर्धा जल्दी जाने को कहा। मेहमान, अतिथियों की सेवा व स्वागत की मेरी जो दृष्टि है, वह समझाकर विस्तार से कही। भोजन करके ये लोग वापस गये। हरिभाऊजी से श्री वापना के बारे में लम्बी-चौड़ी बातें हुई, मित्तल के बारे में भी। बाद में 'सस्ता साहित्य मण्डल' के बारे में चर्चा। अजमेर कांग्रेस से अलग रहना नहीं ठीक बतलाया।

मंगलचन्दजी डालमिया आये। कमल ने उनका फैसला उनकी इच्छा के अनुसार किस्त करके करने को कहा।

शाम को दामोदर, बंशीधरजी शर्मा (श्रीमाधोपुरवाले) राजरूपजी टांक, देवीशंकरजी तिवारी, नागर, सोहनमलजी गोलेच्छा वगैरा आये। स्वास्थ्य के बाद शिकारखाना व जंगलात की चर्चा की व उसमें दिलचस्पी लेने को कहा।

रात को हकीम ड्राइवर के साथ शतरंज।

३१-७-३९

पोलिश (पोलैंडवासी) मि० एडम कारपिस्की और बेरोवस्की दोनों बर्फ की आंधी के कारण हमेशा के लिए हिमालय की गोद में शान्ति से सो गये, नन्दा देवी के पास २०५०० फुट की ऊंचाई पर ता० १८ या १९ जुलाई को। कितनी सुन्दर मृत्यु है।

गोहाटी वाले टी० फूकन चल बसे, तार भेजा।

डा० सिद्दर शराबबन्दी के काम में उत्साह व हिम्मत बता रहे हैं।

सुबह कमल, राधाकिसन, दामोदर, गुलाबचन्द, पूनमचन्द बांठिया, हरिकृष्ण चौकड़ीवाल मिलने आये। शाम को रतनलाल, शास्त्री, बजाज, बंशीधरजी शर्मा, मास्टर रामप्रतापजी नेचरोपैथ (बरके ठाकुर बाड़ के बाले) व शिवभगवान (सोमरवाला) आये। रामप्रतापजी से नैचुरल चिकित्सा के बारे में विचार-विनिमय होता रहा।

दो टेरर के दो एक आये। वे एक प्रकार से अराजकतावादी थे। बे-न

कि [illegible] कहवाने [illegible] है, यह जानकर मालूम हुआ। [illegible] कि मेरे मालूम [illegible] चाहिए था। वे लोग किसी [illegible] होते हैं। मालूम होता [illegible] को ऐसा [illegible] मालूम हुआ।
[illegible] के बारे में व टेलर के व्यवहार की बातें [illegible] कहीं। उनका जीभ पर काबू नहीं है, इसका दुख है।

१-८-३९

सुपरिन्टेन्डेन्ट [illegible] को कहा कि प्रेसिडेन्ट और सेक्रेटरी है [illegible] नहीं हूं। बाकी डाक वगैरा मंगाने, पूजन व उनको चौकसी करते हैं, तो मुझसे क्यों नहीं पढ़े? सामान-औषधादि की व्यवस्था, यहां से तार-पत्र भेजने की व्यवस्था, मुलाकात के लिए आने वालों के समय का खुलासा आदि बातों को पूरी तौर से कमाण्डर ने मुझे बताना चाहिए था।
गधाकिसन मिलने आया। भोजन करके मि० बेल के साथ वापस गया।
दामोदर आया। उसका सारा समय आई० जी० पी०, होम मेम्बर आदि को [illegible] जाने वाले पत्रों के मसविदे बनाने व लिखने में गया। समय हो जाने के कारण अधूरा काम छोड़कर उसे वापस जाना पड़ा।
दामोदर ने ता० ३०-७ को श्री यग को जो पत्र लिखा था, उसकी नकल पढ़ने से लगा कि वह बराबर नहीं था। बहुत-सी गलतियां थी व असलियत के विपरीत था।
बुरा तो लगा, परन्तु उपाय क्या? यग के ता० ६ के जवाब का अर्थ जो श्री टेलर करते हैं, वह बराबर नहीं है। खैर।
श्री टेलर का आज फिर पत्र आया। पूछा है कि बुढ़ी को रखने में इजाजत ली थी क्या? अब ये लोग लड़ाई छेड़ना चाहते हैं, भूल कर रहे हैं।

२-८-३९

आज नारायण कम्पाउण्डर को मेरे इलाज के बारे में सारी स्थिति समझने के लिए अस्पताल भेजा।
दामोदर आया। श्री टेलर, होम मिनिस्टर व कर्नल विलियमसन के पत्र

पूरे हुए। उनकी नकल करके तीनों को सुलतानुलहक्क के साथ भेजे। इन सबोंकी नकलें टेलर के मार्फत दामोदर को भिजवाई। इसमें काफी समय गया।

गोडे में दर्द कम मालूम दिया।

मैंने कपाउंडर को वापस जाने का कहा तो सुलतानुलहक्क ने कहा कि कल सुबह ले जाऊंगा।

आज दोपहर में सपना आया कि महादेव भाई व पू० बापू मुझे देखने आये हैं। उनसे स्वास्थ्य व जयपुर की स्थिति के बारे में बातचीत। बाद में उनकी ए० जी० जी० (राजपूताना रेसीडेन्ट) से मिलने जाने की तैयारी हुई कि इतने में आंख खुल गयी। आज जयपुर महाराजा ने एक बाघ को मारा। पर एक ठाकुर को बाघ ने जख्मी कर दिया, ऐसा सुना। यह बाघ बड़ा था व इसने भी बहुत से मनुष्यों व जानवरों को हानि पहुंचाई थी। शिकारखाने के बारे में जयपुर दरबार का नोटीफिकेशन देखा। असमाधानकारक है।

३-८-३९

किशोरलालभाई का पत्र तो राम के पत्र में भेज दिया। वैसे आज बहुत से पत्रों के जवाब पूरे किये।

कल जो राजपूत, महाराज की शिकार के समय घायल हुआ था, वह अस्पताल में मर गया।

दामोदर ने कहा कि मोहनपुरा के लोगों ने भूख हड़ताल शुरू कर दी है, इस कारण आज सारा दिन उसका उसको निपटाने में चला गया। सारी स्थिति जानी।

डा० विलियमसन ने आज फिर दामोदर से कहा कि सेठ साहब को वामीडाक बंगले की ओर नहीं जाना चाहिए था। उन्हें कल पत्र लिखकर सारी स्थिति साफ करनी होगी। पूरी जांच किये बिना ये लोग निर्णय कर बैठते हैं। प्राइम मिनिस्टर तथा अन्य अधिकारियों की यह मान्यता है कि मैं उस मोहनपुरा कैंप-जेल में घूमने गया था। विचित्र लोग हैं ये।

दामोदर देर से आया, इसलिए भोजन करके वापस चला गया। दामोदर को पत्र-व्यवहार की सारी नकलें टेलर साहब ने भेज दीं।

विलियमसन इतना कमजोर व असत्य बोलने वाला है, यह जानकर दुःख मालूम हुआ। कर्नल विलियमसन ने दामोदर से कहा कि सेठ साहब को डाक बंगले के कैदियों से नहीं मिलना चाहिए था। ये लोग कितनी बे-समझभरी व झूठी रिपोर्ट देते हैं। मामूली व सीधी बात को कैसा रूप बनाते है, यह इस घटना से मालूम हुआ।

कमल आज वर्धा जायेगा। उसे मेहमानो के बारे मे व टेलर के व्यवहार आदि की बाते समझाकर कही। इसका जीभ पर काबू नही है, इसका दुःख है।

१-८-३९

सुलतानुलहक्क से तपासकर बताने को कहा कि ट्रीटमेन्ट कौन देनेवाला है, क्योंकि मैं तो अस्पताल जाने वाला नहीं हूं। बासी डाक बंगला के सामने घूमने गये उसकी चौकसी करते हैं, तो मुझसे क्यों नही कहते? सामान-चीज-वस्त की व्यवस्था, यहा से तार-पत्र भेजने की व्यवस्था, मुलाकात के लिए आने वालो के समय का खुलासा आदि बातो को पूरी तौर से व स्पष्टतौर से मुझे बताना चाहिए था।

राधाकिसन मिलने आया। भोजन करके मि॰ बेल के साथ वापस गया। दामोदर आया। उसका सारा समय आई॰ जी॰ पी॰, होम मेम्बर आदि को लिखे जाने वाले पत्रो के मसविदे बनाने व लिखने मे गया। समय हो जाने के कारण अधूरा काम छोड़कर उसे वापस जाना पड़ा।

दामोदर ने ता॰ २-७ को श्री यग को जो पत्र लिखा था, उसकी नकल पढ़ने से लगा कि वह बराबर नही था। बहुत-सी गलतियां थी व असलियत के विपरीत था।

[illegible] के जवाब का अर्थ जो थी

पूरे हुए। उनकी नकल करके सीता को मूलचन्दजी [illegible] के साथ भेजी।
इन सबकी नकलें टेलर के मार्फत दामोदर [illegible]
समय गया।
पीठ में दर्द कम मालूम दिया।
मैंने [illegible] को वापस जाने को कहा [illegible] ने कहा कि
कल सुबह ले जाऊंगा।
आज दोपहर में खबर आयी कि [illegible] भाई [illegible] आये
है। उनसे [illegible] व जयपुर की स्थिति के बारे में बातचीत। बाद में
उनकी ए० डी० सी० (राजपूताना राइफल्स) [illegible]
हुई कि इतने में [illegible] आज जयपुर महाराजा ने एक बाघ को
मारा। वह एक ठाकुर था। बाघ ने जख्मी कर दिया [illegible]। यह बाघ
बड़ा था व इसने भी बहुत से मनुष्यों व जानवरों को हानि पहुंचाई थी।
शिकारखाने के बारे में जयपुर दरबार का नोटीफिकेशन देखा। असमाधान-
कारक है।

३-८-३९

किशोरलालभाई का पत्र तो राम के पत्र में भेज दिया। वैसे आज बहुत
से पत्रों के जवाब पूरे किये।
कल जो राजपूत, महाराज की शिकार के समय घायल हुआ था, वह
अस्पताल में मर गया।
दामोदर ने कहा कि मोहनपुरा के लोगों ने भूख हड़ताल शुरू कर दी है,
इस कारण आज सारा दिन उसका उसको निपटाने में चला गया। सारी
स्थिति जानी।
डा० विलियमसन ने आज फिर दामोदर से कहा कि सेठ साहब को कासी-
दाक बंगले की ओर नहीं जाना चाहिए था। उन्हें नया पत्र लिखकर सारी
स्थिति साफ करनी होगी। पूरी जांच किये बिना ये लोग निर्णय कर बैठते
हैं। प्राइम मिनिस्टर तथा अन्य अधिकारियों को यह समझ है कि मैं उस
मोहनपुरा कैंप-जेल में घूमने गया था। विचित्र लोग हैं ये !
[illegible]र देर से आया, इसलिए भोजन करके वापस चला गया। दामोदर
[illegible]हार की सारी नकलें टेलर साहब ने भेज दी।

विलियमसन इतना कमजोर व असत्य बोलने वाला है, यह जानकर बुरा मालूम हुआ। कर्नल विलियमसन ने दामोदर से कहा कि सेठ साहब को डाक बगले के कैदियों से नही मिलना चाहिए था। ये लोग कितनी गैर-समझभरी व झूठी रिपोर्ट देते हैं। मामूली व सीधी बात को कैसा रूप बनाते हैं, यह इस घटना से मालूम हुआ।
कमल आज वर्धा जायेगा। उसे मेहमानों के बारे मे व टेलर के व्यवहार आदि की बाते समझाकर कही। इसका जीभ पर काबू नही है, इसका दुःख है।

१-८-३९

सुलतानुलहक्क से तपासकर बताने को कहा कि ट्रीटमेन्ट कौन देनेवाला है, क्योंकि मैं तो अस्पताल जाने वाला नही हूं। बासी डाक बगला के सामने घूमने गये उसकी चौकसी करते है, तो मुझसे क्यों नही कहते? सामान-चीज-वस्त की व्यवस्था, यहां से तार-पत्र भेजने की व्यवस्था, मुलाकात के लिए आने वालो के समय का खुलासा आदि बातो को पूरी तौर से व स्पष्टतौर से मुझे बताना चाहिए था।
राधाकिसन मिलने आया। भोजन करके मि० बेल के साथ वापस गया। दामोदर आया। उसका सारा समय आई० जी० पी०, होम मेम्बर आदि को लिखे जाने वाले पत्रों के मसविदे बनाने व लिखने मे गया। समय हो जाने के कारण अधूरा काम छोड़कर उसे वापस जाना पड़ा।
दामोदर ने ता० २-७ को श्री यंग को जो पत्र लिखा था, उसकी नकल पढ़ने से लगा कि वह बराबर नहीं था। बहुत-सी गलतियां थी व असलियत के विपरीत था।
बुरा तो लगा, परन्तु उपाय क्या? यंग के ता० ६ के जवाब का अर्थ जो श्री टेलर करते हैं, वह बराबर नहीं है। खैर।
श्री टेलर का आज फिर पत्र आया। पूछा है कि कुत्ती को लाने मे इजाजत ली थी क्या? अब ये लोग लड़ाई छेड़ना चाहते हैं, भूल कर रहे हैं।

२-८-३९

आज नारायण कम्पाउण्डर को मेरे दवाओं के बारे में [illegible] के लिए अस्पताल भेजा।
दामोदर आया। श्री टेलर, होम मिनिस्टर व [illegible]

पूरे हुए। उनकी नकल करके सीता को मुरलानुरक्त के साथ भेजे
इन सबों की नकलें टेलर के मार्फत दामोदर डा० विलियमसन... उसने
समय गया।
पेट में दर्द कम मालूम दिया।
मैंने कमाण्डर को वापस जाने को कहा तो मुरलानुरक्त ने
कल सुबह ले जाऊंगा।
आज दोपहर में मालूम आया कि महादेव भाई व डा० बापू मुझे
है। उनसे स्वास्थ्य व जयपुर की स्थिति के बारे में बातचीत।
उनकी ए० जी० जी० (राजपूताना रेजीडेंट) से मिलने जाने की
हुई कि इतने में [illegible] [illegible] गयी। आज जयपुर महाराजा ने एक
मारा। पर एक ठाकुर को बाघ ने जख्मी कर दिया ऐसा सुना।
बड़ा था व इसने भी बहुत से मनुष्यों व जानवरों को हानि पहुं
शिकारखाने के बारे में जयपुर दरबार का नोटीफिकेशन देखा। अस
कारक है।

३-८-३९

किशोरलालभाई का पत्र तो राम के पत्र में भेज दिया। वैसे आ
से पत्रों के जवाब पूरे किये।
कल जो राजपूत, महाराज की शिकार के समय घायल हुआ
अस्पताल में मर गया।
दामोदर ने कहा कि मोहनपुरा के लोगों ने भूख हड़ताल शुरू क
इस कारण आज सारा दिन उसका उसको निपटाने में चला गया
स्थिति जानी।
डा० विलियमसन ने आज फिर दामोदर से कहा कि सेठ साहब क
डाक बगले की ओर नहीं जाना चाहिए था। उन्हें कल पत्र लिख
स्थिति साफ करनी होगी। पूरी जाच किये बिना ये लोग निर्णय
है। प्राइम मिनिस्टर तथा अन्य अधिकारियों की यह समझ है कि
मोहनपुरा कैंप-जेल से घूमने गया था। विचित्र लोग है ये !
दामोदर देर से आया, इसलिए भोजन करके वापस चला गया।
को पत्र-व्यवहार की सारी नकलें टेलर साहब ने भेज दी।

रात को बघेरा की व झाली के लोगों की आवाज सुनी। बघेरा डूंगर के पास वाली झाली से आता था।
यहां से भी आदमी भेजे। हल्ला होने से भाग गया।

४-८-३९

रात को नींद कम आई। जयपुर राज्य की वर्तमान स्थिति के बारे में विचार चलते रहे। आज कर्नल विलियमसन व महाराजा साहब को पत्र भेजने का निश्चय किया।
श्री महाराजा साहब को पत्र रामनाथ सिपाही के साथ भेजा।
चि० उमा, दामोदर व राधाकिसन मिलने आये।
डा० विलियमसन ने दामोदर से यहीं डाक बंगले की ओर घूमने जाने के बारे में दो बार बात की। उसपर उन्हें पत्र लिखकर सारी स्थिति साफ की।
पत्र की नकल नहीं हो सकी। इस कारण पत्र कल भेजा जायेगा।
कमल का उमा को वर्धा बुलाने का तार आया। उसकी ता० ३० को फिर परीक्षा होने का लिखा। वह आज फोन करने वाली है। अगर, जिन विषयों में फेल हुई है, उतने ही विषयों की परीक्षा होगी तब तो वह जायेगी। इसका मन देहरादून जाने का ज्यादा है।
'डेली न्यूज' का नाम ता० १-८ से 'नागपुर टाइम्स' रखा गया। इसमें ता० ३-८ का जयपुर निशारयाने का पूरा लेख ठीक ढंग से आया है।
अगस्त का 'सर्वोदय' आया।

५-८-३९

चि० उमा व राधाकिसन मिलने को आये। राधाकिसन बहुत करके आज रामकिसन डालमिया के काम के लिए बम्बई जायेगा।
मदनलाल कोठारी आज आ गया। वह, दामोदर, मदन जोशी व मास्टर रामप्रताप शाम को आये। रामप्रतापजी ने घाव का इलाज शुरू किया। खोपरे के तेल की पट्टी लगाई। घाव को ठंडे पानी से धोया। बाद में ऊपर ठंडे पानी की गीली पट्टी लगाकर पट्टी बांधी। एक डेढ़ घंटे तक ठंडा पानी डालते रहने को कहा। जो जलन रहती थी, वह शाम को कम हो गई और पैर में आराम मालूम होने लगा।
दामोदर ने श्री टेलर के पत्र की नकल की। आज कर्नल विलियमसन का

हो जाया करती है व स्वतंत्र होने के बाद के प्रोग्राम भी दिमाग में चलने लगते हैं।

दामोदर का दिल्ली जाने का विचार है। श्री जोवनेर ठाकुर से दामोदर ने जो बातें कीं, उसका सार कहा। होम मिनिस्टर से फोन पर जो बातें हुई, वह कही। मैंने तो कहा कि इन विचारे निस्सहाय व कमजोर मिनिस्टरों को ज्यादा सताने से क्या लाभ है।

दामोदर ने बताया कि बीकानेर महाराज जयपुर आये हुए हैं।

देर तक अखबार देखता रहा। थोड़ी वर्षा हुई।

वनस्थली की पढ़ाई व भावी कार्य के संबंध में गीता से बातें।

८-८-३९

बीकानेर महाराज के नाम का पत्र तैयार किया।

उमा आई। उसने कहा कि शायद आज सुबह तो मैच भी थी। सो बीकानेर महाराज चले भी गये होंगे, फिर भी उनके नाम का पत्र श्री टेलर के मार्फत भिजवा दिया। यहां से चले गये हों तो बीकानेर भेजने का लिख भेजा।

आज के अखबारों में मुझे छोड़े जाने का आन्दोलन शुरू हुआ, खासकर 'हिन्दुस्तान टाइम्स' की टिप्पणी ठीक नहीं मालूम दी।

उमा ने बताया कि शिकारखाने के बारे में मतभेद होने के कारण प्राइम मिनिस्टर कल एकाएक चले गये। महाराज ने भैरूसिंह का पक्ष लिया, वगैरा।

आफीसर-इन-चार्ज ने भी कहा कि यह बात ठीक है। वह कल मोटर से दिल्ली चले गये। उनका सामान भी गया। उनकी मेम सा० बाकी बचा सामान लेकर बाद में जायेगी।

उमा ने यह भी बताया कि सब हिन्दुस्तानी मिनिस्टरों ने एकमत होकर मेरी रुकावटें दूर करने के बारे में राय दी। आखिर का फैसला महाराज करने वाले हैं।

कलकत्ता से कमल का तार आया। चि० सावित्री को कल ता० ७ अगस्त को बच्ची हुई। वजन ६॥ रतल; रंग आदि सावित्री के माफिक। चेहरा राहुल सरीखा लिखा।

कर्नल विलियमसन डा० प्रभुदयाल जी को लेकर ६ बजे आये। १० बजे वापस गये। एक घंटे तक समझाते रहे। ब्लडप्रेशर १६५-११० बतलाया। जख्म देखा। मैंने तो कह दिया कि घाव का इलाज तो कुदरती उपचार से कर रहा हूं, खोपरे का तेल व पानी की गीली पट्टी का। वह वेसलीन लगाना चाहते थे, पर मैंने कहा कि खोपरे का तेल ही ठीक रहेगा। ऐसा लगता है कि इन्हें स्टेट अधिकारियों ने भिजवाया होगा—इनकी रिपोर्ट लेकर प्रतिबंध वापस लेने का निमित्त बनाने के लिए।

बापू का तार आया। जिसमें उन्होंने डा० भरूचा को महादेवभाई के साथ भेजने का लिखा। यह भी लिखा कि परवानगी लेकर रखो। उनको तार वापस भिजवा दिया कि फिलहाल उन्हें भेजें।

दामोदर के द्वारा पत्रों की नकलें होम मिनिस्टर को भेजी।

९-८-३९

श्री बी० सी० टेलर (आई० जी० पी० जयपुर) करीब १२-१५ बजे आये। मुझे दूर से ही 'सेठ साहब उठो, जागो' वगैरा कहकर सोते से जगाया। बाद में उन्होंने होम मिनिस्टर का आर्डर दिखाया। मेरे मांगने पर उसकी नकल करके व सही करके दी। थोड़ी देर इधर-उधर की गप्पें मारीं। अपने दोनों पांवों में रूमेटिजम (गठिया) हुआ वह बताया। दामोदर को आते ही फोन करने को कहा।

फरासखाने का सामान रखने के लिए होम मिनिस्टर को फोन करने को कहा। एक शिकारी के लिए भी कहा। दामोदर ने छूटने के तार वगैरा भेजे।

मित्र लोग ६-७ मोटरों में आ पहुंचे। आज ही जलूस निकालने का आग्रह करने लगे। मैंने १५ ता० के बाद का कहा। आखिर मित्रों ने कल निकालने का निश्चय किया। आज दिन में ज्यादा-से-ज्यादा आदमी मिलने आये।

१०-८-३९

रात को सो तो जल्दी गये, परन्तु नींद देर तक नहीं आई। आगे का प्रोग्राम का विचार व योजना देर तक चलती रही। आज के प्रोग्राम के बारे में भी विचार आते रहे।

कर्नल विलियमसन डा० प्रभुदयाल जी को लेकर ९ बजे आये। १० बजे वापस गये। एक घंटे तक तपासते रहे। ब्लडप्रेशर १६५-११० बतलाया। जख्म देखा। मैंने तो कह दिया कि घाव का इलाज तो कुदरती उपचार से कर रहा हूं; खोपरे का तेल व पानी की गीली पट्टी का। वह वेसलीन लगाना चाहते थे, पर मैंने कहा कि खोपरे का तेल ही ठीक रहेगा। ऐसा लगता है कि इन्हें स्टेट अधिकारियों ने भिजवाया होगा—इनकी रिपोर्ट लेकर प्रतिबंध वापस लेने का निमित्त बनाने के लिए।

बापू का तार आया। जिसमें उन्होंने डा० भरूचा को महादेवभाई के साथ भेजने का लिखा। यह भी लिखा कि परवानगी लेकर रखो। उनको तार वापस भिजवा दिया कि फिलहाल उन्हें भेजें।

दामोदर के द्वारा पत्रों की नकलें होम मिनिस्टर को भेजी।

९-८-३९

श्री बी० सी० टेलर (आई० जी० पी० जयपुर) करीब १२-१५ बजे आये। मुझे दूर से ही 'सेठ साहब उठो, जागो' वगैरा कहकर सोते से जगाया। बाद में उन्होंने होम मिनिस्टर का आर्डर दिखाया। मेरे मांगने पर उसकी नकल करके व सही करके दी। थोड़ी देर इधर-उधर की गप्पें मारी। अपने दोनों पावों में रुमेटिज्म (गठिया) हुआ वह बताया। दामोदर को आते ही फोन करने को कहा।

पराखाने का सामान रखने के लिए होम मिनिस्टर को फोन करने को कहा। एक शिकारी के लिए भी कहा। दामोदर ने छूटने के तार वगैरा भेजे।

सब लोग ६-७ मोटरों में आ पहुंचे। आज ही जलूस निकालने का आग्रह करने लगे। मैंने १५ ता० के बाद का कहा। आखिर मित्रों ने कल निकालने का निश्चय किया। आज दिन में ज्यादा-से-ज्यादा आदमी मिलने आये।

१०-८-३९

इस बारे का [illegible] है व [illegible] हुआ के बाद म [illegible] भी हिमाय म [illegible] [illegible] है।
[illegible] का [illegible] का विचार है। श्री आयंगर ठाकुर ने [illegible] ने [illegible] [illegible] कहा। रात मिनिस्टर में कौन पर जो बातें हुई वह कहीं। मैंने [illegible] कहा कि [illegible] विचारे हिन्दुस्तान व कमजोर मिनि-स्टरों का [illegible] जाता है।
[illegible] ने बताया कि बीकानेर महाराज जयपुर आये हुए हैं।
देर तक अखबार देखता रहा। थोड़ी वर्षा हुई।
[illegible] की पढ़ाई व भावी कार्य के संबंध में [illegible] से बातें।

८-८-३९

बीकानेर महाराज के नाम का पत्र तैयार किया।
उमा आई। उसने कहा कि मामर आज सुबह तो मैंने भी दी। सो बीकानेर महाराज चले भी गये होंगे, फिर भी उनके नाम का पत्र थी टॅलर के मार्फत लिखवा दिया। यहां से चले गये हों तो बीकानेर भेजने का लिख भेजा।
आज के अखबारों में मुझे छोड़े जाने का आन्दोलन शुरू हुआ, खासकर 'हिन्दुस्तान टाइम्स' की टिप्पणी ठीक नहीं मालूम दी।
उमा ने बताया कि शिकारखाने के बारे में मतभेद होने के कारण प्राइम मिनिस्टर कल एकाएक चले गये। महाराज ने मेहसिंह का पक्ष लिया, वगैरा।
आपीसार-दन-चार्ज ने भी कहा कि यह बात ठीक है। वह कल मोटर से दिल्ली चले गये। उनका सामान भी गया। उनकी मेम सा० बाकी बचा सामान लेकर बाद में जायेंगी।
उमा ने यह भी बताया कि सब हिन्दुस्तानी मिनिस्टरों ने एकमत होकर मेरी रुकावटें दूर करने के बारे में राय दी। आखिर का फैसला महाराज करने वाले हैं।
कलकत्ता से कमल का तार आया। चि० सावित्री को कल ता० ७ अगस्त को बच्ची हुई। वजन ६॥ रतल; रंग आदि सावित्री के माफिक। चेहरा राहुल सरीखा लिया।

कर्नल विलियमसन डा० प्रभुदयाल जी को लेकर ६ बजे आये। १० बजे वापस गये। एक घंटे तक तपासते रहे। ब्लडप्रेशर १६५-११० बतलाया। जख्म देखा। मैंने तो कह दिया कि पाव का इलाज तो कुदरती उपचार से कर रहा हूं, खोपरे का तेल व पानी की गीली पट्टी का। वह वेसलीन लगाना चाहते थे, पर मैंने कहा कि खोपरे का तेल ही ठीक रहेगा। ऐसा लगता है कि इन्हें स्टेट अधिकारियो ने भिजवाया होगा—इनकी रिपोर्ट लेकर प्रतिबंध वापस लेने का निमित्त बनाने के लिए।

बापू का तार आया। जिसमें उन्होंने डा० भरूचा को महादेवभाई के साथ भेजने का लिखा। यह भी लिखा कि परवानगी लेकर रखो। उनको तार वापस भिजवा दिया कि फिलहाल उन्हें भेजें।

दामोदर के द्वारा पत्रों की नकलें होम मिनिस्टर को भेजी।

९-८-३९

श्री बी० सी० टेलर (आई० जी० पी० जयपुर) करीब १२-१५ बजे आये। मुझे दूर से ही 'सेठ साहब उठो, जागो' वगैरा कहकर सोते से जगाया। बाद में उन्होंने होम मिनिस्टर का आर्डर दिखाया। मेरे मांगने पर उसकी नकल करके व सही करके दी। थोड़ी देर इधर-उधर की गप्पें मारी। अपने दोनो पावों में रूमेटिज्म (गठिया) हुआ वह बताया। दामोदर को जाते ही फोन करने को कहा।

पाखाने का सामान रखने के लिए होम मिनिस्टर को फोन करने को कहा। एक शिकारी के लिए भी कहा। दामोदर ने छूटने के तार वगैरा भेजे।

मित्र लोग ६-७ मोटरो में आ पहुंचे। आज ही जलूस निकालने का आग्रह करने लगे। मैंने १५ ता० के बाद का कहा। आखिर मित्रों ने कल निकालने का निश्चय किया। आज दिन में ज्यादा-से-ज्यादा आदमी मिलने आये।

१०-८-३९

रात को सो तो जल्दी गये, परन्तु नींद देर तक नहीं आई। आगे का प्रोग्राम का विचार व योजना देर तक चलती रही। आज के प्रोग्राम के बारे में भी विचार आते रहे।

आगे के प्रोग्राम के बारे में विचार आते रहे।

आगरा (रेल में) १२-८-३९

प्रार्थना के बाद मौन खोला। हीरालालजी शास्त्री व दामोदर आये। देर तक प्रजामण्डल के कार्य व प्रोग्राम की बातें करते रहे। शिवप्रसादजी खेतान मिलने आये।

करीब १॥ बजे कपूरचन्दजी पाटनी व देशपांडे आये। वर्धा से बापू का फोन आया कि मुझे एक बार वहां उन्होंने जल्दी बुलवाया है। वह मुझे डा० विधान को भी दिखाना चाहते हैं। सरदार व राजेन्द्रबाबू भी वहीं है। एक बार पहले तो नहीं जाने का ही विचार किया पर बाद में कपूरचन्दजी व देशपांडे आदि की राय वहां हो आने की होने से जाने का निश्चय किया।

मोटर से आगरा व वहां से ग्राण्ड ट्रंक से वर्धा जाने का निश्चय। कपूरचन्दजी ४॥ बजे छुट्टनलाल की मोटर लेकर आये। ६ ४० को नसियां के बाग से आगरा के लिए रवाना हुए। साथ में जानकी, उमा, दामोदर। विट्ठल को लाचारी से सामान आदि के [illegible] पीछे छोड़ना पड़ा।

जयपुर से आगरा १४० मील है। आगरा ६ बजे पहुंचे। [illegible] लगे। जौहरी के यहां दूध लिया। [illegible] हुआ। [illegible] बातचीत। आगरा छावनी से ट्रेन में [illegible] रवाना। [illegible]

में कांग्रेस, नागपुर मिनिस्ट्री, जयपुर, राजकोट की स्थिति आदि के बारे में विचार-विनिमय होता रहा।

बम्बई, १५-८-३९

बम्बई में बहुत से मित्र लोग स्टेशन पर आये थे—बिड़ला, [illegible], गोविन्ददासजी, रामाजी, केशवजी, श्रीनिवासजी वगैरा। बिड़ला हाउस में ठहरा।

डा० जीवराज डा० भरूचा को लेकर आये। उन्होंने तपासा। खून, पिशाब, दांत, वगैरा तपास कर रिपोर्ट बताई। शाम को देसाई ने दांत के कई फोटो लिये। डा० शाह ने गला, नाक, पांव का जख्म वगैरा देखा। जख्म का ड्रेसिंग किया। उन्होंने अपनी राय दी। डा० [illegible], शाह वैद्य व जीनाभाई देसाई ने भी इस रोग के बारे में अपनी राय दी। ज्यादा चिन्ता का कारण नहीं बताया। रामकिशन डालमिया ने उनकी स्थिति समझी।

लक्ष्मणदासजी डागा से भी। भागवती दानी, पन्नू, खण्डू देसाई मिलने आये।

१६-८-३९

सरदार वल्लभ भाई आये। रामकिसन डालमिया भी। उनसे बातचीत।
डा० शाह के यहां सरदार को बवासीर में इंजेक्शन दिया।

१७-८-३९

जमनादास गांधी, मूलजीभाई व राधाकिसन से बातें। ज्योतिभूषण, महेशचन्द्र (जमवतराय) डा० पुरुषोत्तम पटेल, डा० जीवराज मेहता, डा० भरूचा वगैरा आये।

१८-८-३९

डा० दास, होमियोपैथ, मिलने आये। देर तक बातचीत। एक महीना उनकी दवा लेकर देखने का विचार—बापू से सलाह करके। इनकी राय हुई कि दांत नहीं निकालने चाहिए। कन्हैयालाल मुंशी, होम मिनिस्टर—बम्बई आये। देर तक बातें करते रहे।
राजा नारायणलाल पित्ती आये। श्री रामेश्वरदास बिड़ला व इनकी शक्कर मिल की गन्ने के क्षेत्र के झगड़े के बारे में। मैंने उन्हें आखिर कहा कि वहां

मे कांग्रेस, नागपुर मिनिस्ट्री, जयपुर, राजकोट की स्थिति आदि के बारे मे विचार-विनिमय होता रहा।

बंबई, १५-८-३९

बम्बई मे बहुत से मित्र लोग स्टेशन पर आये थे—बिडला, डालमिया, गोविंदलालजी, डागाजी, बेगराजजी, श्रीनिवासजी वगैरा। बिडला हाउस मे ठहरा।

डा० जीवराज डा० भरुचा को लेकर आये। उन्होने तपासा। खून, पिशाब, दांत, वगैरा तपास कर रिपोर्ट मगाई। शाम को देसाई ने दांत के कई फोटो लिये। डा० शाह ने गला, नाक, पांव का जख्म वगैरा देखा। जख्म का ड्रेसिंग किया। उन्होने अपनी राय दी। डा० खम्बाटा, हाड वैद्य व जीनाभाई देसाई ने भी इस रोग के बारे मे अपनी राय दी। ज्यादा चिन्ता का कारण नही बताया। रामकिसन डालमिया से उनकी स्थिति समझी।

लक्ष्मणदासजी डागा से भी। भाग्यवती दानी, पन्नू, खण्डू देसाई मिलने आये।

१६-८-३९

सरदार वल्लभ भाई आये। रामकिसन डालमिया भी। उनसे बातचीत। डा० शाह के यहां सरदार को ववासीर मे इंजेक्शन दिया।

१७-८-३९

जमनादास गांधी, मूलजीभाई व राधाकिसन से बाते। ज्योतिभूषण, महेश-चन्द्र (जसवनराय) डा० पुरषोत्तम पटेल, डा० जीवराज मेहता, डा० भरुचा वगैरा आये।

१८-८-३९

डा० दास, होमियोपैथ, मिलने आये। देर तक बातचीत। एक महीना उनकी दवा लेकर देखने का विचार—बापू से सलाह करके। इनकी राय हुई कि दांत नही निकालने चाहिए। कन्हैयालाल मुंशी, होम मिनिस्टर—बम्बई आये। देर तक बाते करते रहे।

राजा नारायणलाल पित्ती आये। श्री रामेश्वरदास बिड़ला व इनकी नरकर मिर की पन्ने के क्षेत्र के झगडे के बारे मे। मैने उन्हें आखिर कहा कि वह

महिला आश्रम, विद्यालय आदि के मित्र लोग आये। मन में प्रेम से भावना जागृत हुई। किशोरलालभाई, जाजूजी वगैरा भी थे। जलूस की तैयारी की थी, पर मैंने इनकार कर दिया।

बगले पहुंचकर स्नान किया। फिर सरदार, महादेवभाई व बा के साथ सेगांव गया। प्रार्थना में शामिल। बाद में पू० बापू को स्वास्थ्य तथा जयपुर की स्थिति का थोड़े में वर्णन सुनाया। रास्ते में सरदार व महादेवभाई को भी सुनाया था।

वापस पर आये। आज बहुत दिनों के बाद यहां वर्षा होने से सबों को खुशी हुई। बापू को भी।

आज करीब डेढ़ महीने से ज्यादा दिनों बाद, शाम को सरदार, राधाकिसन व जानकी की इच्छा होने से व मन की कमजोरी के कारण मूग, चावल व जलेबी का भोजन किया।

सरदार से डालमिया व ए० सी० सी० मर्जर के समझौते की सारी स्थिति समझी। वर्किंग कमेटी ने बोस के बारे में जो ठहराव किया व लड़ाई के समय कांग्रेस की नीति क्या होगी, उस बारे में जवाहरलाल का पूरा सहयोग था। जवाहरलाल बोस के लिए एक वर्ष चाहते थे। लड़ाई के ठहराव का ड्राफ्ट जवाहरलाल का था। बोस के संबंध का बापू का। देर तक इसी बारे में बातें होती रहीं। मेरा त्यागपत्र स्वीकार नहीं हुआ।

वर्धा, (रेल में) १४-८-३९

जवाहरलालजी को कमल के बारे पत्र भेजा।

जयपुर प्रोग्राम आदि के बारे में पत्र भेजा। बापू ने कमल को चीन जाने की सलाह नहीं दी। कमल ने जवाहरलालजी को तार कर दिया। सावित्री व लक्ष्मण प्रसादजी की इनकारी आ गई थी।

सरदार के आग्रह के कारण आज ही बम्बई चलकर डाक्टरों से परीक्षा करा लेने का निश्चय करना पड़ा।

सरदार, राजेन्द्रबाबू से व राधाकिसन से डालमिया व ए० सी० सी० मर्जर की स्थिति समझी।

नागपुर मेल से जानकी, दामोदर, विट्ठल, डा० महोदय, सरदार वल्लभभाई के साथ रवाना। सेकण्ड क्लास की दो टिकट लीं। सरदार से रास्ते

में कांग्रेस, नागपुर मिनिस्ट्री, जयपुर, राजकोट की स्थिति आदि के बारे में विचार-विनिमय होता रहा।

बम्बई, १५-८-३९

बम्बई में बहुत से मित्र लोग स्टेशन पर आये थे—बिड़ला डालमिया, गोविन्दलालजी, दागाजी, बेगराजजी, श्रीनिवासजी वगैरा। बिड़ला हाउस में ठहरा।

डा० जीवराज डा० भरुचा को लेकर आये। उन्होंने तपासा। मूत्र, पिशाब, दांत, वगैरा तपास कर रिपोर्ट बनाई। शाम को देसाई ने दांत के कई फोटो लिये। डा० शाह ने गला, नाक, पांव का जखम वगैरा देखा। जखम का ड्रेसिंग किया। उन्होंने अपनी राय दी। डा० गरवारा, हार्ट वैद्य व जीनाभाई देसाई ने भी इस रोग के बारे में अपनी राय दी। ज्यादा चिन्ता का कारण नहीं बताया। रामकिशन डालमिया ने उनकी स्थिति समझी।

लक्ष्मणदासजी दागा से भी। भाग्यवती दानी, पन्नू, गण्डू देसाई मिलने आये।

१६-८-३९

सरदार वल्लभ भाई आये। रामकिसन डालमिया भी। उनसे बातचीत। डा० शाह के यहां सरदार को ववासीर में इन्जेक्शन दिया।

१७-८-३९

जमनादास गांधी, मूलजीभाई व राधाकिसन से बातें। ज्योतिभूषण, महेशचन्द्र (जसवतराय) डा० पुरुषोत्तम पटेल, डा० जीवराज मेहता, डा० भरुचा वगैरा आये।

१८-८-३९

डा० दास, होमियोपैथ, मिलने आये। देर तक बातचीत। एक महीना उनकी दवा लेकर देखने का विचार—बापू से सलाह करके। इनकी राय हुई कि दांत नहीं निकालने चाहिए। कन्हैयालाल मुंशी, होम मिनिस्टर—बम्बई आये। देर तक बातें करते रहे।

राजा नारायणलाल पित्ती आये। श्री रामेश्वरदास बिड़ला व इनकी शक्कर मिल की गन्ने के क्षेत्र के झगड़े के बारे में। मैंने उन्हें आखिर कहा कि वहां

फैसला करके भेज दें। उन्होंने स्वीकार कर लिया। वे कहते थे, मैं कर दूं, परन्तु यह संभव नही था।
रामेश्वरजी, हीरालाल शाह तथा अन्य मित्र आये।
मुकन्द आयर्न का बम्बई का कारखाना जीवनलालभाई के आग्रह के कारण देखा। माटुंगा मे केशवदेवजी के साथ भोजन। वही पर बच्छराज कम्पनी, शुगर कम्पनी, फैक्टरी कम्पनी, मुकन्द कम्पनी आदि के बारे मे विचार-विनिमय। केशवदेवजी, रामेश्वर, कमलनयन, जीवणलालभाई, फतेहचन्द व रामेश्वर अग्रवाल थे।
डा० रजबअली के घर जैना बहन व लड़को से मिलना।
वर्धा रवाना।

वर्धा, १९-८-३९

वर्धा स्टेशन पर दीपक चौधरी (कलकत्तावाला) जाता हुआ मिला। घनश्यामसिंह जी गुप्त नागपुर से आये। उनकी दूसरी लड़की शकुन्तला (बी० एससी० बी० टी०) भी आई। सब मिलकर बापूजी के पास सेगाव गये। बापूजी ने डा० भरुचा, डा० जीवराज व डा० मेहता की रिपोर्ट ध्यान-पूर्वक सुनी। विचार-विनिमय के बाद पूना रहकर डा० मेहता की देखरेख मे इलाज कराने की बापू ने सलाह दी। जयपुर जाना जरूरी है इसलिए एक महीने तक इच्छा हो तो, डा० दास की होमियोपेथी की चिकित्सा करके देख लू। बापूने कहा कि अनाज खाना एक बार बंद कर दो व फल, साग, दूध लो। आज से शुरू तो किया है।
राजेन्द्र बाबू, प० रविशंकर शुक्ल, द्वारकाप्रसाद मिश्र व घनश्यामसिंह गुप्ता से देर तक बातचीत होती रही।

२०-८-३९

गिरधारी, कृपलानी व पूनमचन्द बांठिया से हिन्दुस्तान हाउसिंग व नागपुर बैंक के बारे मे बातें।
बापू के पास जाकर आये। उनसे ११॥ से १ बजे तक जयपुर के सम्बन्ध मे व स्वास्थ्य के सम्बन्ध मे बातचीत। जयपुर के बारे मे प्रजामण्डल के नाम मे थोड़ा परिवर्तन करना जरूरी मालूम हो तो कर दिया जावे। जयपुर राज्य प्रजामण्डल के मेम्बर दूसरी राजनैतिक संस्था के सदस्य नहीं

से बातें।
कमल बम्बई से आया। महेशचन्द्र के बारे में तथा अन्य बातचीत।
महिला आश्रम में तारा भारती के बारे में, खासकर उसके स्वास्थ्य बारे में, बातें कीं।
सेगाव में राणी विद्यादेवी व उनकी लड़की तारादेवी से उर्मिला ने परि करवाया।
बापू से जयपुर, उमा के सम्बन्ध, नागपुर बैंक, बीकानेर महाराजा, बा कोबा वगैरा के बारे में व कलकत्ता होकर जयपुर जाने के बारे में बा चीत।
चिरंजीलाल बडजाते को बैंक के काम के लिए देना व शिवनारायण लध्धड को दुकान का काम देने का तय।
अभ्यंकर मेमोरियल ट्रस्ट की सभा हुई। छगनलाल भारूका मिनिस्ट देशमुख बॅरिस्टर, पूनमचन्द रांका आये। मीटिंग हुई। ट्रस्ट के काम बारे में विचार-विनिमय।
पवनार जाकर विनोबा से बातचीत, वहां प्रार्थना।

२३-८-३९

द्वारकादास भैया आया। उसकी बातचीत से ऐसा लगा कि उसे अपनी भू नहीं मालूम देती। इसलिए विशेषतः उसकी इच्छा से यह प्रकरण गंगाबिसन के सुपुर्द किया।
किशोरलाल भाई व जाजूजी आये। बातें।
विद्याबहन, तारा देवी व जानकी के साथ आज प्रथम बार मगन संग्रहाल व मगनवाड़ी देखी।
श्री छगनलाल भारूका हिंगणघाट से वापस आया। बातें, विनोद। खास कर गुप्तजी की दुर्घटना का वर्णन उन्होंने बताया। दुःख हुआ।
श्री शुक्ल, मजिस्ट्रेट के सामने, मैंने व चि० शान्ताबाई ने श्रीनिवास ट्रस्ट की ओर से आम मुख्त्यार-पत्र, रामगढ के दो जनों को दिया, उसपर सही की। महिला आश्रम में चि० मृदुला (मीरा की लड़की) की जन्मगांठ मनाई। दूध, फल वहीं पर लिया। श्री काशीनाथजी, बासन्ती,
। आश्रम के सम्बन्ध में बातचीत।

श्री शकुन्तला रानी, धनश्यामसिंहजी गुप्त की लड़की, से चर्चा चलाते हुए देर तक उनके भावी प्रोग्राम व उनकी बहिन के सम्बन्ध में बातचीत। इनका गोत्र गोभील है।

२४-८-३९

घूमते हुए सुबह पैदल महिला आश्रम तक। रास्ते में विद्यादेवीजी व तारा बहन ने आपबीती की कई बातें सुनाई, जिससे हंसी खूब आई। बाद में आश्रम में जो उद्योग चल रहा था वह देखा।
ग्रान्ड ट्रंक से श्री प्रीतमचन्द अग्रवाल व राजनारायण अग्रवाल आये।
म्यु० कर्मचारियों ने स्वागत किया। वहां गये। थोड़ा बोले।
पवनार में विनोबा से बातचीत। राजनारायण का परिचय करवाया।
प्रीतमचन्द अग्रवाल व राजनारायण से बातें। दोनों ने उमा से सम्बन्ध करने की अपनी पूर्ण स्वीकृति दी। उमा की महात्वाकांक्षा व इच्छा उन्हें समझाकर कही। बाद में जानकी, उमा, श्रीमन्, मदालसा कमल से बातें।
प्रायः सबों को ही राजनारायण पसन्द आ गये, स्वभाव, वातावरण, वगैरा की विशेष जानकारी।

२५-८-३९

चि० वासन्ती व चारुलता मिलने आये। चारुलता दुखी थी विशेषकर आश्रम में नीलम्मा ने जो वातावरण पैदा किया था उससे। उसे सांत्वना दी। चिन्ता न करने को कहा। श्री प्रीतमचन्द अग्रवाल (मथुरावाले) ग्रान्ड ट्रंक से मथुरा गये। श्री राजनारायण (आगरा वाले) विनोबा के पास कमल के साथ गये।
बाद में मैं बापू से उन्हें व उमा को मिलाकर लाया। बापू ने राजनारायण को उमा के लिए उपयुक्त समझा।
वहां पूज्य बा राजकुमारीजी, मीरा बहन ने भी देख लिया। आशा बहन से जानकी ने मिलाया।
सुबह किशोरलाल भाई व जाजूजी ने देखा था।
आज दूध, फल पर सातवां रोज है। तीन रोज से भूख प्रायः बन्द-सी हो गई है। बापू ने दो रतल मोसम्बी रस, एक रतल अंगूर रस, कम से कम

गाड़ी (रेल में) २६-८-३९

जाजूजी, रामनारायण, श्रीनिवास, दुर्गा के साथ रेल से कलकत्ता रवाना हुआ। नागपुर तक [illegible] साथ थे। यहां पर छगनलाल, पूनम[illegible] आदि मित्र मिलने आए।

नागपुर में [illegible] भी करवाई। यहाँ के स्टेशन में भीड़ बहुत ज्यादा थी। दुर्गा ने [illegible] आये। [illegible] में भी बहुत लोग आये।

रेल में रामनारायण से उनके कुटुम्ब का परिचय व स्थिति समझी।

कलकत्ता, २७-८-३९

नागपुर मेल से हावड़ा पहुंचे। डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष व मित्र-मण्डल स्टेशन पर मिलने आया। लक्ष्मीप्रसादजी के यहां ठहरे। कई मित्र यहां भी पहुंच गये। घनश्यामदासजी बिड़ला व ब्रिजमोहनजी आये। देर तक बातचीत। रात को बिड़ला पार्क में जयपुर के सम्बन्ध में विशेष रूप से विचार-विनिमय, सुनाया।—घनश्यामदासजी को राधाकिशन वगैरा के व्यवहार से असन्तोष रहा। मुझे उनकी उदासीनता के कारण कुछ बातों की जांच करनी होगी।

मारवाड़ी रिलीफ कमेटी के उत्सव में गये। ब्रिजमोहनजी सराफ ने एक्स-रे के लिए पच्चीस सौ रुपये दिये। वहां की व्यवस्था व तरीका देख कर समाधान नहीं हुआ।

डा० प्रफुल्ल घोष से देर तक बातचीत। हीरालाल शास्त्री से भी।

२८-८-३९

र हुन के साथ लेक पर घूमने गये। वहां कई मित्र लोग मिले।

डा० विधान राय ने मेरे एक्स-रे, फोटो व रिपोर्ट देखी। उन्होंने कहा कि सारे दांत निकलवाने की जरूरत नहीं। केवल खराब दांत धीरे-धीरे निकलवा देना ठीक रहेगा। दवा लेने को बतायी।

नर्मदा, गजानन्द, भागीरथी, सीतारामजी, हीरालालजी, ब्रिजमोहनजी की स्त्री, गोपा, महाराजा, राजनारायण मिलने आये। मणीबाई पोद्दार व रघुनाथ प्रसादजी पोद्दार भी मिले।

शाम को जानकी, नर्मदा, गजानन्द, श्रीनिवास, बेलूर मठ देखकर आये। रामकृष्ण परमहंस का मन्दिर सुन्दर व रमणीय बना। वर्षा आयी इसमें जल्दी आना पड़ा। नहीं तो वहां ज्यादा ठहरते।

ज्वालाप्रसादजी कानोडिया मिलने आये। दांत के लिए सरसों का तेल, नमक व माल मंजन करते रहने को कहा। दातून नहीं।

माहेश्वरी भवन में जयपुर के विषय में जाहिर सभा हुई। डा० प्रफुल्ल बाबू सभापति थे। वहां मानपत्र भी दिये गये। मैंने व हीरालालजी शास्त्री ने जयपुर स्थिति पर कहा।

श्री लक्ष्मणप्रसादजी से जाते-आते ठीक बातें हुई। घर की स्थिति सावित्री के वर्धा भेजने के बारे में तथा अन्य।

२९-८-३९

दीपचन्दजी, किशनलाल व दुर्गाप्रसाद खेतान का कुटुम्ब मिलने आया।

बिड़ला पार्क गये। वहीं दूध व फल लिये। घनश्यामदासजी व ब्रिजमोहन से जयपुर के सम्बन्ध में बातचीत। तीनों बहनों ने रक्षा बांधी। सबों से मिलना। निजी कुटुम्ब का-सा व्यवहार देखा। सुख मिला। परमात्मा हमें इस योग्य बनावे।

सीतारामजी सेकसरिया के यहां हीरालालजी से भी बातें। [illegible] ने रक्षा बांधी।

मथुरादासजी के घर नर्मदा ने राखी बांधी।

मथुरादासजी से उनके व श्रीनिवासजी पोद्दार से धन [illegible] के बारे

में बातचीत।

हिन्दुस्तान हाउसिंग का फैसला जल्दी कर देने को कहा। हुकमीचन्द जूट मिल के बारे में उन्होंने कहा कि तीस-पैंतीस लाख की व्यवस्था हो तो फिर मैनेजमेन्ट हो सकता है।

देवीप्रसादजी खेतान से मिलना, बातचीत। सावित्री, उर्मिला बहन, लक्ष्मणप्रसादजी से देर तक बातचीत।

बनारसीलाल (भागलपुर), श्रीनिवासजी पोद्दार व बालकिसनजी पोद्दार को बुलाकर प्रभुदयालजी का मामला सलटाने को कहा।

शरत् बोस से करीब एक घंटे तक दिल खोलकर बातचीत। सुभाष बाबू किस प्रकार गलत रास्ते जा रहे हैं, यह कहा। उन्होंने भी मेरे विचार व मेरी यह योजना पसन्द की कि वह बापू से दिल खोलकर बात कर लें व उनकी आज्ञानुसार व्यवहार रखे। उन्हें खुद फारवर्ड ब्लाक पर विश्वास नहीं है। सर सुलतान, विधान राय वगैरा के बारे में कहा। देहली मेल से जयपुर रवाना। जानकी, हीरालालजी शास्त्री, श्रीनिवास, दुर्गी साथ में, जयपुर तक दो सेकण्ड के टिकिट लिये।

रेल में, ३०-८-३९

मुगलसराय में कृष्णकान्त मालवीय मिले। पूज्य मालवीयजी के स्वास्थ्य, वाइस चान्सलर आदि सम्बन्धी बातें।

इलाहाबाद में पुरुषोत्तमदासजी टण्डन व रामनरेशजी त्रिपाठी मिले। टण्डनजी ने साहित्य-भवन को लाहौर की संस्था के साथ मिलाने के बारे में योजना बतलाई। जयपुर से जवाब देने का कहा।

कानपुर में पद्मावतजी सिंहानिया, डा० जवाहरलालजी (परिवार-सहित) नेवटिया तथा अन्य मित्र लोग मिलने आये। गाड़ी देर तक ठहरी। यहां से काका सा० व कान्तीलाल झवेरी साथ हुए।

टूण्डला में मदनमोहन चतुर्वेदी का बड़ा भाई (पोस्ट मास्टर) मिला, शायद व उसका लड़का व स्त्री आगरा में मिले।

आगरा में श्री प्रतापनारायण, हरनारायण (हरेश), प्रीतमचन्दजी के छोटे भाई, जो आगरा में वकालत करते हैं, मिले।

काका सा० व श्रीनिवास को हरेश के साथ ताजमहल देखने भेज दिया।

प्रतापनारायण के साथ देर तक बातचीत।

स्नान करने से थकावट कम हुई। सेकण्ड क्लास में भी भीड़ तो हो गयी थी, परन्तु पहले से ही दो सीट नीचे की रिजर्व हो जाने से ठीक रहा। आगरा की ओर वर्षा न होने से अकाल पड़ गया। रास्ते में जानकी से ठीक-ठीक बातें व विचार विनिमय होता रहा।

जयपुर (कनवितों का बाग) ३१-८-३९

सुबह पांच बजे जयपुर पहुंचे। स्टेशन पर मित्र लोग आये। वहां से जानकी, बाबा सा०, श्रीनिवास, कान्ति झवेरी के साथ कनवितों के बाग पहुंचे।

राधाकिसन से बातें। घनश्यामदासजी बिड़ला को जो असन्तोष था, वह उसे बताया। एक तो खासकर यह कि उन्होंने कहा था कि बापू ने सत्याग्रह स्थगित करने का कहा इसपर राधाकिसन ने विश्वास नहीं किया, ऐसी उनकी समझ हुई। दूसरे पिलानी के जिस व्यक्ति ने सत्याग्रह में भाग लिया था उसके बारे में उनकी राय अच्छी बनाई थी, उसके विषय में राधाकिसन ने कहा कि उसके बारे में औरों की राय खराब नहीं।" इन बातों से उन्हें विशेष बुरा लगा व चोट पहुंची। राधाकिसन इस बारे में उन्हें हरिभाऊजी से बात करके पत्र लिखेगा। घनश्यामदासजी की गैर-समझ दूर करना जरूरी है। हीरालालजी, कपूरचन्दजी, हंस डी राय, हरिश्चन्द्रजी वगैरा आये। रा० ब० अमरसिंह के पत्र का जवाब, श्री महाराज सा० की मुलाकात के बारे में, भेजा। जोबनेर ठाकुर से मदनलाल की जो बातें हुईं वह उसने कही।

१-९-३९

आज जयपुर महाराज से मिलना था, उसके ही विचार चलते रहे।

पू० बाबा सा० से सुबह महिला-आश्रम की जवाबदारी तथा हिन्दी-प्रचार के कार्य के बारे में बातचीत। बाबा सा०, राधाकिसन, कान्ती मेहता व श्रीनिवास सीकर गये।

जोबनेर ठाकुर से मिला। वर्तमान स्थिति पर विचार-विनिमय। प्रजा-मण्डल का उद्देश्य उन्हें समझाकर कहा। श्री महाराज सा० से दोनों पक्ष-कार मिलने के बारे का खुलासा किया।

आज प्रथम बार रामबाग महल में दोनों पक्षकार मेरा (एक जयपुरियन

का) जाना हुआ। रायबहादुर ठा० अमरसिंहजी मिले। अन्य ए० डी० सी० ने प्रेम से स्वागत किया।

श्री महाराजा सा० से १०॥ से १२। तक दिल खोलकर बातचीत हुई। पहले कु० सा० अमरसिंहजी मौजूद थे। बाद में महाराजा से अकेले में ठीक, सन्तोषकारक बातचीत हुई :

(१) पब्लिक सोसाइटीज़ एक्ट रद्द हो जाना चाहिए;
(२) अखबारों पर से रोक उठा देनी चाहिए। खासकर 'हिन्दुस्तान,' 'सैनिक', 'अर्जुन', 'जयप्रजा'।
(३) साप्ताहिक-पत्र यहां से निकालने की स्वीकृति;
(४) शिकारवाले तथा किसान कैदियों को जल्दी छोड़ देने के बारे में;
(५) 'शिकारखाने-कानून' में सुधार, मृत व्यक्तियों के घरवालों की नुकसानी, भैरुंसिंहजी को इस पद से हटाना;
(६) शिक्षा-विभाग में सुधार, बिड़ला-कालेज को स्वीकृति, घनश्यामदास जी के बारे में चर्चा;
(७) रचनात्मक-कार्य, खादी व अकाल-कार्य;
(८) हिन्दुस्तानी प्राइम मिनिस्टर,
(९) वर्तमान केबिनेट में सुधार;
(१०) सीकर रावराजाजी तथा अन्य बातें।

२-८-३९

कल महाराजा से जो बातें हुईं उसपर विचार चलता रहा, खासकर प्राइम मिनिस्टर के सम्बन्ध में। डेढ़ बजे ही उठकर प्रार्थना करके नोट लिखने बैठ गया।

जल्दी तैयार होकर जयपुर। जोबनेर ठाकुर सा० से मिलकर सोसाइटीज़ एक्ट को जल्दी ही वापस ले लेने का उन्हें समझाया। उन्होंने स्वीकार किया। कैदियों को छोड़ने, अखबारों पर से पाबन्दी हटाना आदि का महाराजा की वर्षगांठ से पहले सब फैसला हो जाना जरूरी है, यह बताया। उन्होंने अपनी जो राय थी, वह बतलायी।

आज अमरसिंहजी व महाराजा से मिलना नहीं हुआ।
हीरालालजी वगैरा मित्रों से बातचीत।

रात को गोपीनाथजी मास्टर (कोटावाले) व चिरजीलाल अग्रवाल आये। गोपीनाथजी ने बून्दी महाराज व रावटंगन की हालत आश्चर्यजनक कही।

श्री अणुमजी व कोटा-दरबार का सन्देश बतलाया।

३-६-३९

बहुत समय के बाद लूणियावास तक पैदल घूमने सब लोगो के साथ गये। रास्ते मे रा० ब० कु० अमरसिहजी का पत्र मिला। ११॥ बजे मुलाकात के लिए बुलाया।

घूमते हुए लौटते मे सत्यप्रभा ने अपनी दुखदायक हालत कही। बुरा लगा, उसे समझाया।

११॥ बजे पहले अमरसिहजी से मिला। सीकर व यग के पत्र के बारे मे बातचीत। श्री महाराजा साहब से मिलकर 'सोसाइटीज एक्ट' जल्दी वापस लेने, कैदियो को छोडने आदि का आजकल मे ही फैसला हो जाये तो उनकी वर्षगाठ तक वातावरण ठीक कर लिया जाय।

श्री महाराजा सा० से खानगी मे प्राइम मिनिस्टर के बारे मे विचार-विनिमय। बडौदा दिवान को तार भेजा, मणिलाल नाणावटी के बारे मे कहा। गाधीजी वगैरा की बातें की।

रहने के लिए मकान जानकी को बताया। पर एक बार तो 'न्यू होटल' मे ही आकर रहने का निश्चय रहा।

हीरालालजी वगैरा मित्रो से थोडी बातें।

दामोदर को बापना के नाम पत्र देकर बीकानेर भेजा। पत्र, चर्चा।

४-६-३९

सत्यप्रभा से बातें, डायरी लिखी। कबूतर आ गया उसे जवारी खिलाई। सोनी बाई व जानकी देवी से देर तक बातचीत। सोनी बाई को अपनी सारी स्थिति दिल खोलकर कहने को समझाया।

हरा डी० राय से देर तक बातचीत; विवाह-सम्बन्ध, कारभार, वामनानाथ, यूनायटेड प्रेस व जयपुर मेम्बर के बारे मे।

न्यू होटल मे सामान भेजा, वहा गये। रास्ते मे मोटर खराब हुई।

सोमाणीजी मिलने आये, दीवान होने की अतिशय इच्छा। बनीचन्द (दुर्लभ-

जी के लड़के) मिलने आये। खादी योजना पूरी तरह समझ ली। चर्
संघ का रजिस्टर देखा, संतोष हुआ।
तिवारी को समझाकर संतोष दिया।
सत्यप्रभा ने देर तक भजन सुनाये।

५-६-३९

प्रार्थना, भजन, कबूतरों सहित फोटो ली।
न्यू होटल में रहने आये। तीन कमरे लिये, कई जगह फोन किया।
कु० अमरसिंहजी ने कहा कि महाराजा सा० से कल १२॥ बजे मिलने आना है। सन्तोषजनक परिणाम आने की बात कही।
मित्र लोगों से विचार विनिमय देर तक होता रहा। खादी-योजना की बातें।
रात को मस्जिद का दर्वाजा खोदना शुरू हुआ, जिससे हिन्दुओं में अशान्ति है। हरिश्चन्द्रजी व मिश्रजी को प्रजामण्डल की नीति साफ तौर से समझाई व कहा हड़ताल करना ठीक नहीं रहेगा। प्रयत्न करते-कराते रात को इस मामले में ११॥ बज गये।
दामोदर बीकानेर से आया। रात को ही ट्रेन से उसे दिल्ली, शिमला भेजा —बापू, घनश्यामदासजी व बापना सा० के नाम पत्र देकर।

जयपुर (न्यू होटल) ६-६-३९

जोबनेर ठाकुर सा० से मिला। उन्होंने सन्तोषकारक बातचीत की। आशा व असरकारक परिणाम आने का कहा।
हरिश्चन्द्रजी, कपूरचन्दजी, हीरालालजी से सोसायटीज एक्ट के बारे में विचार-विनिमय।
श्री महाराजा सा० से १२॥ बजे मिला अखबारों का प्रतिबंध उठा लिया। 'सोसायटीज एक्ट' के बारे में महाराज सा० बराबर नहीं समझ पाये। सीकर की स्थिति पर देर तक चर्चा व विचार, कैदियों को छोड़ना, जो नौकरी से हटा दिये हैं, उन्हें फिर से रखना आदि की चर्चा महाराज ने अपनी दिक्कतें कही। पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट का सम्बन्ध बताया। फिर भी जल्दी ही फैसला करने को कहा। 'सोसायटीज एक्ट' में जो रजिस्टर नहीं करना चाहें, उनकी रुकावट निकाल देने को कहा। खादी, सीकर, जकात, सीकर

रावराजा व कुंअर तथा प्राइम मिनिस्टर के बारे में खानगी में विचार-विनिमय। प्रजा-मण्डल के विधान में से 'जिम्मेदार राज्य-तंत्र वाली (रिसपांसिबिल गवर्नमेन्ट) धारा निकालने के बारे में मैंने अपनी कठिनाई उन्हें समझाई। घनश्यामदासजी बिड़ला को पत्र जोबनेर ठा० ने भेजा होगा; कु० अमरसिंहजी से बातें हुईं, इन चर्चाओं में सब मिलकर २ घंटे लगे।

होटल आकर हीरालालजी, कपूरचन्दजी, हरिश्चन्दजी से चर्चा। जो अड़चनें थी कहीं।

पुरोहितजी सीकरवाले मिलने आये। रावराजा सा० के बारे में बातचीत। श्री सजीवन गांगुली वगैरा मिलने आये।

७-६-३९

जोबनेर ठाकुर सा० व अमरसिंहजी से बातें। स्थिति आशाजनक मालूम दी। शिमले व दिल्ली बात करने का प्रयत्न फोन पर नहीं हो पाया।

८-६-३९

जोबनेर ठाकुर से सोसायटीज एक्ट के बारे में चर्चा, किसान सीकर के दी जन्मदिन के पहले छोड़ने आदि के बारे में।

रा० ब० कर्नल कु० अमरसिंहजी, मिलिटरी मिनिस्टर बनाये गये व श्री रावतजी सा० रेवेन्यु मिनिस्टर। दोनों से मिला। बधाई दी। अमरसिंहजी ने सोसायटीज एक्ट में जो दुरस्ती करने का निश्चय हुआ वह बतलाया। मैंने उन्हें अपनी दिक्कतें बतलायीं। तोरावाटी चौकड़ी ठिकाने में बाघ ने कई मनुष्यों को घायल कर दिया व उपद्रव मचा रहा है, मारने का हुक्म मिला। हिंसक प्राणी द्वारा घायल व मारे गये तथा जिनके मवेशी मारे गये उन्हें मदद पहुंचाने आदि के बारे में हीरालालजी से मिलकर स्थिति समझी।

बनारस से घनश्यामदास जी बिड़ला का फोन आया। [illegible] हाथ के कागजों का काम देखा [illegible] घर पर काम कर रहे हैं। [illegible] कारण इनको [illegible] हुई है। [illegible] का काम ठीक नहीं चल रहा। [illegible] आ रही है। [illegible] प्रकार हो [illegible]

के साथ एरोड्रोम देखते हुए डेरे पर आये।
सीकर वाले पुरोहितजी से रावराजा के समाचार मालूम हुए।

९-९-३९

दामोदर दिल्ली व शिमला जाकर आया। सर वापना से मिल आया, स्थिति कही।
जानकी को ज्वर १०३।। तक हो गया। थोडी चिन्ता। स्टेटमेन्ट वगैरा तैयार किया। ठीक बना।
रामबाग महल गया। स्टेटमेन्ट कुंवर अमरसिंहजी ने दो तीन-बार पढा। उन्हे पसन्द आया। एक-दो जगह दुरुस्ती करने को कहा। श्री महाराज सा० से कल १२।। बजे मिलने का तय हुआ। अन्य बातो पर विचार-विनिमय देर तक होता रहा। जयपुर विद्यार्थी-संघ (स्टूडेन्ट्स फेडरेशन) की सभा नथमलजी के कटरे मे हुई। वहां मानपत्र व पर्स दी गयी। विद्यार्थियो के प्रश्न-उत्तर ठीक रहे।

१०-९-३९

जोबनेर ठाकुर से मिला। सीकर-किसान व कैदियो के बारे मे चर्चा।
घनश्यामदासजी बिडला को कलकत्ता फोन किया।
श्री महाराजा सा० से रामबाग पैलेस मे मिलना हुआ। मैंने अपना स्टेटमेन्ट उन्हे दिखाया। सुधार कर उसे उन्होने पसन्द किया। महाराजा सा० को जन्म-दिन के निमित्त भाषण देने पर मैंने जोर दिया। उन्होने स्वीकार किया। मैंने पाइन्ट नोट करवाये। उन्होने भाषण तैयार करने वाले को वे पाइन्ट बतला दिये। सीकर कैदियो को छोड़ने मे थोडी हिचक बतलाई। उसे वह रेजिडेंट से फोन करके दूर कर लेंगे। ताड़केश्वर व घासीराम का वारन्ट वापस लेने को कहा। उन्होने स्वीकृति दी। भाषण मुझे दिखाने की व्यवस्था करने को कहा। दिवान (प्राइम मिनिस्टर) के बारे में खानगी मे बातचीत हुई।
आजाद चौक मे जाहिर सभा हुई। लाउड स्पीकर लगाये गये थे। इसमे सभा ठीक हुई। मेरा भाषण भी ठीक हुआ। स्टेटमेन्ट पूरा हिन्दी मे सुना दिया गया। सत्यदेवजी विद्यालंकार 'हिन्दुस्तान' वाले आये थे। दामोदर दिल्ली गया।

११-९-३९

जयपुर महाराज का जन्म-दिन; अट्ठाइस वर्ष पूरे हुए, उनतीसवा वर्ष चालू हुआ।

ताडकेश्वर, घासीराम तथा जाट-कार्यकर्ताओं पर जो वारट है उस बारे में श्री वी० मी० टेलर से बातचीत। उन्होने कहा कि आप अपनी निगरानी में उन्हे रखें, तो वह गिरफ्तार नही करेंगे। महादेवलाल शाह (खण्डेलवाल) मिलने आये। उसका व्यवहार व क्रोध देखा। विचार हुआ।

प्रजामण्डल वकिंग कमेटी का काम ८।। से ११।। तक होना रहा।

रामबाग पैलेस गया। महाराज के भाषण। किसान व सीकर के कैदियो के छोडने के बारे में बातें। उन्हे जेल पर ही छोडने के लिए कोशिश की। ताडकेश्वर व घासीराम के वारट रद्द करने के बारे मे कई बार टेलीफोन करना पडा। सोसायटीज एक्ट के बारे मे रामबाग पैलेस भी गया। परन्तु वहा कोई नही मिले। शाम को वकिंग कमेटी में थोडी देर रहा।

१२-९-३९

वकिंग कमेटी (प्रजामण्डल की) ८ से ११।। तक हुई। शाम को साधारण सभा (जनरल कमेटी) ७।। से ११।। तक हुई। ठीक रही।

५ बजे से ७ बजे तक चि० शान्ता, कमला, वगैरा के साथ कर्नावता का बाग, जैन मदिर (छोटेलालजी का) हनुमानजी का मदिर पटाडो में देखे, बाद होटल में आये।

फारवर्ड ब्लाक में अभी तो केवल तीन-चार लोग ही है। दुर्गालाल बिजलीवाले, राधा मोहन, गौड आदि।

आजकल की घटना जैसे प०लादूरामजी, हरलालसिहजी पर, डब्लू०एफ० बील, जेल सुपरिण्टेण्डेण्ट, की ओर से मार वगैरा पडी, उस बारे मे प्रश्न-उत्तर उससे पुछवाये।

बीकानेर ठाकुर सा० व कु० अमरसिहजी से फोन मे बातचीत की। महाराज सा० को पत्र भेजे। जानेवाले पत्र का हिन्दी मसविदा बनाया। बील पर कानूनी कारवाई करने का भी निश्चय किया गया।

कु० अमरसिहजी का फोन आया। ताडकेश्वर व घासीराम के वारट वापस ले लिये गये। रावलजी का फोन आया कि महाराज सा० कल १२।।

बजे मिलेंगे।

१३-९-३९

प्रजा-मण्डल की वर्किंग कमेटी की सभा मे शामिल, सुबह ८ से १०॥ तक। दोपहर को साधारण सभा मे आध घटा करीब रहा।

महाराज सा० से १२॥ से १॥ बजे तक बातचीत हुई। सोसायटीज एक्ट सर शीतलाप्रसाद तैयार कर रहे हैं। प्राइम मिनिस्टर के बारे मे विचार-विनिमय। अकाल तथा अनाज की दुकानें, मि० बील, जेल सुपरिण्टेण्डेण्ट का जन्मदिन पर सीकर किसान कैदियो को छोडते समय का खेदजनक व्यवहार का हाल लिखकर पत्र दिया। उन्होने जांच करने को कहा। महादेव शाह वेजवाबदार है व विश्वासपात्र नही हैं, यह उन्हें व कु० अमरसिंहजी को बतलाया। दौसा मे पानी की व्यवस्था तथा म्यु० कमेटी व डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के लिए कानून बना रहे है यह उन्होंने बताया। उन्होंने कहा कि उस कमेटी मे काम करू। मैंने कहा कि मैं यह नही कर सकूंगा। पर जरूरत हुई तो प्रजामण्डल की ओर से योग्य व्यक्ति सुझा दिये जावेगे। अकालराहत कार्य के सबध मे भी उनकी राय रही कि एक बार मैं सब मिनिस्टरो से मिल लू तो ठीक रहेगा।

ठा० अमरसिंहजी से देर तक बातचीत। कपूरचन्दजी पाटनी का परिचय करवा दिया।

पडित अमरनाथजी अटल से देर तक बातें। मैंने उनको राजाओं की सभा मे दिये गये उनके भाषण के बारे मे उलाहना दिया। अन्य बातें भी साफ तौर से हुईं। सर शीतलाप्रसादजी भी वहीं मिल गये। जोबनेर ठा० से बातें, उलाहना। मि० बील को नही रखेंगे, जयसिंहजी मुकर्रर किये जायेंगे।

वनस्थली (जयपुर), १४-९-३९

सुबह जल्दी ही एक मोटर व लारी से वनस्थली गये। रास्ते मे लोगो ने स्वागत किया। वनस्थली मे भी ठीक स्वागत वगैरा का व बालिका-विद्यालय का प्रोग्राम रहा। सभा मे किसानों की हालत का परिचय। बालिकाओं व शिक्षक लोगों से परिचय हुआ। रात को ८। बजे करीब निकलकर १२ बजे रात को जयपुर पहुंचे।

महाराज सा० आज हवाई विमान से श्रीनगर गये।

जयपुर (रेल में), १५-९-३९

जोबनेर ठाकुर सा० से फैमीन रिलीफ के बारे में बातचीत। पचीस हजार के जौ मगाने के लिए कहा, साढे बारह हजार का जयपुर में बाकी का दौसा, सवाई माधोपुर, हिंडोन, नीमकाथाना, आदि पांच निजामतो में अढाई हजार मन। वहा की व्यवस्था नाजिम व प्रजामण्डल के कार्यकर्ता मिलकर करें। जयपुर की व्यवस्था भी प्रत्येक चौकडी में एक स्टेट अधिकारी व एक प्रजामण्डल का आदमी करे। जयपुर का भार कपूरचन्दजी पाटणी पर छोड़ा गया है यह उन्हे कह दिया।

सर शीतलाप्रसादजी जूनियर मिनिस्टर से सोसायटीज एक्ट के बारे में ठीक तौर से बातचीत। एलाउन्स व सीकर के बारे के भी उन्होंने सुन लिया।

रेवेन्यू मिनिस्टर खानबहादुर से मिला, सीकर तथा शिकारखाने के बारे में उनसे बातचीत हुई। आदमी होशियार मालूम दिये।

शिवप्रसादजी खेतान के यहा अनाज सस्ता मिले, उस बारे में मीटिंग हुई। बातचीत।

डब्लू० एफ० जी० ब्राउन, सेटलमेण्ट कमिश्नर का व जोबनेर ठा० का पत्र आया। रेल में जवाब लिखा।

२। बजे सीकर रवाना, हीरालालजी शास्त्री, लादूरामजी, शान्ता, कमला, सत्यप्रभा, दामोदर, मदन, श्रीनिवास साथ में। रास्ते में काफी लोग मिलने आते रहे; स्वागत भी किया।

सीकर में जुलूस व सभा ठीक हुई।

सीकर, १६-९-३९

रावराजाजी की ओर से मिलने का बुलावा आया। ड्योढी पर गया। रावराणीजी का सन्देश आया। मुझे जो कुछ कहना था कहा। श्री भवरलाल जैन ने रावराजाजी का सन्देश व स्थिति समझाई। शाम को राधामोहन ने।

सीनियर आफीसर से मिलना हुआ। जिन्हे नौकरी से हटाया गया है उनके संबंध में विस्तारपूर्वक बातचीत। जकात, अकाल व रावराजाजी के बारे

में स्थिति समझी। यह सज्जन व सहृदय पुरुष मालूम दिये। ठीक प
लाने से यह मदद करेंगे ऐसा मालूम हुआ।

आज मां के आग्रह (सत्याग्रह) के कारण अनाज शुरू किया। द्
फल से कमजोरी मालूम हो रही थी तथा पेट में हवा भी ज्यादा
थी। शाम को थोड़े बाजरे के दाने खाये। मां को तथा घरवालों को
सन्तोष हुआ। सीकर राजकुमार से, लक्ष्मणगढ़ जाने का प्रोग्राम एव
बन जाने के कारण, मिलना नहीं हो सका।

हीरालालजी, लादूरामजी, सत्यदेवजी विद्यालंकार, सुभद्रा, दामोद
साथ २ बजे करीब लक्ष्मणगढ़ रवाना हुए। रात को नौ बजे करीब
पहुंचे। रामेश्वरलाल सोढाणी के नोहरे में ठहरे। बाजार में सभा हु
वहां गये। स्वास्थ्य के कारण तथा थकावट के कारण बोलने का उत्स
कम रहा। मेरा व हीरालालजी का भाषण तो लोगों ने शान्ती से सु
लिया, परन्तु मेरे रवाना होते समय कुछ मूर्ख लोगों ने 'रावराजा को डु
दिया' आदि की आवाजें कसी।

लक्ष्मणगढ़, फतेहपुर, १७-९-३९

शंकरलाल काबरा, हरीरामजी जाजोदिया वगैरा मिलने आये। रात व
घटना के लिए दुःख प्रकट करने लगे।

छोटी बाई (बिजराजजी की लड़की) मिलने आई। सात बजे करीब
फतेहपुर के लिए रवाना हुए। वहां आठ बजे पहुंचे। श्री बद्रीनारायणजी
की छत्री में ठहरे। वहां से जुलूस में फतेहपुर शहर में घूमकर श्री सीताराम
जी पोद्दार के बाग में मुकाम किया। यहां की जनता का उत्साह ठीक
मालूम दिया।

रामवल्लभजी नेवटिया के नोहरे में ४ बजे तक गांव के लोग म्युनिसिपल
कमेटी व जकात वगैरा को लेकर मिलने आये।

बद्रीनारायणजी गनेड़ीवाल का देहान्त हो गया। उनके घर गोरी बाई,
नारायणीबाई वगैरा मिलीं।

शाम को जाहिर सभा हुई। मैं करीब एक घंटा बोला। खादी-प्रदर्शनी
खोलते हुए खादी के बारे में, सीकर, प्रजामण्डल व जयपुर समझौते के बारे

ये बातें स्पष्ट तौर से अपनी भाषा में कहीं।

फतेहपुर, १८-९-३९

रामवल्लभजी के बारे में कार्यकर्ताओं की देर तक सभा हुई। थोड़ी गरमा-गरमी भी हुई।

सुबह बाग में ज्वालाजी भरतिया व किसनदयालजी जालाण मिलने आये। सीकर व प्रजामण्डल के बारे में बातचीत।

म्युनिसिपल कमेटी के बारे में तहसीलदार, भगत, रामजीवन वगैरा मिलने आये।

डा० शर्मा (भरतिया अस्पतालवाला) मिलने आया। होशियार मालूम दिया।

स्त्रियों की सभा में थोड़ा बोला। स्योदेई बाई से थोड़ी बातें।

खादी प्रदर्शनी देखी।

फतेहपुर, रामगढ़, १९-९-३९

सीताराम पोद्दार के दादा से मिलना।

ज्वालाप्रसादजी भरतिया से जयपुर व सीकर के बारे में बातचीत। प्रजा-मण्डल को कम-से-कम ग्यारह हजार व अधिक-से-अधिक इक्कीस हजार देने को कहा। उन्होंने प्रजा-मण्डल के बदले वनस्थली-बालिका-विद्यालय को देने का अधिक उत्साह बतलाया। आंकड़ा निश्चित नहीं हुआ।

भीमराजजी दूगड, मटरूमलजी खेमका व भगत से फतेहपुर म्युनिसिपल कमेटी के बारे में बातें। ता० २२-२३ को पूरा अधिकार लेकर सीकर आने का कहा।

दो मोटरों से रामगढ़ रवाना। बंसीधरजी रामगोपालजी के बगीचे में ठहरे।

फतेचन्द ने ठीक खातिरदारी की। वहां से जुलूस के साथ सूरजमलजी रुइया की हवेली में ठहरे।

बालचन्दजी शास्त्री व जानकीदासजी (दादूपंथी) की मृत्यु दो रोज के अन्दर हुई। वहां बैठने गये।

रात को जाहिर सभा हुई। देर तक व्याख्यान हुए। लोगों को हीरालालजी का व्याख्यान ज्यादा पसन्द आया।

मुकुन्दगढ़-झुनझुनू, २०-९-३९

रात को देर से १२।। बजे, सोये। सुबह साढे तीन बजे उठे। तैयार हो
जल्दी रामगढ़ से रवाना हुए।

मडावा पहुचे। जाहिर सभा मे आध घंटे बोलना पड़ा।

बातचीत, अकाल की स्थिति समझी।

मुकुन्दगढ़ वालों ने जुलूस भी निकाला। बे-टाइम होते हुए भी सभा
उत्साह व जोश ठीक था। जनता पर हीरालालजी के भाषण का ठीक अस
हुआ।

झुनझुनू मे जुलूस की जबरदस्त तैयारी। जनता मे उत्साह व जोश ख़
दिखाई दिया। सारा शहर बहुत ही सुन्दर ढग मे सजाया गया था। बड़
से आर्च बनाये गये थे। कई जगह निशान-नौबत बज रहे थे। स्त्री-पुरुष
का समुदाय उलट पडा। मेरी राय मे, आज तक के जितने जलूस निकले व
सभाए हुईं उसमे, नं० १ झुनझुनू, न०२ जयपुर व न०३ मुकुन्दगढ़ का था।
सभा ठीक हुई।

झुनझनू-सीकर, २१-९-३९

जुखाम का जोर। डा० ताराचन्दजी ने ठीक व्यवस्था की। गोडे मे व पांव
में दवा वगैरा लगाई।

स्त्रियो की सभा मे दो मिनट बोला।

जकात के बारे मे मातादीन भगेरिया (चिडावावाले) तथा अन्य लोगों से
बातचीत।

डा० ताराचन्द के यहा भोजन।

सीकर पहुचे। स्वास्थ्य कमजोर, जुखाम व हरारत मालूम दी।

सीनियर अफसर सतोषसिंहजी से मिले। सीकर नौकरी वालों के बारे में
बातें।

उन्हें मदद करने को कहा। जकात व अकाल के बारे में व रावराजा के
बारे में जनता की भावना कही।

सीकर, २२-९-३९

मिसे के कागजात देखे, आराम किया।

...सर मिलने आये। अकाल जकात आदि चर्चा। रात को

सीनियर आफीसर आये। सीकर नौकरीवालों के बारे में देर तक बातचीत, विचार-विनिमय।
आज सत्यदेवजी विद्यालंकार ने सीकर में जाहिर व्याख्यान दिया।

२३-९-३९

जुखाम का जोर कम हुआ व रात को नींद भी ठीक आई। सत्यदेवजी दिल्ली गये।
पुरोहितजी, रावराजा के मामले में व सीकर को वाजिब न्याय मिले इस मामले में दिलचस्पी लें, इस बारे में बातचीत।
भंवरलाल जैन दीवान ने रावराजाजी का सन्देश बताया।

२४-९-३९

वर्धा, गोला तथा लोसल जाने का प्रोग्राम निश्चित हुआ।
सत्यप्रभा ने अपनी दुःखगाथा थोड़ी सुनाई।
राधाकिसन के मकान के बारे में विचार-विनिमय, स्टेशन की ओर सा कमरे की जगह में से।
सीकर के पुलिस से निकाले हुए लोग मिलने आये। सरकारी वकील से बातचीत।
काशी-का-बास में अकाल पड गया। सहायता करने का निश्चय।
श्री डी० सी० टेलर आई० जी० पी० जयपुर से ११ से १२॥ तक जयपुर राज्य-व्यवस्था, सीकर-पुलिस से अलग किये गये लोगों के बारे में जकात, रावराज, अकाल, झुनझनू जेल की खराबी ठिकानेवालों की ज्यादती, घूसखोरी वगैरा पर खुलकर चर्चा। इसके अलावा प्रजामण्डल पब्लीसिटी, परस्पर सम्बन्ध पर भी विचार-विनिमय।
सीनियर आफिसर सन्तोखसिंहजी से मिला।
रेडियो पर तुलसी रामायण सुनी।
श्री माधोप्रसाद गुप्ता असिस्टेंट सीनियर आफिसर व काशीप्रसाद मिलने आये, देर तक बातचीत।

२५-९-३९

खान बहादुर अब्दुल अजीज रेवेन्यु मिनिस्टर से ८॥ बजे मिला। सीकर से हटाये गये कर्मचारियों के बारे में तथा अकाल, जकात, रावराजा सा०

आदि विषयों के बारे में बातचीत। कल फिर मिलना है।

लक्ष्मी, शिवभगवान की बहन, अपने लड़को को लेकर वर्धा रहेगी। इसे दस रुपया महीना सहायता देने का निश्चय।

२६-९-३९

फतेहपुर से भीमराजजी दूगड, सीतारामजी पोद्दार, उमादत्त व सत्यदेव आये।

खान बहादुर अब्दुल अजीज रेवेन्यू मिनिस्टर से सीकर के मामले में ६ से १०॥ बजे तक दिल खोलकर बातचीत।

सीकर सर्विस के लोगो के बारे में ठीक परिणाम निकलने की आशा; अकाल व जकात के बारे मे भी। उनसे जयपुर के बारे में भी खानगी बातचीत हुई।

सीकर सर्विस के लोग तथा किसान लोग मिलने आये।

रावराजा की ओर से राधामोहन व भवरलाल मिलने आये। स्थिति कही। कल जाने की तैयारी।

श्री मगलसिहजी कुडवालो की ओर से मिलने आये।

जानकी व कमला का सीकर रहने का तय हुआ।

चौमू, जयपुर, २७-९-३९

सुबह दो बजे उठे। चार की गाड़ी से चौमू रवाना। साथ मे तेरह-चौदह लोग हो गये।

चौमू मे जलूस निकला। ठीक उत्साह था। जाहिर सभा भी ठीक हुई। लोग खासकर बलाई लोग (बुनकर) बहुत ज्यादा संख्या मे थे।

खादी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी बहुत ही अच्छे ढग की हुई थी। कातनेवालों की सभा का दृश्य सुन्दर था।

चौमू से रात को १०॥ बजे करीब मोटर द्वारा जयपुर रवाना। लारी के कारण रास्ते मे डेढ घटा रुकना पडा। जयपुर १। बजे रात को पहुचे। [illegible]न्ति रही। चौमू मे जयपुर का रास्ता बहुत खराब रहा।

जयपुर, २८-९-३९

[illegible] रावलजी वगैरा को टेलीफोन। श्री महाराज आज ६ बजे आने वाले हैं।

[illegible] के घर गया। उन्हें साथ लेकर जोबनेर ठाकुर के यहां। पचीस

हजार मन अनाज जौ व गेहूं और मंगाने का निश्चय। श्रीनिवासजी (नाजिम नीम-का-थाना), कपूरचन्दजी पाटणी व राजरूपजी टाक इन तीनों के मिलकर माल खरीदने व बेचने की व्यवस्था करने का निश्चय हुआ। उन्होंने मि० ब्राउन की शिकायत की। मि० बिल कल चार्ज दे देगा। जयसिंहजी की सिफारिश तो बहुत हुई, उन्होंने कहा, पर मैंने नहीं सुनी। उनको कहना पड़ा कि अटलजी या अमरसिंहजी को प्राइम मिनिस्टर क्यों नहीं बना देते?

अकाल के लिए शेखावटी के लोगों का डेपुटेशन मिलने आया। उन्हें मंत्री व प्रजामण्डल की नीति बताई।

सीकर राव राजा व राजकुमार की ओर से सत्यनारायण मिलने आये। अकाल की हालत पर बातचीत।

चिरंजीलाल अग्रवाल के वर्किंग कमेटी से उनके त्यागपत्र पर बातें। उन्होंने तो वचन दिया कि मैं जो काम उनसे लेना चाहूंगा वह करने को तैयार रहेंगे। जेल जाने तक की तैयारी रहेगी।

चिरंजीलाल मिश्र, पाटणी व हरिश्चन्द्रजी से बातें।

आदि विषयों के बारे में बातचीत। कल फिर मिलना है।

लक्ष्मी, शिवभगवान की बहन, अपने लड़कों को लेकर वर्धा रहेगी। इसे दस रुपया महीना सहायता देने का निश्चय।

२६-९-३९

फतेहपुर से भीमराजजी दूगड, सीतारामजी पोद्दार, उमादत्त व मत्वदेव आये।

खान बहादुर अब्दुल अजीज रेवेन्यू मिनिस्टर से सीकर के मामले में ९ से १०॥ बजे तक दिल खोलकर बातचीत।

सीकर सर्विस के लोगों के बारे में ठीक परिणाम निकलने की आशा; अनाज व जकात के बारे में भी। उनसे जयपुर के बारे में भी खानगी बातचीत हुई।

सीकर सर्विस के लोग तथा किसान लोग मिलने आये।

रावराजा की ओर से राधामोहन व भंवरलाल मिलने आये। स्थिति कही। कल जाने की तैयारी।

श्री मंगलसिंहजी कुडवालों की ओर से मिलने आये।

जानकी व कमला का सीकर रहने का तय हुआ।

चौमू, जयपुर, २७-९-३९

सुबह दो बजे उठे। कार की गाड़ी से चौमू रवाना। साथ में तेरह-चौदह लोग हो गये।

चौमू में जलूस निकला। ठीक उत्साह था। जाहिर सभा भी ठीक हुई। लोग खासकर बलाई लोग (बुनकर) बहुत ज्यादा संख्या में थे।

खादी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी बहुत ही अच्छे ढंग की हुई थी। कातनेवालों की सभा का दृश्य सुन्दर था।

चौमू से रात को १०॥ बजे करीब मोटर द्वारा जयपुर रवाना। पानी के कारण रास्ते में डेढ़ घंटा रुकना पड़ा। जयपुर १॥ बजे रात को पहुंचे। रास्ते में अशान्ति रही। चौमू से जयपुर का रास्ता बहुत खराब रहा।

जयपुर, २८-९-३९

खोवनेर ठाकुर व मामोदा रावतजी वगैरा को टेलीफोन। श्री महाराजा आज शाम को ६ बजे आने वाले हैं।

कपूरचन्दजी के घर गया। उन्हें साथ लेकर खोवनेर ठाकुर के यहां। वर्षा

हजार मन अनाज जौ व गेहूं और मगाने का निश्चय। श्रीनिवासजी (नाजम नीम-का-थाना), कपूरचन्दजी पाटणी व राजरूपजी टांक इन तीनों के मिलकर माल खरीदने व बेचने की व्यवस्था करने का निश्चय हुआ। उन्होंने मि० ब्राउन की शिकायत की। मि० बिल्कुल चार्ज दे देगा। जयसिंहजी की सिफारिश तो बहुत हुई, उन्होंने कहा, पर मैंने नहीं सुनी। उनको कहना पड़ा कि अटलजी या अमरसिंहजी को प्राइम मिनिस्टर क्यों नहीं बना देते?

जकात के लिए शेखावटी के लोगों का डेपुटेशन मिलने आया। उन्हें मेरी व प्रजामण्डल की नीति बताई।

सीकर राव राजा व राजकुमार की ओर से मखनसिंह मिलने आये। अकाल की हालत पर बातचीत।

चिरंजीलाल अग्रवाल से वर्किंग कमेटी से उनके त्यागपत्र पर बातें। उन्होंने तो वचन दिया कि मैं जो काम उनसे लेना चाहूंगा वह करने को तैयार रहेंगे। जेल जाने तक की तैयारी रहेगी।

चिरंजीलाल मिश्र, पाटणी व हरिश्चन्द्रजी से बातें।

२९-९-३९

सर शीतलाप्रसादजी से बहुत देर तक बातचीत—सोसायटीज एक्ट, बेगार कानून, मूलचन्द तिवारी, दीवान सर जगदीशप्रसाद वगैरा के बारे में।

रामगढ़ हिन्दू बंदी, हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न, महायुद्ध, जिन्ना ही नीति वगैरा के बारे में चर्चा।

सीजगढ़ ठाकुर से मिले। ठिकानेदार व प्रजामण्डल के बारे में बातचीत।

घनश्यामदासजी बिड़ला देहली से तीन बजे करीब पहुंचे। उनसे बातचीत। घनश्यामदासजी शाम को ठाकुर मदनसिंहजी के यहां भोजन करने गये। कार्यकर्ताओं से जकात-डेपुटेशन, रामगढ़-डेपुटेशन आदि के बारे में बातचीत।

३०-९-३९

जयपुर परिस्थिति के बारे में श्री घनश्यामदासजी बिड़ला से बातचीत।

घनश्यामदासजी की व मेरी मुलाकात के बारे में निश्चित उत्तर न मिलने से गड़बड़ी हुई व दौड़-धूप करनी पड़ी। आखिर परिणाम ठीक आया।

रामबाग जाकर अमरसिंहजी से मिला।

डा० दलजीतसिंहजी, हरनारायणजी पुरोहित आदि कई लोग मि[illegible]
आये।

श्रीनिवासजी (नाजिम) से व कपूरचन्दजी पाटणी से अनाज मंगाने व बे[illegible]
के बारे मे व्यवस्था की चर्चा।

ठा० मदनसिंह आये। बाद मे कुंवर अमरसिंहजी (चौमूवाले) मि[illegible]
मिनिस्टर भी मिलने आये। देर तक बातचीत।

१-१०-३९

प्रजामण्डल की वर्किंग कमेटी की बैठक हीरालालजी के घर ७॥ से १[illegible]
तक हुई। वहां रहे। घनश्यामदासजी से बातें। वनस्थली व रतनजी का
ठीक परिचय व महाराजा के सम्बन्ध मे बातें। सत्यप्रभा व सीतारामजी
वनस्थली गये।

घनश्यामदासजी बिड़ला महाराजा से ११ से ११॥ तक मिले। सन्तोष-
कारक मुलाकात।

महाराज से मेरी १२ से १-५ तक मुलाकात हुई। कई विषयों पर बातचीत।
खासकर सीगायटीज एक्ट, शेखावटी की जकात, अकाल की हालत, नये
प्राइम मिनिस्टर की नियुक्ति, राधराजा मौसर, शिकारखाना, प्रजामण्डल
इत्यादि के बारे में सन्तोषकारक चर्चा। जयपुर की बनी हुई खादी उन्हें
भेंट की। जोधपुर महाराज भी आ गये।

रामनजी, वेटिंग मिनिस्टर, खान बहादुर, जोबनेर ठाकुर आदि से भी
बातें।

खानबहादुर से सीकर नौकरीवालों के बारे में शिकारखाने, देवस्थान, घन-
श्यामदासजी की जमीन आदि की चर्चा। जोबनेर ठाकुर सा० से कैदियों
[illegible] के बारे में बातें।

ठा० मदनसिंहजी (नवलगढ़) व घनश्यामदासजी बिड़ला से मिले। घन-
श्यामदासजी वनस्थली जाकर आये।
प्रजामण्डल वर्किंग कमेटी का काम।

२-१०-३९

हरनाथसिंहजी व देवनारायणजी से [illegible]

कठिनाइयों के बारे में बातचीत।

प्रजामण्डल की वर्किंग कमेटी न्यू होटल में हुई।

अचरोल ठाकुर श्री हरिसिंहजी (होम मिनिस्टर) से जकात के मामले में व उनके बारे में इधर मेरे मन में जो भाव पैदा हो गये थे उस बारे में स्पष्ट तौर से चर्चा।

ठाकुर मदनसिंहजी (नवलगढ) मिलने आये। खानगी बातचीत।

ठाकुर गीजगढ, पाटण से मिश्रजी व हीरालालजी के साथ देर तक बातचीत। सरदार-सभा व प्रजामण्डल के सम्बन्ध के बारे में विचार-विनिमय।

हीरालालजी शास्त्री व रतनजी से वनस्थली, जाट बोर्डिंग, जाट विद्यार्थिनी, किसान-पंचायत आदि के बारे में विचार-विनिमय।

'गांधी-जयन्ती' निमित्त आजाद चौक में जाहिर सभा। दो हजार की थैली प्रजामण्डल के लिए मिली। भाषण, 'बापू के जीवन से क्या ले सकते हैं?' इसपर मन में विचार थे सो कहे।

दिल्ली, ३-१०-३९

सुबह अहमदाबाद मेल से दिल्ली पहुंचे। स्टेशन से बिडला-हाउस।

पंडित जवाहरलाल व मौलाना से मिलना। विनोद।

बापू से जयपुर प्राइम मिनिस्टर व वहां की हालत के बारे में बातचीत।

राजेन्द्रबाबू व जवाहरलालजी लार्ड लिनलिथगो वायसराय से करीब सवा दो घण्टे मिलकर आये। बातचीत का हाल सुनाया।

सुभाष बोस ने बैरिस्टर जिन्ना से बात करते समय बापू के चरित्र पर दोष लगाया। श्री जिन्ना ने यह बात अन्य मित्रों से कही। बापू को यह खबर जानकर दुःख व चोट पहुंची।

सर बर्ट्रेण्ड ग्लेन्सी को शिमला टेलीफोन किया। वह आज दौरे पर जा रहे हैं। दूसरे सप्ताह में देहली आने को हैं, इसलिए शिमला नहीं जाना हुआ।

रावराजा कल्याणसिंहजी (सीकरवाले) से देर तक बातचीत।

सर शादीलाल ने सर बर्ट्रेण्ड ग्लेन्सी को जो पत्र लिखा वह बतलाया। जयपुर दीवान के बारे में देर तक विचार-विनिमय।

चि० सुशीला व नरेन्द्रलाल पहुंचाने आये।

देवदास भाई ने सत्यदेवजी व सालपेकर के बारे मे बात की।

पार्वती डिडिवानियां बीमार व दुःखी मालूम हुई।

चतुर्भुजजी का पत्र पढकर दुःख व चोट। आखें खुली। ईश्वरी महिम
अपार है; दोनो को थोडी सांत्वना दी।

शान्ता व रामगोपाल गाडोदिया के यहा सबो से मिलकर जयपुर-सहायत
की बात की।

भाईजी के आग्रह के कारण 'लक्ष्मीनारायण मंदिर' प्रतिष्ठा होने के वा
देखा।

बापू वाइसराय से मिलकर आये। ग्रैंड ट्रंक से वर्धा रवाना। सेकंड क्ला
मे। बापूजी राजेन्द्रबाबू, सरदार, मौलाना, जवाहरलाल, कृपालानी सा
मे। रास्ते मे लोग दर्शनो के लिए आते रहे।

वर्धा, ६-१०-३६

भोपाल मे शुवेब कुरेशी व उनकी स्त्री बापू से मिलने आये। शुवेब से स
जोसेफ मोर के बारे मे पूछताछ।

रास्ते मे खूब भीड़ हो जाती थी। दर्शन करनेवालो की।

बापू से व जवाहरलाल से अपने इलाज के बारे मे बातचीत। बापू ने त
मलबारी मालिश के बारे मे मना किया। बडौदा के माणिकरावजी तथ
अन्य मालिश को भी ना कही। डाक्टरो का इलाज व एलोपैथिक इला
भी नही करना। उनकी राय से या तो डा० मेहता का इलाज या दिल्ली
वाले महादेवभाई के परिचित वैद्य आनन्द स्वामी का इलाज करके देख
को कहा। जवाहरलालजी ने अपने चचेरे भाई, जो अभी योरप से आये है
शायद पीलीभीत मे हैं, से पूछने का कहा। बापू की वायसराय से जो बात
हुई उसमे कोई सन्तोषजनक परिणाम आने की आशा नही मालूम हुई।
शाम को वर्धा पहुचे।

डा० मेहता के इलाज के बारे में जयरामदासजी से बातचीत।

मैं मदालसा-श्रीमन के घर ठहरा। यहा ठीक आराम व शान्ति मिलन
सभव है।

कमल, सतीश वगैरा आये। व्यवस्था के बारे मे क्या-क्या तकलीफ होनी है
यह कहा। मैं तो मेहमान ही रहूगा।

सभापति के नाते उन्हें कहना था सो कहा। सीतारामजी व हीरालाल-जी वगैरा भी बोले; दोनों पक्ष एक हो गये, कहा।
६॥ बजे करीब वर्धा पहुंचे।

१४-१०-३९

हीरालालजी शास्त्री, जेठालालभाई, सीतारामजी सेकसरिया आदि मित्रों से बातचीत। किशोरलालभाई से भी। काले, मोघे, अम्बुलकर भी मिले। बापू से मिलने सेगाव। भारती, जयरामदास साथ थे। डा० लक्ष्मीपति की रिपोर्ट पढ़ी। डा० मेहता की ट्रीटमेन्ट कराने की बापू की राय रही।
दुकान का कार्य। सीतारामजी पोद्दार बम्बई गये।
पवनार गये। विनोबा से बहुत देर तक वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव पर बात-चीत। ठीक चर्चा हुई। भोजन वहीं पर किया। प्रार्थना से ठीक शान्ति मिली।

१५-१०-३९

घनश्यामदासजी बिड़ला से बम्बई फोन पर बातचीत। वह रुक जावेंगे।
मदन कोठारी को उसकी बेपरवाही की भूलें बतलाईं। उसने स्वीकार की। प्रयत्न करने को कहा।
जाजूजी का आया हुआ खानगी पत्र कमल को पढ़ाया। उसे जवाब दिया।
राजगोपालाचारी देहली से आये। उनके साथ बापूजी के पास सेगाव गये। वह देहली में वायसराय से दो बार मिले, उसका हाल वहां सुनाया। उन्हें, कांग्रेस से झगड़ा न हो, इस बारे में, पच्चीस टका उम्मीद है। उन्हें तो आगे चलकर संघर्ष आता दीखता है। असेम्बली के प्रस्ताव में वायसराय ने थोड़ी दुरुस्ती बतलाई, वह स्वीकार हुई। उसके मुताबिक सरदार वल्लभभाई व श्रीकृष्ण, प्रीमियर बिहार को, टेलीफोन कर दिये गए।
रात के एक्सप्रेस से जलगांव होते हुए, अमलनेर, धुलिया के लिए थर्ड में रवाना। चि० मदालसा, दामोदर, विट्ठल साथ में।

चालीसगांव, १६-१०-३९

जलगांव उतरे। सम्भू, पुरुषोत्तम दास की लड़की की आज भयंकर दुर्घटना हो जाती, अगर पैसेन्जर नहीं पकड़ता तो। गाड़ी चालू हो गयी थी।
मोटर से अमलनेर रवाना। ९ बजे करीब पहुंचे। कानी, कोटेचा के दिवा

वर्किंग कमेटी का प्राइम मिनिस्टरों के साथ विचार-विनिमय।
वल्लभभाई के साथ बापू के पास सेगांव। वल्लभभाई से जयपुर वगैरा की बातें। बापू सोये हुए थे। प्यारेलाल ने सुदर्शन अग्रवाल (हसनपुरवालों) की स्त्री रमा देवी का पत्र पढ़ाया, दुःख हुआ। दयाजनक।
बापू से स्टेट के मामलों पर वर्किंग कमेटी की थोड़ी चर्चा।
बापू स्टेट स्टैंडिंग कमेटी के साथ एक घंटा बैठे।
कांग्रेस सरकारों को किस प्रकार का रवैया अख्त्यार करना चाहिए उसपर विचार-विनिमय के बाद प्रस्ताव पास हुआ।
विधानबाबू ने दवाई लिखकर दी।
जवाहरलाल व राजेन्द्र बाबू का गांधी चौक में व्याख्यान हुआ।

१२-१०-३९

बाबा राघवदास, सुदर्शन अग्रवाल (हसनपुरवाले), सीतारामजी, व हीरालालजी शास्त्री से बातचीत।
जवाहरलालजी, राजाजी वगैरा सुबह गये। बातें, विनोद। जवाहरलालजी से कहा कि 'आप बहुत लम्बा भाषण देने लग गये हैं; असर कम हो जाता है।'
भारती अम्बालाल भाई की लड़की बम्बई से आई।
बाला साहब खेर (बम्बईवाले) से वर्तमान स्थिति, कार्य मिनिस्ट्री, पूना, बम्बई, सतीश कालेलकर, सुशीला, गुप्त वगैरा के संबंध में विचार-विनिमय। अन्य कई लोगों से बातचीत; नागपुर से डेपुटेशन आया।

१३-१०-३९

सेगांव गये, हीरालालजी शास्त्री, सीतारामजी सेकसरिया, सीतारामजी पोद्दार, मदालसा के साथ।
बापू ने कहा कि डा० लक्ष्मीपति की राय लेना बहुत जरूरी है; उन्हें दिखाया।
कृष्णदास गांधी व राधा गांधी वगैरा मिले।
अग्रसेन जयन्ती निमित्त बहुत आग्रह होने के कारण सीतारामजी, हीरालालजी, आदि के साथ मोटर से नागपुर गये। हिन्दुस्थान हाउसिंग में ठहरे व नाश्ता किया। काटन मार्केट में अग्रवाल भोज ठीक ढंग से।

सभापति के नाते उन्हें कहना था सो कहा। सीतारामजी व हीरालाल-
जी वगैरा भी बोले; दोनों पक्ष एक हो गये, कहा।
६॥ बजे करीब वर्धा पहुंचे।

१४-१०-२९

हीरालालजी शास्त्री, जेठालालभाई, सीतारामजी सेकसरिया आदि मित्रों
से बातचीत। किशोरलालभाई से भी। बाले, सोपे, अम्बुलकर भी मिले।
बापू से मिलने सेगांव। भारती, जयरामदास साथ थे। डा० लक्ष्मीपति की
रिपोर्ट पढ़ी। डा० महता की ट्रीटमेन्ट कराने की बापू की राय रही।
दुकान का कार्य। सीतारामजी पोद्दार बम्बई गये।
पवनार गये। विनोबा से बहुत देर तक वकिंग कमेटी के प्रस्ताव पर बात-
चीत। ठीक चर्चा हुई। भोजन वहीं पर किया। प्रार्थना से ठीक शान्ति
मिली।

१५-१०-२९

रामेश्वरदासजी बिड़ला से बम्बई फोन पर बातचीत। वह रुक जावेंगे।
मदन कोठारी को उसकी बेपरवाही की भूलें बतलाईं। उसने स्वीकार
की। प्रयत्न करने को कहा।
जानकी का आया हुआ खानगी पत्र कमल को पढ़ाया। उसे जवाब दिया।
राजगोपालाचारी देहली से आये। उनके साथ बापूजी के पास सेगांव गये।
वह देहली में वायसराय से दो बार मिले, उसका हाल कहा सुनाया। उन्हें,
कांग्रेस से समझौता न हो, इस बारे में, पच्चीस टके उम्मीद है। उन्हें तो आगे
चलकर संघर्ष आता दीखता है। असेम्बली के प्रस्ताव में वायसराय ने थोड़ी
दुरुस्ती बतलाई, वह स्वीकार हुई। उसके मुताबिक सरदार वल्लभभाई
व श्रीकृष्ण, प्रीमियर बिहार को, टेलीफोन कर दिये गए।
रात के एक्सप्रेस से जलगांव होते हुए, अमलनेर, धुलिया के लिए वर्धा से
रवाना। चि० मदालसा, दामोदर, बिट्ठल साथ में।

चालीसगांव, १६-१०-२९

जलगांव उतरे। रामू, पुरुषोत्तम दास की लड़की की आज भयंकर दुर्घटना
हो जाने की खबर [illegible] नहीं पहुंचना सो। लड़की जल्दी हो गयी थी।
[illegible] से अमलनेर रवाना। ६। बजे करीब पहुंचे। [illegible], कोठिया के लिए

रा मिले।

कान्ती का जवान छोटा भाई विवाह के बाद चल बसा।

प्रताप सेठ से मिले। उनसे जयपुर की स्थिति, वहा जाने, वनस्थली की देखना प्रजामण्डल के काम मे मासिक सहायता देने आदि के बारे में उन्होंने कहा कि वहा मार्च में आऊंगा तब सहायता व वनस्थली देख अभी नवम्बर में तो नही जा सकूंगा।

वर्धा के कामर्स विद्यालय की योजना उन्हे पसन्द आयी। विचार जवाब देने को कहा। इनकी इच्छा तो होती है कि इसे प्रताप विद्यालय बनाया जाय।

नागपुर बैंक के शेयर खरीदने व डायरेक्टर होने की इच्छा तो न हां, डिपाजिट का ख्याल रखेगे।

नडियाद कन्या-आश्रम की सहायता, रुकमणी के लिए लडका आदि विषय मे भी बाते, मीलवाले बनावटी झूठी छाप लगा देते हैं, उन्होंने लाया।

भोजन व आराम के बाद मोटर से धुलिया रवाना। वहा लक्ष्मी व राम से मिलना। बाद मे गगूबाई व श्री रामेश्वरदास भी आये। शान्ति रामजी बगैरा मिले। लक्ष्मी का बालक देखा। उसे व श्रीराम समझाया। प्रतापसेठ भी वहा आ गये।

चालीसगांव गये। वहा से बम्बई तक सेकंड की दो टिकटें ली। मदालसा की भी।

बम्बई, १७-१०-३९

बोरीबन्दर उतरे। प्रतापसेठ सरदारगृह गये। हुकमचन्दजी (इन्दौरवाले) भी मिले। देशपाण्डे के साथ मदालसा को लेकर बिड़ला हाउस आये। शारदाबहन व रामेश्वरदासजी मिले। जयपुर की बातें। रामेश्वरदासजी ने डा० वरजर (जर्मन) को बुलवाया। उसने भली प्रकार तपासा। सारी रिपोर्टें देखी। अपनी राय वह कल लिखकर भेजेगा। डा० बेनगाई की राय भी बीकानेर से मगा लेगा। ब्लड प्रेशर १७०-११५ रहा।

डा० जरसा नेचर क्योर वाले ने भी मुझे व मदालसा को तपासा, ब्लड प्रेशर १९०-११० रहा।

प्रतापसेठ व रामेश्वरदासजी के साथ भोजन। कुछ मिल वाले धोखा देने का काम करते हैं व माल पर गलत छाप देते हैं, वगैरा की चर्चा।

डा० दास (होमियोपैथ आये)। उनसे पूरी बात नही हो सकी, वह देर से आये थे, इससे।

बच्छराज फैक्ट्रीज के बोर्ड की मीटिंग हुई। बच्छराज कम्पनी के बोर्ड की भी मीटिंग हुई। गणदेवी शक्कर मिल, बच्छराज कम्पनी मे रख ली गयी।

शाम को श्री रामेश्वरजी के साथ भोजन। उनके परिवार के लोगो ने लड़ाई, कांग्रेस व हिन्दुस्तानियो के कर्त्तव्य के बारे मे पूछ-ताछ की।

१८-१०-३९

सीताराम पोद्दार ने इन्दौर मालवा मिल के सम्बन्ध मे बातचीत की।

बच्छराज फैक्ट्री, हिन्दुस्तान शुगर, हिन्दुस्तान हाउसिंग के बोर्ड की सभाएं हुई।

मुकन्दलाल (लाहौरवाला) आया। उसे कह दिया कि तुम्हें जो कुछ कहना हो, रामजीभाई, जीवनलाल भाई व केशवदेवजी से बात कर लो। मुझे स्वास्थ्य तथा अन्य कारणो से रुचि व समय नहीं है।

सरदार से फोन पर बातचीत।

श्री माधवजी महाराज से देर तक बातचीत।

१९-१०-३९

[illegible] से बातचीत, व्यवहार के सम्बन्ध में।

सीतापतजी मिलने आये। डा० दास (होमियोपैथ) से परिचय, बातचीत।

गिरधारीलाल शाह व बोरा, भट्ट के तीसरे भागीदार आये।

सरदार वल्लभ भाई से मिला। वर्किंग कमेटी २२ को वर्धा में होने वाली है। पर मुझे वहां आने की जरूरत नहीं। प्रताप सेठ से वल्लभभाई को मिलाया। उन्होंने बनावटी कपड़े का हाल कहा।

[illegible] बेन, [illegible] व [illegible] से थोड़ी बातें।

मुकन्द आयरन की स्थिति थोड़ी सुधरी। रामदेव व रामानन्द पोद्दार मिलने आये।

[illegible]लाल [illegible] से देर तक बातचीत।

न कराने का निश्चय हुआ।

गुलाबाई, रामनिवास, राधाकिसन से जुहू जमीन के बारे मे बातचीत। इनका रवैया व विचार-पद्धति व्यावहारिक दृष्टि से, याने खुद के स्वार्थ (लाभ) की दृष्टि से भी समझदारी की नही रही। अपने को हानि न हो और दूसरे का लाभ हो जाय, इस तरह की वृत्ति की आशा रखना फिजूल है।

राधाकिसन के विवाह की चर्चा; मदन को जरूर विवाह मे ले जाने का निश्चय हुआ। जनेत मे बहुत कम लोगो को ले जाना।

रामकुमारजी बिडला (ग्वालियर वालो) का लडका, डा० मेहता के यहा बीमार है। हृदय की तकलीफ है। इलाज चालू है। लडका सुशील व अच्छा है।

२२-१०-३९

घूमते हुए मदालसा से उसकी स्थिति, खर्च आदि की व अन्य बाते समझी। पत्र लिखवाये।

शान्तिदास आसकरण, मदनलाल जालान, मूलजीभाई मिलने आये। उनके साथ मेहता के अस्पताल मे गये।

स्टीम बाथ, बाद मे कोल्ड बाथ स्नान की ट्रीटमेन्ट ली। एन्टीफ्लोजेस्टीन गोडे पर लगाया। मेहता के यहा आधा गिलास सतरे का रस लिया। शाम को थोडा खाया।

२३-१०-३९

प्रार्थना के समय मुक्ताबाई आ गई। भजन सुने। बाद मे वह अपनी स्थिति कहने लगी।

मूलजी से उसके काम की व जुहू जमीन की हालत समझी। मदनलाल जालान से कृष्णगोपाल के बारे मे तथा अन्य बाते।

मुक्ताबाई के साथ घूमे। मदन के प्रकरण मे मुझे जो कष्ट पहुचा आदि उसको सुनाया।

डा० दिनशा दात के डाक्टर चट्ठे के यहा ले गये। उन्होने दात के एक्सरे व दात भली प्रकार देखे। डा० मेहता की तो स्पष्ट राय है कि दात सब निकाल दिये जायं। अभी नही निकाले जायेगे तो दो वर्ष तक जरूर खराब हो जायेगे। फिर जोखिम क्यो रखी जाये ? जानकी का विचार आने मे

थोड़ी कम शिकायत होती है फिर भी विनता को कह दिया कि जैसी तुम्हारी इच्छा हो, वैसा करो।

बम्बई में सत्यनारायण शास्त्री व बाद में सौभाग्यवती दादी तथा रामबाबू वैद रामचन्द्र आ गये, पन्नू, पन्नू व भागवती के फैसले के बारे में सलाह लेने। अन्त में फैसला हुआ। सौभाग्यवती के लिए पच्चीस हजार रुपये जमा की व्यवस्था हो, जिससे उसे एक सौ रुपये महीना जिन्दगी-भर मिलता रहे। व जो जेवर रामनिवासजी व उनके पास है, वह उसे दे दिया जाये। जेवर करीब दस-ग्यारह हजार में है। अन्य बातें भी रात १० बजे रात तक होती रहीं।

२४-१०-३९

गुप्तावाई से करीब अढ़ाई घंटे तक व्यवहार, ट्रस्ट, व्यापारिक दृष्टि आदि पर ठीक दिल खोलकर चर्चा व विचार-विनिमय।

डा० भट्ट (मेनाहा) ने डा० मेहता व मदु की उपस्थिति में डा० मेहता की राय के अनुसार चार दांत निकलवाये। एक दांत टूट गया। दांत निकालने के बाद थोड़े में हलकापन मालूम होने लगा।

गुप्तावहन, कमला, विनय के साथ दो घंटे करीब पत्ते खेलते रहे। गुप्तावहन से बहुत जूनी व्यापार आदि की बातें व मेरा रामनारायणजी से जिस प्रकार सम्बन्ध आया, वह कहा।

२५-१०-३९

गुप्तावहन से २॥ घंटे बातचीत, उनके इलाज, सत्संग वगैरा के बारे में। डा० तलवलकर (अहमदाबाद वाले) आये। उन्होंने मेरी बीमारी के लिए प्राकृतिक चिकित्सा के साथ-साथ डा० विधान के बताये हुए इन्जेक्शन भी लेने को कहा। अहमदाबाद में एक होमियोपैथ डा० को यह बीमारी ६० वर्ष की उमर में हुई। दस वर्ष रही। बाद में इन्जेक्शन लिये। उससे ठीक लाभ पहुंचा। चलने-फिरने लगे। हाथ का पंजा भी ठीक हो गया। वह ८५ वर्ष के होकर मरे।

क्षय के बीमारों की चिकित्सा की योजना बताई। एक एकड़ जमीन में बीस झोपड़िया। एक झोपड़ी डेढ़ सौ रुपये में पड़े, इस प्रकार बनवानी चाहिए। क्षय में पूरा आराम, खुली हवा, हवा भरना, पहाड़ की हवा, इस प्रकार

[illegible] का मजा ।

डा० दिनशा के साथ मकान का तय किया—दो महीने के लिए किराया ६०) । मोटर गैरेज ४) है । जल्दी ही जा सकते है ।

डा० मेहता ने गोडे के पानी से स्नान करवाया । बाद मे सेक व पाउडर से मालिश की व दवा लगाई ।

२६-१०-२९

प्रार्थना ।

डा० भट्ट (दांत वाले) के यहां मेहता के साथ । उन्होने ऊपर के दांत का माप लिया ।

डा० मेहता के नेचर क्लिनिक मे एक बाजी [illegible], भगवती बिड़ला के साथ ।

शाम भोजन के बाद घूमे, मालूम हुआ चि० विनय अच्छा पढ़ता है ।

जानकी की आने की खबर पढ़कर खुशी हुई ।

२७-१०-२९

पत्र-व्यवहार, गुलाबहन के साथ घूमना । उनके जापान से व्यापार बन्द करने से रामनिवास को चोट पहुंची, यह बताया । उसके मन की स्थिति कही । उसे कहा कि रामनिवास से कह दो कि तीनो भाई मिलकर जो ठीक समझे, करें । तुम अपना हाथ खीच लो ।

ग्राम देश के विद्यार्थी मिले । गुलाबहन को डा० दिनशा मेहता ने तपासा । उनकी बीमारी का निदान किया । शिवाजी भावे आये । उन्होने मेरी ट्रीटमेन्ट देखी । मालिश, स्नान, हाथपर्मी १० मिनट, डा० मेहता ने गोडे मे तेल लगाया । शंकरराव देव का स्थान बाहर से देखा । बासूकाका जोशी से मिलकर आये । गुप्त मिला । ६४ वर्ष के बूढ़े, उत्साह व स्फूर्ति खूब है । उन्होने सुबह तीन बजे से रात मे सोने तक का अपना प्रोग्राम बतलाया । आज से बालाराम गवली, पूना के ड्राइवर, को चालीस रु० मासिक वेतन पर रक्खा ।

रामनिवास बम्बई से आया । थोडी बातें । विनय के साथ थोड़ी देर खेला । केशवदेवजी नेवटिया की माता माटुगा मे १५ ता० को, शाम के पाच बजे चल बसी ।

२८-१०-३९

राधाकिसन के विवाह के निमंत्रण का विचार। आज ही बम्बई आने की मैंने सलाह दी।

गुप्तावहन वगैरा सब घर के आज सवा तीन की गाड़ी से बम्बई चले गये।

बापूकाका जोशी से मिले।

बम्बई, २९-१०-३९

ट्रीटमेंट के बाद ट्रेनिंग कालेज गया। वहां आर्यनायकम, नरहरिभाई, आशा-बहन वगैरा मिले। सरला देवी (यूरोपियन) को जोर का बुखार १०५डिग्री उसे डा० दिनशा मेहता के यहां भर्ती कराया। उसकी व्यवस्था। जानकी व मदन कोठारी वर्धा से आ गये।

शाम को ट्रेनिंग कालेज में शिक्षण परिषद थी, वहां गये। प्रदर्शनी देखी। खेर साहब व कृपालानीजी का भाषण सुना। कृपालानी ठीक बोले (अंग्रेजी में)।

बम्बई से रामेश्वर नेवटिया का फोन आया कि महाराज का जुहू में ऐरो-प्लेन से गंभीर एक्सीडेन्ट हुआ। पायलट गाडगिल मर गया। चिन्ता। डा० टी० ओ० शाह को फोन किया। बाद में रात की गाडी से ही बम्बई आने का निश्चय किया। सेकण्ड क्लास से रवाना।

बम्बई ३०-१०-३९

सुबह दादर ५॥। बजे करीब पहुचे। रामेश्वर नेवटिया स्टेशन आया। सामान मोटर मे बिड़ला हाउस भेज दिया। मैं सीधा अस्पताल गया। जानकी साथ मे। जयपुर-महाराज के एक्सीडेन्ट का हाल जाना। स्थिति जोखमकारक नही दिखाई दी। महाराज पहचान नहीं सकते थे। उनके साथियों से मिला। डाक्टरों से सलाह, व्यवस्था देखी। आज इसीमे मिल कर आठ घंटे वहा लगे। शाम को अमरसिंहजी व डा० विलियमसन को जुहू से लेकर आया, बातचीत। डा० टी० ओ० शाह से मिला। इलाज की व्यवस्था। मुलाकातियों के बारे में बंदोबस्त वगैरा; देर तक वहां रहा। महाराज की छोटी बहन से, जो आज यूरोप से आई, बातचीत। श्री चंद्रपाल सिंहजी की स्त्री को सिगरट पीते देखकर थोड़ा बुरा लगा।

सरदार वल्लभभाई से मिलना। भूलाभाई भी वहीं थे। परिस्थिति पर विचार-विनिमय।

केशवदेवजी के यहां सुबह व शाम को गया। रात को बिड़ला हाउस में ठहरा था।

३१-१०-३९

सुबह जल्दी ही के० ई० एम० अस्पताल गया। श्री महाराज सा० को देखना।

हुकमसिंहजी व पृथ्वीसिंहजी को भी देखा। बातचीत।

श्री केशवदेवजी से दो घंटे तक उनकी परिस्थिति व हिसाब समझा।

श्रीगोपाल नेवटिया के साथ फिर के० ई० एम० अस्पताल। डा० शाह व विलियमसन से बातें। कुं० अमरसिंहजी से इलाज आदि की व्यवस्था व बातचीत।

कृष्णाबहन के यहां भोजन। सुशीला, राजेन्द्रलाल, मदन वगैरा साथ में। जानकी ने भी वहीं भोजन किया।

सरदार वल्लभभाई से मिलना, व्यवस्था आदि।

के० ई० एम० अस्पताल गया। कर्नल अमरसिंहजी को साथ लेकर जुहू आया। जयपुर की सारी स्थिति, प्राइम मिनिस्टर के स्वभाव आदि के बारे में देर तक विचार-विनिमय। पोलिटिकल रेजीडेन्ट के व्यवहार आदि पर चर्चा। उन्हें ताजमहल होटल छोड़ा।

१-११-३९

उमाशंकर दीक्षित अपने भाई को लेकर आया। उसकी नौकरी व काम की बातें।

श्री मुकन्दलालजी पित्ती व उनकी स्त्री राजकुमारीजी आयीं। विमला व गोपाल की सगाई की बातें कीं।

के० ई० एम० अस्पताल में श्री अमरसिंहजी, मिनिस्टर जयपुर, से महाराज के इलाज के बारे में बातचीत। डा० टी० ओ० शाह का इलाज चालू रखने के बारे में विचार-विनिमय। डा० विलियमसन से बातचीत। महाराज को करीब १२॥ बजे गवर्नर हाउस में ले गये।

मेरे पांव का दर्द जोर से शुरू हुआ। के० ई० एम० में डायथर्मी लीनाभाई

गे दी। रायन्नजी से बातचीत। डा० टी० ओ० शाह से देर तक बातचीत।
पेरिनबेन व गुर्शेदबहन मिलने आयीं।
जैनाबहन (डा० रजब अली की स्त्री) व उनके सालिसिटर, मनचरशा, मिलने आये। डा० रजबअली के बीमे के रुपये ओरियंटल से मिलने के बारे में मि० रोमर, साली‌सिटर, को फोन किया। वह वाजिब मदद करेगा
प्रह्लाद व पन्ना आये। कृष्णाबहन सिंघानिया आई। पन्ना ने खूब हंसाया। बाद में मूलजी, जगनादास, आबिद अली, सीतारामजी पोद्दार के साथ ब्रिज मेला।

२-११-३९

जमनादास गान्धी से मशीनरी लेने-बेचने की चर्चा।
शारदाबहन बिड़ला ने कहा कि शिवरतनजी मोहता अग्रवालों में सम्बन्ध करने को राजी हैं।
गवर्नमेन्ट हाउस में महाराजा जयपुर को देखने गये। महारानी उनसे मिल रही थी, इसलिए सेक्रेटरी के आफिस में ठहरा। कुर्सी मंगाकर बैठा। वहीं पर राजा ज्ञाननाथ, प्राइम मिनिस्टर, से जबरदस्ती परिचय कर लिया। डा० विलियमसन से महाराज की तबियत का हाल पूछा व डा० टी० ओ० शाह से आखिर तक मदद लेने के बारे में कहा। बुद्धपालसिंह को पोली-क्लिनिक में भेजने के लिए भी कहा।
सरदार वल्लभभाई, जयरामदास व कृपालानी से मिला। बातचीत। रात को देहली से फोन आया। उससे तो सन्तोषकारक परिणाम की आशा नहीं दीखती।
राजा ज्ञाननाथ, जयपुर प्राइम मिनिस्टर, से ताजमहल होटल रूम नं २६६ में ३ से ४ तक खूब स्पष्ट बातचीत। उन्होंने कहा कि मेरे पास समय का अभाव होते हुए भी मैं आपसे मिला। मैंने भी कहा कि मैं भी समय निकाल कर आपसे मिला हूं। और भी खरी-खरी बातें हुईं। सोसायटीज एक्ट में सुधार करने की बात व निश्चय हो गया। वह उन्हें समझाकर कहा। विशेष आशा इनसे नहीं कर सकते। कुछ समय देखना होगा।
पूना रवाना।

देंगे तो बहुत चोट पहुचेगी, आदि। यह नया बजट बढा। करीब तीन सौ तो लग ही जावेंगे।
डा० मेहता का कहना था कि सब मिलाकर दस घंटे सोना चाहिए। रात को आठ व दिन को दो। मुलाकात व पत्र-व्यवहार बहुत कम कर देना चाहिए।

५-११-३९

नीबू गरमपानी लेकर बन्ड गार्डन घूमने गये। जानकी के साथ रेडियो सुना। जवाहरलाल ने दिल्ली सभा में कहा कि उम्मीद है कि लीग के साथ समझौता हो जायेगा।
मालिश, गरमपानी का स्नान, एनीमा। आज इतवार होने के कारण शाम को जो ट्रीटमेन्ट डा० दिनशा मेहता देते थे, वह बन्द रही। आज कुल मिलाकर १० घंटे सोया। साग, फलों का रस व फल लिये।
शिवाजी, बाबाजी, पन्नू दानी, हरिभाऊ फाटक, बाई वगैरा मिलने आये। शाम को प्रार्थना शिवाजी ने की।
रेडियो पर वायसराय का भाषण सुना। उससे तो ज्यादा आशा नहीं दिखाई दी। 'हरिजन बन्धु' पढ़ा।
डा० शाह को जयपुर महाराज के लिए बम्बई फोन किया। राजा ज्ञान-नाथ व विलियमसन से बातें हुईं, वह कही।

६-११-३९

थोड़ा घूमे, कोल्ड हाउस देखा। वहां तीन वर्ष के आलू वगैरा रखे हुए हैं। म्यूजियम देखा। शहद वगैरा खरीद कर लाये। मोसाम्बी दो आने के हिसाब से ६ आने दर्जन थी। मोटर रुक गई। धक्का दिया।
कुवलयानन्द (गानोली वाले) मिलने आये। उन्होंने कहा कि गोड़े की हड्डी में फरक हो गया है। इसका इलाज हमारे पास नहीं है। दाल मत खाओ और वायु पैदा करने वाले पदार्थ मत लो। दूध वगैरा ज्यादा लो। शंकर राव देव, प्रेमा कन्टक, भाई कोतवाल, धोत्रे, पटवर्धन, पन्नालाल, नागोरी, सूरज, करवा वगैरा मिले।
श्रीमन्नारायण व उमा वर्धा से आये।

७-११-३९

रात को नींद ठीक आई। बोटेनिकल व बन्ड गार्डन घूमकर आये। पत्र-

व्यवहार किया। ट्रीटमेंट ली।

रा० ब० हनुमन्तराय, बाला सा० खेर, गुप्ते, जोशी वगैरा मिलने आये। दिन में व रात को पत्ते व शतरंज खेली। शाम की प्रार्थना के बाद थोड़ा घूमे।

८-११-३९

घूमते हुए पारसियों के दोनों श्मशान भली प्रकार से देखे व वहां के इंचार्ज श्री पथकी ने समझाकर बतलाए।

सूर्यनारायण अग्रवाल इंजीनियर, भेरूलाल गेलड़ा (उदयपुर वाले) के जमाई श्री नरगिसबहन कैप्टन, खुर्शेदबहन, रार गोविन्दराव मटणावकर मिलने आये।

शाम को थोड़ा घूमे। प्रार्थना।

९-११-३९

डॉ० मेहता ने ट्रीटमेंट दी।

कल की पार्टी बोटेनिकल गार्डन में करने का निश्चय। श्री शुभराज (हैदराबाद-सिंध वाले) इस प्रकार के कामों के लिए सुविधा बनाते गये।

१०-११-३९

सुबह घूमते समय रामेश्वर नेवटिया से गोला मिल व बच्छराज कम्पनी के बारे में ठीक बातचीत हुई।

आज शाम बोटेनिकल गार्डेन पार्टी के लिए रे मार्केट से फल खरीदे।

जानकी के कंजूसी वाले स्वभाव पर बहुत बुरा लगा। मेरे कुछ शब्दों से उन्हें भी बहुत दुःख पहुंचा। मैंने तो बाद में अपने क्रोध को संभाल लिया, परन्तु वह मेरे समझाने पर भी मेरे असली भाव को पूरी तरह नहीं समझ सकी, अथवा समझकर भी उसकी कदर नहीं कर सकी। इसका दोनों को विचार रहा।

ट्रीटमेंट रोज के मुताबिक डॉ० मेहता ने दिया।

वर्तालिक के मित्रों के साथ फोटो। शाम को बोटेनिकल गार्डेन में वर्तालिक के सब मित्र व घर के लोगों के साथ ४॥ से ७ बजे तक नाश्ता, फल वगैरा, घूमना-फिरना व प्रार्थना। ट्रीटमेंट शुरू होने के बाद आज यहां कुमारप्पा जी के आग्रह से और डा० दिनशा के कहने से थोड़ी सी मिठाई, केक व बिस्कुट

लिया, वाकी फल खाये, सीताफल ज्यादा।
क्लीनिक में पटाखे छोडने देखे। डा० दिनशा वगैरा के साथ। बाद मे ब्रिज, १०॥ तक।

११-११-३९

सुबह रामेश्वर से गोला-मिल के बारे मे ठीक वातचीत। श्री गिल्डर को पत्र भेजा। उसके बारे मे केशवदेवजी को भी सूचना भेजी। रामेश्वर मे कहा कि गोला की ठीक व्यवस्था तुम्हारे वहा रहे बिना हो जानी चाहिए। गोला शक्कर बेचने की एजेन्सी नेवटिया ब्रदर्स को। उस बारे मे अगर आनन्दकिशोर खुशी से व उत्साह से असिस्टेन्ट सेक्रेटरी का काम करने को तैयार हो, पूरी जिम्मेवारी से व बिना कुछ लिये, व मा० शिक्षा मण्डल को वार्षिक सहायता। बम्बई मे जो खर्च लगता था, वह देने तैयार हो व श्रीकृष्ण का विचार नही करना हो तो, एक टका कमीशन, नही तो कमीशन घटाना पडेगा।
चि० श्रीकृष्ण बम्बई से आया।
जानकी को कल फल खरीदने की वातचीत से व उमा की घबराहट से जो चोट लगी, उसके समाधान का प्रयत्न।
दिन मे व शाम को दिनशा ने ट्रीटमेंट दी।
हरिभाऊ फाटक, इन्दिराबाई सुबह मिलने आये।
वर्धा से, कमीशन साक्षी लेने खानखोजे व सभाजी आये।
रमानन्द व बलभद्र के दीवानी के मुकदमे मे सभाजी आदि से बातें।
कसरत। देशी पहलवानो को पाच इनाम। घर मालिक के यहां फल वगैरा लिये।

१२-११-३९

त बगला यरवडा रोड वाले को भली प्रकार घूमते हुए देखा। प्रो० त्रिवेदी यहां गये। वह नही मिले। रे मार्केट से फल वगैरा लिये।
ाम को बहादुरजी, नरगिसबहन, पुर्णेद, क० सोनावाला मिले।
टमेंट ली।
बई से लक्ष्मीनारायणजी गाडोदिया व उनके मुनीम दोपहर को आये व त को गये। हनुमान प्रसाद व श्री गोपाल नेवटिया भी मिलने आये।

रामेश्वर व श्रीकृष्ण नेवटिया यहीं थे। गोला शुगर की एजेन्सी तीन वर्ष के लिए, कमीशन पहले मुजब। आनन्द किशोर पूरा समय, जवाबदारी व उत्साह के साथ, बिना वेतन असिस्टेन्ट सेक्रेटरी का काम करे।
मा० शिक्षा मण्डल को खुशी से डेढ सौ रुपया मासिक मदद करता रहे। आनन्द किशोर काम न करे या ठीक न करे तो एग्रीमेन्ट बदलने का हक रहेगा।
चि० शान्ता, श्रीनिवास व सुशीला रात को एकाएक आ गये। प्रोफेसर त्रिवेदी, उनकी स्त्री व लड़का मनुभाई मिलने आये।

१४-११-३९

घूमते हुए यरवडा का बंगला डा० दिनशा, गुलबहन, शान्ता व जानकी के साथ देखा। वापस आते समय डा० दिनशा के साथ घूमते हुए पैदल आये।
मोटर से उमा, श्रीमन वगैरा जुन्नर (शिवाजी के जन्म-स्थान) गये।
मि० वकील का मकान देखा।

१५-११-३९

मदालसा उदास हुई। उसके पास बैठकर प्रार्थना की।
घूमने—बोटेनिकल गार्डन। शान्ता, श्रीनिवास, सुशीला साथ में। रास्ते में पुर्शेदबहन भी साथ हुईं। शान्ता से उसके स्वास्थ्य, इलाज व पूना रहने तथा श्रीनिवास से व्यापार व बम्बई में काम सीखने आदि की बातें। पुर्शेदबहन से गनी, रोशन (रुस्तमजी फरदोनजी दखन हैदराबाद) के हाल। फिरोजा की बहन का गनी से विवाह होना निश्चित हुआ, दर बताया। मृदुला, इन्दु, भारती, खुर्शेद, सुभाष, जवाहर आदि की चर्चा। राजनीतिक थी।
आज मिलिटरी अस्पताल में एक्स-रे फोटो गोड़े वगैरा के लिये, ४॥ से ६। तक। वजन १६५ रहा।
हनुमानप्रसादजी, बम्बई से न० मास्टर का पत्र लेकर आये।

१६-११-३९

जानकी, नरगिस व खुर्शेदबहन के साथ घूमना। बातचीत कांग्रेस इलेक्शन के सम्बन्ध में।
डॉ० मेहता से मिले। [illegible]

महेन्द्र प्रताप, नरगिसबहन, खुर्शेदबहन, वगैरा मिलने आये। महेन्द्रप्रताप ने गाना सुनाया। नरगिस व खुर्शेद के साथ मिसेस डा० वकील से किंग एडवर्ड अस्पताल मे मिले।

१७-११-३९

साइकल पर घूमने का प्रयोग शुरू किया।
शाम को अनार का रस लिया, जिससे थोड़ी घबराहट पैदा हुई व बेचैनी मालूम दी। डा० मेहता ने पेट पर ठंडा कपड़ा व बर्फ रखा।
सिर की ओर से पलंग के पांव ऊंचे किये। बाद मे दो गोली पानी मे दी। सादा ऐनिमा दिया तब जाकर शांति मिली।
रा० ब० हनुमतरायजी मिलने आये।
मदू के लिए डा० मिसेज वकील को बुलवाया। उसने अस्पताल में रखने को कहा।
इस डाक्टरनी का स्वभाव जानकीजी को पसन्द नही आया।
महेन्द्र प्रताप ने प्रार्थना मे व बाद में गायन सुनाये। अच्छे मालूम दिये। भाव भी ठीक था।

१८-११-३९

आज से नियमित साइकल चलाना शुरू किया, कम्पाउन्ड में ही। डा० दिनशा का कहना है कि इससे फायदा पहुचेगा। आज शाम से टमाटर के रस पर रहना भी शुरू किया।
चम्पादेवी भास्का, पन्नालालजी का भतीजा, हरिभाऊ फाटक, इन्द्रदेवी व यरवडा मकान वाले मिलने आये। उनका मकान-दुरस्ती में १८ हजार लगेंगे, उन्होंने बताया। पूरी दुरस्ती हमारे कहे अनुसार करा देंगे तो, अढ़ाई सौ महीना भाड़ा पांच वर्ष तक व पांच वर्ष का हमारे ऑप्शन की शर्त कही।
के० सेमन्द वकील (स्टेट दलाल) का काटेज महेन्द्रप्रताप के लिए भाड़े से लिया। बातचीत। वकील बम्बई में स्टेट दलाली करता है।
प्रभात फिल्म स्टूडियो की ओर घूमने गये।
कम्पाउन्ड में साइकल के इक्कीस चक्कर लगाये।
टमाटर व मूग का सूप भोजन में लिया। गजरे चूसे।

शाम को संतरे का रस लिया।

बम्बई से व्यंकटलालजी पित्ती मिलने आए। बातचीत। पूना मिल चौदह लाख में। ८ लाख का माल था। आठ लाख में गई।

विमल व पशावन लेने आये। भजन सुनाये।

ग्लोब सिनेमा में सवा तीन बजे 'पुकार' फिल्म देखी। जानकी वगैरा दस लोग साथ थे। सिनेमा बहुत दिनों के बाद देखा। ठीक मालूम हुआ। आंखों में पानी भी निकला। नूरजहां का पार्ट ठीक दिखाया।

२१-११-३९

ट्रीटमेंट ली।

प्रताप सेठ (अमलनेर वाले) मिलने आये। उनसे व चि० मगन से मिलना। वे भी यहां मकुटुंब इलाज के लिए आये हैं। भंडारकर इन्स्टीट्यूट रोड पर बंगला लिया है।

जानकीजी कल से सुस्त व नाराज हैं। पूरा कारण नहीं मालूम हुआ। मुझे अपने स्वभाव में काफी फरक करना जरूरी है। कई बार इन्हें मामूली व सीधी बात भी बरदाश्त नहीं होती। कम बोलने से भी सन्तोष नहीं होता व ज्यादा बोलने में शब्द पकड़ने के डर के कारण सुसोचत रहती है।

सर गोविंदराव मडगावकर व रा० ब० जगताप मिलने आये। मडगावकर पूना वालों की वृत्ति से नाराज हैं।

२२-११-३९

साइकल घुमाई तो गिर पड़े। हाथ में चोट आई। साइकल नई थी।

कृष्णाराव मास्टर गायनाचार्य मिलने आये। एक घंटे तक महेन्द्र प्रताप सहाय के शिक्षण के बारे में बातचीत। नागपुर बैंक के काम के लिए सुगमचन्द बाठिया आया।

घूमने हुए चतुश्रृंगी देवी की ओर गये। तालाब देखा।

२३-११-३९

घूमते हुए पांचों पांडव व जंगली महाराज की समाधि तक। वहां जाकर एक गरीब ब्राह्मण के घर जाकर उसकी स्थिति समझी। उसे दस रु० की सहायता। बाबूराव जोशी, चन्द्र शेखर से मिलते हुए मास्टर कृष्णाराव के यहां। उन्होंने महेन्द्र प्रताप सहाय को गायन सिखाना आज से शुरू

किया। शाम को घूमते समय सर गोविन्दराव मडगांवकर से मिलने गये। वहां नरगिसबहन भी मिली।
पत्र लिखे। बापू को भी।
प्रताप सेठ आये। डा० मेहता ने तपासा, बातचीत।

२४-११-३९

शाम की प्रार्थना तक आज मौन व उपवास रखा। सुबह घूमने गये। वहां नदी के तट पर झाड़ के नीचे करीब एक घंटा विचार, चिंतन, अकेले। आज गुभराज (सिंध-हैदराबाद वाले) व क्लीनिक के दूसरे मित्रों के साथ मिलकर जन्मदिन निमित्त फोटो वगैरा लिये, माला पहनाई। रा० ब० जगताप, डा० दिनशा वगैरा ने भाषण किये। मेरा तो मौन व उपवास भी था। शाम को प्रार्थना के बाद मौन छोड़ा व उपवास भी। संतरे व सब्जी का सूप लिया। मित्रों का आभार माना।

२५-११-३९

प्रार्थना।
ट्रीटमेंट।
सुबह घूमते हुए चन्द्रशंकर शुक्ल के घर गये। हाथ-कागज के नमूने देखे। नेचर क्योर के बारे में प्रो० त्रिवेदी व चन्द्रशंकर से बातें। श्री हरिहर शर्मा मिले। हाथ के कागज की हिन्दी डायरी के बारे में कहा।
शाम को महाबलेश्वर के रास्ते छः मील पर देवी के स्थान पर उतरकर घूमे।
प्रताप सेठ व मगनबाबू मिलने आये।

२६-११-३९

तीन बजे खड्गवासला तालाब पर पार्टी के साथ गये। पत्ते खेले। राम मराठे व महेन्द्र प्रताप के गायन सुने। खेल-कूद। आज पूर्ण चन्द्रमा था। ठीक आनन्द आया।
मि० खान ने व्यायाम के कई खेल बतलाये। सब मिलकर १६ जने थे। ९॥। बजे घर आये।
सुबह प्रताप सेठ व मेहरचन्द से मिलकर उनकी व मगनबाबू की तबियत के बारे में देर तक विचार-विनिमय।

२७-११-३९

धर्मेन्द्र शास्त्री महाराजा के मकान का भाई मर गया। उनके साथ उनके भाई के बच्चे व स्त्री को देखा। खूब हिम्मत रखी उन्होंने। आज तेरहवां दिन है।

सिंहगढ़ की ओर घूमकर आये। महेन्द्रप्रताप सहाय ने कहा कि विद्यार्थी की [illegible] ज्यादा व [illegible] की दूसरी नजर से घूम लेने की यू० पी० में खूब चर्चा है व [illegible] भी मिल सकता है। बम्बई मजदूरों के बारे में भी चर्चा है। [illegible] उनसे कहा कि झूठी अफवाहें भी उड़ती रहती हैं।

रा० ब० जगतनारायण की [illegible] व [illegible] सुनी। आदमी तो वीर मालूम देते हैं।

२८-११-३९

सुबह प्रतापसेठ व मगनबाबू से मिलना हुआ। बातचीत। रा० ब० जगनाथ से बम्बई की सूर्योदय मिल के बारे में बातचीत। रेवरन्ड राठोड बारिस्टर के बारे में भी।

२९-११-३९

सुबह पनव से डेक्कन कालेज तक पैदल घूमे। महेन्द्रप्रताप सहाय से सेवा व योग्य धर्म-मार्ग की चर्चा।

नाव में बैठकर संगम आये। शाम को भण्डारकर इस्टीट्यूट की पहाड़ी की ओर घूमने गये।

प्रताप सेठ व मगनबाबू मिलने आये। दोनों की बीमारी के बारे में डा० दिनशा से बातचीत। यहां का वातावरण देखा। शाम को फिर प्रताप सेठ से मिला। घूमते समय मगन से बातचीत, शरीर वगैरा के संबंध में।

३०-११-३९

मगनबाबू व रामेश्वरजी (मुकन्दगढ वाले) मिलने आये। उन्होंने नये प्राइम मिनिस्टर राजा ज्ञाननाथ के हिण्डौन जाने और लोगों को जिला-परिषद के विरुद्ध भड़काने का काम किया, यह बताया। शेखावाटी में सात रोज की हड़ताल होने की संभावना बतलाई। हिण्डौन में जलूस ठीक निकला। जनता दस-बारह हजार जमा हुई थी, खास-खास लोग सौ के करीब आये थे।

[illegible] देख आये। [illegible] के बलिदान-कमेटी का हाल [illegible] में [illegible]। [illegible] भी आई थीं। वे लोग [illegible] का जुलूस देखने आये थे।

रात को [illegible] का जुलूस ११ से १२॥ तक देखा। [illegible] साथ में थे। आज रात को १॥ बजे के करीब सोना हुआ।

१-१२-३९

[illegible] ने सुधीन्द्र मित्र ([illegible]) के बारे में कहा कि [illegible] का पत्र आया है। पहले चार लाख कहते थे, अब बाद में छः लाख कहते हैं। [illegible] से मिल आये हैं। कमल का पत्र आया। वे कल पहुँचेंगे। ओंकारनाथ जी (अजमेरवाले) मिलने आये।

२-१२-३९

आज वर्धा से कमल, सावित्री, राहुल, मोहिनी, १२.०५ की गाड़ी में आये। देखकर सुख मिला।

जानकी साथ में। उमा का विवाह माघ तक कर देना। कमल की राय भी हुई।

मुलाकात—केदारनाथजी महाराज १० से ११ तक मिले।

३-१२-३९

सुबह यरवदा जेल के पास के कच्चे रास्ते होकर कालेज के पीछे की सड़क तक घूमने गये, जानकीजी, सालीबाई, राहुल साथ में।

नाथजी से १० से ११ तक मनःस्थिति पर एकांत में विचार-विनिमय।

शाम को पार्टी लेकर कत्रज घाट। वहां पत्ते खेले। संतरे खाये। कच्चे व विकट रास्ते से नीचे उतरे।

४-१२-३९

जानकी व राहुल के साथ एम्प्रेस गार्डन की ओर घूमने गये। बाद में सावित्री, कमल आये।

शाम को पांच पाडव व पाषाण मंदिर देखकर आये। डा० दिनशा व महेन्द्रजी, सावित्री, कमल साथ में थे।

५-१२-३९

स्टीम बाथ लेते हुए चक्कर आ गये। बेहोश हो गया।

सिर में खून चढ़ गया था सो नीचे उतारा। डा० जिवराज ने गरम कपड़ों में सुलाया। कुछ शरबत वगैरा पिलाया व आराम दिया। दिन भर तबीयत नरम रही।

खुराक में केवल दस संतरे ही लिये।

बोटेनिकल गार्डन की ओर घूमने गये। राहुल व जानकी साथ में। बाद में सावित्री व कमल के साथ ठीक बातें। शाम को कमजोरी व चक्कर के कारण घूमना नहीं हुआ।

प्रो० त्रिवेदी के घर गये। उनकी स्त्री मिली। रणदिवे के घर अण्णा साहब (धुलियावाले) व नानजी से मिले।

बम्बई से पत्र आये। बरेलीवाले राधाकृष्ण के ससुराल से राधाकृष्ण के साढ़ू की लाहौर से मोटर में आते हुए दुर्घटना के कारण मृत्यु हो गई। दुःख पहुंचा।

६-१२-३९

सुबह घूमते हुए कन्ट गार्डन में महेन्द्र प्रताप का गायन हुआ।

१२ बजे वर्धा से दामोदर का तार आया कि आशादेवी आर्यनायकम् का लड़का बबूनी कल शाम को एकाएक चल बसा।

तार पढ़कर दुःख व चोट पहुंची। शाम को सरलाबहन को समझाकर कहा। बापू का तार भी मिला। आशाबहन को तार-पत्र। बापू को पत्र लिखे। मन में थोड़ा विचार बना रहा।

८-१२-३९

डा० की इच्छा रही कि कुछ समय तक और सतरे पर रहा जाये तो ठीक है। इसलिए अभी कुछ समय तक रहने का विचार रखा।

सुबह प्रताप सेठ के बीमार हो जाने की खबर बाबू (मगन) ने दी। वहां गये और थोड़ी देर बैठे। घूमना थोड़ा हुआ। शाम को बिलकुल नहीं हुआ।

प्रताप सेठ को आज ६० वर्ष पूरे होकर इकसठवां चालू हुआ।

पोपटलाल शाह वगैरा मिलने आये। मुरलीधर भी। शाम को केशवदेव जी व कमल बम्बई से आये।

नानजी से करीब डेढ़ घंटा बातें। उनके जीवन का वृत्तांत सुना।

१०-१२-३९

करीब ४० लोगों की पार्टी के साथ पुरन्दरगढ़, जो पूना से पच्चीस मील है पैदल चढ़ना व उतरना। स्थान सुन्दर व रमणीक है। रास्ता भी ठीक है। ऊपर पाग वाले के बंगले में ठहरे। पत्ते खेले, महेन्द्र प्रताप व राम मराठे के गायन। बाद में खेल-कूद। ठीक उत्साह व आनन्द रहा।

वापस लौटते में सासवड आश्रम देखकर आये। प्रेमाकटक व भागवत वहां नहीं थे। जोशी थे। शाम की प्रार्थना के बाद केशवदेवजी से देर तक बातचीत।

११-१२-३९

आज से सिर्फ पानी पर रहने का निश्चय। हो सकेगा तो अगले सोमवार १० बजे तक पानी पर रहना है। बीच में डाक्टर छुड़ा ही दें तो दूसरी बात है। पानी पांच गिलास पिया।

शाम पारसियों की समाधि की ओर थोड़ा घूमे।

प्रताप सेठ व नाथजी से मिलने गये। नाथजी के साथ ठीक बातचीत। बाद में डा० हेडगेवार वगैरा आ गये।

कमल से बातचीत। केशवदेवजी सुबह बम्बई गये।

१२-१२-३९

सावित्री व राहुल के साथ घूमना।

रेहाना, अब्बास तैयबजी की लड़की से मिलना। भजन सुनना। महेन्द्र प्रताप ने भी सुनाया। कु० सरोजनी नाणावती व उसकी माता का स्वभाव ठीक मालूम दिया।

शाम को एम्प्रेस गार्डन घूमकर आये। जानकी व कमल, बम्बई सुबह ७-१० की गाड़ी से गये—राधाकृष्ण रुइया, रामगोपाल, व शशिकला के विवाह के लिए। सावित्री ने अखबार सुनाया।

नाथजी व प्रताप सेठ से मिलना। ६॥ से १०॥ तक पुनर्जन्म में नाथजी का विश्वास नहीं। यह उन्होंने समझाकर बतलाया।

१३-१२-३९

नींद रात में व दिन में भी ठीक आई। आज कल से ज्यादा उत्साह मालूम दिया। पानी ६ गिलास पिया। एनीमा व मालिश।

ह कैम्प की शाम ओर और को खिड़की की ओर घूमते हुए रेहाना व जनी से मिले। रेहाना के भजन सुने।

नाथजी व प्रताप सेठ से मिले। 'जीवन शोधन' में से पढ़वाकर सुनना शुरू ा, ६॥ से १०॥ तक। बापूकाका, जोशी व प्रेमा कण्टक मिलने आये। त्री व मदनलाल ने अखबार वगैरा सुनाये। शाम की प्रार्थना के बाद दिर' पढ़ा, पत्ते खेले।

१५-१२-३९

ह वन्ड गार्डन घूमने गये—राहुल, महेन्द्र प्रताप साथ में थे। शाम को ल ज्यादा होने के कारण घूमने नहीं गया।

जी व प्रतापसेठ के साथ ६॥-१०॥ तक रहा। 'जीवन शोधन' नाथजी दवर सुनाया। पहले तुकाराम के दो अभंग सुनाये। बापूकाका जोशी ना गये। इलाज के संबंध में देर तक विचार-विनिमय होता रहा। सावित्री ने अखबार सुनाये, जिन्ना को जवाब तो मिल रहा है, और ज्यादा मिलना जरूरी है, मुस्लिम नेताओं की ओर से। मेहता अस्माबाला बम्बई गई। रात को गाड़ी से जानकी बम्बई से आई।

१५-१२-३९

नाथजी व प्रताप सेठ के पास। 'जीवन शोधन' ६॥-१०॥ तक पढ़ा। बाबा सा० से नानावती के बंगले पर मिले। बाद में वह तथा सरोजनी मिलने आये।

सुबह नाणावती के बंगले तक खिड़की व शाम को पारसियों के कब्रिस्तान की ओर घूमे। डा० मेहता भी साथ में थे।

आज रामकृष्ण वर्धा से व कमल बम्बई से आया।

१६-१२-३९

आज उपवास का छठा दिन है।

मोटर में वन्ड गार्डन में घूमना।

नाथजी व प्रताप सेठ के पास 'जीवन शोधन' ६॥-१०॥ तक पढ़ा।

हरिभाऊ फाटक मिलने आये।

१७-१२-३९

घूमना—सुबह वन्ड गार्डन व शाम को आनन्दी के रास्ते। पहाड़ी पर टहरे।

डा० मेहता साहिब ने अंगूर का निलाला लगाना बताया। दिमाग का इलाज। ६॥ से १०॥ तक नाथजी ने 'जीवन शोधन' सुनाया। रात को रेहाना ने सुन्दर भजन सुनाये। 'उठ जाग मुसाफिर' व मीरा के भजन। काका सा० प्रताप सेठ, प्रो० त्रिवेदी, मगनभाई पटेल वगैरा मिलने आये। मि० शान्ता बम्बई से आई।

१८-१२-३९

उपवास को आज पूरे सात रोज हो गये। गुरुजनों व मित्रों की उपस्थिति में १०॥ बजे संतरे के रस से उपवास छोड़ा।
दिन-भर संतरे का रस तीन-चार बार लिया। रात को सूप, साग व मूंग का लिया।
श्री नाथजी, काका सा० प्रताप सेठ व उनकी स्त्री, आचार्य भागवत, प्रेमा कण्टक, घर का पूरा परिवार, शान्ता, सरोजनी नानावती, रेहाना, वगैरा उपस्थित थे। रेहाना ने बहुत ही भावपूर्ण व सुन्दर ५-७ भजन सुनाये। बाद में गुलबेन के पास से व रेहाना के हाथ से संतरे का १० तोला रस सबों को प्रणाम व वन्दन के बाद, थोड़ा-सा निवेदन करके लिया। स्वाभाविक रूप से आज का सभारम्भ सुन्दर व उत्साह देने वाला हुआ। और लोगों ने संतरे लिये। कुछ लोगों ने भोजन किया।

१९-१२-३९

आज छ: बार में डेढ रत्तल दूध लिया, यानी एक बार में १० तोला। चार बजे तक पतली टट्टी लगी। दो संतरे लिये व रात को पिसे हुए साग व मूंग का पानी और पपीता लिया। ठीक मालूम दिया।
नाथजी से मिले। बातचीत ही हुई। 'जीवन शोधन' उन्होंने प्रताप सेठ के साथ पढ़ लिया था।
डॉ० हंस राय जयपुर से आये। कमल सुबह बम्बई गया। व रात को आया। कमल, कालूराम व सागरमलजी से वर्धा संबंधी बातचीत हम डॉ० राय से जयपुर की स्थिति समझी।
रेहाना व सरोजनी मिल गये, ६॥ से १०॥ तक नाथजी ने प्रताप सेठ के साथ 'जीवन शोधन' पढ़ा। बाद में नाथजी ने मुझसे बातचीत की। पढ़ते समय मेरी गैरहाजिरी रही।

२०-१२-३९

९॥ से १०॥ नाथजी व प्रताप सेठ के साथ 'जीवन शोधन' पढ़ा। बाद नाथजी से चर्चा।

शाम को रेहानाबहन ने प्रार्थना के समय भजन सुनाये। कई लोग भज सुनने आये थे।

रात को मेज पर खाने वाले ज्यादा लोग थे। रेहाना व सरोजनीबहन थीं।

राव सा० पटवर्धन, अच्युत पटवर्धन व उनकी भाभी मिलने आये।

२२-१२-३९

रात को नींद थोड़ी कम आई।

नाथजी वे प्रतापसेठ के साथ विचार-विनिमय, तुकाराम के अभंग।

पोपटलाल शाह मेहरेकर वगैरा मिलने आये।

जयपुर-महाराजा व प्राइम मिनिस्टर को सामायटीज एक्ट के बारे में ता भेजे, होम मिनिस्टर के ता० १३-१२ के पत्र के जवाब में।

२४-१२-३९

डा० गिल्डर को बम्बई फोन किया, मेरे साथ भोजन करने व सला करने के बारे में। वह रात को साढे आठ बजे भोजन करने आये। बाद मे एक्स-रे वगैरा देखे। दांत निकालने की राय दी। देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

ताराचन्द रामनाथ की दुकान गये, बाद में अस्पताल गये, डा० दिनशा के साथ। वहां गिल्डर समारंभ के सभापति थे। एक्स-रे डिपार्टमेंट का उद्घाटन हुआ।

डा० दिनशा से देर तक मदालसा के इलाज के बारे बातचीत। दोनों नेटी डाक्टरों को बुलाया।

प्रताप सेठ सुबह आये थे। शाम को प्रह्लाद, पन्ना व श्रीनिवास बंबई से आये। श्रीनिवास शर्मा से 'गोरी हृदय' सुना।

प्रार्थना में रेहाना ने भजन सुनाये।

२५-१२-३९

मदू को रात में १०५ डिग्री बुखार हो गया। कल से चिन्ता। मेन्टिक होने

बातचीत। उनके साथ बैठे। डा० मेहता। दोनों लेडी डाक्टरों से मुलाकात।
शाम को मथुरादास, धनाबोरकर के साथ मोटर पर पूना से २५ मील के करीब एक अर्धेन की सैर देखने गये। प्रकृति सौंदर्य सुन्दर है। घूमे। शाम को वापस लौटे। दिनशा मेहता बगीचा भाग में।

२६-१२-३९

नींद ठीक आई। बन्ड गार्डन पर पैदल जाकर आया। दो मील घूमा।
शाम को भी बन्ड गार्डन पैदल जाकर आया। दूध ४८ औंस लिया।
जानकी मार्गोलि ने हाथ पावों का सेक दिखाया। सबों को पसन्द आया। रुपये ५ दिया।
शाम की गाड़ी से हीरालालजी शास्त्री, हरलालसिंहजी व सन्तकुमार वकील जयपुर से आये। वहां की स्थिति समझी। प्राइम मिनिस्टर को पत्र भेजने पर विचार-विनिमय। झुनझुनूवालों ने यहां की जकात की हालत समझाई।
कोटपुतली वाले, जो एग्रीकल्चर फार्म में काम करते हैं, मिलने आये। डा० मालवे (बम्बई वाले) अंध-छात्रालय के बारे में बात करने आये।

२७-१२-३९

बन्ड गार्डन घूमने गया।
सुबह १।। घंटे करीब हीरालालजी शास्त्री से जयपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय। राजा ज्ञाननाथ प्राइम मिनिस्टर के पत्र के मसविदे में थोड़ा फेरफार।
प्रताप सेठ व बापूकाका मिलने आये।
सावित्री, पन्ना, राम, प्रह्लाद, निवास पुरंदरगढ़ गये। दिन-भर वहां रहे।
मदालसा को फिर थोड़ा खून गया, इससे चिन्ता हुई। जानकीजी का विचार इसे डा० पुरन्द्रे के पास बम्बई ले जाने का है। डा० पुरन्द्रे व आबिद अली को बबई पत्र भेजे। पुरन्द्रे की राय मगवाई।
चिरंजीलाल मिश्र व नेमीचन्द कासलीवाल बम्बई से आये। इन सबों से बातचीत, जयपुर की हालत जानी। सन्तकुमार वकील से जकात की हालत समझी। बापू का पत्र, राजकुमारी का लिखा हुआ,

आया—जयपुर स्थिति के बारे में। तार भेजा। पत्र का मसविदा तैयार हुआ।

प्रार्थना में शाम को रेहाना के भजन। जयपुर के मित्र शामिल थे।

२८-१२-३९

प्रार्थना। घूमते हुए बन्ड गार्डन पैदल गये-आये। हीरालाल शास्त्री से जयपुर के बारे में बातचीत।

प्रह्लाद, पन्ना, निवास, मिश्रजी, बम्बई गये। हीरालालजी व हरलालसिंह-जी वर्धा गये। सन्त कुमार वकील दिल्ली गया। चि० मदालसा की तबीयत ठीक नहीं, बुखार १०३॥, थोड़ी चिन्ता। बम्बई रिपोर्ट भेजी, पुरन्द्रे से व कुमुद मेहता से सलाह करने के लिए। रात को आबिद अली का फोन आया। डा० पुरन्द्रे व कुमुद की राय में चिन्ता की कोई बात नहीं। मदालसा को बम्बई ले जाने की भी जरूरत नहीं। इससे थोड़ी चिन्ता कम हुई। शाम को चतुर्सिंगी पहाड़ी के ऊपर घूमकर आये। डा० दिनशा व शान्ता साथ में।

नासिक से रामेश्वरजी बिड़ला का फोन आया।

३०-१२-३९

कम्पाउन्ड में ही घूमे। थोड़ा व्यायाम किया।

जयपुर से—कपूरचन्दजी का फोन आया। जयपुर अधिकारियों ने दमन की पूरी तैयारी कर ली है। मिश्रजी व हीरालालजी को वहां पहुंचते ही गिरफ्तार करेंगे। पहले झुनझुनू की ओर दमन करने वाले हैं।

आबिदअली व जोहरा बम्बई गये। नागरमलजी बियानी से उनके भावी काम के बारे में बातचीत। भगवती बिड़ला व रामनिवास ग्वालियर गये। वर्धा से कमलनयन व हीरालालजी शास्त्री आये। बापू से जयपुर के बारे में जो बातचीत हुई, वह उन्होंने कही। हीरालालजी के साथ घूमने एम्प्रेस गार्डन गया।

३१-१२-३९

हीरालालजी शास्त्री से जयपुर स्थिति पर विचार-विनिमय। वह आज बम्बई गये।

रामेश्वरजी बिड़ला का फोन आया, तबीयत के बारे में। उन्होंने कहा कि

परिशिष्ट भाग

जमनालालजी अपनी डायरियो के नोध—पृष्ठो मे निजी, व्यापार-सबधी तथा सार्वजनिक कार्य सबधी जानकारी नोट कर लिया करते थे।

इसी प्रकार नित्य प्रार्थना के तथा याद रखने योग्य व आदरणीय पदो, दोहो आदि को भी लिख लिया करते थे। इस भाग मे सन् १९३७-३८-३९ की डायरियो मे लिखे गये उनके इसी प्रकार के नोटो व नोधो का सकलन है।

परिशिष्ट १

(१)

सन् १९३८ में जमनालालजी पर भिन्न-भिन्न संस्थाओं, ट्रस्टों आदि की जिम्मेदारी थी, उनकी सूची उन्होंने अपनी इस वर्ष की डायरी में दी है। सूची निम्न प्रकार है

ट्रस्टी

१ गांधी सेवा संघ
२ ग्राम उद्योग संघ
३. लक्ष्मी नारायण मंदिर
४ बच्छराज कोष ट्रस्ट
५ नवजीवन ट्रस्ट
६. नगीनदास ग्राम ट्रस्ट
७ गोसेवा ट्रस्ट
८. विले पारले राष्ट्रीय छावणी
९. भगिनी मंदिर ट्रस्ट
१०. रामनारायण ट्रस्ट
११. हरनदराय कालेज ट्रस्ट
१२. कमल ट्रस्ट
१३. श्रीनिवास ट्रस्ट
१४. बिड़ला कालेज ट्रस्ट
१५. चोरड़िया कन्या गुरुकुल ट्रस्ट
१६. बिहार सेवा निधि ट्रस्ट

खजानची

१. कांग्रेस
२ चर्खा संघ
३ कमला मेमोरियल
४. अभ्यंकर स्मारक
५. जामिया
६. हिन्दी प्रचार
७ भारतीय साहित्य परिषद

सदस्य

हिन्दू महिला मण्डल

(२)

सन् १९३८ में जमनालालजी ने उन ट्रस्टों व संस्थाओं की सूची दी है, जिनमें उन्होंने त्यागपत्र दे दिया था

ट्रस्टी

१. गांधी सेवा संघ	त्यागपत्र भेजा
२ महिला सेवा संघ	
३. अ० भा० ग्रामोद्योग संघ	
४. मा० शिक्षा मंडल	
५ लक्ष्मीनारायण मंदिर	
६ बिहार रिलीफ	
७ नवजीवन	त्यागपत्र भेजा
८ बिहार सेवा निधि	
९. कमला मेमोरियल	
१०. ग्राम्य से० म० बारडोली	त्यागपत्र स्वीकार हुआ
११. सत्याग्रह आश्रम साबरमती	त्यागपत्र भेजा
१२ बिरला शिक्षण	त्यागपत्र भेजा
१३. बजाज कमेटी बम्बई	त्यागपत्र
१४. विले पारले छावणी	त्यागपत्र
१५. भगिनी सेवा मंडल, विले पारले	त्यागपत्र
१६ कनखल धर्मशाला	त्यागपत्र
१७. हरनन्द राय कालेज रामगढ़	त्यागपत्र
१८. जलियानवाला बाग	
१९. श्री गांधी आश्रम मेरठ	त्यागपत्र, १-१०-'३८ को
२०. अभ्यंकर मेमोरियल नागपुर	
२१. रामनारायण रुइया ट्रस्ट	त्यागपत्र दिया व स्वीकार हुआ
२२ स्वराज्य भवन ट्रस्ट	
२३. सस्ता साहित्य मंडल	त्यागपत्र भेजा

२४. मद्रास हिन्दी प्रचार — त्यागपत्र भेजा

निजी ट्रस्ट

१ श्रीनिवास शर्मा, ब० — त्यागपत्र दिया
२ गोपीबाई बिरला, बम्बई — त्यागपत्र दिया

प्रधानपद

१ भा० द० कांग्रेस — २-१०-३८ को त्यागपत्र दिया
२. अ० भा० चरखा संघ — २०-९-३८ को त्यागपत्र दिया
३ कमला मेमोरियल
४. अभ्यंकर मेमोरियल

डायरेक्टर्स

१ ब०-कम्पनी — सभापति
२. ब०- फैक्टरी — "
३. हि० शुगर — "
४ हि० हाउसिंग — "
५. मुकन्द आयर्न — "
६. बैंक आफ नागपुर — "
७ रामनारायण सस-डायरेक्टर + त्यागपत्र भेजा २३-११-३८ को
८. सा. भवन प्रयाग — त्यागपत्र भेजा

परिशिष्ट २

इन तीन वर्षों की डायरी के प्रारंभ या अंत में जमनालालजी अपनी
चे के पदों, दोहों, प्रार्थनाओं आदि को लिख लिया करते थे। उन्हें
री के सन् के हिसाब से नीचे दिया जा रहा है—

१९३७

परहित बस जिनके मन माही,
　　　　　　तिन्ह कहुं जग दुर्लभ कछु नाही ॥
परहित सरिस धरम नहिं भाई,
　　　　　　परपीडा सम नहिं अघ भाई ॥

०

हे प्रभो तू मला असत्यातून सत्यात घेऊन जा।
अंधकारातून प्रकाशात घेऊन जा।
मृत्यूतून अमृतात घेऊन जा।

०

त्याग को तैयार है, श्रद्धा नहीं!
कष्ट का स्वागत करें, मौका नहीं।
मृत्यु से डरते नहीं, पर कांपे है!
इन दलीलों में, कहो क्या अर्थ है?

०

अरथ न धरम काम रुचि
　　　　　　गति न चहउ निरबान।
जनम जनम रति राम पद,
　　　　　　यह बरदानु न आन ॥

०

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दीखा कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय॥

o

जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ।
हौं बौरी खोजन गई, रही किनारे बैठ॥

o

सन् १९३८

(हाथ का कागज, खादी की बाइंडिंग। ता० १ जनवरी से ३१ दिसंबर तक पूर्ण)

१. पू० बापूजी का चि० जमनालाल के नाम यरवडा जेल से ता० ७-३-२२ का पत्र सुन्दर अक्षरों मे मूल गुजराती भाषा और नागरी लिपि में नकल।

२. प्रातः स्मरण—आश्रम भजनावली की प्रार्थना पूरी।

३. सायकाल की प्रार्थना—'स्थितप्रज्ञ लक्षण' पूरे

४. राग-खमाज, घुमाली-वैष्णव जन तो तेने...

५. राग—पिलु, तीन ताल रघुबीर तुमको मेरी...

६. तुलसी बोध मौक्तिक

परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
पर पीडा सम नही अघ भाई॥

सुमति कुमति सबके उर बसही।
नाथ पुरान अगम अस कहही॥

जहा सुमति तहं संपति नाना।
जहां कुमति तह विपति निदाना॥

धन्य सो भूप नीति जो करई।
धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई॥
धन्य घरी सोई जब सतसंगा। धन्य जन्म हरिभक्ति अभंगा॥
साधु चरित शुभ सरिस कपासू। निरस बिसद गुनमय फल जासू॥

जो महि दुख पर छिद्र दुरावा । वदनीय जेहि जग जस पावा ।।
जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू । सो तेहि मिलन न कछु सदेहू ।।

परहित बस जिनके मन माही । तिन्ह कहं जग दुर्लभ कछु नाही ।।
रघुकुल रीति सदा चलि आई । प्राण जाय वरु वचन न जाई ।।
नहि असत्य सम पातक पुजा । गिरि सम होई कि कोटिक गुजा ।।
सत्यमूल सब सुकृत सुहाये । वेद पुरान विदित मुनि गाये ।।

मो सम दीन न दीन हित । तुम समान रघुबीर ।
अस विचारि रघुबश-मणि । हरहु विषम भवपीर ।।

कामिहि नारि पियारि जिमि । लोभी के जिमि दाम,
तिमि रघुनाथ निरतर प्रिय लागहु मोहि राम ।

१९३९

हृदय हेरि हारेऊँ सब ओरा ।
एकहि भाति भलिहि भल मोरा ।
गुरु गोसाई साहिब सिय रामू ।
लागत मोहि नीक परिणामू ।।

—भरत

परिशिष्ट ३

बंबई में ता० १७ अक्तूबर १९३७ को जमनालालजी की अध्यक्षता में गुमाश्ता कान्फरेंस हुई थी। उस संबंध में २३-१०-३७ के 'हरिजन' में संपादकीय टिप्पणी प्रकाशित है, जो नीचे दी जा रही है :

मुनीम-गुमाश्ते—हमारे भाई

जब ये पंक्तियां लिखी जा रही हैं, बंबई में सेठ जमनालाल बजाज की अध्यक्षता में मुनीम-गुमाश्तों का सम्मेलन हो रहा है। सम्मेलन को भेजे एक संदेश में गांधीजी ने सम्मेलन के महत्व पर जोर डाला। उन्होंने कहा, "सम्मेलन की अध्यक्षता जमनालालजी जैसे व्यक्ति द्वारा करना, जिनकी नौकरी में कई मुनीम-गुमाश्ते कार्य करते हैं, एक महत्वपूर्ण बात है, महत्वपूर्ण इसलिए कि जमनालाल जी के मन में सेठ और नौकर में कोई भेद नहीं, और उनके मुनीम-गुमाश्तों, रसोइयों, गाड़ीवालों व अन्य नौकरों के साथ परिवार के सदस्यों जैसा ही व्यवहार किया जाता है। वह जानते हैं कि उनकी तरह कर्मचारियों को भी आराम की जरूरत होती है, वह जानते हैं कि कर्मचारियों को भी छुट्टी की जरूरत होती है, जैसी कि स्वयं उन्हें होती है (और जो वह शायद ही कभी लेते हैं), वह जानते हैं कि कर्मचारियों को अपने बीवी-बच्चों के साथ सुविधा से रहने की आवश्यकता होती है—साफ और हवादार मकानों में, जहां वे अपनी और अपने बच्चों की शैक्षणिक व स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों की देखभाल कर सकें। और वह यह भी जानते हैं कि एक आम गुमाश्ते की कितनी दयनीय स्थिति है, जहां उसे बगैर छुट्टी के इतनी कम तनख्वाह में दस से तेरह घंटे रोज पसीना बहाना पड़ता है, छुट्टी मिल भी जाय तो उसको तनख्वाह कटानी पड़ती है, जहां दिन-पर-दिन उसका स्वास्थ्य गिरता चला जाता है; एक ऐसी जिंदगी जीता है जहां कोई खुशी नहीं, सुबह से रात तक जहां उसकी पिसाई होती है।"

o

गांधीजी ने अपने संदेश में सेठ जमनालाल बजाज की उपस्थिति व मार्गदर्शन में शांतिपूर्ण व आग्रहपूर्ण आंदोलन की आवश्यकता पर भी बल दिया।

—हरिजन, २३-१०-३७

अवारी, मनचरशा (जनरल) ४-५, १६, ३०, ७२-७३, ८७, १८५, २४५, २५३
अविनाशलिंगम १०४
अक्षयचन्द ४०
आंप्रे १७७
आगाखां ११६, २७३
आनंदशंकर ध्रुव १८
आनन्दस्वरूप, सर ६३
आनन्दस्वामी ३६, ५३
आबिदअली ७, ११, १७, २६, ३५, ३७, ४०, ५०, ५२-५४, ७०, ७४-७६, ७८, ९४, ९९-१००, १०३, ११६-१७, १२७, १३६, १५०-५१, १५६, १७८, १८३, १९१, २२९, २३२-३३, २३८, २४०, २४७, २५६-६१, २६४, २८०, ३५४, ४२०, ४२६
आर्यनायकम १, १२, २०, २२, २७, ३४, ३९, ५९-६०, ८०, ९७, ११४, ११८, १२५, १२८, १३०-३१, २५३, ४२४
आशा बहन २, २४, २७, ३२-३३, ५९, ६१, ७९-८०, ८२, १२५, १६३, ३८९, ३९१, ४२४
आसफअली २३०
इंदिरा गांधी ४१, ४८, ६४, ८८-८९, १८६, २२७, २४९-५०, ४३०, ४३२
इंदिराबाई ४१, ८८-८९ २५[illegible] ४३०, ४३२
इंदुमती १०३
इंद्रमोहन गोयल १०, ४०, ५[illegible] ७५, २०१, ३५७
इकबाल ५३
इब्राहिम रहिमतुल्ला, सर ७४
इमाम बक्स ३३६
ईश्वर दयाल ४
ईश्वरी प्रसाद १३२
उत्तमचंद शाह १२९
उद्धोजी १६
उपाध्याय, अयोध्या सिंह ७६
उमरावसिंह ३१७-१९, ३४३, ३५२, ३६२-६४, ३६८
उमा ११, २६, ४५, ४८, ५०-५१, ५७, ७१, ७७, ८४, १०४, १३५, ३२६, ३४९-५०, ३५२, ३५५, ३६०-६१, ३८५, ३८९, ३९१, ४२८, ४३०
उमादत्त नेमाणी, २८०
उर्मिला ४८, ६५, २७७, ३९४
उषा ४०, ५०, ५२-५४
एण्ड्रयूज, दीनबन्धु ४१, ७८-७९, २५१, २६८
ए० दास, डाक्टर २३५
ए० आर० दलाल (टाटावाले) २३३

ोंकारनाथ वाश्लीवाल २४६
ंकारसिंह (कोटा वाले) ३४०-
४१
ागले ५
मदत्त २८७-८८
केन १०१-३
ध्या २१
र्नी मेहता ३६५
हैयालाल मुंशी, ६, ३६, ५८,
४०, १९१, २४८, २८५, ३८७
द गांधी ११०, ११२
लदेव मालवीय ७५, १६७
रचंद १६६, १६८, २८१, ३६५,
६८-६९
रचंद पाटनी २८२-८३, २८६
६३, ३८५
ननयन बजाज २०, २६, ३०, ६०-
१, ६४-६६, ६६, ७१-७४, ७८,
२, ६०-६१, ६४, १८३-८४,
६५-६७, २०२, २१५, २२४,
२७-२८, २४३, २४६, ४८,
५७-५८, २६३, २७८, २८६,
-४, ३२३, ३६१, ४२०
ा ७-६, ११, १६, २२, २५-
, ३१, ३४-३६, ४५, ५०, १७,
, ६५, ११६, १२६, १८६,
५, ३१६
ाबाई किबे ३३, २२३
ा लेले १२, १२६
कानीकर ८, १३, ४४-४५, ५८,
६६-७१, ६३-४, ६७, ११६,
१२२, १२४-२५, १४३, १४५,
१६१, २१६, २३७, २३६, २४२
करनसिंह ठाकुर ३५८
कल्याणजीभाई २७२
कस्तूरभाई १५६
कान्ता मुडगावकर २६, ३५-३६,
८६
कांति सबेरी ३६४-६५
काकासाहेब कालेलकर १, ४, १२,
१६, २२-२५, २७, ३२-३३,
५२-५३, ६१, ६६-६८, ७६-
८०, ८४, १११, ११८, १२५-
२६, १२६, १३६, १५२-५३,
१६१, १७६, २०४-५, २१४,
२२८, २३८, २४३, २४५, ३०५,
३५२, ३५४, ३६५
काकूभाई ३५, २२३, २४७
काजी, डा० ३६
काणेमास्तर ५
कानूनगो २७८
कामतानाथ ३६७
कालीदास मोतीचंद पारीख ४२
कालूराम १५, ४४, ५७-६६, ७६,
३२७
कालेश्वर राव ३२
काशीनाथ ३६-३७, ५४, ७५, ६८-
६६, ११७, २१४, ३४०-४१,

३५२, ३५५, ३६०
काशीनाथ राव वैद्य (हैदराबाद) २५०
काशीप्रसाद १०१
किबे, सरदार २५५
किशनचंद, लाला २२७, २४७, ४२०
किशनलाल गोयनका १६०
किशनसिंह, ठाकुर १२
किशोरलालभाई ५, १६, १८, २२, २७, ३०, ३४, ३६, ४३, ४६-४८, ६०, ६२, ६७, ७२, ९०-९२, ९४, १०७, १०९, ११८-१९, १२६, १३१, १३४, १३६, १४०, १४३, १४६, १६२, १७२, १७६, १८८, १८९, २०१, २१४, २१६, २३८-४०, २४२-४३, २४५, २४८, २७६-७७, २९५, २९८, ३५५, ३६३, ३८६, ३८९, ३९१
किशोरी केडिया ६५, ६९-७०, ७७
कुन्दनलाल गांधी ८१
कुंवर बहन वकील ६८
कुमार राजेंद्रनारायणसिंह ३११
कुमारप्पा १, १५, २२, ३०, ५७, ८४, ९०, ११३, १२४, १२८, १३२, २३८, २५७, २६१
कुमगम २६०
कुवलयानन्द ४२८
कुमारसिंह, ठाकुर २६३, २६६-६८, ३००, ३०४-७, ३१०,
३१२-१४, ३२४, ३२७-२८, ३३२-३३, ३३५, ३३८
केदार १४-१५, २०, ३०, ५८-५९
केदारनाथ सेड़िया १४-१५, २०, ३०, ५८-५९, १४८, ४९, १५१
केदारमल लड़िया ९९
केलकर ४४
केलनबैक ५७
केशर १७, २५, ३८, ५१-५२, ५५, ७०, ७२, ८२, ८७, १००, १०९, १२७, १४३, १७९, १८३, २१७, २३५
केशरलाल कठारिया १७, २५, ३८, ५१-५२, ५५, ७०, ७२, ८२, ८३, १००, १०९, १२८, १४३, १७६, १८३, २१७, २३५, ३११
केशव गांधी ५३, ७४, २२२
केशव दास ५५
केशवदेव १०, १८, २५-२६, ३५, ३७, ४०-४१, ४४, ४८-४९, ५३, ५५, ५९, ६२, ६५, ७०, ७१, ७५, ८५, ८७, ९१, ९४, ९५, १०१, १०८, ११६-१७, १२०, १२७, १३६, १३९, १४५, १४९, १५६, १६२, १६४, १७३, १७५, १८०, १८४, २११, २२२-२३, २३०, २३५, २४७-४८, २५३-५८, २६२, २६५, ३००, ५७, २७४-७५, २७८, २८१,

३५२, ३५५, ३६०
काशीनाथ राव वैद्य (हैदराबाद) २५०
काशीप्रसाद १०१
किबे, सरदार २५५
किशनचंद, लाला २२७, २४७, ४२०
किशनलाल गोयनका १६०
किशनसिंह, ठाकुर १२
किशोरलालभाई ५, १६, १८, २२, २७, ३०, ३४, ३६, ५३, ५६-५८, ६०, ६२, ६७, ७२, ९०-९२, ९४, १०७, १०९, ११८-१९, १२६, १३१, १३४, १३६, १४०, १५३, १५६, १६२, १७२, १७६, १८६, १८९, २०१, २१४, २१६, २३८-४०, २४२-४३, २४५, २४८, २७६-७७, २९५, २९८, ३५५, २६३, ३८६, ३८६, ३९१
किशोरी केडिया ६५, ६९-७०, ७७
कुन्दनलाल गांधी ८१
कुंवर बहन वकील ६८
कुमार राजेन्द्रनारायणसिंह ३११
कुमारप्पा १, १५, २२, ३०, ५७, ८४, ९०, ११३, १२४, २२८, १३२, २३८, २५७, २६३
कुमम २६०
कुवलयानन्द ४२८
कुशलसिंह, ठाकुर २९३, २९६-९८, ३००, ३०८-९, ३१०,
३१२-१४, ३२४, ३३[illegible]
३३२-३३, ३३५, ३३८
केदार १४-१५, २०, ३०, ३८-[illegible]
केदारनाथ खेड़िया १४-१५, [illegible]
३०, ५८-५९, १४८, ४९, ११[illegible]
केदारमल लड़िया ९९
केलकर ४४
केलनबैक ५७
केशर १७, २५, ३८, ५१-५[illegible]
५५, ७०, ७२, ८२, ८७, १०[illegible]
१०९, १२७, १४३, १७९, १८[illegible]
२१७, २३५
केशरलाल कटारिया १७, २५, ३८, ५१-५२, ५५, ७०, ७२, ८२, ८३, १००, १०९, १२८, १४३, १७९, १८३, २१७, २३५, ३६१
केशव गांधी ५३, ७४, २२२
केशव दास ५५
केशवदेव १०, १८, २५-२६, ३१, ३७, ४०-४१, ४५, ४८-४९, ५३, ५५, ५९, ६२, ६५, ७०, ७१, ७५, ८५, ८७, ९१, ९४, ९८, १०१, १०८, १११-१७, १२०, १२७, १३१, १३९, १४४, १४८, १५६, १६२, १६४, १७३, १७८, १८०, १८४, २१६, २२२-२३, २३०, २३५, २६७-६८, २९[illegible] ९८, २९२, २९६, ३०[illegible] ७२, ३०८-१२, ३१९, ३०६,

१२०, २५४-५५, ३५७, ३८८, ४२५, ४३०
…वदेव जोशी ३४६
…वदेव नेवटिया ४६, १४३, २१५, २४६, २७१
…विदेव पोद्दार १७-१८, ५१, …४
…गणपति सिहानिया ५२, ६४
…नेहे ६६
…नले ६४
…लानी, आचार्य जे. बी. २४, ६४, ६६, ७६-७७, ९२, १०९-१०, १२१-२२, १३४, १३६, १४३, १६२, १६४, १८६-८८, २१७, २१९, २५०-५१, ३४५, ४२४, ४२६
…णकांत मालवीय २२४, २६८, …२९४
…णदास गांधी ३१, ५६, २४५, …८९
…गा राठी ४२, ७७, १२६-२७
…गा हठीसिंह १०१, १४२, १२६, …४९
…णाताई २७५
…णाबाई कोल्हटकर २१४, २४०
…गाबाई सिहानिया ४२६
…भाई देसाई ४०, ८५, ९९
…भाई मेहता २४७
…, डा० १-२, ५, १६, १९, २१-२२, २६, ४९-५०, ६०, ७९, ८१, ८७, ९६, ९८, ११०, ११९, १७५, १८४-८५, १८८, १९०, २०१-२, २१४-१५, २१९-२०, २२६, २२९, २६०
घाडिलकर ९
घाडेकर १७४, २१९
घान, डा० ३, ५, १२, १६, २१-२२, ३४, ६०, ६६, ८१, १७२-७३
घानचन्द ८३, ९०
खुर्शेद बहन २१-३, २६, ५५, ७३, ७५
खुशालचंद खजांची १८, २०१, २५१
खुशालचन्द खेर १०५
खुशालचन्द गांधी ५५
खोर्ड साहब २४०
गंगाधर राव २४, ८२, २६, १००, २२७, २२९, २४६
गंगाबिसन ३-४, १३, १६, २०, २५, ४४, ५०, ५९, ६२, ८६-८७, ९०, १०७, ११६
गंगूबाई ६, ७०, ७२
गजराज १४
गजानन्द ६८-७०, ७४, २०६, २०८, २८०
गजेटिया ५
गणपतराव पाण्डे ५

२२०, २५३, २५५
घनश्याम पोद्दार १०
घनश्यामदास बिड़ला २१-२२, २६, ४१, ५२, १०३, १०६, ११०,११३, ११६, २२६, २२८-२६, २६१
घनश्याम दास लोयनका ६५
घनश्याम सिंह ८४
घसीबाई ४, ५
घासीराम पुजारी ३
चतुर्भुज भाई ४-५, १०, १३, १६, ७६, १२७, २१८, २४४
चतुर्वेदी (देहरादूनवाले) ५६
चक्रवर्ती ३३१
चवड़े महाराज ८१
चतुरसेन शास्त्री २२७
चन्दूलाल ६
चन्द्रकला ७७
चन्द्रकान्ता, डा० ६४, ७५-६
चन्द्रधर जौहरी ८-६, २८६
चन्द्रभान जौहरी २८७-८८
चन्द्रा ५४, ६४
चन्द्रोनीराव आग्रे १७७
चम्पा बहन ६६
चम्पालाल शर्मा ३४६, ४२८
चापसी ४
चादोर ५७
चितलिया ६८
चिमनलाल ६३
चिरजीलाल अग्रवाल ८४, ६०, २८१, २६६, ३३८, ३६७
चिरजीलाल मिश्र २२६, २३६, २६१, २७२, २७६, २८२, २८७-८८, ३२३
चिरंजीलाल बड़जाते २-३, २५, ७८, ८५, ६०-६१, ६८, १०७, ११३, १२०, १२६, १४४, १५७-५८, १६६, १८४, २३२, २६६
चीन्नया २१
चुन्नीलाल, सर ७३, २३६
चुन्नीलाल माईदास २६२
चोइथराम गिडवानी ८१-२, २१६-२१, ३४३
चोथमल ७१, ७७
चोरघडे १६, ५६
चोरघडे (डा०), श्रीमती १६, २१, १३१
छगनलाल भारूका ४-५, १६, ७३, ८०, ८४, ६७-६८, १२७, १३२, १३३, १६०, २५४, २५६, ३६०, ३६२
छेदीलाल ७४, ७५, १६३-६४
छोटीबाई ३
जगदीश (लक्ष्मणप्रसाद के पुत्र) ३०, ३२३
जगदीश अग्रवाल ५
जगतदार १६
जगदम्बा ४१

गणेशदास सोमानी ३३, ५२, ६२, १६८
गनी ६६, ७५
गप्पू ४०, ५६-५७
गांधी (नागपुरवाला) ६६
गाडगे (गुड्डी बुआ चंठपुर वाला) १८, २४-२५
गाडोदिया ७७
गिरधारी लाल कृपालानी ७८
गिरधारीलाल, लाला ३०, ४१, ६४, ६९, ७३, ८३, ८७, ११९, १९१
गिरीशबाबू १०६
गिल्डर, डा० ८२, ११०
गीता ६४
गुप्तेजी ८, २२
गुलजारीलाल नन्दा ४०, ८०, ८२, ८६, ६१, १०५-६
गुलाब (दवाखाने वाले) ४२-३, ८३, ८५
गुलाब चन्द १७०
गुलाब बाई ५८, ८२
गोकुलभाई १०, ४०, ६८, ९४, १६४, २३५
गोहस महाराज ५३
गोहमे, वेंकटराव ५
गोरे ५
गोरबन्धु चौधरी २५, ४८, ९२
गोरा ७८
गोपाल बजाज (बनारसवाले) ६, ६१
गोपालदास मेहता १२, १४-१५
गोपालदास राठी १८
गोपालराव काले ६४, २१३, २१८, १६, २२१, २३७, २४५, २५१, २५३, २५५-५६
गोपीजी १, ५०
गोपीबहन १७, २६, १०३, २०९
गोमती १५, ५६, ६१
गोले ८०, १९०
गोवर्धन ११, १६, १२०
गोविन्द दास मालपाणी, सेठ १०६
गोविन्द प्रसाद गनेड़ीवाल ४३, १२
गोविन्द प्रसाद चौबे ६३
गोविन्दराम सोया १००
गोविन्द वल्लभ पंत २२-२३, ४२, ६६
गोविन्दराव देशमुख ८०
गोविन्दराय मडगावकर ८, ९५
गोविन्दलाल पित्ती ७, ११, ७४, १००, १६३, १८३, २४६
गोविन्दलाल सेकसरिया १०, १०, ९०
गौरीलाल २७, ६०, ६२, ८०-८१
गौरीशंकर ५१, ८७, १०७-८
गौरीशंकर शरेर ६१
गौरीशंकर नेवटिया २१६
घटवाई ४९, ६०, ७३, १२६,

२२०, २५३, २५५
घनश्याम पोद्दार १०
घनश्यामदास बिड़ला २१-२२, २६, ४१, ५२, १०३, १०६, ११०, ११३, ११६, २२६, २२८-२६, २६१
घनश्याम दास मोयनका ६५
घनश्याम सिंह ८४
घनीबाई ४, ५
घासीराम पुजारी ३
चतुर्भुज भाई ४-५, १०, १३, १६, ७६, १२७, २१८, २४४
चतुर्वेदी (देहरादूनवाले) ५६
चक्रवर्ती ३३१
चवडे महाराज ८१
चतुरसेन शास्त्री २२७
चन्दूलाल ६
चन्द्रकला ७७
चन्द्रकान्ता, डा० ६४, ७५-६
चन्द्रधर जौहरी ८-६, २८६
चन्द्रभान जौहरी २८७-८८
चन्द्रा ५४, ६४
चन्द्रोनीराव आम्रे १७७
चम्पा बहन ६६
चम्पालाल शर्मा ३४६, ४२८
चापसी ४
चिरंजीलाल अग्रवाल ८४, ६०, २८१, २६६, ३३८, ३६७
चिरंजीलाल मिश्र २२६, २३६, २६१, २७२, २७६, २८२, २८७-८८, ३२३
चिरंजीलाल बड़जाते २-३, २५, ७८, ८५, ६०-६१, ६८, १०७, ११३, १२०, १२६, १४४, १५७-५८, १६६, १८४, २३२, २६६
चीन्नया २१
चुन्नीलाल, सर ७३, २३४
चुन्नीलाल माईदास २६२
चोइथराम गिडवानी ८१-२, २१६-२१, ३४३
चोथमल ७१, ७७
चोरघडे १६, ५६
चोरघडे (डा०), श्रीमती १६, २१, १३१
छगनलाल भारूका ४-५, १६, ७३, ८०, ८४, ६७-६८, १२७, १३२, १३३, १६०, २५४, २५६, ३६०, ३६२
छेदीलाल ७४, ७५, १६३-६४
छोटीबाई ३
जगदीश (लक्ष्मणप्रसाद के पुत्र) ३०, ३२३
जगदीश अग्रवाल ५
जगतदार १६
जगद्भानु ४१

३१, १३०, १३२-३६, १४१, १५६-५६, १६३-६६, १६६, १७२, १७६, १७८-८०, १८४, १८६-१९०, १९२-९३, १९६-९७, २००, २०२, २०५, २०७-८, २११-१२, २१५ २१७-१९, २३०, २४०-४१, २४३-४४, २५१, २५४, २५८-६०, २६३, २७३, २९१, २९७, २९९, ३०४, ३२६, ३४३-४७, ३५०, ३५३-५६, ३६१, ३८५-८६, ३९१, ३९३-९४, ४००, ४२५, ४३१-३२
जाल नौरोजी १०८, १२२, १४१,
जिन्ना मुहम्मदअली १६०, १६५, ३११, ४२७
जीनाभाई देसाई ३८७
जीवनलाल ३७
जीवनलालभाई ७, ११, २६, ३०, ४७, ५३, ६५, २४६, २६०-६२, २७०-७१, ३८८, ४२०
जीवनलाल सम्पत ३६
जीवराज मेहता, डा०, १८, ३६, ७५-७७, ११०-११, ११४-१७, १५६-५७, २०३
जुगतराम दवे ३१६
जुगलकिशोर बिड़ला १७, २०-२१, २०७
जुगलकिशोर साहू १४७-४८
जुहारमल १०, १८२, १८७
जेना बहन २६२, २७१, २७४, ३८८, ४२६
जे० सी० कुमारप्पा ३६, ५६
जे० सी बोस लेडी ६१
जेठाराम ६५, १७८
जेठालालभाई ३७, ४१७
जेराजाणी ३०
जैनेन्द्र कुमार ४५
जैसुखलाल मेहता ५३, २००
जांगलेकर ४
जोगिलाल ६
जोवनेर ठाकुर १९५, ३६५-६६, ३६८-४००
जौहरी ३०, ३५-३६, ४१, ५३, ७५, ७७
ज्योत्स्ना (पन्ना की लड़की) ५०, ५२, ७८, १६१-६२
ज्वालाप्रसाद कानोडिया १४६, ३६३
ज्वाला प्रसाद राजा ७६, १५०,
टंडनजी, पुरुषोत्तम दास २, २७-२८, ३२-३३, ४२, ६२, १६२-६४
टाड, कर्नल ३३०, ३३५-३७, ३३६
टी० प्रकाशम ३२-३
ठक्कर बापा २२, ७०, १३०
ठाकुर अबरौल १६६, ३३६-३६,

३५८, ३६०
ठाकुर करनसिंह ३५८
ठाकुर जोबनेर ३५८, ३६५-६६, ३६८
ठाकुर नवलगढ़ २००
ठाकुरसाहब डूंडलोद १६६-६७
डब्ल्यू० एस० साल्वेकर ३२०
डाक्टर महोदय ६६
डागाजी ६५, ३८७
डालमिया ३८६
डाह्याभाई पटेल १०, ३५, ८० १२०, ३४२
डेडराज खेतान १५४, १६७, २८६ ३३६, ३४०
डोंगरे ५, २६
डोशाबाई २५८
ढवनभाई ११८
ढवले ११८, १२३, २४५, २५३
ढेबरभाई २७३
ताजुद्दीन १२६
तात्याजी उपदेव २०१
तात्याजी करन्दीकर ८, १३, ४४-४५
तात्यासाहेब केलकर ६
तात्याजी देशमुख ८४
तारा ११-२, ४८, ८७, ३६०
तुकडोजी १
तुकाराम १२
तेजराम १२-४, ८४, ६४
तोतारामजी राठी ३१७
थट्टे ४, १४, ६२,
दयाशंकर (पूनावाले) ८-६, १८, ४०-४१, ६५, ८०
दयाशंकर अग्रवाल ४०
दरबारीलाल ४८, ५०, २७८, ३३०, ३३१
दलाल, ए० आर० २३३
दांडेकर २, ५८, ६०, ६२, ७०, ७६-८०, ६३, ६६, १३२, १६०, २३६
दातवाला १०१
दादा धर्माधिकारी ८-६, ४८, ७२, ७८, ६७, १३१, १३३, १७४, २१३, २१६, २१५, २२६, २३६ २५६
दादाराव ५७, ६२
दामले २
दामोदर ५, १८, ३६, ३८, ४०-४१, ५३, ८३, ११०, ११८-१६, १२५, १३६-१३७, १४५, २००, २२४-२२५, २३७. २४२, २४७, २८०, २८३, २८६, २८८, ३०६, ३४८, ३५०-३५४, ३५६-५७, ३५६-६०, ३६५-६६, ३६७, ३८५-८६, ३६७, ४००, ४१७, ४२०
दानी, धन्नारायण ३५, ७५, ८७, ४२२

दानी, पन्नू ६०, १७, १२, ४२, ७४, ४२२, ४२८
दानी, भाग्यवती ३८७, ३६०, ४०२
दानी, शकुन्तला ३६१
दास, डा० ८१, १५७, २३५, ३८७-८८, ४१६
दास्ताने २४
दिनशा पेटिट ८६
दिनशा मेहता, डा० १८, १७६, ४२०, ४२४, ४२७, ४३२
दिनेश नन्दिनी ४०
दीनदयाल १६२
दीनानाथ तिवारी ७६
दीवानचन्द ३३५
दीक्षित २६२
दुर्गा बाई १३२-३३, १७४
दुर्गाप्रसाद खेतान ४८, ५४-५५, २०७, २६३
दुर्गा बहन ८४, ३८६
दुर्गाशंकर मेहता ८०, १७५, २५६
देव १८, ८६, २२६, २३७
देवचंद ८४
देवदासभाई १६८, २७२, २४७, २७६
देवरानी ६८
देवराज २११
देवास की रानी २०८
देवीदास २०१
देवीप्रसाद खेतान ४८, २३२, ३६४
देशपांडे २४, ५२
देशमुख, बाबा साहेब ७६
देसाई १७, २४५
द्वारकादास ५०, ५६, ७३, ७८, ६८, १६३, २३६, ३५७-५८, ३६६, ३६०
द्वारकानाथ ५६
द्वारका प्रसाद मिश्र २१७, ३८८
द्वारका जोशी ३४६
धनजी पटेल ३०१
धन्ना भगत ३२४
धन्नू पटेल ३२८
धर्मनारायण, एडवोकेट (धीमनजी के पिता) ६३, ६६, ६८, १२१, २८३
धर्माधिकारी १८, २१-२२ ६७, १४३, १५०
धर्मानन्द कोसाम्बी १०, २०
धामाजी २५, २७, ३४, ३६, ५८
धीरजलाल मोदी ३६, ५३
धीरेंद्र मजुमदार १०६
धोंडे ५, १२ २२ ३८, ५६ ४२८
नटवर खान २५०
नन्द किशोर सेठ ३६४
नन्दलाल बोस ३३-३४
नन्दू ७०

नर्मद चंद ३१
नर्मदा ७-१०, २६, ३५, ३८, ४०-४१, ४५, ५२-५३, ६६, ६५-७०, ७८, ८५, ८७, ३६३
नर्मदा मारुटे ५२, ३४६, ३५८
नर्मदाप्रसाद ६०
नर्मदाप्रसाद, डा० ११४
नरसिंह ८६, ४३०, ४३१-३२
नरसिंह दास ५४, २५४
नरहरि १, ४२४
नरायन मीणा पटेल ३२७
नरायनराव बागु १८६, ३८४, ३८६
नरायनसिंह ३०८
नरीमान १०, २६-२७, ५१-५२, ५४, ६७
नरेन्द्रदेव २४, ६६
नवल किशोर भरतिया ११, १४, ५१, ६१, ६३
नवलगढ ठाकुर १६७, २००
नवलचन्द १८१
नवीनचन्द खोड़वाला ३२०
नागरमल ७४
नागले (वकील) ४५
नागेश्वरराव पन्तलू १५८
नागोरी ४२८
नाथजी ३६, ३६, ४१६
नाथूराम प्रेमी ४५
नाना आठवले २२, ५५, ५६
नाना खरे ६०
नानाभाई १२, ५६, ६१, १०० २७३
नानालाल २३६
नानावटी ६८
नानू ७१
नामदू १६, १८५
नारायनदास बाजोरिया २३६, २३७
नारायनलाल पित्ती ४४, २३४, २७३, ३८७, ४२०
नारियलवाला २३१
निर्मला गांधी ११-१२, ३५, ८३
नीलकण्ठ मशरूवाला २४८
नीलम्मा बहन १६
नेवटिया, रामेश्वर ४२६
नेवटिया, श्रीकृष्ण ४३१
नेवटिया, श्रीगोपाल ४३०
नौरोजी, सर १०-११, १७, १४६
पजाबराव सालवे १३, १५
पटवर्धन २४, ६६, ७६, ८१, ११६, १३४, १४५, २०१, २०४, २१४-१५, २१६, २७२, २६३, ३०७, ३२७, ४२८
पट्टाभि सीतारमैया २४८, २५०-५१, २७७, ३८५
पद्मपत सिंघानिया ६३-६४, ६७, २३७-३८, ३६४
पदमजा नायडू ४३

पद्मा रिती २२, ५५, ७६
पद्मावती (बर्नाडिव) ७६
पन्ना ५२, ८३, ८७
पन्नालाल ५, १५, १२७, २४५
पन्नालाल रिती २४६, २६४
पन्नालाल माहेरी ६
पन्नालाल मोहिया ६
पनसुले १६
परमानन्दभाई १८
परमेश्वरी ४
पराजपे, डा० ८, २२
पाभाई ८०
पाण्डुरंग २०४
पाठक, पी० एम० ४०, ४४, ६०, ७२
पाध्ये ४८-४५
निकर ७७-७८
पारधी, टी० एम० २५८, ३२१
पार्वती देवी डिडवानिया १६०, २२५, २६२
पार्वती बाई ४, २६, ५६, १७७, १८०, १८८, १९०, १९२-९३, २२६
पीराम ३५, ३७, २२२
० सी० रेड्डी १०३-४
रामल १०, २०१, २७४, २६७, २८८-२६, ३३४
राज कोचर १६, २५, ३१
राज घटवाई ३, १५, २७६
पुरुषोत्तम जाजोदिया ६-७, ११, १६, ४३, ५०, १२३, १८६, २३४, २७६, ३८७
पुरुषोत्तमदास, सर ११६-१७
पुरुषोत्तम पटेल, डा० १०-११, ४४, १७८
पुष्कर बजाज १६३
पूनम चन्द बाठिया ६४, ६७-६८, ११८
पूनम चन्द, राका १-५, ११, १६, २४-२५, २७, ३०-३१, ३७, ५०, ५४, ६०, ६२, ६७-६६, ७४, ७६-८०, ८३-८४, ८५, ६०, ९४, ११३, १२६-२७, १३३-३४, १४४, १६१, १८५, २८५, ३८५, ३९५, ३६०
पूर्ण चन्द बजाज १५३, २७३
पूर्णबाबू, डा० २७८
पेरीनबहन १७, २६, ३५, ५५, ६८, ८०, ८६, ६६, १०३, १७६, १८०, २२६, २८०, ३२६, ४१६
पोलनीश २५
पोद्दार १८
पोलक २
प्यारेलाल ४१, १०५, १११, १२४-२६, १३१-३२, २१३, २५२, २७२
प्रकाशवती ४
प्रताप ६, २६

प्रद्युम्न गांधी ६७, ९२, १०६
प्रबोध ८०, ९८
प्रभा १६, ८०, ९६, १००-११
प्रभात ८१
प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका ८८, ५३, ६५, ६८, १०५-६, ११२, १३६, २०६-७, २२६, २७७, ३५८, ३९३-९८
प्रयाग नारायण भुवन १७८, १८०, १८२-८३, २८३, २८५
प्रह्लाद ५१-५२, ६६, ८५, १३६, १८६
प्राणलाल देवकरण नानजी १८२
प्रेमदेवी ८३, ८५
प्रेमा कंटक १०, ४२८
फख्र यारजंग बहादुर (नवाब) २४५, २७१-७२
फतेचन्द रुइया ३५, ५८, ८५, १२६, १६१
फाटक २४-२५
फुले २४१
फूलचन्द वैद्य ५४
बंसीधर डागा २५२
बख्शी ९४
बजरंग ठेकेदार ४-५, १६, ५२
बटलर ४१
बडकस १५, ४४-४५, ५०, ५७-५९, ६९-७०, १२२
बडजाते, चिरंजीलाल २३९, २४१
बतरा, डा० ६६, ७७
बद्रीदास गोयनका २६५, २६६, २७४
बद्रीदास पाण्डे २२४
बद्रीदास, सर ५७, ६४, १०८, १६१
बद्रीनारायण (सीकर वाला) १७०, १९४
बद्रीनारायण मोदाणी २०७
बनारसी झुनझुनवाला ६६-६७
बरवे ६
बलदेव चौबे ४२
बहादुरजी, बैरिस्टर ३५
बाद्रेकर १०, १८३
बा, कस्तूरबा १०, १६२, १६९-७०, २९०, ३८५-८६
बाकीया ९९
बाजीराव २१७
बापना, सर ३८, ४०
बापूजी, अणे १८७
बापू, मोहनदास करमचंद गांधी १०, १५, १९-२०, २३-२४, २८-२९, ३१-३४, ३९-४४, ५७, ५९, ६१, ६६-६८, ७२-७३, ७६, ७८, ८१-८४, ८९, ९१-९२, ९५, १०४-७, ११०-११, ११३, ११६-१८, १२०-२५, १२७, १३९-४०, १४४, १५५, १६१, १६४-६५, १६८, १७१-७४, १७६-७७, १८४, १८७, १८९-९०, १९२, १९५, २०१-२, २१४, २१६, २२६-३०, २४१,

३२१
भाऊ साहब फिरोदिया ६
भागप्पा २५
भागीरथ ४८, १०५, १५५, १८६, २०४
भागीरथ कानोडिया २७०, २७७
भागीरथी बहन १, ३, १५-१६, १६, २७, ३४, ४५, ५६, ५६, ६१, ६६, ७१, ७६, ११७-१६, १३४, १४८, १८६, १६३, १२१, ३६३
भानीराम खण्डेलवाल २१५
भारतन (एसोसिएटेड प्रेस वाला) ६१, ८४, ११३
भारतन, कुमारप्पा २८, ५६, ५६, १२६, २३८
भारुका, छगनलाल २५४, २५६, ३६०
भालचन्द शर्मा २७१
भालेराव २१३
भास्कर ६
भिडे २
भिनाय राजा साहेब १६६-६८
भीकूलाल १६, ६०, २१८, २४०
भूता ७५
भूरेलाल २२५
भूलाभाई देसाई १०, २२, ३१, ५०, ६६, ७६, ८१, १०६, १२०-२२, १३५, १७२, २२४, २७१, २८७, ३११, १३६, ३६५
भेरूमाल गोलेछा ५६
भैरोंसिंह ३५६
मजूमदार, डा० : १३, ४१, ४४, ७६, १३१-३२, २०५,
मटूभाई जमीयतराम : ३६, २३२
मणिबहन : १७, २१, २६, ३५, ६५, ६८, १०४, १८६, २०७
मणिबाबू १४८
मणिलाल कोठारी १०१
मणिलाल गांधी १३६, १४४-४५, १७७
मणिलाल तेली १४१
मणिलाल नाणावती ५०, ५३, १६४, २३३, २४६, २७०-७१, २७४, ३६७
मथुरादास मोहता २, १६, २५, ३६, ८२, १२०, १३०-३२, २४०, २७४, २७६
मथुरादास त्रिकमजी ११, २१, २६, ३६, ११६ १८०, २३०, २७४
मदन मोहन ५६, ६३, ७५, ८५-८७, ३५०, ३५३
मदन रुइया ३६, ७३, ७७
मदनलाल कोठारी २४०, २८७, ३२३, ३४२, ३६०, २६४, ३८५, ४२४
मदनलाल जालान ८, १०, २६-२७, ३४-३५, १००, १५३, २७०-७१,

२७४-७५, २८०, ८२१
मदनलाल भट्ट २५१
मदनसिंह १६६
मदालसा ४, १३, १६, ४०, ५२, ५४, ६०, ६५, ६६, ७१, ७७, ८३, ८४, ६१, ६४-६५, १००-६, १५८-५६, १६३, १८४, १८८, १६०, २३८, २४३, २५८, ३१६, ३४६-४७, ४१७-१८, ४२१, ४२७
माधुरी (अहमदाबाद वाली) ३६-३८
मनोहर पंत ४४, ६६, १८०
मनोहर सिंह ५१
मनोरमा ५६
मन्ना लाल ५७
मन्नूलाल द्विवेदी ३३, ३७, ५१, ७५, २६३
मम्मा ४१
मरियम ५३-५४, ८६-८७
मसानी, मीनू ६२, १०८
महमूद, डा० ७६
महमूद, सैयद १४२
महादेव भाई ३५, ४१, ४८, ८४, ६३, ११०, ११४, ११६, १२३, १२७-३०, १४३-४८, १६५, १७६, १८०, २३८, २७६, २८०, २८३, ३२०, ३५५-५६
महादेवलाल श्राफ ७३
महादेवी अम्मा ३-४, १२५-२६
महानन्द स्वामी १८, २५
महावीर प्रसाद पोद्दार १३६, १४६-४८ १५०, १५२-५३
महावीर भाई १४८
महिमलूरा १४१
महेन्द्र ५२ ५५ ६४, ७७
महोदय डा० ५८ १३०
मानी बहन ४० ८७ ६६
मागन लाल १७४
माधोलाल चौधरी (जयपुर वाले) ७
माणक जी, कैप्टिन १८, ४० ४८ ८७
माणिक लाल वर्मा २५७, २६१
माधवराव (अप्पाजी मवाने) १२
माधवराव अणे ७५
माधोप्रसाद चौधरी २६७
मानसिंह जयपुर नरेश ३३६-४०
माया भाई १४१
मार्टिन, डा० २
मार्तण्ड उपाध्याय १, ७५, १६६
मालवीय जी २८-२६, ७७
मावलंकर ८५, ६१, ११६
मिनू (आशा बहन की लड़की) ३३
मिश्र, द्वारका प्रसाद २५४, २८१, २८८
मीरा २४, ३८, ४०, ५३, ५८, ८३, ८५, १०१, १०८, १३६, १६२, ३५३

मुकुन्दलाल गिरी ७३-७४, ८५, ८७, १०८, ११५, १५६, १८३-८४, १६३, २३५, २४६, २५७-५८, २६१, २६४, ४२५
मुहगावकर, डा० २६, ६१, १४४
मुन्ना जी ३०
मुरारजी ११९
मुरारी लाल, डा० ६४
मुले, डा० २५
मूलचन्द ६२, ८१
मूल जी ११, १७, २६, ३५, ३७, ७४, ११६, २३१
मेमराज भइया १२७
मेहर अली ६६, २७१
मेहताब बाबू ४३
मेहेरताज (सरहद्दी गांधी के पुत्र) ३, ५, ५३-५४, ५६
मोती बहन ११, २७, ३४, ३७
मोतीलाल ५१, ५३, ५६, ८५, १३४, १४८
मोडक, डा० १४४
मोहन ७, ३३-३४
मोहन लाल ८-१०, १६
मोहनलाल टीवड़ी वाला ८६
मोहन लाल बाकलीवाल २२८
मोहनसिंह ४०
मंजू ४०
मगलदास पकवासा ८५-८६, ६१
मगल प्रसाद ७५
मंगल सिंह २२-२३
मूंगालाल गोयनका २४८
मृदुला २२, २६, १०४
म० न० राय १७, २६, २६
म्हातरे २४-२५
यग १९९-२००, २२०, २२
२८४, २८८-८६, २६१, ३०
३०७, ३१७, ३२८, ३३
३४६, ३५१, ३५४-५६, ३५
३६५
यमू ताई २५३
यशोदा ३६-४०
यज्ञदत्त गुप्ता ४६
याकूब हुसैन ३२
यादव राव १३
यूसुफ शरीफ १३५
योगा बाई ६,७२
योगी जी ३५
रघुनाथ प्रसाद पोद्दार ६०, २०८
रघुवीरशरण २१८
रघुवीर सिंह (दिल्ली वाले) ७७, ८३, ८५-८६
रजब अली ११५, १४१, १५८, २२२, २४७, २५६
रजा अली २२४
रजाक (नागपुर वाले) ६७, २०१
रगलाल मोदी ४८, २१२
रगा, प्रो० २६३
रतन जी १६३

रतन देवी शास्त्री २०७-८
रतन बहन १, ६-८ १४२-४३ ३४०
रतीलाल गांधी १७
रत्न १७-१८, ३६
रणजीत ४१, १४२
रणादिवे ६
रमनी ५६
रमन, लेडी ३२
रमण महर्षि १६०, २०४, २०६-११, २१७, ३०८
रमणीक राय मेहता २३५
रमा ६६
रमाकान्त ११, ३४, ३६
रविशंकर शुक्ल ७६, ६७, ११०, १४४, १६०, १७६, १८५, २०३, ३८८
रसिक ५४
राणी साहेब १६६
राजकुमार ६५, ८५
राजकुमारी अमृतकौर २-४, २०, २२, ७८, १६२-६३, २६७, २७०, २६६, ३६१, ४२५
राजनारायण २६१-६२
राजा ३७, ३१५
राजाजी (च० राजगोपालाचार्य) २२, २७-२८, ३२-३३, ४३, ६६, ८२, १२१-२२, १३०, १४३, १६६, १७२, २०८, २१२, ४१७
राजेन्द्र बाबू १६-२२, २६, ४ ६६-६७ ८४-८५, ८७-८ ६१-६३, १२१-२२, १४६ १५२-५३, १७२-७६, २०२-४ २०६-१२, २१४ २१६-१७ २१६, २२१, २२६, २६३, ३२६ ३३५, ३५२, ३६१, ३८५-८६ ३८८
राजेन्द्र लाल २६७, ४२५
राधा ५२, ५४
राधाकृष्ण ३-५ ११, १३, २०, २५-२६, ३४, ४२, ४५, ५६, ५८, ६०, ६२, ६५, ७३, ७६, ८४-८५, ६१, १०६, १२४ १४५ १५३ १५६, १६१, १६३, १७४, १७७, २१४-१५ २१६ २३१, २३३, २४४-४५, २७६, २८०, २८२, २८७ २६८ ३०४, ३०६, ३३७-३८ ३४१, ३४२, ३४८, ३५५, ३५६ ३६८, ३८६-८७, ३६५, ४२१, ४२४
राधाकृष्ण स्मृत्या ३७, ८३-८५, २३१-३२, ४२०
राधा गांधी २६०
राबर्टसन २६७
रामकिशन ३४, ४१-४२, ४४-४५, ७१, १०८, ११४, १२०, १३६, १३६, १४६, १६३, १६५,

२८३, २८८
रामकिशन घृत २२६
रामकुमार केजरीवाल ५२, १५२
रामकुमार बिड़ला ६६, ४२१
रामकुमार भुवालका ५१-५३ २७७
रामकृष्ण गूजर वैश्य (एम० वी०-वी० एम०) ५४
रामकृष्ण डालमिया २६, ६८, ७०, ११७, १४६, २७५, २७८, ३८७
रामगोपाल केजरीवाल ४२-४४, २२८, २६७
रामगोपाल गाडोदिया १५६, २६८
रामचन्द्र वैद्य ४२०
रामजी भाई ११, २७, ७०, २६१-६२, ४१६-२०
रामदास गांधी ५, ३५
रामदास गौड ७६
रामदेव ५, २२, २७, ४१६
रामनरेश त्रिपाठी ७५-७६, ६४, ३४६, ३६४
रामनाथ २१२, २१५, ४१६
रामनाथ गोयनका ३३, १६४
रामनाथम ७३, २०८
रामनाथ सेकसरिया २४६
रामनारायण चौधरी २६, १७३-७४, १७७
रामनारायण पोद्दार ८६, २३१
राम प्रसाद २८८
रामनारायण, प्रो० ११८, ४२२
रामनारायण मिश्र ३२
रामनिवास रुइया ५, ८-६, २१, २२, २६, ३४, ३६, ८६, ६१, ६५, ४२१
रामप्यारी ६१-६२
राम मनोहर लोहिया २४४, २८७-८८
रामरतन ६४
रामराव १४, १७५, १८७
राम रिछपाल श्रीया ७५, ४१२
रामसिंह ६
रामेन्द्र नारायण राव, कुमार ३११
रामेश्वर (एलिचपुर वाला) ५७, ६२, ६४, ८६-८७, ६८, १३३
रामेश्वर (किलेवाला) ६, १७, ३५-३८, ४३, ४५, ४८, ५०, १७३, २४८, २८८, ३८६
रामेश्वर अग्रवाल २३६, २५८
रामेश्वरदास ७८, १२५
रामेश्वरदास बिड़ला २७, ३८, ५०-५१, ५४, ७३-७४, ८६-८७, १०२, १०८, ११४, ११७-१८, १२०, १२२, १५१, १५३, १५८, १६४-६५, १७८-७६, १८१-८२, १६४, २२२-२४, २४६-४८, २६५, २६७, २८१, २८६-८७, ३०४, ३५८, ३८७, ४१७-१६

१०६-११ ११६-१७ १२१-२२
१६३ १६४ १७३-७६ १८१,
१८६ ८७ २०२-३, २२०
२३० २४३ २४६, २४९, २६७
२७२-७३, २७७ २७६, २८४,
४१७ ४२४-२६
वशीधर दास २४६, २४७
वसन्त डा० ३७
वसन्त नाग १०४
वाटर, मेलारि ७८-७९
वानुजवर २८
वासन्ती १३, २२ ७८-७६, ८३
विजयसिंह मोहता ५५
विजापी ६६
विद्या देवी ५ ५१ ६१
विद्याधर विद्यार्थी ६०
विधानचन्द्र राय ६८ १०६, २०६
३८५
विनायक १६
विनोबा १६, ५६ ६८, ७१-७२,
७७-७६, ८४, ६०, ११८-१६,
१६०, १७७, २४१-४५, २७६
विट्ठल भाई पटेल १८७
विट्ठलराव देशमुख १४, १८५
विमला ६६
वियोगी हरि २२५
विश्वनाथ १४-१५, ५५
विश्वम्भर माहेश्वरी १०
विश्वासराव मेघे ७२
विशेश्वरैया ११७, २४६
वीरेन्द्र १३०
वेंकट गिरी ६८, ७४, ६६
वेंकट राव गोडसे ५, १४, २१
वेंकट राव पोदे १२-१४, ३१, ७२
वेंकट नाग ३८-३६, १३७
वैजनाथदास १५०
वृद्धिचन्द पोद्दार ४८, ५६, ६२,
७३, ७८, ८८
शंकर राव देव ८, २४, ३५, ६६
१०६, १२१
शंकर राव वेंकर ३०, ४०, ७२,
८२-८३, ८५-८६, ६४, ६६,
१०३, १०५-७, १०६, ११६-१७,
१२१, १५४-५५, १६१, २४७,
२५१
शफिया, मरियम ११
शम्भु बोस ३०, ६६, १०५, १२१-
२२, २०१
शशि ५१, ५३-५४, ६४
शशिबाला ५२, १०१
शहानी, डा० ४
शादुल्ला ६६
शान्ताबाई २-५ ७, ११, १५, १६,
२६, ३६-३८, ४०, ४२-४३, ५०,
५४, ५७, ५६, ६२, ७५, ८७,
१००, १२०, १२७, १३३, १३६-
३७, १६३-६४, २०८-६, २२२,
२२४, ३४०-४१, ३६०

शान्ति १२-१३, ३३, ४०, ७५, ९४, ९८, १००, १२६
शान्तिकुमार १४१-४२, १४४
शान्ति प्रसाद जैन, साहू ८१, १४६ २२१, २२३, २३२-३३
शान्ति शाह ३८
शान्ति शाह ३७, ९५
शान्तिस्वरूप गुप्त ४६, १३७
शारदा बहन ५०, ६८-६६, ८४
शालिग्राम ६
शिवजी कोठारी १४१
शिव प्रसाद खेतान १६८ ३३६, ३८५
शिवनारायण मोदी १४८
शिवनारायण ल्यटा १०
शिवमूर्ति सिंह ७६
शिवराज १३-१४, ८४, ९४, ११८, १३३
शिवराम टालवाले १३
शिवाजी ६
शीलप्रसाद श्रीवास्तव ६५
शुक्लाजी ६५ ६८
शोभासिंह ८३
शौकत ३०
श्यामकिशोर १६८
श्यामसुन्दर अग्रवाल ६-१०६
श्योनारायण भुवाल्का ४३-४५
श्रीकृष्ण ६५, ७०, ८१, १०१, १३५, १३६
श्रीकृष्ण नेवटिया ११, १५, २६, ४८, ५१, ५३, ८७-९०, १३५, १३६
श्रीगोपाल ४०, ५५, ७४, ८६, ९५, ९६ २२२
श्रीगोपाल नेवटिया ५४, ५८, ९५
श्रीनाथ ३८, ७७
श्रीनिवास ४०, ५२, ७५, १०८, ४३१
श्रीनिवास बगडका १००, ३६४
श्रीप्रकाश ७६
श्रीमन्नारायण अग्रवाल १, २, ४, १२, २०, २७, ३८, ४२, ५५, ५७, ५६, ६२-६३, ६५-६६, ६८, ७६ ८३, ८८-८६, ६३-६४, ६७, १००, १०३ १०७, ११८-१६, १२६, १३६-३७, १४७, १७६, १८६, २३८, २७५, ३४६-४७
श्रीमा ७५
श्रीराम ६-७, ३४, ४३, ५२, ७०, ७३
श्रीराम पोद्दार (हाथरस वाले) ३६
सजाना ६६, १४१
सच्चानन्द, पंडित १०८
सगुनचंद ६०
सज्जन ३-४
सतीश २०
सत्यदेव विद्यालंकार २२३, ४०१

सत्यनारायण २, ४,२२, ५६, ६१, ६७, ८०, ६८, १११, १२४, १३७, १६१, २१२
सत्यवती ७६
सम्पूर्णानन्द २२४
सप्रू, डा० ३१२
सरदेसाई, डा० १०
सरस्वती देवी गाडोदिया २६, ६२, १२५, २२७-३०, २२५, २६५, २८१
सरलादेवी चौधरानी ६४
सरला बाला २
सरोजनी नायडू २२, ४३, ६४, ६६, ७७, ६३, १३६ ३१२
सहस्रबुद्धि २, ६
सहानी डा० ३०-३१
सागर दाड़े ५
सागरमल बियाणी १६६, ३५०
साठे, मास्टर ७५
साम्बमूर्ति ३२-३३
सालवे ६६
सालिवट्टी ३८
सावित्री २८-३१, ४६, ५७, ६५-६६, ६६-७२, ७७, ८२, ६४, ६६, ६८ १००-२, १०७-६, १४६, १४८, १५५, २६३-६४, ३६४
सिद्धगोपाल ७७, २६७
सीतादेवी (भारतन की पत्नी) ६६, ८४, ६७
सीताराम सेमका ६६-१००, १०१०५-६, ११६, १२२-२०८, ३६३
सीताराम चौबे ७५
सीताराम पोद्दार ४१६
सीताराम शास्त्री २५, १४७
सीताराम सेकसरिया ६-७, ४८६६, १०३, १०८, १४१, १४३१६६, २२२, २७७, ४१७
सुचेता कृपलानी २८, ७६, १०६
सुन्दरलाल भूतेश्वर ६६
सुन्दरलाल मिश्रा २७, १२७
सुन्दरलाल मुरारका १८५
सुबोध कुमार राय ८३
सुब्बारायन, डा० १०४
सुव्रता ७-८, १०-११, २१, २५-२७, ३४-३८, ४१, ७३, ८२, ८४-८६, ६५-६६, ११६, १२२, १३२-३३, ४२२-२३
सुभद्रा (सत्यदेव विद्यालंकार की पत्नी) ६५, २२७, ४००
सुराणा, डा० ५७
सुरेन्द्र नारायण ७६
सुलोचना ११, ५०, ५२, ७०, ६४-६५, १०८, १८२
सुशीला नैयर, डा० ११, १३, २८, ४६, ४८, ८६-८८, १२४, १३४, १४५, १६४, ४३१

सुशीला भरतिया ६४, ८३-८५
सूरजमल नोमानी १०
सूर्यभान ८-९
सैयद महमूद १४१
सोनक, डा० ४६, ४९, ६७, ७८, ८०
सोनी बाई १, ३, १८, १९, २०, २३, २५
सोफिया ३५, ५३, ७५, १०८ १६४
सोमेश्वर नानावटी ६४
सौभाग्यवती ३५
सौंदरम, डा० ५८, ६०-६१, १६१, २१०, २१२
स्वरूप बहन २६, ४१, ७६
एस डी० राय २१४, २२३, ३६५ ४१२
हजारी मीणा ३२७
हजारीलाल जड़िया २४०
हनुमान प्रसाद पोद्दार ५४-५५, २८३
हनुमन्तराय, रायबहादुर ८, ४२६, ४३२
हमीदा तैयबजी ६३-६४, ६६, १०२
हरकारे २४५
हरगोविन्द २५६, ३०६, ३५३
हरजीवन कोटक ५५, ६२, १५७, १५९, २३५, २५३-५४
हरदत्तराय बी० ए० ४८
हरमकलाल ५५
हरलाल २६८, २८६
हरिभाऊ उपाध्याय ७, १५, १६, १९, २४, ३४, ४५, ४९, १०८, १६६-६७, १७२-७३, १७७, १८७, २२०, २४२, २६५, २६८, २७१, २७५, २७८, २८०, २८२-८३, २८६, ३४८
हरिभाऊ जोशी ८
हरिभाऊ तनफुले ९, ७५
हरिभाऊ फाटक ९-१०, ७७, ३२३, ४२८, ४३०
हरिराम मुरारका ६२
हरिश्चन्द्र ३६५, ३६८-६९
हरिहर शर्मा (अन्ना) ३२, ६३, ७७, ११५, १२५
हिम्मतलाल त्रिवेदी (मिलचद) ३६
हिम्मतसिंहका ६८
हीरालाल दुबे १०२
हीरालाल शाह ३६-३७ ८६, २८२
हीरालालशाह ३८, ८७, ३८८
हीरालाल शास्त्री ७, १०८, १६३ १६५, १६७-६८, २२०-२१, २२७, २४१-४२, २४४ २६५, २७९-८०, २८३, ३३७-३८,